॥ श्रीः ॥

मानसागरीपद्धतिः ।

अवधमण्डलान्तर्वर्तिलखीमपुरसमीप-वरखेडवाग्राम-
निवासिराजमान्यबुधवरमाधवरामात्मज-
राजपण्डितवंशीधरकृत-

सोदाहरणभाषाटीकासहिता ।

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,

मालिक-“ लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर ” स्टीम्-प्रेस,

कल्याण-बंबई.

संवत् १९९६, शके १८६१.

1939.

मुद्रक और प्रकाशक-

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,

मालिक-"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम-प्रेस,

कल्याण-बंबई.

भूमिका ।

प्रणम्य सच्चिदानंदं निर्विकल्पैकरूपिणम् ।
वंशीधरेण विदुषा भूमिकेयं विलिख्यते ॥
अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादस्तत्र केवलम् ।
प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं साक्षिणौ चन्द्रभास्करौ ॥

उस जगन्नियन्ता परमेश्वरको अनेक धन्यवाद हैं कि, जिसने अपनी अनुपम दयासे
इस जगत्में विद्यारत्नको प्रकट करके प्राणियोंको अतुल सुख प्राप्त होनेका सरल उपाय
बताया है, जो मनुष्य इस संसारमें विद्यासे हीन है, उसको सुख पूर्णतया प्राप्त नहीं हो
सकता. विद्याकी गणनामें वेद, उपवेद, वेदांग, शास्त्र, पुराण इत्यादि प्रसिद्ध हैं. वेदके
" शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छन्द " ये छः अंग हैं. इनमें ज्योतिषशास्त्र
प्रत्यक्ष है । क्योंकि, ज्योतिषमें गणित और फलित इन दोनोंका फल प्रत्यक्ष ही आता है;
गणितमें ग्रह ग्रहण इत्यादि और फलितमें जातक, ताजिक, स्वर, प्रश्न, शकुन आदि ।
जातकग्रन्थोंमें अत्यन्त सरल ग्रन्थ " मानसागरी " है. संस्कृतभी उसका यद्यपि बहुत
कठिन नहीं है तथापि सामान्यश्रेणीके पंडित कठिनतासे समझ सकते हैं । उसकी भी कठि-
नाईको दूर करनेके हेतु हमने बहुत सरल भाषाटीका तथा उदाहरण देशभाषामें करके
उपरोक्त जातकग्रन्थको सर्वोपकारक बनाया है । अन्य जातक ग्रन्थोंकी अपेक्षा " मान-
सागरी " में बहुतही उत्तम रीतिसे जन्मपत्रसम्बन्धी फल और गणितको दर्शाया है ।
इसमें पांच अध्याय हैं. प्रथम अध्यायमें मङ्गलाचरणके श्लोक, संवत्सरादि पंचांगफल
तथा चन्द्रराशिसकाशात् ग्रहफल आदि वर्णित हैं. द्वितीय अध्यायमें द्वादशभावस्पष्टी-
करण, ग्रहफल, द्विग्रही आदि योगफल हैं. तृतीयअध्यायमें भावगत लग्नेश आदिका फल,
उच्चादि ग्रहफल, तन्वादि द्वादशभावगत राशिफल, मेषादिराशिगत सूर्यादिग्रहफल और
षड्वर्ग साधनेकी रीति तथा फल हैं. चतुर्थअध्यायमें पंचमहापुरुषादियोग, सुनफादि
सूर्यचन्द्रयोग तथा अनेकानेकयोग फलसहित, राजयोग अरिष्ट तथा अरिष्टभंगयोग, द्वादश-
भावफल, नवग्रहोंका पुरुषाकारचक्र तथा अनेकचक्र, फलसंयुक्त रश्मिफल, अष्टकवर्ग-
फल तथा स्थानादि ग्रहबल, भावफल तथा पिंडादि आयुक्रम वर्णित हैं । पंचमअध्यायमें
विंशोत्तरी, अष्टोत्तरी, सन्ध्या, योगिनी आदि दशान्तर्दशा विदशादि फलसहित वर्णित हैं ।
इस प्रकार पांच अध्यायोंसे विभूषित यह परमोत्तम ग्रन्थ पंडितोंको अवश्य अपने पास
रखने योग्य है; जातकका कोई भी विषय ऐसा नहीं है जो इस पुस्तकमें न हो ।
इसके छापनेके सर्व अधिकार बम्बईमें " श्रीवेंकटेश्वर " स्टीम् प्रेसके अध्यक्ष सेठ खेमराज
श्रीकृष्णदासजीको मैंने सन्तोष-पूर्वक दिया है । इत्यलम् ॥

अभ्रषड्नन्दचन्द्रेऽब्दे ज्येष्ठे मासि सिते दले ।
दशम्यां शुक्रवारे च भापारम्भः कृतो मया ॥

सत्कृपाभाजन--

राजमान्य श्रीबुधमाधवरामात्मज-राजपंडित वंशीधर पांडे,
बरखेड़बा (जिला खीरी) अवध ।

॥ श्रीः ॥

अथ मानसागरी-विषयानुक्रमणिका ।

इति मानसागरीविषयानुक्रमणिका समाप्ता।

॥ श्रीः ॥

मानसागरीपद्धतिः ।

सोदाहरणभाषाटीकोपेता ।

प्रथमोऽध्यायः ।

मङ्गलाचरणम् ।

स्वस्ति श्रीशुद्धिवृद्धिर्जयो मङ्गलाभ्युदयश्च ॥

जैनवैष्णवीप्रशस्तिः ।

स्वस्तिश्रीसौख्यदात्री सुतजयजननी तुष्टिपुष्टिप्रदात्री
माङ्गल्योत्साहकर्त्री गतभवसदसत्कर्मणां व्यञ्जयित्री ।
नानासम्पद्विधात्री धनकुलयशसामायुषां वर्द्धयित्री
दुष्टापद्विघ्नहर्त्री गुणगणवसतिर्लिख्यते जन्मपत्री ॥ १ ॥

नमस्कृत्य गणाधीशं बुधमाधवसूनुना ।
वंशीधरेण भाषायां लिख्यते मानसागरी ॥

प्रणम्य भक्त्या रविमुख्यखेटान्स माधवस्यात्मजराजमान्यः ।
वंशीधरस्तेन विलिख्यते तट्टीकामृतापद्धति जातकस्य ॥

कल्याण, लक्ष्मी और सौख्यको देनेवाली, पुत्र और जयको उत्पन्न करनेवाली, तुष्टिपुष्टिको देनेवाली, मांगल्य उत्साह करनेवाली, गत अथवा वर्तमान अच्छे बुरे कामोंको प्रगट करनेवाली, नानाप्रकारकी संपत्को देनेवाली, धन कुल और यशको बढानेवाली, दुष्टजनों आपदा और विघ्नको नाश करनेवाली और विविध गुणोंसे पूर्ण जन्मपत्रीको लिखता हूं ॥ १ ॥

श्रीआदिनाथप्रमुखा जिनेशाः श्रीपुण्डरीकप्रमुखा गणेशाः ।
सूर्यादिखेटर्क्षयुताश्च भावाः शिवाय सन्तु प्रकटप्रभावाः ॥ २ ॥

श्रीकरके युक्त आदिनाथ (ईश्वर) आदि लेकर जिनेश तथा पुंडरीक आदि लेकर गणेश, सूर्यादिग्रह, राशियुक्त भाव सदा कल्याण करें ॥ २ ॥

दशावतारो भुवनैकमल्लो गोपाङ्गनासेवितपादपद्मः ।
श्रीकृष्णचन्द्रः पुरुषोत्तमोऽयं ददातु वः सर्वसमीहितं मे ॥ ३ ॥

दशअवतारोंको धारण करनेवाले, लोकमें एक ही योद्धा, गोपियोंकरके सेवित पादपद्म ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र पुरुषोत्तम मुझे और तुम्हारे सबके अर्थ संपूर्ण यथेष्ट फलको देवें ॥ ३ ॥

श्रीमानस्मानवतु भगवान् पार्श्वनाथः प्रियं वः
श्रेयो लक्ष्म्या क्षितिपतिगणैः सादरं स्तूयमानः ।
भर्तुर्यस्य स्मरणकरणात्तेऽपि सर्वे विवस्व-
न्मुख्याः खेटा ददतु कुशलं सर्वदा देहभाजाम् ॥ ४ ॥

राजालोगोंकरके आदरपूर्वक स्तूयमान श्रीभगवान् पार्श्वनाथ हमारी रक्षा करें और तुम्हारे कल्याण, लक्ष्मी और प्रियवस्तुकी रक्षा करें जिस मालिकके स्मरण करनेसे सूर्य आदि ग्रह संपूर्ण देहधारियोंको कुशलता देवें ॥ ४ ॥

सूर्यः शौर्यमथेन्दुरुच्चपदवीं सन्मङ्गलं मङ्गलः
सद्बुद्धिं च बुधो गुरुश्च गुरुतां शुक्रः सुखं शं शनिः ।
राहुर्बाहुबलं करोतु विपुलं केतुः कुलस्योन्नतिं
नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु भवतां सर्वे प्रसन्ना ग्रहाः ॥ ५ ॥

श्रीसूर्यनारायण पराक्रम, चन्द्रमा उच्च पदवी, मंगल सुंदर मंगल, बुध उत्तम बुद्धि, बृहस्पति गुरुता, 'शुक्र सुख, शनि हर्ष, राहु विपुल बाहुबल और केतु कुलकी उन्नतिको करैं. इस प्रकार संपूर्ण प्रसन्न ग्रह तुम्हारे अर्थ सदा प्रीतिके करनेवाले होवें ॥ ५ ॥

कल्याणं कमलासनः स भगवान्विष्णुः स जिष्णुः स्वयं
प्रालेयाद्रिसुतापतिः सतनयो ज्ञानं च निर्विघ्नताम् ।
चन्द्रज्ञास्फुजिदर्कभौमधिषणच्छायासुतैरन्वितं
ज्योतिश्चक्रमिदं सदैव भवतामायुश्चिरं यच्छतु ॥ ६ ॥

श्रीकमलासन भगवान् विष्णु, जिष्णु (जैनीदेवता) उमापति पुत्रसहित कल्याणको, ज्ञानको और निर्विघ्नताको देवैं । चन्द्रमा, ज्ञ (बुध), शुक्र (आस्फुजित्), अर्क (सूर्य), भौम, बृहस्पति (धिषण) और शनैश्चर इनकरके सहित ज्योतिषचक्र सदा तुम्हारी आयुको बढावै ॥ ६ ॥

सूर्यो यच्छतु भूपतां द्विजपतिः प्रीतिं परां तन्वतां
माङ्गल्यं विदधातु भूमितनयो बुद्धिं विधत्तां बुधः ।

गौरं गौरवमातनोतु च गुरुः शुक्रः सशुक्रार्थदः
सौरिर्वैरिविनाशनं वितनुतां रोगक्षयं सैंहिकः॥ ७॥

श्रीसूर्यनारायण राजत्वको, चन्द्रमा उत्तम प्रीतिको, भौम मांगल्यताको, बुध बुद्धिको, बृहस्पति निर्मल गौरव (बड़ाई) को, शुक्र साम्राज्यसुख अर्थको देवैं, शनैश्चर शत्रुओंका नाश करै और राहु तनुधारियोंके रोगका क्षय करैं॥ ७॥

श्रीमान्पङ्कजिनीपतिः कुमुदिनीप्राणेश्वरो भूमिभूः
शाशाङ्किः सुरराजवन्दितपदो दैत्येन्द्रमन्त्री शनिः।
स्वर्भानुः शिखिनां गणो गणपतिर्ब्रह्मेशलक्ष्मीधरा-
स्तं रक्षन्तु सदैव यस्य विमला पत्री त्वियं लिख्यते॥ ८॥

श्रीमान् सूर्यनारायण, चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु एवं गणेश, ब्रह्मा, शिव और लक्ष्मीधर सदा उसकी रक्षा करैं जिसकी उत्तम यह जन्मपत्री लिखता हूं॥ ८॥

कृतं मया नोदकयन्त्रसाधनं न भेक्षणं चापि न शङ्कुधारणम्।
परोपदेशात्समयावबोधकं विलिख्यते जन्मफलं नराणाम्॥ ९॥

मैंने उदकयंत्रका साधन नहीं किया, न नक्षत्रोंको देखा है तथा शंकुका धारण भी नहीं किया है, केवल दूसरेसे बताये हुए समयको जानकर मनुष्योंके जन्मफलको लिखता हूं॥ ९॥

ललाटपट्टे लिखिता विधात्रा षष्ठीदिने याऽक्षरमालिका च।
तां जन्मपत्री प्रकटां विधत्ते दीपो यथा वस्तु घनान्धकारे॥ १०॥

ललाटचक्र (माथे) में ब्रह्माने षष्ठी (छठी) के दिन जो अक्षरमालिका लिखी है उसको जन्मपत्री प्रकट (प्रकाश) करती है जैसे दीपक, घोर अंधेरेमें रक्खी हुई वस्तुको प्रकट करता है॥ १०॥

यावन्मेरुर्धरापीठे यावच्चन्द्रदिवाकरौ।
तावन्नन्दतु बालोऽयं यस्यैषा जन्मपत्रिका॥ ११॥

जबतक पृथ्वीपर मेरु पर्वत स्थिर है और जबतक सूर्य चन्द्रमा हैं तबतक यह बालक आनंद करै जिसकी यह जन्मपत्री है॥ ११॥

यस्य नास्ति किल जन्मपत्रिका या शुभाशुभफलप्रदर्शिनी।
अन्धकं भवति तस्य जीवितं दीपहीनमिव मन्दिरं निशि॥ १२॥

शुभ और अशुभ फलको प्रकट करनेवाली जन्मपत्री जिसकी नहीं है, उसका जीवन रात्रिमें दीपहीन मंदिरके समान अन्धकारमय है ॥ १२ ॥

वंशो विस्तारतां यातु कीर्तिर्यातु दिगन्तरे ।
आयुर्विपुलतां यातु यस्यैषा जन्मपत्रिका ॥ १३ ॥

जिसकी यह जन्मपत्री है उसकी वंशवेल बढे, दिशाओंमें कीर्ति फैले और आयुर्दाय अधिक बढे ॥ १३ ॥

यं ब्रह्म वेदान्तविदो वदन्ति परं प्रधानं पुरुषं तथाऽन्ये ।
विश्वोद्गतेः कारणमीश्वरं वा तस्मै नमो विघ्नविनाशनाय ॥ १४ ॥

जिसको वेदान्तके ज्ञाता ब्रह्म और अन्य सबसे परे प्रधानपुरुष कहते हैं, संसारके उत्पन्न करनेको कारण ऐसे ईश्वरको विघ्नविनाशके अर्थ नमस्कार करता हूं ॥ १४ ॥

आदित्याद्या ग्रहाः सर्वे सनक्षत्राः सराशयः ।
सर्वान्कामान्प्रयच्छन्तु यस्यैषा जन्मपत्रिका ॥ १५ ॥

सूर्य आदि समस्त ग्रह नक्षत्र और राशियोंके सहित, जिसकी यह जन्मपत्री है उसके संपूर्ण कामनाको देवें ॥ १५ ॥

जननी जन्मसौख्यानां वर्धिनी कुलसंपदाम् ।
पदवी पूर्वपुण्यानां लिख्यते जन्मपत्रिका ॥ १६ ॥

जन्म सुख देनेवाली, कुल और संपदाको बढानेवाली एवं पूर्वपुण्यकी पदवी जन्मत्रीको लिखता हूं ॥ १६ ॥

एकदन्तो महाबुद्धिः सर्वज्ञो गणनायकः ।
सर्वसिद्धिकरो देवो गौरीपुत्रो विनायकः ॥ १७ ॥

एकदन्त, महाबुद्धिमान् , सर्वज्ञ, गणनायक देवता, पार्वतीके पुत्र विनायक सर्व सिद्धि करनेवाले होवें ॥ १७ ॥

ब्रह्मा करोतु दीर्घायुर्विष्णुः कुर्याच्च सम्पदम् ।
हरो रक्षतु गात्राणि यस्यैषा जन्मपत्रिका ॥ १८ ॥

ब्रह्मा दीर्घायु करैं, विष्णु संपदाको देवैं और हर गात्रोंकी रक्षा करैं जिसकी यह जन्मपत्री है ॥ १८ ॥

गणाधिपो ग्रहाश्चैव गोत्रजा मातरो ग्रहाः ।
सर्वे कल्याणमिच्छन्तु यस्यैषा जन्मपत्रिका ॥ १९ ॥

गणेशजी, सूर्यादिग्रह एवं गोत्रपक्षी और मातृपक्षी ग्रह, जिसकी यह जन्मपत्री है उसका कल्याण करैं ॥ १९ ॥

कल्याणानि दिवामणिः सुललितां कान्तिं कलानां निधि-
र्लक्ष्मीं क्ष्मातनयो बुधश्च बुधतां जीवश्चिरञ्जीविताम् ।
साम्राज्यं भृगुजोऽर्कजो विजयितां राहुर्बलोत्कर्षतां
केतुर्यच्छतु तस्य वाञ्छितमियं पत्री यदीयोत्तमा ॥ २० ॥

श्रीसूर्यनारायण समस्त कल्याण करैं, चन्द्रमा कान्तिको बढावैं, मंगल लक्ष्मी देवैं, बुध बुद्धिकी वृद्धि करैं, बृहस्पति दीर्घजीवी करैं, शुक्र साम्राज्य सर्व सुखको देवैं, शनैश्चर विजय करैं, राहु सर्वसामग्री वैभवकी वृद्धि करैं और केतु मनोवांछित फल देवैं जिसकी यह उत्तम जन्मपत्री मैं लिखता हूं ॥ २० ॥

श्रीजन्मपत्रीशुभदीपकेन व्यक्तं भवेद्भाविफलं समग्रम् ।
क्षपाप्रदीपेन यथा गृहस्थं घटादिजातं प्रकटत्वमेति ॥ २१ ॥

संपूर्ण भावीफल जो होनेवाले हैं जन्मपत्रीरूप दीपकसे प्रकट होंगे जैसे अंधियारी रातमें दीपकके होनेसे घरके सब पदार्थ दिखाई देते हैं ॥ २१ ॥

ये कुर्वन्ति शुभाशुभानि जगतां यच्छान्ति ये सम्पदो
ये पूजाबलिदानहोमविधिभिर्निघ्नन्ति विघ्नानि च ।
ये संभोगवियोगजीवितकृतः सर्वेश्वराः खेचरा-
स्ते तिग्मांशुपुरोगमा ग्रहगणाः शान्तिं प्रयच्छन्तु वः ॥ २२ ॥

जो जगत्के अर्थ शुभ अशुभ करते हैं, जो संपदाको देते हैं, जो बलिदान होम विधिसे विघ्नोंको नाश करते हैं और जो संभोग, वियोग जीवित करते हैं वे सब देवता और खेचर तथा सूर्य आदि ग्रहगण तुम्हारे निमित्त शांतिको देवें ॥ २२ ॥

येनोत्पाट्य समूलमन्दरगिरिश्छत्रीकृतो गोकुले
राहुर्येन महाबली सुररिपुः कायार्द्धशीर्षीकृतः ।
कृत्वा त्रीणि पदानि येन वसुधा बद्धो बलिर्लीलया
स त्वां पातु युगेयुगे युगपतिस्त्रैलोक्यनाथो हरिः ॥ २३ ॥

मंदराचलको मूलसहित उखाडके गोकुलमें छत्रके समान करनेवाले, महाबली सुररिपुके मस्तकको राहु बनानेवाले, पृथ्वीको तीन पगके बराबर करनेवाले, लीलाकरके बलिराजाको बांधनेवाले, युगपति त्रैलोक्यनाथ हरि युगयुगमें तुम्हारी रक्षा करें२३

पूषा पुष्टिं दिशतु सततं सन्ततिं शीतरोचि-
र्भौमो भाग्यं सितकरसुतः शान्तिमाङ्गल्यमेवम् ।
जीवो राज्यं चिरसुभगतां भार्गवो भूमिपात्रं
राहुः सौख्यं शिखिन इति ते कीर्तिमभ्रंलिहां च ॥ २४ ॥

श्रीसूर्यनारायण सदा पुष्टिको देवैं, चंद्रमा संततिको देवैं, मंगल भाग्यको बढावैं, बुध पुत्रको देवैं, सदा शांति और मांगल्यताको करैं, बृहस्पति राज्य और सुभगताको करैं, शुक्र भूमिपात्रताको करैं, राहु केतु सौख्यको देवैं, ये संपूर्ण ग्रह तुम्हें निर्मल कीर्तिको देवैं ॥ २४ ॥

ग्रहा राज्यं प्रयच्छन्ति ग्रहा राज्यं हरन्ति च ।
ग्रहैर्व्याप्तमिदं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥ २५ ॥

ग्रह राज्यको देते हैं और ग्रहही राज्यको हरलेते हैं एवं संपूर्ण त्रैलोक्य चराचरमें ग्रहही व्याप्त हैं ॥ २५ ॥

उमा गौरी शिवा दुर्गा भद्रा भगवती तथा ।
कुलदेव्यथ चामुण्डा सदा रक्षन्तु बालकम् ॥ २६ ॥

उमा, गौरी, शिवा, दुर्गा, भद्रा, भगवती, कुलदेवी और चामुंडा देवी बालककी सदा रक्षा करैं ॥ २६ ॥

अविरलमदजलनिवहं भ्रमरकुलानीकसेवितकपोलम् ।
अभिमतफलदातारं कामेशं गणपतिं वन्दे ॥ २७ ॥

निरन्तर मदजल बहानेवाले, भ्रमर (कुल) समूहकरके सेवित कपोलवाले, मनके वांछित फलको देनेवाले, कामेश श्रीगणेशजीकी वंदना करता हूं ॥ २७ ॥

श्रीयावनी प्रशस्तिः ।

यः पश्चिमाभिमुखसंस्थितविद्यमानो
ह्यव्यक्तमूर्तिपरिवर्तितविश्वभोगः ।
दुर्लक्ष्यविक्रमततिः कृतकर्मलक्ष्यो
राज्यं श्रियं दिशतु वो रहमाण एषः ॥ २८ ॥

पश्चिमाभिमुखस्थित एवं अप्रकटमूर्तिसे विद्यमान विश्वके चराचरमें परिवर्त्तित (वर्तमान) दुर्लक्ष्य जिनकी पराक्रमगति और कियेहुए कर्मोंसे लक्ष्य ऐसे रहमाण तुमको राज्य एवं लक्ष्मीको देवैं ॥ २८ ॥

पद्धतिः।

अथ श्रीमन्नृपविक्रमार्कराज्यादमुकसंवत्सरेऽमुकशाके करणगताब्दाधिकमासावमदिनाहर्गणामुकायनामुकगोलगते श्रीसूर्येऽमुकऋतावमुकमासेऽमुकपक्षेऽमुकतिथावमुकवासरे घटीपलामुकनक्षत्रे घटीपलामुकयोगे घटीपलामुककरणेऽत्र दिने सूर्योदयाद्दिनगतघटीपलमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते भौमे बुधे गुरौ शुक्रे शनौ राहौ केतौ वा अमुकराशिनवांशेऽमुकलग्नाधिपतावमुकराश्यधिपतौ एवं पुण्यतिथौ पञ्चाङ्गशुद्धौ शुभग्रहनिरीक्षितकल्याणवत्यां वेलायां तात्कालिकामुकलग्नोदये संक्रान्तिगतांशघटीपलायनांशाः घटीपलमिश्रप्रमाणघटीपलदिनार्धप्रमाणघटीपलाक्षरनिशार्ध--प्रमाणघटी-पलाक्षरादिनप्रमाणघटीपलरात्रिप्रमाण-घटीपलसंमीलनेऽहोरात्रप्रमाणघटीपलरविभोग्यलङ्कोदयाद्गतघटीपले उन्नतघटीपलसूर्यपुरुषाकारनक्षत्रं अमुकस्थाने पतितं तत्र कैलासगिरिशिखरे उमामहेश्वरसंवादे विंशोत्तरीदशाप्रमाणेनादावमुकदशामध्ये जन्मामुकसन्ध्यायाममुकयामकेषु वंशोद्भवगङ्गानीरपवित्रोपमामुकान्वयेऽमुकगोत्रेऽमुकपुत्रे अमुकगृहे भार्याऽमुकनाम्नी पुत्ररत्नमजीजनत् ॥ अत्र होराशास्त्रप्रमाणेनामुकनक्षत्रेऽमुकचरणेऽमुकाक्षरेऽमुकस्वरेऽमुकयोनावमुकनाड्याममुकगणेऽमुकवर्णेऽमुकवर्गेऽमुकयुञ्जायां तस्य चिरञ्जीवामुकनाम प्रतिष्ठितं स च जिनप्रसादाद्दीर्घायुर्भवतु ॥

जन्मपत्रीविधिः।

अथ जन्मकुण्डली-कलियुगफलं संवत्सरफलायनफलगोलफलऋतुफलमासफलपक्षफलतिथिफलवारफलदिनजातफलरात्रिजातफलयोगफलकरणफलगणफलयोनिफलवारायुर्लग्नफलांशफलानामग्रे चन्द्रकुण्डलिकाचक्रं चन्द्रकुण्डलीफलम्॥ चन्द्रात्फलराश्यायुर्भावसाधनार्थं सूर्यादिकमध्यमसूर्यादिकस्पष्टसूर्यादिकतात्कालिकभावचक्रविधिफलसूर्यादीनां भावविश्वोपकभावोक्तफलद्वादशभवने नव-

ग्रहाणां द्वादशभवननिरीक्षणविधिर्द्वादशभवने नवग्रहफलं द्वादशभवनेशफलं द्वादशभवने द्वादशलग्नफलं द्वादशलग्नानां स्वामिफलं षड्वर्गमैत्रीचक्रं षड्वर्गकुण्डलीचक्रं पञ्चमहापुरुषयोगफलं सुनफाऽनफादुर्धराकेमद्रुमवोसिवेश्युभयचरीयोगिनी-फलराजयोगद्वादशायुर्गतिनवग्रहचक्रनवग्रहफलदीप्तस्वस्थनवप्रकारग्रहफलम् ॥ अरिष्टभङ्गराजयोगगजचक्रम् ॥ अश्वचक्रम् ॥ शतपदचक्रम् ॥ सूर्यकालानलचन्द्रकालानलयमदंष्ट्रात्रिनाडीयन्त्रसर्वतोभद्रचक्रम् ॥ चन्द्रावस्थाचक्रं रश्मिचक्रं रश्मिफलं चौविसबलतिणरोगफलाष्टवर्गाष्टवर्गफलं सर्वाष्टकवर्गचक्रं मैत्रीचक्रं महादशाफलं विंशोत्तर्यष्टोत्तरीसन्ध्यापाचकचक्रमन्तर्दशाचक्रमन्तर्दशाफलमुपदशाचक्रमुपदशाफलम् ॥

शाकानयनम् ।

विक्रमादित्यराज्यस्य पञ्चत्रिंशोत्तरं शतम् ।
पातयित्वा भवेच्छाकं चैत्रार्द्धात्तिथयः स्मृताः ॥ १ ॥

श्रीविक्रमादित्यराज्यके वर्तमान संवत्सरमेंसे एक सौ पैंतीस निकाल डालनेसे वर्तमान शाका होता है और आधे चैत्र अर्थात् चैत्रसुदी प्रतिपदासे तिथिमासादिकी गणना जाननी ॥ १ ॥

उदाहरण—जैसे विक्रमादित्यके संवत्सर १९५८ में १३५ हीन किया तो १८२३ शाका हुआ ॥ १ ॥

तदनन्तरं—करणगताब्दाधिकमासावममासाहर्गणाद्या यस्मिन् ग्रन्थमते ज्ञायन्ते तस्मिन्नेव ग्रन्थे विलोक्य लेख्यम् ॥

तदनंतर करण, गताब्द, अधिकमास, अवममास, अहर्गण आदि जिस ग्रंथके मतसे जाने हो उस ग्रंथसे देखकर लिखे ॥

युगानयनम् ।

द्वात्रिंशच्च सहस्राणि कलौ लक्षचतुष्टयम् ।
वेदा४ग्नि३नेत्रै२र्गुण्यं हि कृतं त्रेता च द्वापरम् ॥ १ ॥

चार लाख बत्तीस हजार ४३२००० वर्ष कलियुगकी संख्या है । इसको क्रमसे पृथक् २ चार (४) तीन (३) दो (२) से गुणा करदे तो कृतयुग, त्रेता और द्वापरके प्रमाणवर्ष होंगे ॥ १ ॥

उदाहरण—कलियुगके वर्षगण ४३२००० को ४ से गुणा तब १७२८००० सतरह लाख अट्ठाईस हजार वर्ष कृतयुगका मान हुआ, फिर वही कलिके वर्ष ४३२००० को तीन ३ से गुणा तब १२९६००० बारह लाख छानवे हजार वर्ष त्रेतायुगका मान हुआ। फिर ४३२००० को २ से गुणा तब ८६४००० आठ लाख चौंसठ हजार वर्ष द्वापरमान हुआ। इन चारोंको इकट्ठा करनेसे ४३२०००० तेंतालीस लाख बीस हजार वर्ष महायुगमान हुआ॥ १॥

कलियुगफलम्।

पापात्मा दुःखसंयुक्तो धनहीनोऽयशा नरः।
दुष्टबुद्धिर्दुराचारो जायते च कलौ युगे॥ १॥

जिसका जन्म कलियुगमें हो वह पाप-आत्मावाला, दुःखोंकरके युक्त, धनसे हीन यशवर्जित (अपयशी), दुष्टबुद्धिवाला और दुराचारी होता है॥ १॥

प्रभवादिषष्टिसंवत्सरनामानि।

प्रभवो १ विभवः २ शुक्लः ३ प्रमोदोऽथ ४ प्रजापतिः ५।
अङ्गिराः ६ श्रीमुखो ७ भावो ८ युवा ९ धाता १० तथैव च॥ १॥
ईश्वरो ११ बहुधान्यश्च १२ प्रमाथी १३ विक्रमो १४ वृषः १५।
चित्रभानुः १६ सुभानुश्च १७ तारणः १८ पार्थिवो १९ व्ययः २०॥ २॥
सर्वजित् २१ सर्वधारी च २२ विरोधी २३ विकृतिः २४ खरः २५।
नन्दनो २६ विजयश्चैव २७ जयो २८ मन्मथ २९ दुर्मुखौ ३०॥ ३॥
हेमलंबी ३१ विलंबी च ३२ विकारी ३३ शार्वरी ३४ प्लवः ३५।
शुभकृत् ३६ शोभकृत् ३७ क्रोधी ३८ विश्वावसु ३९ पराभवौ ४०॥ ४॥
प्लवङ्गः ४१ कीलकः ४२ सौम्यः ४३ साधारण ४४ विरोधकृत् ४५।
परिधावी ४६ प्रमादी च ४७ आनन्दो ४८ राक्षसो ४९ नलः ५०॥ ५॥
पिङ्गलः ५१ कालयुक्तश्च ५२ सिद्धार्थी ५३ रौद्र ५४ दुर्मती ५५।
दुन्दुभी ५६ रुधिरोद्गारी ५७ रक्ताक्षी ५८ क्रोधनः ५९ क्षयः ६०॥ ६॥

प्रभवादि व्ययपर्यन्त बीससंवत्सर ब्रह्मविंशोत्तरीके नामसे कहलाते हैं एवं सर्वजित् इत्यादिसे पराभवपर्यन्त ये बीस विष्णुविंशोत्तरीके नामसे कहे जाते हैं और प्लवंगसे क्षयसंवत्सरतक ये बीस रुद्रविंशोत्तरीके नामसे कहेजाते हैं॥ १–६॥

संवत्सरानयनविधिः ।

शाकेन्द्रकालःपृथगाकृतिघ्नः २२शशाङ्कनन्दाश्वियुगैः४२९१समेतः।
शराद्रिवस्विन्दु१८७५हृतःसलब्धःषष्ट्याप्तशेषे प्रभवादयोऽब्दाः॥१

शककालमारभ्य ये संवत्सरा गतास्ते पृथक् द्वितीयस्थाने स्थाप्याः तत आकृत्या द्वाविंशत्या २२ गुणयेत् । स गुणितो राशेः शशांकनंदाश्वियुगैः एकनवत्यधिकद्वाचत्वारिंशच्छतैः युक्तः कार्यः । तं शराद्रिवस्विन्दुभिः पंचसप्तत्याधिकाष्टादशशतैर्भजेत्। लब्धं वत्सराः। ते बृहस्पते राशयः । शेषं त्रिंशता संगुण्य तेनैव छेदेन ये भागा लभ्यंते ते राशीनामधः स्थाप्याः । शेषं षष्ट्या संगुण्य तेनैव छेदेन कलाविकलाः अङ्कानामधः स्थाप्याः । ततः शककालः सलब्धः कार्यस्तेन वर्षादिना युक्तः कार्यः। वत्सरा वत्सरेषु क्षेप्याः शेषमधोधः स्थापयेत् । ततस्तस्य षष्ट्या भागे हृते प्रभवादयोऽब्दा गतवत्सरा भवंति । अधःस्थमंशादि वत्सरस्य गतं तदेव त्रिंशता विशोध्य वर्तमानवत्सरस्य गम्यमेवैतीति ॥ १ ॥

वर्त्तमान शाकाको दो जगह स्थापित करै. एक जगह बाईस २२ से गुणाकर चार हजार दो सौ इक्यानवे ४२९१ और मिलावे, जो संख्या हो उसमें अठारहसौ पचहत्तर १८७५ का भाग दे, शेषांकको एकान्त स्थापित करदे और लब्धिको दूसरी जगह स्थापित शाकामें युक्त करके साठ ६० का भाग दे. लब्ध व्यर्थ, शेष गत संवत्सर होता है, एक मिलानेसे वर्त्तमान संवत्सर होता है, फिर एकान्तस्थापित अठारह सौ पचहत्तरसे शेषितको बारहसे गुणाकर वही १८७५ का भाग दे इसी प्रकार दिनादि निकाल ले, वह गतमासादि संवत्सरके होंगे, बारहमें घटा दे तो वर्त्तमान संवत्सरके भोग्यमासादि होंगे शुरू शाकामें ॥ १ ॥

उदाहरण—वर्तमान शाका १७९६ को द्विधा १७९६ स्थापित किया एक जगह १७९६ को २२ से गुणा तब ३९५१२ हुए इनमें ४२९१ युक्त किया तब ४३८०३ हुआ, इसमें १८७५ का भाग दिया लब्ध २३, शेष ६७८ एकान्त धरा फिर लब्ध २३ को दूसरी जगह स्थापित १७९६ शाकामें युक्त किया तब १८१९ हुए ६० का भाग दिया लब्ध ३० व्यर्थ, शेष १९ गत संवत्सर हुआ, इसमें एक मिलाया तो २० व्ययसंवत्सर वर्त्तमान हुआ फिर शेष ६७८ को १२ से गुणा तब ८१३६ हुए इनमें १८७५ का भाग दिया तब गतमास ४ हुए शेष ६३६ को ३० से गुणा तब १९०८० हुए १८७५ का भाग दिया लब्ध गत दिन १० हुए शेष ३३० को ६० से गुणा १९८०० हुए १८७५ का भाग दिया लब्ध गत घटी १० शेष १००० को ६० से गुणा तब ६०००० हुए १८७५ का भाग दिया लब्ध गतपल ३२ हुए अर्थात् गत मासादि ४ । १० । १० । ३२ इनको

१२ में हीन किया तो वर्तमान संवत्सरके भोग्य मासादि हुए मा. ७ दि. १९ घ.४९ पल २७० अर्थात् व्ययसंवत्सर इतने दिन शुरू शाकासे और भोग करेगा॥

अन्यप्रकारः।

शाकं रामाक्षि २३ संयोज्य षष्टिभागेन हारयेत्।
शेषं संवत्सरं ज्ञेयं लब्धं तत्परिवर्तकम्॥ १॥

वर्तमानशाकामें तेईस युक्त करके साठका भाग दे लब्ध व्यर्थ, शेष गतसंवत्सर होता है एक मिलानेसे वर्तमानसंवत्सर होता है॥ १॥

उदाहरण-वर्तमान शाका १८२३ में २३ युक्त किया तब १८४६ हुए ६० का भाग दिया शेष ४६ गत संवत्सर हुआ; १ मिलाया तब ४७ अर्थात् प्रमादीनाम संवत्सर हुआ।

संवत्सरफलम्।

जातिस्वकुलधर्मात्मा विद्यावांश्च महाबलः।
क्रूरश्च कृतविद्यश्च जायते प्रभवोदयः॥ १॥

प्रभवनाम संवत्सरमें जन्म लेनेवाला मनुष्य अपने जातिकुलके अनुसार धर्मात्मा, विद्यावान्, बडा बलवान्, दुष्ट और कृतविद्य होता है॥ १॥

स्त्रीस्वभावश्च चपलस्तस्करः स धनी तथा।
परोपकारी पुरषो जायते विभवोदयः॥ २॥

विभवसंवत्सरमें जन्म लेनेवाला मनुष्य स्त्रीके तुल्य स्वभाववाला, चपल, चोर, धनवान् और परोपकारी होता है॥ २॥

शुद्धः शान्तः सुशीलश्च परदाराभिलाषुकः।
परोपकारकर्मा च निर्धनी स हि शुक्लजः॥ ३॥

शुक्लसंवत्सरमें जन्म लेनेवाला मनुष्य शुद्ध स्वभाववाला, शांत, सुशीलवान्, परस्त्रीका अभिलाषी, परोपकारी कर्म करनेवाला और निर्धनी होता है॥ ३॥

क्वचिल्लक्ष्मीः क्वचिद्भार्याबन्धुमित्रारिविग्रहः।
राजपूज्यः प्रधानश्च प्रमोदाद्भवो नरः॥ ४॥

प्रमोदसंवत्सरमें जन्म लेनेवाला मनुष्य कहीं लक्ष्मी, कहीं स्त्री, बंधु, मित्र, शत्रुके अर्थ विग्रह करनेवाला, राजासे पूज्य और प्रधान होता है॥ ४॥

प्रजापालनसन्तुष्टो दाता भोक्ता बहुप्रजः।
विदेशेषु समाख्यातो वित्तहेतोः प्रजापतौ॥ ५॥

प्रजापतिसंवत्सरमें जन्म लेनेवाला प्रजाके पालनमें संतुष्ट, दानी, भोगनेवाला, बहुत प्रजावान् और धनके हेतु विदेशमें विख्यात होता है ॥ ५ ॥

क्रियाद्याचारसम्पन्नो धर्मशास्त्रागमादिषु ।
आतिथ्यमित्रभक्तोऽयमङ्गिरोजात उच्यते ॥ ६ ॥

जिसका अंगिरासंवत्सरमें जन्म होता है वह क्रिया आदि आचारमें, धर्मशास्त्र आगम आदिमें निपुण अतिथि और मित्रका भक्त होता है ॥ ६ ॥

धनवान्देवभक्तश्च धातुव्यवहृतौ कृती ।
पाखण्डकृतकर्मा च श्रीमुखे तु भवेन्नरः ॥ ७ ॥

जिसका श्रीमुखसंवत्सरमें जन्म होता है वह धनवान्, देवताका भक्त, धातुव्यवहारमें निपुण और पाखंडके कर्म करनेवाला होता है ॥ ७ ॥

भावनां कुरुते नित्यं कर्मकर्ता पुमान्भवेत् ।
मत्स्यमांसप्रियश्चैव जायते भाववत्सरे ॥ ८ ॥

भावसंवत्सरमें जन्म लेनेवाला मनुष्य सदा तर्क करनेवाला, कार्यको करनेवाला और मछली मांससे प्रीति करनेवाला होता है ॥ ८ ॥

भार्यार्तो जलभीतश्च व्याधिदुःखादिपीडितः ।
सर्वदा प्रीतिसंयुक्तो युवसंवत्सरे फलम् ॥ ९ ॥

युवासंवत्सरमें जन्म लेनेवाला मनुष्य स्त्रीसे पीडित, जलसे भयवाला एवं व्याधि दुःख आदिसे पीडित और सदा प्रीतिमान् होता है ॥ ९ ॥

[सर्वलोकगुणगौरवयुक्तः सुन्दरोऽप्यतितरां गुरुभक्तः ।
शिल्पशास्त्रकुशलश्च सुशीलो धातृवत्सरभवो हि नरः स्यात् ॥
धाता संवत्सरमें जन्म लेनेवाला मनुष्य संपूर्णगुणोंसे पूर्ण, सुंदरशरीर, गुरुभक्त, कारीगरीकी विद्यामें अतिकुशल और सुशील होता है ॥]

धनी भोगी तथा कामी पशुपालप्रियो भवेत् ।
अर्थधर्मसमायुक्तो नर ईश्वरसंभवः ॥ १० ॥

ईश्वरसंवत्सरमें जिसका जन्म होता है वह धनवान्, भोगी, कामी, पशुओंके पालनमें प्रीति करनेवाला और अर्थ धर्मसे युक्त होता है ॥ १० ॥

वेदशास्त्ररतो नित्यं कलागान्धर्वगायनः ।
नातिगर्वी सुरापश्च जायते बहुधान्यके ॥ ११ ॥

बहुधान्यसंवत्सरमें जिसका जन्म होता है वह सदा वेद शास्त्रमें रत रहनेवाला, गांधर्व (गायनके) कलाको जाननेवाला, सुरापान करनेपर भी अति गर्वी न होनेवाला होता है ॥ ११ ॥

परदाराभिलाषी च परद्रव्यरतो नरः ।
व्यसनी द्यूतवादी च प्रमाथिनि भवेन्नरः ॥ १२ ॥

प्रमाथीसंवत्सरमें जन्म लेनेवाला मनुष्य परस्त्रीका अभिलाषी, परद्रव्यमें रत रहनेवाला, व्यसनी और द्यूतवादी होता है ॥ १२ ॥

संतुष्टो व्यसने सक्तः सप्रतापो जितेन्द्रियः ।
शूरश्च कृतविद्यश्च विक्रमे जायते नरः ॥ १३ ॥

विक्रमसंवत्सरमें जन्म लेनेवाला मनुष्य संतोषवान्, व्यसनमें आसक्त, प्रतापी, जितेन्द्रिय, शूर वीर और कृतविद्य होता है ॥ १३ ॥

स्थूलोदरः स्थूलगुल्फोऽल्पपाणिः कुलापवादी कुलसेवकश्च ।
धर्मार्थयुक्तो बहुवित्तहारी वृषे प्रजातश्च भवेन्मनुष्यः ॥ १४ ॥

वृषसंवत्सरमें जिसका जन्म होता है वह स्थूल उदरवाला, स्थूल गुल्फवाला, अल्प पाणि, कुलापवादी, कुलसेवक, धर्मार्थसे युक्त और बहुत धनहरण करनेवाला होता है ॥ १४ ॥

तेजस्वी ह्यतिगर्वी च हीनकर्माकृतस्थितिः ।
देवपूजाप्रियो नित्यं चित्रभानौ भवेन्नरः ॥ १५ ॥

चित्रभानुसंवत्सरमें जिसका जन्म होता है वह तेजवान्, बुद्धिमान्, गर्वी, हीन कर्ममें स्थित न रहनेवाला और सदा देवताकी प्रीतिसे पूजा करनेवाला होता है ॥ १५ ॥

सर्वाणि शुभकार्याणि मित्रामित्रफलं भवेत् ।
सर्वसङ्ग्रहकर्त्ता च सुभानौ जायते नरः ॥ १६ ॥

सुभानु संवत्सरमें जन्म लेनेवाला मनुष्य संपूर्ण शुभकर्म तथा मित्रामित्रके फलको पानेवाला और संपूर्ण वस्तुका संग्रह करनेवाला होता है ॥ १६ ॥

सर्वलोकप्रियो नित्यं सर्वधर्मबहिष्कृतः ।
राजपूजाप्तवित्तश्च तारणे जायते नरः ॥ १७ ॥

तारणसंवत्सरमें जिसका जन्म होता है वह सबको प्यारा, सदा सर्वधर्मसे बहिर्मुख रहनेवाला और राजपूजासे प्राप्त धनवाला होता है ॥ १७ ॥

शिवब्रह्मविकर्मा च शुभसौख्यप्रदायकः ।
भव्ययुक्तश्च धर्मात्मा पार्थिवे जायते नरः ॥ १८ ॥

पार्थिवसंवत्सरमें जिसका जन्म होता है वह शिव (कल्याणात्मक) ब्रह्म (तप) के करनेवाला, शुभ सौख्यका दायक कल्याण करके युक्त और धर्मात्मा होता है ॥ १८ ॥

दाता भोक्ता प्रधानत्वं जन्मकर्माणि सौख्यकम् ।
बहुधा मित्रलाभश्च जायते व्ययवत्सरे ॥ १९ ॥

व्ययसंवत्सरमें जिसका जन्म होता है वह दानी, भोक्ता, जन्मके कर्मकरके प्रधानत्व तथा सुखको पानेवाला और बहुधा मित्रोंके समागम करके युक्त होताहै॥१९॥

जित्वा च सकलाँल्लोकान् विष्णुधर्मपरायणः ।
पुण्यानि सर्वकर्माणि सर्वजिज्जो भवेन्नरः ॥ २० ॥

सर्वजित् संवत्सरमें जन्म लेनेवाला पुरुष संपूर्ण लोकोंको जीतकर विष्णुके धर्ममें परायण और संपूर्ण पुण्यकर्मोंको करनेवाला होता है ॥ २० ॥

पितृमातृप्रियो नित्यं गुरुभक्तो भवेन्नरः ।
शूरः शान्तः प्रतापी च सर्वधारिभवो नरः ॥ २१ ॥

सर्वधारीसंवत्सरमें जन्म लेनेवाला मनुष्य सदा मातापिताको प्रिय, गुरुका भक्त, शूर, वीर, शांतस्वभाववाला और प्रतापी होता है ॥ २१ ॥

विरोधिकर्मशार्दूलो मत्स्यमांसकृतादरः ।
धर्मबुद्धिरतो नित्यं प्रशस्तो लोकपूजितः ॥ २२ ॥

विरोधीसंवत्सरमें जिसका जन्म होता है वह राक्षसी कर्म करनेवाला, मत्स्यमांसको खानेवाला, धर्मबुद्धिमें रत, प्रशस्त और लोकपूजित होता है ॥ २२ ॥

चित्रवादी च नृत्यज्ञो गान्धर्वोऽभिन्नसंशयः ।
दाता मानी तथा भोगी विकृतौ जायते नरः ॥ २३ ॥

जिसका जन्म विकृतिसंवत्सरमें होता है वह चित्रवादी, नृत्यको जाननेवाला, गांधर्व, अभिन्नसंशय, दानी, मानवान् और भोगी होता है ॥ २३ ॥

परहिंसापरो मैत्र्या परद्रव्यरतो भवेत् ।
कुटुंबभारकोत्साही जायते खरवत्सरे ॥ २४ ॥

खरसंवत्सरमें जन्म लेनेवाला मनुष्य हिंसा करनेवाला, परद्रव्यमें रत रहनेके निमित्त मित्रता करनेवाला, कुटुम्बका भार संभालनेवाला और उत्साही होताहै॥२४॥

सर्वदा प्रीतिसंयुक्तो गृहे कल्याणकारकः।
राजमान्योऽपि पुरुषो नन्दने जायते नरः॥ २५॥

नंदनसंवत्सरमें जन्म लेनेवाला मनुष्य सदाकाल प्रीतियुक्त, गृहमें कल्याण करनेवाला और राजमान्य होता है॥ २५॥

कीर्तिरायुर्यशः सौख्यं सर्वकर्मशुभान्वितः।
युद्धे शूरोऽरिणा सक्तो विजये वत्सरे फलम्॥ २६॥

विजयसंवत्सरमें जिसका जन्म होताहै वह कीर्ति, आयु, यश, सौख्य तथा संपूर्ण शुभकर्मोंसे युक्त, युद्धमें शूर वीर और शत्रुसे अतिपुष्ट अर्थात् शत्रुजनोंका नाश करनेवाला होताहै॥ २६॥

जेता युद्धे कलत्राणि मित्रामित्रफलं लभेत्।
व्यापारकर्मसंयुक्तो जयसंवत्सरे फलम्॥ २७॥

जयसंवत्सरमें जन्म लेनेवाला मनुष्य युद्धमें दुर्गमस्थानोंको जीतनेवाला, मित्रामित्रफलको पानेवाला और व्यापारीकर्मसे युक्त होताहै॥ २७॥

अतिकामी चातिबुद्धिस्तृष्णावान् बहुधान्वितपुरुषः।
निष्ठुरोप्यतिभोग्य अविबलयुक्तोपि मन्मथे जातः॥ २८॥

मन्मथसंवत्सरमें जन्म लेनेवाला मनुष्य अति कामी, अधिक बुद्धिवाला, तृष्णावान्, बहुत पुरुषोंसे युक्त, निष्ठुर, अधिकभोगवाला और अवि (पर्वतके समान) बलवान् होताहै॥ २८॥

शुचिः शान्तः सुदक्षश्च सर्वत्र गुणपूजितः।
परोपकारी वादी च दुर्मुखे दुर्मुखीप्रियः॥ २९॥

दुर्मुखसंवत्सरमें जन्म लेनेवाला मनुष्य पवित्र, शांतस्वभाव, बडा दक्ष, गुणपूजित परोपकार करनेवाला, वादी और दुष्ट स्त्रीको भी प्रिय होताहै॥ २९॥

मणिमुक्तास्तथा रत्नमष्टधातुसमन्वितः।
अदाता कृपणः पूज्यो हेमलम्बौ नरो भवेत्॥ ३०॥

हेमलंबीसंवत्सरमें जन्म लेनेवाला मनुष्य मणि, मुक्ता, रत्न और अष्टधातुओंसे युक्त, दान न करनेवाला, कृपण और पूज्य होताहै ॥ ३० ॥

अलसः सततं जातो व्याधिदुःखसमन्वितः ।
कुटुम्बधारको वापि विलम्बौ जायते नरः ॥ ३१ ॥

विलंबीसंवत्सरमें जन्म लेनेवाला मनुष्य सदा आलसी, व्याधि और दुःखोंसे युक्त एवं कुटुम्बका धारण करनेवाला होताहै ॥ ३१ ॥

रक्तविकारयुक्तश्च रक्ताक्षः पित्तसम्भवः ।
वनाप्रियो धनैर्हीनो विकारौ तु भवेन्नरः ॥ ३२ ॥

विकारी संवत्सरमें जन्म लेनेवाला मनुष्य रक्तविकारवाला, रक्तनेत्रोंवाला, पित्त-प्रकृतिवाला, वनसे प्रीति करनेवाला और निर्धन होताहै ॥ ३२ ॥

वेदशास्त्रप्रियो देवब्राह्मणे शुचिभाक्तिमान् ।
शर्करारसभोगी च शार्वरौ जायते नरः ॥ ३३ ॥

शार्वरीसंवत्सरमें जन्म लेनेवाला मनुष्य वेदशास्त्रसे प्रीति करनेवाला, देवता ब्राह्मणमें निष्कपट भक्तिमान् और शर्करारसका भोगनेवाला होताहै ॥ ३३ ॥

सुनिद्रो बहुभोगी च व्यवसायी यशोन्वितः ।
पूजितः सर्वलोकानां प्लवसंवत्सरे फलम् ॥ ३४ ॥

प्लवसंवत्सरमें जन्म लेनेवाला मनुष्य निद्रावान्, भोगी, व्यवसायी, यशस्वी और सर्वलोकोंसे पूजित होताहै ॥ ३४ ॥

कर्मवान् सुयशाः प्रोक्तो धर्मशीलस्तपस्करः ।
प्रजापालः सुनिष्णातः शुभसंवत्सरे फलम् ॥ ३५ ॥

शुभसंवत्सरमें जिसका जन्म होताहै वह कर्मवान्, सुंदर यशवाला, धर्मशील, तप करनेवाला, प्रजापाल और बडा प्रवीण होताहै ॥ ३५ ॥

सुचित्तः शान्तचित्तश्च शूरो दाता ह्यनेकधा ।
नातिवृद्धो न पूर्णत्वं शोभने फलमश्नुते ॥ ३६ ॥

जिसका जन्म शोभनसंवत्सरमें होताहै वह सुंदरचित्तवाला, शांतचित्तवाला, शूर वीर, बहु प्रकारका दानी, न अधिक वृद्ध और न कोई काम उसका पूर्णताको प्राप्त होता है ॥ ३६ ॥

अतिक्रोधमतिः शूरो विज्ञानौषधिसंग्रहः।
परापवादी सर्वत्र क्रोधसंवत्सरे फलम् ॥ ३७ ॥

अत्यंत क्रोधी, शूर वीर, ज्ञानवान्, औषधिका संग्रह करनेवाला तथा सर्वत्र दूसरोंका अपवाद (मिथ्याकलंक) करनेवाला मनुष्य क्रोधीसंवत्सरमें जन्म लेनेसे होता है ॥ ३७ ॥

छत्रदण्डपताकादिचामरादिविभूषितः।
प्रधानपुरुषो जातो विश्वसंवत्सरे फलम् ॥ ३८ ॥

जिसका जन्म विश्वावसु संवत्सरमें हो वह पुरुष छत्र, ध्वजा, पताका, चामर आदिसे विभूषित, जनोंमें श्रेष्ठ होता है ॥ ३८॥

भयार्त्तः शीतभीतश्च कातरो जायते नरः।
अधर्मपरघाती च पराभवभवो मतः ॥ ३९ ॥

जिसका जन्म पराभव संवत्सरमें हो वह भयसे पीडित तथा शीतसे डरनेवाला, कातर (डरपोक), अधर्मी, दूसरोंपर चोट पहुँचानेवाला मनुष्य होता है ॥ ३९ ॥

रौद्रस्तस्करकर्मा च क्षितिपालो नरेश्वरः।
योगाभ्यासरतो नित्यं प्लवङ्गे जायते नरः ॥ ४० ॥

जिसका जन्म प्लवंग संवत्सरमें हो वह मनुष्य भयानक, चोरीके कर्म करनेवाला, पृथ्वीका पालक, नरेश्वर और योगाभ्यासमें सदा रत रहता है ॥ ४० ॥

चित्रकर्तृ (र्ता) समानश्च सुखी स्याद्ब्राह्मणप्रियः।
पितृमातृषु भक्तश्च जायते कीलके फलम् ॥ ४१ ॥

चित्रकर्ताकी समान, सुखी, ब्राह्मणप्रिय, माता-पिताका भक्त, कीलकसंवत्सरमें जन्म लेनेवाला मनुष्य होता है ॥ ४१ ॥

शुचिः शीलः समो दक्षः सप्रतापो जितेन्द्रियः।
अतिव्याकुलभक्तश्च सौम्ये सौम्यफलं भवेत् ॥ ४२ ॥

शुद्धचित्तवाला, शीलवान्, बुद्धिमान्, प्रतापवाला, इन्द्रियजित्, दीनका भक्त, शुभफल भोगनेवाला सौम्यसंवत्सरमें उत्पन्न मनुष्य होता है ॥ ४२ ॥

व्यवसायी चाल्पतुष्टो धर्मकर्मरतः सदा।
शीघ्रागमोऽपि तत्रैव फलं साधारणे मतम् ॥ ४३ ॥

उद्यम करनेवाला, अल्पसंतोषी, धर्मकर्ममें सदा रत रहनेवाला साधारण संवत्सरमें जन्म लेनेसे मनुष्य होता है ॥ ४३ ॥

विरोधकृतितो जातो विरोधी बान्धवैः सह ।
क्षणं सौम्यः क्षणं हीनो दुर्वारो जायते नरः ॥ ४४ ॥

सज्जनोंसे और भाई बंधुओंसे विरोध करनेवाला, क्षणमें क्रोधरहित और क्षणमें हीन और दुर्वार विरोधकृत् संवत्सरमें जन्म होनेसे मनुष्य होता है ॥ ४४ ॥

स्वल्पबुद्धिः क्रियास्वल्पो देशं भ्राम्यति मानवः ।
देवतीर्थप्रियो नित्यं परिधाविनि जायते ॥ ४५ ॥

थोडी बुद्धि और क्रियावाला, देशदेश भ्रमण करनेवाला, देवतातीर्थमें नित्य प्रीति रखनेवाला परिधावी संवत्सरमें जन्म लेनेसे मनुष्य होता है ॥ ४५ ॥

शर्वभक्तिप्रियो नित्यं गन्धमाल्यानुलेपनैः ।
शौचक्रियानुरक्तश्च प्रमादिप्रभवो नरः ॥ ४६ ॥

प्रमादी संवत्सरमें उत्पन्न होनेवाला मनुष्य चन्दन, पुष्प, धूपादिसे नित्य शिवजीकी भक्तिसे पूजा करनेवाला और शौचाचारमें प्रीति रखनेवाला होता है ॥४६॥

सर्वदाऽऽनन्दसंयुक्तः सर्वदाऽतिथिपूजकः ।
स्वजनार्थागमो नित्यमानन्दे जायते नरः ॥ ४७ ॥

आनंदसंवत्सरमें जन्म लेनेवाला मनुष्य सर्व काल प्रसन्न रहनेवाला सदा अतिथिका सत्कार करनेवाला और सदा स्वजनोंसे धन पानेवाला होता है ॥ ४७ ॥

मत्स्यमांसप्रियो नित्यं नित्यं लुब्धकवृत्तिमान् ।
सुराहारी वृथा पापी जायते राक्षसे नरः ॥ ४८ ॥

जिसका जन्म राक्षससंवत्सरमें हो वह मनुष्य सदा मछली-मांसका प्रेमी, वधिकवृत्तिवाला, मदिरा पीनेवाला और पापी होता है ॥ ४८ ॥

बहुपुत्रोऽनन्तमित्रो द्रव्यलोभी कलिप्रियः ।
हानिः शोकस्तथा दुःखं नले जातो भवेन्नरः ॥ ४९ ॥

जिसका जन्म नलसंवत्सरमें हो वह मनुष्य बहुतपुत्रोंवाला और बहुत मित्रोंवाला, धनका लोभ करनेवाला, लडाई झगडेका प्यार करनेवाला तथा हानि शोक एवं दुःखको भोगनेवाला होता है ॥ ४९ ॥

पित्तप्रकोपसर्वात्मा नानाव्याधिरनेकधा ।
वाहनैश्च समायुक्तः पिङ्गले जायते नरः ॥ ५० ॥

जिसका जन्म पिंगलसंवत्सरमें हो वह मनुष्य पित्तकोपप्रकृतिवाला, बहुधा अनेक व्याधियोंसे युक्त और बहुत वाहनों (सवारियों) से युक्त होता है ॥ ५० ॥

कृषिवाणिज्यकर्त्ता च तैलभाण्डादिसंग्रही ।
क्रयविक्रयकर्त्ता च कालयुक्ते भवेन्नरः ॥ ५१ ॥

खेती और वाणिज्य करनेवाला, तैलभांडादिक संग्रह करनेवाला, खरीदने और बेंचनेके कर्मको करनेवाला मनुष्य कालयुक्त संवतसरमें जन्म लेनेसे होता है ॥ ५१ ॥

वेदशास्त्रप्रभावज्ञः सिद्धिचित्तश्च कोमलः ।
सुकुमारो नृपैः पूज्यः कविः सिद्धार्थिजो नरः ॥ ५२ ॥

वेद और शास्त्रके प्रभावको जाननेवाला, सुंदर चित्तवाला, कोमल, सुकुमार, राजाओंसे पूज्य और पंडित सिद्धार्थिसंवत्सरमें उत्पन्न होनेसे मनुष्य होता है ॥ ५२ ॥

तस्करश्चपलो धृष्टः परद्रव्यरतः सदा ।
निन्द्यानि सर्वकर्माणि कुरुते रौद्रसंभवः ॥ ५३ ॥

चोर, चपल, निर्दयी, पराये द्रव्यमें सदा रत रहनेवाला, निंदित काम करनेवाला मनुष्य रौद्रसंवत्सरमें जन्म लेनेसे होता है ॥ ५३ ॥

पापबुद्धिरतो नित्यं पापात्मा पापसंश्रितः ।
बोधकर्मसमायोगो दुर्मतौ जायते नरः ॥ ५४ ॥

पापबुद्धिमें रत रहनेवाला, पापी और पापहीका आश्रय करनेवाला, बोध (बौद्ध मतके) कर्मसे युक्त मनुष्य दुर्मति संवत्सरमें उत्पन्न होनेसे होता है ॥ ५४ ॥

गीतवाद्यानि शिल्पानि मंत्रमौषधिमेव च ।
सर्वाङ्गगुणसंपन्नो नरो दुन्दुभिसंभवः ॥ ५५ ॥

गाना, बजाना, शिल्प (कारीगिरी), मंत्रविद्या, वैद्यविद्या इन सब अंगोंके गुणको जाननेवाला दुंदुभिसंवत्सरमें उत्पन्न होनेसे मनुष्य होता है ॥ ५५ ॥

वातशोणितसंयुक्तः कफमारुतमेव च ।
कौटसाक्ष्यरतश्चैव रुधिरोद्गारिसंभवः ॥ ५६ ॥

वातरक्त अथवा कफवातविकारसे युक्त, झूठ बोलनेवाला रुधिरोद्गारी संवत्सरमें उत्पन्न होनेवाला मनुष्य होता है ॥ ५६ ॥

देशत्यागो धनभ्रंशो हानिः सर्वत्र जायते।
धृता विवाहिता भार्या रक्ताक्षेयो नरो भवेत् ॥ ५७ ॥

देशको त्यागनेवाला, धनको नष्ट करनेवाला, सर्वत्र हानि पानेवाला, रखेली विवाहितस्त्रीवाला रक्ताक्षी संवत्सरमें जन्म लेनेसे मनुष्य होता है ॥ ५७ ॥

क्रोधी क्रोधसमुत्पादी सिंहतुल्यपराक्रमः।
ब्राह्मणः परजीवी च क्रोधसंवत्सरे नरः॥ ५८ ॥

क्रोधवान्, क्रोधका उत्पन्न करनेवाला, सिंहके समान पराक्रम करनेवाला, ब्राह्मण, पराधीन जीविकावाला क्रोधन संवत्सरमें उत्पन्न होनेसे मनुष्य होता है ॥ ५८ ॥

कुटुम्बकलहो नित्यं मद्यवेश्यारतो नरः।
धर्माधर्मविचारोनो जायते क्षयवत्सरे ॥ ५९ ॥

कुटुंबसे कलह करनेवाला तथा मदिरा वा वेश्यामें सदा रत रहनेवाला, धर्म और अधर्मका विचार न करनेवाला क्षयसंवत्सरमें उत्पन्न होनेसे मनुष्य होता है॥५९॥

युगानयनम्।

युगं भवेद्वत्सरपञ्चकेन युगानि च द्वादश वर्षषष्ट्याम् ॥

साठ संवत्सरोंमें बारह युग होते हैं। एक युग पांच वर्षका होता है इस प्रकार साठ ६० वर्ष अर्थात् संवत्सरोंमें बारह युग कहे हैं ॥

युगफलम्।

मद्यमांसप्रियो नित्यं परदाररतः सदा।
कविः शिल्परतः प्राज्ञो जायते प्रथमे युगे ॥ १ ॥

मदिरा मांससे प्रेम करनेवाला, सदा पराई स्त्रीमें रत रहनेवाला, कवि, कारीगिरीकी विद्या जाननेवाला और चतुर प्रथमयुगमें जन्म लेनेसे मनुष्य होता है ॥ १ ॥

वाणिज्ये व्यवहारी च धर्मिष्ठः सत्यसङ्गतः।
द्रव्यलोभ्यातिपापात्मा युगे जातो द्वितीयके ॥ २ ॥

वाणिज्य कर्ममें व्यवहार करनेवाला, धर्मवान्, अच्छे पुरुषोंकी संगति करनेवाला, धनका लोभी और अति पापी दूसरे युगमें जन्म लेनेसे मनुष्य होता है ॥ २ ॥

भोक्ता दाता कृतप्रज्ञो ब्राह्मणो देवपूजकः।
तेजस्वी धनयुक्तश्च तृतीये फलमश्नुते ॥ ३ ॥

भोक्ता, दानी, उपकार करनेवाला, ब्राह्मण और देवताओंको पूजनेवाला, तेजवान् और धनवान् मनुष्य तीसरे युगमें जन्म लेनेसे होता है ॥ ३ ॥

वाटिकाक्षेत्रलोभी स्यादोषधीप्रियमानवः।
धातुवादे द्रव्यनाशो जायते च चतुर्युगे ॥ ४ ॥

बाग, खेतकी प्राप्ति करनेवाला, औषधीको सेवन करनेवाला और धातुवादमें धननाश करनेवाला मनुष्य चौथे युगमें जन्म लेनेसे होता है ॥ ४ ॥

पुत्रोत्पत्तिः सदा प्रोक्तो धनवांश्च जितेन्द्रियः।
पितृमातृप्रियश्चैव जायते पञ्चमे युगे ॥ ५ ॥

पुत्रवान्, धनवान्, इन्द्रियोंका जीतनेवाला और पिता-माताका प्रिय मनुष्य पांचवें युगमें जन्म लेनेसे होता है ॥ ५ ॥

सर्वदा नीचशत्रुश्च सर्वदा महिषीप्रियः।
पट्टघातो भयार्त्तश्च युगे षष्ठे च जायते ॥ ६ ॥

सदा नीचशत्रुओंवाला, भैंसियोंका प्यार करनेवाला, पत्थरसे चोट पानेवाला और भयसे पीडित मनुष्य छठे युगमें जन्म लेनेसे होता है ॥ ६ ॥

बहुमित्राप्रियश्चैव व्यापारे कुटिला गतिः।
शीघ्रगामी तथा कामी जायते सप्तमे युगे ॥ ७ ॥

बहुत प्रियमित्रोंवाला, व्यापारमें कपटका करनेवाला, जल्दी चलनेवाला तथा कामी सातवें युगमें जन्म लेनेसे मनुष्य होता है ॥ ७ ॥

पापकर्त्ता च सन्तुष्टो व्याधिदुःखान्वितस्तथा।
कर्त्ता च परहिंसाया जायते त्वष्टमे युगे ॥ ८ ॥

पापकर्म करनेवाला, संतोषी, व्याधि दुःखसे युक्त और दूसरोंकी हिंसा करनेवाला आठवें युगमें उत्पन्न होनेसे मनुष्य होता है ॥ ८ ॥

वापीकूपतडागादिदेवदीक्षातिथिप्रियः।
भूपतिर्वृत्रजित्तुल्यो जायते नवमे युगे ॥ ९ ॥

बावडी, कुंआ, तडागादि तथा देवदीक्षा और अभ्यागत इनमें प्यार करनेवाला राजा इन्द्रके समान मनुष्य नवम युगमें जन्म लेनेसे होता है ॥ ९ ॥

राजाधिराजमंत्री च स्थानप्राप्तिमहासुखः।
सुवेषरूपो दाता च जायते दशमे युगे ॥ १० ॥

राजाधिराजका मंत्री, स्थानप्राप्ति करनेवाला, बहुत सुखी, सुंदरवेष एवं रूपवाला और दानी दशम युगमें जन्म लेनेसे मनुष्य होता है ॥ १० ॥

बुद्धिमांश्च सुशीलश्च स्थापकश्चासुरद्विषाम् ।
संग्रामे च भवेच्छूरो जात एकादशे युगे ॥ ११ ॥

जिसका जन्म ग्यारहवें युगमें हो वह मनुष्य बुद्धिमान्, सुंदरशीलवान्, देवताओंका माननेवाला और युद्धमें शूरवीर होता है ॥ ११ ॥

तेजस्वी च प्रसन्नात्मा नरमध्ये महाजनः ।
कृषिवाणिज्यकर्त्ता च जायते द्वादशे युगे ॥ १२ ॥

बारहवें युगमें जन्म लेनेवाला मनुष्य तेजस्वी, प्रसन्न चित्तवाला, मनुष्योंमें श्रेष्ठ, खेती व वाणिज्यकर्मका करनेवाला होता है ॥ १२ ॥

अयनानयनविधिः ।

मकरादिगते षट्के सूर्यस्यैवोत्तरायणम् ।
कर्कादिषट्कगे सूर्ये दक्षिणायनमुच्यते ॥ १ ॥

मकर आदि छः राशियोंमें सूर्यके रहनेसे उत्तरायण और कर्क आदि छः राशियोंमें सूर्यके होनेसे दक्षिणायन संज्ञा कहते हैं ॥ १ ॥

अन्यद्रत्नमालायाम्-

शिशिरपूर्वमृतुत्रयमुत्तरं ह्ययनमाहुरहश्च तदामरम् ।
भवति दक्षिणमन्यदृतुत्रयं निगदिता रजनी मरुतां च सा ॥ १ ॥

रत्नमालामें अयनविधि इस भांति कहते हैं-शिशिर आदि तीन ऋतु जिनमें देवताओंका दिन होता है उसको उत्तरायण और वर्षादि तीन ऋतु जिनमें देवताओंकी रात्रि होती है उसको दक्षिणायन जानना ॥ १ ॥

अयनफलम् ।

उत्तरायणजो मर्त्यः सर्वशास्त्रविशारदः ।
धर्मार्थकामशीलश्च गुणवांश्च सुरूपवान् ॥ १ ॥

उत्तरायण सूर्यमें उत्पन्न होनेवाला मनुष्य संपूर्णशास्त्रोंका ज्ञाता, धर्म, अर्थ और कामयुक्त, शीलवान्, गुणवान् और सुंदररूपवाला होता है ॥ १ ॥

याम्यायने नरो जातः कूटसाक्षी सदाऽनृतः ।
अधर्मी चाथ रोगी च बहुव्याधिः सदा भवेत् ॥ २ ॥

दक्षिणायन सूर्यमें जो उत्पन्न होताहै वह कपटकी उपाय करनेवाला, झूठ बोलनेवाला, धर्मसे रहित, रोगी और बहुत व्याधियोंसे ग्रसित होता है ॥ २ ॥

गोलानयनविधिः ।

मेषादिषट्कगे सूर्ये उत्तरो गोल उच्यते ।
तुलादिषट्कगे सूर्ये याम्यगोलः स उच्यते ॥ १ ॥

मेष आदि छः राशियोंमें सूर्यके रहनेसे उत्तरगोल और तुलादि छः राशियोंमें सूर्यके होनेसे याम्य गोल होता है ॥ १ ॥

गोलफलम् ।

जात उत्तरगोलेषु धनवान् विद्ययाऽन्वितः ।
पुत्रपौत्रादियुक्तश्च राजमान्यो नरो भवेत् ॥ १ ॥

उत्तर गोलमें जो मनुष्य जन्म लेता है वह धनवान्, विद्यावान्, पुत्र पौत्रादिसे युक्त, राजाओंका मान्य होता है ॥ १ ॥

याम्यगोलेषु यो जातः सदा स सुखवर्जितः ।
कूटसाक्षी दुराचारी हीनाङ्गश्चापि निर्धनः ॥ २ ॥

याम्यगोलमें जो मनुष्य उत्पन्न हुआ है वह सदा सुखसे रहित, व्यंग्य वचन कहनेवाला, बुरे चाल चलनवाला, अंगहीन और धनहीन होता है ॥ २ ॥

रत्नमालायाम् ऋतोरानयनविधिः ।

मृगादिराशिद्वयभानुभोगः षट्कं ह्यृतूनां शिशिरो वसन्तः ।
ग्रीष्मश्च वर्षाश्शरदश्च तद्वद्धेमन्तनामा कतिथोऽत्र षष्ठः ॥ १ ॥

मकर कुंभराशिके सूर्यमें शिशिर ऋतु, मीन मेषके सूर्यमें वसंत, वृष मिथुनके सूर्यमें ग्रीष्म, कर्क सिंहके सूर्यमें वर्षा, कन्या तुलाके सूर्यमें शरद्, वृश्चिक धनके सूर्यमें हेमंत ऋतु जानना ॥ १ ॥

ऋतुफलम् ।

रूपयौवनसंपन्नो दीर्घसूत्रो मदोत्कटः ।
साधुयुक्तः कामुकश्च शिशिरे जायते नरः ॥ १ ॥

रूपयौवनवाला, दीर्घसूत्री, अत्यंत गर्ववान्, साधुतायुक्त और कामी शिशिर ऋतुमें जन्म होनेसे मनुष्य होताहै ॥ १ ॥

महोद्यमी मनस्वी च तेजस्वी बहुकार्यकृत् ।
नानादेशरसाभिज्ञो वसन्ते जायते नरः ॥ २ ॥

वसंत ऋतुमें जन्म होनेसे मनुष्य बडा उद्यमी, विचार करनेवाला, तेजवान्, बहुतकार्यका करनेवाला और अनेक देशके रसका जाननेवाला होता है ॥ २ ॥

बह्वारम्भो जितक्रोधः क्षुधालुः कामुको नरः ।
दीर्घः शठो बुद्धिमांश्च ग्रीष्मे जातः सदा शुचिः ॥ ३ ॥

जिसका जन्म ग्रीष्मऋतुमें होताहै वह मनुष्य, बहुत कार्योंका प्रारंभ करनेवाला, जितक्रोध, क्षुधालु, कामी, लंबा, शठ, बुद्धिमान् और सदा पवित्र रहनेवाला होता है ॥ ३ ॥

गुणवान्भोगयुक्तश्च राजपूज्यो जितेन्द्रियः ।
कुशलोऽर्थानुवादी च वर्षाकाले भवेन्नरः ॥ ४ ॥

वर्षाऋतुमें जन्म लेनेवाला मनुष्य गुणवान्, भोगोंसे युक्त, राजासे पूज्य, इन्द्रियोंका जीतनेवाला, कुशल और अपने अर्थकी बात करनेवाला होता है ॥ ४ ॥

वाणिज्यकृषिवृत्तिश्च धनधान्यसमृद्धिमान् ।
तेजस्वी बहुमान्यश्च शरज्जातो भवेन्नरः ॥ ५ ॥

शरद् ऋतुमें जन्म लेनेवाला मनुष्य वाणिज्य और खेतीसे जीविकावाला, धनधान्यसे युक्त, तेजवान्, बहुत मान पानेवाला होताहै ॥ ५ ॥

बहुव्याधिर्हीनतेजास्त्रासयुक्तोऽतिनिष्ठुरः ।
ह्रस्वपीनगलो भीरुर्हेमन्ते जायते नरः ॥ ६ ॥

हेमंतऋतुमें जन्म लेनेवाला पुरुष बहुत व्याधियोंसे युक्त, तेजहीन, त्रास पानेवाला, निष्ठुर, छोटा और पुष्ट कंठवाला तथा भयसे युक्त होताहै ॥ ६ ॥

द्वादशमासफलम् ।

चैत्रे च दृष्टिभाजः स्यात्साहङ्कारः शुभाकरः ।
रक्तेक्षणः सरोषश्च स्त्रीलोलः स भवेत्सदा ॥ १ ॥

चैत्रमासमें जन्म लेनेवाला मनुष्य दर्शनीय, अहंकारसहित, श्रेष्ठकर्म करनेवाला, लाल नेत्रोंवाला, क्रोधवान् और चपल स्त्रीवाला, स्त्रियोंमें चंचल होताहै ॥ १ ॥

भोगी धनी सुचित्तश्च सक्रोधश्च सुलोचनः ।
सुरूपो वल्लभः स्त्रीणां माधवे जायते नरः ॥ २ ॥

वैशाखमासमें जो उत्पन्न होता है वह भोगी (सर्वसुखयुक्त), धनवान्, अच्छे चित्त (विचार) वाला, क्रोधवान्, सुन्दर नेत्रोंवाला, रूपवान्, स्त्रियोंका प्यारा होता है ॥ २ ॥

परदेशरतश्चैव शुभचित्तो धनान्वितः ।
दीर्घायुश्च सुबुद्धिश्च ज्येष्ठे सुष्ठु धनी भवेत् ॥ ३ ॥

ज्येष्ठमासमें जो उत्पन्न होता है वह विदेशमें (रत) रहनेवाला, शुभचित्तवाला, बडी उमरवाला और बुद्धिमान् होता है ॥ ३ ॥

पुत्रपौत्रान्वितो धर्मी वित्तनाशेन पीडितः ।
सुवर्णश्चाल्पसुखितो ह्याषाढे च भवेन्नरः ॥ ४ ॥

आषाढमासमें जो उत्पन्न होता है वह पुत्रपौत्रादिसे युक्त, धर्मवान्, धन नाश हो जानेके कारण पीडित, सुन्दरवर्णवाला और थोडा सुख भोगनेवाला होता है ॥ ४ ॥

सुखदुःखे तथा हानौ लाभे च समचित्तकः ।
स्थूलदेहः सुरूपश्च श्रावणे जायते नरः ॥ ५ ॥

श्रावणमासमें जो उत्पन्न होता है वह सुख, दुःख तथा हानि वा लाभमें एक समान चित्तवाला, मोटा देहवाला और सुरूपवान् होता है ॥ ५ ॥

नित्यप्रमोदी जल्पाकः पुत्रयुक्तः सुखी भवेत् ।
मृदुभाषी सुशीलश्च भाद्रजातो भवेन्नरः ॥ ६ ॥

भाद्रपदमें जो उत्पन्न होता है वह सदा खुश रहनेवाला, बहुत बात करनेवाला, पुत्रवान्, सुखी, मीठे वचन बोलनेवाला, सुन्दर और शीलवान् होता है ॥ ६ ॥

सुरूपश्च सुखैर्युक्तः काव्यकर्ता परः शुचिः ।
गुणवान् धनवान् कामी ह्याश्विने जायते नरः ॥ ७ ॥

आश्विन मासमें जो उत्पन्न होता है वह सुन्दररूपवाला, सुखी, काव्यरचना करनेवाला, अत्यन्त पवित्रतावान्, गुणवान्, धनी और कामी होता है ॥ ७ ॥

सुधनी कामबुद्धिश्च दुरात्मा क्रयविक्रयी ।
पापीयान् दुष्टचित्तश्च कार्त्तिके जायते नरः ॥ ८ ॥

कार्त्तिकमासमें जो उत्पन्न होता है वह धनवान्, काम बुद्धिवाला, दुष्ट आत्मा-वाला, क्रय (खरीदना) विक्रय (बेंचना) कर्म करनेवाला, पापी और दुष्ट चित्त-वाला होता है ॥ ८ ॥

मृदुभाषी धनी धर्मी बहुमित्रः पराक्रमी ।
परोपकारी जातश्च मार्गशीर्षे भवेन्नरः ॥ ९ ॥

मार्गशीर्षमासमें जो उत्पन्न होता है वह मीठे वचन बोलनेवाला, धनवान्, धर्मवान्, बहुत मित्रोंवाला, पराक्रमी और दूसरोंका उपकार करनेवाला होता है ॥ ९ ॥

शूर उग्रप्रतापी च पितृदेवविवर्जितः ।
ऐश्वर्यजन्मकारी च पौषे मासे नरो भवेत् ॥ १० ॥

पौषमें जो उत्पन्न होता है वह शूर, उग्र (कठोर) प्रतापवाला, पितर-देवताओंका न माननेवाला और ऐश्वर्यका उत्पन्न करनेवाला होता है ॥ १० ॥

मतिमान् धनवांश्चैव शूरो निष्ठुरभाषकः ।
कामुकश्च रणे धीरो माघजातो भवेन्नरः ॥ ११ ॥

माघमासमें जो उत्पन्न होता है वह बुद्धिमान्, धनवान्, शूरवीर, निष्ठुर वचन बोलनेवाला, कामी और युद्धमें धीर होता है ॥ ११ ॥

शुक्लः परोपकारी च धनविद्यासुखान्वितः ।
विदेशे भ्रमते नित्यं फाल्गुने जायते नरः ॥ १२ ॥

फाल्गुनमासमें जन्म लेनेवाला मनुष्य शुक्लवर्णवाला, दूसरोंका उपकार करनेवाला, धनवान्, विद्यावान्, सुखी और सदा विदेशमें भ्रमण करनेवाला होता है ॥ १२ ॥

विषयहीनमतिः सुचरित्रदृग् विविधतीर्थकरश्च निरामयः ।
सकलवल्लभ आत्महिते[1] रतः खलु मलिम्लुचमासभवो नरः १३॥

मलमासमें जो उत्पन्न होता है वह संसारके विषयोंसे विरक्त, श्रेष्ठ कार्य करनेवाला, तीर्थकी यात्रा करनेवाला, रोगरहित, सबका प्यारा और अपना हित करनेवाला होता है ॥ १३ ॥

पक्षफलम् ।

निष्ठुरो दुर्मुखश्चैव स्त्रीद्वेषी मतिहीनकः ।
परप्रेष्यो जनैर्युक्तः कृष्णपक्षे प्रजायते ॥ १ ॥

कृष्णपक्षमें जन्म लेनेवाला मनुष्य निष्ठुर, दुर्मुखवाला, स्त्रीसे द्वेष करनेवाला, हीनमतिवाला और परप्रेष्य, जनोंकरके युक्त होता है ॥ १ ॥

पूर्णचन्द्रनिभः श्रीमान् सोद्यमी बहुशास्त्रवित् ।
कुशलो ज्ञानसंपन्नः शुक्लपक्षे भवेन्नरः ॥ २ ॥

---

१ आत्महितंकरः इत्यपि पाठः ।

शुक्लपक्षमें जन्म लेनेवाला मनुष्य पूर्ण चंद्रमाके समान शोभित, धनवान्, उद्यमी, अनेक शास्त्रका जाननेवाला, कुशल और ज्ञानवान् होता है ॥ २ ॥

तिथिफलम् ।

क्रूरसङ्गो धनैर्हीनः कुलसन्तापकारकः ।
व्यसनासक्तचित्तश्च प्रतिपत्तिथिजो नरः ॥ १ ॥

प्रतिपदातिथिमें जिसका जन्म होताहै वह दुष्टोंका साथ करनेवाला, निर्धनी, कुलका संताप करनेवाला और व्यसनी होता है ॥ १ ॥

परदाररतो नित्यं सत्यशौचविवर्जितः ।
तस्करः स्नेहहीनश्च द्वितीयासंभवो नरः ॥ २ ॥

द्वितीयामें जन्म लेनेवाला सदा परस्त्रीमें रत, सत्यता और पवित्रतासे हीन, चोर और स्नेहसे रहित होता है ॥ २ ॥

अचेतनोऽतिविकलो निर्द्रव्यः पुरुषः सदा ।
परद्वेषरतो नित्यं तृतीयायां भवेन्नरः ॥ ३ ॥

तृतीयातिथिमें जन्म लेनेवाला मनुष्य बुद्धिहीन, अत्यंत विकल, धनहीन, दूसरोंके साथ द्वेष करनेवाला होता है ॥ ३ ॥

महाभोगी च दाता च मित्रस्नेही विचक्षणः ।
धनसन्तानयुक्तश्च चतुर्थ्यां यदि जायते ॥ ४ ॥

चतुर्थीतिथिमें जन्म लेनेवाला बडा भोगी, दानी, मित्रोंसे स्नेह रखनेवाला, चतुर, धन और संतानसे युक्त होता है ॥ ४ ॥

व्यवहारी गुणग्राही पितृमात्रोश्च रक्षकः ।
दाता भोक्ता तनुप्रीतः पञ्चमीसंभवो नरः ॥ ५ ॥

पंचमीतिथिमें जन्म लेनेवाला मनुष्य व्यवहारी, गुणोंका ग्रहण करनेवाला पिता माताका रक्षक, दानी, भोगी और शरीरको सँभालनेवाला होता है ॥ ५ ॥

नानादेशाभिगामी च सदा कलहकारकः ।
नित्यं जठरपोषी च षष्ठ्यां जातो भवेन्नरः ॥ ६ ॥

षष्ठीतिथिमें जन्म लेनेवाला मनुष्य अनेक देशोंमें पर्यटन करनेवाला, सदा लडाई झगडा करनेवाला और पेटका पालन करनेवाला होता है ॥ ६ ॥

अल्पतोषी च तेजस्वी सौभाग्यगुणसंयुतः।
पुत्रवान् धनसंपन्नः सप्तम्यां जायते नरः ॥ ७ ॥

सप्तमीतिथिमें जन्म लेनेवाला प्राणी थोडेमें संतोषवाला, तेजवान्, सौभाग्यशाली, गुणी, पुत्रवान् और धनसम्पन्न होता है ॥ ७ ॥

धर्मिष्ठः सत्यवादी च दाता भोक्ता च वत्सलः।
गुणज्ञः सर्वकार्यज्ञो ह्यष्टमीसंभवो नरः ॥ ८ ॥

अष्टमीतिथिमें जन्म लेनेवाला मनुष्य धर्मवान्, सत्य बोलनेवाला, दानी, भोक्ता, दयालु, गुणी और संपूर्ण कर्मोंमें निपुण होता है ॥ ८ ॥

देवताराधकः पुत्री धनस्त्रीसक्तमानसः ॥
शास्त्राभ्यासरतो नित्यं नवम्यां जायते यदि ॥ ९ ॥

नवमीतिथिमें जन्म लेनेवाला मनुष्य देवताओंका आराधक, पुत्रवान्, धन एवं स्त्रीमें सक्तमनवाला और शास्त्रके अभ्यासमें सदा रत रहनेवाला होता है ॥ ९ ॥

दशम्यां धर्माधर्मज्ञो देवसेवी च याजकः।
तेजस्वी सौख्यसंयुक्तो जायते मानवः सदा ॥ १० ॥

दशमीतिथिमें जन्म लेनेवाला मनुष्य धर्म व अधर्मको जाननेवाला, देवताओंकी सेवा करनेवाला, यज्ञ करनेवाला, तेजवान् और सदा सुखसे युक्त होता है ॥ १० ॥

अल्पतोषी नरेन्द्रस्य गेहगामी शुचिर्भवेत्।
धनी पुत्री भवेद्धीमानेकादश्यां भवेन्नरः ॥ ११ ॥

एकादशीतिथिमें जन्म लेनेवाला मनुष्य थोडे धैर्यवाला, राजाके स्थानमें रहनेवाला, स्वरूपवान्, धनवान् और विद्यावान् होता है ॥ ११ ॥

चपलश्चपलज्ञानी सदा क्षीणवपुः स्मृतः।
देशभ्रमणशीलश्च द्वादशीजातको भवेत् ॥ १२ ॥

द्वादशीतिथिमें जन्म लेनेवाला मनुष्य चंचल एवं चपलताको जाननेवाला, दुबले शरीरवाला और देशाटन करनेवाला होता है ॥ १२ ॥

महासिद्धो महाप्राज्ञः शास्त्राभ्यासी जितेन्द्रियः।
परकार्यरतो नित्यं त्रयोदश्यां यदा भवेत् ॥ १३ ॥

त्रयोदशीतिथिमें जन्म लेनेवाला मनुष्य महासिद्ध, बडा विद्वान्, शास्त्राभ्यास करनेवाला, इन्द्रियोंको वशमें रखनेवाला और सदा दूसरोंके काममें रहनेवाला होता है ॥ १३ ॥

धनाढ्यो धर्मशीलश्च शूरः सद्वाक्यपालकः।
राजमान्यो यशस्वी च चतुर्दश्यां यदा भवेत् ॥ १४ ॥

चतुर्दशी तिथिमें जन्म लेनेवाला मनुष्य धनवान्, धर्मशील, शूरवीर, सत्य बोल-नेवाला, राजासे मान पानेवाला और यशस्वी होता है ॥ १४ ॥

श्रीमांश्च मतिमांश्चापि महाभोजनलालसः।
उद्यतः परदारेषु ह्यासक्तः पूर्णिमाभवः ॥ १५ ॥

पौर्णमासी तिथिमें जन्म लेनेवाला मनुष्य धनवाला, बुद्धिवाला, अधिक भोज-नकी लालसा रखनेवाला, उद्यत और परस्त्रियोंमें आसक्त रहनेवाला होता है ॥ १५॥

स्थिरारम्भः परद्वेषी वक्रो मूर्खः पराक्रमी।
मूढमन्त्री च सज्ज्ञानोऽप्यमावास्याभवो नरः ॥ १६ ॥

अमावास्या तिथिमें जन्म लेनेवाला मनुष्य आलसी, दूसरोंके साथ ईर्षा रख-नेवाला, क्रोधी, मूर्ख, पराक्रमी, गूढमंत्री और ज्ञानवान् होता है ॥ १६ ॥

नंदादितिथिफलम्।

नन्दा भद्रा जया रिक्ता पूर्णा च तिथयः क्रमात्।
वारत्रयं समावर्त्य तिथयः प्रतिपन्मुखाः ॥ १ ॥

नंदा, भद्रा, जया, रिक्ता और पूर्णा ये पांच तिथियें क्रमानुसार प्रतिपदासे तीन वार गणना करनेपर होती हैं. यथा १ । ६ । ११ को नंदा, २ । ७ । १२ को भद्रा, ३ । ८ । १३ को जया, ४ । ९ । १४ को रिक्ता और ५ । १० । १५ को पूर्णा तिथि जानो ॥ १ ॥

नंदादितिथिफलम्।

नन्दातिथौ नरो जातो महामानी च कोविदः।
देवताभक्तिनिष्ठश्च ज्ञानी च प्रियवत्सलः ॥ १ ॥

नंदातिथिमें जन्म लेनेवाला मनुष्य बडे मानवाला, पंडित, देवताओंकी भक्तिमें निष्ठावाला, ज्ञानवान् और प्यारा होता है ॥ १ ॥

भद्रातिथौ बन्धुमन्यो राजसेवी धनान्वितः।
संसारभयभीतश्च परमार्थमतिर्नरः ॥ २ ॥

भद्रा तिथिमें जन्म लेनेवाला मनुष्य बंधुसे मान्य, राजसेवी, धनवान्, संसारके भय (मृत्यु) से डरनेवाला और परमार्थी होता है ॥ २ ॥

जयातिथौ राजपूज्यः पुत्रपौत्रादिसंयुतः ।
शूरः शान्तश्च दीर्घायुर्मनोविज्ञश्च जायते ॥ ३ ॥

जया तिथिमें जन्म लेनेवाला मनुष्य राजासे पूज्य, पुत्र पौत्र आदिसे युक्त, शूरवीर, शांतस्वभाववाला, चिरंजीवी और दूसरोंके मनको जाननेवाला होता है ॥ ३ ॥

रिक्तातिथौ वितर्कज्ञः प्रमादी गुरुनिन्दकः ।
शास्त्रज्ञो मदहन्ता च कामुकश्च नरो भवेत् ॥ ४ ॥

रिक्तातिथिमें उत्पन्न हुआ मनुष्य तर्कवितर्कका ज्ञाता, विना विचारे काम करनेवाला, गुरुनिंदक, शास्त्रज्ञ और कामी होता है ॥ ४ ॥

पूर्णातिथौ धनैः पूर्णो वेदशास्त्रार्थतत्त्ववित् ।
सत्यवादी शुद्धचेता विज्ञो भवति मानवः ॥ ५ ॥

जिसका पूर्णातिथिमें जन्म होता है वह धनसे पूर्ण, वेदशास्त्रार्थके तत्त्वका ज्ञाता, सत्यवक्ता, सुचित्तवाला और विज्ञ होताहै ॥ ५ ॥

जन्मवारफलम् ।

पित्ताधिकोऽतिचतुरस्तेजस्वी समरप्रियः ।
दाता दाने महोत्साही सूर्यवारे भवेन्नरः ॥ १ ॥

जो मनुष्य रविवारमें जन्मता है वह अधिक पित्तप्रकृतिवाला, अतिचतुर, तेजस्वी, लडाईमें प्रेमी, दाता और दानमें बडा उत्साही होता है ॥ १ ॥

मतिमान्प्रियवाक् शान्तो नरेन्द्राश्रयजीविकः ।
समदुःखसुखः श्रीमान् सोमवारे भवेत्पुमान् ॥ २ ॥

सोमवारमें जन्म लेनेवाला मनुष्य बुद्धिमान्, प्रियवाणी बोलनेवाला, शांतस्वभाववान्, राजाके आश्रयसे जीविका करनेवाला, दुःख और सुखको समान माननेवाला, धनी होता है ॥ २ ॥

वक्रबुद्धिर्जराजीवी रणोत्साही महाबली ।
सेनानीस्तंत्रपालो वा धरापुत्रदिनोद्भवः ॥ ३ ॥

भौमवारमें जन्म लेनेवाला मनुष्य कठोरबुद्धिवाला, जराअवस्थातक जीनेवाला और रणमें उत्साह रखनेवाला, महाबली, सेनाधीश और कुटुंबपालक होता है ॥ ३ ॥

लिपिलेखनजीवी स्यात्प्रियवाक्पण्डितः सुधीः ।
रूपसंपत्तिसंयुक्तो बुधवासरसंभवः ॥ ४ ॥

बुधवारमें जन्म लेनेवाला मनुष्य लेखनीसे जीविका चलानेवाला, सुन्दरवाणीवाला, पंडित, सुन्दरबुद्धिवाला, रूप और धनसे युक्त होता है ॥ ४ ॥

धनविद्यागुणोपेतो विवेकी जनपूजकः।
आचार्यः सचिवो वा स्याद्गुरुवासरसंभवः ॥ ५ ॥

गुरुवारमें जन्म लेनेवाला मनुष्य धन-विद्या तथा गुणको उपार्जन करनेवाला, संपूर्ण वस्तुओंका ज्ञाता, मनुष्योंसे माननीय और अध्यापक वा मन्त्री होता है ॥ ५ ॥

चलचित्तः सुरद्वेषी धनक्रीडारतः सदा।
बुद्धिमान् सुभगो वाग्मी भृगुवारे भवेन्नरः ॥ ६ ॥

शुक्रवारमें जन्म लेनेवाला मनुष्य चंचलचित्त, देवताओंको न माननेवाला, धन एवं क्रीडामें सदा लीन रहनेवाला, बुद्धिमान्, सुन्दर और वक्ता होता है ॥ ६ ॥

स्थिरजः स्थिरगीः क्रूरो दुःखचित्तः पराक्रमी।
अधोदृङ् न चलः केशी वृद्धनारीरतः सदा ॥ ७ ॥

जिसका जन्म शनिवारमें होता है वह मनुष्य रूक्ष, अचलवक्ता, क्रूर, दुःखित चित्त, पराक्रमी, नीचदृष्टिवाला, सुस्थिर, बहुत केशोंसे युक्त और सदा वृद्धा स्त्रीसे रति करनेवाला होता है ॥ ७ ॥

दिनरात्रिजातफलम्।

सद्धर्मयुक्तो बहुपुत्रभोगी प्रियान्वितः कामनिपीडिताङ्गः।
वस्त्रानुयुक्तो मतिमान्सुरूपो भवेन्मनुष्यश्च दिवाप्रसूतः ॥ १ ॥

दिनमें जन्म लेनेवाला मनुष्य श्रेष्ठधर्मसे युक्त, बहुत पुत्रोंवाला, भोगी, स्त्रीसे युक्त, कामसे पीडित अंगवाला, उत्तम वस्त्र धारण करनेवाला, बुद्धिमान् और स्वरूप-वान् होता है ॥ १ ॥

मन्दवाग्बहुकामार्तः क्षयरोगी मलीमसः।
क्रूरात्मा छिन्नपापश्च निशि जातो भवेन्नरः ॥ २ ॥

थोडी बात करनेवाला, कामसे अधिक पीडित, क्षयरोगी, मलिन चित्तवाला, दुष्टात्मा और गुप्त पापी रात्रिमें जन्म लेनेसे मनुष्य होता है ॥ २ ॥

जन्मनक्षत्रफलम्।

सुरूपः सुभगो दक्षः स्थूलकायो महाधनी।
अश्विनीसंभवो लोके जायते जनवल्लभः ॥ १ ॥

जिसका जन्म अश्विनीनक्षत्रमें हो वह मनुष्य स्वरूपवान्, मनोहर, दक्ष, वीर, स्थूलदेहवाला, बडा धनी और मनुष्योंका प्यारा होता है ॥ १ ॥

अरोगी सत्यवादी च सत्प्राणश्च दृढव्रतः।
भरण्यां जायते लोकः सुसुखी धनवानपि ॥ २ ॥

भरणी नक्षत्रमें जन्म लेनेवाला मनुष्य रोगराहित, सत्यवक्ता, सत्प्राण अर्थात् अधिक पराक्रमवाला, सुखी और धनी होता है ॥ २ ॥

कृपणः पापकर्मा च क्षुधालुर्नित्यपीडितः।
अकर्म कुरुते नित्यं कृत्तिकासंभवो नरः॥ ३ ॥

कृत्तिकानक्षत्रमें जन्म लेनेवाला मनुष्य कृपण, पापकर्म करनेवाला, क्षुधावाला, नित्य पीडासे युक्त और सदा नीचकर्म करनेवाला होता है ॥ ३ ॥

धनी कृतज्ञो मेधावी नृपमान्यः प्रियंवदः।
सत्यवादी सुरूपश्च रोहिण्यां जायते नरः ॥ ४ ॥

रोहिणीनक्षत्रमें जन्म लेनेवाला मनुष्य धनी, कृतज्ञ, बुद्धिमान्, राजासे मान पानेवाला, प्रियवक्ता, सत्यवादी और सुन्दर रूपवान् होता है ॥ ४ ॥

चपलश्चतुरो धीरः कूटकर्मस्वकर्मकृत्।
अहङ्कारी परद्वेषी मृगे भवति मानवः ॥ ५ ॥

मृगशिरनक्षत्रमें जन्म लेनेवाला चपल, चतुर, गंभीरस्वभाववाला, कूटके कर्मोंमें अकर्म करनेवाला, अहंकारी और दूसरेसे ईर्षा करनेवाला होता है ॥ ५ ॥

कृतघ्नः कोपयुक्तश्च नरः पापरतः शठः।
आर्द्रानक्षत्रसंभूतो धनधान्यविवर्जितः ॥ ६ ॥

आर्द्रानक्षत्रमें जन्म लेनेवाला मनुष्य कृतघ्नी, क्रोधी, पापी, शठ और धनधान्यसे रहित होता है ॥ ६ ॥

शान्तः सुखी च संभोगी सुभगो जनवल्लभः।
पुत्रमित्रादिभिर्युक्तो जायते च पुनर्वसौ॥ ७ ॥

पुनर्वसु नक्षत्रमें जन्माहुआ मनुष्य शांतस्वभाववाला, सुखी, भोगी, मनोहर, सबका प्यारा और पुत्रमित्रादिकोंसे युक्त होता है ॥ ७ ॥

देवधर्मधनैर्युक्तः पुत्रयुक्तो विचक्षणः।
पुष्ये च जायते लोकः शान्तात्मा सुभगः सुखी ॥ ८ ॥

पुष्यनक्षत्रमें जन्म लेनेवाला देवताओंकी सेवा करनेवाला, धार्मिक और धनी, पुत्रवान्, विद्वान्, शांतचित्तवाला, मनोहरशरीरवाला और सुखी होता है ॥ ८ ॥

सर्वभक्षी कृतान्तश्च कृतघ्नो वञ्चकः खलः ।
आश्लेषायां नरो जातः कृतकर्मा हि जायते ॥ ९ ॥

आश्लेषानक्षत्रमें जन्म लेनेवाला मनुष्य भक्ष्य एवं अभक्ष्य वस्तुको खानेवाला, नीच कर्म करनेवाला, कृतघ्न, धूर्त, शठ और कर्मी होता है ॥ ९ ॥

बहुभृत्यो धनी भोगी पितृभक्तो महोद्यमी ।
चमूनाथो राजसेवी मघायां जायते नरः ॥ १० ॥

मघानक्षत्रमें जन्म लेनेवाला मनुष्य बहुत नौकरोंवाला, धनवान्, भोगी, पिताका भक्त, बहुत उद्यम करनेवाला, सेनाका मालिक और राजसेवी होता है ॥ १० ॥

विद्यागोधनसंयुक्तो गंभीरः प्रमदाप्रियः ।
पूर्वाफाल्गुनिकाजातः सुखी पण्डितपूजितः ॥ ११ ॥

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ मनुष्य विद्या गौ और धनसे युक्त, गंभीर स्वभाववाला, स्त्रियोंको प्रिय, सुखी, पंडित और पूजित होता है ॥ ११ ॥

दान्तः शूरो मृदुर्वक्ता धनुर्वेदार्थपण्डितः ।
उत्तराफाल्गुनीजातो महायोद्धा जनप्रियः ॥ १२ ॥

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमें जन्म लेनेवाला मनुष्य तपस्याके क्लेशको सहनेवाला, शूरवीर, मीठे वचन बोलनेवाला, धनुर्वेदमें निपुण, बडा योद्धा और मनुष्योंको प्रिय होता है ॥ १२ ॥

असत्यवचनो धृष्टः सुरापो बन्धुवर्जितः ।
हस्ते जातो नरश्चौरो जायते पारदारिकः ॥ १३ ॥

हस्तनक्षत्रमें जन्म लेनेवाला मनुष्य झूठ बोलनेवाला, निर्दयी, मदिरा पीनेवाला, बंधुरहित, चोर और परस्त्रीगामी होता है ॥ १३ ॥

पुत्रदारयुतस्तुष्टो धनधान्यसमन्वितः ।
देवब्राह्मणभक्तश्च चित्रायां जायते नरः ॥ १४ ॥

चित्रानक्षत्रमें जन्म लेनेवाला मनुष्य पुत्र और स्त्रीसे युक्त, संतोषी, धनधान्या-दिसे पूर्ण, देवता ब्राह्मणका भक्त होता है ॥ १४ ॥

विदग्धो धार्मिकश्चैव कृपणः प्रियवल्लभः ।
सुशीलो देवभक्तश्च स्वातौ जातो भवेन्नरः ॥ १५ ॥

स्वातीनक्षत्रमें जन्म लेनेवाला मनुष्य बडा चतुर, धर्मात्मा, कृपण, स्त्रीको प्यार करनेवाला, सुंदरशीलस्वभाववाला, देवताका भक्त होता है ॥ १५ ॥

अतिलुब्धोऽतिमानी च निष्ठुरः कलहप्रियः ।
विशाखायां नरो जातो वेश्याजनरतो भवेत् ॥ १६ ॥

विशाखानक्षत्रमें जन्म लेनेवाला मनुष्य अत्यन्त लोभी, बडा मानी, निष्ठुर (दुष्ट), कलहसे प्रीति करनेवाला, वेश्याबाज होता है ॥ १६ ॥

पुरुषार्थप्रवासी च बन्धुकार्ये सदोद्यमी ।
अनुराधाभवो लोकः सदा धृष्टश्च जायते ॥ १७ ॥

अनुराधानक्षत्रमें जन्म लेनेवाला मनुष्य परोपकारी, परदेशमें रहनेवाला, बन्धुओंके कार्यमें सदा उपाय करनेवाला अर्थात् सहारा देनेवाला और सदा दया करनेवाला होता है ॥ १७ ॥

बहुमित्रप्रधानश्च कविर्दान्तो विचक्षणः ।
ज्येष्ठाजातो धर्मरतो जायते शूद्रपूजितः ॥ १८ ॥

ज्येष्ठा नक्षत्रमें पैदा हुआ मनुष्य बहुत मित्रोंवाला, प्रधान, कवि, तपस्या करनेवाला, बडा चतुर, धर्ममें तत्पर, शूद्रोंसे पूजित होता है ॥ १८ ॥

सुखेन युक्तो धनवाहनाढ्यो हिंस्रो बलाढ्यः स्थिरकर्मकर्ता ।
प्रतापितारातिजनो मनुष्यो मूले कृती स्याज्जननं प्रपन्नः ॥ १९ ॥

मूलनक्षत्रमें जिसका जन्म हुआ हो वह बालक सुखी और धन वाहनसे युक्त हिंसा करनेवाला, बलवान्, स्थिर (विचारके) अथवा स्थिर कर्मका करनेवाला, शत्रुनाशक, सुकृती होता है ॥ १९ ॥

दृष्टमात्रोपकारी च भाग्यवांश्च जनप्रियः ।
पूर्वाषाढाभवो नूनं सकलार्थविचक्षणः ॥ २० ॥

पूर्वाषाढा नक्षत्रमें जिसका जन्म होता है वह दृष्टमात्रही उपकार करनेवाला, भाग्यवान्, मनुष्योंको प्रिय, सकल वस्तुके जाननेमें प्रवीण होता है ॥ २० ॥

बहुमित्रो महाकायो जायते विनयी सुखी ।
उत्तराषाढसंभूतः शूरश्च विजयी भवेत् ॥ २१ ॥

उत्तराषाढामें जन्मा हुआ मनुष्य बहुत मित्रोंवाला, सुंदर वेषवाला, अच्छे शब्द बालेनवाला, सुखी, शूरवीर और विजय पानेवाला होता है ॥ २१ ॥

अतिसुललितकान्तिः सम्मतः सज्जनानां
ननु भवति विनीतश्चारुकीर्तिः सुरूपः।
द्विजवरसुरभक्तिर्व्यक्तवाङ् मानवः स्या-
दभिजिति यदि सूतिर्भूपतिः स स्ववंशे ॥ २२ ॥

जिसके जन्मसमयमें अभिजित् नक्षत्र होय उसकी कान्ति उत्तम, सज्जनोंका संगी, उत्तमकीर्तिवाला, मनोहररूप, देवता व ब्राह्मणोंका पूजनेवाला, यथार्थ बोलनेवाला और अपने कुलमें प्रधान होता है ॥ २२ ॥

कृतज्ञः सुभगो दाता गुणैः सर्वैश्च संयुतः।
श्रीमान्बहुलसन्तानः श्रवणे जायते नरः ॥ २३ ॥

श्रवणनक्षत्रमें जन्म लेनेवाला मनुष्य कृतज्ञ, मनोहर शरीरवाला, दानी, संपूर्ण गुणोंकरके युक्त, धनवान् और बहुत संतानवाला होता है ॥ २३ ॥

गीतप्रियो बन्धुमान्यो हेमरत्नैरलंकृतः।
जातो नरो धनिष्ठायां शतैकस्य पतिर्भवेत् ॥ २४ ॥

धनिष्ठानक्षत्रमें जिसका जन्म होता है वह गानविद्यासे प्रीति करनेवाला, बंधुओंसे मान पानेवाला, हेम-रत्नकरके विभूषित, एकशत मनुष्योंका मालिक होता है ॥२४॥

कृपणो धनपूर्णः स्यात्परदारोपसेवकः।
जातः शतभिषायां च विदेशे कामुको भवेत् ॥ २५ ॥

जिसका शतभिषानक्षत्रमें जन्म होता है वह कृपण, धनी, परस्त्रीके पास रहनेवाला तथा विदेशमें कामी होता है ॥ २५ ॥

वक्ता सुखी प्रजायुक्तो बहुनिद्रो निरर्थकः।
पूर्वाभाद्रपदायां च जातो भवति मानवः ॥ २६ ॥

जिसका जन्म पूर्वाभाद्रपदनक्षत्रमें होता है वह बहुत बोलनेवाला, सुखी, प्रजाकरके युक्त, बहुत निद्रा लेनेवाला, निरर्थक होता है ॥ २६ ॥

गौरः ससत्त्वो धर्मज्ञः शत्रुघाती परामरः।
उत्तराभाद्रपदजो नरः साहसिको भवेत् ॥ २७ ॥

जिसका जन्म उत्तराभाद्रपदा नक्षत्रमें होता है वह गौरवर्णवाला, सतोगुणस्वभाववाला, धर्मका जाननेवाला, शत्रुओंको नाश करनेवाला, देवताओंके समान पराक्रमवाला साहसी होता है ॥ २७ ॥

संपूर्णाङ्गः शुचिर्दक्षः साधुः शूरो विचक्षणः ।
रेवतीसंभवो लोके धनधान्यैरलंकृतः ॥ २८ ॥

रेवतीनक्षत्रमें जिसका जन्म होता है वह संपूर्ण अंगोंवाला, सुंदर, दक्ष, साधु, शूर, चतुर, धनधान्यकरके युक्त होता है ॥ २८ ॥ इति नक्षत्रफलम् ॥

अथ योगजातफलम् ।

विष्कम्भजातो मनुजो रूपवान्भाग्यवान्भवेत् ।
नानालङ्कारसंपूर्णो महाबुद्धिर्विशारदः ॥ १ ॥

विष्कंभयोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य रूपवान्, भाग्यवान्, नानाप्रकारके अलंकारोंसे पूर्ण, महाबुद्धि और चतुर होता है ॥ १ ॥

प्रीतियोगे समुत्पन्नो योषितां वल्लभो भवेत् ।
तत्त्वज्ञश्च महोत्साही स्वार्थे नित्यं कृतोद्यमः ॥ २ ॥

प्रीतियोगमें उत्पन्न हुआ पुरुष स्त्रियोंको प्यारा, तत्त्वका जाननेवाला, बडे उत्साहवाला, स्वार्थी और सदाही उद्यम करनेवाला होता है ॥ २ ॥

आयुष्मन्नामयोगे च जातो मानी धनी कविः ।
दीर्घायुः सत्त्वसंपन्नो युद्धे चाप्यपराजितः ॥ ३ ॥

आयुष्मान् योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य अभिमानी, धनी, कवि, बडी आयुवाला सत्त्वकरके युक्त और युद्धमें जय पानेवाला होता है ॥ ३ ॥

सौभाग्ये च समुत्पन्नो राजमंत्री स जायते ।
निपुणः सर्वकार्येषु वनितानां च वल्लभः ॥ ४ ॥

सौभाग्ययोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य राजाका मंत्री, सब कामोंमें निपुण और स्त्रियोंका प्यारा होता है ॥ ४ ॥

शोभने शोभनो बालो बहुपुत्रकलत्रवान् ।
आतुरः सर्वकार्येषु युद्धभूमौ सदोत्सुकः ॥ ५ ॥

शोभनयोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य स्वरूपवान् बालक, बहुत पुत्रस्त्रियोंसे युक्त, सब कार्योंमें आतुर और संग्राममें सदा तत्पर रहनेवाला होता है ॥ ५ ॥

अतिगण्डे च यो जातो मातृहन्ता भवेच्च सः ।
गण्डान्तेषु च जातस्तु कुलहन्ता प्रकीर्तितः ॥ ६ ॥

अतिगण्डयोगमें जिसका जन्म हो वह अपनी माताका मारनेवाला हो और यदि अतिगण्डके अन्तमें जन्म हो तो कुलका नाश करनेवाला होता है ॥ ६ ॥

सुकर्मनामयोगे तु सुकर्मा जायते नरः ।
सर्वैः प्रीतः सुशीलश्च रागी भोगी गुणाधिकः ॥ ७ ॥

सुकर्मायोगमें जन्म लेनेवाला मनुष्य अच्छे कर्म करनेवाला, सबसे प्रीति करनेवाला, रागी, भोगी और अधिक गुणवाला होता है ॥ ७ ॥

धृतिमान् धृतियोगी च कीर्तिपुष्टिधनान्वितः ।
भाग्यवान्सुखसंपन्नो विद्यावान्गुणवान् भवेत् ॥ ८ ॥

धृतियोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य धैर्यवाला, यश, पुष्टि और धनकरके युक्त, भाग्यवान्, रूप विद्या और गुणोंसे युक्त होता है ॥ ८ ॥

शूले शूलव्यथायुक्तो धार्मिकः शास्त्रपारगः ।
विद्यार्थकुशलो यज्वा जायते मनुजः सदा ॥ ९ ॥

शूलयोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य शूलकी व्यथाकरके युक्त, धर्मवान्, शास्त्रके पारका जाननेवाला, विद्या और द्रव्यमें कुशल और यज्ञ करनेवाला होता है ॥ ९ ॥

गण्डे गण्डव्यथायुक्तो बहुक्लेशो महाशिराः ।
ह्रस्वकायो महाशूरो बहुभोगी दृढव्रतः ॥ १० ॥

गण्डयोगमें जिसका जन्म हो वह गण्डव्यथाकरके युक्त, बहुत क्लेशवाला, बडे मुण्डवाला, छोटी देहवाला, बडा शूर, बहुत भोगी और दृढव्रत करनेवाला होता है॥ १०

वृद्धियोगे सुरूपश्च बहुपुत्रकलत्रवान् ।
धनवानपि भोक्ता च सत्त्ववानपि जायते ॥ ११ ॥

वृद्धियोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य सुन्दररूपवाला, बहुत पुत्र-स्त्रीसे युक्त, धनवान्, भोगी और बलवान् होता है ॥ ११ ॥

ध्रुवयोगे च दीर्घायुः सर्वेषां प्रियदर्शनः ।
स्थिरकर्माऽतिशक्तश्च ध्रुवबुद्धिश्च जायते ॥ १२ ॥

ध्रुवयोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य बडी आयुवाला, सबको प्रियदर्शनवाला, स्थिरकर्म करनेवाला, अतिशक्त और स्थिरबुद्धिवाला होता है ॥ १२ ॥

व्याघातयोगजातश्च सर्वज्ञः सर्वपूजितः ।
सर्वकर्मकरो लोके व्याख्यातः सर्वकर्मसु ॥ १३ ॥

व्याघातयोगमें जन्म लेनेवाला मनुष्य सबका जाननेवाला, सबसे पूजित, सर्व कर्म करनेवाला और संसारमें सब कामोंमें प्रसिद्ध होता है ॥ १३ ॥

हर्षणे जायते लोके महाभाग्यो नृपप्रियः ।
धृष्टः सदा धनैर्युक्तो विद्याशास्त्रविशारदः ॥ १४ ॥

हर्षणयोगमें उत्पन्न हुआ संसारमें अधिक भाग्यवाला, राजाको प्यारा, सदा ही प्रसन्न रहनेवाला, धनी और वेदशास्त्रमें निपुण होता है ॥ १४ ॥

वज्रयोगे वज्रमुष्टिः सर्वविद्यास्त्रपारगः ।
धनधान्यसमायुक्तस्तत्त्वज्ञो बहुविक्रमः ॥ १५ ॥

वज्रयोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य वज्रमुष्टि, सब विद्याओंके पारका जाननेवाला, धनधान्य करके युक्त, तत्त्वका जाननेवाला, बडा बली होता है ॥ १५ ॥

सिद्धियोगे समुत्पन्नः सर्वसिद्धियुतो भवेत् ।
दाता भोक्ता सुखी कान्तः शोकी रोगी च मानवः ॥ १६ ॥

सिद्धियोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य सर्व सिद्धियोंसे युक्त, दानी, भोगी, सुन्दर, शोच और रोगयुक्त होता है ॥ १६ ॥

व्यतीपाते नरो जातो महाकष्टेन जीवति ।
जीवेत्स्याद्भाग्ययोगेन स भवेदुत्तमो नरः ॥ १७ ॥

व्यतीपातयोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य बडे कष्टसे जीता है. यदि भाग्यसे जीता है तो मनुष्योंमें उत्तम होता है ॥ १७ ॥

वरीयोनामयोगे च बलिष्ठो जायते नरः ।
शिल्पशास्त्रकलाभिज्ञो गीतनृत्यादिकोविदः ॥ १८ ॥

वरीयान् योगमें पैदा हुआ मनुष्य बलवान्, शिल्पशास्त्रके कलामें निपुण, गीत-नृत्यादिका जाननेवाला होता है ॥ १८ ॥

परिघे च नरो जातः स्वकुलोन्नतिकारकः ।
शास्त्रज्ञः सुकविर्वाग्मी दाता भोक्ता प्रियंवदः ॥ १९ ॥

परिघयोगमें जन्म लेनेवाला, पुरुष अपने कुलकी वृद्धि करनेवाला, शास्त्रका जाननेवाला, कवि, वाचाल, दानी, भोगी और प्रिय बोलनेवाला होता है ॥ १९ ॥

शिवयोगे नरो जातः सर्वकल्याणभाजनम् ।
महादेवसमो लोके सदा बुद्धियुतो भवेत् ॥ २० ॥

जिसका जन्म शिवयोगमें होता है वह सर्वकल्याणोंका भाजन, महाबुद्धि, वरका देनेवाला संसारमें महादेवके समान होता है ॥ २० ॥

सिद्धियोगे सिद्धिदाता मंत्रसिद्धिप्रवर्तकः ।
दिव्यनारीसमेतश्च सर्वसम्पद्युतो भवेत् ॥ २१ ॥

सिद्धियोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य सिद्धिका देनेवाला, मंत्रसिद्धि करनेवाला, सुन्दर नारी और संपदाओंसे युक्त होता है ॥ २१ ॥

साध्ये मानासिका सिद्धिर्यशोऽशेषसुखागमः ।
दीर्घसूत्रः प्रसिद्धश्च जायते सर्वसंमतः ॥ २२ ॥

साध्ययोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य मानसासिद्धिसे युक्त, यशस्वी, सुखी, धीरे काम करनेवाला, प्रसिद्ध और सबका मित्र होता है ॥ २२ ॥

शुभे शुभशतैर्युक्तो धनवानपि जायते ।
विज्ञानज्ञानसंपन्नो दाता ब्राह्मणपूजकः ॥ २३ ॥

शुभयोगमें जन्म लेनेवाला मनुष्य सैकडों शुभकामोंसे युक्त, धनी, विज्ञान और ज्ञानसे संपन्न, दानी और ब्राह्मणकी पूजा करनेवाला होता है ॥ २३ ॥

शुक्ले सर्वकलायुक्तः सर्वार्थज्ञानवान्भवेत् ।
कविः प्रतापी शूरश्च धनी सर्वजनप्रियः ॥ २४ ॥

शुक्लयोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य सब कलाओंसे युक्त, सब अर्थ और ज्ञानसे युक्त कवि, प्रतापी, शूर, धनी और सब मनुष्योंका प्यारा होता है ॥ २४ ॥

ब्रह्मयोगे महाविद्वान् वेदशास्त्रपरायणः ।
ब्रह्मज्ञानरतो नित्यं सर्वकार्येषु कोविदः ॥ २५ ॥

ब्रह्मयोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य विद्वान् वेदशास्त्रमें परायण, सदैव ब्रह्मज्ञानमें रत और सब कामोंमें निपुण होता है ॥ २५ ॥

ऐन्द्रे भूपकुले जातो राजा भवति निश्चयात् ।
अल्पायुस्तु सुखी भोगी गुणवानपि जायते ॥ २६ ॥

ऐन्द्रयोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य यदि राजकुलमें पैदा हुआ हो तो निश्चयसे राजा होता है परंतु थोडी आयुवाला, सुखी, भोगी और गुणवान् होता है ॥ २६ ॥

वैधृतौ जायते यस्तु निरुत्साही बुभुक्षितः ।
कुर्वाणोऽपि जनैः प्रीतिं प्रयात्यप्रियतां नरः ॥ २७ ॥

वैधृतियोगमें जिसका जन्म होता है वह उत्साहहीन, बुभुक्षित मनुष्योंसे प्रीति करता हुआ भी अप्रिय होता है ॥ २७ ॥ इति योगफलम् ॥

अथ करणानयनम् ।

कृष्णपक्षे तिथिर्द्विघ्ना मुनिभिर्भागमाहरेत् ।
शेषाङ्केन बवाद्यं च तिथ्यादौ करणं विदुः ॥ १ ॥

कृष्णपक्षमें तिथिको दूना करके सातका भाग देवे, शेषसे बवादि करण तिथिके आदिभागमें जानै ॥ १ ॥

तिथिर्द्विघ्ना द्विकोना च शुक्लपक्षे सदा बुधैः ।
शेषाङ्के सप्तभिर्भागस्तिथ्यादौ करणं मतम् ॥ २ ॥

एवं शुक्लपक्षमें तिथिको दूना करके दो हीन करके फिर सातका भाग देवे तो शेष बवादि करण तिथिके आदिमें होता है ॥ २ ॥ जैसा चक्रमें स्पष्ट देखना ॥
इति करणानयनम् ।

कृष्णपक्षे करणानि । शुक्लपक्षे करणानि ।

ति.	पूर्वदल	उत्तर.	ति.	पूर्वदल	उत्तरद.	ति.	पूर्वदल	उत्तरद.	ति.	पूर्वदल	उत्तरद.
१	बालव	कौलव	९	तैतिल	गर	१	किंस्तुघ्न	बव	९	बालव	कौलव
२	तैतिल	गर	१०	वणिज	भद्रा	२	बालव	कौलव	१०	तैतिल	गर
३	वणिज	भद्रा	११	बव	बालव	३	तैतिल	गर	११	वणिज	भद्रा
४	बव	बालव	१२	कौलव	तैतिल	४	वणिज	भद्रा	१२	बव	बालव
५	कौलव	तैतिल	१३	गर	वणिज	५	बव	बालव	१३	कौलव	तैतिल
६	गर	वणिज	१४	भद्रा	शकुनी	६	कौलव	तैतल	१४	गर	वणिज
७	भद्रा	कौलव	०	चतुष्पद	नाग	७	गर	वणिज	१५	भद्रा	बव
८	बालव	कौलव				८	भद्रा	बव			

करणफलम् ।

बवाख्ये करणे जातो मानी धर्मरतः सदा ।
शुभमङ्गलकर्मा च स्थिरकर्मा च जायते ॥ १ ॥

बवकरणमें उत्पन्न हुआ मनुष्य अभिमानी, सदाही धर्ममें रत, शुभ मंगल कर्म और स्थिरकर्म करनेवाला होता है ॥ १ ॥

बालवाख्ये नरो जातस्तीर्थदेवादिसेवकः ।
विद्यार्थसौख्यसंपन्नो राजमान्यश्च जायते ॥ २ ॥

बालवकरणमें पैदा हुआ जन तीर्थ करनेवाला, देवतादिकी सेवा करनेवाला, विद्या-धन-सौख्यसे युक्त एवं राजाओंमें पूज्य होता है ॥ २ ॥

कौलवाख्ये तु जातस्य प्रीतिः सर्वजनैः सह।
सङ्गतिर्मित्रवर्गैश्च मानवांश्च प्रजायते ॥ ३ ॥

कौलवमें उत्पन्न मनुष्य सब मनुष्योंसे प्रीति करनेवाला, मित्रजनोंसे संगति करनेवाला और अभिमानी होता है ॥ ३ ॥

तैतिले करणे जातः सौभाग्यधनसंयुतः।
स्नेही सर्वजनैः सार्द्धं विचित्राणि गृहाणि च ॥ ४ ॥

तैतिलकरणमें उत्पन्न मनुष्य सौभाग्य और गुणयुक्त, सब मनुष्योंसे स्नेह करनेवाला और सुंदर सुंदर घरवाला होता है ॥ ४ ॥

गराख्ये कृषिकर्मा च गृहकार्यपरायणः।
यद्वस्तु वाञ्छितं तच्च लभ्यते च महोद्यमैः ॥ ५ ॥

गरकरणमें उत्पन्न हुआ मनुष्य खेती करनेवाला, घरके काममें निपुण और जिस वस्तुकी कांक्षा करै वह बडे उपायोंसे मिलजावे ॥ ५ ॥

वाणिज्ये करणे जातो वाणिज्येनैव जीवति।
वाञ्छितं लभते लोके देशान्तरगमागमैः ॥ ६ ॥

वाणिज्यकरणमें उत्पन्न हुआ मनुष्य वाणिज्यसे जीविकावाला और परदेशके आनेजानेसे वाञ्छित प्राप्त करनेवाला होता है ॥ ६ ॥

अशुभारम्भशीलश्च परदाररतः सदा।
कुशलो विषकार्येषु विष्टयाख्यकरणेन च ॥ ७ ॥

विष्टिकरणमें पैदा हुआ मनुष्य अशुभ आरंभ करनेवाला, सदाही परस्त्रीमें रत और विषकार्यमें प्रवीण होता है ॥ ७ ॥

शकुनौ करणे जातः पौष्टिकादिक्रियाकृतिः।
औषधादिषु दक्षश्च भिषग्वृत्तिश्च जायते ॥ ८ ॥

शकुनिकरणमें उत्पन्न हुआ मनुष्य पौष्टिकादिक क्रियाओंका करनेवाला, औषधादिकोंमें निपुण, वैद्यकीसे जीविकावाला होता है ॥ ८ ॥

करणे च चतुष्पादे देवद्विजरतः सदा।
गोकर्मा गोप्रभुर्लोके चतुष्पदचिकित्सकः ॥ ९ ॥

चतुष्पादकरणमें उत्पन्न हुआ मनुष्य देवता-ब्राह्मणोंमें सदा रत, गाइयोंका कार्य करनेवाला, गाइयोंका मालिक (रक्षक), चौपायोंकी औषध करनेवाला होता है ॥९॥

नागे च करणे जातो धीवरप्रीतिकारकः ।
कुरुते दारुणं कर्म दुर्भगो लोललोचनः ॥ १० ॥

नागकरणमें उत्पन्न हुआ मनुष्य नीचजनोंसे प्रीति करनेवाला, दारुण कर्म करनेवाला, अभागी और चंचलनेत्रवाला होता है ॥ १० ॥

किंस्तुघ्नकरणे जातः शुभकर्मरतो नरः ।
तुष्टिं पुष्टिं च माङ्गल्यं सिद्धिं च लभते सदा ॥ ११ ॥

किंस्तुघ्नकरणमें जिसका जन्म होता है वह शुभकर्ममें रत रहनेवाला, तुष्टि, पुष्टि, मांगल्य और सिद्धिको प्राप्त करनेवाला होता है ॥ ११ ॥ इति बवादिकरणफलम् ॥

गणज्ञानम् ।

अश्विनीमृगरेवत्यो हस्तः पुष्यः पुनर्वसुः ।
अनुराधा श्रुतिः स्वाती कथ्यते देवतागणः ॥ १ ॥

अश्विनी, मृग, रेवती, हस्त, पुष्य, पुनर्वसु, अनुराधा, श्रवण, स्वाती ये नक्षत्र देवतागण कहलाते हैं, इन नक्षत्रोंमें जन्म हो तो देवतागण जानै अन्यमें भी ऐसे ही जाने ॥ १ ॥

तिस्रः पूर्वाश्चोत्तराश्च तिस्रोऽप्यार्द्रा च रोहिणी ।
भरणी च मनुष्याख्यो गणश्च कथितो बुधैः ॥ २ ॥

पूर्वा ३, उत्तरा ३, अर्द्रा, रोहिणी, भरणी ये मनुष्यगण जानिये ॥ २ ॥

कृत्तिका च मघाऽऽश्लेषा विशाखा शततारका ।
चित्रा ज्येष्ठा धनिष्ठा च मूलं रक्षोगणः स्मृतः ॥ ३ ॥

कृत्तिका, मघा, आश्लेषा, विशाखा, शतभिषा, चित्रा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, मूल ये नक्षत्र राक्षसगण कहलाते हैं ॥ ३ ॥

गणफलम् ।

सुन्दरो दानशीलश्च मतिमान् सरलः सदा ।
अल्पभोजी महाप्राज्ञो नरो देवगणे भवेत् ॥ १ ॥

जिसका जन्म देवतागणमें होता है वह सुन्दर, दानी, शीलवान्, मतिमान्, सरल स्वभाव, थोडा भोजन करनेवाला, महाप्राज्ञ होता है ॥ १ ॥

मानी धनी विशालाक्षो लक्षवेधी धनुर्धरः ।
गौरः पौरजनग्राही जायते मानवे गणे ॥ २ ॥

जिसका जन्म मनुष्यगणमें होता है वह मानी, धनी, विशालनेत्रोंवाला, लक्ष उद्दिष्ट पदार्थ अथवा (शतसहस्र) वेधी, धन्वाका धारण करनेवाला, गौरवर्ण, पुरनिवासियोंका ग्राही होता है ॥ २ ॥

उन्मादी भीषणाकारः सर्वदा कलिवल्लभः ।
पुरुषो दुःसहं ब्रूते प्रमेही राक्षसे गणे ॥ ३ ॥

राक्षसगणमें उत्पन्न होनेवाला मनुष्य मतवाला, भयंकर, सदा युद्धसे प्रीति करनेवाला दुश्शील, प्रमेहरोगवाला होता है ॥ ३ ॥ इति गणफलम् ॥

अथ योनिज्ञानम् ।

अश्विनी वारणश्चाश्वो रेवती भरणी गजः ।
पुष्यश्च कृत्तिका छागो नागश्च रोहिणी मृगः ॥ १ ॥
आर्द्रा मूलमपि श्वा च मूषकः फाल्गुनी मघा ।
मार्जारोऽदितिराश्लेषा गोजातिरुत्तराद्वयम् ॥ २ ॥
महिषौ स्वातिहस्तौ च मृगो ज्येष्ठाऽनुराधिका ।
व्याघ्रश्चित्रा विशाखा च श्रुत्याषाढे च मर्कटौ ॥ ३ ॥
वसुभाद्रपदाः सिंहो नकुलश्चाभिजित्स्मृतः ।
योनयः कथिता भानां वैरमैत्रीं विचारयेत् ॥ ४ ॥

अश्विनी शततारकाकी अश्वयोनि, रेवती भरणीकी हाथी, पुष्य कृत्तिकाकी छाग इत्यादि शेष अर्थ चक्रसे देखना. जन्मनक्षत्रसे योनि जानना ॥ १–४ ॥

योनिविचारचक्रम् ।

अश्वि.	रेव.	पुष्य.	रो.	आ.	पू. फा.	पुन.	उ फा.	स्वा.	ज्ये.	चि.	पू षा.	ध.	अभि.
शत.	भर	कृ.	मृ.	मू.	म.	ऽश्ले.	उ. भा.	ह.	अनु.	वि.	श्र.	पू.भा,	उ.षा.
घोडा	हा.	छाग	नाग.	श्वा.	मूष.	बिला	गो.	भैंस.	मृग	व्याघ्र.	वानर	सिंह.	नेवल.

स्वच्छन्दः सद्गुणः शूरस्तेजस्वी घर्घरेश्वरः ।
स्वामिभक्तस्तुरङ्गस्य योन्यां जातो भवेन्नरः ॥ १ ॥

घोडाकी योनिमें पैदा हुआ मनुष्य स्वच्छंद, अच्छे गुणवाला, शूरवीर, तेजस्वी, वाद्यमें प्रवीण, स्वामीका भक्त होता है ॥ १ ॥

राजमान्यो बली भोगी भूपस्थानविभूषणः ।
आत्मोत्साही नरो जातो गजयोनौ न संशयः ॥ २ ॥

गज (हाथी) की योनिमें उत्पन्न हुआ मनुष्य राजमान्य, बलवान्, भोगी, राजाके स्थानसे सत्कार पानेवाला, उत्साही होता है ॥ २ ॥

स्त्रीणां प्रियः सदोत्साही बहुवाक्यविशारदः ।
स्वल्पायुश्च नरो जातः पशुयोनौ न संशयः ॥ ३ ॥

पशुयोनिमें उत्पन्न हुआ मनुष्य स्त्रियोंका प्यारा, सदा उत्साहयुक्त, वाक्यरचनामें निपुण, थोडी आयुवाला होता है ॥ ३ ॥

दीर्घरोषः सदा क्रूर उपकारं न गृह्यते ।
परवेश्मापहारी च सर्पयोनौ न संशयः ॥ ४ ॥

सर्पयोनिमें उत्पन्न हुआ मनुष्य बडा क्रोधी, क्रूर, उपकारको ग्रहण न करनेवाला, पराये मकानको हरनेवाला होता है ॥ ४ ॥

सोद्यमः सुमहोत्साही शूरः स्वज्ञातिविग्रही ।
मातापित्रोः सदा भक्तः श्वानयोनिसमुद्भवः ॥ ५ ॥

श्वान (कुत्ता) की योनिमें उत्पन्न हुआ मनुष्य उद्यमवान्, बडा उत्साही, शूर, स्वजातिका विग्रही, मातापिताका भक्त होता है ॥ ५ ॥

स्वस्वकार्ये शूरदक्षो मिष्टान्नाहारभोजनः ।
निर्दयो दुष्टसद्भावी नरो मार्जारयोनिजः ॥ ६ ॥

मार्जार (बिलाव) की योनिमें उत्पन्न हुआ मनुष्य अपने कार्यमें शूर तथा दक्ष, मिष्टान्नका भोजन करनेवाला निर्दयी, दुष्ट, अच्छे भाग्यवाला होता है ॥ ६ ॥

महाविक्रमयोद्धापि ईश्वरो विभवेश्वरः ।
परोपकारी नित्यं च मेषयोनौ भवेन्नरः ॥ ७ ॥

मेष योनिमें उत्पन्न हुआ मनुष्य महापराक्रमी, योद्धा, समर्थ, धनका स्वामी (धनी) और परोपकारी होता है ॥ ७ ॥

बुद्धिमान्वित्तसंपूर्णः स्वकार्यकरणोद्यतः ।
अप्रमत्तोऽप्यविश्वासी नरो मूषकयोनिजः ॥ ८ ॥

मूषकयोनिमें उत्पन्न हुआ मनुष्य बुद्धिमान्, धनवान्, अपने कार्यके करनेमें उद्यत, मदसे रहित, विश्वास न करनेवाला होता है ॥ ८ ॥

स्वधर्मे तु सदाचारः सत्क्रियासद्गुणान्वितः ।
कुटुम्बस्य समुद्धर्ता सिंहयोनिभवो नरः ॥ ९ ॥

सिंहयोनिमें उत्पन्न हुआ मनुष्य अपने धर्ममें तत्पर, शुभ आचारवाला, अच्छी क्रियाओंका करनेवाला, सुंदर गुणकरके युक्त, कुटुंबके उद्धार करनेवाला होता है ९॥

संग्रामे विजयी योद्धा सकामस्तु बहुप्रजः ।
वाताधिको मन्दमतिर्नरो महिषयोनिजः ॥ १० ॥

महिषयोनिमें जिसका जन्म हो वह संग्राममें विजयको पानेवाला, योद्धा, कामी, प्रजावाला, अधिकवातवाला, मन्दबुद्धिवाला होता है ॥ १० ॥

स्वच्छन्दोऽर्थरतो ग्राही दीक्षावान् स विभुः सदा ।
आत्मस्तुतिपरो नित्यं व्याघ्रयोनिभवो नरः ॥ ११ ॥

व्याघ्रयोनिमें उत्पन्न हुआ मनुष्य स्वच्छन्द, धनमें रत, ग्राही, दीक्षावान्, धनवान्, अपने आप अपनी प्रशंसा करनेवाला होता है ॥ ११ ॥

स्वच्छन्दः शान्तसद्वृत्तिः सत्यवान् स्वजनप्रियः ।
धर्मिष्ठो रणशूरश्च यो नरो मृगयोनिजः ॥ १२ ॥

मृगयोनिमें पैदाहुआ मनुष्य स्वच्छंद, शांतस्वभाव, भली जीविकावाला, सत्य बोलनेवाला, अपने जनोंसे प्रीति करनेवाला अथवा स्वजनोंका प्रिय, धर्मवान्, युद्धमें शूर होता है ॥ १२ ॥

चपलो मिष्टभोगी चार्थलुब्धश्च कलिप्रियः ।
सकामः सत्प्रजः शूरो नरो वानरयोनिजः ॥ १३ ॥

वानरयोनिमें उत्पन्न हुआ मनुष्य चपल, मिष्टभोगी, धनका लोभी, लडाईसे प्रीति करनेवाला, कामी, प्रजावाला, शूर होता है ॥ १३ ॥

परोपकरणे दक्षो वित्तेश्वरविचक्षणः ।
पितृमातृप्रियो नित्यं नरो नकुलयोनिजः ॥ १४ ॥

नकुलयोनिमें जिसका जन्म हो वह परोपकार करनेमें दक्ष, धनका स्वामी, चतुर, पितामातासे प्रीति करनेवाला होता है ॥ १४ ॥ इति योनिफलम् ॥

वारायुः।

विपदः प्रथमे मासे द्वात्रिंशे च त्रयोदशे।
षष्ठेऽपि च ततः सूर्ये जातो जीवति षष्टिकम् ॥ १ ॥

रविवारके दिन जिसका जन्म होता है उसको पहिले मासमें पीडा हो और बत्तीसवें और तेरहवें छठे वर्षमें भी पीडा होकर साठ वर्ष जीवे ॥ १ ॥

एकादशेऽष्टमे मासे चन्द्रे पीडा च षोडशे।
सप्तविंशतिवर्षे च चतुर्युक्ताशितौ मृतिः ॥ २ ॥

जिसका सोमवारके दिन जन्म हो उसको ग्यारहवें, आठवें और सोलहवें महीने तथा सत्ताईसवें वर्षमें पीडा होकर चौरासी वर्ष जीवे ॥ २ ॥

द्वात्रिंशे च द्वितीये च वर्षे पीडा च मङ्गले।
चतुःसप्ततिवर्षाणि सदा रोगी स जीवति ॥ ३ ॥

जिसका मंगलके दिन जन्म हो उसको बत्तीसवें और दूसरे वर्षमें पीडा हो और सदाही रोगी रहताहुआ चौहत्तर वर्ष जीवे ॥ ३ ॥

बुधवारेऽष्टमे मासे पीडा वर्षे तथाऽष्टमे।
पूर्णे चतुःषष्टिवर्षे ततो मृत्युर्भविष्यति ॥ ४ ॥

जिसका बुधवारके दिन जन्म हो उसको आठवें महीना आठवें ही वर्षमें पीडा होकर चौसठ वर्ष जीवे ॥ ४ ॥

गुरौ च सप्तमे मासे षोडशे च त्रयोदशे।
पीडा ततश्चतुर्युक्ताशीतिवर्षाणि जीवति ॥ ५ ॥

जिसका बृहस्पतिके दिन जन्म हो उसको सातवें, सोलहवें या तेरहवें महीनेमें पीडा होकर चौरासी वर्ष जीवे ॥ ५ ॥

शुक्रवारे च जातस्य देहो रोगविवर्जितः।
षष्टिवर्षेऽथ संपूर्णे म्रियते मानवो ध्रुवम् ॥ ६ ॥

जिसका शुक्रवारके दिनमें जन्म हो उसको रोग नहीं होता और निश्चय करके पूरे साठ वर्षमें मरे ॥ ६ ॥

शनौ च प्रथमे मासे पीड्यते च त्रयोदशे।
दृढदेहस्तथा जातः शतवर्षाणि जीवति ॥ ७ ॥

जिसका शनिवारका जन्म हो उसको पहिले महीना और तेरहवें वर्षमें पीडा हो फिर पुष्टदेह होकर सौवर्ष जीवे ॥ ७ ॥ इति वारायुः ॥

अथ जन्मलग्नफलम् ।

मेषलग्ने समुत्पन्नश्चण्डो मानी धनी शुभः ।
क्रोधी स्वजनहन्ता च विक्रमी परवत्सलः ॥ १ ॥

मेषलग्नमें जिसका जन्म होता है वह घोर, मानी, धनी, सुंदर, क्रोधी, भाइयोंका नाश करनेवाला, पराक्रमी और परायेको प्यारा होता है ॥ १ ॥

वृषलग्नभवो लोके गुरुभक्तः प्रियंवदः ।
गुणी कृती धनी लोभी शूरः सर्वजनप्रियः ॥ २ ॥

जिसका वृषलग्नमें जन्म होता है वह गुरुका भक्त, प्रिय बोलनेवाला, गुणी, कृती, धनी, लोभी, वीर और सबका प्यारा होता है ॥ २ ॥

मिथुनोदयसंजातो मानी स्वजनवल्लभः ।
त्यागी भोगी धनी कामी दीर्घसूत्रोऽरिमर्दकः ॥ ३ ॥

मिथुनलग्नमें जिसका जन्म होता है वह अभिमानी, भाइयोंका प्यारा, दानी, भोगी, धनी, कामी, धीरे काम करनेवाला और शत्रुओंका मारनेवाला होता है ॥ ३ ॥

कर्कलग्ने समुत्पन्नो भोगी धर्मजनप्रियः ।
मिष्टान्नपानसंयुक्तः सौभाग्यः सुजनप्रियः ॥ ४ ॥

कर्कलग्नमें उत्पन्न होनेवाला मनुष्य भोगी, धर्मवान् जनोंका प्यारा, मिष्टान्न आदिका भोजन करनेवाला सौभाग्यवाला, भाइयोंका प्यारा होता है ॥ ४ ॥

सिंहलग्नोदये जातो भोगी शत्रुविमर्दकः ।
स्वल्पोदरोऽल्पपुत्रश्च सोत्साही रणविक्रमः ॥ ५ ॥

सिंहलग्नमें जिसका जन्म होता है वह भोगी, शत्रुओंका मारनेवाला, छोटे पेटवाला, थोडी संतानवाला, उत्साह करनेवाला और रणमें पराक्रम करनेवाला होता है॥५

कन्यालग्ने भवेद्बालो नानाशास्त्रविशारदः ।
सौभाग्यगुणसंपन्नः सुन्दरः सुरतप्रियः ॥ ६ ॥

जिसका कन्यालग्नमें जन्म होता है वह बालक अनेक शास्त्रोंमें निपुण, सौभाग्य और गुणोंकरके युक्त, सुंदर, सुरतप्रिय होता है ॥ ६ ॥

तुलालग्नोदये जातः सुधीः सत्कर्मजीविकः ।
विद्वान् सर्वकलाभिज्ञो धनाढ्यो जनपूजितः ॥ ७ ॥

जिसका तुलालग्नमें जन्म होता है वह सुन्दर बुद्धिवाला, अच्छे कर्मोंसे जीविका करनेवाला, विद्वान्, सब कलाओंका जाननेवाला, धनवान् और जनों-करके पूजित होता है ॥ ७ ॥

वृश्चिकोदयसंजातः शौर्यवान्धनवान्सुधीः ।
कुलमध्ये प्रधानश्च प्राज्ञः सर्वस्य पोषकः ॥ ८ ॥

जिसका वृश्चिकलग्नमें जन्म होता है वह शौर्यवान् (महावीर), धनवान्, पंडित, कुलमें प्रधान, बुद्धिमान्, सबका पालन करनेवाला होता है ॥ ८ ॥

धनुर्लग्नोदये जातो नीतिमान् धर्मवान्सुधीः ।
कुलमध्ये प्रधानश्च प्राज्ञः सर्वस्य पोषकः ॥ ९ ॥

धनु लग्नके उदयमें जिसका जन्म हो वह नीतिमान्, धर्मवान्, सुंदर बुद्धिवाला, श्रेष्ठ कुलवाला, बुद्धिमान् और सबका पालन करनेवाला होता है ॥ ९ ॥

मकरोदयसंजातो नीचकर्मा बहुप्रजः ।
लुब्धो विनष्टोऽलसश्च स्वकार्येषु कृतोद्यमः ॥ १० ॥

मकरलग्नमें जिसका जन्म होता है वह नीचकर्म करनेवाला, बहुत संतानवाला, लोभी, नष्ट, आलसी और अपने काममें उद्यम करनेवाला होता है ॥ १० ॥

कुंभलग्ने नरो जातोऽचलचित्तोऽतिसौहृदः ।
परदाररतो नित्यं मृदुकायो महासुखी ॥ ११ ॥

कुंभ लग्नके उदयमें जन्म लेनेवाला मनुष्य स्थिरचित्तवाला, बहुत मित्रोंवाला, सदा पराई स्त्रीमें रत, कोमल अंगवाला और महासुखी होता है ॥ ११ ॥

मीनलग्ने भवेद्बालो रत्नकाञ्चनपूरितः ।
अल्पकामोऽतिकृशश्च दीर्घकालविचिन्तकः ॥ १२ ॥

मीन लग्नके उदयमें उत्पन्न हुआ मनुष्य रत्न और सोनेसे पूरित, थोडी कामना-वाला, बहुत दुर्बल और बहुत देरतक चिन्तन करनेवाला होता है ॥ १२ ॥
इति जन्मलग्नफलम् ॥

अथ नवांशफलम् ।

पिशुनश्चपलो दुष्टः पापकर्मा निराकृतिः ।
परेषां व्यसने सक्तः प्रथमांशे प्रजायते ॥ १ ॥

जन्मराशिके पहिले नवांशमें जिसका जन्म हो वह चुगुलखोर, चंचल, दुष्ट, पापी, कुरूप, शत्रुओंके व्यसनमें आसक्त होता है ॥ १ ॥

उत्पन्नविभवो भोक्ता संग्रामे विगतस्पृहः ।
गान्धर्वप्रमदासक्तो द्वितीयांशे प्रजायते ॥ २ ॥

दूसरेमें उत्पन्न हुआ भोगी, लडाईकी इच्छा नहीं करनेवाला, गानेवाले पुरुषकी स्त्रीमें आसक्त हो ॥ २ ॥

धर्मिष्ठः सन्ततव्याधिः सर्वसारज्ञ एव च ।
सर्वज्ञो देवताभक्तस्तृतीयांशे प्रजायते ॥ ३ ॥

तीसरे नवांशमें जन्माहुआ धर्मवान्, सदा व्याधियुक्त, सब सारका जाननेवाला, सर्वज्ञ और देवोंका भक्त होता है ॥ ३ ॥

चतुर्थांशेऽभिजातस्तु दीक्षितो गुरुभक्तिमान् ।
यत्किंचिद्धरणौ वस्तु तत्सर्वं लभते हि सः ॥ ४ ॥

चौथे अंशमें उत्पन्न हुआ मनुष्य दीक्षा लिये गुरुकी भक्ति करनेवाला, जितनी वस्तु पृथ्वीमें हैं तिन सबको लाभ करनेवाला होता है ॥ ४ ॥

सर्वलक्षणसंपन्नो राजा भवति विश्रुतः ।
दीर्घायुर्बहुपुत्रश्च जायते पञ्चमांशके ॥ ५ ॥

पांचवें अंशमें उत्पन्न हुआ मनुष्य बडी आयुवाला, बहुत पुत्रोंसे युक्त, सब लक्षणोंसे संपन्न राजा होता है ॥ ५ ॥

स्त्रीनिर्जितः शुभैर्हीनो बहुमानी नपुंसकः ।
अर्थध्वंसी प्रमाथी च षष्ठांशे जायते नरः ॥ ६ ॥

छठे अंशमें उत्पन्न हुआ मनुष्य स्त्रीसे हाराहुआ, शुभहीन, बडा मानी, नपुंसक, द्रव्यहीन और प्रमाथी होता है ॥ ६ ॥

विक्रान्तो मतिमाञ्छूरः संग्रामेष्वपराजितः ।
महोत्साही च संतोषी जायते सप्तमांशके ॥ ७ ॥

सातवें अंशमें उत्पन्न मनुष्य पराक्रमी, बुद्धिमान्, वीर, लडाईमें जीतनेवाला बडे उत्साहयुक्त और संतोषी होता है ॥ ७ ॥

कृतघ्नो मत्सरी क्रूरः क्लेशभोगी बहुप्रजः ।
फलकाले परित्यागी जायते चाष्टमांशके ॥ ८ ॥

आठवें अंशवाला कृतघ्न, ईर्षा करनेवाला, क्रूर, क्लेश भोगनेवाला, बहुत सन्तान-वाला, कालमें फलत्याग करनेवाला होता है ॥ ८ ॥

क्रियासु कुशलो दक्षः सुप्रतापी जितेन्द्रियः ।
भृत्यैश्च वेष्टितो नित्यं जायते नवमेंऽशके ॥ ९ ॥

नववें नवांशकमें उत्पन्न हुआ मनुष्य क्रियाओंमें प्रवीण, निपुण, अच्छे प्रताप-वाला, जितेन्द्रिय और सदाही नौकरोंकरके युक्त होता है ॥ ९ ॥ इति राशिनवां-शकफलम् ॥

नवांशचक्रम् ।

अंशाः		मे	वृष	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
३	२०	मे	म	तु	क	मे	म	तु	क	मे	म	तु	क
६	४०	वृ	कुं	वृ	सिं	वृ	कुं	वृ	सिं	वृ	कुं	वृ	सिं
१०	०	मि	मी	ध	क	मि	मी	ध	क	मि	मी	ध	क
१३	२०	क	मे	म	तु	क	मेष	म	तु	क	मे	म	तु
१६	४०	सिं	वृ	कुं	वृ	सिं	वृ	कुं	वृ	सिं	वृ	कुं	वृ
२०	०	क	मि	मी	ध	कं	मि	मी	ध	क	मि	मी	ध
२३	२०	तु	क	मे	म	तु	क	मे	म	तु	क	मे	म
२६	४०	वृ	सिं	वृ	कुं	वृ	सिं	वृ	कुं	वृ	सिं	वृ	कुं
३०	०	ध	क	मि	मी	ध	क	मि	मी	ध	क	मि	मी

चन्द्रकुण्डलिका ।

लग्नं देहो वर्गषट्कोडुकानि प्राणश्चन्द्रो धातवोऽन्ये ग्रहेन्द्राः ।
प्राणे नष्टे देहधात्वङ्गनाशो यस्मात्तस्माच्चन्द्रवीर्यप्रधानः ॥ १ ॥
लग्नमात्मा मनश्चन्द्रस्तदात्मा जीवयोगवान् ।
लग्नांशाद्द्वादशांशाद्वा ग्रहाणां फलमादिशेत् ॥ २ ॥
इन्दुः सर्वत्र बीजाम्भो लग्नं च कुसुमप्रभम् ।
फलेन सदृशोंऽशश्च भावः स्वादुरसः स्मृतः ॥ ३ ॥

जन्मलग्न अपना शरीर है और षड्वर्ग अंग है और चन्द्रमा प्राण है और अन्य-ग्रहोंको धातु जानना. इस प्रकार प्राणके नाश होजानेसे देह धातु अंगादिकाभी नाश होजाता है, इस कारण चन्द्रवीर्यही प्रधान माना गया है ॥ लग्न आत्मा है

और चन्द्रमा मन है तो आत्मा और जीवका लग्नांश अथवा द्वादशांशसे ग्रहोंद्वारा फल कहना चाहिये ॥ सर्वत्र चन्द्रमा बीज और जल कहा है, लग्नको पुष्प, नवांशको फल और भावोंको स्वादुरस माना है ॥ १-३ ॥ इति चन्द्रकुंडलिका ॥

चन्द्रराशिफलम्।

लोलनेत्रः सदा रोगी धर्मार्थकृतनिश्चयः।
पृथुजङ्घः कृतज्ञश्च निष्पापो राजपूजितः ॥ १ ॥
कामिनीहृदयानन्दो दाता भीतो जलादपि।
चण्डकर्मा मृदुश्चान्ते मेषराशौ भवेन्नरः ॥ २ ॥

मेषराशिमें जिसका जन्म होता है वह चंचलनेत्रोंवाला, सदा ही रोगी, धर्म और धनमें निश्चय करनेवाला, मोटी जंघावाला, जाननेहारा, पापरहित, राजाओंसे पूजित होता है, स्त्रीके हृदयको आनन्द देनेवाला, दानी, जलसे डरनेवाला, घोरकर्म करनेवाला अंतमें कोमल होता है ॥ १ ॥ २ ॥

भोगी दाता शुचिर्दक्षो महासत्त्वो महाबलः।
धनी विलासी तेजस्वी सुमित्रश्च वृषे भवेत् ॥ ३ ॥

जिसका वृषराशिमें जन्म हो वह भोगी, दानी, पवित्र, चतुर, महासत्त्ववान्, महाबली, धनी, विलासी, तेजवान् और सुंदरमित्रवाला होता है ॥ ३ ॥

मित(ष्ट)वाक्यो लोलदृष्टिर्दयालुर्मैथुनप्रियः।
गान्धर्ववित्कण्ठरोगी कीर्तिभागी धनी गुणी ॥ ४ ॥
गौरो दीर्घः पटुर्वक्ता मेधावी च दृढव्रतः।
समर्थो न्यायवादी च जायते मिथुने नरः ॥ ५ ॥

जिसका मिथुनराशिमें जन्म होता है वह विचारके बात करनेवाला, चंचलदृष्टिवाला, दयावान्, मैथुन जिसको प्यारा लगे, गानेवाला, कंठरोगी, यशका भागी, धनी, गुणी, गोरे रंगवाला, लम्बा, प्रवीण, वक्ता, बुद्धिमान्, दृढव्रत करनेवाला, समर्थ और न्यायवादी होता है ॥ ४ ॥ ५ ॥

कार्यकारी धनी शूरो धर्मिष्ठो गुरुवत्सलः।
शिरोरोगी महाबुद्धिः कृशाङ्गः कृत्यवित्तमः ॥ ६ ॥

प्रवासशीलः कोपान्धोऽबलो दुःखी सुमित्रकः ।
अनासक्तो गृहे वक्रः कर्कराशौ भवेन्नरः ॥ ७ ॥

कर्कराशिमें जिसका जन्म होता है वह कार्य करनेवाला, धनी, शूर, धर्मवान्, गुरुका प्यारा, शिरोरोगवाला, महाबुद्धिमान्, दुर्बलदेहवाला, अच्छा जाननेवाला, प्रवास करनेवाला, कोपी, दुःखी और सुन्दरमित्रवाला, घरमें अनासक्त, ढीठ होता है॥६॥७॥

क्षमायुक्तः क्रियासक्तो मद्यमांसरतः सदा ।
देशभ्रमणशीलश्च शीतभीतः सुमित्रकः ॥ ८ ॥
विनयी शीघ्रकोपी च जननीपितृवल्लभः ।
व्यसनी प्रकटो लोके सिंहराशौ भवेन्नरः ॥ ९ ॥

जिसका सिंहराशिमें जन्म होता है वह क्षमायुक्त, क्रियामें आसक्त, मदिरा-मांसमें सदा रत रहनेवाला, देशमें घूमनेवाला, जाडेसे डरनेवाला, सुन्दर मित्र-वाला, विनयी, जल्दी क्रोधवाला, मातापिताको प्यारा, व्यसनी और संसारमें प्रसिद्ध होता है ॥ ८ ॥ ९ ॥

विलासी सुजनाह्लादी सुभगो धर्मपूरितः ।
दाता दक्षः कविर्वृद्धो वेदमार्गपरायणः ॥ १० ॥
सर्वलोकप्रियो नाटयगान्धर्वव्यसने रतः ।
प्रवासशीलः स्त्रीदुःखी कन्याजातो भवेन्नरः ॥ ११ ॥

जिसका कन्याराशिमें जन्म होता है वह विलासी, सज्जन जनोंका आनन्द देने-वाला, सुंदर, धर्मसे युक्त, दानी, निपुण, कवि, वृद्ध, वेदमार्गमें परायण, सब संसारको प्यारा, गाने बजानेमें रत, परदेश जिसको अच्छा लगे, स्त्रीकरके दुःखी होता है ॥ १० ॥ ११ ॥

अस्थानरोषणो दुःखी मृदुभाषी कृपाऽन्वितः ।
चलाक्षश्चललक्ष्मीको गृहमध्येऽतिविक्रमः ॥ १२ ॥
वाणिज्यदक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः ।
प्रवासी सुहृदामिष्टस्तुलाजातो भवेन्नरः ॥ १३ ॥

जिसका तुलाराशिमें जन्म होता है वह अस्थानमें क्रोधी, दुःखी, मीठा बोलने-वाला, दयायुक्त, चंचलनेत्रवाला, चललक्ष्मीवाला, घरमें बडा बली, वाणिज्यमें निपुण, देवताओंका पूजनेवाला, मित्रोंका प्यारा, परदेशी, सज्जनोंको प्रिय ऐसा मनुष्य होता है ॥ १२ ॥ १३ ॥

बालप्रवासी क्रूरात्मा शूरः पिङ्गललोचनः।
परदाररतो मानी निष्ठुरः स्वजने भवेत् ॥ १४ ॥
साहसप्राप्तलक्ष्मीको जनन्यामपि दुष्टधीः।
धूर्तश्चौरकलारम्भी वृश्चिके जायते नरः ॥ १५ ॥

जिसका वृश्चिकराशिका जन्म हो वह बाल्यावस्थासे ही परदेशी, क्रूर आत्मावाला, वीर, पिंगल नेत्रवाला, पराई स्त्रीमें रत, अभिमानी, बंधुओंमें निष्ठुर, साहससे लक्ष्मीका पानेवाला, मातामें भी दुष्ट बुद्धिवाला, धूर्त, चोरकलाओंका आरंभ करनेवाला होता है ॥ १४ ॥ १५ ॥

शूरः सत्यधिया युक्तः सात्त्विको जननन्दनः।
शिल्पविज्ञानसंपन्नो धनाढ्यो दिव्यभार्यकः ॥ १६ ॥
मानी चरित्रसंपन्नो ललिताक्षरभाषकः।
तेजस्वी स्थूलदेहश्च धनुर्जातः कुलान्तकः ॥ १७ ॥

जिसका धनुराशिमें जन्म होता है वह वीर, बराबर बुद्धिवाला, सात्त्विकजनोंको आनंद देनेवाला, शिल्पविज्ञानमें युक्त, धनकरके युक्त, सुंदरभार्यावाला, अभिमानी, चरित्र युक्त, मनोहर अक्षरोंका बोलनेवाला, तेजस्वी, स्थूल देहवाला, कुलनाश करनेवाला होता है ॥ १६ ॥ १७ ॥

कुले नेष्टो वशः स्त्रीणां पण्डितः परिवादकः।
गीतज्ञो ललितग्राह्यः पुत्राढ्यो मातृवत्सलः ॥ १८ ॥
धनी त्यागी सुभृत्यश्च दयालुर्बहुबान्धवः।
परिचिन्तितसौख्यश्च मकरे जायते नरः ॥ १९ ॥

जिसका मकरराशिमें जन्म हो वह कुलमें नेष्ट, स्त्रियोंके वशमें रहनेवाला, पण्डित, परिवादवाला, गीतका जाननेवाला, स्त्रियोंके प्रसंगकी इच्छा करनेवाला, पुत्रवान्, माताका प्यारा होता है, धनी, दानी, अच्छे नौकरोंवाला, दयावान्, बहुत भाइयोंवाला और सुखकी चिन्ता करनेवाला होता है ॥ १८ ॥ १९ ॥

दाताऽलसः कृतज्ञश्च गजवाजिधनेश्वरः।
शुभदृष्टिः सदा सौम्यो धनविद्याकृतोद्यमः ॥ २० ॥

पुण्याढचः स्नेहकीर्तिश्च धनभोगी स्वशक्तितः ।
शालूरकुक्षिर्निर्भीतः कुम्भे जातो भवेन्नरः ॥ २१ ॥

जिसका कुंभराशिमें जन्म हो वह दानी, आलसी, कृतज्ञ, हाथी घोडे और धनका स्वामी, अच्छी दृष्टिवाला, सदा सौम्य, धनविद्याके लिये उद्यम करनेवाला, पुण्ययुक्त, स्नेहकीर्तिवाला, धनी, भोगी, बली, शालूर पक्षीके तुल्य कोखिवाला और निर्भय होता है ॥ २० ॥ २१ ॥

गम्भीरचेष्टितः शूरः पटुवाक्यो नरोत्तमः ।
कोपनः कृपणो ज्ञानी गुणश्रेष्ठः कुलप्रियः ॥ २२ ॥
नित्यसेवी शीघ्रगामी गान्धर्वकुशलः शुभः ।
मीनराशौ समुत्पन्नो जायते बन्धुवत्सलः ॥ २३ ॥

जिसका मीनराशिमें जन्म होता है वह गंभीर चेष्टावाला, वीर, प्रवीण, मीठी वाणीवाला, मनुष्योंमें श्रेष्ठ, क्रोधी, कृपण, ज्ञानी, गुणमें श्रेष्ठ, कुलका प्यारा, सदा सेवा करनेवाला, जल्दी चलनेवाला, गानेमें निपुण, शुभ और भाइयोंका प्यारा होता है ॥ २२ ॥ २३ ॥ इति चन्द्रराशिफलम् ॥

अथ सूर्यभावाध्यायः ।

चन्द्रात्प्रथमगो भानुर्जन्मकाले यदा भवेत् ।
विदेशगामी भोगी च कलहे कृतवासनः ॥ १ ॥

जिसके जन्मसमयमें सूर्य चन्द्रमाके साथ स्थित हो तो वह विदेशगामी, भोगी, कलहमें वासनावाला होता है ॥ १ ॥

जन्मकाले यदा भानुर्द्वितीयो यदि चन्द्रतः ।
बहुभृत्ययशाश्चैव राजमान्यो भवेन्नरः ॥ २ ॥

जिसके सूर्य चन्द्रमासे दूसरे स्थित हो तो वह बहुत नौकरों और यशवाला राजासे मान्य होता है ॥ २ ॥

चन्द्राद्भानुस्तृतीयश्च जन्मकाले यदा भवेत् ।
स्वर्णार्थेशः शुचिश्चैव राजतुल्यो भवेन्नरः ॥ ३ ॥

चन्द्रमासे तीसरे सूर्य हो तो वह सुवर्ण, धनका स्वामी, पवित्र, राजाके समान होता है ॥ ३ ॥

चन्द्राच्चतुर्थगो भानुर्जन्मकाले यदा भवेत्।
गणकाः कथयन्त्येव मातृहन्ता न भक्तिमान्[1] ॥ ४ ॥

चन्द्रमासे चतुर्थ सूर्य हो तो वह माताका मारनेवाला, अभक्तिमान् होता है ऐसा पण्डित कहते हैं ॥ ४ ॥

चन्द्रात्पञ्चमगो भानुर्जन्मकाले यदा भवेत्।
सुताभिश्चासुखी चैव बहुपुत्री भविष्यति ॥ ५ ॥

चन्द्रमासे पंचम सूर्य स्थित हो तो वह कन्याओं करके असुखी और बहुत पुत्रोंवाला होता है ॥ ५ ॥

चन्द्रात्षष्ठगतो भानुर्जन्मकाले यदा भवेत्।
शत्रूणां विजयी शूरः क्षात्रकर्मरतः सदा ॥ ६ ॥

चन्द्रमासे छठे सूर्य हो तो वह शत्रुओंको जीतनेवाला, शूर (वीर), क्षत्रिय धर्मके कर्ममें सदा रत रहनेवाला होता है ॥ ६ ॥

जन्मकाले यदा भानुश्चन्द्रात्सप्तमगो भवेत्।
सुस्त्री सुशीलचारी च राजमान्यो महातपाः ॥ ७ ॥

चन्द्रमासे सातवें सूर्य स्थित हो तो वह सुन्दर स्त्रीवाला, शीलवान्, राजमान्य और बडा तपस्वी होता है ॥ ७ ॥

चन्द्रादष्टमगो भानुर्जन्मकाले यदा भवेत्।
सर्वदा क्लेशकारी च ह्यतिरोगात्प्रपीडितः ॥ ८ ॥

जिसके चन्द्रमासे आठवें सूर्य स्थित हो वह सदा क्लेश सहनेवाला, अनेक रोगोंसे पीडित होता है ॥ ८ ॥

चन्द्रान्नवमगो भानुर्जन्मकाले यदा भवेत्।
धर्मात्मा सत्यवादी च बन्धक्लेशी सदा भवेत् ॥ ९ ॥

चन्द्रमासे नवम सूर्य स्थित हो तो वह मनुष्य धर्मात्मा, सत्य बोलनेवाला, बन्धनका क्लेश पानेवाला होता है ॥ ९ ॥

चन्द्राद्दशमगो भानुर्जन्मकाले यदा भवेत्।
तस्य द्वारेषु तिष्ठन्ति धनवन्तो न संशयः ॥ १० ॥

जिसके चन्द्रमासे दशम सूर्य स्थित हो तो उसके दरवाजेपर धनवान् ठहरें अर्थात् अधिक धनवाला और प्रतापी होता है ॥ १० ॥

---

१ मातृहस्तेन भुक्तिमान्। इति पाठान्तरम्।

चन्द्रादेकादशे भानुर्जन्मकाले यदा भवेत् ।
राजगर्व्यतिवेत्ता च प्रसिद्धः कुलनायकः ॥ ११ ॥

जिसके चन्द्रमासे ग्यारहवें सूर्य स्थित हो तो वह राजगर्वी, अधिक वेत्ता, प्रसिद्ध, कुलका नायक होता है ॥ ११ ॥

चन्द्राद्द्वादशगो भानुर्जन्मकाले यदा भवेत् ।
तेजोहीनो नयनयो रोषावेशात्प्रमुच्यते ॥ १२ ॥

जिसके चन्द्रमासे सूर्य बारहवें हो तो वह नेत्रोंमें अल्प प्रकाशवाला और क्रोधी होता है ॥ १२ ॥ इति सूर्यभावाध्यायः ॥

अथ भौमभावाध्यायः ।

चन्द्रात्प्रथमगो भौमो जन्मकाले यदा भवेत् ।
रक्ताक्षी रुधिरस्रावी रक्तवर्णो भवेन्नरः ॥ १ ॥

जिसके जन्मकालमें भौम चन्द्रमासे पहिले हो तो वह रक्तनेत्रोंवाला, रुधिर प्रवाही और रक्तवर्ण होता है ॥ १ ॥

चन्द्राद्द्वितीयगो भौमो जन्मकाले यदा भवेत् ।
धराधीशो भवेत्पुत्रः कृषिकर्ता न संशयः ॥ २ ॥

जिसके चन्द्रमासे दूसरेमें भौम हो तो वह भूमिके मालिक, पुत्रवाला और खेतीका करनेवाला होता है ॥ २ ॥

चन्द्रात्तृतीयगो भौमो जन्मकाले यदा भवेत् ।
चतुर्भ्रातृसमायुक्तः सुशीलः सर्वदा सुखी ॥ ३ ॥

जिसके चन्द्रमासे भौम तीसरे स्थित हो वह चार भाइयोंसे युक्त, सुन्दर शीलवाला और हमेशा सुखी होता है ॥ ३ ॥

चन्द्राच्चतुर्थगो भौमो जन्मकाले यदा भवेत् ।
सुखभङ्गी दरिद्री स्यात्पुंसः स्त्री म्रियते ध्रुवम् ॥ ४ ॥

जिसके भौम चन्द्रमासे चतुर्थ हो वह सुखसे हीन, दरिद्री और स्त्री शीघ्र मरै ऐसा होता है ॥ ४ ॥

चन्द्रात्पञ्चमगो भौमो जन्मकाले यदा भवेत् ।
पुत्रहीनो नरः स्त्रीणां लग्ने पतति निश्चितम् ॥ ५ ॥

जिसके भौम चन्द्रमासे पाँचवे हो वह पुत्रहीन मनुष्य होता है तथा स्त्रियोंके लग्नमें पडे तो भी पुत्रहीन जानना ॥ ५ ॥

चन्द्राच्च षष्ठगो भौमो जन्मकाले यदा भवेत्।
अधर्मे शत्रुता चैव सदा रोगेण पीडितः ॥ ६ ॥

जिसके भौम चन्द्रमासे छठे हो उसे अधर्म करनेमें शत्रुता रहती है और वह सदा रोग करके पीडित होता है ॥ ६ ॥

चन्द्रात्सप्तमगो भौमो जन्मकाले यदा भवेत्।
स्त्री कुशीला भवेत्तस्य सदा चाप्रियवादिनी ॥ ७ ॥

जिसके चन्द्रमासे सातवें भौम हो तो वह अप्रियवादिनी दुष्टा स्त्रीवाला होताहै॥७॥

चन्द्रादष्टमगो भौमो जन्मकाले यदा भवेत्।
जीवहन्ता महापापी शीलसत्याविवर्जितः ॥ ८ ॥

जिसके भौम चन्द्रमासे आठवें स्थित हो तो वह जीव मारनेवाला, बडा पापी और शील सत्यतासे रहित होता है ॥ ८ ॥

चन्द्रान्नवमगो भौमो जन्मकाले यदा भवेत्।
लक्ष्मीवांश्च भवेत्पुत्रो जराकाले न संशयः ॥ ९ ॥

जिसके चन्द्रमासे नवम भौम स्थित हो तो उसके बृद्धअवस्थामें पुत्र होता है तथा धनवान् होता है ॥ ९ ॥

चन्द्राद्दशमगो भौमो जन्मकाले यदा भवेत्।
तस्य द्वारेषु तिष्ठन्ति गजा अश्वा न संशयः ॥ १० ॥

जिसके भौम चन्द्रमासे दशम हो तो उसके दरवाजेपर गज (हाथी) घोडा बँधे रहते हैं ॥ १० ॥

चन्द्रादेकादशे भौमो जन्मकाले यदा भवेत्।
राजद्वारे प्रसिद्धः स्याद्यशोरूपसमन्वितः ॥ ११ ॥

जिसके भौम चन्द्रमासे ग्यारहवें हो तो वह राजद्वारमें प्रसिद्ध, यश और रूप करके युक्त होता है ॥ ११ ॥

चन्द्राद्द्वादशगो भौमो जन्मकाले यदा भवेत्।
मातुश्चासुखकारी च सदा कष्टप्रदायकः ॥ १२ ॥

जिसके जन्मकालमें भौम चन्द्रमासे बारहवें स्थानमें स्थित हो तो माताको असुखकारी तथा सदा कष्ट देनेवाला होता है ॥ १२ ॥ इति भौमभावाध्यायः ॥

अथ बुधभावाध्यायः ।

चन्द्रात्प्रथमगः सौम्यः सुखरूपं विना नरः ।
दुष्टभाषी मतिभ्रंशी स्थानभ्रष्टो दिनेदिने ॥ १ ॥

जिसके जन्मसमयमें बुध चन्द्रमासे प्रथम स्थित हो तो वह सुख तथा रूप करके हीन, दुष्टवचन बोलनेवाला, बुद्धिहीन तथा नष्ट स्थानवाला होता है ॥ १ ॥

चन्द्राद्द्वितीयगः सौम्यो धनधान्यसमाकुलः ।
गृहबन्धुधनप्राप्तिः शीतरोगैर्विनश्यति ॥ २ ॥

जिसके बुध चन्द्रमासे दूसरे स्थित हो वह धनधान्य गृह बंधुसे युक्त, धनकी प्राप्ति करनेवाला तथा जूडी रोगसे विनष्ट होनेवाला होता है ॥ २ ॥

चन्द्रात्सहजगः सौम्यः कुरुते चार्थसम्पदः ।
राज्यलाभो भवेत्तस्य महतां सङ्गमो ध्रुवम् ॥ ३ ॥

जिसके जन्मसमयमें बुध चन्द्रमासे तीसरे हो वह धन संपदासे युक्त, राज्यकी प्राप्ति करनेवाला तथा महात्माओंके संगमवाला होता है ॥ ३ ॥

चन्द्राच्चतुर्थगः सौम्यः सर्वदा सुखकारकः ।
मातृपक्षे महालाभः सुखं जीवति मानवः ॥ ४ ॥

जिसके बुध चन्द्रमासे चतुर्थ हो वह सदा सुखी माताके पक्षसे लाभवाला होता है ४॥

चन्द्रात्पञ्चमगः सौम्यो बुद्धिमांश्च विचक्षणः ।
रूपवांश्च महाकामी कुवाक्यं धारयेन्नरः ॥ ५ ॥

चन्द्रमासे पंचम बुध जिसके हो वह बुद्धिमान्, प्रवीण, रूपवान्, अधिक कामी, कुवचन बोलनेवाला होता है ॥ ५ ॥

चन्द्रात्षष्ठगतः सौम्यः कृपणः कातरो भवेत् ।
विवादे च महाभीरू रोमशो दीर्घलोचनः ॥ ६ ॥

जिसके बुध चन्द्रमासे छठे हो वह कृपण, भयानक, विवादमें बडा डरपोक, बहुरोमयुक्त और दीर्घनेत्रवाला होता है ॥ ६ ॥

चन्द्रात्सप्तमगः सौम्यः स्त्रीणां च वशगो नरः ।
कृपणश्च धनाढ्यश्च बह्वायुश्च भविष्यति ॥ ७ ॥

जिसके बुध चन्द्रमासे सातवें हो वह स्त्रियोंके वश रहनेवाला, कृपण, धनवान् और ज्यादा उमरवाला होता है ॥ ७ ॥

चन्द्रादष्टमगे सौम्ये देहे शीतो भविष्यति ।
राजमध्ये प्रसिद्धश्च शत्रूणां च भयंकरः ॥ ८ ॥

जिसके बुध चन्द्रमासे अष्टम हो वह देहमें शीतवाला, राजमध्यमें प्रसिद्ध, शत्रुओंको भयंकर होता है ॥ ८ ॥

चन्द्रान्नवमगः सौम्यः स्वधर्मस्य विरोधकः ।
अन्यधर्मरतः पुंसो विरोधी दारुणो भवेत् ॥ ९ ॥

जिसके बुध चन्द्रमासे नवम स्थित हो वह अपने धर्मका विरोधी, अन्य धर्ममें लीन, पुरुषोंका विरोधी और दारुण (दुष्ट) होता है ॥ ९ ॥

चन्द्राद्दशमगः सौम्यो राजयोगी नरः सदा ।
कर्मराशौ यदा चन्द्रः कुटुम्बे नायको भवेत् ॥ १० ॥

जिसके बुध चन्द्रमासे दशम स्थित हो तो उसे राजयोगी जानना और चन्द्रमा यदि दशमराशि (भाव) में स्थित हो तो कुटुम्बमें नायक होता है ॥ १० ॥

चन्द्रादेकादशे सौम्यो लाभकारी पदेपदे ।
वर्षे एकादशे पुंसः पाणिग्राहो भविष्यति ॥ ११ ॥

जिसके बुध चन्द्रमासे लाभ भावमें हो वह पदपदमें लाभ करनेवाला होता है तथा उसका ग्यारहवें वर्षमें विवाह हो जाता है ॥ ११ ॥

चन्द्राद्द्वादशगः सौम्यः सर्वदा कृपणो भवेत् ।
तत्सुतस्य जयो नास्ति पराजयं लभेत सः ॥ १२ ॥

जिसके बुध चन्द्रमासे बारहवें हो वह सदा कृपण रहता है और उसके पुत्रकी जय नहीं, परंतु पराजय होती है ॥ १२ ॥ इति बुधभावाध्यायः ॥

अथ गुरुभावाध्यायः ।

चन्द्रात्प्रथमगो जीवो जीवयोग्यो भवेन्नरः ।
व्याधिना रहितः शूरो निर्धनो न कदाचन ॥ १ ॥

जिसके जन्मसमयमें बृहस्पति चन्द्रमासे प्रथम स्थित हो वह जीवयोग्य, व्याधिरहित, शूर (वीर), धनवान् होता है ॥ १ ॥

चन्द्राद्द्वितीयगो जीवो राजमान्यः शतायुषी।
अत्युग्रश्च प्रतापी च धर्मिष्ठः पापवर्जितः॥ २॥

जिसके बृहस्पति चन्द्रमासे दूसरे हो वह राजासे मान पानेवाला, सौ वर्षकी उमरवाला, अधिक क्रूर प्रतापवाला, धर्मवान्, पापसे रहित होता है॥ २॥

चन्द्रात्तृतीयगे जीवे नारीणां वल्लभो भवेत्।
धनवृद्धिः पितुर्गेहे वर्षे सप्तदशे तथा॥ ३॥

जिसके बृहस्पति चन्द्रमासे तीसरे हो वह स्त्रियोंका प्यारा, पिताके घरसे सत्रह वर्षमें धनकी वृद्धिवाला होता है॥ ३॥

चन्द्राच्चतुर्थगो जीवः सुखैश्चैव विवर्जितः।
मातृपक्षे महाकष्टी परेषां गृहकर्मकृत्॥ ४॥

जिसके बृहस्पति चन्द्रमासे चतुर्थ स्थित हो वह सुख करके हीन, माताके पक्षमें बडा कष्टी, दूसरोंके घर काम करनेवाला होता है॥ ४॥

चन्द्रात्पंचमगो जीवो दिव्यदृष्टिर्भवेन्नरः।
तेजस्वी पुत्रदा नारी ह्यत्युग्रश्च महाधनी॥ ५॥

जिसके बृहस्पति चन्द्रमासे पंचम स्थित हो वह दिव्यदृष्टिवाला, तेजवान्, पुत्रवती स्त्रीवाला, अत्यंतक्रूर और महाधनी होता है॥ ५॥

चन्द्राच्च षष्ठगो जीवो ह्युदासी गृहवर्जितः।
आयुर्बाह्यं भवेत्पुंसां भिक्षाभोक्ता व्यवस्थितः॥ ६॥

जिसके बृहस्पति चन्द्रमासे छठे हो वह उदासी, गृहसे हीन, विदेशमें आयुको बितानेवाला, भिक्षासे भोजन करनेवाला होता है॥ ६॥

चन्द्रात्सप्तमगो जीवो बहुजीवी व्ययं विना।
स्थूलदेही क्लीबपाण्डुर्गृहमध्ये च नायकः॥ ७॥

जिसके बृहस्पति चन्द्रमासे सातवें स्थित हो वह अधिक उमरवाला, व्ययरहित, स्थूल (मोटी) देहवाला, नपुंसक, पाण्डुवाला और घरके मध्यमें नायक होता है॥ ७॥

चन्द्रादष्टमगो जीवो देहरोगी सदा नरः।
सुतातोऽपि महाक्लेशी सुखं स्वप्ने न दृश्यते॥ ८॥

जिसके बृहस्पति चन्द्रमासे आठवें स्थित हो वह सदा देहरोगी, अच्छे पितावाला होनेपरभी महाक्लेशवाला, स्वप्नमें भी सुख न पानेवाला होता है॥ ८॥

चन्द्रान्नवमगो जीवो धर्मिष्ठो धनपूरितः ।
सुमार्गे सुगतश्चैव देवगुर्वोश्च सेवकः ॥ ९ ॥

जिसके बृहस्पति चन्द्रमासे नवम स्थित हो वह धर्मवान्, धन करके युक्त, अच्छे मार्गमें चलनेवाला, देवता गुरुका सेवक होता है ॥ ९ ॥

चन्द्राद्दशमगो जीवो जन्मकाले यदा भवेत् ।
पुत्रदारपरित्यागी तपस्वी च भवेन्नरः ॥ १० ॥

जिसके बृहस्पति चन्द्रमासे दशम हो वह पुत्र स्त्रीको त्याग करके तपस्वी होता है ॥ १० ॥

चन्द्रादेकादशे जीवो जन्मकाले यदा भवेत् ।
अश्वारूढो भवेत्पुत्रो राजतुल्यो भवेन्नरः ॥ ११ ॥

जिसके बृहस्पति चन्द्रमासे ग्यारहवें हो उसका पुत्र घोडेपर सवार होकर चलता है और राजाके समान वह मनुष्य होता है ॥ ११ ॥

चन्द्राद्द्वादशगो जीवो जन्मकाले यदा भवेत् ।
स्यात्कुटुंबविरोधी च सुखं शत्रोर्दशाग्रहे ॥ १२ ॥

जिसके बृहस्पति चन्द्रमासे बारहवें स्थित हो वह कुटुबंसे विरोध करनेवाला होता है तथा लग्नसे छठे स्थानके स्वामीकी दशामें सुख होता है ॥ १२ ॥ इति गुरुभावाध्यायः ॥

अथ शुक्रभावाध्यायः ।

चन्द्रात्तु प्रथमः शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् ।
जले मृत्युर्भवेत्तस्य सन्निपातो हि हिंसया ॥ १ ॥

जिसके जन्मसमयमें शुक्र चन्द्रमासे प्रथम स्थित हो उसकी जलमें मृत्यु होती है सन्निपात हिंसा करके ॥ १ ॥

चन्द्राद्द्वितीयगः शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् ।
महाधनी महाज्ञानी राजतुल्यो न संशयः ॥ २ ॥

जिसके शुक्र चन्द्रमासे दूसरे हो वह महाधनवान्, महाज्ञानवान्, राजाके समान निश्चय होता है ॥ २ ॥

चन्द्रात्सहजगः शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् ।
धर्मिष्ठो बुद्धिमांश्चैव म्लेच्छतो लाभदायकः ॥ ३ ॥

जिसके शुक्र चन्द्रमासे तीसरे हो वह धर्मवान्, बुद्धिमान्, म्लेच्छसे लाभवाला होता है ॥ ३ ॥

चन्द्राच्चतुर्थगः शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् ।
कफाधिको महाक्षीणो वार्द्धक्ये धनवर्जितः ॥ ४ ॥

जिसके शुक्र चन्द्रमासे तीसरे हो वह अधिक कफवाला, दुर्बल, वृद्धावस्थामें धन करके हीन होता है ॥ ४ ॥

चन्द्रात्पञ्चमगः शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् ।
बहुकन्या भविष्यन्ति धनाढ्यः कीर्त्तिवर्जितः ॥ ५ ॥

जिसके शुक्र चन्द्रमासे पाँचवें स्थित हो वह बहुत कन्याओंवाला, धन करके युक्त और यशसे वर्जित होता है ॥ ५ ॥

चन्द्राच्च षष्ठगः शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् ।
दुर्व्ययाद्भयकारी च संग्रामे च पराजितः ॥ ६ ॥

जिसके शुक्र चन्द्रमासे छठे स्थित हो वह दुष्ट हानिसे भय पानेवाला और युद्धमें पराजय पानेवाला होता है ॥ ६ ॥

चन्द्रात्सप्तमगः शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् ।
पुरुषार्थहीनोऽकुशलः शङ्कितश्च पदे पदे ॥ ७ ॥

जिसके शुक्र चन्द्रमासे सप्तम स्थित हो वह पुरुषार्थसे हीन, अप्रवीण, जगह जगहमें शंकित होता है ॥ ७ ॥

चन्द्रादष्टमगः शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् ।
प्रसिद्धो हि महायोद्धा दाता भोक्ता महाधनी ॥ ८ ॥

जिसके शुक्र चन्द्रमासे अष्टम स्थित हो वह प्रसिद्ध, बडा योद्धा, दानी, भोगी, बडा धनी होता है ॥ ८ ॥

चन्द्रान्नवमगः शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् ।
बहुभ्राता तथा मित्रभगिनीबहुलो भवेत् ॥ ९ ॥

जिसके शुक्र चन्द्रमासे नवम स्थित हो वह बहुत भाइयों मित्रों तथा भगिनियोंवाला होता है ॥ ९ ॥

चन्द्राच्च दशमे शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् ।
मातापित्रोः सुखप्राप्तिर्जीवितं तु बृहद्भवेत् ॥ १० ॥

जिसके शुक्र चन्द्रमासे दशम हो वह माता पिताके सुख प्राप्तिवाला, बहुत जीवितवाला होता है ॥ १० ॥

चन्द्रादेकादशे शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् ।
बह्वायुश्च भवेत्पुंसो रिपुरोगविवर्जितः ॥ ११ ॥

जिसके शुक्र चन्द्रमासे ग्यारहवें हो वह बहुत उमरवाला, शत्रु और रोगकरके वर्जित होता है ॥ ११ ॥

चन्द्राद्द्वादशगः शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् ।
परदाररतो नित्यं लंपटो ज्ञानहीनकः ॥ १२ ॥

जिसके शुक्र चन्द्रमासे बारहवें स्थित हो वह पराई स्त्रीमें रत रहनेवाला, लंपट और ज्ञानसे हीन होता है ॥ १२ ॥ इति शुक्रभावाध्यायः ॥

अथ शनिभावाध्यायः ।

चन्द्राच्च प्रथमे सौरिर्जन्मकाले यदा भवेत् ।
प्राणनाशोऽर्थनाशश्च बन्धुनाशस्तथापरे ॥ १ ॥

जिसके जन्मसमयमें शनि चन्द्रमासे प्रथम स्थित हो वह प्राणका नाशवाला, धनका नाश करनेवाला तथा बंधुओंके नाश करनेवाला होता है ॥ १ ॥

चन्द्राद्द्वितीयगो मन्दो जन्मकाले यदा भवेत् ।
मातुश्च कष्टकारी च अजाक्षीरेण जीवति ॥ २ ॥

जिसके शनि चन्द्रमासे दूसरे हो वह माताके कष्टवाला तथा बकरीके दूधसे जीवन प्राप्ति होनेवाला होता है ॥ २ ॥

चन्द्रात्सहजगः सौरिर्जन्मकाले यदा भवेत् ।
बहुकन्यो भवेत्पुत्र उत्पद्य म्रियते ध्रुवम् ॥ ३ ॥

जिसके शनि चन्द्रमासे तीसरे हो उसके बहुत कन्या हों तथा पुत्र उत्पन्न होकर शीघ्र मरजावे ॥ ३ ॥

चन्द्राच्चतुर्थगो नूनं शनिर्जन्मानि संभवेत् ।
महापौरुषकारी च शत्रुहन्ता न संशयः ॥ ४ ॥

जिसके शनि चन्द्रमासे चतुर्थ हो वह बडा पौरुषी और शत्रुओंका मारनेवाला होता है ॥ ४ ॥

चन्द्रात्पञ्चमगः सौरिर्जन्मकाले यदा भवेत् ।
स्त्री स्याच्छ्यामलवर्णा च ह्यथवा प्रियवादिनी ॥ ५ ॥

जिसके शनि चन्द्रमासे पंचम हो वह श्यामवर्ण अथवा प्रियवादिनी स्त्रीवाला होता है ॥ ५ ॥

रविजः षष्ठगश्चन्द्राज्जन्मकाले यदा भवेत् ।
महाक्लेशी च कष्टी च आयुर्हीनो भवेन्नरः ॥ ६ ॥

जिसके शनि चन्द्रमासे षष्ठ स्थित हो वह अधिक क्लेशवाला, दुःखी, हीन-आयुवाला होता है ॥ ६ ॥

चन्द्राच्च सप्तमे स्थाने यदा च रविनन्दनः ।
महाधर्मी च दाता च स्त्रीणां बहुकरग्रहः ॥ ७ ॥

जिसके शनि चन्द्रमासे सप्तम स्थित हो वह बडा धर्मवान्, दानी और बहुत स्त्रियोंका विवाह करनेवाला अर्थात् कई विवाह हों ऐसा होता है ॥ ७ ॥

रविजो ह्यष्टमे स्थाने चन्द्रतो जन्मसंभवः ।
पितुश्च कष्टकारी च बहुदाने शुभं भवेत् ॥ ८ ॥

जिसके शनि चन्द्रमासे अष्टम स्थित हो वह पिताका कष्टकारी होता है और बहुत दान करनेसे उसे शुभ होता है ॥ ८ ॥

चन्द्रान्नवमगः सौरिर्जन्मकाले यदा भवेत् ।
यदा मुग्धदशाप्राप्तिर्धनहानिर्भविष्यति ॥ ९ ॥

जिसके शनि चन्द्रमासे नवम होवे तो मुग्धदशामें धनकी हानि होती है ॥ ९ ॥

चन्द्राद्दशमगः सौरिर्जन्मकाले यदा भवेत् ।
नृपतुल्यो भवेद्देही कृपणो धनपूरितः ॥ १० ॥

जिसके शनि चन्द्रमासे दशम स्थित हो वह राजाके समान, कृपण और धन करके युक्त होता है ॥ १० ॥

चन्द्रादेकादशे सौरिर्जन्मकाले यदा भवेत् ।
देहक्लेशी महाकष्टी ह्यधर्मी च न संशयः ॥ ११ ॥

जिसके शनि चन्द्रमासे ग्यारहवें हो वह देहका क्लेश पानेवाला, अधिक दुःखी और अधर्मी होता है ॥ ११ ॥

द्वादशे भवने सौरिश्चन्द्राच्च पतते यदि ।
निर्धनी भिक्षुकश्चैव धर्मेणैव विवर्जितः ॥ १२ ॥

जिसके शनि चन्द्रमासे बारहवें हो वह निर्धन, भिक्षुक और धर्मसे रहित होता है ॥ १२ ॥ इति शनिभावाध्यायः ॥

अथराहुभावाध्यायः।

जन्मकर्मे शुभे धर्मे चन्द्राद्यदि पतेत्तमः।
जन्मकाले भूपतिश्च वृद्धकाले महाधनी ॥ १ ॥

जिसके जन्मसमयमें राहु चन्द्रमासे प्रथम, दशम, तृतीय, नवम इन स्थानोंमें स्थित हो वह राजा होता है और वृद्धावस्थामें अधिक धनी होता है ॥ १ ॥

षष्ठे च द्वादशे राहुश्चन्द्राच्च पतितो यदि।
स राजा राजमन्त्री च धनधान्यसमाकुलः ॥ २ ॥

जिसके राहु चन्द्रमासे छठे बारहवें स्थित हो वह राजा अथवा राजाका मन्त्री धन-धान्य करके युक्त होता है ॥ २ ॥

चतुर्थे सप्तमे राहुश्चन्द्राच्च यदि जायते।
माता पिता महाकष्टी सदा ह्यसुखदायकः ॥ ३ ॥

जिसके राहु चन्द्रमासे चौथे, सातवें स्थित हो तो उसके माता पिता दुःखी और वह सदा सुखहीन मनुष्य होता है ॥ ३ ॥

धन एकादशे स्थाने चन्द्राद्राहुः प्रजायते।
धनमानावसंयुक्तः[1] सुखं स्वप्ने न दृश्यते ॥ ४ ॥

जिसका राहु चन्द्रमासे दूसरे ग्यारहवें स्थित हो वह धन और मान करके हीन तथा स्वप्नमें भी सुख न पानेवाला होता है ॥ ४ ॥

पञ्चमे च यदा राहुश्चन्द्राज्जलजसंभवम्।
निधनं चापि सिद्धं च आपदश्च पदेपदे ॥ ५ ॥

जिसके राहु चन्द्रमासे पंचम स्थित होवे तो उसको जलसे मृत्यु कहे और पद पदमें आपदा भोगनेवाला होता है ॥ ५ ॥ इति राहुभावफलम् ॥

अथ राश्यायुः।

अश्विनीभरणीकृत्तिकापादे मेषराशिः-भौमक्षेत्रे जन्मतो नवपादफलम्। प्रथमे राजवन्त १-धनवन्त २-विद्यावन्त ३-देवगुरुभक्त ४-पंचमे चोर ५-कालभाषाहीन ६-सप्तमे योगीन्द्र ७-निर्धन ८-शुभ-

---

१ धनमानवसंयुक्तः इति पाठान्तरम्।

लक्षण ९ । मास १ कष्ट अल्पमृत्युः वर्ष १ वर्ष १३ जलघात-वर्ष १८ घातवर्ष ६४ अंगरोगवर्ष ५० चोरलोहपीडा उपघात यदा शुभ-ग्रहनिरीक्षितो भवति तदा जीवति वर्ष ७५ मास २ घटी १५ पल १५ । मृत्युः कार्तिकमासे तिथि चौथ वार मंगल भरणीनक्षत्रे देहं त्यजति । इति मेषराशिफलम् ॥ १ ॥

कृत्तिकायास्त्रयः पादा रोहिणीमृगशिरोऽर्द्धं वृषराशिः—शुक्रक्षेत्रे जन्मतो नवपादफलम् । प्रथमे यशवन्त १ सुतवन्त २ रणवन्त ३ शुभलक्षण ४ विद्यावन्त ५ सौभाग्यवन्त ६ कुलमण्डन ७ धनधान्य समर्थ ८ परद्वारचोर ९ । वर्ष ३।६।८।३३।४६।५२।६३ अग्निलोह-साण्डसर्प्पकष्टदेवदोषघाता एते अल्पमृत्यवः । यदा व्यतिक्रामन्ति तदा वर्ष ८५ मास ६ दिन ७ माघमासे शुक्लपक्षे तिथौ ९ शुक्रदिने रोहिणीनक्षत्रे अर्धरात्रे देहं त्यजति । इति वृषराशि फलम् ॥ २ ॥

मृगशिरोऽर्द्धं आर्द्रापुनर्वसुपादत्रयं मिथुनराशिः—बुधक्षेत्रे जन्मतो नवपादफलम् । प्रथमे भाग्यवन्त १ निर्धन २ कुत्सितभाषी ३ धने-श्वर ४ भाग्यवन्त ५ धनधान्यभोगी ६ चोर ७ महात्मसिद्ध ८ देव गुरुमाननीक ९ । कष्ट मास ६ वर्ष ६ अङ्गरोगवर्ष १० चक्षुःपीडा ११वर्ष १८ घातवर्ष २४ । ५३ । ६३ अल्पमृत्युः । यदा शुभग्रह-निरीक्षितो भवति तदा जीवति वर्ष ८५ पौषमासे कृष्णपक्षे अष्टमी-तिथौ बुधवारे आर्द्रानक्षत्रे प्रथमप्रहरे देहं त्यजति ॥ इति मिथुनराशि-फलम् ॥ ३ ॥

पुनर्वसुपादमेकं पुष्य आश्लेषान्तं कर्कराशिः—चन्द्रक्षेत्रज०प्रथमे धनवन्त १ महीपति २ स्वाङ्गमुनीश्वर ३ विद्यावन्त ४ धर्मवन्त ५ चोर ६ निर्धन ७देशपति ८कुलमण्डन ९। अल्पमृत्युदिन ११ कष्ट मास ९ वर्ष १ रोगवर्ष ७ जलघातवर्ष ९ अङ्गरोगवर्ष १२ जलघात वर्ष १६ अङ्गरोगवर्ष २० लोहघातवर्ष २७।३५ अल्पमृत्युदोष

वर्ष ४५ देवदोषवर्ष ५५।६१ अल्पमृत्युराजकष्ट असाध्यरोगः अग्नि-सर्पजलघातसांडवाघघात शुभग्रहनिरीक्षितस्तदा वर्ष ७० मास ५ दिन ३ फाल्गुनमासे शुक्लपक्षे ४ प्रहरे गोधूलिकवेलायां देहं त्यजति ॥ इति कर्कराशिफलम् ॥ ४ ॥

मघा च पूर्वाफाल्गुनी उत्तराफाल्गुनीपादे सिंहराशिः—सूर्यक्षेत्रे ज० प्रथमे राजमान्य १ धनेश्वर २ तीर्थवासी ३ पुत्रवन्त ४ स्वपक्षहीन५ मातापितातारक ६ राजमान्य ७धनधान्यसमर्थ ८ निर्धन ९। चौर्य मास ८ तथा वर्ष १ कष्टवर्ष १० । १५ अङ्गरोगवर्ष २५ वर्ष ४५ देवदोष सन्निपातवर्ष ५१ वर्ष ६१ घात अल्पमृत्युर्यदा व्यतिक्रामति तदा जीवति वर्ष ६५ श्रावणमासे शुक्लपक्षे १० दिने पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्रे रविवारे प्रथमप्रहरे देहं त्यजति ॥ इति सिंहराशिफलम् ॥ ५ ॥

उत्तरायास्त्रयः पादा हस्तश्चित्रार्द्धं कन्याराशिः—बुधक्षेत्रे जन्म० प्रथमे निर्द्धन १ पुत्रहीन २ शत्रुमरण ३ धनयान ४ भोगी ५ पुत्रवन्त ६ राजमान्य ७ सर्वसमर्थ ८ पराक्रमी ९। मातापितागुरुभक्त १० मास ३ वर्ष ३ अङ्गरोगवर्ष १ वर्ष १३ चक्षुःपीडा जलघातवर्ष २६ अङ्गरोगदेवपीडावर्ष ३३ लोहघातवर्ष ४३ अङ्गरोगः एतानि वर्षाणि अल्पमृत्युः। यदा शुभग्रहनिरीक्षितो भवति तदा जीवति वर्ष ८४ भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे ९ दिने बुधवारे हस्तनक्षत्रे गोधूलिकवेलायां देहं त्यजति ॥ इति कन्याराशिफलम् ॥ ६ ॥

चित्रार्द्धं स्वाती विशाखापादत्रयं तुलाराशिः—शुक्रक्षेत्रे जन्मतो नवपादफलम्। प्रथमे धनभोगी १ धनेश्वर २ निर्धन ३ भाषाहीन४ जातकर्मा ५ परदारा-चोर ६ मातापितातारक ७ राजमान्य ८ भाग्यवन्त ९। मास ४कष्टमास १६ अङ्गरोगवर्ष ४ कष्टवर्ष १६ जलघातवर्ष २१। ३३ अङ्गरोग ४१ अङ्गवृद्धि वर्ष ५१ देवदोषवर्ष ६१ अल्पमृत्युः। यदा शुभग्रहनिरीक्षितो भवति तदा जीवति वर्ष ८५

वैशाखमासे शुक्लपक्षे तिथि १२ शुक्रवारे शतभिषानक्षत्रे मध्याह्न-वेलायां देहं त्यजति ॥ इति तुलाराशिफलम् ॥ ७ ॥

विशाखापादमेकं अनुराधाज्येष्ठान्तं वृश्चिकराशिः—भौमक्षेत्रे ज० प्रथमे धनेश्वर १ यशवन्त २ आगमवन्त ३ महांतिकः भाषाहीन ४ कुलमण्डन ५ धनमान्यसमर्थ ६ विद्यावन्त ७ राजमान्य ८ यशवन्त ९ । मास २ कष्टवर्ष ३ कष्टवर्ष ७ अङ्गरोगवर्ष ८ जलघातवर्ष १२ वृक्षघातवर्ष ३२ । ३५ । अङ्गरोगलोहघातवर्ष ४५ अङ्गरोगवर्ष ६२ अल्पमृत्युः । यदा शुभग्रहनिरीक्षितस्तदा जीवति वर्ष ७५ मास २ दिन ७ ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षे तिथौ ११ मंगलवारे अनुराधानक्षत्रे प्रथमप्रहरे देहं त्यजति ॥ इति वृश्चिकराशिफलम् ॥ ८ ॥

मूलं च पूर्वाषाढा उत्तराषाढापादे धनूराशिः—गुरुक्षेत्रे ज० । प्रथमे ज्ञानवन्त १ निर्धन २ नीचकर्मकारक ३ राजमान्य ४ क्रोधी ५ पुत्रवन्त ६ कामलम्पट ७ धनेश्वर ८ रुधिरविकारी ९ । मास ५ वर्ष ३ कष्टवर्ष ९ अंगरोगवर्ष ११ चक्षुःपीडावर्ष १६ जलघातवर्ष २४ वर्ष ३६ अंगरोग वर्ष ४७ । ५७ । ६७ । तठई सर्पजलघात अल्पमृत्युः । यदा शुभग्रहनिरीक्षितस्तदा जीवति वर्ष ८५ आषाढमासे शुक्लपक्षे तिथि १ गुरुवारे हस्तनक्षत्रे गोधूलिवेलायां देहं त्यजति ॥ इति धनूराशिफलम् ॥ ९ ॥

उत्तरायास्त्रयः पादाः श्रवणधनिष्ठार्द्धं मकरराशिः—शनिक्षेत्रे ज० प्रथमे अंगहीन १ गुरुभक्त २ परदाररत ३ शुभलक्षण ४ देवांशी ५ पुत्रवन्त ६ उत्तम ७ महापति ८ दोऊपक्षतारक ९ । धनेश्वर ९ मास ३ कष्टमास १ देवदोषपीडावर्ष ३ अंगरोगवर्ष ५७ देवदोषवर्ष १० अंगरोगअग्निपीडावर्ष ३२ लोहघातवर्ष ३३ कष्टवर्ष ४३ तथा ५१ अल्पमृत्युः । यदा शुभग्रहनिरीक्षितो भवति तदा जीवति वर्ष ६१ कार्तिके मासे देवदोषः । अनंतरमल्पमृत्युर्यद्यस्य व्यतिक्रामति तदा

जीवति वर्ष ८१ शुक्लपक्षे तिथि ९ शुक्रवारे श्रवणनक्षत्रे देहं त्यजति॥ इति मकरराशिफलम्॥ १०॥

धनिष्ठार्द्धं शततारकापूर्वाभाद्रपदात्रयः कुम्भराशिः-शनिक्षेत्रे ज० प्रथमे मध्यम १ श्रीमन्त २ कष्टभाषाहीन ३ पुत्रवन्त ४ राजमान्य ५ बापकी बहीन ६ योगीन्द्र ७ अङ्गहीन ८ शुभलक्षण ९। दिन ३ कष्ट तथा दिन ७ अल्पमृत्यु १८ वर्ष ३२ शुभग्रहनिरीक्षितो भवति तदा जीवति वर्ष ६१ माघमासे शुक्लपक्षे तिथि २ गुरुवारे उत्तराभाद्रपदानक्षत्रे मृत्युर्भवति॥ इति कुंभराशिफलम्॥ ११॥

पूर्वाभाद्रपदापादमेकं उत्तराभाद्रपदरेवत्यन्तं मीनराशिः-जीवक्षेत्रज० प्रथमे धनवन्त १ कलाहीन २ लंपट ३ धनवन्त ४ चोर ५ कपटी ६ निर्धन ७ भागवन्त ८ नवमे आपक्लेश ९। वर्ष १८-३२ शुभग्रह निरीक्षितस्तदा जीवति वर्ष ६१ माघमासशुक्लपक्ष तिथि १२ उत्तराभाद्रपदानक्षत्रे गुरुवारे प्रातःकाले देहं त्यजति॥ इति मीनफलम्।

अथ लग्नायुः।

दिक् १० काल ६ नख २० बाणे ५ भं ८ दृक् २ नखाः २० समयो ६ दिशः १० मनवो १४ राम ३ वेदो ४ श्च मेषाद्यष्टोत्तरं शतम्॥ १॥

जन्मपत्र्यां यत्र स्थाने ग्रहो भवति तत्र तेषां लग्नानां ध्रुवाङ्काः संमेल्याः तदेवायुर्ज्ञेयम्॥

इति श्रीजन्मपत्रीपद्धतौ पञ्चाङ्गफलानयनं नाम प्रथमोऽध्यायः॥१॥

दिक् कहिये दश १०, काल छः ६, नख बीस २०, बाण पांच ५, इभ आठ ८, दृक् दो २, नख बीस २०, समय छः ६, दिशा दश १०, मनु चौदह १४, राम तीन ३, वेद चार ४, ये क्रमसे मेषादिद्वादशराशियोंके ध्रुवांक जानना, जन्मकुण्डलीमें सूर्यादिग्रह जिस २ राशिमें स्थित हों उन २ के ध्रुवांक एकत्र करनेसे स्पष्ट लग्नायु होती है॥ १॥

इति श्रीमानसागरीजन्मपत्रीपद्धतौ राजपंडितवंशीधरकृतभाषाटीकायां पञ्चाङ्गफलकथनं नाम प्रथमोऽध्यायः॥ १॥

द्वितीयोऽध्यायः २ ।

स्पष्टैर्ग्रहैर्विना किंचिन्निगदन्ति कुबुद्धयः ।
दशा चान्तर्दशादीनां फलं यान्त्युपहास्यताम् ॥ १ ॥

मूर्खलोग विना स्पष्टग्रहोंके दशा तथा अन्तर्दशादिकोंका जो फल कहते हैं वे उपहासको प्राप्त होजाते हैं ॥ १ ॥

गतकल्यानयनविधिः ।

वेदवेदखवह्निभि ३०४४ र्युते विक्रमवत्सरे ।
भवेदयनवल्ली सा तस्या गतकलिस्तथा ॥ २ ॥

तीन सहस्र चौवालीस ३०४४ विक्रमसंवत्सरमें युक्त करनेसे अयनवल्ली तथा कलिगत भाग होता है ॥ २ ॥

पलभा–चरखण्डानयनविधिः ।

मेषादिगे सायनभागसूर्ये दिनार्द्धजा भा पलभा भवेत्सा ।
त्रिस्था हता स्युर्दशभिर्भुजङ्गैर्दिग्भिश्चराद्धा त्रिगुणोद्धृतान्त्या ३

जिस दिन अयनांशसहित सूर्य राशि अंश कला विकलासे शून्य होय उस दिन मध्याह्नके समय समान भूमिपर बारह अंगुलका शंकु रक्खे । जो छाया पडे उसको पलभा कहते हैं. तिस पलभाको तीन स्थानमें लिखकर क्रमसे १० । ८ । १० से गुणा करे, अन्तके तीसरे गुणन फलमें तीन ३ का भाग दे, तब क्रमसे तीन चरखण्ड होते हैं ॥ ३ ॥

उदाहरण–लखीमपुर (खीरी) की पलभा ६ अंगुल है इसको पहिले १० से गुणा किया तब ६० अंगुल प्रथम चरखण्ड हुआ । फिर फलभा ६ को ८ से गुणा किया तब ४८ अंगुल द्वितीय चरखंड हुआ फिर पलभा ६ अंगुलको १० से गुणा किया तब ६० अंगुल हुआ । इसमें ३ का भाग दिया तब बीस अंगुल तीसरा चरखण्ड हुआ ॥

भुजकोटीनाह–

त्र्यूनं भुजः स्यात् त्र्यधिकेन हीनं
भार्द्धं च भार्द्धादधिकं विभार्द्धम् ।
नवाधिकेनोनितमर्कभं च
भवेच्च कोटिस्त्रिगृहं भुजोनम् ॥ ४ ॥

केन्द्र किंवा ग्रहादिक तीन राशिकी अपेक्षा कम हो तो भुज होता है और तीन राशिकी अपेक्षा अधिक होय तो छः राशिमें घटाकर जो शेष रहे वह भुज होता है । नौसे अधिक होय तो बारह राशिमें घटाकर जो शेष रहै वह भुज होता है । तीन राशिमें भुज घटाकर जो शेष रहै सो कोटि होती है ॥ ४ ॥

अयनांशाः।

शराब्धियुगै ४४५ रहितः शको व्यपहृतः खरसैरयनांशकाः।
मधुसितादिकमासगतं प्रति शरपलैः सहितं कुरु सर्वदा ॥ ५ ॥

शालिवाहन शकमें चारसौ पैंतालीस ४४५ घटादे जो शेष रहै वह कला होती है, उनमें साठका भाग दे जो लब्धि मिले सो अयनांश होता है। तात्कालिक अयनांश करनेके निमित्त चैत्र शुक्ल प्रतिपदासे जितने मास गत हों उतने गुणित पांच पलादि युक्त करदेवें अर्थात् प्रतिमास ५ पांच पल अयनांश बढता है तो तात्कालिक अयनांश होता है ॥ ५ ॥

अथोदाहरणार्थं कस्यचिज्जन्मसमयोऽत्र लिख्यते—

श्रीः ॥ आदित्यादिग्रहास्सर्वे सनक्षत्रास्सराशयः ॥
दीर्घमायुः प्रयच्छन्तु यस्यैषा जन्मपत्रिका ॥ १ ॥

श्रीशुभविक्रमीय संवत् १९५० तत्र श्रीमच्छालिवाहनभूभर्तुः शके १८१५ तत्र सौम्यायने भास्करे वसन्तर्तौ मासोत्तमे फाल्गुनमासे शुक्लपक्षे तिथौ दशम्यां भृगुवासरे घट्यादि ३२।३४ पुनर्वसुनक्षत्रे घट्यादि १४।५८ शोभनयोगे घट्यादि २१।४८ वणिजकरणे घट्यादि ४।४८ भयातं घट्यादि ४२।१७ भभोग ५६।५५ दिनघ० ३२।६ एवंविधे शुभे पञ्चांगोदये श्रीसूर्योदयादिष्टं घ. ४ पलानि २० स च द्विजदेवप्रसादाद्दीर्घायुर्भवतु ॥ शुभमस्तु ॥

अथायनांशोदाहरणम्—

इष्ट शके १८२३ में ४४५ घटाये तो १३७८ शेष रहे। इनमें ६० का भाग लगाया, भाग लेनेसे लब्ध २२ अंश ५८ कला ये अयनांश हुआ, तात्कालिक लानेके निमित्त चैत्रशुक्ल प्रतिपदासे वैशाखकृष्ण अमा तक एक मास हुआ, तो ५ विकला अयनांशमें युक्त किया। तब तात्कालिक अयनांश २२।५८।५ भया ॥

पञ्चाङ्गस्थग्रहाः।

ति. ९ गुरौ मिश्रमान अर्द्धरात्रौ। मकरन्दात्।							
उ. अ	उ	उ	अ	उ.	अ	उ	अ
ग्र	सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा
रा	११	९	१०	१	९	५	११
अं	८	१	२१	२	२६	२२	१८
क	३९	८	४१	२०	५८	३७	१
वि	१	३३	५७	५०	३१	४२	४७
मा. व	मार्गी	मा	मा	मा	मा	मा	वक्री
गति	५८ २६	७।२६	१०१।५०	२।२३	५४।३२	०।२	३।११

दिनमानमिश्रानयनप्रकारः ।

स्पष्टार्कोऽयनभागयुक्तभुजवद्भुक्तर्क्षतस्तच्चरं
धृत्वा भोग्यचरघ्नबाहुलवतः खाग्न्यु३०द्धृतैस्तैर्युतः ।
मेषात्स्वं शरवारिधी ४५ ऋणमथो कुर्यात्तुलादौ स्फुटं
तन्मिश्रं द्विगुणं द्युमानमुदितं रात्रेस्तु षष्ट्युत्तरम् ॥ ६ ॥

स्पष्ट सूर्यमें अयनांश युक्त करै तदनंतर सायनरविकी भुज लानेकी रीतिके अनुसार भुज लावे । वह भुज यदि राशि शून्य होय तब राशिको छोडकर केवल अंशादि मात्रको स्वदेशीय प्रथम चरखंडसे गुणा करे और यदि भुजमें एक राशि होय तो राशिको छोडकर अंशादिको द्वितीयचरखंडसे गुणा करै और यदि भुजमें दो राशि होंय तो राशिको छोडकर केवल अंशादिमात्रको तृतीय चरखंडसे गुणा करै जो गुणनफल होय उसमें ३० तीसका भाग देय जो लब्धि मिलै उसमें जिस चरखंडसे गुणा किया हो उससे पहला चरखण्ड जोडदेवे । तब यह चरसंज्ञक होता है. यदि सायनांशरवि मेषादिक छः राशि होय तो पैंतालीस घटीमें चरके घडी पलादि युक्त करदेय और तुलादि छः राशिके भीतर होय तो ऋणकर देवे तब स्पष्टमिश्रमानके घटीपलादि होते हैं । मिश्रमानमें तीस ३० घटाय देय शेषको दूना करै अथवा मिश्रमानको दूना करके साठ ६० हीन करदेय तो दिनमान होता है । एवं साठ ६० में मिश्रमान घटावे अथवा मिश्रमानमें दिनमान घटावे शेषको दूना करै तो रात्रिमान होता है ॥ ६ ॥

अपररीत्या दिनमानानयनम् ।

अयनादिकवासररामहता गगनानलबाणशशाङ्कयुताः ।
परभाजितशून्यरसैर्घटिका मकरादि दिनं कटकादि निशा ॥ ७ ॥

जिस दिन जिस मासमें मकर तथा कर्कराशियोंका अयनप्रवेश हो उस दिनसे वर्तमानदिनतक गिने अर्थात् मकरादि छः राशिके अंदर हो तो मकरके अयनसे और जो कर्कादि छः के भीतर हो तो कर्कसे गिने । फिर जितने गतमास हों उनको तीस ३० से गुणाकर दिन करे तदनंतर तीनसे गुणाकर वर्तमानमासके वर्तमान दिन तक जितने दिन हों युक्त करदेय फिर पंद्रहसौ तीस और मिला करके साठका भाग देय तो, लब्धि घटिकादि दिनमान या रात्रिमान होगा अर्थात् मकरादिमें दिनमान और कर्कादिमें रात्रिमान होता है । साठमें दिनमान या रात्रिमान हीन करै तो क्रमसे शेष रात्रिमान दिनमान होता है ॥ ७ ॥

मिश्रानयनोदाहरणम् ।

यहां जन्मदिनके निकट पंचांगस्थित ग्रह रविवार ३ तिथिको अर्धरात्रसमय है । तात्कालिक ग्रहादि स्पष्ट लानेके निमित्त मिश्रमान जानना आवश्यक है. इस कारण पंचांगस्थित स्पष्टसूर्य ०० । ८ । ३९ । १ अयनांश २२।५८।५ युक्त किया तो राश्यादितो राश्यादिसायनरवि १ । १ । ३७ । ६ हुआ; यह तीन राशिमें कम है इस कारण यही भुज हुआ, इस कारण अंशादि १ । ३७ । ६ को द्वितीय चरखंड ४८ से गुणा. क्योंकि, भुजमें एकराशि है तब ७७ । ४० । ४८ घट्यादि भया, इनमें ३० का भाग दिया । तब लब्धि हुई २ विकला १७ प्रतिविकला द्वितीय चरखंडसे गुणा-किया था, इस कारण प्रथमचरखण्ड ६० में लब्धि विकलादि २ । १७ युक्त किया । तब ६२ । १७ यह चर हुआ, यह चर मेषादि है. इस कारण ४५ में युक्त किया तो ४६ । २ । १७ अर्थात् ४६ घ. २ पलपर मिश्रमान हुआ । अब मिश्रमान ४६ । २ को दूना किया तब ९२ । ४ हुआ, इसमें ६० हीन किया तो शेष घट्यादि ३२ । ४ दिनमान हुआ. अथवा मिश्रमान ४६ । २ में ३० हीन किया तब शेष रहा १६ । २ इसको दूना किया तब घट्यादि वही ३२ । ४ दिनमान भया. मिश्र-मान ४६ को ६० में घटाया । तब शेष १३ । ५८ रहा अथवा मिश्रमान ४६ । २ में दिनमान ३२ । ४ हीन किया तब शेष वही १३ । ५८ रहा. इनको क्रमसे दूना किया तब एकही तुल्य घट्यादि २७ । ५६ रात्रिमान भया ॥

अथवा द्वितीयप्रकारेण-

यह वैशाख ४ मकरादिक है तो मकरकी संक्रांतिका अयन मार्गशुदी १३ का है । वहांसे गतमास ४ हुए । इनको ३० से गुणा १२० हुए । इनको ३ से गुणा तब ३६० हुए. इनमें वर्तमान वैशाखमासके दिन २२ युक्त किया । तब ३८२ भये इनमें १५३० मिलाया तब १९१२ हुए । ६० का भाग दिया तब घट्यादि ३१ । ५२ दिनमान भया । इसको ६० में हीन किया २८ । ८ रात्रिमान भया, यह स्थूल मत है ॥

तात्कालिकग्रहानयनम् ।

गतमवधिदिनाद्यं निघ्नितं स्वस्वगत्या
गगनरसविभक्तं लब्धमंशादिकं च ।
रहितयुतस्वजंत्री जायते स्पष्टखेटा
शुभसुगममुपायोऽवाचि वंशीधरेण ॥ ८ ॥

तिथिपत्रमें जो सूर्यादिग्रह स्पष्ट किये होते हैं उनको प्रस्तार या पंक्ति कहते हैं । वह प्रस्तार जो इष्टकालसे आगे होवे तो प्रस्तारके वार घटी पलमें इष्टसमयका वार घटीपल घटादेय जो शेष रहै वही वारादि गतअवधि ऋणसंज्ञक जानना, तथा जो इष्टकाल आगे होवे तो इष्टकालके वारादिमें प्रस्तारके वारादि घटावे । जो शेष रहै वही वारादि गतअवधि धन संज्ञक जाने । इसीको "चालक" कहते हैं । फिर ऋणचालन अथवा धनचालनको ग्रहकी गति (अपनी अपनी गति) से (गोमूत्रिका क्रम करके) गुणा करै, तदनंतर गुणन फलमें साठका भाग देवे जो लब्ध अंशकलादि होवै उसको पंचांगस्थितग्रहमें हीन वा युक्त करै अर्थात् ऋणसंज्ञक हो तो घटावै और धनसंज्ञकमें युक्त करै, तो वह तात्कालिक स्पष्ट ग्रह होता है । यहां वक्रगतिवाला ग्रह और राहु केतु इन सब ग्रहोंका चालन मार्गीग्रहोंसे विपरीत जानना अर्थात् धनचालनमें ऋण और ऋणचालनमें धन करै ॥ ८ ॥

ग्रहसाधनोदाहरणम्-

इष्टकाल जन्म समयका वारादि ०५ । ०४ । २० है और पंक्तिस्थ वारादि ४ । ५० । ३ इष्ट कालसे पीछे है । इस कारण यहां इष्टकालके वारादिमें प्रस्तारका वारादि घटाया तो शेष वारादि ०० । १४ । १७ । धनचालन हुआ; इसको सूर्यकी गति ५८ । २६ से गोमूत्रिका रीतिसे गुणा । तब विकलादि गुणन फल ८३४ । ३७ । २४ हुआ. इसमें ६० का भाग दिया । तब लब्धि घटी १३ पल ५४ हुए । इसमें पंचांगस्थ सूर्य राश्यादि ०० । ८ । ३९ । १ युक्त करदिया तो राश्यादि ००।८।५२।५५ स्पष्ट सूर्य तात्कालिक हुआ । इसी प्रकार मंगल आदि ग्रहोंकी गतिसे गुणा करके पूर्वोक्त रीत्यनुसार भौमादि ग्रहोंको तात्कालिक स्पष्ट करना ॥

तात्कालिकसूर्यादयः स्पष्टाः समजवाः ।

बृ.२ १२सू रा
३ १ ११ बु
चं४ १०मं शु
५ ७ ९
के
६ श ८

उ. अ	उद.	उ.	उ.	अस्त	उ.	अ.	उ.	अ.
ग्रहः	सू.	चं	मं	बु.	बृ.	शु	रा.	श.
रा.	११	०३	०९	१०	०१	०९	०५	११
अ.	८	०२	०१	२२	३	२७	२२	१८
क	५२	५४	१०	०६	२१	१६	३७	०१
वि.	५५	१९	१७	१३	१४	२४	४७	०२
भाव	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व
गति	५८।२६	४४३।२०	७।१६	१०१।५०	२।२३	७४।३२	०।९	३।११

चन्द्रसाधनम् ।

खषड्घ्नं भयातं भभोगोद्धृतं तत् खतर्कघ्नधिष्ण्येषु युक्तं द्विनिघ्नम् । नवाप्तं शशी भागपूर्वस्तु भुक्तिः खखाभ्राष्टवेदा भभोगेन भक्ताः ९॥

जन्म समयमें जो नक्षत्र उसकी भुक्त (व्यतीत)घटियोंको भयात कहते हैं और भुक्त एवं भोग्य घटियोंको एकत्र करनेसे अर्थात् कुल नक्षत्र भभोग होता है। भयातकी घटियोंको साठसे गुणा देवे फिर गुणनफलमें भभोगसे भाग लेवे. भाग लेनेसे लब्ध तीन अंक जो आवे उसको साठसे गुणा कियेहुये अश्विनी आदि गत नक्षत्रोंमें जोड देवे । तदनन्तर दोसे गुणा देवे फिर गुणेहुयेमें नव ९ का भाग लेवे भाग लेनेसे अंशादि लब्धांक मिलेंगे. अंशोंमें तीस ३० का भाग देकर राशि बना लेवै इस प्रकार चन्द्रमा स्पष्ट होगा । गति लानेका प्रकार–४८००० अडतालीस हजारको साठसे गुणा करै भभोगसे भाग लेवे तो गतिविगति लब्धि होवै९॥

उदाहरण–जन्मसमय रोहिणीनक्षत्रका भुक्तभाग घ. ४२ । १७ है यही भयात है और भोग्यभाग १४ । ३८ है । इन दोनोंको मिलाया तो भभोग ५६ । ५५ हुआ, यहां भयात ४२ । १७ को ६० से गुणा किया तब २५३७ हुए । इसमें भभोग ५६ । ५५ का भाग दिया । तब लब्धि ४४ । ३४ । २६ हुये; गतनक्षत्र कृत्तिका ३ को ६० से गुणा किया १८० हुये इनको युक्त किया तब २२४ । ३४ । २६ हुये; इनको दूना किया तब ४४९ । ८ । ५२ हुये इनमें ९ का भाग दिया तब लब्धि अंशादि ४९ । ५४ । १९ हुये । अंशोंमें ३० का भाग दिया तब स्पष्ट चन्द्रमा राश्यादि १ । १९ । ५४ । १९ हुआ; गति लानेके निमित्त ४८००० को ६० से गुणा तब २८८०००० हुये । भभोगसे भाग लिया तब लब्धि घट्यादि स्पष्ट चन्द्रगति ८४३ । २० हुई ॥

भावचक्रानयनम् ।

ज्ञेयोऽत्र प्रथमं हि जन्मसमयः कार्यादियन्त्रैः स्फुटं
तत्कालप्रभवा विलग्नसहिताः कार्यास्ततश्च ग्रहाः ।
सिद्धान्तोक्तपरिस्फुटोपकरणैः स्वैर्वा सकृत्कर्मणा
भावाः खेटदृशो बलानि च ततस्तेषां विचिन्त्यानि षट् ॥ १ ॥

यन्त्रादिद्वारा प्रथम स्फुट जन्मसमय जानकर सिद्धान्तोक्त रीतिसे अथवा करणग्रन्थोंके रीतिसे तात्कालिक द्वादशभावों तथा ग्रहोंको स्पष्ट करै एवं ग्रहदृष्टि तथा बलको स्पष्ट करके षड्वर्गको स्पष्ट करना चाहिये ॥ १ ॥

वदन्ति भावैक्यदलं हि सन्धिस्तत्रास्थितः स्यादबलो ग्रहेन्द्रः ।
ऊनेषु सन्धेर्गतभावजातामागामिजं चाप्यधिकं करोति ॥ २ ॥

दो भावोंका जो संगम है वही सन्धि कहलाती है, तहां स्थित अर्थात् सन्धिमें स्थित ग्रह बलहीन होता है और ग्रह यदि सन्धिसे न्यून हो तो वह गत (पिछाडी) भावसे उत्पन्न फलको देता है और जो सन्धिसे अधिक अर्थात् विरामसन्धिसे अधिक हो वह आगेवाले भावसे उत्पन्न फलको देता है ॥ २ ॥

भावांशतुल्यं[1] खलु वर्तमानो भावो हि संपूर्णफलं विधत्ते ।
भावोनके चाप्यधिके च खेटे त्रिराशिकेनात्र फलं प्रकल्प्यम् ॥ ३ ॥

जो ग्रह भावके समान अंशादिमात्रसे समान वर्तमान होवै तो पूर्णफल करता है और जो भावसे हीन अथवा अधिक हो तो ग्रहका फल त्रिराशिकद्वारा कल्पना करना चाहिये ॥ ३ ॥

भावप्रवृत्तौ हि फलप्रवृत्तिः पूर्णं फलं भावसमांशकेषु ।
ह्रासः क्रमाद्भावविरामकाले फलस्य नाशः कथितो मुनीन्द्रैः ॥ ४ ॥

भावकी प्रवृत्ति होनेसे ग्रहके फलकी प्रवृत्ति होती है. भावके समान होनेसे पूर्ण फल तथा भावसे आराम, विराम संधितरफको घटता हुआ हो उस ग्रहका फल क्रमसे नष्ट हो जाता है ॥ ४ ॥

जन्मप्रयाणव्रतबन्धचौलनृपाभिषेकादिकरग्रहेषु ।
एवं हि भावाः परिकल्पनीयास्तैरेव योगोत्थफलानि यस्मात् ॥ ५ ॥

जन्मसमयमें, यात्रामें, यज्ञोपवीतमें, चूडा (मुंडन) में, राज्याभिषेकादि समयमें और विवाहसमयमें इसी प्रकार भावों ग्रहों तथा उनके योगसे उत्पन्न फलको विचारना चाहिये ॥ ५ ॥ इति भावचक्रानयनम् ॥

भावकरणम् ।

तत्रादौ स्वदेशोदयज्ञानम्-

लङ्कोदया नागतुरङ्गदस्रा गोङ्काऽश्विनो रामरदा विनाड्यः ।
क्रमोत्क्रमस्थाश्चरखण्डकैः स्वैः क्रमोत्क्रमस्थाश्च विहीनयुक्ताः ॥ ६

लंकामें मेषराशिका उदय दोसौ अठहत्तर २७८ पल, वृषभराशिका उदय दोसौ निन्नानवे २९९ पल, मिथुनराशिका उदय तीनसौ तेईस ३२३ पल, कर्कका ३२३, सिंहका २९९, कन्याका २७८ पल रहता है और लंकामें तुलाराशिसे

---

1 भावेशतुल्यम् । इति पाठन्तरम् ।

मीनराशितक उदयके पल, कन्याराशिसे उलटा मेषराशितक लिखा है सो जानना; जिस देशका उदय लाना होय उस देशका चरखण्ड लेके क्रमसे मेष, वृष, मिथुनके उदय पलोंमें कम करना और वही चरखण्ड उलटा कर्क सिंह कन्याके पलात्मक उदयमें क्रमसे युक्त करना तो स्वदेशका पलात्मक उदय मेषसे कन्यातक होता है और वही उदय उलटा तुलासे मीनतक होता है ॥ ६ ॥

स्वदेशोदय लानेका उदाहरण–

मेषराशिके पलात्मक उदय २७८ में लखीमपुरके प्रथम चरखण्ड ६० को घटाया तब २१८ यह पलात्मक लखीमपुरके विषे मेषराशिका उदय हुआ, वृषके पलात्मक उदय २९९ में द्वितीय चरखण्ड ४८ घटाया । तब २५१ यह पलात्मक वृषका उदय हुआ, मिथुनके पलात्मक ३२३में तृतीय चरखण्ड २० को घटाया। तब ३०३ यह मिथुनका पलात्मक उदय हुआ, अब कर्कके उदय ३२३ सिंहके उदय २९९ कन्याके उदय २७८ में क्रमसे २०।४८।६० युक्त किया तब क्रमसे कर्कका ३४३ सिंहका ३४७ कन्याका ३३८ यह पलात्मक उदय हुआ स्वदेशका उदय मेषसे कन्यातकका उलटा किया तब तुलासे मीनतकका पलात्मक स्वदेशोदय हुआ जैसा चक्रमें देखना ॥

लंकोदयचक्रम्.						स्वदेशोदयचक्रम्.					
मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	मेष	वृष	मि.	कर्क	सिंह	कन्या
२७८	२९९	३२३	३२३	२९९	२७८,,	२१८	२५१	३०३	३४३	३४७	३३८
मीन	कुंभ	मकर	धन	वृ.	तुला	मीन	कुंभ	मकर	ध.	वृ.	तुला

लग्नसाधनम्।

तत्कालार्कः सायनः स्वोदयघ्नो भोग्यांशाः खत्र्युद्धृता भोग्यकालः।
एवं यातांशैर्भवेद्यातकालो भोग्यः शोध्योऽभीष्टनाडीपलेभ्यः ॥ ७ ॥
तदनु जहीहि गृहोदयांश्च शेषं गगनगुणघ्नमशुद्धहृल्लवाद्यम् ।
सहितमजादिगृहैरशुद्धपूर्वैर्भवति विलग्नमदोऽयनांशहीनम् ॥ ८ ॥

जिस समयका लग्न बनाना चाहे उस समयके स्पष्टसूर्यमें तत्काल अयनांश युक्त करै तो उसकी सायनसंज्ञा होती है. उस राश्यादि सायनार्कमेंसे राशिका त्यागकरके जो अंशादिक फल रहे उसको भुक्त कहते हैं. उस भुक्तको ३० अंशोंमें कम कर देनेसे शेषको अंशादि भोग्य फल कहते हैं. तदनंतर जो राशि दूर

की थी उसमें एक मिलाकर तत्परिमित राशिके उदयसे भुक्त अथवा भोग्यको गुणाकरके तीस ३० का भाग दे. तब क्रमसे भुक्तकाल अथवा भोग्यकालके पल होते हैं । तदनन्तर अभीष्ट घडियोंके पल करके उसमें भोग्यकालके पल घटावे जो शेष रहे उसमें जिस उदयसे गुणा किया था उससे आगेके जितने पलात्मक उदय घट सकैं उतने घटावें । पीछेसे जो पलादिक शेष रहें उनको तीससे गुणा करे तब जो गुणनफल हो उसमें जो उदय घट नहीं सका हो उसका भाग देय तब जो अंशादि लब्ध हो उसमें मेषराशिसे लेकर जितनी राशिका उदय घटा हो उतनी राशि युक्त करै तब जो अंक आवें उनमें अयनांश घटावै तब जो शेष रहे वह अभीष्ट कालकी राश्यादि लग्न होती है ॥ ७ ॥ ८ ॥

भोग्याल्पकालात्खत्रिघ्नात्स्वोदयाप्तलवादियुक् ।
रविरेव भवेल्लग्नं सषड्भार्कान्निशातनुः ॥ ९ ॥

जो भोग्यकाल थोडा होवै अर्थात् इष्टघटी पलोंमें नहीं घटै तो इष्टघटी पलको तीस ३० से गुणा करै अनन्तर सायनसूर्यके राश्युदयसे भाग लेवै । भाग लेनेसे जो अंशादिक लब्ध मिलैं उनको सूर्यमें युक्त कर देवे । संयुक्त करदेनेहीसे लग्न स्पष्ट हो जाती है; और रात्रिके विषे लग्न साधन होय तो स्पष्ट सूर्यमें ६ राशि युक्त करना । अनन्तर पूर्वरीतिप्रमाण लग्न बनाना, परन्तु अभीष्टकाल रखते समय जो इष्टकाल होय उसमें दिनमान कम करके जो शेष रहे सो अभीष्ट रखना ॥ ९ ॥

लग्नसाधनोदाहरणम् ।

स्पष्ट सूर्य राश्यादि ०० । ८ । ५२ । ५५ में अयनांश २२ । ५८ । ५ । को युक्त किया तब १। १ । ५१ । ०० यह सायनरवि हुआ, राशि १ को छोडकर भुक्त अंशादि १ । ५१ । ०० को ३० में घटाया तो २८ । ९ । ०० यह भोग्यांश हुए । अब सायनार्क वृषराशिका है तो वृषराशिके उदय २५१ से भोग्यांशादि २८ । ९ । ०० को गुणादिया (और विपल व प्रातिविपलको ६० से चढादिया) तो ७०६५ । ३९ । ०० हुए । इनमें ३० का भाग दिया भाग लेनेसे २३५ । ३१ । १८ सूर्यके भोग्यपलादि अंक हुए. ये इष्टकाल ० । २० से अधिक हैं, इस कारण पलात्मक न्यून इष्टकाल २० को ३० से गुणा किया तब ६०० हुए, यहां सायन सूर्य वृषराशिका है इस कारण वृषराशिके उदय २५१ का ६०० में भाग लगाया तब अंशादि लब्धि हुई २ अं. ३ क. २९ वि. इसको स्पष्टरविमें युक्त किया तब रा. ० अं. ११ क. १६ वि. २० यह तात्कालीन लग्न हुई. इसमें ६ राशि युक्त किया तब राश्यादि ६ । ११ । १६ । २० यह सप्तमभाव स्पष्ट भया ॥

दशमसाधनार्थं नतायनम्।

मध्याह्ने चार्धरात्रे वा स्वेष्टकालो यदा भवेत्।
तदा तात्कालिकः सूर्यो भवेल्लग्नं खतुर्यकम् ॥ १० ॥

जो ठीक मध्याह्नमें अपना जन्म होय तो तात्कालिक सूर्य दशमभाव होता है और जो ठीक मध्यरात्रिसमय इष्टकाल हो तो तात्कालिक स्पष्ट सूर्य चतुर्थ भाव होता है ॥ १० ॥

रात्रिशेषगते वाऽपि दिनार्द्धं भयुतं दिनम्।
दिनार्द्धं दिनजातेन तत्पूर्वमपरं परम् ॥ ११ ॥
अर्द्धरात्रिपरं यावद्दिनमध्यान्नतं भवेत्।
रवेः पूर्वकपालं च तदूर्ध्वं पश्चिमं नतम् ॥ १२ ॥
प्राग्लङ्कोदयतः साध्या उक्ताश्च घटिका रवेः।
प्राक्कपालमृणं कुर्याद्धनमन्यकपालयोः ॥ १३ ॥

रात्रिशेष घटीपलमें दिनार्ध घटीपल युक्त करै तो रात्रिका पूर्वनत हो और रात्रिगत घटीपलमें दिनार्धघटीपल युक्त करै तो रात्रिका पश्चिमनत होता है तथा दिनार्द्ध घटीपलमें अभीष्ट घटी पल घटजानेसे दिनका पूर्वनत और अभीष्टकालमें दिनार्ध घटजावै तो दिनका परनत होता है ॥ ११ ॥ अर्थात् अर्धरात्रिपर्यन्त अथवा मध्याह्नपर्यन्तके भीतरका इष्टकाल हो तो पूर्वनत और उपरान्तमें पश्चिमनत होता है ॥ १२ ॥ सायनार्कके भुक्तकाल वा भोग्यकालको लङ्कोदयसे लग्नवत् साधन करै तथा पूर्वनतमें ऋणक्रियासे और पश्चिमनतमें धनक्रियावत् दशमसाधन करै अर्थात् पूर्वोक्तरीतिसे सायनांकके भुक्तकाल व भोग्यकालको ग्रहण कर अंशादिकोंको दशमभाव स्पष्ट करनेके अर्थ लंकोदय राशिप्रमाणसे गुणा करै और तीस ३० से भाग लगाकर पलादिको ग्रहण करै फिर उन भुक्त वा भोग्य पलात्मक अंकोंको पूर्वनत होय तब पूर्वनतको इष्टकाल कल्पनाकरके उसीमें सूर्यके भुक्तकालको शोधन करै और संपूर्ण शेष क्रिया ऋणलग्नके समान करै और जब पश्चिमनत होय तो पश्चिमनतको इष्टकाल मानकर उसीमें सूर्यके भोग्यकालको शोधन करै, अन्य सब क्रिया धन लग्नके समान करै तो दशमभाव सिद्ध होता है नतको तीसमें हीन करनेसे उन्नत होता है ॥ १३ ॥

दशमचतुर्थभावसाधनोदाहरणम्–

लग्नसाधनके रीतिसे दशमभावसाधन किया जाता है केवल भेद इतनाही है कि लग्नसाधनमें स्वदेशोदय लग्नका प्रमाण लिया जाता है और दशमसाधनमें लंकोद-

यका प्रमाण लियाजाता है और इष्टकालके स्थानमें नत वा उन्नत कालकी घटी पलका ग्रहण है । तहां लग्नसाधनके उदाहरणमें भोग्यांशोंपरसे लग्नसाधनका क्रम दरशाया है । अब भुक्तांशोंपरसे दशम साधनका उदाहरण लिपिबद्ध करते हैं, तात्कालिक सायनार्क ०।१।५१।०० एक १ राशिको छोडकर अंशादि १।५१।० भुक्त हुये, इनको लंकोदयी वृषराशिके उदयसे गुणादिया तो पलादि हुये ५५३। ९।०० इसमें ३० का भाग दिया, भाग देनेसे १८ । २८ । १८ यह सूर्यके भुक्त पलादि, अंक हुए । इनको पूर्वनत १५ । ४३ की पलात्मक संख्या ९४३ में घटाया तो ९२४ । ३३ । ४२ शेष रहे । इसमें वृषसे पीछेकी राशि मेषके लंकोदय मान २७८ मीनके २७८ कुंभके २९९ उदयोंको घटाया तो ६९ । ३३ । ४२ शेष रहे । इसमें मकरका उदय ३०३ नहीं घटता, इस कारण शेष ६९ । ३३ ४२ को ३० से गुणा करदिया तब २ । ८६ । ५१ । ०० हुये । इसमें अशुद्ध मकरके मान ३०३ से भाग दिया तो लब्ध अंशादि ६ । ४९ । ६ हुये यहां ऋणलग्नके क्रियासे दशम साधन किया है इस कारण अशुद्धोदय मकरकी संख्या मेषसे दशवीं है तो दशराशिमें घटाया तो ९ । २३ । १० । ५४ हुए इसमें अयनांशोंको घटाया तो ९ । ० । १२ । ४९ यह राश्यादि स्पष्ट दशम भाव भया । दशममें ६ राशि युक्त किया तो ३ । ० १३ । ४९ यह चतुर्थभाव भया ॥

धनादिभावसाधनम् ।

लग्नं चतुर्थात्संशोध्य शेषं षड्भिर्विभाजितम् ।
राश्यादि योजयेल्लग्ने सन्धिः स्याल्लग्नवित्तयोः ॥ १४ ॥
सन्धिः षडंशसंयुक्तो धनभावो भवेत्स्फुटः ।
धनभावः षडंशाढ्यः सन्धिर्धनतृतीययोः ॥ १५ ॥
षडंशसंयुतः सन्धिस्तृतीयो भाव उच्यते ।
षडंशाढ्यस्तृतीयः स्यात्सन्धिर्भ्रा (र्भ्रा) तृचतुर्थयोः ॥ १६ ॥
तृतीयसन्धिरेकाढ्यस्तुर्यः सन्धिर्भवेदिह ।
द्व्याढ्यस्तृतीयभावोऽपि पुत्रभावो भवेत्स्फुटः ॥ १७ ॥
त्र्याढ्यो द्वितीयसन्धिः स्यात्सन्धिः पञ्चमभावजः ।
धनभावो वेदयुतो रिपुभावः प्रजायते ॥ १८ ॥
लग्नसन्धिः पञ्चयुतः सन्धिः स्याद्रिपुभावजः ।

लग्नाद्याः सन्धिसहिता भावाः षड्राशिसंयुताः।
सप्तमाद्या भवन्तीह भावाः सर्वे ससन्धयः॥ १९॥

लग्नको चतुर्थ भावमें घटानेसे जो शेषांक हो उनमें छः का भाग दे अर्थात् लग्न व चतुर्थके अंतरका षष्ठांश (छठा भाग) लेवै। वह षष्ठांश राश्यादि लग्नमें जोडदेवे तो लग्नकी विरामसंधि और धन भावकी आरंभ संधि होती है॥ उस संधिमें षष्ठांश युक्त करनेसे धन भाव स्फुट होता है धन भावमें षष्ठांश जोड देनेसे धन भावकी विराम (समाप्ति) संधि और तृतीय भावकी आरंभ संधि होती है॥ उस संधिमें षष्ठांश युक्त करै तो तृतीयभाव होता है फिर तृतीय भावमें षष्ठांश युक्त करे तो तृतीय भावकी विरामसंधि और चतुर्थ भावकी आरंभसंधि होती है॥ और तृतीय भावकी संधिमें एक जोड देवै तो वह चतुर्थ भावकी विरामसंधि होती है. तृतीय भावमें दो जोड देनेसे पञ्चम भाव स्फुट होता है॥ द्वितीय भावकी संधिमें तीन जोड देनेसे पंचम भावकी संधि होती है, धन भावमें चार युक्त करनेसे छठा भाव होता है॥ लग्नकी संधिमें पांच युक्त करै तो रिपु भावकी संधि होती है। संधि सहित लग्नादिक भावोंमें छः २ राशि संयुक्त करनेसे सप्तम आदिक सब भाव सन्धिसहित होते हैं॥ १४-१९॥

धनादिभावसाधनोदाहरणम्-

लग्नराश्यादि ००। ११। १६। २० चतुर्थभाव राश्यादि ३। ००। १२। ४९ चतुर्थमें लग्नको घटाया अर्थात् लग्न चतुर्थका अंतर २। १८। ५६। ४९ इसमें ६ का भाग दिया अर्थात् षष्ठांश निकाला तो ००। १३। ९। २९ यह अंक राश्यादि (षष्ठांक) हुए। इस षष्ठांशको लग्नमें युक्त किया तो ००। २४। २९।४९ यह लग्नकी विराम और धन भावकी आरंभ संधि हुई। इसमें षष्ठांश जोड दिया तो ०१। ७। ३९। १० यह धन भाव हुआ। इसमें षष्ठांश युक्त किया तो १। २०। ४४। ३९ यह धन भावकी विरामसंधि हुई इसी प्रकार पूर्वोक्त रीतिसे बारहों भावका स्पष्ट चक्र लिखा है। सो चक्रमें देखकर संपूर्ण भावोंका साधन करना भली भाँति समझलेवे॥

भावकुंडली।

अथ तन्वादयो भावाः ससन्धयः स्युः ।

भाव	तनु	स०	ध	सं	तृ	सं	चतु	सं	प	सं	रि	सं
रा.	००	००	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५
अं.	११	२४	७	२०	३	१७	००	१७	३	२०	७	२४
क.	१६	२९	३९	४४	५४	३	१२	३	५४	४४	३९	२९
वि.	२०	४५	१०	३९	००	५९	४१	२९	००	३९	१०	४९
भाव	जा	सं	मृ	सं	ध	सं	क	सं	आ	सं	व्य	सं
रा.	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११
अं.	११	२४	७	२०	३	१७	००	१७	३	२०	७	२४
क.	१६	२९	३९	४४	५४	३	१२	३	५४	४४	३९	२९
वि.	२०	४२	१०	३५	००	५९	४१	२९	००	३९	१०	५९

विश्वाप्रतिविश्वाकरणम् ।

सन्धीकृताधिकाः खेटा ग्रहैश्च नखताडिताः ।
भावसंध्यन्तरेणाप्तं तत्र विंशोपकाः फलम् ॥ २० ॥

संधि, ग्रह इनमें जो अधिक हो उसमें कमतीको हीन करके अर्थात् भावतुल्य ग्रह होय तो पूर्णफल २० विश्वा देता है तथा ग्रह भावसे कमती होय तो ग्रहमेंसे आरंभसंधि कम करना. एवं ग्रह भावमें अधिक होय तो विरामसंधिमेंसे ग्रह कम करना अर्थात् समीपवर्ती संधि और ग्रहका अंतर करना । फिर शेष अर्थात् अंतरको बीससे गुणा करै तदनंतर उसमें भाव और संधिके अंतरसे भागलेवे, भाग लेनेसे जो अंशादि फल मिले उसीको विंशोपक कहा है अर्थात् इतने विश्वा यह ग्रह फल देगा ॥ २० ॥

विंशोपकावलोदाहरणम्-

सूर्यराश्यादि ०० । ८ । ५२ । ५५ तनुभाव ०० । ११ । १६ । २० से कम है इस कारण सूर्यमेंसे आरंभ संधि अर्थात् समीपकी संधि ११ । २४ । २९ । ४९ को घटाया अर्थात् अंतर किया तो शेष अंशादि १४ । २७ । १० रहे । इनको २० से गुणा तो २८९ । ३ । २० यह भाज्य हुआ, अब तनुभाव ०० । ११ । १६ । २० और इसकी संधि ११ । २४ । २९ । ४९ का अंतर किया तो शेष अंशादि १६ । ५० । ३९ रहे यह भाजक जानो. भाग लेनेके अर्थ भाज्य भाजकको ६० से गुण दिया तो भाज्य १०४०६०० हुआ और भाजक ६०६३९ हुआ इससे भाग लेनेपर लब्ध १७ । ९ यह सूर्यका विंशोपकात्मक पल भया अर्थात् तनु (लग्न) भावमें सूर्यका १७ । ९ विश्वा बल जानना. इसी प्रकार चन्द्रमा

आदिका विश्वा बलसाधन करै ॥ चं. १ । वि. मं. १६ ॥ वि. बुध. २ ॥ वि. बृ. ८ ॥ वि. शुक्र १६ वि. शनि. ८ ॥ राहु. १३ । विश्वा केतु १३ । विश्वा बल पाया ॥

अथ द्वादशभावनिरीक्षणविधिः ।

तन्वादयो भावबलं वदन्ति तत्स्वामिसम्पूर्णबलैः समेतः ।
युक्तेऽथ दृष्टे शुभदृग्युते च क्रमेण तद्भावविवृद्धिकारी ॥ १ ॥

लग्न आदिक द्वादशभावोंमेंसे जो जो भाव अपने पूर्ण बली स्वामीवाला हो अथवा स्वामीसे युक्त वा देखा जाता हो अथवा शुभग्रहोंकी दृष्टिसे युक्त हो तो क्रमसे उस भावकी वृद्धि कहना चाहिये ॥ १ ॥

रूपं तथा वर्णविनिर्णयश्च चिह्नानि जातिर्वयसः प्रमाणम् ।
सुखानि दुःखान्यपि साहसं च लग्ने विलोक्यं खलु सर्वमेतत् ॥२॥
स्वर्णादिधातुः क्रयविक्रयश्च रत्नानि कोशोऽपि च संग्रहश्च ।
एतत्समस्तं परिचिन्तनीयं धनाभिधाने भवने सुधीभिः ॥ ३ ॥

रूप, वर्ण, चिह्न, जाति, अवस्थाका प्रमाण, सुख, दुःख और साहस इन सब, पदार्थोंका विचार तनुभावसे करना चाहिये ॥ २ ॥ स्वर्णादि धातु, क्रय, विक्रय रत्नादि कोषका संग्रह ये सब दूसरे (धन) भावसे विचार करना चाहिये ॥ ३ ॥

सहोदराणामथ किङ्कराणां पराक्रमाणामुपजीविनां च ।
विचारणा जातकशास्त्रविद्भिस्तृतीयभावे विनयेन कार्या ॥ ४ ॥
सुहृद्गृहग्रामचतुष्पदो वा क्षेत्राद्यमालोकनकं चतुर्थे ।
दृष्टे शुभानां शुभयोगतो वा भवेत्प्रवृद्धिर्नियमेन तेषाम् ॥ ५ ॥
बुद्धिप्रबंधात्मजमंत्रविद्याविनेयगर्भस्थितिनीतिसंस्थाः ।
सुताभिधाने भवने नराणां होरागमज्ञैः परिचिन्तनीयम् ॥ ६ ॥
वैरिव्रातक्रूरकर्मामयानां चिन्ताशङ्कामातुलानां विचारः ।
होरापारावारपारं प्रयातैरेतत्सर्वं शत्रुभावे विचिन्त्यम् ॥ ७ ॥

सहोदरभाईका, नौकरका और पराक्रमका विचार तीसरे (सहज) भावसे करना चाहिये ॥ ४ ॥ चौथे (सुहृद्) भावसे मित्र, मकान, ग्राम, चौपाये जीव, क्षेत्र भूमि इन सबका विचार करना चाहिये, जो शुभग्रह बैठे होंय या देखते होंय तो इन सब पदार्थोंकी वृद्धि कहना और जो चौथे स्थानमें पापग्रह बैठे होंय वा देखते होंय तो इन पदार्थोंकी हानिं होती है ॥ ५ ॥ बुद्धिके प्रबन्ध, विद्या, सन्तान, मंत्राराधन, नीति, न्याय और गर्भकी स्थित्ति ये सब विचार पंचम (सुत) भावसे करना

चाहिये ॥६॥ शत्रु, व्रण (फोडा, फुंसी, तिल, मस्सा), क्रूरकर्म, रोग, चिंता, शंका, मातुलका शुभाशुभ विचार, ये सब छठे (शत्रु) भावसे विचार करना चाहिये ॥ ७ ॥

रणाङ्गणं चापि वणिक्क्रिया च जायाविचारो गमनप्रमाणम् ।
शास्त्रप्रवीणेन विचारणीयं कलत्रभावे किल सर्वमेतत् ॥ ८ ॥
नद्युत्तारात्पन्थवैषम्यदुर्गं शस्त्रं चायुः संकटेतेति सर्वम् ।
रन्ध्रस्थाने सर्वथा कल्पनीयं प्राचीनानामाज्ञया जातकज्ञैः ॥९॥

युद्ध, स्त्री, व्यापार, परदेशसे आनेका विचार ये सब सप्तम (जाया) भावसे विचार करना चाहिये ॥८॥ नदीके पार उतरना, रास्ता, विषमस्थान, शस्त्रप्रहार, आयुषीय समस्त संकटोंका विचार अष्टम (रन्ध्र) भावसे करना चाहिये ॥ ९ ॥

धर्मक्रियायां हि मनःप्रवृत्तिर्भाग्योपपत्तिर्विमलं च शीलम् ।
तीर्थप्रयाणं प्रणयः पुराणैः पुण्यालये सर्वमिदं प्रदिष्टम् ॥ १० ॥
व्यापारमुद्रानृपमान्यराज्यं प्रयोजनं चापि पितुस्तथैव ।
महत्फलाप्तिः खलु सर्वमेतद्राज्याभिधाने भवने विचार्यम् ॥११॥
गजाश्वहेमाम्बरछत्रजातमान्दोलिकामङ्गलमङ्गलानि ।
लाभः किलैषामखिलं विचार्यमेतत्तु लाभस्य गृहे गृहज्ञैः ॥१२॥
हानिर्दानं व्ययश्चापि दण्डो निर्बन्ध एव च ।
सर्वमेतद्व्ययस्थाने चिन्तनीयं प्रयत्नतः ॥ १३ ॥

धर्मक्रियामें मनकी प्रवृत्ति और निर्मल स्वभाव, तीर्थयात्रा, नीति, नम्रता ये सब नवम (भाग्य) भावसे विचार करना चाहिये ॥ १० ॥ व्यापार, मुद्रा, राजमान्य और राजसंबंधी प्रयोजन, पिताके सुखदुःखका विचार, महत् पदकी प्राप्ति ये सब दशम (पुण्य) भावसे विचार करना चाहिये ॥११॥ हाथी, घोडा, सोना, चांदी, वस्त्र, आभूषण, रत्नोंका लाभ, पालकी, मकान इन सब चीजोंका विचार ग्यारहवें (लाभ) भावसे करना चाहिये ॥ १२ ॥ हानिका विचार व दानका व व्ययका व दंड और बंधन इन सबका विचार (व्यय) बारहवें भावसे करना चाहिये ॥ १३ ॥ इति द्वादशभावनिरीक्षणविधिः ॥

अथ ग्रहाणां फलानि ।

मूर्त्यादयः पदार्था ज्ञायन्ते येन जन्तूनाम् ।
तदिदमधुना प्रवक्ष्ये भावाध्यायं विशेषेण ॥ १ ॥

मनुष्यके शरीरसंबन्धी पदार्थ जिससे मालूम होते हैं वह ग्रहभावाध्याय विशेष-रीतिसे अब कहता हूं ॥ १ ॥

तत्रादौ रविफलम्।

सवितरि तनुसंस्थे शैशवे व्याधियुक्तो नयनगदसुदुःखी नीचसेवानुरक्तः। न भवति गृहमेधी दैवयुक्तो मनुष्यो भ्रमति विकलमूर्तिः पुत्रपौत्रैर्विहीनः ॥ १ ॥ धनगतदिननाथे पुत्रदारैर्विहीनः कृशतनुरतिदीनो रक्तनेत्रः कुकेशः। भवति च धनयुक्तो लोहताम्रेण सत्यं न भवति गृहमेधी मानवो दुःखभागी॥२॥सहजभवनसंस्थे भास्करे भ्रातृनाशः प्रियजनहितकारी पुत्रदाराभियुक्तः। भवति च धनयुक्तो धैर्ययुक्तः सहिष्णुर्विपुलधनविहारी नागरीप्रीतिकारी ॥ ३ ॥ विविधजनविहारी बन्धुसंस्थो दिनेशो भवति च मृदुवेत्ता गीतवाद्यानुरक्तः। समरशिरसि युद्धे नास्ति भङ्गः कदाचित्प्रचुरधनकलत्री पार्थिवानां प्रियश्च४

जिसके जन्मकालमें सूर्य तनुभावमें स्थित हो वह बाल्यावस्थामें व्याधिकरके युक्त, नेत्ररोगसे दुःखी, नीचकी सेवामें मिलित, गृहस्थीसे रहित, भाग्यवान्, विकलकी तरह भ्रमित और पुत्रपौत्रादिकरके हीन होता है ॥ १ ॥ जिसके सूर्य धनस्थानमें होय वह पुत्र स्त्रीसे रहित, दुर्बलशरीरवाला, अतिदीन, रक्तनेत्रावाला, बुरे केशवाला हो, लोह और ताम्रके क्रयविक्रयसे धनवान्, गृहस्थीसे हीन और दुःखका भागी होता है ॥ २ ॥ जिसके तीसरे भावमें सूर्य होय वह भाइयोंसे हीन अर्थात् भाई उसके मरजावें, मित्रोंका हित करनेवाला, पुत्र-स्त्रीकरके युक्त, धनवान्, धैर्ययुक्त, सहनशील, अधिक धनका विहार करनेवाला और स्त्रियोंमें प्रीतिवाला होता है ॥ ३ ॥ जिसके सूर्य चतुर्थभावमें होय वह अनेक जनोंसे विहार करनेवाला, मधुरवाणीवाला, गानेबजानेमें अनुरक्त, समरका प्रधान, युद्धमें जिसकी भंग कभी न होय, बहुत धनवान्, कलत्रों और राजाओंको प्रिय होता है ॥ ४ ॥

तनयगतदिनेशे शैशवे दुःखभागी न भवति धनभागी यौवने व्याधियुक्तः। जनयति सुतमेकं चान्यगेहश्च शूरश्चपलमतिविलासी क्रूरकर्मा कुचेताः ॥ ५ ॥ अरिगृहगतभानौ योगशीलो मतिस्थो निजजनहितकारी ज्ञातिवर्गप्रमोदी। कृशतनुगृहमेधी चारुमूर्तिर्विलासी भवति च रिपुजेता कर्मपूज्यो दृढाङ्गः॥ ६ ॥ युवतिभवन-

संस्थे भास्करे स्त्रीविलासी न भवति सुखभागी चञ्चलः पापशीलः । उदरसमशरीरो नातिदीर्घो न ह्रस्वः कपिलनयनरूपः पिङ्गकेशः कुमूर्तिः ॥ ७ ॥ निधनगतदिनेशे चञ्चलस्त्यागशीलः किल बुधगणसेवी सर्वदा रोगयुक्तः । विकलबहुलभाषी भाग्यहीनो विशीलो रतिविहितकुचैलो नीचसेवी प्रवासी ॥ ८ ॥

जिसके सूर्य पंचमभावमें होय वह लडकोका दुःखभागी, धनहीन, युवावस्थामें व्याधिसे युक्त, एक सुत (पुत्र) को उत्पन्न करनेवाला, अन्यस्त्रीवाला अथवा दूसरेके घरमें रहनेवाला, शूर, चपल बुद्धिवाला, विलासी, दुष्टकर्म करनेवाला और बुरे चित्तवाला होता है ॥ ५ ॥ जिसके सूर्य छठे भावमें होय वह योगशील, मतिवाला, अपने जनोंसे हित करनेवाला, जातिवर्गको आनन्द देनेवाला, दुर्बल स्त्रीवाला, सुन्दर मूर्तिवाला, विलासी, शत्रुओंको जीतनेवाला, सुन्दर कर्मवाला और दृढ अंगवाला होता है ॥ ६ ॥ जिसके सूर्य सप्तमभावमें होय वह स्त्रीके विलासका सुख न पानेवाला, चंचल, दुष्टात्मा, पेटके समान शरीरवाला और न अधिक दीर्घ न छोटा अर्थात् समान शरीरवाला, कपिल-नेत्रोंवाला, पिंगल बालोंवाला और कुरूप होता है ॥ ७ ॥ जिसके सूर्य अष्टमभावमें पडे वह चंचल, शीलरहित, विद्वान्‌जनोंकी सेवा करनेवाला, सदा रोगकरके युक्त, विकल बहुत वार्ता करनेवाला, भाग्यकरके और शीलकरके रहित तथा रतिहीन, बुरे चाल चलनवाला, नीचोंकी सेवा करनेवाला और परदेशी होता है ॥ ८ ॥

ग्रहगतदिननाथे सत्यवादी सुकेशी कुलजनहितकारी देवविप्रानुरक्तः । प्रथमवयसि रोगी यौवने स्थैर्ययुक्तो बहुतरधनयुक्तो दीर्घजीवी सुमूर्तिः ॥ ९ ॥ दशमभवनसंस्थे तीव्रभानौ मनुष्यो गुणगणसुखभागी दानशीलोऽभिमानी । मृदुलघुशुचियुक्तो नृत्यगीतानुरागी नरपतिरतिपूज्यः शेषकाले च रोगी ॥ १० ॥ बहुतरधनभागी चायसंस्थे दिनेशे नरपतिगृहसेवी भोगहीनो गुणज्ञः । कृशतनुधनयुक्तः कामिनीचित्तहारी भवति चपलमूर्तिर्जातिवर्गप्रमोदी ॥ ११ ॥ जडमतिरतिकामी चान्ययोषिद्विलासी विहगगणविघाती दुष्टचेताः कुमूर्तिः । नरपतिधनयुक्तो द्वादशस्थे दिनेशे कथकजनविरोधी जङ्घरोगी कृशाङ्गः ॥ १२ ॥

जिसके सूर्य नवमभावमें स्थित होय वह सत्य बोलनेवाला, निंदित केशवाला, अपने कुलजनोंसे हित करनेवाला, देवता ब्राह्मणमें अनुरक्त, प्रथम अवस्था (बालावस्था) में रोगी, युवावस्थामें धैर्यवान्, बहुत धन करके युक्त, बडी उमरवाला और स्वरूपवान् होता है ॥ ९ ॥ जिसके सूर्य दशमभावमें होय वह तीव्र, गुणगण और सुखका भोगनेवाला, दानमें शीलवान्, अभिमानी, मृदुल छोटा कद, पवित्रतायुक्त, नृत्यगीतादिमें अनुराग करनेवाला, राजासे अधिक पूज्य और वृद्धावस्थामें रोगवान् होता है ॥ १० ॥ जिसके सूर्य ग्यारहवें भावमें स्थित होय वह बडा धनी, राजाके स्थानमें नौकरी करनेवाला, भोग करके हीन, गुणोंका जाननेवाला, दुर्बलशरीरवाला, धनकरके युक्त, स्त्रियोंके मनको चुरानेवाला, चपलमूर्ति और जातिवर्गको प्रसन्न करनेवाला होता है ॥ ११ ॥ जिसके सूर्य बारहवें भावमें स्थित होय वह जडमतिवाला, अधिक कामी, अन्यकी स्त्रीसे विलास करनेवाला, पक्षियोंको मारनेवाला, दुष्टचित्तवाला और कुत्सितरूपवाला होता है ॥ १२ ॥ इति रविभावफलम् ॥

अथ चन्द्रभावफलम्।

तनुगतकुमुदेशे वित्तपूर्णः सुखी स्याद्बहुतरधनभोगी वीर्ययुक्तः सुदेही। भवति च यदि नीचश्चन्द्रमाः पापगो वा जडमतिरतिदीनः स्यात्तदा वित्तहीनः ॥ १ ॥ धनगतहरिणाङ्के त्यागशीलो मतिज्ञो निधिरिव धनपूर्णश्चञ्चलात्मा सुदुष्टः। जनयति बहुसौख्यं कीर्तिशाली सहिष्णुर्मुखकमलविशाली चन्द्रतुल्यस्वरूपः ॥ २ ॥

जिसके जन्मसमयमें चन्द्रमा लग्नमें स्थित होय वह धनकरके पूर्ण, सुखी, अधिकतर धनका भोगनेवाला, वीर्यकरके युक्त, सुंदर देहवाला होता है और यदि चन्द्रमा नीच घरमें होय वा पापग्रहके घरमें होय अथवा पापग्रहोंसे अपने घरमें युक्त होय तो जडमतिवाला, अतिदीन और धनकरके रहित होता है ॥ १ ॥ जिसके चन्द्रमा दूसरे भावमें स्थित होय वह त्यागशीलवाला, मतिमान्, निधिके समान धनकरके पूर्ण, चंचलआत्मावाला, दुष्ट, बहुत सुखवाला, कीर्तिशाली, क्षमावान्, कमलवत् मुखसे शोभित और चन्द्रमाके समान रूपवाला होता है ॥ २ ॥

शशिनि सहजसंस्थे पापगेहे च नित्यं न भवति बहुभाषी भ्रातृहर्ताऽरिमूर्तिः। भवति च सुखभोगी सौख्यगे रात्रिनाथे सकलधननिधानं शास्त्रकाव्यप्रमोदी॥३॥ बहुतरवसुपूर्णो रात्रिनाथे चतुर्थे प्रियजनहितकारी योषितां प्रीतिकारी। सततमिह सरोगी मांसमत्स्यादिभोगी गज-

तुरगसमेतः क्रीडते हर्म्यपृष्ठे ॥ ४ ॥ तनयगतशशाङ्के वित्तपूर्णः सुखी स्याद्बहुतरसुतयुक्तो वश्यनारीसमेतः । यदि भवति शशाङ्के क्षीणपापारिगेहे युवतिसुखसमूहे पुत्रपौत्रैर्विहीनः ॥५॥ रिपुगृहगशशाङ्के क्षीणतानाशयुक्तो न भवति बहुभोगी व्याधिदुःखस्य दाता । यदि गृहमथ तुङ्गः पूर्णदेहः शशाङ्को बहुतरसुखदाता स्यात्तदा मानवानाम् ॥६॥

जिसके चन्द्रमा तीसरे भावमें पापग्रहके स्थानमें विद्यमान होय वह थोडा बोलनेवाला, भाई जिसके मरजावें, शत्रुमूर्ति होता है और यदि चन्द्रमा शुभ ग्रहके घरमें होय तो सुखका भोगनेवाला, धन निधिकरके युक्त और शास्त्रकाव्यकरके हर्ष पानेवाला होता है ॥ ३ ॥ जिसके चन्द्रमा चतुर्थभावमें होय वह वस्तु (रत्नादि) करके पूर्ण, मित्रजनोंका हित करनेवाला, स्त्रियोंका प्यारा, निरंतर रोगसे युक्त, मांस मछलीका खानेवाला होता है और जिसके मकानके आगे हाथी, घोडा बंधे रहें ऐसा मनुष्य होता है ॥ ४ ॥ जिसके चन्द्रमा पाँचवें घरमें होय वह धनकरके पूर्ण, सौख्यवान्, बहुत पुत्रोंवाला, स्त्रीवाला होता है और यदि क्षीण हो वा पापग्रह अथवा शत्रुके घरमें होय तो युवतिसुखसमूह तथा पुत्रपौत्रादिकरके रहित होता है ॥ ५ ॥ जिसके चन्द्रमा छठे भावमें स्थित होय वह क्षीणताके कारण नाशको प्राप्त होनेवाला, बहुत भोगोंको न प्राप्त होनेवाला होता है ऐसा चन्द्रमा व्याधि और दुःखको देता है यदि चन्द्रमा स्वगृही वा उच्चका अथवा पूर्णबलवान् होवै तो बहुत सुखका देनेवाला होता है ॥ ६ ॥

विमलवपुषि चन्द्रे सप्तमस्थे मनुष्यो रुचिरयुवतिनाथः काञ्चनाढ्यः सुदेही । शशिनि कृशशरीरे पापगे पापदृष्टे न भवति सुखभागी रोगिपत्नीपतिः स्यात् ॥ ७ ॥ निधनभवनसंस्थे शीतरश्मौ नराणां निधनमचिरकाले पापगेहे ददाति । निजभृगुगुरुगेही सौम्यगेही च पूर्णो जनयति बहुदुःखं श्वासकासादिरोगैः ॥ ८ ॥ नवमभवनसंस्थे शीतरश्मौ प्रपूर्णे बहुतरसुखभुक्त्या कामिनीप्रीतिकारी । न भवति धनभागी क्षीणगे नीचगे वा विमलपथविरोधी निर्गुणो मूढचेताः ॥ ९ ॥

जिसके चन्द्रमा सप्तमभावमें स्थित होय वह विमल शरीरवाला, रुचिर स्त्रीका पति, कांचनकरके युक्त, सुंदरदेहवाला होता है । यदि चन्द्रमा क्षीण होय वा पापग्रहगत होय

अथवा पापग्रह देखते होंय तो सुखका भागी नहीं होता है और रोगिणी स्त्रीका पति होता है ॥७॥ जिसके चन्द्रमा पापग्रहके घरमें प्राप्त अष्टम स्थानमें स्थित होय उसको शीघ्रही मृत्यु देता है और जो चन्द्रमा अपने घर ४ (कर्क) में होकर अथवा शुक्रके घर २ । ७ वा बृहस्पतिके घर ९ । १२ वा बुधके घर ३ । ६ में प्राप्त होकर अथवा पूर्ण होकर अष्टमभावमें स्थित होय तो कास (खाँसी) श्वास (दमा) रोगों-करके बहुत दुःखको देता है ॥ ८ ॥ जिसके चन्द्रमा नवमभावमें पूर्णबली होकर स्थित होय वह बहुत सुखोंको भोगनेवाला, स्त्रियोंको प्यारा होता है और यदि चन्द्रमा क्षीण हो अथवा नीच ८ राशिका होय तो धनका भागी नहीं होता है और धर्मके मार्गसे विरोध करनेवाला गुणहीन और मूढचित्तवाला होता है ॥ ९ ॥

बहुतरधनभागी कर्मसंस्थे हिमांशौ विविधधननिधानं पुत्रदारादिपूर्णः । रिपुकुटिलगृहस्थे कासरोगी कृशाङ्गः पितृयुवतिधनाढ्यः कर्महीनो मनुष्यः ॥ १० ॥ बहुतरधनभोगी चायसंस्थे शशाङ्के प्रचुरसुखसमेतो दारभृत्यादियुक्तः । शशिनि कृशशरीरे नीचपापारिगेहे न भवति सुखभागी व्याधितो मूढचेताः ॥ ११ ॥ व्ययनिलयनिवेशे रात्रिनाथे कृशाङ्गः सततहिमसरोगी क्रोधनो निर्धनश्च । निजबुधगुरुगेहे दान्तिकस्त्यागशीलः कृशतनुसुखभोगी नीचसङ्गी सदैव ॥ १२ ॥

जिसके चन्द्रमा दशमभावमें स्थित होय वह बहुत धनका भागी, अनेक धन निधि तथा पुत्र स्त्री आदिसे परिपूर्ण होता है. यदि चन्द्रमा शत्रुके घर वा पापग्रहके घरमें स्थित होय तो कास (खांसी) रोगवाला, दुर्बल शरीरवाला, पिता, प्रमदा और धनवाला और कर्म करके हीन होता है ॥ १० ॥ जिसके चन्द्रमा ग्यारहवें भावमें स्थित होय वह बहुत धनका भोगनेवाला, अधिक सुख सहित स्त्री और सेवकों करके युक्त होता है. यदि चन्द्रमा क्षीण होय वा नीचराशिमें होय वा पापग्रहके घर होय अथवा शत्रुके घरमें होय तो सुखका भागी नहीं होता है और व्याधिकरके मूढचित्तवाला होता है ॥ ११ ॥ जिसके चन्द्रमा बारहवें भावमें स्थित होय वह दुर्बल-शरीरवाला, जूडीके रोगवाला, क्रोधवान्, निर्धन होता है और यदि चन्द्रमा निजराशि (४) में हो, अथवा बुधके घर ३ । ६ में होय तो जितेन्द्रिय दानी, दुर्बलशरीरवाला, सुखको भोगनेवाला और सदा नीचप्रसंगी होता है ॥ १२ ॥

इति चन्द्रभावफलम् ॥

भौमफलम् ।

उदरदशनरोगी शैशवे लग्नभौमे पिशुनमतिकृशाङ्गः पापवित्कृष्णरूपः । भवति चपलचित्तो नीचसेवी कुचैली सकलसुखविहीनः सर्वदा पापशीलः ॥१॥ धनगतपृथिवीजे धातुवादी प्रवासी ऋणधनकृतचित्तो द्यूतकर्त्ता सहिष्णुः । कृषिकरणसमर्थो विक्रमे मग्नचित्तः कृशतनुसुखभागी मानवः सर्वदैव ॥ २ ॥ सहजभवनसंस्थे भूमिजे भ्रातृहर्त्ता कृशतनुसुखभागी तुङ्गभौमे विलासी । धनसुखनरहीनो नीचपापारिगेहे वसति सकलपूर्णो मन्दिरे कुत्सिते च ॥ ३ ॥

जिसके जन्मकालमें मंगल लग्नमें स्थित होय वह उदर (पेट) दशन (दांत) के रोगवाला बालावस्थामें होता है, पिशुन (निंदक अथवा केशरके समान रंगवाला), अत्यंत दुर्बलशरीरवाला, पापी, कृष्णवर्ण, चलायमान चित्तवाला, नीचप्रसंगी, कुचाल करनेवाला, संपूर्ण सुखोंकरके रहित और पापके स्वभाववाला होता है ॥ १ ॥ जिसके मंगल दूसरे भावमें स्थित होय वह धातुके विकारवाला, परदेशमें रहनेवाला, सदा कर्ज धनकी इच्छा करनेवाला, चोरी करनेवाला, क्षमावान्, खेतीके कर्ममें निपुण, पराक्रमके कारण मग्नचित्तवाला, दुर्बलशरीरवाला और सदा सुखका भोगनेवाला मनुष्य होता है ॥ २ ॥ जिसके मंगल तीसरे भावमें स्थित होय उसके भाइयोंको मारता है और दुर्बल शरीरवाला, सुखका भागी और विलासी उच्च मंगल करता है, यदि नीच राशिका होय वा पाप शत्रु ग्रहके घर हो तो कुत्सित घरमें भी सकल वस्तुसे पूर्ण निवास करनेवाला होता है॥३॥

जडमतिरतिदीनो बन्धुसंस्थे च भौमे न भवति कुल आर्ये बन्धुदीनो न दुःखी । भ्रमति सकलदेशे नीचसेवानुरक्तः परवशपरदारे लुब्धचित्तः सदैव ॥ ४ ॥ तनयभवनसंस्थे भूमिपुत्रे मनुष्यो भवति तनयहीनः पापशीलोऽतिदुःखी । यदि निजगृहतुङ्गे वर्तते भूमिपुत्रः कृशकमलनिकेतं पुत्रमेकं ददाति ॥ ५ ॥ रिपुगृहगतभौमे सङ्गरे मृत्युभागी सुतधनपरिपूर्णस्तुङ्गगे सौख्यभागी । रिपुगणपरिदुष्टे नीचगे क्षोणिपुत्रे भवति विकलमूर्तिः कुत्सितः क्रूरकर्मा ॥ ६ ॥ मुनिगृहगतभौमे नीचसंस्थेऽरिगेहे युवतिमरणदुःखं जायते मानवानाम् । मकरगृहनिजस्थे नान्यपत्नीश्च धत्ते चपलमतिविशालां दुष्टचित्तां विरूपाम् ॥ ७ ॥

जिसके मंगल चतुर्थ भावमें स्थित होय वह जड बुद्धिवाला, अत्यंत दीन होता है तथा आर्यकुलमें न कोई बंधु दीन, न दुःखी होता है और वह मनुष्य संपूर्ण देशमें भ्रमता फिरता है, नीचोंकी सेवामें अनुरक्त रहता है, पराये वश और परस्त्रीमें लुब्ध चित्तवाला होता है ॥ ४ ॥ जिसके मंगल पंचम भावमें स्थित होय वह पुत्र करके हीन, पापात्मा और अत्यंत दुःखी होता है। यदि मंगल स्वगृही अथवा उच्चका हो तो दुर्बल स्वरूपवान् एक पुत्रको देता है ॥ ५ ॥ जिसके भौम छठे भावमें होय वह संग्राममें मृत्यु पानेवाला, पुत्र-धन करके परिपूर्ण, उच्चका भौम होनेसे सुखका भागी होता है, यदि भौम शत्रुग्रहों करके सहित वा स्थानमें हो वा पाप ग्रहके घर हो अथवा नीचराशिका हो तो विकलमूर्ति, निन्दित और दुष्टकर्म करनेवाला होता है ॥ ६ ॥ जिसके मंगल सातवें भावमें स्थित होय और नीच राशिका हो शत्रुके घर हो तो उसको स्त्रीके मरणका दुःख होता है और यदि मकर राशिका हो अथवा अपनी राशि (१।८) का हो तो, दूसरी स्त्रीको नहीं विवाहता है अर्थात् एकही प्रथम विवाहवाली स्त्री जिन्दी रहती है और चपल मतिमें विशाल, दुष्ट प्रकृतिवाली और कुरूपवाली स्त्री होती है ॥ ७ ॥

प्रलयभवनसंस्थे मङ्गले क्षीणनीचे व्रजति निधनभावं नीरमध्ये मनुष्यः । धनकिरणचरार्कः सर्वदा चैव भोगी करपदगसुनीलो मृत्युलोकं प्रयाति॥८॥नवमभवनसंस्थे क्षोणिपुत्रेऽतिरोगी नयनकरशरीरः पिङ्गलः सर्वदैव । बहुजनपरिपूर्णो भाग्यहीनः कुचैलो विकलजनसुवेशी शीलविद्यानुरक्तः ॥ ९ ॥ दशमगतमहीजे दान्तिकः कोशहीनो निजकुलजयकारी कामिनीचित्तहारी । जरठसमशरीरो भूमिजीवोपकोपी द्विजगुरुजनभक्तो नातिनीचो न ह्रस्वः ॥ १० ॥

जिसके मंगल क्षीण अथवा नीच (४) राशिका होकर आठवें भावमें स्थित होय उसकी मृत्यु जलके मध्य होती है और यदि सूर्य धन मीनराशिका होय तो सदा भोग करनेवाला, नीले हाथ पैरोंवाला और मृत्युलोकको प्राप्त होनेवाला होता है ॥ ८ ॥ जिसके मंगल नवम भावमें स्थित होय वह अति रोगवान् पीले नेत्र हाथ और शरीरवाला होता है बहुतजनोंकरके युक्त, भाग्यहीन, कुचाल चलनेवाला, विकल, सुंदर भेषवाला, शील और विद्यामें प्रवीण होता है ॥ ९ ॥ जिसके मंगल दशमभावमें स्थित होय वह जितेन्द्रिय, धनहीन अपने कुलका जय करनेवाला, स्त्रियोंके मनको हरलेनेवाला, बूढेके समान शरीरवाला, भूमिसे जीविका करनेवाला, क्रोधवान् ब्राह्मण और श्रेष्ठ जनोंका भक्त और समान कदवाला होता है ॥ १० ॥

सुरजनहितकारी चायसंस्थे च भौमे नृप इव गृहमेधी पीडितः कोपपूर्णः । भवति च यदि तुङ्गे लोकसौभाग्ययुक्तो धनकिरणनियुक्तः पुण्यकामार्थलोभी ॥ ११ ॥ परधनहरणेच्छुः सर्वदा चञ्चलाक्षश्चपलमतिविहारी हास्ययुक्तः प्रचण्डः । भवति च सुखभागी द्वादशस्थे च भौमे परयुवतिविलासी साक्षिकः कर्मपूरः ॥ १२ ॥

जिसके मंगल ग्यारहवें भावमें स्थित होय वह देवता लोगोंसे हित करनेवाला, राजाके समान स्त्रीवाला, पीडित, क्रोधकरके पूर्ण होता है, यदि मंगल उच्चराशिका हो तो लोकसौभाग्यकरके युक्त होता है और यदि धनराशिका हो अथवा सूर्यकरके युक्त हो तो पुण्यकर्म करनेवाला और धनका लोभी होता है । जिसके मंगल बारहवें भावमें स्थित होय वह पराये धनके ग्रहण करनेकी इच्छा करनेवाला, चंचलइन्द्रियवाला, चपलबुद्धिवाला, विहार करनेवाला, हास्यकरके युक्त, प्रचंडसुखका भोगनेवाला, परस्त्रीसे विलास करनेवाला साक्षी और कर्मकरके पूर्ण होता है ॥ ११ ॥ १२ ॥
इति मंगलफलम् ॥

अथ बुधभावफलम् ।

तनुगतशशिपुत्रे कान्तिमांश्चातिहृष्टो विमलमतिविशालः पण्डितस्त्यागशीलः । मितमृदुशुचिभाषी सत्यवादी विशाली बहुतरसुखभागी सर्वकालप्रवासी ॥ १ ॥ भवति च पितृभक्तः सुस्थितः पापभीरुर्मृदुतनुखररोमा दीर्घकेशोऽतिगौरः । धनगतशशिसूनौ सत्यवादी विहारी बहुतरवसुभागी सर्वकालप्रवासी ॥ २ ॥ साहसी निजजनैः परियुक्तश्चित्तशुद्धिरहितो हतसौख्यः । मानवः कुशलतेप्सितकर्ता शीतभानुतनयेऽनुजसंस्थे ॥ ३ ॥

जिसके जन्मसमय बुध जन्मलग्नमें स्थित होय वह कांतिमान्, अति हृष्ट, सुन्दर बुद्धिवाला, विशाल, पंडित, शीलकरके रहित, प्रमाणमात्र कोमलता और पवित्रता करके युक्त सत्य बोलनेवाला, विशाल मूर्त्तिवाला, बहुत सुखका भागी, सदा परदेशमें रहनेवाला होता है ॥ १ ॥ जिसके बुध दूसरे भावमें स्थित होय वह पिताका भक्त, स्थिरमतिवाला, पापसे डरनेवाला, कोमलशरीरवाला, अधिकरोमवाला, लम्बे केशोंवाला और अधिक गौरवर्ण होता है और यदि बुध धनराशिका होय तो सत्य बोलनेवाला, विहार करनेवाला, बहुत रत्नादिकों करके युक्त और सदा पर-

देशमें रहनेवाला होता है ॥ २ ॥ जिसके बुध तीसरे भावमें स्थित होता है सो हठसे अपने सम्बन्धियों करके युक्त होता है चित्तकी शुद्धिसे रहित और सुखसे रहित होता है और अपनी इच्छाकरके शुभकर्मोंको करता है ॥ ३ ॥

बहुतरधनपूर्णो भ्रातृहर्ता च पापे बहुतरबहुपत्नी पूर्णगेहे स्वतुंगे। तरलमतिरलज्जः क्षीणजङ्घः कृशाङ्गः शिशुवयसि च रोगी बन्धुसंस्थे कुमारे ॥ ४ ॥ तनयमन्दिरगे शशिनन्दने सुतकलत्रयुतः सुखभाजनम्। विकचपङ्कजचारुमुखः सुखी सुरगुरुद्विजभक्तियुतः शुचिः ॥५॥ अरिनिकेतनवर्तिशशाङ्कजे रिपुकुलाद्भयदो यदि वक्रगः। यदि च पुण्यगृहे शुभवीक्षिते रिपुकुलं विनिहन्ति शुभप्रदः ॥ ६ ॥

जिसके बुध चतुर्थ भावमें स्थित होय वह धनकरके पूर्ण होता है। यदि पापग्रहके घर होय तो भाइयोंका नाश करता है और यदि पूर्णबली घरमें अथवा उच्चराशिमें होय तो बहुधा उसके कई स्त्री होती हैं सरलस्वभाववाला, लज्जासे रहित, क्षीण जंघावाला, दुर्बल शरीरवाला और बालावस्थामें रोगी होता है ॥ ४ ॥ जिसके बुध पंचम भावमें स्थित होय वह पुत्र कलत्र करके युक्त, सौख्यवान्, क्लेशरहित, कमलवत् सुन्दर मुखवाला, सुखी, देवता, गुरु और ब्राह्मणोंकी भक्तिसे युक्त और पवित्र होता है ॥५॥ जिसके बुध वक्री होकर छठे भावमें स्थित होय उसको शत्रुके कुलसे भय देता है और यदि बुध, शुभग्रहके घरमें होय अथवा शुभग्रह करके देखाजाता है तो शत्रुके कुलको नाश करता है और शुभफलको देता है ॥ ६ ॥

तुरगभावगते हरिणाङ्कजे भवति चञ्चलमध्यनिरीक्षितः विपुलवंशभवप्रमदापतिः स च भवेच्छुभगे शशिवंशजे ॥ ७ ॥ निधनवेश्मनि सत्ययुतः शुभो निधनदोऽतिथिमण्डन एव च यदि च पापयुते रिपुगेहगे मदनकाम्यजवेन पतत्यधः ॥ ८ ॥ नवमसौम्यगृहे शशिनन्दने धनकलत्रयुतेन समन्वितः। भवति पापयुते विपथस्थितः श्रुतिविमन्दकरः शशिजोद्यमी॥ ९ ॥ गुरुजनेन हिते निरतो जनो बहुधनो दशमे शशिनन्दने। निजभुजार्जितवित्ततुरङ्गमो बहुधनैर्नियतोऽमितभाषणः ॥ १० ॥ श्रुतमतिर्निजवंशहितः कृशो बहुधनप्रमदाजनवल्लभः। रुचिरनीलवपुर्गुणलोचनो भवति चायगते शशिजे

नरः॥ ११ ॥ भवति च व्ययगे शशिनन्दने विकलमूर्तिधरो धनवर्जितः । परकलत्रधने घनचित्तवान् व्यसनदूररतः कृतकः सदा ॥ १२ ॥

जिसके बुध सप्तमभावमें स्थित होय वह चंचल और मध्यमदृष्टिवाला होता है, बुध शुभस्थानमें होय तो उत्तमवंशमें उत्पन्न स्त्रियोंका पति (पालन करनेवाला) होता है ॥ ७ ॥ जिसके आठवें भावमें बुध स्थित होय वह सत्यकरके युक्त शुभवान् होता है और मृत्युका दायक होता है और मनुष्य अभ्यागतका सत्कार करनेवाला होता है, यदि बुध पापग्रहकरके युक्त हो अथवा शत्रुके स्थानमें होय तो वह मनुष्य कामदेवके वेगकरके नीचेको गिरता है ॥ ८ ॥ जिसके बुध शुभस्थानमें प्राप्त नवमभावमें स्थित होय वह धनकलत्रकरके युक्त होता है और यदि पापयुक्त होय तो कुमार्गी वेदकी निन्दा करनेवाला और उद्यमी होता है ॥ ९ ॥ जिसके दशम भावमें बुध स्थित होवे वह श्रेष्ठजनोंसे हित करनेवाला, बहुत धनवान्, अपने भुजाओंसे उपार्जितधन और घोडोंवाला, बहुत धनका स्वामी और अधिक बात करनेवाला होता है ॥ १० ॥ जिसके बुध ग्यारहवें भावमें स्थित होय वह उत्तमबुद्धिवाला अपने वंशका हित करनेवाला, कृशशरीरं, बहुत धनवान् स्त्रीजनका प्यारा, सुन्दर श्यामवर्ण, उत्तम आंखोंवाला होता है ॥ ११ ॥ जिसके बुध बारहवें भावमें स्थित होय वह विकल, धनकरके रहित, परस्त्रीके धनमें घन चित्तवाला, व्यसनसे दूर रहनेवाला और कृतक होता है ॥ १२ ॥ इति बुधभावफलम् ॥

अथ गुरुभावफलम् ।

विविधवस्त्रविपूर्णकलेवरः कनकरत्नधनः प्रियदर्शनः । नृपतिवंशजनस्य च वल्लभो भवति देवगुरौ तनुगे नरः ॥ १ ॥ सुरगुरौ धनमन्दिरसंश्रिते प्रमुदितो रुचिरप्रमदापतिः । भवति मानधनो बहुमौक्तिकैर्गतवसुर्भविता प्रसवाह्निके ॥ २ ॥ सहजमन्दिरगे च बृहस्पतौ भवति बन्धुगतार्थसमन्वितः । कृपणतामपि गच्छति कुत्सिते धनयुतोऽपि सदा धनहानिमान् ॥ ३ ॥

जिसके जन्मकालमें बृहस्पति लग्नमें स्थित होवे वह अनेक प्रकारके वस्त्रोंको धारण करनेवाला, सुवर्ण रत्न और धनकरके युक्त, देखनेमें प्रिय, राजा जनका प्यारा होता है ॥ १ ॥ जिसके बृहस्पति दूसरे भावमें स्थित होवै वह हर्षयुक्त, सुंदर स्त्रियोंका स्वामी, मौक्तिक, मान धनवाला और गतवसुभी होता है ॥ २ ॥ जिसके बृहस्पति तीसरे भावमें स्थित होवे वह बन्धुसे छुटेभये धनकरके युक्त, कँजूस, कुमार्गमें रत और धनवान् होनेपर भी धनके हानिवाला होता है ॥ ३ ॥

सन्माननानाधनवाहनाद्यैः संजातहर्षः पुरुषः सदैव। नृपानुकंपासमुपात्तसंपद्दम्भोलिभृन्मन्त्रिणि भूतलस्थे॥ ४॥ सुहृदता च सुहृज्जनवन्दितः सुरगुरौ सुतगेहगते नरः। विपुलशास्त्रमतिः सुखभाजनं भवति सर्वजनुप्रियदर्शनः॥ ५॥ करिहयैश्च कृशाङ्गतनुर्भवेज्जयति शत्रुकुलं रिपुगे गुरौ। रिपुगृहे यदि वक्रगते गुरौ रिपुकुलाद्भयमातनुते विभुः॥ ६॥

जिसके चतुर्थभावमें बृहस्पति होय वह सब जगह मान पानेवाला, अनेक धन वाहन आदिसे युक्त और राजाकी कृपासे अनेक संपदा पानेवाला होता है॥ जिसके बृहस्पति पञ्चमभावमें स्थित होवे वह मित्रता करके सुहृद् जनोंसे वन्दित, अनेक शास्त्रका जाननेवाला, सुखका भाजन और संपूर्ण जनोंका प्यारा होता है॥ जिसके बृहस्पति छठे भावमें स्थित होय वह दुर्बलशरीरवाला और हाथी घोडोंकरके सहित शत्रुके कुलको जीतनेवाला होता है यदि बृहस्पति वक्री होकर छठे भावमें होय तो शत्रुके कुलसे भयको देता है॥ ४-६॥

युवतिमन्दिरगे सुरयाजके नयति भूपतितुल्यसुखं जनः। अमृतराशिसमानवचाः सुधीर्भवति चारुवपुः प्रियदर्शनः॥ ७॥ विमलतीर्थकरश्च बृहस्पतौ निधनता न मनःस्थिरता यदा। धनकलत्रविहीनकृशः सदा भवति योगपथे निरतः परम्॥ ८॥ सुरगुरौ नवमे मनुजोत्तमो भवति भूपतितुल्यधनी शुचिः। कृपणबुद्धिरतः कृपणः सुखी बहुधनः प्रमदाजनवल्लभः॥ ९॥ दशममन्दिरगे च बृहस्पतौ तुरगरत्नविभूषितमन्दिरः। भवति नीतिगुणैर्बुधसंयुतः परवराङ्गणवर्जितधार्मिकः॥ १०॥

जिसके बृहस्पति सातवें भावमें स्थिर होय वह राजाके समान सुखवाला, अमृतके समान वचन अर्थात् मधुरवाक्य कहनेवाला, बुद्धिमान्, मनोहर शरीरवाला और देखनेमें प्रिय होता है॥ जिसके बृहस्पति अष्टम भावमें होवे वह उत्तम तीर्थ करनेवाला, चलायमान मनवाला, धनकलत्रसे रहित, दुर्बल और सदा योगपथमें रत रहनेवाला होता है॥ जिसके बृहस्पति नवम भावमें स्थित होय वह उत्तम, राजाके समान धनी, पवित्र, कृपणबुद्धिमें रत, कृपण, सुखी, बहुत धनी और स्त्रीजनका प्यारा होता है॥ जिसके बृहस्पति दशमभावमें स्थित होय वह घोडे और रत्नोंकरके सुशोभित मन्दिरवाला, नीतिगुणसे युक्त, परस्त्रियोंसे वर्जित और धार्मिक होता है॥ ७-१०॥

व्रजति भूमिपतेः समतां धनैर्निजकुलस्य विकारकरः सदा । सकलधर्मरतोऽर्थसमन्वितो भवति चायगते सुरयाजके ॥ ११ ॥ शिशुदशाभवने हृदि रोगवानुचितदानपराङ्मुख एव च । कुलधनेन सदा कुलदांभिको भवति पापगृहे च बृहस्पतौ ॥ १२ ॥

जिसके लाभभावमें बृहस्पति स्थित होय वह राजाके समान धनी होता है और सदा अपने कुलका विकार करनेवाला, सकलधर्ममार्गमें रत रहनेवाला और धनकरके युक्त होता है ॥ जिसके बृहस्पति बारहवें घरमें विद्यमान होवै वह हृदयके रोगवाला और उचित दान करनेमें पराङ्मुख होता है और पापगृही यदि बृहस्पति होय तो कुलके धनके निमित्त पाखण्ड होता है ॥ ११ ॥ १२ ॥ इति गुरुभावफलम् ॥

शुक्रभावफलम् ।

उरसिगे तनुगे भृगुनन्दने भवति कार्य्यरतः परपण्डितः । विमलशल्यगृही सदने रतो भवति कौतुकहा विधिचेष्टितः ॥ १ ॥ परधनेन धनी धनगे भृगौ भवति योषिति वित्तपरो नरः । रजतसीसधनी गुणशैशवः कृशतनुः सुवचा बहुबालकः ॥ २ ॥ सहजमंदिरवर्तिनि भार्गवे प्रचुरमोहयुतो भगिनीसुतः । भवति लोचनरोगसमन्वितो धनयुतः प्रियवाक् च सदम्बरः ॥ ३ ॥

जिसके जन्मसमयमें शुक्र लग्नमें स्थित होय वह मनहीमन कार्यमें रत रहनेवाला, बडा पंडित, विमलशल्यगृही, घरमें रत, कौतुकको न माननेवाला और ब्रह्माके समान चेष्टावाला होता है। जिसके शुक्र दूसरे भावमें स्थित होय वह पराये धन करके धनी और स्त्रियोंके धनमें तत्पर होता है। चांदी सीसाके व्यवहारसे धनी, गुणी, दुर्बल शरीरवाला और बहुत बात करनेवाला होता है । जिसके शुक्र तीसरे भावमें स्थित होय वह बहुत मोहयुक्त भानजेवाला, नेत्ररोगवाला, धनवान्, मधुर बोलनेवाला और सुंदर वस्त्र धारण करनेवाला होता है ॥ १–३ ॥

भवति बन्धुगते भृगुजे नरो बहुकलत्रसुतेन समावृतः । सुरमते सुखमध्यवरे गृहे वसनपानविलाससमावृतः ॥ ४ ॥ तनयमन्दिरगे भृगुनन्दने भृगुसुतो दुहितावरपूजितः । बहुधनो गुणवान्वरनायको भवति चापि विलासवतीप्रियः ॥ ५ ॥ भवति वै कुशलोद्भवपण्डितो रिपुगृहे भृगुजेऽस्तगते नरः । जयति वैरिबलं निजतुङ्गगे भृगुसुते सुखदे किल षष्ठगे ॥ ६ ॥

जिसके जन्मसमय शुक्र चौथे भावमें स्थित होय वह कलत्र पुत्रकरके युक्त मध्यम सुख भोगनेवाला, उत्तम घरमें निवास करनेवाला और विलास करके युक्त होता है। जिसके शुक्र पंचम भावमें स्थित होय वह कन्याके पतिको पूजनेवाला अर्थात् कन्या अधिक उत्पन्न होवै और बडा धनी, गुणवान्, नायक और विलासवती स्त्रीवाला होता है। जिसके शुक्र अस्तभावको प्राप्त होकर छठे भावमें स्थित होय वह जन्महीसे सामर्थ्य युक्त और पंडित होता है, यदि शुक्र उच्चगृही होकर छठे भावमें प्राप्त होय तो शत्रुके बलको जीते और सुखको देनेवाला होता है ॥ ४-६ ॥

युवतिमन्दिरगे वसते नरो बहुसुतेन धनेन समन्वितः । विमलवंशभवप्रमदापतिर्भवति चारुवपुर्मुदितस्सुखी ॥ ७ ॥ निधनसद्मगते भृगुजे जनो विमलधर्मरतो नृपसेवकः । भवति मांसप्रियः पृथुलोचनो निधनमेति चतुर्थवयेऽपि वा ॥ ८ ॥ विमलतीर्थपरोऽच्छतनुस्सुखी सुरवरद्विजवर्णरतः शुचिः । निजभुजार्जितभाग्यमहोत्सवो भवति धर्मगते भृगुजे नरः ॥ ९ ॥

जिसके शुक्र सातवें भावमें स्थित होय वह बहुत धन और पुत्र करके युक्त होता है. उत्तम वंशमें उत्पन्न स्त्रियोंका स्वामी, सुंदर शरीरवाला, प्रसन्न और सुखी होता है। जिसके शुक्र अष्टमभावमें स्थित होय वह सुंदर धर्ममें रत, राजाका सेवक, मांसका प्यार करनेवाला, बडे नेत्रोंवाला और चौथे वयमें मृत्यु पानेवाला होता है। जिसके शुक्र नवमभावमें स्थित होय वह उत्तम तीर्थोंमें परायण, निर्मल शरीरवाला, सुखी, देवता ब्राह्मणके सत्कारमें रत, पवित्र, अपनी भुजाओंसे संगृहीत भाग्यवाला और बडा उत्साही होता है ॥ ७-९ ॥

दशममन्दिरगे भृगुवंशजे बधिरबन्धुयुतः स च भोगवान् । वनगतोऽपि च राज्यफलं लभेत्समरसुन्दरवेषसमन्वितः ॥ १० ॥ लभनभावगते भृगुनन्दने वरगुणावहितोऽप्यनलव्रतः । मदनतुल्यवपुः सुखभाजनं भवति हास्यरतिः प्रियदर्शनः ॥ ११ ॥ निजमिते व्ययवर्तिनि भार्गवे भवति रोगयुतः प्रथमं नरः । तदनु दम्भपरायणचेतनः कृशबलो मलिनः सहितः सदा ॥ १२ ॥

जिसके शुक्र दशम भावमें स्थित होय वह बहिरे भाईसे संयुक्त, भोगवान् और यदि वनमें भी चलाजाय तो राज्यफलको प्राप्त होनेवाला और समरके सुंदर भेष करके

युक्त होता है। जिसके शुक्र ग्यारहवें भावमें स्थित होय वह श्रेष्ठ गुणोंकरके युक्त अग्निहोत्रादि यज्ञ करनेवाला, कामदेवके समान शरीरवाला, अत्यन्त सुखी, हास्यमें रत रहनेवाला और दर्शनीय होता है। जिसके शुक्र बारहवें भावमें स्थित होय तो अपनी दशामें प्रथम मनुष्यको रोगी करता है, कपटमें परायण चित्तवाला, हीनबली और सदा मैला वह मनुष्य होता है ॥ १०–१२ ॥ इति शुक्रभावफलम् ॥

अथ शनिभावफलम् ।

सततमल्पगतिर्मदपीडितस्तपनजे तनुजे खलु चाधमः । भवति हीनकचः कृशविग्रहो निजसुहृद्रिपुसद्मनि मानवः ॥ १ ॥ धननिकेतनवर्त्तिनि भानुजे भवति वाक्यसहः सधनान्वितः । चपललोचनसंचयने रतो भवति चौर्यपरो नियतं सदा ॥२॥ सहजमन्दिरगे तपनात्मजे भवति सर्वसहोदरनाशकः । तदनुकूल्यनृपेण समो नरः स्वसुतपुत्रकलत्रसमन्वितः ॥ ३ ॥ बन्धुस्थितो भानुसुतो नराणां करोति बन्धोर्निधनं च रोगी । स्त्रीपुत्रभृत्येन विना कृतश्च ग्रामान्तरे चासुखदः स वक्री ॥ ४ ॥ शनैश्चरे पञ्चमशत्रुगेहे पुत्रार्थहीनो भवतीह दुःखम् । तुङ्गे निजे मित्रगृहे च पङ्गौ पुत्रैकभागी भवतीति कश्चित् ॥५॥

जिसके शनि जन्मसमय लग्नमें विद्यमान होवे वह अल्पगतिवाला, मदकरके पीडित अर्थात् मदी, अधम छोटे २ बालोंवाला और दुर्वल होता है, यदि शनैश्चर शत्रुके घरमें होय तो अपने बंधुमित्रोंसे विग्रह होवै। जिसके शनि दूसरे भावमें स्थित होय वह सत्य बोलनेवाला धनकरके युक्त, चंचलनेत्रोंवाला, संग्रह करनेमें रत, चौर्यपरायण और सदा नियत होता है। जिसके शनि तीसरे भावमें स्थित होय उसके सर्व सहोदरों (भाइयों) के नाश करनेवाला होता है, अपने कुलके अनुकूल वह राजाके समान और अपने पुत्रकलत्र आदिसे युक्त होता है। जिसके शनि चौथे भावमें स्थित होय तो उसके बंधुओंका विनाशक होता है तथा रोगको करता है, यदि वक्री शनि होय तो स्त्री, पुत्र, नौकर आदिसे रहित और ग्रामान्तरमें दुःखको देनेवाला होता है। जिसके शत्रुघरमें प्राप्त शनैश्चर पंचमभावमें स्थित होय तो उसे पुत्रार्थसे हीन और दुःखको करता है. यदि शनैश्चर उच्चका हो, अपने घरका हो अथवा मित्रके घरका हो तो कभी एक पुत्रको देता है ॥ १–५ ॥

नीचो रिपोर्नीचकुलक्षयं च षष्ठं शनिर्गच्छति मानवानाम् । अन्यत्र शत्रून्विनिहन्ति तुङ्गी पूर्णार्थकामाज्जनतां ददाति ॥ ६ ॥

विश्रामभूतां विनिहन्ति जायां सूर्यात्मजः सप्तमगश्च रोगान् । धत्ते पुनर्दम्भधराङ्गहीनं मित्रस्य वंशे दुहितासुहृच्च ॥ ७ ॥ शनैश्चरे चाष्टमगे मनुष्यो देशान्तरे तिष्ठति दुःखभागी । चौर्यापराधेन च नीचहस्ते पञ्चत्वमाप्नोत्यथ नेत्ररोगी ॥ ८ ॥ धर्मस्य पङ्गुर्बहुदम्भकारी धर्मार्थहीनः पितृवञ्चकश्च । मदानुरक्तो निधनी च रोगी पापिष्ठभार्यापरहीनवीर्यः ॥ ९ ॥

जिसके शनैश्चर हीनबली अथवा शत्रु वा नीचराशिमें प्राप्त होकर छठे भावमें स्थित होय तो उस मनुष्यके कुलको क्षय करनेवाला होता है और अन्यत्र अथवा उच्चका होकर स्थित होय तो शत्रुओंका नाश करनेवाला और पूर्ण अर्थ कामको देनेवाला होता है, मनुष्योंके शनि सप्तम भावमें स्थित स्त्रियोंका विनाश करता है, रोगको देता है और दंभवान् होता है अंगहीन और मित्रके वंशकी कन्यासे मित्रता करनेवाला होता है । जिसके शनैश्चर अष्टमभावमें स्थित होय वह देशान्तरमें निवास करता है और दुःखका भागी (दुःखी) होता है एवं चोरीके अपराध करके नीचजनकरके मृत्युको प्राप्त होता है और आँखोंका रोगी होता है । जिसके शनि नवमभावमें स्थित होय वह पाखंडका करनेवाला, धर्मार्थसे रहित, पितासे छल करनेवाला, मदमें अनुरक्त धनहीन, रोगी, दुष्टस्त्रीवाला और हीनवीर्यवाला होता है ॥ ६-९ ॥

शनैश्चरे कर्मगृहे स्थितेऽपि महाधनी नृत्यजनानुरक्तः । प्राप्तप्रवासे नृपसद्मवासी न शत्रुवर्गाद्भयमेति मानी ॥ १० ॥ सूर्यात्मजे चायगते मनुष्यो धनी विमृश्यो बहुभोग्यभागी । सितानुरागी मुदितः सुशीलः स बालभावे भवतीति रोगी ॥ ११ ॥ व्यये शनौ पञ्चगणाधिनाथो गदान्वितो हीनवपुः सुदुःखी । जङ्घाव्रणी क्रूरमतिः कृशाङ्गो वधे रतः पक्षिगणस्य नित्यम् ॥ १२ ॥

जिसके शनैश्चर दशमभावमें स्थित होय वह बडा धनवान् और नृत्य करनेवाला मनुष्योंमें रत रहनेवाला, परदेशमें लाभवाला, राजमंदिरमें निवास करनेवाला, शत्रुवर्गसे अभय और मानी होता है । जिसके शनैश्चर ग्यारहवें भावमें स्थित होय वह धनवान्, विमृश्य, बहुत भोग्यका भागी, उज्ज्वलताका अनुरागी, प्रतापवान्, शीलवान् और बालअवस्थामें रोगी होता है । जिसके शनि बारहवें भावमें स्थित होय वह पंचगणका स्वामी, रोगकरके युक्त, छोटे कदवाला, दुःखी, जंघामें व्रण (फोडा) वाला,

दुष्टबुद्धिवाला, दुर्बल अंगोंवाला और सदा पक्षी आदि जीवोंके मारनेमें रत होता है ॥ १०-१२ ॥ इति शनिभावफलम् ॥

अथ राहुभावफलम् ।

रोगी सदा देवरिपौ तनुस्थे कुले च धारी बहुजल्पशीलः । रक्तेक्षणः पापरतः कुकर्मा रतः सदा साहसकर्मदक्षः ॥ १ ॥ राहौ धनस्थे कृतचौरवृत्तिः सदा विलिप्तो बहुदुःखभागी । मत्स्येन मांसेन सदा धनी च सदा वसेन्नीचगृहे मनुष्यः ॥ २ ॥ भ्रातुर्विनाशं प्रददाति राहुस्तृतीयगेहे मनुजस्य देही । सौख्यं धनं पुत्रकलत्रमित्रं ददाति तुङ्गी गजवाजिभृत्यान् ॥ ३ ॥ राहौ चतुर्थे धनबन्धुहीनो ग्रामैकदेशे वसति प्रकृष्टः । नीचानुरक्तः पिशुनश्च पापी पुत्र्येकभागी कृतयोषिदासाम् ॥ ४ ॥

जिसके जन्मसमयमें देवरिपु (राहु) तनु (लग्न) में स्थित होय वह कुलमें कलहशील अर्थात् कलह करनेवाला, रक्तवर्ण आँखोंवाला, पापमें तथा कुकर्ममें रत रहनेवाला और सदा साहसकर्ममें दक्ष होता है । जिसके राहु दूसरे भावमें स्थित होय वह सदा चोरी करनेवाला, मत्स्य मांस करके विलिप्त, दुःखका भागी, धनवान् और सदा नीच जनके घरमें रहनेवाला होता है । जन्मकालमें तीसरे स्थानमें स्थित राहु भाइयोंको विनाश करता है और सौख्य, धन, पुत्र, कलत्र, मित्र तथा हाथी, घोडा और नौकर (सेवक) दासआदिको तुंगी राहु देता है । जिसके राहु चतुर्थभावमें स्थित होय वह देशमें एक ग्रामका प्रधान, नीचजनोंमें आसक्त, निंदक, पाप करनेवाला एक पुत्री (कन्या) वाला और दुर्बलस्त्रीवाला होता है ॥ १-४ ॥

राहुः सुतस्थः शशिनाऽनुगो हि पुत्रस्य हर्ता कुपितः सदैव । गेहान्तरे सोऽपि सुतैकमात्रं दत्ते प्रमाणं मलिनं कुचेलम् ॥ ५ ॥ षष्ठे स्थितः शत्रुविनाशकारी ददाति पुत्रं च धनानि भोगान् । स्वर्भानुरुच्चैरखिलाननर्थान्हन्त्यन्ययोषिद्गमनं करोति ॥ ६ ॥ जायास्थराहुर्धनहानिजायां ददाति नार्यो विविधांश्च भोगान् । पापानुरक्तां कुटिलां कुशीलां ददाति शेषैर्बहुभिर्युतश्च ॥ ७ ॥ राहुः सदा चाष्टममन्दिरस्थो रोगान्वितं पापरतं प्रगल्भम् । चौरं कृशं कापुरुषं धनाढ्यं मायामतीतं पुरुषं करोति ॥ ८ ॥

जिसके राहु चन्द्रमासे अनुगामी होकर पंचमभावमें स्थित होय उसके पुत्रोंका मारनेवाला,सदा कुपित होता है, यदि गेहान्तरमें स्थित होय तोभी मलिन, कुचाली एक पुत्रको देनेवाला होता है। छठे स्थानमें स्थित राहु शत्रुओंके नाश करनेवाला और पुत्र, धनादिक भोगोंको देनेवाला और यदि राहु उच्चका होय तो संपूर्ण अनर्थोंको नाश करनेवाला और अन्यकी स्त्रीसे गमन करनेवाला होता है। जिसके राहु सप्तमभावमें स्थित होय वह धनहीन होता है और पापानुरक्त,कुटिला और कुशीला स्त्रियोंके साथ विविधभोगोंको करनेवाला होता है। जिसके राहु अष्टमभावमें स्थित होय वह रोगकरके युक्त, पापमें रत, प्रगल्भ, चोर, दुर्बल, कापुरुष, धनकरके युक्त, मायासे मुक्त होता है ॥ ५-८ ॥

धर्मस्थिते चन्द्ररिपौ मनुष्यश्चण्डालकर्मा पिशुनः कुचैलः। ज्ञातिप्रमोदे निरतश्च दीनः शत्रोः कुलाद्भीतिमुपैति नित्यम् ॥ ९ ॥ कामातुरः कर्मगते च राहौ परार्थलोभी मुखरश्च दीनः। म्लानो विरक्तः सुखवर्जितश्च विहारशीलश्चपलोऽतिदुष्टः ॥ १० ॥ आयस्थिते सोमरिपौ मनुष्यो दान्तो भवेन्नीलवपुः सुमूर्तिः। वाचाऽल्पयुक्तः परदेशवासी शास्त्रज्ञवेत्ता चपलो विलज्जः॥ ११ ॥ व्यये स्थिते सोमरिपौ नराणां धर्मार्थहीनो बहुदुःखतप्तः। कान्तावियुक्तश्च विदेशवासी सुखैश्च हीनः कुनखी कुवेषः ॥ १२ ॥

जिसके चन्द्ररिपु (राहु) धर्म (नवम) भावमें स्थित होवे वह चांडालके कर्म करनेवाला, निंदा करनेवाला, कुचाल चलनेवाला, जातिके आनन्दमें रत रहनेवाला, दीन और सदा शत्रुके कुलसे भय पानेवाला होता है। जिसके राहु कर्म (दशम) भावमें स्थित होय वह कामातुर,दूसरेके धनका लोभी,मुखर (वाचाल, शठ), दीन, ग्लानियुक्त, विरक्त,सुखसे रहित,विहारशील,चपल और दुष्ट होता है। जिसके सोम-(चन्द्र) रिपु (शत्रु) अर्थात् राहु आय (लाभ) ग्यारहवें भावमें स्थित होय वह दान्त, श्यामवर्ण, सुन्दर शरीरवाला, अल्पवाचायुक्त, परदेशमें रहनेवाला, शास्त्रका जाननेवाला, वेत्ता,चपल और निर्लज्ज होता है। जिसके बारहवें स्थानमें राहु स्थित होय वह धर्मअर्थसे रहित, बहुत दुःखी, स्त्रीकरके वियुक्त, विदेशमें रहनेवाला, सुख करके हीन और बुरे नखों और बुरे भेषवाला होता है॥९-१२॥ इति राहुभावफलम्॥

अथ केतुभावफलम्।

तनुस्थः शिखी बान्धवक्लेशकर्त्ता तथा दुर्जनेभ्यो भयं व्याकुलत्वम्। कलत्रादिचिन्ता सदोद्वेगता च शरीरे व्यथा नैकधा मारुती

स्यात् ॥ १ ॥ धने केतुरुद्विग्नताकृन्नरेशाद्धने धान्यनाशो मुखे रोगकृच्च । कुटुम्बाद्विरोधो वचः सत्कृतं वा भवेत्स्वे गृहे सौम्यगेहेऽतिसौख्यम् ॥२॥ शिखी विक्रमे शत्रुनाशं विवादं धनं भोगमैश्वर्यतेजोऽधिकं च । सुहृद्वर्गनाशं सदा बाहुपीडा भयोद्वेगचिन्ताकुलत्वं विधत्ते॥३॥ चतुर्थे न मातुः सुखं नो कदाचित्सुहृद्वर्गतः पैतृकं नाशमेति । शिखी बन्धुवर्गात्सुखं स्वोच्चगेहे चिरं नो वसेत्स्वे गृहे व्यग्रता चेत् ॥ ४ ॥

जिसके लग्नमें केतु पडे उसके बांधवजन क्लेशकर्ता हों और वह मनुष्य दुष्टजनोंसे भय (डर) और व्याकुलता पावे, स्त्रीपुत्रादिकोंकी चिन्ता रहे और उद्वेगभी हो, शरीरमें अनेकप्रकारसे वायुरोगोंकी पीडा रहे । जिसके दूसरे स्थानमें केतु पडे उसे राजाओंकी तरफसे दुविधा धोखा आदि रहे,धन और अन्नादिका नाश हो, मुखरोगसे पीडित होवे, कुटुम्बसे विरोध रहे, सत्कारसे वचन न कहै परंतु जो केतु अपने घरका होय तो अनेकप्रकारके आनन्दको देता है । जिसके तीसरे स्थानमें केतु स्थित होवै उसके शत्रुओंका नाश हो,विवाद अर्थात् गालीगुफतार आदि खोटे वचनोंसे कलह होवै और धनके भोगका आनन्द तेज आदि बहुत हो, हितकारी बांधवजनोंका नाश हो सदाकाल हाथोंमें पीडा रहै, भय घबराहट फिकर व्याकुलता आदि नित्यप्रति लगे रहैं। जिसके चौथे स्थानमें केतु पडै उसे कदाचित् भी माताका सुख न मिलै और अपने हितकारी बान्धवों तथा मित्र आदिकोंका भी सुख न मिलै, पिताके प्राप्त कियेहुए मन्दिर और धन आदि पदार्थोंका नाश हो, हमेशा बहुत समयतक अपने घरमें न रहै किन्तु परदेशमें रहै और चित्तकी व्यग्रता अर्थात् चिन्ता क्लेश आदि रहै परन्तु जो केतु उच्चघरका होकर पडै तो बन्धुवर्ग आदि सर्वप्रकारका सुख मिलता है ॥ १–४ ॥

यदा पञ्चमे राहुपुच्छं प्रयाति तदा सोदरे घातवातादिकष्टम् । स्वबुद्धिव्यथासन्ततः स्वल्पपुत्रः स दासो भवेद्वीर्ययुक्तो नरोऽपि ॥५॥ तमः षष्ठभागे गते षष्ठभावे भवेन्मातुलान्मानभङ्गो रिपूणाम् । विनाशश्चतुष्पात्सुखं तुच्छचित्तं शरीरे सदाऽनामयं व्याधिनाशः॥६॥ शिखी सप्तमे भूयसी मार्गचिन्ता निवृत्तः स्वनाशोऽथवा वारिभीतः । भवेत्कीटगः सर्वदा लाभकारी कलत्रादिपीडा व्ययो व्यग्रता चेत् ॥ ७ ॥ गुदं पीडचतेऽर्शादिरोगैरवश्यं भयं वाहनादेः स्वद्रव्यस्य रोधः। भवेदष्टमे राहुपुच्छेऽर्थलाभः सदा कीटकन्याजगोयुग्मकेतुः ८

जिसके पंचमभावमें केतु पडे उसके शरीरमें घात अर्थात् शस्त्र आदि लगनेके घावका और वातरोग आदिका कष्ट रहै, अपनी ही बुद्धिकी भूलसे क्लेश पावै, पुत्रोंकी सन्तान थोडी होवै, परन्तु यह मनुष्य दासकर्म (नौकरीआदि) करै और बलवान् होवै, जिसके छठे स्थानमें केतु पडै उसके मामा और शत्रुओंका मानभंग होवै, चौपाये जीवोंका सुखनाश हो, मनका साहस तुच्छ (थोडा) हो शरीर सदाकाल रोगरहित रहै, रोगोंका नाश होजाय। जिस मनुष्यके सातमें भावमें केतु पडै उसे मार्ग अर्थात् परदेश चलनेकी बहुतसी चिन्ता रहै, अपने इकट्ठा कियेहुये धनका नाश हो अथवा जलसे भय हो, स्त्री आदिकोंको पीडा हो, खर्च बहुत रहै, चित्तमें क्रोध हो परन्तु जो केतु वृश्चिकराशिका होकर पडै तो सदाकाल लाभकारी जानना। जिसके अष्टम स्थानमें केतु पडै उसकी गुदा बवासीर आदि रोगोंसे पीडित रहे सवारी आदिकोंसे भय हो अपना द्रव्यभी अपने काम न आवे परन्तु जो केतु अष्टमस्थानमें वृश्चिक, कन्या, मिथुन आदि राशियोंमेंसे किसी राशिका पडै तो सदाकाल लाभकारी होता है ॥ ५-८ ॥

शिखी धर्मभावे यदा क्लेशनाशः सुतार्थी भवेन्म्लेच्छतो भाग्यवृद्धिः। सहोत्थव्यथां बाहुरोगं विधत्ते तपोदानतो हास्यवृद्धिं तदानीम् ॥ ९ ॥ पितुर्नो सुखं कर्मगो यस्य केतुस्तदा दुर्भगं कष्टभाजं करोति। तदा वाहने पीडितं जातु जन्म वृषाजालिकन्यासु चेच्छत्रुनाशम्॥ १०॥सुभाग्यः सुविद्याधिको दर्शनीयः सुगात्रः सुवस्त्रः सुतेजोऽपि तस्य। दरे पीडचते संततिर्दुर्भगा च शिखी लाभगः सर्वलाभं करोति ॥ ११ ॥ शिखी रिष्फगो वस्तिगुह्याङ्घ्रिकोऽपि रुजापीडनं मातुलान्नैव शर्म। सदा राजतुल्यं नरं सद्व्ययं तद्रिपूणां विनाशं रणेऽसौ करोति॥ १२ ॥

नवमभावमें केतु पडे तो क्लेशोंका नाश करै और वह मनुष्य पुत्रकी इच्छा बहुत रक्खे, म्लेच्छोंसे भाग्यकी वृद्धि हो, भ्राताओंको पीडा रहै, भुजाओंमें रोग हो और जो तप दान आदि कार्य करै तो उसमें उसकी हँसी होवै। जिसके जन्मसमयमें केतु दशमभावमें पडे उसे पिताका सुख नहीं मिलता है और वह बुरे भाग्यवाला, कुरूप, कमबख्त, सदाकाल दुःखका भाजन होता है, सवारियोंके कारण दुःखित रहता है परन्तु जो केतु मेष, वृश्चिक, कन्या आदि राशियोंमेंसे हो तो शत्रुओंका नाश होता है जिसके ग्यारहवें स्थानमें केतु पडै वह मनुष्य सुंदर भाग्यवाला

अतिविद्यावान्, स्वरूपवान्, देखनेयोग्य, सुंदर वस्त्र पहननेवाला, सुंदर तेजवान् होता है. असलमें ग्यारहवें स्थानका केतु संपूर्णही लाभ करता है परंतु भयसे पीडित रहता है और संतान भाग्यहीन होती है। जिसके बारहवें स्थानमें केतु पडे उसके नाभीके नीचे गुदा लिंग पैर आदिकोंमें और नेत्रोंमें पीडा रहे. मामासे कुछ सुख न मिले, परंतु यह मनुष्य सदाकाल राजाओंके समान रहै, उत्तम कामोंमें धन खर्च करै और युद्धमें शत्रुओंको जीतै अर्थात् उनका नाश करै ॥ ९-१२ ॥ इति केतुभावफलम् ॥

अथ द्विग्रहयोगफलम् ।

स्त्रीवशः क्रूरकर्मा च दुर्विनीतः क्रियादृढः । विक्रमी लघुचेताश्च चन्द्रसूर्यसमागमे ॥ १ ॥ सूर्यमङ्गलसंयोगे तेजस्वी पापमानसः । मिथ्यावादी च मूर्खश्च वधनिष्ठो बली नरः ॥ २ ॥ विद्वानार्यो राजमान्यः सेवाशीलः प्रियंवदः । यशस्वी च स्थिरद्रव्यो बुधसूर्यसमागमे ॥ ३ ॥ नृपमान्यो धर्मनिष्ठो मित्रवानर्थवानपि । उपाध्यायोऽतिविख्यातो योगे जीवार्कयोर्भवेत् ॥ ४ ॥

चन्द्रमा और सूर्यके समागममें अर्थात् जिसके जन्म समयमें चन्द्रमा और सूर्य एक स्थानमें स्थित हों तो वह स्त्रीके वश, क्रूरकर्म करनेवाला, दुर्विनीत, क्रियामें दृढ, पराक्रमी और लघुचित्त होता है। सूर्य, मंगल जिसके एक घरमें होंय वह तेजवान्, पापमनवाला, मिथ्यावाद करनेवाला मूर्ख, हिंसा करनेमें निष्ठ और बलवान् होता है। सूर्य और बुध जिसके एक घरमें होते हैं वह विद्वान्, आर्य (श्रेष्ठ), राजाओंमें पूज्य, सेवामें शीलवाला, प्रिय बोलनेवाला, यशस्वी और स्थिर द्रव्यवाला होता है। बृहस्पति और सूर्य जिसके एक घरमें होंय वह राजाओंमें पूज्य, धर्ममें निष्ठ, मित्रवान्, द्रव्यवान् तथा बहुत प्रसिद्ध पढानेवाला होता है ॥ १-४ ॥

शस्त्रप्रहारो बन्धश्च रङ्गज्ञो नेत्रदुर्बलः । स्त्रीसङ्गलब्धद्रव्यश्च सक्तः शुक्रार्कसङ्गमे ॥ ५ ॥ विद्वानपि क्रियानिष्ठो धातुज्ञो वृद्धचेष्टितः । प्रनष्टसुतदारश्च शनिसूर्यसमागमे ॥ ६ ॥ चन्द्रमङ्गलसंयोगे रक्तपीडातुरो भवेत् । मृच्चर्मधातुशिल्पी च धनी शूरो रणे भवेत् ॥ ७ ॥ स्त्रीसंसक्तः सुरूपश्च काव्ये च निपुणो नरः । धनी गुणी हास्यवक्त्रो बुधेन्द्वोर्धार्मिकोऽन्वये ॥ ८ ॥

शुक्र सूर्य जिसके एक घरमें होंय वह शस्त्रोंका प्रहार करनेवाला, बांधनेवाला, रंगका जाननेवाला, नेत्रोंमें दुर्बल, स्त्रीके संगमें द्रव्यका पानेवाला और समर्थ

भी होता है । शनि और सूर्य जिसके एक घरमें होंय वह विद्वान्, क्रियामें निष्ठ, धातुका जाननेवाला, वृद्धचेष्टावाला जिसके पुत्र स्त्री नाश हों ऐसा होता है । चन्द्रमा और मंगल जिसके एक घरमें होंय वह पीडासे व्याकुल, मिट्टी चमडा और धातुओंकी कारीगरी करनेवाला, धनी और संग्राममें बडा वीर होता है। बुध और चन्द्रमा जिसके एक घरमें होयँ वह स्त्रीमें सक्त, सुरूपवान्, काव्यमें निपुण, धनवान्, गुणी, हंसनेवाला और वंशमें धर्मवान् होता है ॥ ५-८ ॥

देवद्विजार्चासक्तश्च बन्धुमान्यकरो धनी । दृढप्रीतिः सुशीलश्च जीवचन्द्रसमागमे ॥ ९ ॥ कुशलो विक्रयादौ च वृषलः कलहप्रियः । माल्यवस्त्रादिसंयुक्तः शशिभार्गवसङ्गमे ॥ १० ॥ गजाश्वपालो दुःशीलो वृद्धस्त्रीरमणो नरः । वेश्याधनोऽल्पपुत्रश्च शनि-चन्द्रसमागमे ॥ ११ ॥ भूपुत्रबुधसंयोगे निर्धनो विधवापतिः । स्त्रीदु-र्भगः क्रयप्रीतः स्वर्णलोहप्रकीर्णकः ॥ १२ ॥

बृहस्पति और चन्द्रमा जिसके एक घरमें होंय वह देवता और ब्राह्मणोंकी पूजामें आसक्त, भाइयोंका मान करनेवाला, धनी, दृढ प्रीति और सुशील सदा श्रेष्ठ तेजवाला और दांतोंका रोगी होता है। शुक्र और चन्द्रमा जिसके एक घरमें होंय वह बेंचने खरीदनेंमें निपुण, वेश्याबाज, कलहसे प्रीति करनेवाला, माला और वस्त्रादिकोंसे संयुक्त होता है । शनि और चन्द्रमा जिसके एक घरमें होंय वह हाथी और घोडेका पालन करनेवाला, दुश्शील, बूढी स्त्रीमें रमण करनेवाला, जिसके वेश्याही धन और थोडे पुत्रवाला होता है । बुध और मंगल जिसके एक घरमें होयँ वह दरिद्र, विधवा स्त्रीका पति, कुरूपस्त्रीवाला, बेंचनेमें प्रीतिवाला और सोने लोहेका काम करने-वाला होता है ॥ ९-१२ ॥

मेधावी शिल्पशास्त्रज्ञः श्रुतज्ञो वाग्विशारदः । अश्वप्रियः प्रधा-नश्च जीवमङ्गलसंगमे ॥१३॥ गुणप्रधानो गणको द्यूतानृतरतः शठः । परदाररतो मान्यः शुक्रमंगलसंगमे ॥ १४ ॥ वाग्मीन्द्रजालदक्षत्व-विधर्मी कलहप्रियः । विषमद्यप्रपञ्चाढ्यो मन्दमंगलसंगमे ॥ १५ ॥ बुधस्य गुरुणा योगे नृत्यवाद्यविचक्षणः । धैर्ययुक्तः पण्डितश्च सुखी भवति मानवः ॥ १६ ॥

बृहस्पति और मंगल जिसके एक घरमें होंय वह बुद्धिमान्, कारीगरीका जाननेवाला, वेदका जाननेवाला, वाणीमें पूर्ण, घोडा बहुत प्रिय और प्रधान होता है । शुक्र मंगल जिसके एक घरमें होंय वह गुणोंमें प्रधान, ज्योतिषी, जुवा अनृतमें रत, मूर्ख, पराई स्त्रीमें रत और पूज्य हीता है। शनि और मंगल जिसके एक घरमें होंय वह वाणीमें निपुण, इन्द्रजालमें निपुण, धर्मरहित, लडाईमें प्रीतिवाला, विष तथा मदिराके प्रपंचसे युक्त होता है। बुध और बृहस्पति जिसके एक घरमें होंय वह नाच और बाजामें निपुण, धैर्ययुक्त, पण्डित और सुखी होता है ॥ १३–१६ ॥

बुधभार्गवयोर्योगे नयज्ञो बहुशिल्पवित् । धनी सुवाक्यो वेदज्ञो गीतज्ञो हास्यलालसः ॥ १७ ॥ क्षीणो गमनशीलश्च निरुपायो जगत्कलिः । शुभवाक्यः कार्यदक्षो भानुसूनुबुधान्वये ॥ १८ ॥ गुरुभार्गवसंयोगे दिव्यदारो महाधनी । धर्मास्तिकप्रमाणज्ञो विद्याजीवी च जायते ॥ १९ ॥ वृत्तिसिद्धिश्च शूरश्च यशस्वी नगराधिपः । श्रेणीसेनाभिमुख्यश्च गुरुमन्दान्वये नरः ॥ २० ॥ शुक्रेण च शनेर्योगे मत्तः पशुपतिर्नरः । दारुदारणदक्षश्च क्षाराम्लादिकशिल्पवित् ॥ २१ ॥

बुध और शुक्र जिसके एक घरमें होंय वह नीतिका जाननेवाला, बहुत कारीगरी जाननेवाला, धनवान्, सुन्दरवाणी बोलनेवाला, वेद तथा गीतकाभी जाननेवाला और हास्यकी लालसावाला होता है । शनि और बुध जिसके एक घरमें होयँ वह क्षीण गमनमें शीलवाला, उपायरहित, संसारभरसे लडाई करनेवाला, शुभवाणी बोलनेवाला और कार्यमें निपुण होता है । बृहस्पति और शुक्र जिसके एक घरमें स्थित होंय वह सुंदर स्त्रीवाला, महाधनी, धर्मवान्, प्रमाणका जाननेवाला और विद्याहीसे जीविका करनेवाला होता है । बृहस्पति और शनि जिसके एक घरमें स्थित होंय वह वृत्तिमें सिद्धिवाला, वीर, यशस्वी, नगरका स्वामी, श्रेणी, सेनादिका मुखिया होता है । शुक्र और शनि जिसके एक घरमें होंय वह मत्त, पशुओंकी रक्षा करनेवाला, लकडीके काटनेमें निपुण, क्षाराम्लादिक कारीगरीका जाननेवाला होता है ॥ १७–२१ ॥

इति द्विग्रहयोगफलम् ॥

अथ त्रिग्रहयोगफलम् ।

यंत्राश्वकूटकुशलोऽसृग्वेदनापीडितोऽतिशूरश्च । आदित्यचन्द्रभौमैरेकस्थैर्जायते सुतविहीनः ॥ १ ॥ विद्याधनरूपयुतः काव्य-

कथाकविसभाप्रियः सधनः। नृपसेवकः प्रियवागेकस्थे सूर्यचन्द्रबुधे ॥ २ ॥ धर्मपरो नृपसचिवो दृढमेधो मानकृच्च बन्धूनाम्। देवद्विजार्चनरतो रविशशिजीवैः सहैकस्थैः ॥ ३ ॥ सुवपुः क्षपितारिगणो नरपतिसुभगः सदा प्रवरतेजाः। रविशशिशुक्रैः सहितैर्भवति नरो दन्तविकृतश्च ॥ ४ ॥

जिसके सूर्य, चन्द्रमा, मंगल तीनों ग्रह एकराशिमें होंय वह यंत्रविद्याका जाननेवाला, कूटविषे प्रवीण, वातरोगसे पीडित, बडा शूर और पुत्रसे हीन होता है। जिसके सूर्य, चन्द्रमा और बुध एक घरमें होयँ वह विद्या, धन और रूपसे युक्त काव्यकथामें निपुण, कवि, सभाप्रिय, धनवान्, राजाका सेवक और प्रिय बात कहनेवाला होता है। जिसके सूर्य, चन्द्रमा और बृहस्पति एक घरमें होंय वह धर्मवान्, राजाका मंत्री, दृढबुद्धिवाला, बंधुओंका मान करनेवाला, देवता और ब्राह्मणकी पूजामें रत होता है। जिसके सूर्य चन्द्रमा और शुक्र एक घरमें होयँ वह सुंदरवपु, शत्रुको दूर करनेवाला, मनुष्योंकी रक्षा करनेवाला, सुंदर अंगवाला, सदा श्रेष्ठ, तेजवाला और दांतोंका रोगी होता है ॥ १-४ ॥

धर्मपरो विगतधनो गजाश्वपरिपालकः सुकर्मरतः। रविरवितनयशशाङ्कैरेकस्थैर्विगतशीलश्च ॥ ५॥ भानुभौमबुधैर्योगे ख्यातः साहसिको नरः। निष्ठुरो गतलज्जश्च धनस्त्रीपुत्रमण्डितः ॥ ६॥ जीवसूर्यकुजैर्योगे प्रचण्डः सत्यभाषणः। राजमन्त्री नरश्चापि सुवाक्यो निपुणो भवेत् ॥ ७ ॥ शुक्रभौमार्कसंयोगे सुभगो नयनातुरः। कुशीलो वत्सलो दक्षो विषयासक्तमानसः ॥ ८ ॥

जिसके सूर्य चन्द्रमा और शनि एक घरमें होयँ वह धर्मवान्, धनसे हीन, हाथी घोडेका पालन करनेवाला, शुभकर्ममें रत और शीलसे रहित होता है। जिसके सूर्य, मंगल और बुध एक घरमें होयँ वह प्रसिद्ध, साहसी, निष्ठुर, लज्जासे रहित, धन, पुत्र, और स्त्रीसे युक्त होता है। जिसके बृहस्पति सूर्य और मंगल एक घरमें होयँ वह प्रचंड सत्य बोलनेवाला, राजाका मंत्री, सुंदरवाक्य और निपुण मनुष्य होता है। जिसके शुक्र, मंगल और सूर्य एक घरमें होयँ वह सुंदर, नेत्ररोगी, कुशील, प्यारा, दक्ष, विषयमें आसक्त मनवाला होता है ॥ ५-८ ॥

शनिसूर्यकुजैर्योगे मूर्खो गोधनवर्जितः। रोगार्तः स्वजनैर्हीनो विकलः कलहाकुलः ॥ ९ ॥ बुधजीवार्कसंयोगे नेत्ररोगी महाधनी।

शास्त्रशिल्पकलाभिज्ञो लिपिकर्ता भवेन्नरः ॥ १० ॥ शुक्रसूर्यबुधै-र्योगे गुरुवर्गैर्निराकृतः । अभिशप्तो दिशो याति स्त्रीहेतोस्तप्तमा-नसः ॥ ११ ॥ शनिसूर्यबुधैर्योगे दुराचारः पराजितः । बन्धुभिश्च परि-त्यक्तो विद्वेषी जायते नरः ॥ १२ ॥

जिसके शनैश्चर सूर्य और मंगल एक घरमें होयँ वह मूर्ख, गौवोंसे हीन, रोगसे व्याकुल, भाइयोंसे हीन, विकल और लडाईसे व्याकुल होता है। जिसके बुध, बृह-स्पति और सूर्य एक घरमें होयँ वह नेत्रोंमें रोगी, महाधनी, शस्त्र और कारीगरीकी कलाओंको जाननेवाला और लिपिकर्ता होता है । जिसके शुक्र सूर्य और बुध एक घरमें होयँ वह गुरुवर्गोंसे निराकृत शापको प्राप्त, दिशाओंमें घूमें और स्त्रीके हेतु तप्तमन होता है । जिसके शनि सूर्य और बुध एक घरमें स्थित होयँ वह दुराचार, पराजयको प्राप्त, भाइयोंसे छोडाहुवा और सबसे वैर करनेवाला होता है ॥९-१२॥

[शुक्रजीवार्कसंयोगे राजमन्त्री च निर्धनः ।
दुष्टचक्षुश्च शूरश्च प्राज्ञश्च परकर्मकृत् ॥
शनिशुक्रार्कसंयोगे कलामानविवर्जितः ।
कुष्ठी शत्रुभयोद्विग्नो दुराचारी नरो भवेत् ॥

शुक्र बृहस्पति और सूर्य जिसके एक घरमें होयँ वह राजाका मन्त्री धनहीन दुष्ट-नेत्रवाला, वीर, बुद्धिमान् और पराये कर्मका करनेवाला होता है ॥ जिसके शनि शुक्र और सूर्य एक घरमें होयँ वह कलामान करके वर्जित, कुष्ठी, शत्रुभयसे उद्विग्न और दुराचारी होता है ॥]

मन्दजीवार्कसंयोगे पुत्रमित्रकलत्रवान् । निर्भयो नृपतिद्वेष्टा स्वे-ष्टबन्धुर्भवेन्नरः ॥ १३ ॥ चन्द्रचान्द्रिकुजैर्योगे नीचाचारश्च पापकृत् । आजीवितहर्ता लोके बन्धुहीनश्च जायते ॥ १४॥ चन्द्रजीवकुजैर्योगे स्त्रीलोलो वर्णसंयुतः । कान्तश्च सङ्गतः स्त्रीणां चन्द्रतुल्यमुखो भवेत् ॥१५॥ चन्द्रशुक्रकुजैर्योगे दुःशीलायाः पतिः सुतः। सदा भ्रमणशीलश्च शीतभीतोऽपि जायते ॥ १६ ॥ शनिचन्द्रकुजैर्योगे बाल्ये स्यान्मृ-तमातृकः । क्षुद्रश्च लोकविद्विष्टो विषमो जायते नरः ॥ १७ ॥

जिसके शनि बृहस्पति और सूर्य एक घरमें होंय वह पुत्र मित्र और स्त्रीवाला होता है । निर्भय, राजाओंसे वैर करनेवाला बंधुओंमें इष्ट होता है । जिसके चन्द्रमा

बुध और मंगल एक घरमें होयँ वह नीचाचार करनेवाला, पापी, संसारमें जीविकासे रहित और भाइयोंसेभी हीन होता है। जिसके चन्द्रमा बृहस्पति और मंगल एक घरमें होयँ वह बिजलीके समान चंचल स्त्रीवाला, यशयुक्त, सुंदर स्त्रियोंमें रत और चन्द्रमाके समान मुखवाला होता है। जिसके चन्द्रमा शुक्र और मंगल एक घरमें होयँ वह दुःशीला स्त्रीवाला तथा दुःशीला मातावाला, सदाही घूमनेवाला और शीतमे डरनेवाला होता है। शनि, चन्द्रमा और मंगल जिसके एक घरमें होयँ वह बाल्यावस्थाहीमें मृत मातावाला, क्षुद्र, लोकमें वैर करनेवाला और विषम होता है ॥ १३–१७॥

जीवचन्द्रबुधैर्योगे तेजस्वी धनवानपि। पुत्रमित्रादिसंयुक्तो वाग्मी ख्यातश्च कीर्तिमान् ॥१८॥ बुधेन्दुभार्गवैर्योगे विद्ययाऽलंकृतो नरः। सेर्ष्यो धनातिलोभी च नीचाचारश्च जायते ॥ १९ ॥ बुधेन्दुमन्दसंयोगे प्राज्ञो भूपतिपूजितः। अत्युच्चो विपुलाङ्गश्च वाग्मी भवति मानवः ॥ २० ॥ शुक्रजीवेन्दुसंयोगे साधुपुत्रश्च पण्डितः। साधुः सर्वकलाभिज्ञः सुभगो जायते नरः ॥ २१ ॥

बृहस्पति चन्द्रमा और बुध जिसके एक घरमें होयँ वह तेजस्वी, धनवान्, पुत्रमित्रादिकोंसे संयुक्त, वाणीमें निपुण, प्रसिद्ध और कीर्तिमान् होता है ॥ बुध चन्द्रमा और शुक्र जिसके एक घरमें होंय वह विद्या करके संयुक्त, ईर्षा करके युक्त, धनका अतिलोभी और नीच आचारवाला होता है ॥ जिसके बुध चन्द्रमा और शनि एक घरमें होयँ वह बुद्धिमान्, राजाओंसे पूजित, अति ऊंचा, सुन्दर अंगवाला और वाणीमें निपुण होता है ॥ जिसके शुक्र बृहस्पति और चन्द्रमा एक घरमें होयँ वह मनुष्य साधु पुत्रोंवाला, पण्डित, साधु, सर्व कलाओंका जाननेवाला, सुन्दर अंगवाला होता है ॥ १८–२१ ॥

जीवेन्दुमन्दसंयोगे नीरोगः स्त्रीरतो नरः। शास्त्रार्थविज्ञः सर्वज्ञो ग्रामपत्तनपालकः ॥ २२ ॥ शनिशुक्रेन्दुसंयोगे लिपिकर्ता च वेदवित्। पुरोहितकुलोत्पन्नो भवेत्पुस्तकवाचकः ॥ २३ ॥ जीवभौमबुधैर्योगे सुकविर्युवतिप्रियः। परोपकारकृत्तीक्ष्णो गान्धर्वकुशलो भवेत् ॥ २४ ॥

जिसके बृहस्पति चन्द्रमा और शनि एक घरमें होयँ वह नीरोग, स्त्रीमें रत, शास्त्रार्थमें निपुण, सर्वज्ञ, गाँव और पत्तनोंका पालक होता है ॥ शनि शुक्र और

चन्द्रमा जिसके एक घरमें होयँ वह लिपिकर्त्ता, वेदका जाननेवाला, पुरोहितके कुलमें उत्पन्न और पुस्तकका बाचनेवाला होता है ॥ बृहस्पति मंगल और बुध जिसके एक घरमें होयँ वह अच्छा कवि, स्त्रीको प्रिय, पराया उपकार करनेवाला, तीक्ष्ण और गानेमें निपुण होता है ॥ २२-२४ ॥

भृगुभौमबुधैर्योगे विकलाङ्गश्च चञ्चलः । अकुलीनः सदोत्साही तृप्तश्च मुखरो नरः ॥ २५ ॥ बुधमन्दकुजैर्योगे प्रवासी नेत्ररोगवान् । प्रेष्यो वदनरोगी च हास्यलुब्धो भवेन्नरः ॥ २६ ॥ जीवकाव्यकुजैर्योगे दिव्यनारीयुतः सुखी । सर्वानन्दकरो लोके जायते नृपतेः प्रियः ॥ २७ ॥ जीवमन्दकुजैर्योगे कुष्ठाङ्गो राजपूजितः । नीचाचारो निर्धनश्च भवेन्मित्रैर्विगर्हितः ॥ २८ ॥

जिसके शुक्र मंगल और बुध एक घरमें होयँ वह विकल अंगवाला चंचल, अकुलीन, सदाही उत्साहवाला, तृप्त और मुखर होता है ॥ जिसके बुध, शनि और मंगल एक घरमें होयँ वह प्रवासी, नेत्रोंमें रोगवाला, दास, वदनका रोगी और हास्यमें लुब्ध होता है ॥ बृहस्पति, शुक्र और मंगल जिसके एक घरमें होयँ वह सुन्दर स्त्रीकरके युक्त, सुखी, संसारमें सबको आनन्द करनेवाला और राजाकोभी प्रिय होता है ॥ जिसके बृहस्पति, शनि और मंगल एक घरमें होयँ वह कुष्ठयुक्त अंगवाला, राजाओंमें पूजित, नीच आचार करनेवाला, निर्धनी और मित्रोंसे विगर्हित होता है ॥ २५-२८ ॥

भृगुमन्दकुजैर्योगे दुःशीलायाः पतिः शुभः । प्रवासशीलो दुःखी च जातको जायते सदा ॥२९॥ बुधेज्यभृगुसंयोगे सुतनुर्नृपपूजितः । जितारिर्दीर्घकीर्तिश्च सत्यवादी भवेन्नरः ॥ ३० ॥ बुधार्किजीवसंयोगे सुदारो बहुभोगवान् । धनैश्वर्ययुतः प्राज्ञः सुखधैर्ययुतो भवेत् ॥ ३१ ॥ मन्दशुक्रबुधैर्योगे मुखरः पारदारिकः । असङ्गत्यां कलाभिज्ञः स्वदेशनिरतो भवेत् ॥ ३२ ॥

जिसके शुक्र, शनि और मंगल एक घरमें होयँ वह दुश्शीला स्त्रीवाला, सुन्दर, प्रवासशील और सदाही दुःखी होता है । जिसके बुध,बृहस्पति और शुक्र एक घरमें होयँ वह अच्छी देहवाला, राजाओंमें पूजित,शत्रुओंको जीतनेवाला, बडी कीर्तिवाला और सत्यवादी होता है । जिसके बुध शनि और बृहस्पति एक घरमें होयँ वह सुन्दर

स्त्रीवाला, बहुत भोगयुक्त, धनसे युक्त, ऐश्वर्यसे युक्त बुद्धिमान् सुख और धैर्यसे युक्त होता है । जिसके मंद (शनि) शुक्र और बुध एक घरमें होयँ वह मुखर, पराई स्त्रीसे प्रीतिकरनेवाला, कुसंगति करनेवाला, कलाओंका जाननेवाला और अपनेही देशमें निरत होता है ॥ २९-३२ ॥

मन्देज्यशुक्रसंयोगे राजा भवति कीर्तिमान्। नीचवंशेऽपि संभूतः शीलयुक्तो नृपो भवेत् ॥ ३३ ॥ प्रायः पापैर्युते चन्द्रे मातुर्नाशो रवौ पितुः। शुभग्रहैः शुभं वाच्यं मिश्रितैर्मिश्रितं फलम् ॥ ३४ ॥ शुभास्त्रयो ग्रहा युक्ताः कुर्वन्ति सुखिनं नरम्। पापास्त्रयो दुःखितं च दुर्विनीतं विगर्हितम् ॥ ३५ ॥

जिसके शनि, बृहस्पति, शुक्र एक घरमें होयँ वह यशी राजा नीचवंशमें भी उत्पन्न सुशीलवान् राजाही होता है । पापग्रहोंसे युक्त चन्द्रमामें माताका नाश और सूर्यमें पिताका नाश, शुभग्रहोंसे शुभ होता है और पापग्रह वा शुभग्रह मिले हुए हों तो मिला हुआ फलभी होता है । तीन शुभग्रहही युक्त हों तो मनुष्यको सुखी करते हैं और तीन पापग्रहोंसे दुःखी नम्रताहीन और निन्दित जानना ॥ ३३-३५ ॥

इति त्रिग्रहयोगफलम् ॥

अथ चतुर्ग्रहयोगफलम् ।

चन्द्रचान्द्रिकुजार्काणां योगे लिपिकरो नरः। तस्करो मुखरो वाग्मी मायावी कुशलो भवेत् ॥ १ ॥ भौमभास्करचन्द्रेज्यसंयोगे निपुणो धनी। तेजस्वी गतशोकश्च नीतिज्ञश्च भवेन्नरः ॥२॥ सूर्येन्दुभौमशुक्राणां योगे विद्यार्थसंग्रही। सुखी पुत्री कलत्री च वाग्वृत्तिमनुजो भवेत् ॥ ३ ॥ अर्कार्किशशिभौमानां योगे मूर्खश्च निर्धनः। ह्रस्वो विषमदेहश्च भिक्षावृत्तिर्भवेन्नरः ॥ ४ ॥ सोमसौम्यार्कजीवानां योगे शिल्पकरो धनी। सौवर्णिकाप्लुताक्षश्च रोगहीनश्च जायते॥५॥

जिसके जन्मकालमें चन्द्रमा, बुध, मंगल और सूर्य एक घरमें स्थित होंय वह लिपि करनेवाला, चोर, वाचाल, वाणी और मायामें निपुण और कुशल होता है । जिसके मंगल, सूर्य, चन्द्रमा और बृहस्पति एक घरमें होंय वह निपुण, धनी, तेजस्वी, शोकरहित और नीतिका जाननेवाला होता है । जिसके सूर्य, चन्द्रमा, मंगल और शुक्र एक घरमें होयँ वह विद्या और धनका संग्रह करनेवाला, सुखी,

पुत्रवान्, स्त्रीयुक्त और वाणीहीकी वृत्तिवाला होता है। जिसके सूर्य, शनि, चन्द्रमा और मंगल एक घरमें होयँ वह मूर्ख, दरिद्री, ह्रस्व, विषम देहवाला और भिक्षावृत्तिवाला मनुष्य होता है। जिसके चन्द्रमा, बुध सूर्य और बृहस्पति एक घरमें होयँ वह कारीगरीका करनेवाला, धनी, सुंदर वर्णवाला, प्लुत नेत्रोंवाला और रोगहीन होता है॥

चन्द्रार्कबुधशुक्राणां संयोगे सुभगो नरः। ह्रस्वश्च राजमान्यश्च वाग्मी च विकलो भवेत् ॥६॥ अर्कार्किचान्द्रिचन्द्राणां योगे भिक्षाशनो नरः। वियुक्तः पितृमातृभ्यां विकलाक्षश्च निर्धनः ॥ ७ ॥ सूर्यचन्द्रेज्यशुक्राणां सम्बन्धे राजपूजितः। जलारण्यमृगस्वामी नरः स्यान्निपुणः सुखी ॥८॥ सूर्यचन्द्रार्किजीवानां मान्यश्च वनिताप्रियः। बहुवित्तसुतः क्षीणः समाक्षश्च प्रजायते ॥ ९ ॥ सितार्कजरवीन्दूनां योगे चात्यन्तदुर्बलः। वनितासदृशाचारो भीरुरग्रेसरो नरः ॥ १० ॥

जिसके चन्द्रमा सूर्य, बुध और शुक्र एक घरमें होयँ वह सौभाग्यवान्, ह्रस्व, राजाओंमें पूज्य, वाणीमें निपुण और विकल होता है। जिसके सूर्य, शनि, चन्द्रमा और बुध एक घरमें होयँ वह भिक्षा मांगके खानेवाला, पिता और मातासे भी वियोगी, विकल नेत्रवाला और दरिद्र होता है। जिसके सूर्य, चन्द्रमा, बृहस्पति और शुक्र एक घरमें होयँ वह राजाओंमें पूज्य, जल, वन और मृगोंका स्वामी, निपुण और सुखी होता है। जिसके सूर्य, चन्द्रमा, बृहस्पति और शनि एक घरमें होंय वह राजाओंमें पूज्य, स्त्रीको प्यारा, बहुत द्रव्य और पुत्रोंवाला, तीक्ष्ण और सम नेत्रोंवाला होता है। जिसके शुक्र, शनि, सूर्य और चन्द्रमा एक घरमें होयँ वह अत्यन्त दुर्बल, स्त्रीके बराबर आचार करनेवाला, डरपोक और आगे चलनेवाला होता है ॥६-१०॥

बुधार्ककुजजीवानां योगे सूत्रकरो नरः। परदाररतः शूरो दुःखी चक्रधरो भवेत् ॥ ११ ॥ रविशुक्रकुजेन्दूनामन्वये पारदारिकः। निर्लज्जो दुर्जनश्चौरो विषमाङ्गो नरो भवेत् ॥ १२ ॥ अर्कार्किबुधभौमानां योगे योद्धा कविर्जनः। मंत्री च भूपतिस्तीक्ष्णो नीचाचारोऽपि जायते ॥ १३ ॥ भौमार्कबुधशुक्राणां योगे पूज्यो धनी मतः। सुभगो नृपमान्यश्च नरो भवति नीतिमान् ॥ १४ ॥ भान्वार्किभौमजीवानामैक्ये च गणनायकः। सोन्मादो नृपमान्यश्च सिद्धार्थो जायते नरः ॥ १५ ॥

जिसके बुध, सूर्य, मंगल और बृहस्पति एक घरमें होयँ वह सूत्रका करनेवाला, पराई स्त्रीमें रत, शूर, दुःखी और चक्र धरनेवाला होता है। जिसके सूर्य, शुक्र, मंगल और चन्द्रमा एक घरमें होयँ वह पराई स्त्रीसे प्रीति करनेवाला, निर्लज्ज, दुर्जन, चोर और विषम अंगवाला होता है। जिसके सूर्य, शनि, बुध और मंगल एक घरमें होयँ वह योद्धा, कवि, मंत्री, सेनापति, तीक्ष्ण और नीच आचार करनेवाला होता है। जिसके मंगल, सूर्य, बृहस्पति और शुक्र एक घरमें होयँ वह पूज्य, धनी, सौभाग्यवाला, राजाओंमें पूज्य और नीतिमान् होता है। जिसके सूर्य, शनि, बृहस्पति और मंगल एक घरमें होयँ वह गणोंमें नायक, उन्माद युक्त, राजाओंमें पूज्य और सिद्ध अर्थवाला होता है ॥ ११-१५ ॥

मन्दमार्तण्डशुक्रारैः संयुक्तैर्जायते नरः। लोकद्विष्टः समाख्यातो नीचाचारो जडाकृतिः ॥ १६ ॥ जीवशुक्रबुधार्काणां योगे बहुमतिर्नरः। धनी सुखी च सिद्धार्थः सुहृष्टश्च प्रजायते ॥ १७ ॥ अर्कार्किबुधदेवेज्यैरेकराशिस्थितैर्नरः। भ्रातृमान् कलही मानी क्लीबाचारी निरुद्यमः ॥ १८ ॥ शुक्रसौरिबुधार्काणां योगे मित्रयुतः शुचिः। मुखरः सुभगः प्राज्ञो जायते च सुखी नरः ॥ १९ ॥ सूर्यसौरिसितेज्यानां सम्बन्धे लोभवान् सुखी। कविः कारुकनाथश्च राजप्रीतो भवेन्नरः ॥ २० ॥

जिसके शनि, सूर्य, शुक्र और मंगल एक घरमें होयँ वह संसारभरका वैरी, समनेत्रोंवाला, नीचाचारी और जड आकृतिवाला होता है। जिसके बृहस्पति, शुक्र, बुध और सूर्य एक घरमें होयँ वह बहुत बुद्धिवाला, धनी, सुखी सिद्ध अर्थवाला और सुहृष्ट होता है। जिसके सूर्य, शनैश्वर, बुध और बृहस्पति एक घरमें होयँ वह भाइयोंसे युक्त, लडाई करनेवाला, मानी, नपुंसकोंके आचार करनेवाला और उद्यमहीन होता है। जिसके शुक्र, शनि, बुध और सूर्य एक घरमें होयँ वह मित्रयुक्त, पवित्र, वाचाल, सौभाग्यवान्, बुद्धिमान् और सुखी होता है। जिसके सूर्य, शनि, शुक्र और बृहस्पति एक घरमें होंय वह लोभी, सुखी, कवि, कारुकनाथ और राजाको प्यारा होता है ॥ १६-२० ॥

चन्द्रचान्द्रिकुजेज्यानां योगे शास्त्रविचक्षणः। नरेन्द्रश्च महामान्यो महाबुद्धिर्नरो भवेत् ॥ २१ ॥ भौमेन्दुबुधशुक्राणामन्वये बन्धकीपतिः। निद्रालुः कलही नीचो बन्धुद्वेषी जनो भवेत् ॥ २२ ॥

भौमेन्दुबुधसौरीणां योगे शूरकुलोद्भवः । पुत्रमित्रकलत्री च द्विमातृपितृको जनः ॥ २३ ॥ चन्द्रारगुरुशुक्राणां योगे साहसिको भवेत् । विकलाङ्गो धनी पुत्री मानी प्राज्ञोऽपि जायते ॥ २४ ॥ भौमेन्दुमन्दजीवानामन्वये बधिरो धनी । सोन्मादः स्थिरवाक्यश्च शूरो विज्ञो भवेन्नरः ॥ २५ ॥

जिसके चन्द्रमा, बुध, मंगल और बृहस्पति एक घरमें होयँ वह शास्त्रमें निपुण, राजा, अतिमान्य और महाबुद्धिमान् होता है । जिसके मंगल, चन्द्रमा, बुध और शुक्र एक घरमें होंय वह बंधकीका स्वामी, निद्रायुक्त, लडाई करनेवाला, नीच और भाइयोंका वैरी होता है । जिसके मंगल, चन्द्रमा, बुध और शनि एक घरमें होंय वह वीरकुलमें उत्पन्न, पुत्रवान्, मित्र और कलत्रवान्, तथा दो माता और पितावाला होता है । जिसके चन्द्रमा मंगल, बृहस्पति और शुक्र एक घरमें होंय वह साहसी, विकल अंगवाला, धनी, पुत्रवान्, मानी और बुद्धिमान् होता है । जिसके मंगल, चन्द्रमा, शनि और बृहस्पति एक घरमें होंय वह बहिरा, धनी, उन्मादयुक्त, स्थिर वचन कहनेवाला, वीर और जाननेवाला होता है ॥ २१-२५ ॥

चन्द्रारशुक्रमन्दानां मलिनः कुलटापतिः । सोद्वेगः सर्पतुल्याक्षः प्रगल्भो जातको भवेत् ॥ २६ ॥ जीवशुक्रबुधेन्दूनामन्वये सुभगो धनी । विमातृपितृकः प्राज्ञो गतारिर्जायते नरः ॥ २७ ॥ मन्देज्यचन्द्रचान्द्रीणां योगे बन्धुप्रियः कविः । तेजस्वी राजमंत्री च यशोधर्मयुतो नरः ॥ २८ ॥ चन्द्रविच्छुक्रसौरीणां संयोगे नृपपूजितः । नेत्ररोगी पुराधीशो बहुदारयुतो धनी ॥ २९ ॥ चन्द्रेज्यसितसौरीणामन्वये पारदारिकः । प्राज्ञो निर्द्रव्यबन्धूनां स्थूलभार्यो नरोत्तमः ॥ ३०

जिसके चन्द्रमा, मंगल, शुक्र और शनि एक घरमें होंय वह मलिन, कुलटा स्त्रीका पति, उद्वेगयुक्त, सर्पके तुल्य नेत्रवाला और प्रगल्भ होता है । जिसके बृहस्पति, शुक्र, बुध और चन्द्रमा एक घरमें होंय वह सौभाग्यवान्, धनी और माता पिता करके हीन, बुद्धिमान् और शत्रुरहित होता है । जिसके शनि, बृहस्पति, चन्द्रमा और बुध एक घरमें होंय वह भाइयोंका प्यारा, कवि, तेजस्वी, राजाका मंत्री, यशयुक्त और धर्मवान् होता है । जिसके चन्द्रमा, बुध, शुक्र और शनैश्चर एक घरमें होंय वह राजपूजित, नेत्ररोगी, बहुत स्त्रियोंसहित, धनवान् और ग्रामका स्वामी होता है । जिसके

चन्द्रमा, बृहस्पति, शुक्र और शनैश्चर एक घरमें होंय वह पराई स्त्रीसे प्रेम करनेवाला, बुद्धिमान्, द्रव्यहीन, भाइयोंवाला और मोटी स्त्रीयुक्त होता है ॥२६-३०॥

बुधारभृगुजीवानां योगे स्त्रीकलहप्रियः। धनी सुशीलो नीरोगो लोकपूज्यो नरो भवेत् ॥ ३१ ॥ भौमेज्यसौम्यसौरीणां योगे शूरश्च निर्धनः। सत्यशौचव्रतो विद्वान् दीनो वाग्मी नरो भवेत् ॥ ३२ ॥ मल्लोऽन्यपुष्टियोद्धा च बुधारयमभार्गवैः। ख्यातो लोके दृढाङ्गश्च सारमेयरुचिर्भवेत् ॥ ३३ ॥ भौमेज्यशनिशुक्राणां योगे स्याद्वासनातुरः। परदाररतो मानी कितवो जायते नरः ॥ ३४ ॥ मेधावी शास्त्रनिरतः कामे सक्तो विधेयसत्यश्च। बुधजीवशुक्रसौरैः सह स्थितस्तीव्रसंयोगे ॥ ३५ ॥

जिसके बुध, मंगल शुक्र और बृहस्पति एक घरमें होंय वह स्त्रीकलहप्रिय, धनी, सुशील, नीरोग और संसारमें पूज्य होता है। जिसके मंगल, बृहस्पति, बुध और शनैश्चर एक घरमें होंय वह शूर, द्रव्यहीन, सत्य और शौचही व्रत जिसका, विद्वान्, वादकरनेवाला और वाणीमें निपुण होता है। जिसके बुध, मंगल, शनि और शुक्र एक घरमें होंय वह मल्ल, औरसे पुष्ट, योद्धा, प्रसिद्ध, पुष्ट अंगवाला और कुकर्ममें रुचिवाला होता है। जिसके मंगल, बृहस्पति, शनि और शुक्र एक घरमें होंय वह वासनातुर, पराई स्त्रीमें रत, मानी और धूर्त होता है। जिसके बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि एक घरमें होंय वह बुद्धिमान्, शास्त्रमें रत, कामातुर, विधेयसत्य और तीव्र होता है ॥ ३१-३५ ॥

इति चतुर्ग्रहयोगफलम् ॥

अथ पञ्चग्रहयोगफलम्।

बहुप्रपञ्ची दुःखी च जायाविरहतापितः। सूर्याद्यैर्जीवपर्यन्तैर्नरः स्यात्पञ्चभिर्ग्रहैः ॥ १ ॥ गतसत्यो बन्धुहीनः परकर्मरतो नरः। क्लीबस्य च सखा सूर्यभौमेन्दुबुधभार्गवैः ॥ २ ॥ स्यादल्पायुश्च विकलो दुःखी सुतविवर्जितः। अर्कार्किबुधचन्द्रारयोगे बन्धनभागपि ॥ ३ ॥ जात्यन्धो बहुदुःखी च पितृमातृविवर्जितः। गानप्रीतो नरो भौमभानुचन्द्रेज्यभार्गवैः ॥ ४ ॥ परद्रव्यहरो योद्धा परतापकरः खलः। समर्थो जायते मन्दचन्द्रजीवार्कभूसुतैः ॥५॥ मानाचारधनैर्हीनः परदाररतो नरः। एकस्थैर्जायते भानुभौमेन्दुशनिभार्गवैः ॥६॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध और बृहस्पति एक घरमें होंय वह बहुत प्रपंचवाला, दुःखी और स्त्रीके विरहमें तप्त होता है। जिसके सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध और शुक्र एक घरमें होंय वह झूंठा, भाईहीन, परकर्मोंमें रत और नपुंसकका मित्र होता है। जिसके सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध और शनि एक घरमें होंय वह थोडी आयुवाला, विकल, दुःखी, पुत्ररहित और बन्धनका भागी होता है। जिसके मंगल, सूर्य, चन्द्रमा, बृहस्पति और शुक्र एक घरमें होंय वह जन्मसे अन्धा, बहुत दुःखी, पिता व मातासे हीन, गानमें प्रसन्न होता है। जिसके शनि, चन्द्रमा, बृहस्पति सूर्य और मंगल एक घरमें होंय वह पराये द्रव्यका हरनेवाला, योद्धा, परको ताप करनेवाला, दुष्ट और समर्थ होता है। जिसके सूर्य, मंगल, चन्द्रमा, शनि और शुक्र एक घरमें होंय वह मान आचार और धनसे हीन, पराई स्त्रीमें रत होता है॥१-६॥

राजमन्त्री भूरिवित्तो यन्त्रज्ञो दण्डनायकः। ख्यातो जने यशस्वी च जीवार्केन्दुज्ञभार्गवैः॥७॥ परान्नभोजी सोन्मादः प्रियतप्तश्च वञ्चकः। उग्रो भीरुर्नरः सूर्यशनिचन्द्रेज्यचन्द्रजैः॥८॥ धनपुत्रसुखैर्हीनो मृत्यूत्साही च लोमशः। दीर्घो भवति चन्द्रार्कबुधशुक्रशनैश्चरैः॥९॥

जिसके बृहस्पति, सूर्य, बुध, चन्द्रमा और शुक्र एक घरमें होंय वह राजाका मन्त्री, बडे द्रव्यवाला, यन्त्रोंका जाननेवाला, दंडनायक, जनोंमें प्रसिद्ध और यशस्वी होता है। जिसके सूर्य, शनि, बृहस्पति तथा चन्द्रमा एक घरमें होंय वह पराये अन्नका भोजन करनेवाला, उन्मादयुक्त, प्रियतप्त, छली, उग्र और भयानक होता है। जिसके चन्द्रमा, सूर्य, बुध, शुक्र और शनैश्चर एक घरमें होंय वह धन, पुत्र और सुखसे हीन, मृत्युमें उत्साहवाला, लोमश और दीर्घ होता है॥ ७-९॥

इन्द्रजालरतो वाग्ग्मी चलचित्तोऽङ्गनाप्रियः। प्राज्ञश्च दक्षो निर्भीतः शुक्रेज्यार्केन्दुसूर्यजैः॥ १०॥ स्फीतो बहुहयः कामी नरोऽशोकी चमूपतिः। बुधार्ककुजशुक्रेज्यैः सुभगो भूपतेः प्रियः॥ ११॥ भिक्षाभोजी च रोगी च नित्योद्विग्नो मलीमसः। जीर्णो नरो भानुभौमशनिजीवबुधैर्भवेत्॥ १२॥ व्याधिभिः शत्रुभिर्ग्रस्तः स्थानभ्रष्टो बुभुक्षितः। नरः स्याद्विकलः शुक्रमन्दार्कबुधभूसुतैः १३

जिसके शुक्र, बृहस्पति, सूर्य, चन्द्रमा और शनैश्चर एक घरमें होंय वह इन्द्रजालमें रत, वाणीमें निपुण, चलायमान चित्तवाला, स्त्रियोंका प्यारा, बुद्धिमान्, दक्ष, निर्भय होता है। जिसके बुध, सूर्य, मंगल, शुक्र और बृहस्पति एक

घरमें होंय वह स्फीत, बहुत घोडोंवाला, कामी, शोकसे रहित, सेनापति, सौभाग्यवान् और राजाको प्रिय होता है। जिसके सूर्य, मंगल, शनि, बृहस्पति और बुध एक घरमें होयँ वह भिक्षासे भोजन करनेवाला, रोगी, सदा उद्विग्न, मलिन और जीर्ण होता है। जिसके शुक्र, बुध, शनि, सूर्य और मंगल एक घरमें होंय वह व्याधि और शत्रुओंसे ग्रस्त, स्थानसे भ्रष्ट, बुभुक्षित और विकल होता है ॥ १०–१३ ॥

विज्ञो विचारदेहे च धातुयन्त्ररसायनैः। नरः प्रसिद्धो भूपुत्ररविजीवसितासितैः ॥ १४ ॥ मित्रप्रीतिः शास्त्रवेत्ता धार्मिको गुरुसंमतः। दयालुः शुक्रसूर्यार्किबुधजीवैर्जनो भवेत् ॥ १५ ॥ साधुः कल्याणहीनश्च धनविद्यासुखान्वितः। बहुपुत्रो नरो जीवभौमेन्दुबुधभार्गवैः ॥ १६ ॥

जिसके मंगल, सूर्य, बृहस्पति, शुक्र और शनि एक घरमें होंय वह विचार, देह, धातु, यन्त्र, रसायनमें निपुण और प्रसिद्ध होता है। जिसके शुक्र, सूर्य, शनि, बुध और बृहस्पति एक घरमें होंय वह मित्रोंसे प्रीति करनेवाला, शास्त्रोंको जाननेवाला, धर्मवान्, गुरुको सम्मत और दयालु होता है। जिसके बृहस्पति, मंगल, चन्द्रमा बुध और शुक्र एक घरमें होंय वह साधु, कल्याणसे हीन, धन, विद्या और सुखसे युक्त और बहुत पुत्रोंवाला होता है ॥ १४–१६ ॥

परान्नयाचको विप्रो मलिनास्तिमिरामयी। नरो भवति भौमेन्दुजीवशुक्रशनैश्चरैः ॥ १७ ॥ दुर्भगो मलिनो मूर्खः प्रेष्यः क्लीबश्च निर्धनः। नरो भवति चन्द्रज्ञशुक्रसौरिमहीसुतैः ॥ १८ ॥ बहुमित्रारिपक्षश्च दुःशीलः परपीडकः। मानी नरः सोमजीवशुक्रमन्दधरासुतैः ॥ १९ ॥ राजमन्त्री राजतुल्यो लोकपूज्यो गुणाधिकः। चन्द्रचन्द्रजमन्देज्यभृगुपुत्रैर्नरो भवेत् ॥ २० ॥ अलसस्तामसो नित्यं सोन्मादो राजवल्लभः। निद्रातुरो नरो भौमबुधजीवार्किभार्गवैः॥२१॥

जिसके मंगल, चन्द्रमा, बृहस्पति, शुक्र और शनि एक घरमें होंय वह पराये अन्नका याचनेवाला, ब्राह्मण, मलिन और तिमिररोगवाला होता है। जिसके चन्द्रमा, बुध, शुक्र, शनि और मंगल एक घरमें होंय वह दुर्भग, मलिन, मूर्ख, दास, नपुंसक और दरिद्र, होता है। जिसके चन्द्रमा, बृहस्पति, शुक्र, शनि और मंगल एक घरमें

होयँ वह बहुत मित्र और शत्रुओंके पक्षवाला, दुश्शील, परको पीडा करनेवाला और अभिमानी होता है। जिसके चन्द्रमा, बुध, शनि, बृहस्पति और शुक्र एक घरमें होयँ वह राजाका मन्त्री, राजाके बराबर संसारमें पूज्य और गुणोंमें अधिक होता है। जिसके मंगल, बुध, बृहस्पति, शनैश्चर और शुक्र एक घरमें होंय वह आलसी, तामसी, सदा उन्मादयुक्त, राजाको प्यारा और निद्रामें आतुर होता है ॥ १७-२१ ॥ इति पंचग्रहयोगफलम् ॥

अथ षड्ग्रहयोगफलम् ।

विद्याधर्मधनैर्युक्तो बहुभोगी च भाग्यवान् ।
सूर्याद्यैः शुक्रपर्यन्तैः ख्यातो भवति षड्ग्रही ॥ १ ॥
परकार्यकरो दाता शुद्धात्मा चञ्चलाकृतिः ।
षड्भिर्ग्रहैर्विना शुक्रं रमते विजयी जनः ॥ २ ॥
संशयी सुभगो मानी ख्यातो युद्धेऽरिमर्दकः ।
विना जीवं ग्रहैः षड्भिर्विनोदे रमते जनः ॥ ३ ॥
आ(भा)र्याप्रियो रणोत्साही विभ्रमक्रोधलोभवान् ।
अर्कार्किचन्द्रभौमेज्यभार्गवैः सुभगो नरः ॥ ४ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्यादि शुक्रपर्यन्त अर्थात् सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति और शुक्र एक घरमें स्थित होंय वह विद्या, धर्म और धनसे युक्त, बडा भोगी भाग्यवान् और प्रसिद्ध होता है। जिसके छः ग्रह शुक्र विना अर्थात् सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति और शनि एक घर (राशि) में होंय वह पराये कार्यका करनेवाला, दाता, शुद्ध आत्मावाला, चंचल और विजयी होता है। जिसके बृहस्पति विना छः ग्रह अर्थात् सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र और शनि एक घरमें होंय वह संशययुक्त सौभाग्यवान्, मानी, प्रसिद्ध, युद्धमें शत्रुओंका मर्दन करनेवाला और विनोदमें रमनेवाला होता है। जिसके सूर्य, शनि, चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति और शुक्र एक घरमें होंय वह स्त्रीप्रिय, लडाईमें उत्साह युक्त, विभ्रम क्रोध लोभयुक्त और सौभाग्यवान् होता है ॥ १-४ ॥

कलत्रहीनो निर्द्रव्यो राजमंत्री क्षमायुतः ।
रवीन्दुबुधजीवार्किभृगुभिः सुभगो नरः ॥ ५ ॥
धनदारसुतैर्हीनस्तीर्थगामी वनाश्रितः ।
सूर्यारसौम्यजीवार्किभृगुपुत्रैर्भवेन्नरः ॥ ६ ॥

धनी मन्त्री शुचिस्तन्द्री बहुभार्यो नृपप्रियः।
विना सूर्यं ग्रहैः षड्भिः प्रतापी जायते नरः॥ ७॥
प्रायो दरिद्रो मूर्खश्च षड्भिर्वा पञ्चभिर्ग्रहैः।
अन्योन्यदर्शनात्तेषां फलमेतत्प्रकीर्तितम्॥ ८॥

जिसके सूर्य, चन्द्रमा, बुध, बृहस्पति, शनैश्चर और शुक्र एक घरमें होयँ वह स्त्रीसे हीन, द्रव्यरहित, राजाका मन्त्री, क्षमावान् और सौभाग्यवान् होता है। जिसके सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति, शनि और शुक्र एक घरमें होंय वह धन, स्त्री और पुत्रोंसे हीन, तीर्थका जानेवाला और वनमेंही रहनेवाला होता है। जिसके चन्द्रमा, मङ्गल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि एक घरमें होंय वह धनवान्, मन्त्री, पवित्र, आलसी, बहुत स्त्रियोंवाला, राजाको प्यारा और प्रतापी होता है। छः वा पांच ग्रहोंसे बहुधा दरिद्र वा मूर्ख होता है। आपसमें दर्शनसे अर्थात् दृष्टिद्वारा इनका फल कहा गया है॥ ९-८॥ इति षड्ग्रहयोगफलम्॥

अथ सप्तग्रहयोगफलम्।

दिवाकरनिभं तेजो भूपमान्यः शिवप्रियः।
सूर्याद्यैः शनिपर्यन्तैर्योगे दानी धनान्वितः॥ १॥

जिसके जन्मकालमें सूर्यादि शनिपर्यन्त सातों ग्रह एक राशिमें स्थित होंय वह सूर्यप्रकाशकी समान तेजवाला, राजाओंकरके मान्य, शिवका भक्त, दान करनेवाला और धनवान् होता है॥ १॥ इति सप्तग्रहयोगः॥

अथ केन्द्रायुः।

केन्द्रांशसंख्यां त्रिगुणीं विधाय राह्वारसंख्याङ्ककृतो विहीनम्।
आयुःप्रमाणं कथितं मुनीन्द्रैश्चिरंतनैर्ज्यौतिषिकैः स्मृतं च॥ १॥

केन्द्रस्थानास्थितानङ्कांस्त्रिगुणीकृत्य यावान्पिण्डस्तावद्वर्षसंख्यायुः। यदि केन्द्रमध्ये राहुशनिमङ्गलाः भवन्ति तत्केन्द्राङ्कान्संमील्य शेषं त्रिगुणीकार्यम्॥

इति जन्मपत्रीपद्धतौ भावचक्रानयनभावाध्यायद्वित्रिचतुःपंचग्रहीषड्ग्रहीसप्तग्रहीफलाध्यायो द्वितीयः॥ २॥

जन्मसमयके लग्नसे केन्द्र १।४।७।१० स्थानोंमें स्थित संख्याओं अर्थात राशियोंको एकत्र करके तीनसे गुणा देवे और यदि केन्द्रमें राहु मंगल और शनि

स्थित होंय अथवा इनमेंसे कोई स्थित होंय तो उस संख्याको हीन करदे । जो शेष बचे उसको ज्योतिषके जाननेवाले मुनियोंने आयुप्रमाण कहा है । केन्द्र स्थानोंमें जो जो शुभ ग्रह जिस २ राशिमें युक्त होवें अथवा पूर्ण दृष्टि करके देखता होवे तिसके वर्ष केन्द्रांक योगमें युक्त करै और जो जो पापा ग्रह केन्द्रमें युक्त वा पूर्ण दृष्टिसे देखते होवें उनके वर्ष केन्द्रांकयोगमेंसे हीन करदे शेषको त्रिगुणित करै तो स्पष्ट केन्द्रायु होवे ॥ १ ॥

इति श्रीमानसागरीजन्मपत्रीपद्धतौ राजपंडितवंशीधरकृतभाषाटीकायां
द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

तृतीयोऽध्यायः ३ ।

तत्रादौ द्वादशभावस्थतनुभवनेशफलम् ।

प्रणिपत्य परं ज्योतिः सर्वं च जगतीतलम् ।
तमःप्रशमनं वक्ष्ये जन्मशास्त्रप्रदीपकम् ॥ १ ॥
लग्नाधिपतिर्लग्ने नीरोगं दीर्घजीविनं कुरुते ।
अतिबलमवनीशं वा भूलाभसमन्वितं जातम् ॥ २ ॥
लग्नपतिर्धनभवने धनवन्तं विपुलजीविनं स्थूलम् ।
अतिबलमवनीशं वा भूलाभं वा सुधर्मरतं कुरुते ॥ ३ ॥
सहजगतो लग्नपतिः सद्बन्धुप्रवरमित्रपरिकलितम् ।
धर्मरतं दातारं शूरं सबलं करोति नरम् ॥ ४ ॥

संपूर्ण जगत्के आधाररूप श्रेष्ठज्योतिको प्रणाम करके अन्धकारको नाश करनेवाले जन्मसमयके फलको प्रकाश करनेवाले शास्त्रको कहता हूं । जिसके जन्मसमयमें लग्नका स्वामी लग्नमें स्थित होवे सो रोगरहित, चिरकाल जीनेवाला, बडे बलवाला अथवा राजा और पृथ्वीके लाभसे युक्त होता है । जिसके जन्ममें लग्नेश दूसरे भावमें स्थित होय वह धनवान्, चिरकाल जीनेवाला, पुष्टदेहवाला, बलवान् वा राजा, पृथ्वीलाभवाला और सुन्दर धर्ममें रत रहनेवाला होता है । जिसके लग्नेश तीसरे भावमें स्थित होय वह श्रेष्ठ भाई और मित्रोंकरके युक्त होता है और धर्ममें रत, दाता, शूरवीर और बलयुक्त होता है ॥ १-४ ॥

लग्नेशे तुर्यगते नृपप्रियं प्रचुरजीवितं कुरुते ।
सँल्लब्धपितरं पित्रोर्भक्तमबहुभोजनं कुरुते ॥ ५ ॥
पञ्चमगे लग्नपतौ सुसुतं सत्यागमीश्वरं विदितम् ।
बहुजीविकं सुगीतं सुकर्मनिरतं जनं कुरुते ॥ ६ ॥
रिपुभवने लग्नेशे नीरोगं भूमिलाभं च ।
सबलं कृपणं धनिनमरिघ्नं सुकर्मपक्षान्वितं कुरुते ॥ ७ ॥
प्रथमपतौ सप्तगमे तेजस्वी शीलवान्भवेत्पुरुषः ।
तद्भार्याऽपि सुशीला तेजःकलिता सुरूपा च ॥ ८ ॥
लग्नपतावष्टमगे कृपणो धनसंचयी तु दीर्घायुः ।
क्रूरे तु खेचरे काणः सौम्यैः पुरुषो भवेत्सौम्यः ॥ ९ ॥

जिसके जन्ममें लग्नेश चतुर्थ भावमें स्थित होय वह राजाका प्यारा, बडी आजीविकावाला और पितासे श्रेष्ठ लाभवाला, पिता माताका भक्त और थोडा भोजन करनेवाला होता है । जिसके लग्नेश पंचमभावमें होय वह श्रेष्ठ पुत्रवाला, त्यागी, लक्ष्मीवाला, प्रसिद्ध, बडी, उपजीविकावाला, श्रेष्ठ गाने और कर्मोंमें रत होता है। जिसके जन्मसमयमें लग्नेश छठे भावमें स्थित होय वह रोगरहित, पृथ्वीके लाभवाला, बलवान्, कृपण, धनी, शत्रुओंके नाश करनेवाला, श्रेष्ठ कर्मों तथा मित्रोंसे युक्त होता है। जिसके जन्मसमयमें लग्नेश सप्तम भावमें स्थित होय वह तेजस्वी, श्रेष्ठ स्वभाववाला, तिसकी स्त्री भी श्रेष्ठ स्वभाववाली और उत्तम रूपवाली जानना। जिसके जन्म कालमें लग्नेश अष्टम भावमें स्थित होय वह कृपण और धन संग्रह करनेवाला, बडी आयुर्दायवाला होता है। क्रूर ग्रह होवे तो काना और शुभग्रह होवे तो सौम्य होता है॥५-९॥

मूर्तिपतिर्यदि नवमे तदा भवति प्रचुरबान्धवः सुकृती ।
सममित्रस्तु सुशीलः सुकृती ख्यातः सुतेजस्वी ॥ १० ॥
प्रथमेशो दशमस्थो नृपलाभः पण्डितः सुशीलश्च ।
गुरुमातृपूजनमतिर्नृपप्रसिद्धः[1] पुमान् भवति ॥ ११ ॥
एकादशस्थतनुपः सुजीवितं सुतसमान्वितं विदितम् ।
तेजःकलितं कुरुते पुरुषं बलिनं वाहनसंयुक्तम् ॥ १२ ॥

---

१ प्रसिद्धोपमो भवति । इति पाठान्तरम् ।

द्वादशगे मूर्तिपतौ कटुकवत्कर्मपरोऽशुभो नीचः ।
मानी सहगोत्रीभिर्विदेशगो दत्तभुक्नरः ॥ १२ ॥

जिसके लग्नेश नवम भावमें स्थित होय वह बहुत भाइयोंवाला, पुण्यवान्, सम मित्रोंवाला, सुशील, धर्ममें प्रसिद्ध और तेजस्वी होता है। जिसके लग्नेश दशम भावमें स्थित होय वह राजासे लाभवाला, पंडित, श्रेष्ठ स्वभाववाला, गुरुजन और माताके पूजनमें बुद्धिवाला और राजाके पास प्रसिद्ध होता है। जिसके लग्नेश ग्यारहवें स्थानमें स्थित होय वह अच्छीतरहसे जीनेवाला, पुत्रसहित विख्यात, अधिकतेजकरके शोभायमान, बलवान् और वाहनकरके संयुक्त होता है। जिसके जन्मसमय लग्नेश बारहवें स्थानमें स्थित होवे वह कठोर कर्मका करनेवाला, दुष्ट और नीच, गोत्रियोंके साथ मान करनेवाला, विदेशगमन करनेवाला और दी हुई चीज खानेवाला होता है ॥ १०–१२॥

इति तनुभवनेशफलम् ।

अथ द्वादशभावस्थधनभावेशफलम् ।

द्रव्यपतिर्लग्नगतः कृपणं व्यवसायिनं सुकर्माणम् ।
धनिनं श्रीपतिविदितं करोति नरमतुलभोगयुतम् ॥ १ ॥
व्यवसायी च सुलाभी उत्पन्नभुगलीककारको नीचः ।
आलिककृद्विदितः पूर्णोद्वेगी धनपतौ धनगे ॥ २ ॥
धनपे सहजगते बन्धोर्भेदनावर्जिते क्रूरे ।
सौम्ये राजविरोधो भूतनये तस्करः पुरुषः ॥ ३ ॥
तुर्यगते द्रविणपतौ पितृलाभपरः सत्यदयायुक्तः ।
दीर्घायुः क्रूरे खगे पुनरथवा मरणं विनिर्देश्यम् ॥ ४ ॥

जिसके जन्मसमयमें धनेश (धनभावका स्वामी) लग्नमें स्थित होय वह कृपण, व्यवसायी, श्रेष्ठकर्मोंवाला, धनी, लक्ष्मीवालोंमें प्रसिद्ध और अतुल भोग करके युक्त होता है। जिसके जन्मकालमें धनभावका स्वामी धनभावमें स्थित होय वह व्यवसायी, सुंदर लाभवाला, अधिक भूँखवाला, अपराधी, नीच, अनर्थ करनेमें प्रसिद्ध और बडा उद्वेगी होता है। जिसके जन्मकालमें धनभावका स्वामी तीसरे भावमें स्थित होय वह बंधुविरोधसे वर्जित एवं शुभग्रहसे राजविरोध और मंगलसे चोर होता है। जिसके जन्ममें दूसरे भावका स्वामी चतुर्थभावमें स्थित होय वह पितासे लाभवाला, सत्य और दयासे युक्त, बडी उमरवाला होता है, क्रूर ग्रह होवे तो माता तिसकी मृत्युको प्राप्त होती है ॥ १–४ ॥

तनयकमलविलासी कर्मणि कष्टतरं प्रसिद्धं च।
कृपणं दुःखनिधानं तनयगतो धनपतिः कुरुते ॥ ५ ॥
षष्ठगतो द्रविणपतिर्धनसंग्रहतत्परं रिपुघ्नं च।
भूलाभिनं सुखचरैः पापैर्धनवर्जितं पुरुषम् ॥ ६ ॥

जिसके जन्ममें दूसरे भावका स्वामी पंचम भावमें स्थित होय वह बडे धनवाले पुत्रको प्राप्त होता है और श्रेष्ठकर्मोंमें प्रसिद्ध होता है, कृपण और दुःखी होता है। जिसके जन्मकालमें दूसरे भावका स्वामी छठे स्थानमें स्थित होय वह धनसंग्रह करनेमें तत्पर, शत्रुओंका नाश करनेवाला और पृथ्वी लाभको प्राप्त होय यदि शुभग्रह होवे, तथा पापग्रह होवे तो धनहीन होता है ॥ ५ ॥ ६ ॥

धनपेन च सप्तमगे श्रेष्ठगचिन्ताविलासभोगवती।
धनसंग्रहणी भार्या क्रूरे खेचरे भवेद्वन्ध्या ॥ ७ ॥
धनपेऽष्टमभुवनस्थे अष्टकपाली चात्मघातकः पुरुषः।
उत्पन्नभुग्विलासी परधनहिंसी भवति दैवपरः ॥ ८ ॥
धनपे धर्मगृहस्थे सौम्ये दानप्रसिद्धवाग्भवति।
क्रूरे दरिद्रभिक्षुको विडम्बवृत्तिस्तथा मनुजः ॥ ९ ॥

जिसके धनभावका स्वामी सातवें स्थानमें होय वह श्रेष्ठ भोग विलासवती तथा धनसंग्रह करनेवाली स्त्रीवाला होता है और पापी ग्रह होय तो वन्ध्या स्त्रीवाला होता है। जिसके दूसरे भावका स्वामी आठवें स्थानमें होय वह पाखण्डी, आत्मघात करनेवाला, दैवकरके प्राप्त भोग विलाससहित और पराये धनके लिये हिंसा करनेवाला होता है। जिसके जन्ममें दूसरे भावका स्वामी शुभग्रह होकर नवम स्थानमें स्थित होय तो वह दान करनेवाला प्रसिद्ध होता है और क्रूरग्रह होय तो दरिद्र, भिक्षा मांगनेवाला और विडंबी होता है ॥ ७-९ ॥

दशमगृहगे धनपे नरेन्द्रमान्यो भवेन्नृपाल्लक्ष्मीः।
सौम्यगृहगे च मातुर्मनुजः पितृपालको भवति ॥ १० ॥
एकादशगः खेचरव्यवहारे श्रीपतिः ख्यातः।
लोकौघप्रतिपालनरतः ख्यातश्च नरो भवेज्जातः ॥ ११ ॥
द्रविणपतौ व्ययलीने पुरुषः कृपणो धनवर्जितः क्रूरे।
सौम्ये लाभालाभ-ख्यातो नरो भवेज्जातः ॥ १२ ॥

जिसके दूसरे भावका स्वामी दशमस्थानमें होय वह राजमान्य और राजलक्ष्मीको प्राप्त होता है, शुभग्रह होय तो मातापिताके पालनेवाला होता है। जिसके ग्यारहवें स्थानमें दूसरे भावका स्वामी होय वह ज्योतिषी व्यवहार करके धनवान् विख्यात होता है तथा लोकके समूहके पालनमें रत और प्रसिद्ध होता है। जिसके दूसरे भावका स्वामी क्रूरग्रह होकर बारहवें भावमें स्थित होय वह कठोर, कृपण और धनसे हीन होता है और शुभग्रह होय तो लाभालाभसे विख्यात होता है ॥ १०-१२ ॥

इति धनभवनेशफलम् ॥

अथ द्वादशभावस्थसहजभवनेशफलम्।

सहजपतौ लग्नगते वाग्वादी लंपटः स्वजनभेदी।
सेवापरः कुमित्रः कूटकरः प्रोच्यते पुरुषः ॥ १ ॥
धनगृहगे सहजेशे भिक्षुर्विधनोऽल्पजीवनो मनुजः।
बन्धुविरोधी क्रूरे सौम्ये पुनरीश्वरः खचरैः ॥ २ ॥
सहजगतः सहजपतिः समसत्त्वं सुसुहृदं शुभस्वजनम्।
देवगुरुपूजनरतं नृपलाभपरं नरं कुरुते ॥ ३ ॥

जिसके जन्मसमय तीसरे भावका स्वामी लग्नमें स्थित होय वह वाग्विवाद करनेवाला, लंपट, अपने जनोंमें भेद करदेनेवाला, सेवा करनेवाला, खोटे मित्रोंवाला और कूट करनेवाला होता है। जिसके तीसरे भावका स्वामी दूसरे भावमें स्थित होवे वह भिक्षा मांगनेवाला, धनहीन और थोडे काल जीनेवाला, बंधुओंसे विरोध करनेवाला क्रूरग्रहकरके होता है और शुभग्रहसे लक्ष्मीवान् होता है। तीसरेका स्वामी तीसरे भावमें स्थित होवे वह तुल्यपराक्रमवाला, श्रेष्ठमित्रोंवाला, बन्धुओंवाला, देवतागुरुको पूजनेवाला और राजासे लाभवाला होता है ॥ १-३ ॥

भ्रातृपतौ मातृगते पितृबन्धुसहोदरेषु सुखभोगी।
मात्रा सह वैरकरः पितृवित्तस्य भक्षकः पुरुषः ॥ ४ ॥
दुश्चिक्यपतौ सुतगे सुतबान्धवसुतसहोदरैः पाल्यः।
दीर्घायुर्भवति नरः परोपकारैकनिरतमतिः ॥ ५ ॥
षष्ठगते सहजपतौ बन्धुविरोधी च नयनरोगी च।
भूलाभो भवति भृशं कदाचिदपि रोगसंकलितः ॥ ६ ॥
सप्तमगे सहजेशे नरस्य भार्या भवेत्सुशीला च।
सौभाग्यवती युवतिः क्रूरे देवरगृहे याति ॥ ७ ॥

जिसके तीसरे भावका स्वामी चतुर्थभावमें स्थित होय वह पिता बन्धु और सहोदर भाइयोंके सुखवाला, माताके साथ वैर करनेवाला और पिताके धनको भोगनेवाला होता है। जिसके तीसरे भावका स्वामी पांचवें घरमें स्थित होय वह श्रेष्ठ बन्धुओं करके पुत्र और भाइयोंके सुखको प्राप्त होनेवाला, बडी आयुवाला और परोपकारमें बुद्धिवाला होता है। जिसके तीसरे भावका स्वामी छठे भावमें स्थित होय वह बन्धुओंसे विरोध करनेवाला, नेत्ररोगवाला, वारंवार पृथ्वीके लाभको प्राप्त और कभी २ रोगकरके युक्त होता है। जिसके तीसरे भावका स्वामी सातवें भावमें स्थित होय उसकी स्त्री सुन्दर शीलवती सौभाग्ययुक्ता होती है और क्रूरग्रह होवे तो पतिके छोटे भाईके घरमें वसती है॥ ४-७॥

भ्रातृपतिरष्टमगः सहजं मृतसोदरं नरं कुरुते।
क्रूरे बाहुव्यङ्गिनमपि जीवति यद्यष्टवर्षाणि॥ ८॥
धर्मगते सहजपतौ क्रूरे बन्धूज्झितस्तथा सौम्यैः।
सद्बान्धवश्च सुकृती सोदरभक्तो भवेन्मनुजः॥ ९॥
दुश्चिक्येशे दशमगते नृपपूज्यो मातृबन्धुपितृभक्तः।
उत्तमबोधो बन्धुषु विनिश्चितो जायते जातः॥ १०॥

जिसके तीसरे भावका स्वामी अष्टम भावमें स्थित होय उसके भ्राता मृत्युको प्राप्त होवे और क्रूरग्रह होनेसे भुजामें व्यंग होता है और आठ वर्ष जीता है तथा शुभ ग्रह होनेसे बहुत दोष नहीं होता है। जिसके तीसरे भावका स्वामी नवम भावमें स्थित होवे और क्रूरग्रह होवे तो बन्धुओं करके त्याज्य होता है एवं शुभग्रह होनेसे बन्धुओंवाला, धर्मवान् और भ्राताका भक्त होता है। जिसके तीसरे भावका स्वामी दशम स्थानमें स्थित होय वह राजाके मानवाला, माता, बन्धु और पिताका भक्त और बन्धुओंमें श्रेष्ठ होता है॥ ८-१०॥

लाभस्थः सहजेशः सुबान्धवं राजशालिनं कुरुते।
कुरुते बन्धुषु सेवाविधायिनं भोगनिरतं च॥ ११॥
व्ययगे दुश्चिक्येशे मित्रविरोधातिबन्धुसंतापी।
दूरे वासितबन्धुर्विदेशगामी नरो भवेज्जातः॥ १२॥

जिसके तीसरे भावका स्वामी ग्यारहवें भावमें स्थित होय वह श्रेष्ठ बन्धुओंवाला, राजशाली, सम्बन्धियोंमें सेवा करनेवाला और भोगोंमें रत होता है। जिसके तीसरे

भावका स्वामी बारहवें भावमें स्थित होय वह मित्रोंसे विरोध करनेवाला अपने भाइ-योंको खेद देनेवाला और बन्धुओंसे दूर विदेशमें वास करनेवाला होता है॥११॥१२

इति सहजभवनेशफलम् ॥

अथ द्वादशभवनस्थचतुर्थभवनेशफलम् ।

तुर्यपतिर्लग्नगतः पितृपुत्रयोः स्नेहं मिथः कुरुते ।
उत्तमे पितृपक्षे वैरीकलितं पितृनाम्ना सुप्रसिद्धं च ॥ १ ॥
पातालपे धनस्थे क्रूरखगे पितृविरोधकृच्छुभं कुरुते ।
पितृपालकः प्रसिद्धः पिता भुनक्ति तल्लक्ष्मीम् ॥ २ ॥
तुर्येशे सहजस्थे पितृमातृवेदकं नरं कुरुते ।
पित्रा सह कलहकरं पितृबान्धवघातकं कुरुते ॥ ३ ॥
तुर्यगते तुर्यपतौ पितरि क्षितिपाधिपनाथमानकरः ।
विदितः पितृलाभकरो भवति सुधर्मा सुखी धनपः ॥ ४ ॥

जिसके जन्मकालमें चतुर्थ भावका स्वामी लग्नमें स्थित होय तो पिता पुत्र दोनों परस्पर प्रीतिवाले होते हैं । पितृपक्षमें वैर करता है और पिताके नामसे प्रसिद्ध होता है । जिसके चतुर्थ भावका स्वामी दूसरे भावमें स्थित होवे और क्रूरग्रह होवै तो पितासे विरोध करता है और शुभग्रह होवे तो पिताके पालनेवाला और प्रसिद्ध होता है और तिसके धनको पिता भोगता है । जिसके चतुर्थभावका स्वामी तीसरे भावमें स्थित होय वह माता पिताका वेदक, पिताके साथ लडाई करनेवाला और पिताके बंधुओंका घातक होता है । जिसके चतुर्थका स्वामी चतुर्थ भावमें स्थित होय वह राजासे मान पानेवाला, प्रसिद्ध, पिताके लाभको प्राप्त, श्रेष्ठ धर्मवाला, सुखी और धनका पति होता है ॥ १–४ ॥

सुतगे तुर्यगृहेशे पितृसंलाभवांश्च दीर्घायुः ।
भवति कृतिप्रसिद्धः ससुतः सुतपालकश्चैव ॥ ५ ॥
हिबुकपतौ रिपुसंस्थे मातुरर्थविनाशकः शिशुर्जातः ।
पितृदोषरतः क्रूरे सौम्ये धनसंचयी तनयः ॥ ६ ॥
अम्बुपतौ सप्तमगे क्रूरे श्वशुरं स्नुषा न पालयति ।
सौम्यः पालयति पुनः कुलवतीं कुजकवी कुरुतः ॥ ७ ॥

छिद्रगतस्तुर्यपतिः क्रूरं रोगान्वितं दरिद्रं वा ।
दुष्कर्मपरं मृत्युप्रियमथवा मानवं कुरुते ॥ ८ ॥

जिसके चतुर्थस्थानका स्वामी पांचवेंमें होय वह पिताके श्रेष्ठ लाभवाला, बडी आयुवाला, प्रसिद्ध, श्रेष्ठ पुत्रवाला और पुत्रको पालनेवाला होता है । जिसके चतुर्थ भावका स्वामी छठे भावमें स्थित होय वह माताके अर्थका नाश करनेवाला, पिताके दोष करनेमें रत, यदि क्रूरग्रह होय तो होता है. शुभग्रह होनेसे धनसंचय करनेवाला होता है । जिसके चतुर्थ भावका स्वामी सातवें भावमें पडे उसकी स्त्री तिसके पिताको क्लेश देती है यदि क्रूरग्रह होय, और शुभग्रह होनेसे सेवा करती है और शुक्र, मंगल होय तो कुलवती (व्यभिचारिणी) होती है । जिसके अष्टम स्थानमें चतुर्थ भावका स्वामी क्रूर ग्रह होय वह रोग करके युक्त व दरिद्र होता है, खोटे कर्म करनेवाला और शीघ्र मृत्युको प्राप्त होता है ॥ ५-८ ॥

सुकृते तुर्यपतौ पितर्यसंगी समस्तविद्यावान् ।
पितृधर्मसंग्रहपरः पितृनिरपेक्षो भवेन्मनुजः ॥ ९ ॥
पातालपेऽम्बरगते पापे सुतमातरं त्यजेज्जनकः ।
सृजते त्वन्यां दयितां सौम्ये पुनरन्यसेवाकृत्पुरुषः ॥ १० ॥
एकादशे तुर्यपतौ धर्मी पितृपालकः सुकर्मा च ।
पितृभक्तो भवति पुनः प्रचुरायुर्व्याधिरहितश्च ॥ ११ ॥
द्वादशगे तुर्यपतौ मृतपितृको वा विदेशगो वाच्यः ।
पुत्रस्य पापखेचरे अन्यपितुर्जन्म निर्देश्यम् ॥ १२ ॥

जिसके चतुर्थ भावका स्वामी नवम घरमें स्थित होय वह पितासे भिन्न तथा संपूर्ण विद्यावाला, पितृधर्मका संग्रह करनेवाला और पिताकी अपेक्षासे रहित होता है । जिसके दशम स्थानमें चतुर्थ भावका स्वामी होय तब तिस पुत्रकी माताको पिता त्याग करता है और दूसरी स्त्रीको विवाहता है और शुभग्रह होनेसे त्याग नहीं करता है और दूसरी स्त्रीको सेवता है । जिसके ग्यारहवें भावमें चतुर्थ भावका स्वामी स्थित होय वह धर्मवान्, पिताका पालन करनेवाला, श्रेष्ठ कर्मोंवाला, पितरोंका भक्त, बडी आयुवाला और व्याधिसे रहित होता है । जिसके चतुर्थ भावका स्वामी बारहवें घरमें होय उसका पिता मृत होवे अथवा विदेशमें रहे, पापग्रह होनेसे जारजात होता है॥९-१२

इति चतुर्थभवनेशफलम् ॥

अथ द्वादशभवनस्थपंचमभावेशफलम् ।

लग्नगते पञ्चमपे प्रसिद्धस्तोकतनयपरिकलितम् ।
शास्त्रविदं वेदविदं सुकर्मनिरतं तथा कुरुते ॥ १ ॥
पञ्चमपतिर्धनस्थे क्रूरे खेचरे धनोज्झितं कुरुते ।
गीतादिकलाकलितं कष्टभुजं स्थानकप्रचुरम् ॥ २ ॥
तनयपतिः सहजगतः समधुरवाच्यं बन्धुजने सुविदितम् ।
कुरुते सुतास्तदीयाः परिपालयन्ति तद्बन्धून् ॥ ३ ॥
सुतपः पातालगतः पितृकर्मणि रतं प्रपालितं पित्रा ।
जननीभक्तिं कुरुते क्रूरैस्तु विरोधिनं पितृभिः ॥ ४ ॥

जिसके जन्मसमयमें पंचमभावका स्वामी लग्नमें स्थित होय वह प्रसिद्ध स्वल्प पुत्रवाला, शास्त्रका जाननेवाला, वेदका जाननेवाला और श्रेष्ठ कर्ममें रत होता है । जिसके पंचमभावका स्वामी क्रूर ग्रह होकर दूसरे भावमें स्थित होय वह धनकरके हीन होता है और शुभग्रह होनेसे गीतकला करके युक्त और भुजामें कष्टवाला और स्थानमें प्रसिद्ध होता है । जिसके पंचमभावका स्वामी तीसरे घरमें स्थित होवै वह मीठा बोलनेवाला, सम्बन्धियोंमें प्रसिद्ध होता है। तिसके पुत्र तिसके बन्धुओंको पालते हैं । जिसके पंचम भावका स्वामी चतुर्थभावमें स्थित होय वह पिताके कर्मोंमें रत, पिता करके पालित, माताकी भक्तिवाला होता है, क्रूरग्रह होवे तब पिता माताके साथ वैर करता है ॥ १-४ ॥

तनयगतस्तनयपतिर्मतिमन्तं मानितवचनं कुरुते ।
सुतकलितं प्रकटजनविख्यातं मानवं कुरुते ॥ ५ ॥
पञ्चमपतिश्च षष्ठे शत्रुयुतं मानवं मानहीनं च ।
रोगयुतं धनरहितं क्रूरः खचरः करोति नरम् ॥ ६ ॥
तनयपतौ सप्तमगे स्वसुताः सुभगाश्च देवगुरुभक्ताः ।
प्रियवादिनी सुशीला नरस्य ननु जायते दयिता ॥ ७ ॥

जिसके पंचमभावका स्वामी पंचम भावमें स्थित होय वह मतिमान्, श्रेष्ठ वचन बोलनेवाला, प्रसिद्ध पुत्रोंवाला और श्रेष्ठजनोंमें प्रसिद्ध होता है। जिसके पंचमभावका स्वामी षष्ठभावमें पडे वह शत्रुओंकरके युक्त, मानसे रहित होता है. क्रूरग्रह होवे तब रोग करके युक्त और धनकरके हीन होता है । जिसके पंचमभावका स्वामी सातवें

घरमें होय वह भाग्यवान्, देवतागुरुओंकी भक्तिवाले पुत्रोंवाला होता है और तिसकी स्त्री श्रेष्ठस्वभाववाली और मीठा बोलनेवाली होती है ॥ ५-७ ॥

सुतपे निधनगृहस्थे कटुवाग् विधुरो यदा भवति ।
चण्डाः शब्दा व्यङ्गी सहजास्तनया भवन्ति तथा ॥ ८ ॥
सुकृतगतस्तनयपतिः सुबोधविद्याकविः सुगीतज्ञः ।
नृपपूजितं सुरूपं नाटकरसिकं नरं कुरुते ॥ ९ ॥
सुतपतिरम्बरलीनो नृपकर्मणां नृपात् कलितभावम् ।
सत्कर्मरतं प्रवरं जननीसुखकृत्सुतं कुरुते ॥ १० ॥

जिसके पंचमभावका स्वामी आठवें घरमें होय वह कटु बोलनेवाला, स्त्रीकरके हीन होता है और चंड तथा व्यंग बोलनेवाले भाइयों और पुत्रोंवाला होता है। जिसके पंचमभावका स्वामी नवम घरमें होय वह सुबोध विद्या कविता और गीतको जाननेवाला, राजासे पूजित, सुरूपवान्, नाटक रसोंको जाननेवाला होता है। जिसके दशमस्थानमें पंचमभावका स्वामी स्थित होय वह राजाके कर्म करनेवाला, राजासे प्रीति करनेवाला, श्रेष्ठकर्ममें रत और श्रेष्ठ होता है और माताको सुख देता है॥८-१०॥

सुतनाथे लाभस्थे शूरः सुतवान् सत्यकृतासङ्गी ।
गीतादिसुकलाकलितो नृपभाजो जायते जातः ॥ ११ ॥
पञ्चमपे द्वादशगे क्रूरे सुतरहितः शुभैः सुसुतः ।
सुतसंतापपरः स्याद्विदेशगमनो भवेन्मनुजः ॥ १२ ॥

जिसके पंचमभावका स्वामी ग्यारहवें स्थानमें स्थित होय वह शूर, पुत्रोंवाला, सत्यका साथी, गीतादि कलाओंमें प्रीति करनेवाला और राज्यका भोगनेवाला होता है। जिसके जन्मकालमें पंचमभावका स्वामी क्रूरग्रह होकर बारहवें भावमें पडे वह पुत्रहीन होता है और शुभग्रह होनेसे श्रेष्ठ पुत्रवाला होता है, पुत्रके संतापको प्राप्त होता है और विदेशमें गमन करता रहता है ॥ ११ ॥ १२ ॥ इति पंचमेशफलम् ॥

अथ द्वादशभावस्थषष्ठस्वामिफलम् ।

षष्ठेशो लग्नगतो नीरुक्सबलः कुटुम्बकष्टकरः ।
बहुपक्षो रिपुहन्ता भवति नरः स्वैरवचनधनः ॥ १ ॥
शत्रुपतौ द्रविणस्थे दुष्टश्चतुरो हि संग्रहपरेष्टः ।
स्थानप्रवरो विदितो व्याधिततनुः सुहृद्वित्तघ्नः ॥ २ ॥

षष्ठपतिः सहजस्थः कुरुते स लोककष्टकरः ।
निजजनकमारणं कष्टं संग्रामतस्तस्य ॥ ३ ॥
षष्ठाधिपतिस्तुर्यें पितृतनयौ वैरिणौ मिथः कुरुते ।
सरुक् पिता सोऽथ सुतो लक्ष्मीं लभते नरः सुचिरम् ॥४॥

जिसके जन्मकालमें छठे भावका स्वामी लग्नमें स्थित होय वह रोगरहित, बलयुक्त, कुटुंबियोंको कष्ट करनेवाला, बहुत यत्न करनेवाला, शत्रुओंको हित करनेवाला, अपनी इच्छासे करनेवाला और अपने धनवाला होता है। जिसके दूसरे स्थानमें छठे भावका स्वामी स्थित होय वह दुष्ट, चतुर, संग्रह करनेमें श्रेष्ठ, बहुत स्थानोंमें प्रसिद्ध, व्याधिसे युक्त शरीरवाला और भाईके धनको हर लेनेवाला होता है। जिसके षष्ठभावका स्वामी तीसरे स्थानमें स्थित होय वह श्रेष्ठ लोगोंको कष्ट देनेवाला, अपने जनोंको मारनेवाला और संग्रामसे कष्ट पानेवाला होता है । जिसके छठे भावका स्वामी चतुर्थ स्थानमें स्थित होय वह पिता पुत्र परस्पर वैर करनेवाले होते हैं और तिसका पिता अथवा पुत्र रोगी होता है और चिरकाल स्थित होनेवाली लक्ष्मीको पाता है ॥ १–४॥

रिपुभवनपतौ सुतगे पितृतनयौ वैरिणौ मृतिः सुततः ।
क्रूरे शुभे च विधनः पदवी दुष्टश्च तत्कपटी ॥ ५ ॥
रिपुभवने रिपुसंस्थे नीरुग्वैरी सुखी कृपणः ।
नहि जन्मतोऽपि सीदति स्थानकुवासी च भवति नरः ॥६॥
अहितपतौ सप्तमगे क्रूरे भार्या विरोधिनी चण्डी ।
संतापकरी त्वथ सौम्यैर्वन्ध्या वा गर्भनाशपरा ॥ ७ ॥
शनेर्ग्रहणिकारुजो विषधराद्धरानन्दनाद्
बुधाच्च विषदोषतः सपदि मृत्युरेणाङ्कतः ।
रवेर्मृगपतेर्वधात्प्रकटमष्टमात्षष्ठपाद्
गुरोरपि च दुष्टधीर्नयनदोषवाञ्छुक्रतः ॥ ८ ॥

जिसके छठे भावका स्वामी पंचमस्थानमें स्थित होय तब पिता पुत्रोंका परस्पर वैर होता है और पुत्रसे पिता मरता है, यदि क्रूरग्रह होवे और शुभग्रह होनेसे धनहीन दुष्ट पदवीवाला और कपटी मनुष्य होता है। जिसके छठे भावका स्वामी छठे भावमें स्थित होय वह रोगसे हीन और शत्रुओंसे सुखवाला, कृपणरूप जन्महीसे खेदको नहीं

प्राप्त और खोटे स्थानमें निवास करनेवाला होता है। जिसके छठे भावका स्वामी क्रूरग्रह होकर सातवें स्थानमें स्थित होय तिसकी स्त्री विरोध करनेवाली, अतिक्रोधवाली, संतापके करनेवाली होती है और शुभग्रह होनेसे वंध्या वा गर्भपात करके युक्त होती है। जिसके अष्टमभावमें षष्ठेश शनि स्थित होय उसके संग्रहणी रोग होता है, मंगलसे सर्प करके मृत्यु होती है, बुधसे विषदोषद्वारा मृत्यु होती है, चन्द्रमा शीघ्र मृत्यु करता है, सूर्य होय तो सिंह करके मृत्यु होती है, बृहस्पति होय तो वह दुष्टबुद्धिवाला और शुक्र होय तो नेत्रदोषवाला होता है ॥ ९-८ ॥

शत्रुपतिर्यदि नवमः क्रूरः खचरस्तदा भवेत् खञ्जः।
बन्धुविरोधी शास्त्रं न मन्यते याचकः पुरुषः ॥ ९ ॥
अरिपे दशमगृहस्थे क्रूरे मातरि रिपुस्तदा दुष्टः।
धर्मसुतपालनमतिर्मातुर्दोषी भवेद्वैरी ॥ १० ॥
वैरिपतौ लाभगते क्रूरे मरणं विपक्षतो भवति।
वैरितस्करकृतहानिः स्याच्चतुष्पदाल्लाभवान्मनुजः ॥ ११ ॥
षष्ठपतौ द्वादशगे चतुष्पदाद्द्रव्यहानिकरः।
गमनागमनं लक्ष्मीहा देवपरो भवति ॥ १२ ॥

जिसके छठे स्थानका स्वामी नवम भावमें स्थित होय और क्रूरग्रह होय तो वह खंजरोगवाला, बंधुविरोधी, शास्त्रका न माननेवाला और भिखारी होता है। जिसके दशमस्थानमें छठे भावका स्वामी क्रूरग्रह होकर स्थित होवे तब वह माताका शत्रु और दुष्ट धर्म, पुत्रके पालनमें बुद्धिवाला और माताका दोषी तथा वैरी होता है। जिसके छठे भावका स्वामी क्रूरग्रह ग्यारहवें भावमें स्थित होवे तब उसका शत्रुकरके मरण होता है, शत्रु तथा चोर करके हानिवाला और चतुष्पदोंसे लाभवाला मनुष्य होता है। जिसके छठे भावका स्वामी बारहवें घरमें स्थित होय वह चतुष्पदोंसे धनहानिवाला, गमनागमनमें लक्ष्मी हानिवाला और देवताको पूजनेवाला होता है ॥ ९१-२ ॥

इति षष्ठेशफलम् ॥

अथ द्वादशभवनस्थसप्तमेशफलम्।

दयितेशो लग्नगतः शोकं निःस्नेहमन्यतरभार्याम्।
भोगभुजं रूपयुतं जनयति दयितादलितचित्तम् ॥ १ ॥
जायापतौ धनस्थे दुष्टा दयिता सुतेप्सिता भवति।
वित्तं च कलत्रकरं सततं वसतो विसङ्गश्च ॥ २ ॥

सप्तमपे सहजगते आत्मबलो बन्धुवत्सलो दुःखी।
देवररता सुरूपा गृहिणी क्रूरे सुहृद्गृहगा ॥ ३ ॥
जायेशे तुर्यस्थे लोलः पितृवैरसाधकस्नेही।
अस्य पिता दुर्वाक्यस्तद्भार्यां पालयेत्पिता ॥ ४ ॥

जिसके जन्मसमय सप्तमभावका स्वामी लग्नमें स्थित होय वह दूसरेकी स्त्रीमें प्रीतिरहित और शोकयुक्त होता है और अपनी स्त्रीमें भोग भोगनेवाला, रूपकरके युक्त और स्त्रीके अधीन होता है। जिसके दूसरे भावमें सप्तमस्थानका स्वामी स्थित होय उसकी स्त्री दुष्ट, पुत्रमें इच्छा करनेवाली होती है और स्त्रीकृत धन होता है और स्त्रीसे संगरहित होता है। जिसके तीसरे स्थानमें सातवें भावका स्वामी स्थित होय वह अपने बलकरके युक्त होता है, बन्धुओंका प्यारा, दुःखी होता है, उसकी स्त्री देवरमें रत, रूपवाली होती है और क्रूरग्रह होनेसे भाईके घर उसकी स्त्री जाती है। जिसके सप्तमस्थानका स्वामी चतुर्थभावमें स्थित होय वह चंचल, पिताका वैर सिद्ध करनेवाला और स्नेह करनेवाला होता है और तिसका पिता खोटे वचन बोलनेवाला होता है, तिसकी स्त्री पिताके घरमें रहती है ॥ १-४ ॥

सप्तमपतौ सुतस्थे सौभाग्ययुतः सुतान्वितः पुरुषः।
प्रियसाहसदुष्टमतिस्तत्तनयः पालयेद्दयिताम् ॥ ५ ॥
रिपुगृहगः कान्तेशः प्रियया सह वैरिणं सरुग्भार्यम्।
दयितासङ्गक्षयिणं क्रूरः कुरुते च मृत्युपदम् ॥ ६ ॥
सप्तमपतिः सप्तमगे परमायुः प्रीतिवत्सलः पुरुषः।
निर्मलशीलसमेतस्तेजस्वी जायते जातः ॥ ७ ॥
सप्तमपतिर्निधनगतो गणिकासु रतः करग्रहरहितः।
नित्यं चिन्तायुक्तो मनुजः किल जायते दुःखी ॥ ८ ॥

जिसके सप्तमभावका स्वामी पांचवें घरमें स्थित होय वह सौभाग्यकरके युक्त और पुत्र करके युक्त, हठमें प्रीतिवाला होता है, तिसके पुत्र तिसकी स्त्रीको पालते हैं। जिसके सप्तमभावका स्वामी छठे घरमें होय वह स्त्रीके साथ वैर करता है और तिसकी स्त्री रोगकरके युक्त होती है और क्रूरग्रह होवे तो स्त्रीके संगमें प्राप्त हुआ नाशको प्राप्त होता है। जिसके सप्तमभावका स्वामी सातवें भावमें स्थित होय वह परम आयुवाला, प्रीतिवाला, निर्मल स्वभावकरके युक्त और निरंतर तेजस्वी होता है।

जिसके सप्तमभावका स्वामी अष्टम स्थानमें स्थित होय वह वेश्यामें रत और विवाहसे रहित होता है. सदा चिंता करके युक्त और दुःखी होता है ॥ ९-८ ॥

सुकृतगते सप्तमपतौ तेजोवाञ्छीलवान्प्रियाऽप्येवम् ।
क्रूरे षंढविरूपो लग्नेशो वीक्षते नये प्रबलः ॥ ९ ॥
सप्तमपे दशमस्थे नृपदोषी लंपटः कपटचित्तः ।
क्रूरे दुःखार्त्तः स्याच्छ्वश्रूवशगो भवेत्पुरुषः ॥ १० ॥
लाभस्थे जायेशे भक्ता रूपान्विता सुशीला च ।
दयिता परिणीता स्यान्नरस्य तनुर्जायते सततम् ॥ ११ ॥
सप्तमपे द्वादशगे गृहबन्धू स्तो न वा भवेद्भार्या ।
सा लोला दुष्टयुता दूराच्चलति च तस्य पुरुषस्य ॥ १२ ॥

जिसके सप्तमभावका स्वामी नवम भावमें स्थित होय वह तेजकरके युक्त श्रेष्ठ स्वभाववाला होता है, तिसकी स्त्री भी श्रेष्ठ होती है और क्रूरग्रह होवे तो नपुंसकरूप होता है और लग्नेश देखता होय तो नीतिमें प्रबल होता है । जिसके सप्तमभावका स्वामी दशमस्थानमें स्थित होय वह राजाका दोषी, लंपट, कपट चित्तवाला होता है। क्रूरग्रह होनेसे दुःखी, पीडित और सासूके वश होता है। जिसके सप्तमेश ग्यारहवें भावमें स्थित होय उसकी स्त्री भक्तियुक्त, रूपवती, सुन्दर शीलवाली और प्रसूतिके समय प्रसन्न चित्तवाली होती है । सप्तमेश बारहवें भावमें स्थित होय वह घर और बन्धुओंसे हीन तथा स्त्रीसे भी रहित होता है और उसकी स्त्री दुष्टके साथ दूरको चली जाती है ॥ ९-१२ ॥ इति सप्तमेशफलम् ॥

अथ द्वादशभवनस्थाष्टमेशफलम् ।

अष्टमपतौ लग्नगते बहुविघ्नो दीर्घरोगभृत्स्तेनः ।
नेष्टानुवादनिरतो लक्ष्मीं लभते नृपतिवचसा ॥ १ ॥
निधनपतौ धनलीनेऽल्पजीवी वैरिवान्नरश्च चौरः ।
क्रूरे सौम्येऽतिशुभं किमु क्षितिपालतो मरणम् ॥ २ ॥
अष्टमपतौ तृतीये बन्धुविरोधी सुहृद्विरोधी च ।
व्यङ्गो दुर्वाग्लोलः सोदररहितो भवत्यथवा ॥ ३ ॥
निधनेशे तुर्यगते पितृरिपुः पितृतो नयेल्लक्ष्मीम् ।
पितृपुत्रयोश्च युद्धं जनको रोगान्वितो भवति ॥ ४ ॥

छिद्रपतौ तनयस्थे क्रूरे सुतविरहितः शुभे शुभः।
जातोऽपि नैव जीवति जीवेदथ कितवकर्मरतः॥ ५॥

जिसके जन्ममें अष्टमका स्वामी लग्नमें स्थित होय वह बहुत विघ्नोंको प्राप्त होनेवाला दीर्घरोगी, चोर, अशुभ कर्ममें रत और राजाके वचन करके धनको पानेवाला होता है। जिसके अष्टमेश दूसरे भावमें स्थित होय वह थोडे काल जीनेवाला, शत्रुओंकरके युक्त, जीवरक्षक चोर होता है यदि क्रूर होय, और शुभग्रह होनेसे शुभ फल करता है और राजासे मृत्युको प्राप्त होता है, जिसके अष्टमेश तीसरे भावमें स्थित होय वह भाइयों और मित्रोंका विरोधी, व्यंग, दुष्टवाणीवाला और चंचल अथवा भ्रातासे रहित होता है। जिसके अष्टमेश चतुर्थ स्थानमें पडे वह पिताका शत्रु, पिताके धनको हरनेवाला होता है तथा पिता पुत्रकी लडाई होती है और पिता रोगकरके युक्त होता है। जिसके अष्टमेश पंचम भावमें स्थित होय तथा क्रूरग्रह होय तो वह पुत्रहीन होता है और शुभग्रह करके शुभ होता है और तिसका पुत्र जीता नहीं, यदि जीता है तो धूर्तकर्ममें रत होता है॥ १-५॥

छिद्रेशे रिपुसंगते दिनकरे भूभृद्विरोधी गुरौ
त्वङ्गे सीदति दृष्टिरोगकलितः शुक्रे स रोगी विधौ।
भौमे कोपयुतो बुधे हि भयभृत्तुण्डार्तिभूतः शनौ
कष्टं चैव दिधाति तत्र शशिभृत्सौम्येक्षिते नैव किम्॥ ६॥
मृत्युपतौ सप्तमगे दुरुदररुक्कुशीलवल्लभो दुष्टः।
क्रूरे भार्याद्वेषी कलत्रदोषान्मृतिं लभते॥ ७॥
मृत्युपतौ निधनगते व्यवसायी व्याधिवर्जितो नीरुक्।
कितवकलाकलितवपुः कितवकुले जायते विदितः॥ ८॥
मृतिनाथे धर्मस्थे निःसंगी जीवघातकः पापी।
निर्बन्धुर्निःस्नेही पूज्यो विमुखे मुखे व्यङ्गः॥ ९॥

जिसके जन्ममें छठे भावमें अष्टमेश सूर्य स्थित होय तो वह राजाका विरोधी, बृहस्पति होय तो देहमें खेद करके युक्त, शुक्र होय तो नेत्रोंमें दोषवाला, चन्द्रमा होय तो रोगी, मंगल होय तो क्रोधवान्, बुध होय तो सर्पके भयसे युक्त और शनि होय तो मुखपीडा करके युक्त होता है तथा चन्द्रमा अथवा शुभग्रह करके दृष्ट होय तो अशुभ फल कुछभी नहीं होता है। उसी प्रकार चन्द्रमासे अष्टम घरका स्वामी छठे भावमें फल करते हैं। जिसके सातवें अष्टमेश स्थित होय वह दुरुदर रोगयुक्त,

कुशीलवान्, दुष्ट, स्त्रीका द्वेषी और स्त्रीके दोषसे मृत्यु पानेवाला यदि क्रूर ग्रह होवै तो होता है। जिसके अष्टमेश अष्टमभावमें स्थित होय वह बडे उद्यमके करनेवाला, उपद्रवोंसे रहित, रोगहीन, धूर्त कलाकरके युक्त और धूर्तोंके कुलमें प्रसिद्ध होता है। जिसके अष्टमेश नवम भावमें स्थित होय वह संगसे रहित, जीवोंका घात करनेवाला, पापी, बंधुहीन, स्नेह करके हीन, गुरु देवतासे विमुख और टेढे मुखवाला होता है ॥ ६-९ ॥

कर्मगते निधनेशे नृपकर्मा नीचकर्मनिरतश्च ।
अलसः क्रूरे खचरे तनयो वा न जीवति माता ॥ १० ॥
लाभस्थे मृत्युपतौ बाल्ये दुःखी सुखी भवति पश्चात् ।
दीर्घायुः सौम्यखगे पापेऽल्पायुर्नरो भवति ॥ ११ ॥
व्ययसंस्थितेऽष्टमेशे क्रूरवाक् तस्करः शठो निर्घृणः ।
आत्मगतिर्व्यङ्गवपुर्मृतस्तु काकादिभिर्भक्ष्यः ॥ १२ ॥

जिसके दशम स्थानमें अष्टमेश स्थित होय वह राजाका चाकर, नीचकर्म करनेवाला, आलसी होता है, क्रूर ग्रह होनेसे उसकी माता नहीं जीवती है। जिसके अष्टमेश ग्यारहवें भावमें स्थित होय वह बाल्यावस्थामें दुःखी और पिछली अवस्थामें सुखी होता है, एवं शुभग्रह होनेसे बडी आयुवाला और पापी ग्रह होनेसे थोडी आयुवाला होता है। जिसके अष्टम भावका स्वामी बारहवें घरमें स्थित होय वह क्रूरवाणीवाला, चोर, निर्घृण, अपनी इच्छासे चलनेवाला, टेढी देहवाला होता है और उसके मृतक शरीरको काक और कुत्ते भक्षण करते हैं ॥ १०-१२ ॥ इति अष्टमेशफलम् ॥

अथ द्वादशभावस्थनवमेशफलम्।

लग्नगते नवमपतौ देवान् गुरून्मन्यते महाशूरः ।
कृपणः क्षितिपतिकर्मा स्वल्पग्रासी भवति मतिमान् ॥ १ ॥
नवमपे धनगते वृषलो विदितः सुशीलवान् सत्यः ।
सुकृती वदनव्यङ्गश्चतुष्पदोत्पन्नपीडितः ॥ २ ॥
सहजगते सुकृतपतौ रूपस्त्री बन्धुवत्सलः पुरुषः ।
बन्धुस्त्रीरक्षणकृद्यदि जीवति बन्धुभिः सदा सहितः ॥ ३ ॥
सुकृतेशे हिबुकस्थे पितृभक्तः पितृयात्रादिके विदितः ।
विदितः सुकृती पुरुषः पितृकर्मणि रतमतिर्भवति ॥ ४ ॥

जिसके जन्मसमयमें नवमभावका स्वामी लग्नमें स्थित होवे वह देवताओंको और गुरुओंको माननेवाला, महाशूर, कृपण, राजकार्यमें नियुक्त, थोडा भोजन करनेवाला और बुद्धिमान् होता है । नवमपति धनभावमें स्थित होय तो वह व्यभिचारिणी स्त्रीका पति, सुशीलवान्, सुकृती, वदनमें व्यंग और चौपायोंकरके पीडित होता है । जिसके नवमभावका स्वामी तीसरे स्थानमें स्थित होय वह रूपवान् स्त्री और बंधुओंका प्यारा, बंधुस्त्रीकी रक्षा करनेवाला और भाइयोंसहित सदा जीता है । जिसके नवम भावका स्वामी चतुर्थस्थानमें स्थित होय वह पिताका भक्त, पितृयात्रादिमें विदित, प्रसिद्ध, सुकृती और पितृकर्ममें रत, बुद्धिवाला होता है ॥ १-४ ॥

सुकृतगृहपे सुतस्थे सुकृती देवगुरुपूजने निरतः ।
वपुषा सुन्दरमूर्तिः सुकृतसमेताः सुता बहवः ॥ ५ ॥
शत्रुप्रणतिपरायणधर्माकलितं कलाविकलकायम् ।
दर्शननिन्दानिरतं सुकृतपतिः षष्ठगः कुरुते ॥ ६ ॥
नवमपतौ सप्तमगे सत्यवती सुवदना सुरूपा च ।
शीलश्रीयुतदयिता सुकृतयुता जायते नियतम् ॥ ७ ॥
दुष्टो जन्तुविघाती गृहबन्धुविवर्जितः सुकृतरहितः ।
नवमेशे निधनगते क्रूरे षण्ढः स विज्ञेयः ॥ ८ ॥

जिसके नवमभावका स्वामी पांचवें स्थानमें स्थित होय वह धर्मवान्, देवता गुरुके पूजनमें रत, देहकरके सुंदरमूर्तिवाला और धर्मकर्मकरके युक्त पुत्रोंवाला होता है । जिसके नवमभावपति छठे स्थानमें स्थित होय वह शत्रुओंके आगे नम्र, पाप करनेवाला, कलासे रहित देहवाला, देखनेमें और निन्दामें रत होता है । जिसके नवमभावका स्वामी सातवें स्थानमें स्थित होय तिसकी स्त्री पतिव्रता, सुंदरवदनवाली, रूपवाली, शीलवती, लक्ष्मीवती और धर्मकर्मकरके युक्त होती है । जिसका नवमका स्वामी अष्टमभावमें स्थित होय वह दुष्ट, जीवोंका मारनेवाला, घर बंधुओं करके रहित, अधर्मी होता है और क्रूरग्रह होवे तो नपुंसक होता है ॥ ५-८ ॥

सुकृतगतः सुकृतपतिः स्वबन्धुभिः प्रीतिमतुलितसमत्वम् ।
दातारं देवगुरोः स्वजनकलत्रादिषु सक्तम् ॥ ९ ॥
नृपकर्माणं शूरं मातापित्रोश्च पूजकं पुरुषम् ।
धर्मख्यातं कुरुते सुकृतपतिर्गगनगृहशीलः ॥ १० ॥

दीर्घायुर्धर्मपरो धनेश्वरः स्नेहलो नृपतिलाभी।
सुकृतख्याती सुसुतः सुकृतविभौ लाभभवनस्थे ॥ ११ ॥
द्वादशगे सुकृतेशे मानी देशान्तरे सुरूपश्च।
विद्यावाञ्छुभखेटे क्रूरे च भवेदतिधूर्तः ॥ १२ ॥

जिसके नवमका स्वामी नवमभावमें स्थित होय वह अपने बंधुओंसे बडी प्रीतिवाला, सबमें बडा, दाता, देवता गुरु स्वजन और कलत्रआदिकोंमें आसक्त होता है। जिसके नवमका स्वामी दशमभावमें स्थित होय वह राजाके कर्म करनेवाला, शूरवीर मातापिताको पूजनेवाला, धर्मकरके प्रसिद्ध और शीलवान् होता है। जिसके नवमका स्वामी ग्यारहवें भावमें स्थित होय वह बडी उमरवाला, धर्मवान्, धनका स्वामी, प्रीति करनेवाला, राजासे लाभवाला, धर्मकरके प्रसिद्ध और श्रेष्ठपुत्रोंवाला होता है। जिसके नवमभावका स्वामी बारहमें स्थानमें स्थित होय वह विदेशमें मान पानेवाला, रूपवान्, विद्यावान् यदि शुभग्रह होवे तो होता है और पापग्रह होनेसे धूर्त होता है ॥ ९-१२ ॥ इति नवमेशफलम् ॥

अथ द्वादशभावस्थदशमेशफलम्।

दशमपतौ लग्नगते मातरि वैरी पितुर्भक्तः।
दुष्टगते च ताते खलु परपुरुषरता भवति माता ॥ १ ॥
वित्तस्थे गगनपतौ मात्रा पालितः सुतो भवति लोभी।
मातरि दुष्टो नितरां स्वल्पग्रासी श्रुतसुकर्मा ॥ २ ॥
मातृस्वजनविरोधी सेवानिरतो न कर्माणि समर्थः।
मातुलपरिपालितः स्याद्दशमपतौ सहजभवनस्थे ॥ ३ ॥
व्योमपतौ तुर्यगते सुखे विरतः सदाचारः।
भक्तश्च पितरि मातरि नृपमानी जायते पुरुषः ॥ ४ ॥

जिसके जन्मकालमें दशमभावका स्वामी लग्नमें स्थित होय वह माताका शत्रु और पिताका भक्त और पिताके मरजानेपर उसकी माता परपुरुषमें रत होती है। जिसके दशमका स्वामी धनभावमें स्थित होय वह माताकरके पालित होता है और माताका विरोधी तथा लोभी होता है थोडा भोजन करनेवाला, विख्यात श्रेष्ठकर्म करनेवाला होता है। जिसके दशमभावका स्वामी तीसरे स्थानमें स्थित होय वह मातासे और अपने संबंधियोंसे विरोध करनेवाला, सेवा करनेवाला, काममें असमर्थ

और माता करके पालित होता है । जिसके दशमभावका स्वामी चतुर्थ स्थानमें स्थित होय वह सुखी अच्छे आचारवाला, माता पिताका भक्त और राजाकरके मानवाला होता है ॥ १-४ ॥

शुभकर्मको विडम्बी नृपलाभी गीतवाद्यनिरतः स्यात् ।
गगनपतौ तनयगते पालयति च तं सुतं माता ॥ ५ ॥
अम्बरपे रिपुसंस्थे शत्रुभयात्कातरः कलहशीलः ।
कृपणः कृपया हीनो नरो न रोगी भवति लोके ॥ ६ ॥
सुतवती शुभरूपसमन्विता निजपतिप्रतिपालनलालसा ।
भवति तस्य शुभं कुरुते सदा प्रियतमाम्बरपे दयितागते ॥७॥
पुष्करपतिरष्टमगः क्रूरं शूरं मृषान्वितं दुष्टम् ।
मातरि संतापकरं जनयति तनुजीवितं कितवम् ॥ ८ ॥

जिसके दशमभावका स्वामी पांचवें स्थानमें स्थित होय वह शुभकर्म करनेवाला, विडम्ब करनेवाला, राजासे लाभवाला, गीतवाद्यमें रत और माताकरके पालित होता है। जिसके दशमभावका स्वामी छठे स्थानमें स्थित होय वह शत्रुभयसे कातर, कलह वाला, कृपण, दयाकरके हीन और रोगकरके हीन होता है । जिसके दशमभावका-स्वामी सातवें भावमें होवे उसकी स्त्री पुत्रवाली रूपकरके युक्त, अपने पतिके पालनेमें लालसावाली तथा भक्तिवाली और अत्यन्त प्रीतिवाली होती है । जिसके दशम भावका स्वामी अष्टमस्थानमें स्थित होय वह क्रूर, शूर वीर, झूंठ बोलनेवाला, दुष्ट, माताका सन्ताप करनेवाला, थोडे काल जीनेवाला और धूर्त होता है ॥ ५-८ ॥

शुभशीलः सद्बन्धुः सन्मित्रो दशमपे नवमलीने ।
तन्मातापि सुशीला सुकृतवती सत्यवचनरता ॥ ९ ॥
गगनपतिर्गगनगतो जननीसुखप्रदं पुरुषम् ।
जननीकुलविपुलसुखं प्रकथनघटनापटीयांसम् ॥ १० ॥
मानोर्जिते धनसहिता माता च रक्षणी भवेत्सुखिनी ।
दीर्घायुर्मातृसुखी पुरुषो लाभस्थितेऽम्बरपे ॥ ११ ॥
मात्रोज्झितो निजबलः शुभकर्मा नृपतिकर्मरतचेताः ।
व्योमपतौ व्ययसंस्थे देशान्तरगतश्च पापखगे ॥ १२ ॥

जिसके दशमभावका स्वामी नववें स्थानमें स्थित होय वह श्रेष्ठस्वभाववाला और श्रेष्ठबन्धुओं मित्रोंवाला होता है, तिसकी माता श्रेष्ठस्वभाववाली, धर्मवाली और सत्य बोलनेवाली होती है, जिसके दशमभावका स्वामी दशमभावमें स्थित होय वह माताको सुख देनेवाला और माताके कुलको सुख देनेवाला और बातके करनेमें बडा चतुर होता है । जिसके दशमभावका स्वामी ग्यारहवें भावमें स्थित होय वह मानको प्राप्त और धनकरके युक्त तिसकी माता पुत्रकी रक्षा करनेवाली, सुखकरके युक्त होती है और मनुष्य बडी उमरवाला और माताको सुख देनेवाला होता है । जिसके दशमभावका स्वामी बारहवें स्थानमें स्थित होय वह माताकरके त्यागा अत्यन्त बलकरके युक्त, शुभकर्म करनेवाला, राजाके कामोंमें प्रीतिवाला होता है, पापी ग्रह होनेसे विदेशमें रत होता है ॥ ९-१२ ॥ इति दशमेशफलम् ॥

अथ द्वादशभवनस्थलाभेशफलम् ।

अल्पायुर्बलकलितः शूरो दाता जनप्रियः सुभगः ।
लाभपतौ लग्नगते तृष्णादोषान्मृतिं लभते ॥ १ ॥
वित्तगते लाभपतावुत्पन्नभुगल्पभोजनोऽल्पायुः ।
अष्टकपाली रोगी क्रूरैः सौम्ये च धनकलितः ॥ २ ॥
बन्धुश्रीपालनकः सुबान्धवो बन्धुवत्सलः सुभगः ।
लाभेशे सहजगते बन्धूनां रिपुकुलच्छेत्ता ॥ ३ ॥
तुर्यस्थे लाभेशे दीर्घायुः पितरि भक्तिभाग्भवति ।
समयैककर्मनिरतः स्वधर्मनिरतो लाभवान्मनुजः ॥ ४ ॥

जिसके जन्मकालमें ग्यारहवें भावका स्वामी लग्नमें स्थित होय वह थोडी आयुवाला, बलकरके युक्त शूरवीर, दाता, जनोंमें प्रीतिवाला, श्रेष्ठ भाग्योंवाला और तृष्णादोषसे मृत्युको प्राप्त होता है । जिसके एकादशका स्वामी दूसरे भावमें स्थित होय वह उत्पन्नभोगी, थोडा भोजन करनेवाला, थोडी उमरवाला होता है और क्रूरग्रह करके अष्टकपाली और रोगवाला होता है और शुभग्रहसे धनकरके युक्त होता है । जिसके ग्यारहवें भावका स्वामी तीसरे स्थानमें स्थित होय वह बंधुओंकी लक्ष्मी पालन करनेवाला, श्रेष्ठबन्धुओंवाला, बन्धुवत्सल, भाग्यवाला और क्रूरग्रहसे बन्धुओंका और शत्रुओंके कुलका नाश करनेवाला होता है । जिसके एकादशका स्वामी चतुर्थभावमें स्थित होय वह बडी उमरवाला पिताका प्यारा और भक्तिवाला और समयके उचितकर्ममें रत तथा अपने धर्ममें रत और लाभवाला होता है ॥ १-४ ॥

लाभपतिः पुत्रगतः पितृपुत्रस्नेहलं मिथः कुरुते ।
तुल्यगुणं च परस्परं स्वल्पायुर्जायते पुरुषः ॥ ५ ॥
षष्ठगते लाभपतौ सुदीर्घरोगी सुवैरिकलितश्च ।
तस्करहस्तान्मृत्युः क्रूरे देशान्तरगतस्य ॥ ६ ॥
सप्तमगे लाभेशे तेजस्वी शीलसंपदः पदवी ।
दीर्घायुर्भवति नरस्तथैकदयितापतिर्नित्यम् ॥ ७ ॥
एकादशपेऽष्टमगेऽल्पायुर्भवति सुरोगी च ।
जीवन्मृत्युश्च दुःखी भवति नरः सौम्यगगनचरे ॥ ८ ॥

जिसके एकादशका स्वामी पंचमभावमें स्थित होय तो पितापुत्र आपसमें प्रीतिवाले, समान गुणवाले होते हैं और वह मनुष्य थोडी आयुवाला होता है । जिसके एकादशभावका स्वामी छठे स्थानमें स्थित होय वह दीर्घरोगी, शत्रुओंकरके युक्त होता है, क्रूरग्रह होनेसे चोरके हाथसे मृत्यु होती है और देशांतरमें रहता है । जिसके एकादशका स्वामी सातवें भावमें स्थित होय वह तेजस्वी श्रेष्ठस्वभाववाला, संपदापदवीसे युक्त, बडी उमरवाला और निश्चयकरके एक स्त्रीका स्वामी होता है । एकादशभावका स्वामी जिसके आठवें घरमें होय और क्रूरग्रह होवे वह थोडी आयुवाला और दीर्घरोगी होता है और शुभग्रह होनेसे जीताही मृतककी तरह होता है और दुःखी होता है ॥ ५-८ ॥

एकादशेशे सुकृतालयस्थे बहुश्रुतः शास्त्रविशारदश्च ।
धर्मप्रसिद्धो गुरुदेवभक्तः क्रूरे च बन्धुव्रतवर्जितश्च ॥ ९ ॥
मातरि भक्तः सुकृती पितरि द्वेषी सुदीर्घतरजीवी ।
धनवाञ्जननीपालननिरतो लाभाधिपे खगते ॥ १० ॥
लाभाधिपो लाभगतः करोति दीर्घायुषं पुष्कलपुत्रपौत्रम् ।
सुकर्मकं रूपवरं सुशीलं जनप्रधानं विपुलं मनोज्ञम् ॥ ११ ॥
द्वादशगे लाभेशे उत्पन्नभुक् स्थिरो भवति रोगी ।
उत्पातरतो मानी दाता च सुखी सदा पुरुषः ॥ १२ ॥

जिसके एकादशभावका स्वामी नवमभावमें स्थित होय वह बहुश्रुत और शास्त्रमें चतुर होता है, धर्ममें प्रसिद्ध और गुरु देवताका भक्त होता है और क्रूरग्रह होवे

तो बंधु और व्रतकरके रहित होता है । जिसके एकादशका स्वामी दशमभावमें स्थित होय वह माताका भक्त, धनवान् और पितासे वैर करनेवाला, चिरकाल जीनेवाला, धनवान् और माताको पालनेवाला होता है । जिसके एकादशभावका स्वामी एकादशभावमें स्थित होय वह बडी आयुवाला, बहुत पुत्र पौत्रोंकरके युक्त, श्रेष्ठकर्म करनेवाला, रूपवान्, शीलवान्, प्रसिद्ध, विपुल और मनकी बातको जाननेवाला होता है । जिसके एकादशभावका स्वामी बारहवें भावमें स्थित होय वह उत्पन्न भोगी, स्थिर, रोगी, उत्पातमें रत, मानी, दानी और सुखी होता है ॥ ९-१२ ॥

इति लाभेशफलम् ॥

अथ द्वादशभवनस्थव्ययेशफलम् ।

व्ययपे लग्नगते विदेशगः सुवचनः सुरूपश्च ।
अपसङ्गवाददोषी भवति कुमारोऽथवा षण्ढः ॥ १ ॥
द्वादशपे वित्तगते कृपणः कटुवाग्विनष्टलाभलयः ।
सौम्ये तु निर्धनं गच्छति नृपतस्करवह्नितोऽतिभयम् ॥ २ ॥
सहजगते द्वादशपे क्रूरे गतबान्धवः शुभे च धनी ।
तनुसोदरः सुकृपणो बन्धुषु दूरे सदा भवति ॥ ३ ॥
तुर्यगते व्ययनाथे कृपणो रोगभीतः सुकर्मा च ।
मृतिमाप्नोति सुततः सततं मनुजो महादुःखी ॥ ४ ॥

जिसके जन्मकालमें बारहवें भावका स्वामी लग्नमें स्थित होय वह विदेशमें गमन करनेवाला, सुंदर रूपवाला, श्रेष्ठवाणीवाला, दुष्ट संगतिवाला, वाद करनेवाला शेखीं अथवा नपुंसक होता है । जिसके बारहवें भावका स्वामी दूसरे स्थानमें स्थित होय वह कृपण, कठोरवाणीवाला, अनिष्ट फलको प्राप्त होनेवाला होता है । शुभग्रह होनेसे निर्धनी तथा राजासे चोरसे अग्निसे भयको प्राप्त होता है । जिसके द्वादशभावका स्वामी तीसरे स्थानमें स्थित होय और क्रूरग्रह होवे तो वह बन्धुहीन होता है और शुभग्रह होवे तो धनी होता है । थोडे भाइयोंवाला, कृपण और बंधुओंसे सर्वकाल दूर होता है । जिसके बारहवें भावका स्वामी चतुर्थ स्थानमें स्थित होय वह कृपण, रोग करके डरा हुआ, श्रेष्ठ कर्म करनेवाला, पुत्रसे मृत्युको पानेवाला और निरंतर अधिक दुःख करके युक्त होता है ॥ १-४ ॥

द्वादशपतौ सुतस्थे क्रूरे सुतविवर्जितः शुभे ससुतः ।
जनककमलाविलासी समर्थताविरहितः पुरुषः ॥ ५ ॥

षष्ठगते व्ययनाथे क्रूरे कृपणोऽक्षिदूषणः पुरुषः ।
लभते मृतिं नितान्तं भृगुतनये नेत्रहीनः स्यात् ॥ ६ ॥
द्वादशपे सप्तमगे दुष्टो दुश्चरितभृत्पटुवचनः ।
क्रूरे स्वस्त्रीतः स्यात्सौम्ये क्षयमेति गणिकातः ॥ ७ ॥
व्ययनाथे निधनगतेऽष्टकपाली कार्यसाधनरहितः ।
द्रोहमतिः सौम्यगते धनसंग्रहपरो भवति ॥ ८ ॥

जिसके बारहवें भावका स्वामी पंचमस्थानमें स्थित होय और क्रूरग्रह होवे तो पुत्र रहित होता है और शुभग्रह होनेसे पुत्रयुक्त होता है और पिताका धनसे विलास करनेवाला और सामर्थ्यसे रहित होता है। जिसके द्वादशभावका स्वामी छठे स्थानमें स्थित होय और क्रूरग्रह होवे तो वह कृपण, नेत्रमें दोषवाला और निश्चय करके मृत्युको प्राप्त होता और शुक्र होवे तो नेत्रहीन होता है । द्वादशभावका स्वामी जिसके सातवें स्थानमें स्थित होय वह दुष्ट और दुष्टचरित्र धारनेवाला और चतुर होता है एवं क्रूरग्रह होनेसे अपनी स्त्रीद्वारा तथा शुभग्रह होनेसे वेश्याद्वारा नाशको प्राप्त होता है। जिसके द्वादश भावका स्वामी अष्टम स्थानमें स्थित होय वह अष्टकपालों करके युक्त कार्यसाधनमें रहित द्रोह करनेमें बुद्धिवाला होता है और शुभग्रह होय तो धन-संग्रहमें तत्पर होता है ॥ ५-८ ॥

व्ययनाथे सुकृतगते तीर्थालोक्यटनोऽचलवृत्तिः ।
क्रूरे खगे च पापी निरर्थकं याति तद्द्रव्यम् ॥ ९ ॥
व्ययपे गगनगृहस्थे पररमणीपराङ्मुखः पवित्राङ्गः ।
सुतधनसंग्रहनिरतो दुर्वचनपरा भवति माता ॥ १० ॥
द्वादशपे लाभस्थे द्रविणपतिर्दीर्घजीवितो भवति ।
स्थानप्रवरो दाता विख्यातः सत्यवचनपरः ॥ ११ ॥
विभूतिमान् ग्रामनिवासचित्तः कार्पण्यबुद्धिः पशुसंग्रही च ।
चेज्जीवति ग्रामयुतः सदा स्याद्व्ययाधिनाथे व्ययगेहलीने ॥१२॥

जिसके द्वादशभावका स्वामी नवम भावमें स्थित होय वह तीर्थयात्रा करनेवाला, निश्चल स्वभाववाला होता है। क्रूरग्रह होवे तो पापी होता है और तिसका धन निरर्थक जाता है। जिसके द्वादश भावका स्वामी दशम स्थानमें स्थित होय वह परस्त्रीसे पराङ्-मुख, पवित्र अंगोंवाला, पुत्र और धन संग्रहमें निरत और तिसकी माता दुर्वचन

कहनेवाली होती है । जिसका द्वादशभावका स्वामी ग्यारहवें भावमें स्थित होय वह धनका स्वामी, चिरकाल जीनेवाला, अपने स्थानमें प्रधान, दाता जगत्में प्रसिद्ध और सत्य बोलनेवाला होता है । जिसके द्वादशभावका स्वामी द्वादश स्थानमें स्थित होय वह ऐश्वर्यवाला, ग्रामके निवास करनेमें चित्तवाला, कृपण बुद्धिवाला, डरनेवाला, पशुओंका संग्रह करनेवाला होता है और कदाचित् जीवता रहे तो सर्वदा ग्राम करके युक्त होता है ॥ ९-१२ ॥ इति द्वादशभवनेशफलम् ॥

अथ जातके नीचग्रहफलम् ।

निष्ठुरदन्तो वदनः समांत्रस्थूलजङ्घकरपादः ।
स्त्रीविवाहार्जितचित्तो भानुर्नीचस्थितः कुरुते ॥ १ ॥
नर्तकवादकजल्पकधूर्तकृतश्चापि संगतिः सहसा ।
कुमतिः संशयनिरतो नीचस्थो हिमकरः कुरुते ॥ २ ॥
लक्ष्मीर्ह्यत्युग्रबला स्थिरविभवो बुद्धिमान्गुणज्ञः ।
रात्रिंचरोऽतिचौरो दुष्टात्मा भूसुतः कुरुते ॥ ३ ॥
शुभमतिर्वरयुवतिः शुभशीला भर्तृवचन अनुमुदिता ।
संततिपुत्रविहीनो नीचस्थश्चन्द्रजः कुरुते ॥ ४ ॥
दिव्यस्त्रीवरकाञ्चनपुष्पफलप्रकरपूजितः पुरुषः ।
भर्त्ता देशान्तरस्थो नीचस्थः सुरगुरुः कुरुते ॥ ५ ॥

जिसके जन्मसमय सूर्य नीचराशि (७) का होवे वह पुष्ट दांतोंवाला सम शरीर-वाला और जिसके जंघा हाथ और पैर मोटे हों और विवाहद्वारा स्त्री प्राप्तिके चित्त-वाला होता है । जिसके चन्द्रमा नीचराशि (८) का होय वह नृत्य करनेवाला प्रलापी, वादक, मायावी तथा मायावीमनुष्योंकी संगतिवाला, दुष्टमतिवाला और संशयमें रत होता है । जिसके मंगल नीचराशि (४) का होय वह लक्ष्मीवाला बडे बलवाला स्थिर विभववाला बुद्धिमान् गुणका जाननेवाला चोर और दुष्टात्मा होता है । जिसके बुध नीचराशि (१२) में होय वह अच्छी बुद्धिवाला और सुन्दर शीलवाला पतिव्रता श्रेष्ठस्त्रीवाला और सन्तति पुत्रसे विहीन होता है । जिसके बृह-स्पति नीचराशि (१०) में होय वह सुन्दर स्त्री बहुत सोना पुष्प फलादिसे पूजित होता है और उसका मालिक देशान्तरमें रहता है ॥ १-५ ॥

अतिकौतुकी विनोदी सभासु सुवाक्सदा प्राज्ञः ।
राज्यकलामणिमण्डितो नीचस्थो भार्गवः कुरुते ॥ ६ ॥
शत्रूणां क्षयकारको दृढवपुर्दीप्ताग्निकान्तिश्चलो
देशग्रामपुरादिपत्तनबली साम्राज्यराज्यादिपः ।
स्वेच्छाचारविचारदक्षसुभगः स्त्रीसौख्ययुक्तः सदा
ज्ञातिभ्रातृजनान्वितं च कुरुते नीचस्थितार्किः सदा ॥ ७ ॥
दुर्भगश्च खलो दुष्टः पापात्मा दुष्टबुद्धिकृद्बहुलः ।
स्वकुटुंबपक्षहीनो नीचस्थो राहुरिति कुरुते ॥ ८ ॥
कुशीलोऽपि तथा काणः स्त्रीविरही दुःखकामिनो विरुचः ।
अतिपक्षदक्षकुशलो नीचस्थः केतुरपि कुरुते ॥ ९ ॥

जिसके शुक्र नीचराशि (६) का होय वह बडा कौतुकी और विनोदी सभामें सदा सुन्दरवाक्य कहनेवाला बुद्धिमान् और राज्यकलामें प्रवीण होता है । जिसके शनैश्चर नीचराशि (१) में होय वह शत्रुओंका नाश करनेवाला, पुष्टशरीरवाला तीक्ष्णाग्निवाला, शोभायमान देश ग्राम पुरादि पत्तन सहित बली साम्राज्य राज्यका, स्वामी, इच्छानुकूल आचारवाला, विचार करनेमें दक्ष, सुभग स्त्रीसौख्यकरके युक्त- सदा जातिभाइयोंकरके संयुक्त होता है । जिसके नीचका राहु होय वह कुरूप खल और दुष्ट अधर्मी दुष्टबुद्धिवाला और अपने कुटुम्बपक्षकरके हीन होता है । जिसके केतु नीचराशिका होवे वह कुशील, काना, स्त्रीविरही, कामी बहुत रोगवाला, अधिक पक्षवाला, दक्ष और कुशल होता है ॥ ६–९ ॥ इति नीचग्रहफलम् ॥

अथ उच्चस्थग्रहफलम् ।

धीरः प्रचण्डः कुशलो गौरः शूरः कलानिधिश्चतुरः ।
दण्डपतिर्धनयुक्त उच्चस्थो भास्करः कुरुते ॥ १ ॥
विज्ञानधनसमेतः पात्रपवित्रं च कामिनीविरही ।
बहुजनताजनवल्लभ उच्चस्थो हिमकरः कुरुते ॥ २ ॥
उग्रं दृढप्रहारं क्रूरं शस्त्रं वचनबहुविदितम् ।
नृपकुलवल्लभशूरो ह्युच्चस्थो भूसुतः कुरुते ॥ ३ ॥
चित्तबुद्धिबलिष्ठो मंत्राक्षरः क्रियालसः सौरः ।
अतिमतिविभवो बालः पापविमुक्तश्च उच्चगः शशिजः॥ ४ ॥

जिसके जन्मसमयमें सूर्य उच्चराशि (१) में होवे वह बडा बुद्धिमान्, प्रचंड, प्रवीण, गौरवर्ण, शूरवीर, कलाओंका आगर, चतुर, दण्ड देनेका अधिकारी और धन करके युक्त होता है। जिसके चन्द्रमा उच्चराशि (२) में स्थित होवे वह विज्ञान, धनकरके संयुक्त, बडा पवित्र, कामिनी स्त्रियोंका विरही और संसारभरका प्यारा होता है। जिसके मंगल उच्चराशि (१०) का पडा होय वह उग्रप्रतापी क्रूर शस्त्रके प्रहार करनेमें दृढ, बहुत प्रसिद्ध, राजकुलका प्यारा और शूरवीर होता है। जिसके बुध उच्चराशि (६) का होवे वह चित्त और बुद्धिका बलवान्, मन्त्राक्षर-क्रियावान्, योद्धा, बहुत बुद्धि और विभववाला और पापसे रहित होता है ॥१-४॥

स्वाचारः शुभयुक्तः सुन्दरवदनश्च मण्डली मुदितः।
बहुभृत्यो भूभुजां च मन्त्री गुरुरुच्चगो यस्य ॥ ५ ॥
देवज्ञाने कुशलो यन्त्री तन्त्री च गायकः कवीशः।
कमलाविलासलापी दैत्यगुरुरुच्चगः कुरुते ॥ ६ ॥
सुस्रक्कार्मुकवृत्तिर्विख्यातः सकलवाहनस्वामी।
मैत्री साहसधैर्यो मायावी उच्चगः सौरिः ॥ ७ ॥
क्रूरो दुष्टबलिष्ठः साहसनिरतस्थमन्त्रिणां सुसुरः।
राज्यकमलामणिमण्डितः स्वर्भानुरुच्चगः कुरुते ॥ ८ ॥
स्थविरः स्थविलो नीचाचारो मिथ्या भवेद्भ्रमणशीलः।
परकर्मलितकमलो व्यासानुमत्तमः शिखिनः ॥ ९ ॥

जिसके बृहस्पति उच्चराशि (४) में स्थित हो वह इच्छानुकूल आचारवाला शोभाकरके युक्त, सुन्दर वदनवाला, राज्यमण्डलका स्वामी, प्रसन्नचित्त, बहुत नौकरोंसे युक्त और राजाओंका मन्त्री होता है। जिसके शुक्र उच्चराशि (१२) का पडा होवे वह देवज्ञानमें प्रवीण, यन्त्र तन्त्र करनेवाला, गायक (गानेवाला), कवियोंका स्वामी और स्त्रीविलासवाला होता है। जिसके शनैश्वर उच्चराशि (७) का स्थित होवे वह सुन्दर पुष्पमाला और धनुष्यके द्वारा जीविका चलानेवाला, प्रसिद्ध, सम्पूर्ण वाहनोंका स्वामी, साहस मैत्रीवाला, धैर्यवान् और मायावी होता है। जिसके राहु उच्चराशिका होवे वह क्रूर, दुष्ट, बलवान्, साहसमें रत, सम्मति देनेमें चतुर और राज्यलक्ष्मी, मणि इन करके शोभित होता है। जिसके उच्चराशिका केतु पडा होवे वह स्थविर और नीच आचारवाला, झूंठ बोलनेवाला, भ्रमणशील, पराया काम करनेवाला होता है ॥ ५-९ ॥ इत्युच्चस्थग्रहफलम् ॥

अथ मूलत्रिकोणफलम् ।

धनी सुखी कार्यविज्ञस्त्रिकोणस्थे दिवाकरे ।
चन्द्रे धनी च भोक्ता च भौमे शूरोदयः खलः ॥ १ ॥
बुधे त्रिकोणगे विज्ञो विनोदी विजयी नरः ।
गुरौ ग्रामपुरादीनां मठस्याधिपतिः सुधीः ॥ २ ॥
शुक्रे त्रिकोणगे सुज्ञः सुखयुक्तो महीपतिः ।
मन्दे नरो धनैः पूर्णो महाशूरः कुलन्धरः ॥ ३ ॥

जिसके जन्मसमयमें सूर्य मूलत्रिकोण (५) स्थानमें स्थित हो वह धनी, सुखी और कार्यका जाननेवाला होता है। चन्द्रमा मूलत्रिकोण (२)का हो तो वह सुभोगी होता है और भौम मूलत्रिकोण (१)का हो तो शूर और दुष्ट होता है। जिसके बुध मूलत्रिकोण (६) में स्थित हो वह विज्ञ (जाननेवाला) आनन्दी और विजयी होता है। बृहस्पति मूलत्रिकोण (९) में हो तो गांव पुर और मठोंका स्वामी और पंडित होता है। जिसके शुक्र मूलत्रिकोण (७) में हो वह सुज्ञ और सुखकरके युक्त पृथ्वीका पति होता है और शनि मूलत्रिकोण (११) में हो तो धनी, महाशूर और कुलका धारनेवाला होता है ॥ १-३ ॥ इति मूलत्रिकोणफलम् ॥

अथ स्वगृहस्थग्रहफलम् ।

स्वगृहस्थे रवौ लोके महोग्रश्च सदोद्यमी ।
चन्द्रे कर्मरतः साधुर्मनस्वी रूपवानपि ॥ १ ॥
स्वगृहस्थे कुजे वापि चपलो धनवानपि ।
बुधे नानाकलाभिज्ञः पण्डितो धनवानपि ॥ २ ॥
धनी काव्यश्रुतिज्ञश्च स्वचेष्टः स्वगृहे गुरौ ।
स्फीतः कृषीवलः शुक्रे शनौ मान्यः सुलोचनः ॥ ३ ॥

जिसके जन्मसमयमें सूर्य (५) अपने घरमें स्थित हो वह बडा उग्र और सदाही उद्यम करनेवाला होता है. चन्द्रमा (४) में स्थित हो तो धर्ममें रत, साधु, मनस्वी और रूपवान् होता है। अपने घर (१।८) में मंगल हो तो चंचल और धनवान् होता है. बुध अपने घर (३।६) का हो तो नाना कलाओंका जाननेवाला पंडित और धनी होता है। बृहस्पति अपने घर (९ । १२) में हो तो धनवान्, काव्य और वेदका जाननेवाला और अच्छी चेष्टावाला होता है. शुक्र अपने घर (२।७) में

हो तो स्फीत, खेती करनेवाला होता है और शनैश्चर अपने घर (१० । ११) में हो तो मान्य और सुंदर आँखोंवाला होता है ॥१-३॥ इति स्वगृहस्थग्रहफलम् ॥

अथ मूलत्रिकोणस्वक्षेत्रांशभेदचक्रम् ।

ग्रह.	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
मू. त्रि	५	वृ	मेष	क	ध	तु	कुं	कर्क	सिंह
अंश	२०	३०	१२	३०	१०	१५	२०	५	५
स्वस्थ	५	वृ	मेष	क	ध	तु	कुं	कर्क	मीन
नाश	३०	३०	३०	२०	३०	१५	२४	२४	५४

अथ मित्रगृहस्थग्रहफलम् ।

सूर्ये मित्रगृहे ख्यातः शास्त्रज्ञः स्वस्थसौहृदः ।
चन्द्रे नरो भाग्ययुक्तश्चतुरो धनवानपि ॥ १ ॥
भौमे शस्त्रोपजीवी च बुधे रूपधनान्वितः ।
गुरौ मित्रगृहे पूज्यः सतां सत्कर्मसंयुतः ॥ २ ॥
शुक्रे मित्रगृहे लोके धनी बन्धुजनप्रियः ।
शनौ रुजाकुलो देहे कुकर्मनिरतो भवेत् ॥ ३ ॥

जिसके सूर्य मित्रके घरमें स्थित हो वह प्रसिद्ध शास्त्रका जाननेवाला और स्थिर मित्रतावाला होता है. चन्द्रमा हो तो भाग्ययुक्त, चतुर और धनी होता है। मंगल मित्रके घरमें स्थित हो तो शस्त्रोंसे जीविका करनेवाला होता है. बुध हो तो रूपवान् और धनवान् होता है. बृहस्पति हो तो सज्जनोंका पूज्य और सत्कर्मयुक्त होता है । शुक्र मित्रके घरमें हो तो धनी और बंधुजनोंका प्यारा होता है और शनि हो तो रोगकरके व्याकुल शरीरवाला और कुकर्ममें रत रहनेवाला होता है ॥ १-३ ॥

इति मित्रगृहस्थग्रहफलम् ॥

अथ शत्रुगृहस्थग्रहफलम् ।

सूर्ये रिपुगृहे नीचो विषयैः पीडितो नरः ।
चन्द्रे हृदयरोगी च भौमे जायाजडोऽधनः ॥ १ ॥
बुधे रिपुगृहे मूर्खो वाग्धनी दुःखपीडितः।
जीवे च जायते क्लीबो नाशवृत्तिर्बुभुक्षितः ॥ २ ॥

शुक्रे शत्रुगृहे भृत्यः कुबुद्धिर्दुःखितो नरः।
शनौ व्याध्यर्थशोकेन सन्तप्तो मलिनो भवेत् ॥ ३ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य शत्रुके घरमें होवे वह नीच और विषयोंसे पीडित होता है. चन्द्रमा हो तो हृद्‌यरोगी होता है. मंगल हो तो जडस्त्रीवाला और दरिद्र होता है. बुध शत्रुके घरमें हो तो मूर्ख, वाणीका धनी और दुःखपीडित होता है. बृहस्पति हो तो नपुंसक, जीविकाहीन और बुभुक्षित होता है। शुक्र शत्रुके घरमें हो तो दास, कुबुद्धि और दुःखित होता है. शनैश्चर शत्रुके घर हो तो व्याधि अर्थ और शोकसे संतप्त और मलिन होता है ॥ १-३ ॥ इति शत्रुगृहस्थग्रहफलम् ॥

अथ द्वादशभावस्थद्वादशलग्नफलानि।

तत्र तनुभावस्थितराशिफलम्।

मेषोदये रक्ततनुर्मनुष्यः श्लेष्माधिकः क्रोधपरः कृतघ्नः।
सुमन्दबुद्धिः स्थिरतासमेतः पराजितः स्त्रीभृतकैः सदैव ॥ १ ॥
वृषोदये जन्म यदा भवेच्च स्वचित्तरोगं स्वजनापमानम्।
इष्टैर्वियोगं कलहं च दुःखं शस्त्राभिघातं च धनक्षयं च ॥ २ ॥
तृतीयलग्ने पुरुषोऽतिगौरः स्त्रीरक्तचित्तो नृपपीडितश्च।
दूतः प्रसन्नः प्रियवाग्विनीतः समूर्द्धजो गीतविचक्षणश्च ॥ ३ ॥

जिसके जन्मकालमें मेषराशि लग्नमें स्थित होय वह लालदेहवाला, श्लेष्माकी अधिकतावाला, क्रोधसहित, उपकारोंको न माननेवाला, मन्दबुद्धिवाला, स्थिरतायुक्त, स्त्री और नौकरोंकरके सदा पराजित होता है। जिसके लग्नमें वृषराशि स्थित होवे उसको हृदयरोग, स्वजनअपमान, मित्रोंका वियोग, कलह, दुःख, शस्त्रकरके अभिघात होता है और उसके धनका नाश होता है। जिसके मिथुनराशि जन्मलग्नमें पडी होवे वह अतिगौर, स्त्रियोंमें रक्तचित्तवाला, राजा करके पीडित, दूत, प्रसन्न रहनेवाला, प्रियवाणीमें निपुण, योगी और चतुर होता है ॥ १-३ ॥

कर्कोदये गौरवपुर्मनुष्यः पित्ताधिकः कल्पतरुः प्रगल्भः।
जलावगाहातुरतोऽतिबुद्धिः शुचिः क्षमी धर्मरुचिः सुसेव्यः ॥ ४ ॥
सिंहोदये पाण्डुतनुर्मनुष्यः पित्तानिलाभ्यां परिपीडिताङ्गः।
प्रियामिषो रम्यरसः सुतीक्ष्णः शूरः प्रगल्भः सुतरां च गंता ॥ ५ ॥

कन्याख्यलग्ने कफपित्तयुक्तो भवेन्मनुष्यः शुभकान्तभावनः।
श्लेष्मप्रजः स्त्रीविजितो न भीरुर्मायाधिकः कायकदर्थिताङ्गः॥६॥

जिसके कर्कराशि लग्नमें स्थित हो वह गौरशरीरवाला, अधिक पित्तवाला, कल्पतरु (दाता), प्रगल्भ, जलक्रीडामें रत, अतिबुद्धिमान्, पवित्र, दयावान्, धर्ममें रुचिवाला और श्रेष्ठ मनुष्योंकरके सेव्य होता है। जिसके सिंहराशि लग्नमें स्थित हो वह पांडुशरीरवाला, पित्तवायुकरके पीडित अंगवाला, मांसको प्रिय माननेवाला, रसका रम्य, बडा तीक्ष्ण शूर (वीर) प्रगल्भ और अतिशय चलनेवाला होता है। जिसके लग्नमें कन्याराशि स्थित होय वह कफपित्तवाला, सुन्दरकान्तिवाला, श्लेष्माकरके कन्याकी सन्तानवाला, स्त्रियोंकरके जीताहुआ, डरपोक नहीं, अधिक माया करनेवाला और कायकदर्थित अंगोंवाला होता है॥ ४-६॥

तुले विलग्ने च भवेन्मनुष्यः श्लेष्माऽन्वितः सत्यपरः सदैव।
पराप्रियः पार्थिवमानयुक्तः सुरार्चने तत्पर एव कल्पः॥ ७॥
लग्नेऽष्टके कोपधरो जरावान्भवेन्मनुष्यो नृपपूजिताङ्गः।
गुणान्वितः शास्त्रकथानुरक्तः प्रमर्दकः शत्रुगणस्य नित्यम्॥८॥
धनोदये राजयुतो मनुष्यः कार्ये प्रवीणो द्विजदेवरक्तः।
तुरङ्गयुक्तः सुहृदप्रयुक्तस्तुरङ्गजङ्घश्च भवेत्सदैव॥ ९॥

जिसके तुला राशि लग्नमें स्थित होय वह कफकरके युक्त, सदा सत्य बोलनेवाला, स्त्रीमें रत, पार्थिवमान करके युक्त और देवताओंके पूजनमें तत्पर होता है। जिसके वृश्चिक राशि जन्मलग्नमें पडे वह क्रोधवान्, जरावान्, राजाओंकरके पूजित, गुणोंकरके सहित, शास्त्रकी कथामें प्रीति करनेवाला और सदैव शत्रुओंका नाश करनेवाला होता है। जिसके धनराशि लग्नमें पडी हो वह राजाकरके संयुक्त, कार्यविषे प्रवीण, ब्राह्मण और देवताओंमें तत्पर, घोडेकरके सहित, मित्रोंकरके युक्त और घोडेकीसी जांघवाला सदैव होता है॥ ७-९॥

मृगोदये तोयरतः सुतीव्रो भीरुः सदा पापरतश्च मूर्तिः।
श्लेष्मानिलाभ्यां परिपीडिताङ्गः सुदीर्घगात्रः परवञ्चकश्च॥ १०॥
घटोदये सुस्थिरतासमेतो वाताधिकस्तोयनिषेवणोक्तः।
सुहृत्स्वगात्रः प्रमदास्वभीष्टः शिष्टानुरक्तो जनवल्लभश्च॥ ११॥
मीनोदये तोयरतो मनुष्यो भवेद्विनीतः सुरतानुकूलः।
सुपण्डितः सूक्ष्मतनुः प्रचण्डः पित्ताधिकः कीर्तिसमन्वितश्च॥१२

जिसके मकरराशि जन्मलग्नमें पडे वह सन्तोषकरके युक्त, तीव्र, डरपोक, सदा पापमें रत, कफ और अनिलकरके पीडित अंगवाला, दीर्घगात्र और परवंचक होता है। जिसके कुम्भराशि लग्नमें स्थित होय वह स्थिरतायुक्त, अधिक वातवाला, जलका सेवन करनेवाला, उत्तम शरीरवाला, स्वरूपवान्, स्त्रीवाला, अच्छे मनुष्योंकरके युक्त और पुरुषोंको प्यारा होता है। जिसके मीनराशि लग्नमें पडै वह जलमें रत रहनेवाला, नम्रतायुक्त, सुन्दर रतके अनुकूल, श्रेष्ठ पंडित, सूक्ष्मशरीर, प्रचंड, अधिकपित्तवाला और कीर्तिकरके संयुक्त होता है ॥ १०–१२ ॥ इति तनुभावस्थराशिफलम् ॥

अथ धनभावस्थितराशिफलम् ।

मेषे धनस्थे कुरुते मनुष्यो धनं सपुण्यैर्विविधैः प्रभूतैः ।
सुनीतियुक्तं तनयं प्रसूते चतुष्पदाढ्यं बहुपण्डितज्ञम् ॥ १ ॥
वृषे धनस्थे लभते मनुष्यः कृषिप्रसादे च धनं सदैव ।
अनाभिघातं च चतुष्पदाख्यं तथा हिरण्यं मणिमुक्तकोऽर्थम् ॥
तृतीयलग्ने धनगे मनुष्यो धनं लभेत्स्त्रीजनतश्च नित्यम् ।
रूप्यं तथा काञ्चनजं प्रभूतं हयाधिकं साधुभिरेव सख्यम् ॥ ३ ॥

जिसके जन्मसमयमें मेषराशि धनभावमें स्थित होय वह अच्छे पुण्योंकरके अनेक प्रकारका धनसंचय करनेवाला, सुंदर नीतिकरके युक्त, पुत्रवाला, चतुष्पदोंकरके युक्त और बहुत पांडित्य जाननेवाला होता है। जिसके वृषराशि धनभावमें स्थित होय वह खेतीद्वारा धनको प्राप्त होता है तथा अनाभिघातको, चतुष्पदको, सोना, मणि और मुक्ताओंको प्राप्त होनेवाला होता है। जिसके मिथुनराशि धनभावमें स्थित होय वह स्त्रीजनित द्रव्यको, रौप्यको, कांचनजनित प्रभूत भूषणोंको, अधिक घोडोंको तथा साधुकरके मित्रताको प्राप्त होता है ॥ १--३ ॥

चतुर्थराशिर्धनगो मनुष्यो धनं लभेद्वृक्षजमेव नित्यम् ।
जलाद्भयं यद्वनमिष्टभोज्यं नयार्जितं प्रीतिकरं सुतानाम् ॥ ४ ॥
सिंहे धनस्थे लभते मनुष्यो धनं तपोऽरण्यजनात्तु मानम् ।
सर्वोपकारप्रवणं प्रभूतं स्वविक्रमोपार्जितमेव नित्यम् ॥ ५ ॥
कन्योदये वित्तगते मनुष्यो धनं लभेद्भूमिपतेः सकाशात् ।
हिरण्यमुक्तामणिरौप्यजालं गजाश्वनानाविधवित्तजं च ॥ ६ ॥

जिसके कर्कराशि धनभावमें स्थित होय वह वृक्षज धनको, जलसे भयको, सुंदर भोज्य वस्तुको प्राप्त करनेवाला और नीतिद्वारा सुतोंसे प्रीति करनेवाला होता है।

जिसके सिंहराशि धनभावमें स्थित होय वह वनवासी मनुष्यों करके धन तथा मानको एवं सर्वोपकारको, अधिक चतुरताको तथा अपने पराक्रम करके पैदा किये हुए धनको प्राप्त होता है । जिसके कन्याराशि धनभावमें पडे वह राजाओंके सकाशसे धनको, सोना, मुक्तामणि तथा रौप्यादिको और हाथी घोडोंको तथा अनेक प्रकारसे उत्पन्न धनको प्राप्त होता है ॥ ४-६ ॥

तुले धनस्थे बहुपुण्यजातं धनं मनुष्यो लभते प्रभूतम् ।
पाषाणजं मृन्मयपात्रजातं सस्योद्भवं कर्मजमेव नित्यम् ॥ ७ ॥
धने त्वलिर्लग्नगतश्च यस्य स्वधर्मशीलं प्रकरोति नित्यम् ।
विलासिनीकामपरं सदैव विचित्रवाक्यं द्विजदेवभक्तम् ॥ ८ ॥
धनुर्धरे वित्तगते मनुष्यो धनं लभेत्स्थैर्यविधानजातम् ।
चतुष्पदाढ्यं विविधं यशस्वी रसोद्भवं धर्मविधानलब्धम् ॥ ९ ॥

जिसके तुलाराशि धनभावमें स्थित होय वह बहुत पुण्यसे उत्पन्न, अधिक धनको तथा पाषाण करके उत्पन्न धनको, मृत्तिका पात्रकरके उत्पन्न धनको, खेतीकरके उत्पन्न धनको तथा कर्मसे उत्पन्न धनको प्राप्त होता है। जिसके वृश्चिकराशि धन-भावमें स्थित होय वह सदा स्वधर्मशीलवान्, स्त्रीभोगी, विचित्र वाणी बोलनेवाला और ब्राह्मण तथा देवताओंका भक्त होता है। जिसके धनराशि धनभावमें स्थित होय वह मनुष्य धैर्यकरके धन प्राप्त करता है. चतुष्पदकरके युक्त, अनेक प्रकारके यशसहित, रसोंकरके उत्पन्न धर्मविधि करके धन लब्ध (लाभ) करता है ॥ ७-९ ॥

मृगे धनस्थे लभते मनुष्यो धनं प्रपञ्चैर्विविधैरुपायैः ।
सेवासमुत्थं च सदा नृपाणां कृषिक्रियाभिश्च विदेशसङ्गात् ॥ १० ॥
घटे धनस्थे लभते मनुष्यो धनं प्रभूतं फलपुष्पजातम् ।
जनोद्भवं साधुजनस्थभोज्यं महाजनोत्थं च परोपकारी ॥ ११ ॥
मत्स्ये धनस्थे लभते मनुष्यो धनं प्रभूतैर्नियमोपवासैः ।
विद्याप्रभावान्निधिसङ्गमाच्च मातापितृभ्यां समुपार्जितं च ॥ १२ ॥

जिसके मकरराशि धनभावमें स्थित होय वह मनुष्य अनेक प्रपंच तथा उपायोंके द्वारा धनको लाभ करता है. राजाओंकी सेवामें तत्पर, खेतीकी क्रिया और विदेशसं-गसे धनवान् होता है । जिसके धनभावमें कुंभलग्न स्थित होय वह मनुष्य फल पुष्प-करके उत्पन्न हुए धन करके युक्त होता है और मनुष्यों तथा महाजनोंसे उत्पन्न

साधुजनके भोज्यको प्राप्त होता है और परोपकारी होता है। जिसके मीनराशि धनभावमें स्थित होय वह नियम और व्रत करके धनको लाभ करता है. विद्याके प्रभाव करके धनके संगमवाला होता है और मातापिताके उपार्जित कियेहुये धन करके धनवान् होता है ॥ १०-१२ ॥ इति धनभावस्थराशिफलम् ॥

अथ तृतीयभावस्थराशिफलम् ।

तृतीयसंस्थे प्रथमे च राशौ मित्रं द्विजातिश्च भवेन्मनुष्यः ।
परोपकारैः श्रवणैः शुचिश्च प्रभूतविद्यो नृपपूजिताङ्गः ॥ १ ॥
वृषे तृतीये लभते मनुष्यो मित्रं नरेन्द्रं प्रचुरप्रतापम् ।
सुवित्तदं भूरियशोनिधानं सूरिं कविं ब्राह्मणरक्तचित्तम् ॥ २ ॥
तृतीयसंस्थे मिथुने च लग्ने करोति मर्त्यं वरयानयुक्तम् ।
स्त्रीवल्लभं सत्यमुदारचेष्टं कुलाधिकं पूज्यतमं नृपाणाम् ॥ ३ ॥

जिसके मेषराशि तीसरे भावमें स्थित होय वह ब्राह्मण मित्रवाला, परोपकार करके तथा श्रवणकरके पवित्र, अधिक विद्यावाला और राजपूजित होता है। जिसके तीसरे भावमें वृषराशि स्थित होय वह मित्र राजाको पानेवाला, अधिक प्रतापवाला, अधिक वित्त (धन) दायक, अधिक यशस्वी, पंडित, कवि और ब्राह्मणमें रत चित्तवाला होता है। जिसके तीसरे भावमें मिथुन राशि स्थित होय वह वर (श्रेष्ठ) सवारी करके युक्त, स्त्रियोंका प्यारा, सत्य बोलनेवाला, उदार चेष्टावाला, अधिक कुलवाला और राजाओंका पूज्यतम होता है ॥ १-३ ॥

कुलीरराशौ सहजं प्रयाते मित्रं लभेद्वैश्यगुरुप्रवेशे ।
कृषीवलं धर्मकथानुरक्तं सदा सुशीलं मुदसंमतं च ॥ ४ ॥
सिंहे तृतीये लभते मनुष्यः शूरं कुमित्रं वरवित्तलुब्धम् ।
वधात्मकं पापकथानुरक्तं प्रचण्डवाक्यं न हि गर्वितं च ॥ ५ ॥

जिसके कर्कराशि तृतीयभावमें स्थित होय वह वैश्य मित्रवाला, खेतीकरनेवाला धर्मकथामें रत रहनेवाला, सदा सुशीलवान् और हर्ष करके युक्त होता है। जिसके सिंहराशि तीसरे भावमें स्थित होय वह शूर, दुष्ट मित्रवाला, अधिक धनका लोभी, वधिक, पापवार्तामें रत, प्रचंड वाणीवाला और गर्वकरके रहित होता है ॥ ४ ॥ ५ ॥

तृतीयभावे स्थितलग्नकन्या शस्त्रानुरक्तं मनुजं सुशीलम् ।
नानासुहृत्संस्तुतकल्पकोपं प्रियद्विजं देवगुरुप्रभक्तम् ॥ ६ ॥

तृतीयसंस्थे तु तुलाभिधाने मैत्री भवेत्पापपरैर्मनुष्यैः।
लौल्यात्मको लौल्यकथानुरक्तः सार्द्धं मनुष्यस्य सुताद्धमुक्ते॥७॥
अलौ तृतीये च भवेन्मनुष्यो मन्त्री सदा पापजनैर्दरिद्रैः।
कृतघ्नघातैः कलहानुरक्तैर्व्यपेतलक्षैर्जनताविरुद्धैः॥८॥
चापे तृतीये लभते मनुष्यो मन्त्री सुशूरो नृपसेवकश्च।
चित्तैः स्वकैर्धर्मपदैः प्रसन्नैः कृपानुरक्तै रणकोविदैश्च॥९॥

जिसके कन्याराशि तीसरे भावमें स्थित होवे वह शस्त्रोंमें रत, सुंदर, शीलवान्, बहुत मित्रोंवाला, अधिक क्रोधवान्, ब्राह्मणका प्यार करनेवाला, देवता और गुरुका भक्त होता है। जिसके तुलाराशि तीसरे भावमें स्थित हो वह दुष्टजनोंसे मित्रतावाला विषयी और विषयके वार्तामें रत रहनेवाला, थोडी संतानवाला और मनुष्योंकरके संयुक्त होता है। जिसके वृश्चिकराशि तीसरे भावमें पडे वह दुष्ट और दरिद्री जनोंकी मित्रतावाला, हिंसा करनेवाला, कलहमें अनुरक्त, व्यपेतलक्ष और जनविरुद्धताकरके संयुक्त होता है। जिसके तीसरे भावमें धनु राशी होवे वह योद्धाजनोंकी मित्रतावाला, राजाका सेवक स्वधर्मकरके प्रसन्नचित्तवाला, दयावान् और रणमें चतुर होता है॥६-९॥

नक्रस्तृतीये च नरस्य यस्य करोति सौम्यं सततं सुताद्यम्।
नित्यं सुहृद्देवगुरुप्रसक्तं महाधनं पण्डितमप्रमेयम्॥१०॥
कुम्भस्तृतीये लभते मनुष्यो मैत्री व्रतज्ञैर्बहुकीर्तियुक्तैः।
क्षमाधिकैः सत्यपरैः सुशीलैर्गीतप्रियैर्गोपपरैः खलैश्च॥११॥
तृतीयभावे स्थितमीनराशौ नरं प्रसूतं बहुवित्तयुक्तम्।
पुत्रान्वितं पुण्यधनैरुपेतं प्रियातिथिं सर्वजनाभिरामम्॥१२॥

जिसके मकरराशि तीसरे भावमें स्थित हो वह सदा सुतआदिकरके युक्त, सुशील, सदा मित्र, देवता और गुरुकी भक्तिमें तत्पर बहुत धनवान् और पंडित होता है। जिसके तीसरे भावमें कुंभ राशि पडी हो वह नियमको जाननेवाला और बहुत कीर्त्तिमान् मनुष्योंकी मित्रतावाला, अधिक क्षमावान्, सत्यवादी, सुंदरशीलवाला, गान विद्यासे प्यार करनेवाला, ग्रामाधिकारी और खल होता है। जिसके मीनराशि तीसरे भावमें स्थित हो वह बहुत धनकरके संयुक्त, पुत्रसहित तथा पुण्य धनको संग्रह करनेवाला, प्रिय अतिथिवाला और सर्वजनोंका प्यारा होता है॥१०-१२॥

इति सहजभावस्थराशिफलम्॥

अथ सुहृद्भावस्थराशिफलम् ।

मेषे सुखस्थे लभते सुखं च चतुष्पदेभ्योऽथ विलासिनीभ्याम् ।
भोगैर्विचित्रैः प्रचुरान्नपानैः पराक्रमोपार्जितमर्दनैश्च ॥ १ ॥
वृषे सुखस्थे लभते सुखानि नरोऽतिमान्यैर्विविधैश्च मान्यैः ।
शौर्येण भूपालनिषेवणेन प्रियोपचारैर्नियमैर्व्रतैश्च ॥ २ ॥
तृतीयराशौ सुखगे सुखानि लभेन्मनुष्यः प्रमदाकृतानि ।
जलावगाहैर्वनसेवया च प्रभूतपुष्पाम्बरसेवनेन ॥ ३ ॥

जिसके जन्मसमयमें मेषराशि चतुर्थ भावमें पडी होय वह चौपायों और स्त्रियों करके सुखको पानेवाला और पराक्रम करके उपार्जित और संग्रह किये हुए प्रचुर अन्नपान और विचित्र भोगोंवाला होता है । जिसके वृषराशी चतुर्थभावमें स्थित होवे वह मान्य, पूज्यता करके और पराक्रम करके, राजाकी सेवा करके, उत्तम पूजा करके, नियम और व्रत करके सुखको प्राप्त होता है, जिसके मिथुनराशि चतुर्थभावमें स्थित हो वह स्त्रीकृत और जलमें गोता लगानेसे, वनव्यापार करके और बहुत पुष्प और वस्त्रके व्यापार करके सुखको पाता है ॥ १–३ ॥

कुलीरराशौ च यदा सुखस्थे नरं सुरूपं सुभगं सुशीलम् ।
स्त्रीसंमतं सर्वगुणैः समेतं विद्याविनीतं जनवल्लभं च ॥ ४ ॥
सिंहे सुखस्थे न सुखं मनुष्यः प्राप्नोति जातु प्रचुरप्रकोपात् ।
कन्याप्रसूतिं च दरिद्रसङ्गान्नरो भवेच्छीलविवर्जितश्च ॥ ५ ॥
कुमित्रसङ्गो धनसंश्रयाच्च कन्यागृहे बन्धुगृहे मनुष्यः ।
पैशुन्यसंघाल्लभतेऽसुखानि चौर्येण शुद्धेन विमोहनेन ॥ ६ ॥

जिसके कर्कराशि चतुर्थ भावमें स्थित हो वह सुरूपवान्, मनोहर, सुंदर, शीलवाला, स्त्रीके संमतवाला, सर्व गुणोंकरके संयुक्त. विद्याविनीत और मनुष्योंका प्यारा होता है । जिसके सिंहराशि चतुर्थ भावमें स्थित हो वह कभी भी क्रोधके कारण सुखको नहीं प्राप्त होता है और कन्याओंकी संतानवाला और दरिद्रताके कारण शीलरहित होता है । जिसके चतुर्थ भावमें कन्याराशि स्थित होवे वह धनके कारण दुष्टमित्रवाला पैशुन्यसंघ अर्थात् छली, परपंचियाके संघसे चोरीसे पवित्रता और विमोहनसे असुखको प्राप्त होता है ॥ ४–६ ॥

तुले सुखस्थे च नरस्य यस्य करोति सौम्यं शुभकर्मदक्षम् ।
विद्याविनीतं सततं सुखाढ्यं प्रसन्नचित्तं विभवैः समेतम् ॥ ७ ॥

अलौ चतुर्थे च यदा समेतं नरं सुतीक्ष्णं परभीतचित्तम् ।
प्रभूतसेवं गतवीर्यदर्पं वरैः सुदक्षं मतिभृद्विहीनम् ॥ ८ ॥
चापे सुखस्थे लभते मनुष्यः सुखं सदा सङ्गरसेवनेन ।
तत्कीर्तनेनैव हयैर्विचित्रैः सेवासुखं स्वेन निबन्धनेन ॥ ९ ॥

जिसके तुलाराशि चतुर्थ भावमें स्थित हो वह सरलस्वभाव, शुभकर्ममें दक्ष, विद्याविनीत, सदा सुख करके युक्त, प्रसन्नचित्त और विभवसंयुक्त होता है । जिसके चतुर्थ भावमें वृश्चिकराशि होवे वह बडा तीक्ष्ण और डरपोक, बहुत सेवावाला, पराक्रम मान करके हीन, बडा दक्ष और बुद्धिहीन होता है। जिसके धनुराशि चतुर्थभावमें स्थित होवे वह संगरसेवा और उसके कीर्तन करके उत्तम घोडोंके व्यापार करके और अपने निबंधन करके सदा सुखको प्राप्त होता है ॥ ७-९ ॥

मृगे सुखस्थे सुखभाङ्मनुष्यः सदा भवेत्तोयनिषेवणेन ।
उद्यानवापीतटसङ्गमेन मित्रोपचारैः सुरतप्रधानैः ॥ १० ॥
घटे सुखस्थे प्रमदाभिधानात्प्राप्नोति सौख्यं विविधं मनुष्यः ।
मिष्टान्नपानैः फलशाकपत्रैर्विदग्धवाक्यैश्चोत्साहकारैः ॥ ११ ॥
मीने सुखस्थे तु सुखं मनुष्यः प्राप्नोति सौख्यं जलसंश्रयेण ।
शनैश्चरो देवसमुद्भवैश्च स्थाने सुवस्त्रैः सुधनैर्विचित्रैः ॥ १२ ॥

जिसके मकरराशि चतुर्थ भावमें पडी होय वह सदा जलसेवन करके, उद्यान बावलीके तटके संगमकरके, मित्रसेवा करके और श्रेष्ठ मनुष्योंके सुखका भोगनेवाला होता है। जिसके कुंभराशि चतुर्थ भावमें स्थित हो वह स्त्रीके यश कीर्तन करके अनेक सुखोंको पाता है और मिष्टान्न पान करके, फल-शाक-पत्र करके, चतुरताकी वार्ता करके और उत्साह करके सुखोंको भोगता है । जिसके मीन राशि चतुर्थ भावमें स्थित हो वह जलके संश्रय करके सौख्यको पाता है और शनैश्चरदेवसे उत्पन्न विचित्र सुंदरवस्त्रों और धनसे संयुक्त होता है ॥ १०-१२ ॥ इति सुखभावस्थराशिफलम् ॥

अथ पंचमभावस्थराशिफलम् ।

मेषे सुतस्थे लभते मनुष्यः प्रियेण पुत्रान्वितचेतसा च ।
सुरात्सुखानीह कृतानि चान्यात्पापानुरक्ताकुलचित्तयुक्ताः ॥ १ ॥
वृषे सुतस्थे लभते मनुष्यः प्राप्नोति कन्यां सुभगां सुरूपाम् ।
अपत्यहीनां बहुकान्तियुक्तां सदानुरक्तां निजभर्तृधर्मे ॥ २ ॥

तृतीयराशौ सुतगे मनुष्यः प्राप्नोत्यपत्यानि मनःसुखानि।
सुशीलयुक्तानि गुणाधिकानि प्रीत्या समेतानि बलाधिकानि ॥३॥
कर्के सुतस्थे जनयेन्मनुष्यः पुत्रान्प्रसिद्धान्सुतलाभतश्च।
विस्तीर्णकीर्तींश्च महानुभावान्धनेन युक्तान्विनयेन युक्तान् ॥४॥

जिसके जन्मसमय मेषराशि पंचमभावमें स्थित हो उसको प्रियपुत्र युक्त चित्तवाले देवताओं तथा दूसरों करके सुख पानेवाले, पापी और व्याकुल चित्तवाले पुत्र प्राप्त होते हैं। जिसके वृषराशि पंचमभावमें स्थित हो वह मनोहर सुंदररूपवाली संतानहीन बहुत शोभा करके युक्त और पतिधर्ममें तत्पर कन्यावाला होता है। जिसके मिथुनराशि पंचमभावमें स्थित हो वह मनोवाञ्छित सुखवाली सुन्दरशील करके युक्त, अधिक गुणवान्, प्रीतियुक्त और अधिक बलवान् संतानको पानेवाला होता है। जिसके कर्कराशि पंचमभावमें जन्मसमय पडे वह प्रसिद्ध, सुतसे लाभवाले, विख्यात कीर्तिवाले, बहुत अनुभववाले, धन और विनयकरके युक्त पुत्रोंवाला होता है ॥ १-४॥

सिंहे सुतस्थे जनयेन्मनुष्यः क्रूरस्वभावान्नयनेन कान्तान्।
मांसप्रियान् स्त्रीजनकान् सुतीव्रान्विदेशभाजः क्षुधया समेतान् ५
कन्या यदा पञ्चमगा तदा स्युः कन्या नराणां तनयैर्विहीनाः।
पतिप्रियाः पुण्यतराः प्रगल्भाः प्रशान्तपापाः प्रियभूषणाश्च ॥६॥

जिसके जन्मसमय सिंहराशि पंचमभावमें स्थित हो वह क्रूरस्वभाववाले, मनोहर नेत्रोंवाले, मांससे प्यार करनेवाले, स्त्रियोंवाले, बडे तीव्र परदेशमें रहनेवाले और क्षुधावाले पुत्रोंको उत्पन्न करता है। जिसके कन्याराशि पंचम भावमें स्थित हो वह पुत्रों करके हीन, पतिको प्यारी, बहुत पुण्यवती, प्रगल्भा, पापरहिता और प्रियभूषणा कन्याओंवाला होता है ॥ ५ ॥ ६ ॥

तुला यदा पञ्चमगा नराणां तदा सुशीलानि मनोहराणि।
भवन्त्यपत्यानि सरूपकाणि क्रियासमेतानि शुभेक्षणानि ॥ ७॥
कीटे सुतस्थे जनयेन्नृयोनौ पुत्रान्मनुष्यः सुभगान्सुशीलान्!
अज्ञातदोषान्प्रणयेन युक्तान्निजेऽत्र धर्मे सततं मनुष्यः ॥ ८ ॥
चापे सुतस्थे जनयेन्मनुष्यः सुतान्विचित्रान् हयलुब्धलक्षान्।
धानुष्कचर्यान् हतशत्रुपक्षान् सेवाप्रियान्पार्थिवमानयुक्तान् ॥९॥

जिसके तुलाराशि पंचम भावमें स्थित होवे उसके सुंदर, शीलवान्, मनोहर स्वरूपवान् क्रिया करके युक्त और दर्शनीय संतान उत्पन्न होती हैं। जिसके वृश्चिकराशि पंचमभावमें स्थित हो वह मनुष्य मनोहर, सुशीलवान्, अज्ञातदोष अपने धर्ममें नम्रतायुक्त पुत्रोंको नहीं उत्पन्न करता है। जिसके धनुराशि पंचमभावमें स्थित हो वह मनुष्य विचित्र लाखों घोडोंकी आकांक्षावाले, धनुर्बाण धारण करनेवाले, शत्रुओं करके हीन, सेवा प्रिय और राजाके मानकरके युक्त पुत्रोंको उत्पन्न करता है॥ ८-९॥

मृगे सुतस्थे जनयेन्मनुष्यः पुत्रान् सदा पापमतीन् कुरूपान्।
क्लीबान् सुभावान्विगतप्रभावान् सुनिष्ठुरान्प्रेमविवर्जितांश्च॥१०॥
कुंभे सुतस्थे स्थिरतासमेतान् गम्भीरचेष्टानतिसत्ययुक्तान्।
पुत्रान्मनुष्यो जनयेत्प्रसिद्धान्कष्टंसहान्पुण्ययशःप्रभूतान्॥११॥
मीने सुतस्थे ललितान् सुरक्तान् पुत्रान्मनुष्यो लभते व्यवायात्।
रोगैः समेतांश्च सदा कुरूपान् सहास्यकान्स्त्रीसहितान् सदैव॥१२॥

जिसके मकर राशि पंचम भावमें पडी हो वह पापबुद्धिवाले, कुरूप सुभाव करके नपुंसक प्रतापतेजहीन बडे निर्दयी और प्रेम करके रहित पुत्रोंवाला होता है। जिसके कुंभराशि पंचमभावमें पडे वह स्थिरता युक्त, गंभीर चेष्टावाले सत्य करके युक्त, प्रसिद्ध, कष्ट सहनेवाले और बहुत पुण्ययशवाले पुत्रोंवाला होता है। जिसके मीनराशि पंचमभावमें पडे वह मनुष्य स्त्री प्रसंग करके ललित, रक्तवर्ण, रोग करके युक्त, कुरूप सदा हास्य और स्त्रीकरके संयुक्त पुत्रोंको पानेवाला होता है॥ १०-१२॥

इति सुतभावस्थराशिफलम्।

अथ षष्ठभावस्थराशिफलम्।

मेषे रिपुस्थे प्रभवन्ति वैरं सदा नराणां वृषभे रिपुस्थे।
अपत्यमार्गे गतमङ्गनानां सङ्गो नितान्तं निजबन्धुवर्गे॥१॥
तृतीयराशौ रिपुगे नराणां वैरं भवेत्स्त्रीजनितं सदैव।
तथा नराणां न हितं च पापैर्वणिग्जनैर्नीचजनानुरक्तैः॥२॥
कर्के रिपुस्थे सहसा भयं च भवेन्मनुष्यस्य सुतातुरस्य।
समं द्विजेन्द्रैश्च नराधिपैश्च महाजनैनैव परानुरोधात्॥३॥

जिसके जन्मसमयमें मेषराशि छठे भावमें पडे उस मनुष्यको सदा वैर होता है और जिसके वृषराशि छठे भावमें पड़े उसको अपने बंधुवर्गमें तथा अपत्यमार्गमें

प्राप्त स्त्रियोंके संगकरके वैर प्राप्त होता है । जिसके मिथुनराशि छठे भावमें स्थित हो उसको स्त्रीजनित तथा पापीजनों,वणिग्जनों और नीचजनोंकी संगति करके वैर प्राप्त होता है । जिसके कर्कराशि छठे भावमें स्थित हो उसको अकस्मात् कभी भय होजावे और ब्राह्मणों राजाओं और महाजनों तथा दूसरोंकी मित्रतासे समभाव प्राप्त होता है ॥ १-३ ॥

सिंहे रिपुस्थे प्रभवेच्च वैरं पुत्रीसमं बन्धुजनेन नित्यम् ।
धने क्षमात्तस्य विनिर्जितं च यद्वा मनुष्यस्य वराङ्गनाभिः ॥४॥
कन्यास्थिते शत्रुगृहे स्ववैरैरसंयुतानि प्रभवेन्नराणाम् ।
दुश्चारिणीभिश्च सुनिम्ननाभिर्वेश्याभिरेवाश्रयवर्जिताभिः ॥ ५ ॥
तुलाधरे शत्रुगृहे नरस्य निधिस्थितस्य प्रभवेच्च वैरम् ।
कार्ये सुधर्मस्य नरस्य साधोः स्वबन्धुवर्गाच्च निजालयश्च ॥६॥

जिसके सिंहराशि छठे भावमें स्थित होय उसे बंधुजनकरके पैदा कियेहुए धन भूमिके निमित्त अथवा स्त्रियोंकरके सदा शत्रुता होती है । जिसके कन्याराशि शत्रुभावमें स्थित हो उसको अपने जनोंकी संगतिसे अथवा दुश्चारिणी तथा गंभीर नाभिवाली और आश्रयरहित वेश्याओंकरके वैर होता है । जिसके तुलाराशि छठे भावमें स्थित होवे उसको धरेहुए धनके कारण धर्मके कार्यहेतु बंधुवर्गोंसे अपने स्थानसे वैर प्राप्त होता है ॥ ४-६ ॥

कौर्पे रिपुस्थे प्रभवन्ति वैरं सार्द्धं द्विजिह्वैश्च सरीसृपैश्च ।
व्यालैर्मृगैश्चोरगणैर्नराणां सर्वैः सुधान्यैश्च विलासिभिश्च ॥ ७ ॥
चापे रिपुस्थे च भवेच्च वैरं शरैः समेतं च सरागकैश्च ।
सदा मनुष्यैश्च हयैश्च हस्तिभिः पुण्यैस्तथान्यैः परवञ्चनाच्च ॥८॥
मृगे रिपुस्थे च भवेच्च वैरं सदा नराणां धनसंभवं च ।
मित्रैः समं साधुजने सहाये प्रभूतकालं गृहसम्भवं च ॥ ९ ॥

जिसके वृश्चिकराशि छठे भावमें स्थित हो उसको दो जिह्वावालों अर्थात् चुगुलखोर और सांपोंके साथ, सिंह, मृग और चोरोंकरके, धान्य करके और विलासिनी स्त्रियोंकरके वैर प्राप्त होता है । जिसके धनुराशि छठे भावमें स्थित हो उसको शरसंयुक्त सरागकोंसे, घोडों हाथियोंसे, पुण्यकरके तथा दूसरोंके वंचनासे वैर होता है । जिसके मकरराशि छठे भावमें स्थित हो उसको धनगृहसंबंधी बहुतकाल साधुजनोंकी सहायतासे मित्रकरके वैर होता है ॥ ७-९ ॥

कुम्भे रिपुस्थे च तथा हि तेजोनराधिपेनैव जलाश्रयैश्च।
वापीतडागादिभिरेव नित्यं क्षेत्राधिपाद्यैः पुरुषैः सुवेलैः ॥ १० ॥
मीने रिपुस्थे च भवेन्नराणां वैरं च नित्यं सुतवस्त्रजातम्।
स्त्रीहेतुकं स्वीयभवं पराणामपि प्रियाणामितरेतरं च ॥ ११ ॥

जिसके कुंभराशि छठे भावमें स्थित हो उसको बलवान् राजाकरके, जलाश्रयकरके, बावडी तडागादिकरके, क्षेत्राधिपकरके और श्रेष्ठपुरुषकरके भय होता है। जिसके मीनराशि छठे भावमें स्थित हो उसे सदा सुतवस्त्रजात स्त्रीहेतु अपनी एवं पराई संपदाके निमित्त शत्रुता होती है ॥ १० ॥ ११ ॥ इति षष्ठभावस्थराशिफलम् ॥

अथ सप्तमभावस्थराशिफलम्।

मेषेऽस्तसंस्थे च भवेत्कलत्रं क्रूरं नराणां च खलस्वभावम्।
पापानुरक्तं कठिनं नृशंसं वित्तप्रियं साध्यपरं सदैव ॥ १ ॥
वृषेऽस्तसंस्थे च भवेत्कलत्रं सुरूपकं वाक्प्रणतं प्रशान्तम्।
पतिव्रताचारुगुणेन युक्तं फलाधिकं ब्राह्मणदेवभक्तम् ॥ २ ॥
तृतीयराशौ च भवेत्कलत्रे कलत्रयुक्तं सुधनं सुवृत्तम्।
रूपान्वितं सर्वगुणोपपन्नं विनीतवेषं गुणवर्जितं च ॥ ३ ॥
कर्केण युक्ते च मनोहराणि सौभाग्ययुक्तानि गुणान्वितानि।
भवन्ति सौम्यानि कलत्रकाणि कलङ्कहीनानि सुसंयुतानि ॥ ४ ॥

जिसके मेषराशि जन्मसमय सातवें भावमें पडी हो वह क्रूरा, खलस्वभाववाली, पापकर्ममें तत्पर, कठिन, नृशंस, धनका प्यार करनेवाली और साध्य पर कलत्र (स्त्री) वाला होता है। जिसके वृषराशि सातवें भावमें स्थित हो वह सुरूपवती, नम्रवार्ता करनेवाली, पतिव्रता, चारुगुणकरके संयुक्त, अधिक संतानवाली, ब्राह्मण और देवताकी भक्तिसंयुक्तस्त्रीवाला होता है। जिसके सातवें भावमें मिथुनराशि स्थित होवे वह धनवती, सुवृत्ता, रूपवती, संपूर्णगुणोंकरके संपन्न, विनीतवेष और गुणरहित स्त्रीसे संयुक्त होता है। जिसके कर्कराशि सातवें भावमें पडे वह मनोहर, सौभाग्य और गुणसंयुक्त, सौम्य, कलंकरहित और शुभसंयुक्त स्त्रीवाला होता है ॥ १-४ ॥

सिंहेऽस्तसंस्थे च भवेत्कलत्रं तीव्रस्वभावं च खलं च दुष्टम्।
विहीनवेषं परसद्मयुक्तं वसुप्रियं स्वल्पकृतं कृशं च ॥ ५ ॥

कन्याऽस्तसंस्था च भवेत्सुदाराः सुरूपदेहास्तनयैर्विहीनाः ।
सौभाग्यभोगार्थनयेन युक्ताः प्रियंवदाः सत्यधनाः प्रगल्भाः ॥ ६ ॥
तुलेऽस्तसंस्थे गुणगर्विताङ्ग्यो भवन्ति नार्यो विविधप्रकाराः ।
पुण्यप्रिया धर्मपराः सुदान्तप्रसूतपुत्राः पृथिवीविनीताः ॥ ७ ॥
कीटेऽस्तसंस्थे विकलासमेता भवेच्च भार्या कृपणा नराणाम् ।
सुशिक्षिता च प्रणयेन हीना दौर्भाग्यदोषैर्विविधैः समेता ॥ ८ ॥

जिसके सातवें भावमें सिंहराशि पडै वह तीव्रस्वभाववाली, खल, दुष्टा, हीनभेष, परस्थानसंयुक्त रत्न द्रव्यादिका प्यार करनेवाली, थोडे उपकारवाली और दुर्बला स्त्रीवाला होता है। जिसके कन्याराशि सातवें भावमें स्थित हो वह सुरूपदेहा, पुत्र-हीना, सौभाग्य, भोग, अर्थ और नीतिकरके संयुक्त; प्रियवचन कहनेवाला, सत्यही धन जिनके और प्रगल्भा, सुंदर ऐसी स्त्रियोंवाला होता है। जिसके सातवें भावमें तुलाराशि स्थित होय वह गुणगर्विता, पुण्यप्रिया, धर्मपरा, सुदांत पुत्रोंको उत्पन्न करनेवाली, भूमिसंयुक्त, अनेक प्रकार स्त्रियोंवाला होता है। जिसके सातवें स्थानमें वृश्चिकराशि स्थित हो वह विकलता सहित, कृपण, सुंदर, शिक्षित, नम्रताकरके रहित, दुर्भगा और अनेक दोषोंकरके संयुक्त स्त्रीवाला होता है ॥ ५–८ ॥

चापेऽस्तसंस्थे च भवेत्कलत्रं नृणां सुदुष्टं विगतस्वभावम् ।
विस्रस्तलज्जं परदोषरक्षं युद्धप्रियं दम्भसमन्वितं च ॥ ९ ॥
मकरो यदिचेद् द्यूने भार्या दम्भान्विताऽधमा ।
निर्लज्जा लोलुपा क्रूरा दुःस्वभावा च दुःखिता ॥ १० ॥
घटेऽस्तसंस्थे च भवेत्कलत्रं नृणां सुदुष्टं विगतस्वभावम् ।
देवद्विजानां सततं प्रहृष्टं धर्मध्वजं सत्सु क्षमासमेतम् ॥ ११ ॥
मीनेऽस्तसंस्थे च विकारयुक्तं भवेत्कलत्रं कुमतं कुपुत्रम् ।
स्वधर्मशीलं प्रणयेन हीनं सदा नराणां विकलप्रियं च ॥ १२ ॥

जिसके धनुराशि सातवें भावमें पडै वह दुष्टा, विगतस्वभाववाली, विस्रस्तलज्जा, दूसरेके दोषकी रक्षा करनेवाली, कलहसे प्यार करनेवाली, दम्भयुक्त स्त्रीवाला होता है। जिसके सप्तमभावमें मकरराशि स्थित हो उसकी स्त्री कपटी, अधम (नीच) निर्लज्ज, लालची, क्रूर, दुष्टस्वभाववाली और क्लेशयुक्त होती है। जिसके सप्तम भावमें कुम्भराशि स्थित हो उसकी स्त्री दुष्टा, विगतस्वभाववाली, सदा देवता और

ब्राह्मणोंको प्रहृष्ट करनेवाली, धर्मकी ध्वजा और क्षमासंयुक्त होती है । जिसके मीन राशि सप्तमभावमें स्थित हो उसकी स्त्री विकारसंयुक्त, दुष्टमति और कुपुत्रवाली, अपने धर्ममें शीलवती, नम्रताकरके रहित और कलहको प्यार करनेवाली होती है ॥ ९-१२ ॥

इति जायाभावस्थराशिफलम् ॥

अथ अष्टमभावस्थराशिफलम् ।

मेषेऽष्टमस्थे च भवे नराणां भवेद्विदेशे तु रुजा स्थितानाम् ।
कथानुस्मृत्याथ विमूर्च्छितानां महाधनानामतिदुःखितानाम् ॥ १ ॥
वृषेऽष्टमस्थे च भवेन्नराणां मृत्युर्गृहे श्लेष्मकृताद्विकारात् ।
महाशनाद्वाथ चतुष्पदाद्वा रात्रौ तथा दुष्टजनादिसंगात् ॥ २ ॥
तृतीयराशौ च भवेन्नराणां मृत्युस्थिते मृत्युरनिष्टसङ्गात् ।
लाभोद्भवो वा रससंभवो वा गुदप्रकोपादथवा प्रमेहात् ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशि अष्टमभावमें स्थित हो तो उस मनुष्यका मरण परदेशमें रोगकरके, कथास्मृतिमूर्च्छाकरके होता है, वह मनुष्य धनवान्, अतिदुःखयुक्त होता है । जिस मनुष्यके वृषराशि अष्टमभावमें स्थित हो तो उस मनुष्यकी मृत्यु अपनेही देशमें कफविकारकरके अथवा अधिकभोजनविकारकरके अथवा चतुष्पादकरके वा दुष्टमनुष्योंके संग करके रात्रिमें होती है । जिस मनुष्यके अष्टम स्थानमें मिथुन राशि स्थित होय तो अनिष्टसंगसे लाभके पैदा होनेसे अथवा रसोत्पत्तिसे गुह्यरोग (अर्श) से वा प्रमेहसे उसकी मृत्यु कहनी चाहिये ॥ १-३ ॥

कर्केऽष्टमस्थे च जलोपसर्गात्कीटात्तथा चैव विभीषणाद्वा ।
भवेद्विनाशः परहस्ततो वा विदेशसंस्थस्य नरस्य तस्य ॥ ४ ॥
सिंहेऽष्टमस्थे च सरीसृपाच्च भवेद्विनाशो मनुजस्य सम्यक् ।
व्यालोद्भवो वापि वनाश्रितस्य चोरोद्भवो वाऽथ चतुष्पदाच्च ॥ ५ ॥
कन्या यदा चाष्टमगा विलासात्सदा स्वचित्तान्मनुजस्य विद्यात् ।
स्त्रीणां हि हिंस्राद्विषमाशनात्स्यात् स्त्रीणां कृते वा स्वगृहाश्रितस्य ॥ ६ ॥
तुलाधरे चाष्टमगे च मृत्युर्भवेन्नराणां द्विपदोत्थ एव ।
निशागमे संस्थकृतोपवासाद्विष्टिं च कोपोऽप्यथवा प्रतापात् ॥ ७ ॥

जिसके कर्कराशि अष्टमभावमें स्थित होय तो उस मनुष्यकी मृत्यु जलके उपसर्गसे अथवा कीडेकरके वा सर्पकरके, पराये हाथ करके परदेशमें होती है ।

जिसके सिंहराशि अष्टमभावमें स्थित हो तो उस प्राणीकी मृत्यु कीडेकरके अथवा सर्प करके वनाश्रितसे अथवा चोर वा चौपाये करके होती है । जिसके कन्याराशि अष्टम भावमें स्थित हो तो उस मनुष्यकी मृत्यु विलास करके वा अपने चित्तकरके स्त्रियोंके हिंसक करके अथवा अपने घरकी स्त्रीकरके विषमाशनके हेतुसे कहनी चाहिये । जिस मनुष्यके तुलाराशि अष्टमभावमें स्थित हो तो उसकी मृत्यु द्विपद करके, व्रत करनेसे, मलकोपसे अथवा प्रतापसे रात्रिमें होती है ॥ ४-७ ॥

स्थानेऽष्टमस्याष्टमराशिसङ्के नृणां विनाशो रुधिरोद्भवेन ।
रोगेण वा कीटसमुद्भवैश्च स्वस्थानसंस्थस्य विषोद्भवो वा॥८॥
चापेऽष्टमस्थे प्रभवेन्नराणां मृत्युः स्वसंस्थे शरताडनेन ।
गुह्योद्भवेनापि गदोद्भवेन चतुष्पदोत्थस्य जलोद्भवेन ॥ ९ ॥

जिसके वृश्चिकराशि अष्टमभावमें स्थित हो तो उस मनुष्यका विनाश रुधिरके विकारके रोगकरके, कीडेकरके अथवा विषसे अपने स्थानमें होता है । जिसके धनुराशि अष्टम भावमें स्थित हो उसकी मृत्यु बाणके लगनेसे अथवा गुदामें उत्पन्न रोगसे या चौपायोंकरके वा जलमें उत्पन्न हुए जीव ग्राह इत्यादि करके कहनी चाहिये॥८।९॥

मृगोऽष्टमस्थश्च नरस्य यस्य विद्यान्वितो मानगुणैरुपेतः ।
कामी च शूरोऽथ विशालवक्षाः शास्त्रार्थवित्सर्वकलासु दक्षः१०
घटेऽष्टमस्थे च भवेद्विनाशो वैश्वानरात्सद्मगताच्च जन्तोः ।
नानाव्रणैर्वायुभवैर्विकारैः श्रमात्तथा गेहविहीनमृत्युः ॥ ११ ॥
मीनेऽष्टमस्थे प्रभवेच्च मृत्युर्नृणामतीसारकृतश्च कष्टात् ।
पित्तज्वराद्वा सलिलाश्रयाद्वा रक्तप्रकोपादथवा च शस्त्रात्॥१२॥

जिसके मकरराशि अष्टम भावमें स्थित होय वह विद्यावान्, मान गुणकरके युक्त, कामी, शूर, विशालवक्षस्थलवाला, शास्त्रार्थ जाननेवाला और संपूर्ण कलाओंमें दक्ष होता है । जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुंभराशि अष्टमभावमें स्थित हो तो उस प्राणीके घर आग लगनेसे उसका नाश होता है, अनेक व्रण विकार: करके अथवा वायुसे उत्पन्न विकार करके वा श्रम करके परदेशमें मृत्यु होती है । जिसके मीनराशि अष्टम भावमें होय तो अतिसारकरके कष्टसे या पित्तज्वरसे अथवा जलके आश्रयसे वा रक्तकोपसे या शस्त्रके लगनेसे उसकी मृत्यु होती है ॥ १०-१२ ॥

इति अष्टमभावस्थराशिफलम् ॥

अथ धर्मभावस्थितराशिफलम्।

धर्मस्थिते चैव हि मेषलग्ने चतुष्पदोत्थं प्रकरोति धर्मम्।
तेषां प्रदानेन तु पोषणेन दयाविवेकेन सुपालनेन ॥ १ ॥
वृषे च धर्मे प्रगते मनुष्यो धर्मं करोत्येव धनप्रभूतम्।
विचित्रदानैर्बहुगोप्रदानैर्विभूषणाच्छादनभोजनेन ॥ २ ॥
तृतीयराशौ प्रकरोति धर्मं धर्माकृतिं सौम्यकृतं सदैव।
अभ्यागतोत्थं द्विजभोजनाद्वा दीनानुकम्पाश्रयमानसेवया ॥३॥
व्रतोपवासैर्विषमैर्विचित्रैः सदैव धर्मं कुरुते नरः सः।
धर्माश्रिते चैव चतुर्थराशौ तीर्थाश्रयाद्वा वनसेवनेन ॥ ४ ॥

जिसके मेषराशि नवमभावमें स्थित हो वह चौपायोंके दान अथवा पोषण और दया विवेक करके श्रेष्ठ, पालनद्वारा धर्म करनेवाला होता है। जिसके वृषराशि नवम भावमें स्थित होय वह मनुष्य धर्मका करनेवाला, अधिक धनवान्, विचित्र दान करके बहुत गोदान करके, वस्त्र भोजन भूषणादि करके शोभायमान होता है। जिसके मिथुनराशि नवमभावमें स्थित होय वह मनुष्य धर्म करनेवाला और अधर्म भी करनेवाला, सौम्यप्रकृति, सदैव अभ्यागतों करके अथवा ब्राह्मण भोजनसे अथवा दीनोंकी दयासे वा मानसे उनके आश्रयसे धर्मवान् होता है। जिसके कर्कराशि नवम भावमें स्थित होय वह व्रतोपवास करनेवाला, सदा विचित्र धर्म करनेवाला, तीर्थाश्रयी अथवा वनाश्रयी होता है ॥ १-४ ॥

आसंस्थिताचार्यह(?)सिंहराशौ धर्मं परेषां प्रकरोति मर्त्यः।
स्वधर्महीनोऽपि क्रियाभिरेव सुतीर्थरूपं विनयेन हीनम् ॥ ५ ॥
धर्माश्रितः स्याद्यदि षष्ठराशिः स्त्रीधर्मसेवां कुरुते मनुष्यः।
विहीनभक्तिर्बहुजन्मतश्च पाखण्डमाश्रित्य तथाऽन्यपक्षम् ॥ ६ ॥
तुलाधरे धर्मगते मनुष्यो धर्मं करोत्येव सदा प्रसिद्धम्।
देवद्विजानां परितोषणं च जनानुरागेण तथाऽद्भुतानाम् ॥ ७ ॥
धर्माश्रिते चाष्टमगे च राशौ पाखण्डधर्मं कुरुते मनुष्यः।
पीडाकरं चैव तथा जनानां भक्त्या विहीनं परपोषणेन ॥ ८ ॥

जिसके सिंहराशि नवम भावमें स्थित हो वह मनुष्य पराये धर्मको करनेवाला, अपने धर्म और क्रियासे हीन, तीर्थरूप और विनय करके रहित होता है। जिसके

कन्याराशि नवम भावमें स्थित होय वह मनुष्य स्त्रीधर्मकी सेवा करनेवाला, बहुत जन्मोंसे भक्तिहीन, पाखंड और अन्यपक्षकी सहाय करनेवाला होता है। जिसके तुलाराशि नवम भावमें स्थित होय वह सदा धर्म करनेवाला, प्रसिद्ध, देवता और ब्राह्मणोंको संतुष्ट करनेवाला, अनुरागयुक्त और अद्भुत होता है। जिसके वृश्चिकराशि नवम भावमें स्थित हो वह पाखंड धर्ममें तत्पर, मनुष्योंको पीडा करनेवाला, भक्ति और परपोषणसे हीन होता है ॥ ५-८ ॥

चापे तथा धर्मगते मनुष्यः करोति धर्मं द्विजदेवतर्पणम् ।
स्वेच्छान्वितं शास्त्रविनिर्मितं च प्रभूततोषं प्रथितं त्रिलोके ॥९॥
धर्माश्रिते चेन्मकरे मनुष्यः पापोऽस्त्यधर्मं कुरुते प्रतापम् ।
पश्चाद्विरक्तं च विडम्बनाभिः कौलं समाश्रित्य सदा च पक्षम् १०
कुम्भे च धर्मं प्रगतं च धर्मं पुंसां विधत्ते सुरसङ्गजातम् ।
वृक्षाश्रयोत्थं च तथा शिवं च आरामवापीप्रियता सदैव ॥ ११॥
धर्माश्रिते चैव हि मीनराशौ करोति धर्मं विविधं नृलोके ।
सत्सेवयाऽऽरामतडागजातं तीर्थाटनेनार्थसुखैर्विचित्रैः ॥ १२ ॥

जिसके धनुराशि नवमभावमें स्थित होय वह धर्मका करनेवाला, ब्राह्मणका भक्त, देवताओंका तर्पण करनेवाला, अपनी इच्छानुसार शास्त्रोंका बनानेवाला, अधिक सन्तोषवाला और तीनों लोकमें प्रसिद्ध होता है। जिसके मकरराशि नवमभावमें स्थित होय वह पापात्मा, अधर्म करनेवाला, प्रतापी होता है, पीछे विडंबनाकरके विरक्त होता है और कौलपक्षका सहाय करनेवाला होता है। जिसके कुम्भराशि नवमभावमें स्थित होय वह अच्छे धर्मका करनेवाला, देवताओंका तथा शिवका भक्त, बाग फुलवारी तालाबसे प्रीति करनेवाला होता है। जिसके मीनराशि नवमभावमें स्थित होय वह मनुष्य लोकमें विविध धर्मोंका करनेवाला, सत्सेवाकरके बाग तडागवाला, तीर्थाटन करके अनेक अर्थ और सुखवाला होता है ॥ ९-१२ ॥

इति नवमभावस्थराशिफलम् ॥

अथ दशमभावस्थितराशिफलम् ।

कर्माश्रितं मेषसुनामराशौ करोत्यधर्मं प्रवरं सुदुष्टम् ।
पैशुन्यरूपं विनयातिरिक्तं सुनिन्दितं साधुजनस्य लोके ॥ १ ॥
वृषेऽम्बरस्थे प्रकरोति कर्म व्ययात्मकं साधुजनानुकम्पम् ।

द्विजेन्द्रदेवातिथिभिर्विभाजकं ज्ञानात्मकं प्रीतिकरं सतां च ॥२॥
युग्मेऽम्बरस्थे प्रकरोति मर्त्यं कर्मप्रधानं गुरुभिः प्रदिष्टम् ।
कीर्त्याऽन्वितं प्रीतिकरं जनानां प्रभासमेतं कृषिजं सदैव ॥ ३ ॥
कर्केऽम्बरस्थे प्रकरोति मर्त्यः कर्म प्रपारामतडागसंज्ञम् ।
विचित्रवापीतटवृन्दजं च कूपापरं नित्यमकल्पकं च ॥ ४ ॥

जिसके जन्मसमयमें मेषराशि दशमभावमें स्थित होय वह मनुष्य बहुत अधर्म करनेवाला, दुष्ट प्रपंचरूप, विनयरहित और साधुजनोंकी निन्दा करनेवाला होता है। जिसके वृषराशि दशमभावमें स्थित होय वह खर्चीले कर्म करनेवाला, साधुजनोंपर दयावान्, ब्राह्मण और देवताओं अभ्यागतोंकरके विभाजक, ज्ञानवान् और सदा प्रीति करनेवाला होता है। जिसके मिथुनराशि दशमभावमें स्थित होय वह गुरु-करके शिक्षित, उत्तम कर्मको करनेवाला, कीर्तिकरके युक्त, प्रीति करनेवाला, खेतीसे उत्पन्न शोभासहित होता है। जिसके कर्कराशि दशम भावमें स्थित होय वह पौशाला, मनोहर तडाग, विचित्रबावली, जलके स्थान बनवानेवाला, दयावान् और अकल्पक होता है ॥ १-४ ॥

सिंहेऽम्बरस्थे कुरुते मनुष्यो रौद्रं सपापं विकृतं च कर्म ।
सपौरुषं प्राणसमं च नित्यं वधात्मकं निन्दनमेव नित्यम् ॥५॥
नभःस्थलस्थे त्वथ षष्ठराशौ करोति कर्माज्ञमितो मनुष्यः ।
स्त्री राज्यमानौ भजते विरुद्धं कामाल्पकं निर्धनमत्र लोके ॥६॥
तुलाधरे व्योमगते मनुष्यो वाणिज्यकर्म प्रचुरं करोति ।
धर्मात्मकं चापि नयेन युक्तं सतामभीष्टं परसंपदं च ॥ ७ ॥
कीटेऽम्बरस्थे प्रकरोति कर्म पुंसामदुष्टं जनसंमतं च ।
व्ययंकरं देवगुरुद्विजानां सुनिर्दयं नीतिविवर्जितं च ॥ ८ ॥

जिसके सिंहराशि दशम भावमें स्थित हो वह क्रूर, पापी, विकृतकर्म करनेवाला, पराक्रमी, हिंसा करनेवाला और सदा निन्दा करनेवाला होता है । जिसके कन्याराशि दशमभावमें स्थित हो वह अज्ञ कर्म करनेवाला, उसके घरमें स्त्री ही मालिक हो, भक्तिसे विरुद्ध, तुच्छ वीर्यवाला और निर्धन होता है। जिसके तुलाराशि दशम भावमें स्थित हो वह व्यापारकर्म अधिक करनेवाला, धर्मात्मा, नीतिमान्, अभीष्ट और सम्पदाकरके युक्त होता है। जिसके वृश्चिकराशि दशमभावमें स्थित होय वह

दुष्टकर्म करनेवाला, जनसंमती, खर्चीला, देवता ब्राह्मणके न माननेवाला, निर्दयी और नीतिकरके वर्जित होता है ॥ ५-८ ॥

चापेऽम्बरस्थे च करोति कर्म सर्वात्मजं चौर्ययुतं मनुष्यः ।
परोपकारात्मकभोजनाद्यं नृपात्मकं भूमियशःसमेतम् ॥ ९ ॥
मृगेऽम्बरस्थे प्रखरप्रतापं कर्मप्रधानं कुरुते मनुष्यम् ।
सुनिर्दयं बन्धुजनैः समेतं धर्मेण हीनं खलसंमतं च ॥ १० ॥
घटेऽम्बरस्थे च करोति कर्म प्रयाणमर्त्यं परवञ्चनार्थम् ।
पाखण्डधर्मान्वितमिष्टलोभाद्विश्वासहीनं जनताविरुद्धम् ॥ ११ ॥
मीनेऽम्बरस्थे प्रकरोति कर्म मर्त्यं कुले धर्मगुरुप्रदिष्टम् ।
कीर्त्यान्वितं सुस्थिरमादरेण नानाद्विजाराधनसंस्थिरं च ॥ १२ ॥

जिसके धनुराशि दशमभावमें स्थित होय वह पूर्णज्ञानवान्, चौर्ययुत, परोपकार करनेवाला, प्रकाशमान, राजाके समान, भूमि और यशकरके युक्त होता है । जिसके मकरराशि दशमभावमें स्थित हो वह बडा प्रतापवान्, श्रेष्ठकर्म करनेवाला, निर्दयी, बन्धुजनोंसे युक्त, धर्मकरके हीन और दुष्टजनोंकी संमतिवाला होता है । जिसके दशमभावमें कुंभराशि स्थित होय वह पाखंडधर्मकरके युक्त, इष्ट लोभहीके कारण विश्वासरहित और मनुष्योंसे विरुद्ध होता है । जिसके मीनराशि दशमभावमें स्थित होय वह अपने कुलमें गुरुके बतायेहुये धर्म कर्म करनेवाला, कीर्तिकरके युक्त, स्थिर-बुद्धिवाला और आदरपूर्वक ब्राह्मणोंके पूजनमें तत्पर होता है ॥ ९-१२ ॥

इति कर्मभावस्थराशिफलम् ॥

अथ लाभभावस्थितराशिफलम् ।

लाभालये मेषगते च राशौ चतुष्पदोत्थं प्रकरोति लाभम् ।
तथा नराणां नृपसेवया च देशान्तराराधितसुप्रभूतम् ॥ १ ॥
आयस्थिते वै वृषभे प्रलाभो भवेन्मनुष्यस्य विशिष्टजातेः ।
स्त्रीणां सकाशादथ सज्जनानां कुशीलगोधर्मकृतिस्तथैव ॥ २ ॥
तृतीयराशिः कुरुतेऽतिलाभं लाभाश्रितः स्त्रीदयितं सदैव ।
वस्त्वर्थमुख्यासनपानजातं सदा नराणां विविधप्रसिद्धम् ॥ ३ ॥
लाभो भवेल्लाभगते च राशौ सदा चतुर्थे वरजातकानाम् ।
सेवाकृषिभ्यां जनितः प्रभूतः शास्त्रेण वा साधुजनैश्च पश्चात् ॥ ४ ॥

जिसके मेषराशि जन्मसमय ग्यारहवें भावमें स्थित होय उसे चौपायोंसे उत्पन्न तथा राजाकी सेवा करके और देशांतरसे अधिक लाभ होता है। जिसके वृषराशि लाभ (ग्यारहवें) भावमें स्थित होय उसको विशिष्ट जातिके स्त्रियोंके सकाशसे अथवा सज्जनोंके सकाशसे तथा कुशील और गोधर्म करनेसे लाभ होता है। जिसके मिथुनराशि लाभ भावमें स्थित होय वह बहुत लाभवाला, सदा स्त्रियोंका प्यारा, वस्तु अर्थ मुख्य आसन पानजात सुखवाला और अनेक प्रसिद्धियोंवाला होता है। जिसके कर्कराशि लाभभावमें स्थित होय उसको सेवा करके वा खेती करके, शास्त्र करके और साधुजनोंकरके बहुत लाभ होता है ॥ १-४ ॥

लाभाश्रिते पञ्चमगे च राशौ भवेन्मनुष्यस्य विगर्हणा च।
नानाजनानां वधबन्धनैर्वा व्यायामदेशान्तरसंश्रयाच्च ॥ ५ ॥
कन्यात्मके लाभगते मनुष्यः प्राप्नोति लाभं विविधं सपर्याः।
शास्त्रागमाभ्यां विनयेन पुंसां नित्याविवेकेन तथाऽद्भुतेन ॥ ६ ॥
तुलाधरे लाभगते मनुष्यः प्राप्नोति लाभं वणिजे विचित्रे।
सुसाधुसेवाविनयेन नित्यं सुखं स्तुतं मुख्यमतं प्रभूतम् ॥ ७ ॥
लाभाश्रिते चाष्टमगेहराशौ प्राप्नोति लाभं मनुजोऽतिमुख्यम्।
छलेन पापेन सुभाषणेन परस्य पैशुन्यकृतैर्विकारैः ॥ ८ ॥

जिसके सिंहराशि लाभ भावमें स्थित होय उसको निंदा करके, अनेक जनोंके वध बंधन करके, परिश्रम करके अथवा देशांतर करके लाभ होता है। जिसके कन्याराशि लाभ भावमें स्थित होय उसको अनेक आराधन करके, शास्त्र आगम करके, विनय करके और अद्भुत अविवेक करके सदा लाभ होता है। जिसके तुलाराशि लाभभावमें स्थित होय उसको विचित्र व्यापारमें लाभ होता है और साधुसेवा विनय करके लाभ होता है और मुख्य मतके स्तुतिसे बहुत सुख मिलता है। जिसके वृश्चिकराशि लाभ भावमें स्थित होय उसको छल करके, पाप करके, सुंदर भाषण करके, दूसरोंसे प्रपंच करके श्रेष्ठ लाभ होता है ॥ ५-८ ॥

लाभाश्रिते चैव धनुर्धरे च नृपं विलासाद्व्रजते मनुष्यः।
सत्सेवया वा निजपौरुषेण मुख्यस्य चाराधनवांश्च नित्यम् ॥ ९ ॥
लाभाश्रिते वै मकरेऽर्थलाभो भवेन्नराणां जलयानयोगात्।
विदेशवासान्नृपसेवनाद्वा व्ययात्मकं भूरितरं सदैव ॥ १० ॥

आयस्थिते कुंभधरे च लाभो भवेन्मनुष्यस्य कुकर्मजातः ।
त्यागेन धर्मेण पराक्रमेण विद्याप्रभावात्सुसमागमश्च ॥ ११ ॥
लाभाश्रिते चान्त्यगमे च राशौ प्राप्नोति लाभं विविधैर्मनुष्यः ।
मित्रोद्भवं पार्थिवमानजातं विचित्रवाक्यैः प्रणयेन नित्यम् ॥ १२ ॥

जिसके धनुराशि लाभ भावमें स्थित होय वह नृपको विलास करके सेवता है, और उसको सत्सेवा करके निजपराक्रम करके तथा किसी मुख्यकी आराधना करके लाभ होता है । जिसके मकरराशि लाभ भावमें स्थित होय उसको जल यात्रासे, विदेशवाससे, राजसेवासे खर्चके अनुसार अधिक लाभ होता है । जिसके कुंभराशि लाभ भावमें स्थित होय उसको कुकर्मसे पैदा हुआ अथवा त्याग करके, धर्म करके, पराक्रम करके, विद्या प्रभाव करके लाभ होता है और सज्जनोंके आगमवाला होता है । जिसके मीनराशि लाभ भावमें स्थित होय उसको मित्रोद्भव पार्थिव (राजा) के मानसे उत्पन्न विचित्र वाक्यों करके अथवा प्रणय (नम्रता) करके विविध प्रकारका लाभ होता है ॥ ९-१२ ॥ इति लाभभावस्थितराशिफलम् ॥

अथ व्ययभावस्थितराशिफलम् ।

मेषे व्ययस्थे च भवेन्नराणां व्ययः सुखाच्छादनभोजनेन ।
चतुष्पदानेकविवर्द्धनेन लाभेन नानाविधपौरुषेण ॥ १ ॥
वृषे व्ययस्थे व्यय एव पुंसां भवेद्विचित्राम्बरयोषितां च ।
लाभेन राज्येन पराक्रमेण सधातुवादैर्विविधैः सदैव ॥ २ ॥
तृतीयराशौ व्ययगे नराणां व्ययो भवेत्स्त्रीव्यसनात्मकैश्च ।
भूतोद्भवावासततप्रभूतः कुशीलजः पापजनाद्गजैश्च ॥ ३ ॥
कर्के व्ययस्थे द्विजदेवतानां व्ययो भवेद्यज्ञसमुद्भवैश्च ।
धर्मक्रियाभिर्विदधाति चैव प्रशंसिते साधुजनेन लोके ॥ ४ ॥

जिसके मेषराशि बारहवें भावमें स्थित होय उसका सुखाच्छादन भोजनमें चौपायोंकी चाल वृद्धिमें लाभमें और अनेक प्रकार पराक्रममें खर्च होता है । जिसके वृषराशि बारहवें भावमें स्थित होय उसका विचित्र वस्त्रोंमें, स्त्रियोंमें, राज्यलाभमें, पराक्रममें, विवादमें धन खर्च होता है । जिसके मिथुनराशि बारहवें भावमें स्थित होय उसका स्त्रीव्यसनमें, कुशीलतामें, पापजनोंमें, हाथियोंके व्यापारमें धन खर्च होता है । जिसके कर्कराशि बारहवें भावमें स्थित होय उसको देवताब्राह्मणोंद्वारा यज्ञ करनेमें, धर्मक्रियामें, साधुजनके प्रशंसाकरके धन खर्च होता है ॥ १-४ ॥

सिंहे व्ययस्थे तु भवेन्नराणामसंशयो भूरितमः सदैव।
रूपश्च जातश्च कुकर्मणा च निन्द्यः सतां पार्थिवचोरतो वा ॥५॥
कन्यात्मके चान्त्यगते व्ययी च भवेन्मनुष्यः स हि चाङ्गनोत्सुकः।
विवाहमाङ्गल्यविचित्रमुख्यैः सूत्रप्रभाभिर्बहुसाधुसङ्गात् ॥ ६ ॥
तुले व्ययस्थे सुरविप्रबन्धुश्रुतिस्मृतिभ्यश्च कृतो व्ययश्च।
भवेन्नराणां नियमैर्यमैश्च सुतार्थसेवाजनितः प्रसिद्धः ॥ ७ ॥
अलौ व्ययस्थे च भवेद्व्ययस्तु पुंसां प्रदानेन विडंबनाभिः।
कुमित्रसेवाजनितः सुनिन्द्यः कुबुद्धितश्चौरकृताधिकारात् ॥ ८ ॥

जिसके सिंहराशि बारहवें स्थित हो वह सन्देहरहित, बडा क्रोधी, रूपवान्, कुकर्म करके राजा और चौरसे निंद्य होता है। जिसके कन्याराशि बारहवें भावमें स्थित होय उसका अंगनोत्सुक विवाह मांगल्य अथवा अनेक उत्तम कार्योंकरके सूत्रप्रभाकरके तथा साधुसंगतिकरके धनका खर्च होता है। जिसके तुलाराशि व्ययभावमें स्थित होय उसका देवता, ब्राह्मण-बन्धु-श्रुति-स्मृति इनके निमित्त नियमयमकरके एवं सुतार्थ सेवाजनित प्रसिद्ध धनका खर्च होता है। जिसके वृश्चिक राशि व्ययभावमें स्थित होय तो उस मनुष्यका दानकरके, विडंबनाकरके, कुमित्रसेवाजनित निंद्य कुबुद्धिसे और चौरकृत अधिकारसे धन व्यय होता है ॥ ५-८ ॥

चापे व्ययस्थे परवञ्चनानि व्ययो भवेत्पापजनप्रसङ्गात्।
सेवाकृतो जात्यधिकारिपुंसः कृषिप्रसङ्गात्परवञ्चनाद्वा ॥ ९ ॥
नृगे व्ययस्थे च भवेन्नराणां व्ययस्तु पापाशनकस्य जातः।
स्ववर्गपूजानिरतस्तथाऽल्पकृषिर्विहीनश्च विगर्हितश्च ॥ १० ॥
घटे व्ययस्थे सुरसिद्धविप्रतपस्विनो वन्दिभवो व्ययश्च।
पुंसां कुपुत्राशनपानजातस्तथा विवादेन विनिर्गतेन ॥ ११ ॥
ये स्थानचिन्तासु पुरा प्रदिष्टा योगा मया तान्परिगृह्य शास्त्रात्।
योगा विचिन्त्याः सुधिया ततस्तु वाच्यानि नॄणां हि शुभाशुभानि॥

जिसके बारहवें भावमें धनुराशि स्थित होय तो उस मनुष्यका दुष्टजनके प्रसंगसे सेवकोंकरके, जाति अधिकारी मनुष्योंकरके, कृषिप्रसंगसे और परवंचनासे धनका खर्च होता है। जिसके मकर राशि बारहवें भावमें स्थित होय तो उस मनुष्यका पाप

अशनकरके धनखर्च होता है और अपने जातिवर्गके पूजामें रत, थोडी खेतीवाला, विहीन और विगर्हित वह मनुष्य होता है । जिसके कुम्भराशि व्ययभावमें स्थित होय तो उस मनुष्यका देवता सिद्ध ब्राह्मण तपस्वी बन्दीजनोंके निमित्त धन खर्च होता है। कुपुत्र अशनपान करके तथा विवादकरके और विनिर्गतकरके धनका खर्च होता है । पूर्व कहेहुए स्थानचिन्ता योगोंका शास्त्रद्वारा ग्रहणकर तथा योगोंको चिन्तनकरके पण्डितजन मनुष्योंका शुभाशुभ फल कहैं ॥ ९-१२ ॥

इति द्वादशभावस्थितराशिफलम् ॥

अथ द्वादशराशिगतग्रहफलानि ।

तत्रादौ रविफलम् ।

भवति साहसकर्मकरो नरो रुधिरपित्तविकारकलेवरः ।
क्षितिपतिर्मतिमान्हितकृत्सदा सुसहसो महसामधिपे क्रिये ॥ १ ॥
परिमलैर्विमलैः कुसुमासनैः सुवसनैः पशुभिः सुखमद्भुतम् ।
गवि गतो हि रविर्जलभीरुतां विहितमाहितमादिशते नृणाम् ॥ २ ॥
गणितशास्त्रकलामलशीलतासुललितोऽद्भुतवाक् प्रथितो भवेत् ।
दिनपतौ मिथुने ननु मानवो विनयतानयतातिशयान्वितः ॥ ३ ॥
सुजनताराहितः किल कालविज्जनकवाक्यविलोपकरो नरः ।
दिनकरे तु कुलीरगते भवेत्सधनताधनतासहितोऽधिकः ॥ ४ ॥

जो मेषराशिका सूर्य होय तो वह मनुष्य साहसकर्म करनेवाला और रुधिरसे उत्पन्न रोगवाला, पित्तविकारसे युक्त शरीरवाला और भूमिका अधिकार पानेवाला, सदा हित करनेवाला, बुद्धिमान् और साहसी होता है । जिसके जन्ममें सूर्य वृषराशिका होय वह उत्तम सुगन्ध पुष्प शय्या और उत्तम वस्त्र धारण करनेवाला, पशुओं करके अद्भुत सुख पानेवाला और जलसे भय पानेवाला होता है । जिसके मिथुनराशिका सूर्य होय वह गणितशास्त्रमें प्रवीण, उत्तम शील स्वभाववाला, उत्तम वार्ता कथन करनेवाला, विख्यात कीर्तिवाला और विनययुक्त, सबसे हित करनेवाला होता है । जिसके सूर्य कर्कराशिका जन्मसमयमें हो वह क्रूरस्वभावयुक्त और पितासे विरोध करनेवाला और निरन्तर धनसे युक्त होता है ॥ १-४ ॥

स्थिरमतिश्च पराक्रमतोऽधिको विभुतयाद्भुतकीर्तिसमन्वितः ।
दिनकरे करिवैरिगते नरो नृपरतः परतोषकरो भवेत् ॥ ५ ॥

दिनपतौ युवतौ समवस्थिते नरपतेश्च नरो द्रविणं लभेत्।
मृदुवचाः श्रुतगेयपरायणः समहिमामहिमापहिताहितः॥ ६॥
नरपतेरतिभीतिमहर्निशं जनविरोधविधानमघं दिशेत्।
कलिमनाः परकर्मरतिर्घटे दिनमणिर्न मणिर्द्रविणादिकम्॥ ७॥
कृपणतां कलहं च भृशं रुषं विषहुताशनशस्त्रभयं दिशेत्।
अलिगतः पितृमातृविरोधितां दिनकरो न करोति समुन्नतिम्॥८॥

जिसके सूर्य सिंहराशिका जन्मसमयमें हो वह स्थिरबुद्धिवाला और अधिक पराक्रमी, बडी कीर्ति पानेवाला, राजसेवी और परोपकारी होता है। जिसके सूर्य कन्याराशिका जन्ममें होवे वह राजासे धन पानेवाला, कोमलवाक्य गान श्रवण करनेवाला और महामहत्त्वको पानेवाला होता है। जिसके तुलाराशिका सूर्य जन्मसमयमें हो वह राजासे निरन्तर भय पानेवाला और सबसे विरोध करनेवाला, पापकर्म करनेवाला, कलहमें प्रवीण और परकर्म करनेवाला होता है। जिसके सूर्य वृश्चिकराशिका होय वह बडा कृपण, निरन्तर कलह करनेवाला, विष, शस्त्र और अग्निसे भय पानेवाला, मातापितासे विरोध करनेवाला और उन्नतिको न पानेवाला होता है॥५–८॥

स्वजनकोपमतीव महन्मतिं बहुधनं हि धनुर्धरगो रविः।
स्वजनपूजनमादिशते नृणां सुमतितो मतितोषविवर्द्धनम्॥ ९॥
अटनतां निजपक्षविपक्षतां सधनतां कुरुते सततं नृणाम्।
मकरराशिगतो विगतोत्सवं दिनविभुर्न विभुत्वसुखं दिशेत्॥१०॥
कलशगामिनि पङ्कजिनीपतौ शठतरो हितरो गतसौहृदः।
मलिनताकलितो रहितः सदा करुणयारुणयार्तसुखी भवेत्॥११॥
बहुधनं क्रयविक्रयतः सुखं निजजनादपि गुह्यमहाभयम्।
दिनपतौ झषगेऽतिमतिर्भवेद्विभुतयाद्भुतयायतकीर्तिभाक्॥१२॥

जिसके सूर्य धनुराशिका होय वह पुरुष स्वजनोंसे कोपयुक्त, बडा बुद्धिमान्, बडा धनी, मित्रोंका हितकारी और संतोषी होता है। जिसके जन्मसमयमें सूर्य मकरराशिका होय वह भ्रमण करनेवाला, अपने कुटुम्बियोंसे विरोध करनेवाला, धनयुक्त उत्सवरहित और विभुतारहित होता है। जिसके कुंभ राशिके सूर्य होय वह अत्यन्त शठ और सबसे दुर्भाव रखनेवाला, किसीका मित्र नहीं, सदा मलिनवेष रहनेवाला, दयारहित और सुखी होता है। जिसके सूर्य मीनराशिका होय वह व्यापारद्वारा

अधिक धन पानेवाला सुखी और अपने निजजनोंसे भय पानेवाला, बुद्धिमान् और अतुल कीर्तिमान् होता है ॥ ९-१२ ॥ इति रविफलम् ॥

अथ चन्द्रफलम्।

स्थिरधनो रहितः सुजनैर्नरः सुतयुतः प्रमदाविजितो भवेत्।
अजगते द्विजराज इतीरितं विभुतयाद्भुतया स्वसुकीर्तिभाक् ॥ १ ॥
स्थिरगतिं सुमतिं कमनीयतां कुशलतां हि नृणामुपभोगताम्।
वृषगतो हिमगुर्भृशमादिशेत्सुकृतितः कृतितश्च सुखानि च ॥ २ ॥
प्रियकरः सुरकर्मयुतो नरः सुरतसौख्यभरो युवतिप्रियः।
मिथुनराशिगतो हिमगुर्भवेत्सुजनताजनताकृतगौरवः ॥ ३ ॥
श्रुतकलावलनिर्मलवृत्तयः कुसुमगन्धजलाशयकेलयः।
किल नरास्तु कुलीरगते विधौ वसुमतीसुमतीप्सितलब्धयः ॥ ४ ॥

जिसके जन्मसमयमें मेषराशिका चन्द्रमा होय वह पुरुष धनसंचय रहित, पुत्रादि सुख संपन्न, स्त्रीजित और उत्तम कीर्तिवाला होता है। जिसके वृषराशिका चन्द्रमा होय वह स्थिरगतिवाला, बुद्धिमान्, चतुर, कमनीय, अनेक भोगयुक्त, अच्छे कर्म करनेवाला और निरन्तर सुखी होता है। जिसके मिथुनराशिका चन्द्रमा होय वह सबसे प्रीति करनेवाला, सुरकर्मकरके युक्त, स्त्रियोंके संगसे विषयमें सुख पानेवाला, स्त्रियोंको प्रिय और सबसे स्नेह करनेवाला होता है। जिसके कर्कराशिका चन्द्रमा जन्मकालमें होय वह पुत्रादिसुखसे युक्त और अनेक चतुराईकी कलामें निपुण, सुगंधपुष्पका धारण करनेवाला और जलक्रीडा करनेवाला और पृथ्वीसे धन पैदा करनेवाला होता है ॥ १-४ ॥

अचलकाननयानमनोरथं गृहकलिं विकलोदरपीडनम्।
द्विजपतिर्मृगराजगतो नृणां वितनुते तनुते यशहीनताम् ॥ ५ ॥
युवतिगे शशिनि प्रमदाजनैः प्रवलकेलिविलासकुतूहलैः।
विमलशीलसुताजननोत्सवः सुविधिना विधिना सहितः पुमान् ॥ ६ ॥
वृषतुरङ्गमविक्रयवान्क्रये द्विजसुरार्चनदानमतिः पुमान्।
शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभवसंचितविक्रमः ॥ ७ ॥
शशधरे हि सरीसृपगे नरो नृपदुरोदरजातधनक्षयः।
कलिरुचिर्विबलं खलमानसं कृशमनाः शमनापहतो भवेत् ॥ ८ ॥

जिसके सिंहराशिमें चन्द्रमा होय वह पर्वत और वनमें संचार करनेका मनोरथ रखनेवाला, गृहमें कलहकारी, विकल और पेटकी पीडा पानेवाला और यशहीन होता है। जिसके चन्द्रमा कन्याराशिमें स्थित होय वह स्त्रियोंसे उत्तम केलि विलास कुतूहल करनेवाला, उत्तम शीलस्वभावयुक्त, कन्योत्पत्तिसे सुख पानेवाला और सर्वविधि जाननेवाला होता है। जिसके तुलाराशिका चन्द्रमा जन्ममें स्थित होवे वह बैल घोडे बेंचनेवाला, ब्राह्मण और देवताका पूजनेवाला, दान देनेवाला, बहुतस्त्रियोंका भोग करनेवाला, धन और विभवसंयुक्त होता है। जिसके वृश्चिकराशिका चन्द्रमा होय तो उसका धन राजा हरै और वह कलहको प्रिय करनेवाला, निर्बल, दुष्टमतिवाला, दुर्बल शरीरवाला, चिंतायुक्त और स्त्रीजित होता है ॥ ५-८ ॥

बहुकलाकुशलः किल गीतवान्विमलताकलितः सरलोक्तिभाक्।
शशिधरे हि धनुर्धरगे नरो धनकरो न करोति बहुव्ययम् ॥ ९ ॥
कलितशीतभयः किल गीतवित्तनुरुषा सहितो मदनातुरः।
निजकुलोत्तमवित्तकरः परं हिमकरे मकरे पुरुषो भवेत् ॥ १० ॥
अलसतासहितोऽन्यसुतप्रियः कुशलताकलितोऽतिविचक्षणः।
कलशगामिनि शीतकरे नरः प्रशमितोऽशमितोरुरिपुव्रजात् ॥ ११ ॥
शशिनि मीनगते विजितेन्द्रियो बहुगुणः कुशलोऽनिललालसः।
विमलधीः किल शास्त्रकलादरान्नचलताचलताकलितो नरः ॥ १२ ॥

जिसके धनुराशिमें चन्द्रमा होवे वह अनेक कलाओंमें प्रवीण, गानेवाला, निर्मलबुद्धिवाला, उत्तम वचन कहनेवाला और थोडा धन खर्च करनेवाला होता है। जिसके मकरराशिका चन्द्रमा होय वह जलसे भय पानेवाला, गानविद्यामें निपुण, दुर्बल अंगवाला, कामातुर और अपने कुलमें उत्तम धन करनेवाला होता है। जिसके कुंभराशिमें चन्द्रमा स्थित होय वह बडा आलसी, परपुत्रोंसे प्रीति करनेवाला, निरंतर प्रसन्नतायुक्त, विचक्षण बुद्धिवाला और शत्रुका जीतनेवाला होता है। जिसके मीनराशिका चन्द्रमा होय वह जितेन्द्रिय, बडा गुणी, कुशल, हवामें लालसा रखनेवाला, शास्त्रविद्यामें कुशल और निर्बल शरीरवाला होता है ॥ ९-१२ ॥ इति चन्द्रफलम् ॥

अथ भौमफलम्।

क्षितिपतेः क्षितिमानधनागमैः सुवचसा महसा बहुसाहसैः।
अवनिजः कुरुते सततं शुभं त्वजगतो जगतोऽभिमतं नरम् ॥ १ ॥

गृहधनाल्पसुखं च रिपूदयं परगृहस्थितिमादिशते नृणाम् ।
अवनिजोऽरिरुजो वृषभस्थितः क्षितिसुतोऽतिसुतोद्भवपीडनम् २॥
बहुकलाकलनाकुलजोत्कालिं प्रचलनाप्रियतां च निजस्थलात् ।
ननु नृणां कुरुते मिथुनस्थितः कुतनयस्तनयप्रमुखात्सुखम् ॥३॥
परगृहस्थिरतामतिदीनतां विमतितां शमितां च रिपूद्‌यम् ।
हिमकरालयगे किल मङ्गले प्रबलयाऽबलया कलहं व्रजेत् ॥ ४ ॥

जिसके जन्मकालमें मेषराशिका मंगल स्थित होवे वह राजद्वारसे प्रतिष्ठा धन मान पानेवाला, साहसकर्म करनेवाला और सबका सहाय करनेवाला होता है । जिसके वृषराशिका मंगल होवे वह घरमें थोडा सुख पानेवाला, पराये घरमें निवास करनेवाला और शत्रुजनोंसे सदा भयवाला रहै और पुत्रपक्षसे कष्ट पानेवाला होता है। मिथुनराशिमें मंगल होय वह कुटुम्बीजनोंमें निरन्तर कलह करनेवाला और अपने स्थानसे दूर यात्रा करनेवाला और पुत्रादिकोंसे सुख प्राप्त करनेवाला होता है। जिसके कर्कराशिका मंगल होवे वह पराये घरमें निवास करनेवाला, अत्यन्त दीनभाव, दुष्टमति, बहुत शत्रुजनोंसे भयभीत, स्त्रीजित और स्त्रीसे कलहकारी होता है॥

अतितरां सुतदारसुतान्वितो हतरिपुर्विततोद्यमसाहसः ।
अवनिजे मृगराजगते पुमान् सुनयतानयताभियुतो भवेत् ॥ ५ ॥
स्वजनपूजनताजनताधिको यजनयाजनकर्मरतो भवेत् ।
क्षितिसुते सति कन्यकयान्विते त्ववनितो वनितोत्सवतः सुखी६॥
बहुधनव्ययताङ्गविहीनतागतगुरुप्रियतापरितापितः ।
वणिजि भूमिसुते विकलः पुमानवनितावनितोद्भवदुःखभाक्॥७॥
विषहुताशनशस्त्रभयान्वितः सुतसुतावनितादिमहत्सुखः ।
वसुमतीसुतभाजि सरीसृपे नृपरतः परतश्च जयं व्रजेत् ॥ ८ ॥

जिसके जन्मकालमें सिंहराशिका मंगल पडे वह स्त्रीपुत्रादिकोंसे अत्यन्त सुख पानेवाला, बडा साहसी, शत्रुको जीतनेवाला और विनयभावसे संयुक्त होता है । जिसके जन्ममें मंगल कन्याराशिका होवे वह मित्रोंका सत्कार करनेवाला, बहुत मनुष्योंके साथ सुख पानेवाला, पठनपाठनसे युक्त और स्त्रियोंके उत्सवकर्मसे सुख पानेवाला होता है । जिसके भौम तुलाराशिमें स्थित होय वह बहुत धन खर्च करनेवाला, अंगविहीन और बडे जनोंसे सन्तप्तशरीरवाला और स्त्रीपक्षसे दुःखित

होता है । जिसके वृश्चिकराशिमें मंगल पडा होवै वह विष अग्नि और शस्त्रसे भयभीत रहता है और स्त्रीपुत्रादिकोंसे बडा सुख पानेवाला और सर्वत्र विजय पानेवाला होता है ॥ ९-८ ॥

रथतुरङ्गमगौरवसंयुतः परमरातिजनैः कृतदुःखितः ।
भवति नाऽवनिजे धनुषि स्थिते सुवनितावनिता भवति प्रिया॥९॥
रणपराक्रमता वनितासुखं निजजनप्रतिकूलभयाश्रितः ।
विभवता मनुजस्य धरात्मजे मकरगे करगे चरमो भवेत् ॥ १० ॥
विनयितारहितं सहितं रुजा निजजनप्रतिकूलमलं खलम् ।
प्रकुरुते मनुजं कलशाश्रयः क्षितिसुतोऽतिसुतोद्भवदुःखितम्॥११॥
व्यसनतां खलतामदयालुतां विकलतां चलतां च निजालयात् ।
क्षितिसुतस्तिमिना सुसमन्वितो विमतिना मतिनाशनमादिशेत् ॥

जिसके धनुराशिमें भौम पडे वह बडा धनी, रथ और घोडे इत्यादि वाहनोंसे सुख पानेवाला और शत्रुजनोंकरके दुःखित और श्रेष्ठस्त्रियोंसे प्रीतिभाव और सुखी रहनेवाला होता है । जिसके मकरराशिमें मंगल स्थित होवै वह संग्राममें पराक्रम दिखानेवाला, स्त्रियोंसे सुख पानेवाला और निजजनोंकी प्रतिकूलतासे अधिक भय पानेवाला और धनविभवसे सुख पानेवाला होता है । जिसके कुम्भराशिमें भौम स्थित होवै वह विनयभावसे रहित, रोगयुक्त शरीरवाला, अपने जनोंसे प्रतिकूल, दुष्टमतिवाला और पुत्रादिकोंकी उत्पत्ति होनेमें अत्यन्त दुःखी होता है । जिसके मीनराशिमें मंगल पडे वह व्यसनयुक्त, दुष्ट मतिवाला, दयाहीन, विकलशरीरवाला, अपने स्थानसे दूर यात्रा करनेवाला अनेक विपत्तियुक्त और बुद्धिहीन होता है ॥ ९-१२ ॥

इति भौमफलम् ॥

अथ बुधफलम् ।

खलमतिः किल चञ्चलमानसो बहुलभुक्कलहाकुलितो नरः ।
अकरुणोऽनृणवांश्च बुधे भवेदविगते विगतेप्सितसाधनः ॥ १ ॥
वितरणप्रयतं गुणिनं दिशेद्बहुकलाकुशलं रतिलालसम् ।
धनिनमिन्दुसुतो वृषभस्थितस्तनुजतोऽनुजतोऽतिसुखं नरम् २॥
प्रियवचोरचनासु विचक्षणो द्विजननीतनयः शुभवेषभाक् ।
मिथुनगे जनने शशिनन्दने सदनतोऽदनतोऽपि सुखं नरम् ॥३॥

कुचरितानि च गीतकथादरो नृपरुचिः परदेशगतिर्नृणाम् ।
किल कुलीरगते शशभृत्सुते सुरततारतता नितरां भवेत् ॥ ४ ॥

जिसके जन्मकालमें मेषराशिका बुध बैठे वह दुष्टस्वभाववाला, चंचलचित्त, अधिक भोजन करनेवाला, कलहकारी, निर्दयी, निर्ऋणी और चिंतितपदार्थोंको साधन करनेवाला होता है । जिसके वृषराशिमें बुध बैठे वह गुणग्राहक और गुणीजनोंसे प्रीति रखनेवाला बहुत स्त्रियोंसे भोग करनेवाला सदा धनवान् और भ्रातृ पुत्रादिकोंसे सुख पानेवाला होता है । जिसके मिथुनराशिमें बुध स्थित होवे वह प्रियवचन बोलनेवाला, मातासे सुख पानेवाला, सुन्दर भेषवाला और सदनसे अशनसे निरन्तर सुखी रहनेवाला होता है । जिसके कर्कराशिमें बुध बैठा होवे वह कुत्सित चरित्र करनेवाला और कथा गानका निरादर करनेवाला राजसेवी, परदेशका रहनेवाला और निरन्तर स्त्रीभोगकी इच्छा रखनेवाला होता है ॥ १-४ ॥

अनृततासहितं विमतिं परं सहजवैरकरं कुरुते नरम् ।
युवतिहर्षपरं शशिनः सुतो हरिगतोऽरिगतोन्नतिदुःखितम् ॥५॥
सुवचनानुरतश्चतुरो नरो लिखनकर्मपरो हि वरोन्नतिः ।
शशिसुते युवतिं च गते सुखी सुनयनानयनाञ्चलचेष्टितैः ॥ ६ ॥
अनृतवाग्व्ययभाक्खलु शिल्पवित्कुचरिताभिरतिर्बहुजल्पकः ।
व्यसनयुङ्मनुजः सहिते बुधे वितुलयच्चलगान्वसतीयुतः ॥७॥
कृपणतातिरतिप्रणयश्रमो विहितकर्मसुखोपहतिर्भवेत् ।
धवलभानुसुतेऽलिगते क्षतिस्त्वलसतोलसतोऽपि च वस्तुनः ॥८॥

जिसके बुध सिंहराशिमें बैठा होवे वह झूँठ बोलनेवाला, हीनमतिवाला और बन्धुजनोंसे बैरभाव रखनेवाला, स्त्री जनोंसे प्रीति करनेवाला और हमेशा दुःख पानेवाला होता है। जिसके बुध कन्याराशिमें स्थित होवे वह अच्छे वचन बोलनेवाला, चतुर, लिखनेमें बडा प्रवीण, निरन्तर सुख पानेवाला और उत्तम स्त्रियोंसे प्रीति करनेवाला होता है । जिसके तुलाराशिमें बुध स्थित होवे वह मिथ्यावादी और अधिक खर्च करनेवाला और कारीगरीमें प्रवीण, बुरे काममें मन लगानेवाला, बहुत बोलनेवाला और व्यसनी होता है । जिसके वृश्चिक राशिमें बुध बैठा हुआ हो वह कृपण और अच्छे कामोंसे विमुख, बहुत परिश्रम करनेवाला और दुःख पानेवाला होता है ॥५-८॥

वितरणप्रणयो बहुवैभवः कुलपतिश्च कलाकुशलो भवेत् ।
शशिसुतेऽत्र शरासनसंस्थिते विहितया हितया रमयान्वितः॥९॥

रिपुभयेन युतः कुमतिर्नरः स्मरविहीनतरः परकर्मकृत् ।
मकरगे सति शीतकरात्मजे व्यसनतः स नतः पुरुषो भवेत् १०॥
गृहकलिं कलशे शशिनन्दनो वितनुते तनुतामनुदीनताम् ।
धनपराक्रमधर्मविहीनतां विमतितामतितापितशत्रुभिः ॥ ११ ॥
परधनादिकरक्षणतत्परो द्विजसुरानुचरो हि नरो भवेत् ।
शशिसुते पृथुरोमसमाश्रिते सुवदनावदनानुविलोकनः ॥ १२ ॥

जिसके धनुराशिमें बुध बैठा होय वह बडा नम्र, विभवयुक्त, अपने कुलका पालन करनेवाला, कारीगरीमें प्रवीण और स्त्रियोंसे सुख पानेवाला होता है। जिसके मकरराशिमें बुध बैठा होय वह निरन्तर शत्रुसे भयभीत, बुद्धिसे रहित और बलहीन अल्पकाम और पराया काम करनेवाला होता है। जिसके कुम्भराशिमें बुध बैठा होय वह निरन्तर घरमें कलह करनेवाला, अहंकार युक्त, धन और पराक्रमसे हीन, धर्मरहित, शत्रुओंसे दुःख पानेवाला और बुद्धिहीन होता है। जिसके मीन-राशिमें बुध बैठा होवै वह पराये धनकी रक्षा करनेवाला और ब्रह्मभक्त देवताओंका पूजनेवाला और उत्तमस्त्रियोंसे प्रीति करनेवाला होता है ॥ ९-१२ ॥ इति बुधफलम्॥

अथ गुरुफलम्।

बहुतरां कुरुते समुदारतां सुचरितानि च वैरिसमुन्नतिम् ।
विभवतां च मरुत्पतिपूजितः क्रियगतोयगतोऽनुमतिप्रदः ॥ १ ॥
द्विजसुरार्चनभक्तिविभूतयो द्रविणवाहनगौरवलब्धयः ।
सुरगुरौ वृषभे बहुवैरिणश्वरणगा रणगाढपराक्रमः ॥ २ ॥
कवितया सहितः प्रियवाक्शुचिर्विमलशीलरुचिर्निपुणः पुमान् ।
मिथुनगे सति देवपुरोहिते सहितताहिततासहितैर्भवेत् ॥ ३ ॥
बहुधनागमनो मदनोन्नतिर्विविधशास्त्रकलाकुशलो नरः ।
प्रियवचाश्च कुलीरगते गुरौ चतुरगैस्तुरगैः करिभिर्युतः ॥ ४ ॥

जिसके जन्मकालमें बृहस्पति मेषराशिमें स्थित होय वह बडा उदारचित्त, सुन्दर-चरित्रवाला, बहुत शत्रुओंवाला तथा पिछली बुद्धिवाला होता है। जिसके वृषराशिमें बृहस्पति बैठा होय वह देवता और ब्राह्मणोंका पूजनेवाला, भक्तियुक्त, धन वाहन और गौरवकरके सहित और रणमें उत्तम पराक्रमकरके शत्रुओंको जीतनेवाला होता है। जिसके मिथुनराशिमें बृहस्पति बैठा होय वह काव्यका रचनेवाला, प्रियवचन बोलनेवाला, पवित्र, उत्तम शीलवाला, निपुण और सबसे हित रखनेवाला होता है।

जिसके कर्कराशिमें बृहस्पति बैठा होय वह बडा धनी, उत्तम स्थानमें निवास करनेवाला, अनेक शास्त्रकलाओंमें प्रवीण, अच्छे वचन बोलनेवाला, शत्रुसे धन पानेवाला और हाथी घोडोंकरके युक्त होता है ॥ १-४ ॥

अचलदुर्गवनप्रभुतोर्जितो दृढतनुर्ननु दानपरो भवेत् ।
अरिविभूतिहरो हि नरो युतः सुवचसा वचसामधिपे गुरौ ॥ ५ ॥
कुसुमगन्धसदंबरशालिता विमलता धनदानमतिर्भृशम् ।
सुरगुरौ सुतया सति संयुते रुचिरता चिरतापितशत्रुता ॥ ६ ॥
सुतनयो जपहोममहोत्सवो द्विजसुरार्चनदानमतिर्भवेत् ।
वणिजजन्मपवित्रशिखंडिजे चतुरतातुरतासहितोऽरिणा ॥ ७ ॥
धनविनाशनदोषसमुद्भवैः कृशतनुर्बहुदंभपरो नरः ।
अलिगते सति देवपुरोहिते भवनतो वनतोऽपि च दुःखभाक् ॥८॥

जिसके सिंहराशिमें बृहस्पति बैठा होय वह दुर्ग, वन और कोटका स्वामी, बडा पराक्रमी, पुष्ट शरीरवाला, बडा दानी, शत्रुओंका धन हरनेवाला और अच्छे वचन बोलनेवाला होता है । जिसके कन्याराशिमें बृहस्पति बैठा होवे वह सुगंध व पुष्पमालाओंके धारण करनेवाला, उत्तम वस्त्र पहिरनेवाला, धनवाला और दान करनेवाला, सदा सुखी और शत्रुरहित होता है । जिसके तुलाराशिमें बृहस्पति बैठा होय वह सुंदर पुत्रोंवाला, जप होममें तत्पर, देवता और ब्राह्मणोंका पूजनेवाला, दानी, चतुरतामें रत और शत्रुओं करके सहित होता है । जिसके वृश्चिकराशिमें बृहस्पति बैठा होय वह धनसे हीन, दुर्बल शरीरवाला, मिथ्यावादी, पाखंडी और घरमें तथा वनमें भी दुःख भोगनेवाला होता है ॥ ५-८ ॥

वितरणप्रणयो बहुवैभवं ननु धनान्यपि वाहनसञ्चयः ।
धनुषि देवगुरौ हि मतिर्भवेत्सुरुचिरा रुचिराभरणानि च ॥ ९ ॥
हतमतिः परकर्मकरो नरः स्मरविहीनतरो भयरोषभाक् ।
सुरगुरौ मकरे विदधाति नो जनमनोनमनोरथसाधनम् ॥ १० ॥
गदयुतः कुमतिर्द्रविणोज्झितः कृपणतानिरतः कृतकिल्बिषः ।
घटगते सति देवपुरोहिते कदशनो दशनोदरपीडितः ॥ ११ ॥
नृपकृपात्तधनो वदनोन्नतिः सदनसाधनदानपरो नरः ।
सुरगुरौ तिमिना सहिते सतामनुमतोऽनुमतोत्सवदो भवेत् ॥ १२ ॥

जिसके धनुराशिमें बृहस्पति बैठा होय वह बडा विनीत, बहुत वैभव धन और वाहनादिसे युक्त और उत्तम आभरणों करके सहित होता है। जिसके मकर-राशिमें बृहस्पति बैठा होय वह बुद्धिहीन, पराया काम करनेवाला, स्मर (कामदेव) करके रहित, भययुक्त, क्रोधी और मनोरथको न सिद्ध करनेवाला होता है। जिसके कुंभराशिमें बृहस्पति बैठा होय वह रोगयुक्त, दुष्टमतिवाला, धनहीन, कृपण, पाप, कर्म करनेवाला, निंदित दांतोंवाला और दांत तथा पेटकी पीडा पानेवाला होता है। जिसके मीनराशिमें बृहस्पति बैठा होय वह राजाका मंत्री, उत्तम वदनवाला, धनी और दान देनेवाला, उत्तम स्थानमें निवास करनेवाला और प्रसन्न चित्त होता है॥ ९-१२

इति गुरुफलम्॥

अथ शुक्रफलम्।

भवनवाहनवृन्दपुराधिपः प्रचलनाप्रियताविहितादरः।
यदि च संजनने हि भवेत्कविः कवियुतो वियुतो रिपुभिर्नरः॥१॥
बहुकलत्रसुतोत्सवगौरवं कुसुमगन्धरुचिः कृषिनिर्मितः।
वृषगते भृगुजे कमला भवेदविरला विरला रिपुमण्डली॥ २॥
भृगुसुते जनने मिथुने स्थिते सकलशास्त्रकलामलकौशलम्।
सरलता ललिता किल भारती समधुरा मधुरान्नरुचिर्भवेत्॥ ३॥
द्विजपतेः सदने भृगुनन्दने विमलकर्ममतिर्गुणसंयुतः।
जनमलं सकलं कुरुते वशं सकलया कलयाऽपि गिरा नरः॥ ४॥

जिसके जन्मकालमें शुक्र मेषराशिका होय वह स्थान वाहनादि वृन्द करके युक्त, ग्रामोंका स्वामी, धनी, सर्वत्र आदर पानेवाला, कविता करनेवाला और शत्रुओंकरके हीन होता है। जिसके वृषराशिमें शुक्र बैठा होय वह बहुत कलत्र सुत उत्सव गौरव करके युक्त, कुसुम गंधादिमें रुचि करनेवाला, खेती करनेवाला, बहुत स्त्रियोंसे भोग करनेवाला और विरल शत्रुओंवाला होता है। जिसके मिथुनराशिमें शुक्र बैठा होय वह विद्यावान्, सर्व शास्त्रोंकी कलाओंमें निपुण, बडा चतुर, व्याख्या देनेवाला, उत्तम कर्म करनेवाला, उत्तम भोजन करनेवाला और बडा गुणी होता है। जिसके शुक्र कर्कराशिमें बैठा होय वह उत्तम कर्ममें बुद्धि लगानेवाला, गुणवान्, सर्व जनोंको वश करनेवाला और सुंदर वचन बोलनेवाला होता है॥ १-४॥

हरिगते सुरवैरिपुरोहिते युवतितो धनमानसुखानि च।
निजजनव्यसनान्यपि मानवस्त्वहिततो हिततोषमनुव्रजेत्॥ ५॥

भृगुसुते सति कन्यकयाऽन्विते बहुधनं खलु तीर्थमनोरथः ।
कमलया पुरुषोऽपि विभूषितस्त्वमितया मितयापि गिराऽन्वितः ६
कुसुमवस्त्रविचित्रधनान्वितो बहुगमागमनो ननु मानवः ।
जननकालतुलाकलनं यदा सुकविना कविनायकतां व्रजेत् ॥७॥
कलहघातमतिं जननिन्द्यतां प्रजनतामयतां नियतां नृणाम् ।
व्यसनतां जननेऽलिसमाश्रितः कविरलं विरलं कुरुते धनम् ॥८॥

जिसके सिंहराशिमें शुक्र बैठा होय वह स्त्रीद्वारा धन मान और सुखको पानेवाला, अपने जनोंसे कलह करनेवाला और शत्रुओंसे हित और संतोषका पानेवाला होता है। जिसके कन्याराशिमें शुक्र बैठा होय वह बडा धनी, तीर्थ करनेवाला, बहुत श्रीकरके विभूषित और थोडी बात करनेवाला होता है । जिसके तुलाराशिमें शुक्र बैठा होय वह उत्तम वस्त्र तथा उत्तम सुगन्ध, पुष्पमालादिका धारण करनेवाला, धनवान्, सबसे प्रिय वचन बोलनेवाला और कविनायक होता है । जिसके वृश्चिकराशिमें शुक्र बैठा हो वह कलह करनेवाला, जीव हिंसा करनेवाला और सबकी निन्दा करनेवाला, निषिद्ध कर्म करनेवाला, व्यसन युक्त और कभी २ धन पानेवाला होता है ॥५-८॥

युवतिसूनुधनागमनोत्सवं सचिवतां नियतं शुभशीलताम् ।
धनुषि कार्मुकगः कविनन्दनः कविरतिं विरतिं कुरुते नृणाम्॥९॥
अभिरतस्तु जराङ्गनया नृणां व्ययभयात्कृशतामतिचिन्तया ।
भृगुसुते मृगराशिगते सदा कविजने विजनेऽपि मतिर्भवेत् ॥ १०॥
उशनसः कलशे जनुषि स्थितौ वसनभूषणभोगविहीनता ।
विमलकर्ममहालसता नरैरुपगताऽपगतापि रमा भवेत् ॥ ११ ॥
भृगुसुते सति मीनसमन्विते नरपतेर्विभुता वितता भवेत् ।
रिपुसमाक्रमणद्रविणागमो वितरणे तरणे प्रणयो नृणाम् ॥ १२ ॥

जिसके धनुराशिमें शुक्र बैठा होय वह स्त्री पुत्रोंसे धन उत्सवको पानेवाला, राजमंत्री, नायक, उत्तम शील स्वभावयुक्त, कवितामें रति करनेवाला और विरतिको करनेवाला होता है । जिसके मकरराशिमें शुक्र बैठा होय वह वृद्धास्त्रीसे भोग करनेवाला, व्यय भयसे दुर्बलता और अधिक चिन्ताको प्राप्त होनेवाला, कवीश्वरोंसे प्रीति

करनेवाला और एकान्त निवास करनेवाला होता है। जिसके कुंभराशिमें शुक्र बैठा होय वह वस्त्र-भूषण और भोगकरके रहित, अच्छे कर्म करनेमें आलसी और उसके पास लक्ष्मी आवे फिर चली भी जाय। जिसके मीनराशिमें शुक्र बैठा होय वह राजासे विभव, धनको पानेवाला, शत्रुओंको जीतकरके धन पानेवाला और निरन्तर सुखी होता है॥

इति शुक्रफलम्॥

अथ शनिफलम्।

धनविहीनतया तनुता तनौ जनविरोधितयेप्सितनाशनम्।
क्रियगतेऽर्कसुते सुजनैर्नृणां विषमतासमताशमनं भवेत्॥ १॥
युवतिसौख्यविनाशनतां भृशं पिशुनसंगरुचिं मतिविच्युतिम्।
तनुभृतां जनने वृषभस्थितो रविसुतो विसुतोत्सवमादिशेत्॥२॥
प्रबलता विमलत्वविहीनता भवनबाह्यविलासकुतूहलम्।
व्रजति नो मिथुनोपगते सुते दिनविभोर्न विभोर्लभते सुखम्॥३॥
शशिनिकेतनगामिनि भानुजे तनुभृतां कृशतां भृशमम्बया।
वरविलासकरा कमला भवेदविरलं विरलं रिपुमण्डलम्॥ ४॥

जिसके शनि जन्मसमय मेषराशिमें स्थित होय वह धनहीन, दुर्बल शरीरवाला, जनोंसे विरोधके कारण चिंतित कार्य नाशको प्राप्त और सुजनोंकरके विषमता, समता शमनको प्राप्त होवे जिसकी ऐसा मनुष्य होता है। जिसके वृषराशिमें शनि बैठा होय वह स्त्रीसुखसे रहित और चुगुलखोरोंका संग रखनेवाला, बुद्धिहीन और सुतोत्सवकरके रहित होता है। जिसके मिथुनराशिमें शनि बैठा होय वह प्रबलता विमलत्वकरके रहित, घरसे बाहर हास्य विलास करनेवाला और दुःख पानेवाला होता है। जिसके कर्कराशिमें शनि बैठा होय वह दुर्बलशरीरवाला, मातृसुखसे रहित, उत्तम विलासदायक स्त्रीवाला और शत्रुओंका जीतनेवाला होता है॥ १-४॥

लिपिकलाकुशलश्च कलिप्रियो विमलशीलविहीनतरो नरः।
रविसुते रविवेश्मनि संस्थिते हतनयस्तनयप्रमदार्तिभाक्॥ ५॥
विहितकर्मणि शर्म कदापि नो विनयतापहतश्चलसौहृदः।
रविसुते सति कन्यकयाऽन्विते विबलताबलतासहितो भवेत्॥६

निजकुलेऽवनिपालबलान्वितः स्मरबलाकुलितो बहुदानदः ।
जलजिनीशसुते तुलयाऽन्विते नृपकृतोपकृतो हि नरो भवेत् ॥७॥
विषहुताशनशस्त्रभयान्वितो धनविनाशनवैरिगदार्दितः ।
विकलिताकलितोऽलिसमन्विते रविसुते विसुतेष्टसुखो नरः ॥८॥

जिसके सिंहराशिमें शनि बैठा होय वह लिखनेमें बडा प्रवीण और सब जनोंसे कलह करनेवाला, उत्तम शील स्वभावकरके रहित, नीतिरहित, पुत्र और स्त्रीसे दुःख पानेवाला होता है। जिसके कन्याराशिमें शनि बैठा होय वह श्रेष्ठ कर्मसे रहित, दुष्टशील और मित्रोंसे विरोध करनेवाला और निर्बल शरीरवाला होता है । जिसके तुलाराशिमें शनि बैठा होय वह राजबलकरके युक्त, कामी, दानी और राजासे उपकार पानेवाला होता है । जिसके वृश्चिकराशिमें शनि बैठा होय वह विषसे, अग्नि और शस्त्रसे भय पानेवाला, धन नाश करनेवाला, शत्रुसे रोगसे दुःख पानेवाला और कलहके कारण विकल होता है ॥ ५–८ ॥

रविसुतेन युते सति कार्मुके सुतगणैः परिपूर्णमनोरथः ।
प्रथितकीर्तिसुवृत्तिपरो नरो विभवतो भवतोषयुतो भवेत् ॥ ९॥
नरपतेरतिगौरवतां व्रजेद्रविसुते मृगराशिगते नरः ।
अगुरुणा कुसुमैर्मृगजातया विमलया मलयाचलजैः सुखम् १०॥
ननु जितो रिपुभिर्व्यसनावृतैर्विहितकर्मपराङ्मुखताऽन्वितः ।
रविसुते कलशेन समन्विते सुसहितः सहितः प्रचयैर्नरः ॥११॥
विनयताव्यवहारसुशीलतासकललोकगृहीतगुणो नरः ।
उपकृतो निपुणस्तिमिसंश्रिते रविभवे विभवेन समन्वितः॥१२॥

जिसके धनुराशिमें शनि बैठा होय वह पुत्रादिकोंकरके पूर्ण मनोरथवाला, प्रसिद्ध कीर्ति और उत्तम वृत्तिवाला होता है और विभवसमेत निरन्तर सुखी रहता है। जिसके मकरराशिमें शनि बैठा होय वह राजाके समान गौरवको प्राप्त होता है और अगुरु कुसुमादि सुगन्ध लेपनसे प्रसन्न चित्तवाला और सुखी होता है । जिसके कुंभराशिमें शनि बैठा होय वह शत्रुओंसे जीता हुआ, व्यसनी, विहितकर्मसे पराङ्मुख रहनेवाला और प्रसन्नताकरके युक्त होता है । जिसके मीनराशिमें शनैश्चर बैठा होवै वह विनयता और व्यवहारसुशीलताकरके संपूर्ण गुणोंको ग्रहण करनेवाला, उपकारमें निपुण और विभवकरके युक्त होता है ॥९–१२ ॥

इति द्वादशराशिस्थग्रहफलानि ॥

अथ मित्रामित्रकथनम् ।

विनापि मैत्रीं खलु खेचराणां न ज्ञायते ह्युत्तममध्यहीनाः ।
दिशादिकानां विदिशादिकाश्च तस्मात्प्रवक्ष्ये खलु मैत्रिचक्रम् ॥ १ ॥

विना मैत्रीचक्र ग्रहोंका उत्तम, मध्य, हीन बल तथा दिशा विदिशाका ज्ञान नहीं होता है इस कारण मैत्रीचक्र अब कहता हूं ॥ १ ॥

अथ स्वाभाविकादिमैत्रीकथनम् ।

शत्रू मन्दसितौ समश्च शशिजो मित्राणि शेषा रवेस्तीक्ष्णांशुर्हिमरश्मिजश्च सुहृदौ शेषाः समाः शीतगोः । जीवेन्दूष्णकराः कुजस्य सुहृदो ज्ञोऽरिः सितार्की समौ मित्रे सूर्यसितौ बुधस्य हिमगुः शत्रुः समाश्चापरे ॥ २ ॥ सूरेः सौम्यसितावरी रविसुतो मध्ये परे त्वन्यथा सौम्यार्की सुहृदौ समौ कुजगुरू शुक्रस्य शेषावरी । शुक्रज्ञौ सुहृदौ समः सुरुगुरुः सौरस्य चान्येऽरयस्तत्काले च दशायबन्धुसहजस्वान्त्येषु मित्रस्थितः ॥ ३ ॥ मित्रमुदासीनोऽरिर्व्याख्यायते निसर्गभावेन । तेऽतिसुहृन्मित्रसमास्तत्कालमुपस्थिताश्चिन्त्याः ॥ ४ ॥ मूलत्रिकोणषट्कोणनिधनैकराशिसमसप्तमगाः । एकैकस्य यथाभविता तात्कालिका रिपवः ॥ ५ ॥

सूर्यके शुक्र शनि शत्रु, बुध सम, शेष अर्थात् चंद्र मंगल बृहस्पति मित्र हैं चन्द्रमाके बुध सूर्य मित्र, अन्य (शेष) सम हैं, शत्रु कोई नहीं । मंगलके गुरु चन्द्र सूर्य मित्र. बुध शत्रु. शुक्र शनि सम हैं । बुधके सूर्य शुक्र मित्र. चन्द्र शत्रु और शेष सम हैं । बृहस्पतिके बुध शुक्र शत्रु. शनि सम. शेष मित्र हैं । शुक्रके बुध शनि मित्र. मंगल बृहस्पति सम. शेष शत्रु हैं । शनिके शुक्र बुध मित्र. बृहस्पति सम. अन्य शेष शत्रु हैं । तात्कालिक मैत्रीचक्र बनानेके निमित्त दशवें, ग्यारहवें, चौथे, तीसरे और दूसरे बारहवें स्थानमें स्थित ग्रहके परस्पर मित्र होते हैं । इस प्रकार स्वाभाविक मित्र सम और शत्रुओंका विचारकरके फिर तत्काल उपस्थित ग्रहोंके मित्र सम शत्रुओंका चिंतन करै । मूलत्रिकोणमें स्थित ग्रहभी मित्र होते हैं यह किसी आचार्यका मत है और नववें पांचवें आठवें छठे पहिले और सातवें स्थानस्थित ग्रह तात्कालिक शत्रु होते हैं ॥ २-५ ॥

अथ स्वाभाविक (नैसर्गिक) मैत्रीचक्रम् ।

ग्रहाः	सू	च	मं	बु	बृ	शु.	श	रा	के
मित्र	च.मं बृ	सू.बु	बृ.चं सू	सू.शु.	सू. चं. मं	बु.श रा	शु.बु रा	बु.शु श	बु.शु श
सम	बु	मं.बृ शु.श	शु.श रा	मं.श बृ रा	श.रा	बृ.मं	बृ.	बृ	बृ
शत्रु	शु.श रा	००	बु	चं	बु.शु	सू.चं	सू.चं मं	सू.चं मं	सू.चं मं

अथ तात्कालिकपंचधा मैत्री ।

तत्कालमित्रं तु निसर्गमित्रं द्वयं भवेत्तत्त्वधिमित्रसंज्ञम् ।
तथैव शत्रोरधिशत्रुसंज्ञमेकत्र शत्रुः समतामुपैति ॥ ६ ॥

जो ग्रह तात्कालिकमित्र और नैसर्गिक मित्र हो तो वह ग्रह अधिमित्र होता है. जो ग्रह तत्काल मैत्रीमें शत्रु हो और नैसर्गिकमें भी शत्रु हो वह अधिशत्रु होता है. जो ग्रह एक जगह मित्र हो और दूसरी शत्रु हो वह ग्रह समभावको प्राप्त होता है और समशत्रु हो तो शत्रु मित्र सम हो तो मित्र मानना चाहिये ॥ ६ ॥

अथोदाहरणार्थं कस्यचिज्जन्माङ्गं लिख्यते— इष्टं; ८।१० उ. भा, पदे भयातं ३०।४६भभोग ६६।१६ मार्य

यहां सूर्यका चन्द्रमा नैसर्गिक मित्र है और चक्रमें चन्द्रमा सूर्यसे दशवें है. इस कारण तात्कालिक मित्र हुआ. अब दोनों जगह मित्र २ होनेसे तात्कालिक सूर्यका चन्द्रमा अधिमित्र हुआ; फिर सूर्यका मंगल नैसर्गिकमें मित्र है और चक्रमें सूर्यसे छठे है इस कारण शत्रु है तो मित्र शत्रु होनेसे तात्कालिक सम हुआ इसी प्रकार बुध सूर्यका नैसर्गिकमें सम है और तात्कालिक बारहवें मित्र है तो तात्कालिकमें बुध सूर्यका सम-मित्र होनेसे मित्र हुआ; नैसर्गिकमें बृहस्पति सूर्यका मित्र है तात्कालिकमें नवम होनेसे शत्रु है तो मित्रशत्रु होनेसे सूर्यका गुरु तात्कालिक सम हुआ; नैसर्गिकमें सूर्यका शुक्र शत्रु है तात्कालिक बारहवें मित्र है तो शत्रु मित्र होनेसे सम हुआ, एवं नैसर्गिकमें सूर्यका शनि शत्रु है तात्कालिक अष्टम होनेसे शत्रु है तो शत्रु शत्रु होनेसे अधिशत्रु हुआ; इसी प्रकार दूसरे ग्रहोंके तात्कालिक मित्रादि जानना जैसे चक्रमें स्पष्ट है सो देखना ॥

अथ तात्कालिकपंचधामैत्रीचक्रम्।

ग्रहाः	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
ऽमित्र	चं	बु	००	सू	चं. मं	के.	रा	श	शु.बु
मित्र	बु	बृ.शु श	श. रा	के बृ	रा.श	बृ	बृ	बृ	००
सम	मं.बृ.शु	सू	सू.चं.बृ	चं शु	सू	चं.सू.बु रा. श	चं.बु.शु के. मं	शु.बु के.मं	श.रा चं
शत्रु	००	मं.रा	शु. के	रा.मं.श	के	०मं	००	सू	बृ
ऽशत्रु	श.रा.क	के	बु	००	बु.शु	००	सू	चं	मं.सु

यथा स्वाभाविकीमैत्रीचक्रं यत्र प्रतिष्ठति।
तादृगेव हि तत्कालमैत्रीचक्रं तु स्थापयेत् ॥ १ ॥

जहां स्वाभाविक मैत्रीचक्र लिखा होय उसी प्रकार तात्कालिक मैत्रीचक्रभी बनाकर स्थापित करना चाहिये ॥ १ ॥ इति तात्कालिकमैत्रीचक्रकरणविधिः ॥

अथ षड्वर्गशुद्धिः।

लग्ने देहाचारो होरायामर्थसंपदो विपदः। द्रेष्काणे कर्मफलं सप्तांशे बन्धुसंख्या च ॥ १ ॥ जातकफलं नवांशे द्वादशांशे विचिन्तयेत्पत्नीम्। त्रिंशांशे निधनस्थं यवनाचार्यैः सदा ह्युक्तम् ॥ २ ॥ यस्मिन्मित्रगृहे स्वकीयभवने तुङ्गे त्रिकोणेऽपि वा तत्सर्वं विदधाति जन्मसमये षड्वर्गशुद्धो ग्रहः। एकस्तत्र हि सर्वभूरिनिकरो हस्तेषु कोशान्वितो द्वाभ्यां किं नरमत्र सिद्धसदृशं कुर्वन्ति मर्त्यं भुवि ॥३॥

अब षड्वर्गसे क्या क्या विचारना चाहिये सो कहते हैं–लग्नसे देह आचारका विचार करै, होरासे अर्थ सम्पदा और विपदाको विचारै, द्रेष्काणसे कर्म फलको, सप्तांशसे बन्धु (भाई) संख्याको, नवांशसे जातकफलको, द्वादशांशसे स्त्रीसंबंधी फलको और त्रिंशांशसे मृत्युको विचार करै ऐसा यवनाचार्योंका मत है ॥ जो ग्रह अपने मित्रके घरमें हो या अपने स्थानमें हो, उच्चका हो अथवा त्रिकोणका हो वह जन्मसमयमें सर्वपदार्थोंको देनेवाला षड्वर्ग शुद्धग्रह जानना. जिसके ऐसा एक ग्रह जन्ममें पडे वह अनेक पदार्थों तथा धनकरके युक्त होता है, यदि दो ग्रह ऐसे होवें तो फिर क्या उस मनुष्यको संसारमें सिद्धके समान बना देते हैं ॥ १–३ ॥

तत्र प्रथमं होराकरणम्।

ओजे रवीन्द्वोः सम इन्दुगव्योर्होरे गृहार्धप्रमिते विचिन्त्ये ॥ १ ॥

अब होराको कहते हैं--ओज (विषम) राशि (१।३।५।७।९।११) इनमें प्रथम १५ अंशतक सूर्यकी होरा, फिर शेष १५ अंश अर्थात् १६ से ३० अंशतक चन्द्रमाकी होरा कहिये और समराशि (२ । ४ । ६ । ८ । १० । १२) इनमें पहिले १५ अंशतक चन्द्रमाकी होरा शेष १५ अंशतक सूर्यकी होरा होती है. जैसा चक्रमें स्पष्ट है सो देखना ॥ १ ॥

अथ होराचक्रम्

राशि	मेष.	वृष.	मि.	कर्क	सिंह	कन्या	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं	मी.
१५ अं	सू ५	चं ४	सू ५	चं ४	सू ५	चं ४	सू ५	चं ४	सू ५	चं ४	सू	चं ४
३० अं	चं ४	सू ५	चं ४	सू ५	चं ४	सू ५	चं ४	सू ५	चं ४	सू ५	चं ४	सू ५

अथ द्रेष्काणमाह–

राशित्रिभागा द्रेष्काणास्ते च षट्त्रिंशदीरिताः ।
परिवृत्तित्रयं तेषां मेषादेः क्रमशो भवेत् ॥ १ ॥
स्वपञ्चनवपानां च विषमेषु समेषु च ।
नारदागस्तिदुर्वासा द्रेष्काणेशाश्चरादयः ॥ २ ॥

राशिके तीसरे भागको द्रेष्काण कहते हैं. इस प्रकार मेषादिराशियोंमें क्रमसे तीन आवृत्ति करके छत्तीस द्रेष्काण होते हैं. सम, विषम दोनों प्रकारकी राशियोंमें पहिला द्रेष्काण उसी राशिका, दूसरा द्रेष्काण उस राशिसे पंचम राशिका, तीसरा द्रेष्काण उस राशिसे नवमराशिका होता है. यथा—लग्न ०० । ११ । १६ । २० यहां मेषराशि है तो पहिला द्रेष्काण मेषहीका हुआ । परंतु लग्नमें अंश १० से अधिक और ३० से कम हैं अतः मेषमें. दूसरा द्रेष्काण हुआ तो मेषसे पांचवीं सिंहराशि है इस कारण सिंहहीका द्रेष्काण हुआ ॥ १ ॥ २ ॥

अथ द्रेष्काणचक्रम् ।

स्वा.	रा.	मे.	वृष.	मि.	क.	सिं.५	क.	तु.	वृ.	ध.	मक.	कुं.	मी.
नारद	१० अं	मे.१	वृष२	मि.३	क.४	सिं.५	क. ६	तु.७	वृ. ८	ध.९	म.१०	कुं११	मी १२
अग.	२० अं	सिं.५	ध.४	तु.७	वृ. ८	ध.९	म.१०	कुं. ११	मी १२	मे.१	वृ.२	मि३	क.४
दुर्वा.	३० अं	ध.९	म १०	कुं. ११	मी१२	मे. १	वृ.२	मि.३	क.४	सिं.५	क.६	तु.७	वृ. ८

अथ सप्तांशानाह--

सप्तांशपास्त्वोजगृहे गणनीया निजेशतः ।
युग्मराशौ तु विज्ञेयाः सप्तमर्क्षादिनायकात् ॥ १ ॥

अब सप्तांशको कहते हैं-राशिका सातवां भाग सप्तांश होता है,सो विषमराशिमें प्रथम अपनी राशिसे गणना करै और समराशिमें अपनी राशिसे सातवीं राशिका प्रथम सप्तांश जाने. यथा मेषमें प्रथम मेषका एवं मिथुनमें प्रथम मिथुनका और वृषमें वृषसे सातवीं वृश्चिकका प्रथम सप्तांश होता है। इसी प्रकार समविषमराशिके हिसाबसे द्वादशराशियोंमें सप्तांश विचार करै जैसा चक्रमें स्पष्ट है सो देखना ॥ १ ॥

अथ सप्तांशचक्रम् ।

राशिसप्तांशः	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	क	मी
४।१७।८।३४	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६
८।३४।१७।८	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७
१२।५१।२५।४२	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८
१७।८।३४।१७	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९
२१।२५।४२।५१	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०
२५।४२।५१।२	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११
३०।०।०।० ०	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२

अथ नवांशविधिमाह--

मेषाद्या धनुसिंहश्च मकराद्या वृषकन्ययोः ।
तुलाद्या घटमिथुनश्च वृश्चिकमीनकुलीराद्याः ॥ १ ॥

अब नवांशक जाननेकी विधिको कहते हैं-मेष धनु और सिंह (१ । ९ । ५) इन राशियोंमें आदि मेषका नवांश होता है और धनुराशिपर्यन्त रहता है, मकरका आदि देकर मकर कन्या और वृष इन राशियोंमें जानना । तथा तुला आदि लेकर तुला कुंभ और मिथुनमें गणना करे, एवं कर्कराशिका नवांश आदिमें देकर कर्क, वृश्चिक और मीनराशियोंमें क्रमसे जानना एक राशिमें नौ नवांश भोग करते हैं और एकनवांश ३ तीन अंश २० कलाका होता है ॥ १ ॥

उदाहरण-स्पष्टलग्न०० । ११ । १६ । २० तो यहां मेषराशि है इस कारण आदिमें प्रथम मेषका नवांश ३ । २० तक हुआ । फिर ३ । २० से ६ । ४० तक वृषका हुआ एवं १० । ०० अंशतक मिथुनका हुआ,१० से १३ । २० तक कर्कका हुआ यहां ११ । १६ अंशादि हैं तो यही कर्कके मध्यमें है, अतः कर्कका नवांश मेषादिगणनासे हुआ ॥

अथ नवांशचक्रम् ।

राशि	मे	वृ	मि	कर्क	सिंह	कन्या	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
३।२०	मे१	म१०	तु७	क४	मे१	म१०	तु७	क४	मे१	म१०	तु७	क
६।४०	वृ२	कुंभ	वृश्चि	सिंह	वृ	कुंभ	वृश्चि	सिं	वृष	कुं	वृ	सिं
१०।००	मि३	मीन	धन	कन्या	मि	मीन	धन	क	मि	मी	ध	क
१३।२०	कर्क४	मे	मक	तुला	कर्क	मेष	मक	तु	कर्क	मे	[illegible]	तु
१६।४०	सिंह५	वृष	कुंभ	वृ	सिं	वृष	कुंभ	वृ	सिंह	वृ	कु	वृ
२०।००	क.६	मि	मीन	ध	क	मिथु	मी	ध	क०	मि	मी	ध
२३।२०	तुला७	कर्क	मेष	म	तु	कर्क	मे	म	तु	क	मे	म
२६।४०	वृ.८	सिंह	वृष	कुं	वृ	सिंह	वृ	कुं	वृ	सिं	वृ	कुं
३०।००	धन९	कन्या	मिथु	मी	ध	क	मि	मी	ध	क	मि	मी

अथ द्वादशांशमाह--

द्वादशांशस्य गणनां तत्तत्क्षेत्राद्विनिर्दिशेत् ।
तेषामधीशाः क्रमशो गणेशाश्वियमाऽहयः ॥ १ ॥

द्वादशांशचक्रम् ।

अंशा:रा.	मे	वृ	[illegible]	क	सि	[illegible]	तु	वृ	ध	म	कु	मी
२।३०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
५।००	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१
७।३०	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२
१०।००	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३
१२।३०	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४
१५।००	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५
१७।३०	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६
२०।००	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७
२२।३०	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८
२५।००	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९
२७।३०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
३०।००	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११

अब द्वादशांशको कहते हैं–सब राशियोंमें क्रमसे पहिले अपनी ही राशिका द्वादशांश होता है। एकराशिका बारवाँ भाग (२ अं० ३० कला) द्वादशांश कहाता है. तिनके स्वामी क्रमसे गणेश, अश्विनीकुमार, यम, अहि इस रीतिसे होते हैं ॥ १ ॥ उदाहरण यथा–भौमः ३ । २९ । ९१ । ३७ यहां कर्कराशिका है तो प्रथम आदिमें कर्ककाही द्वादशांश हुआ । उससे गणना करनेसे २९ अंशपर मिथुनके द्वादशांशमें भौम हुआ ॥

अथ त्रिंशांशविधिमाह–

कुजशनिजीवज्ञसिताः पञ्चेन्द्रियवसुमुनीन्द्रियांशानाम् ।
विषमेषु समर्क्षेषूत्क्रमेण त्रिंशांशकाः कल्प्याः ॥ १ ॥
यद्वा–शरेषुनागाद्रिसमीरणानां भौमार्किजीवज्ञसितास्त्वधीशाः ।
त्रिंशांशकानां विषमे समर्क्षेषूक्ताद्विलोमाः खलु जातकज्ञैः ॥२॥

अब त्रिंशांशको कहते हैं–विषमराशियों (मे. मि. सिं. तु. ध. कुं.) में पहले ५ अंशतक मंगल अर्थात् मेषराशिका, फिर ५ से १० तक शनैश्वरकी कुंभराशिका, एवं १० से १८ तक बृहस्पतिका (धनुराशिका), १८ से २५ तक बुध (३ राशि) का, तथा २५ से ३० अंशोंतक शुक्र (तु. रा.) का त्रिंशांश होता है. समराशियों (वृ. कर्क. क. वृ. म. मी.) में विपरीत जानना. यथा ५ अंशतक शुक्र (२ रा.) का एवं ५ से १२ तक बुध (६ रा.) का त्रिंशांश इत्यादि जानना. जैसा चक्रमें स्पष्ट है सो देखना ॥ १ ॥ २ ॥

अथ त्रिंशांशचक्रम् ।

।.भा.	मं	वृष	मि	क	सिं	कं	तु	वृ.	ध	म	कुं	मी
५।००	म ५	शु ५	मं. ५	शु.५	मं.५	शु.५	मं.५	शु.५	म.५	शु.५	मं.५	शु. ५
१०।०० १२।००	श१०	बु.१२	श.१०	बु.१२	श.१०	ब १२	श१०	बु.१२	श१०	बु.१२	श.१०	बु.१२
१८।०० २०।००	बृ१८	बृ.२०	बृ.१८	बृ.२०	बृ.१८	बृ.२०	बृ.१८	बृ.२०	बृ१८	बृ.२०	बृ१८	बृ.२०
२५।००	बु२५	श.२५	बु.२५	श.२५	बु.२५	श२५	बु.२५	श२५	बु.२५	श२५	बु.२५	श२५
३०।००	शु३०	मं.३०	शु.३०	मं.३०	शु.३०	मं३०	शु.३०	म३०	मं३०.	मं.३०	शु.३०	मं.३०

अथ षड्वर्गफलानि ।

तत्रादौ होराफलम् ।

होराङ्गतोऽर्कस्य करोति चन्द्रो नरं सकामं वनिता च कष्टम् । दोषात्मकं बन्धुजनैर्विमुक्तं सव्याधिदेहं रिपुवर्गगम्यम् ॥१॥ सूर्यस्य होरां प्रगतो हिमांशुर्नरं प्रतापं विविधं च सौख्यम् । स्वबाहुसंपादितवित्तपुष्टं जाया अभावस्य मतिं करोति ॥२॥ धर्मिष्ठः सत्यदाता च गुरुदेवप्रपूजकः । उपार्जितवित्तभोगो होरायां सूर्यलक्षणम् ॥ ३॥ गन्धर्वसिद्धिराज्यं च लक्ष्मीवाँश्च सदासुखी । पुत्रपौत्रं च कल्याणं शतवर्षाणि जीवति ॥ ४ ॥

जिसके सूर्यकी होरामें चन्द्रमा युक्त होय वह कामी, स्त्रीकष्टवाला, दोषी, बंधुजनोंकरके रहित, व्याधियुक्तशरीरवाला और शत्रुवाला होता है । पुनः जिसके सूर्यहोरामें चन्द्रमा युक्त होय वह मनुष्य प्रतापवान्, अनेकसुखसे युक्त, अपने भुजाओंसे उपार्जित बहुत धनवाला, स्त्रीके अभाववाला होता है । सूर्यकी होरामें धर्मिष्ठ, सत्य बोलनेवाला, दानी, गुरु और देवताओंका पूजनेवाला, उपार्जितधनका भोग करनेवाला होता है । चन्द्रमाकी होरामें गानेवाला, सिद्धि, राज्यलक्ष्मीकरके युक्त, सदा सुखी, पुत्रपौत्रकल्याणसहित सौ वर्ष जीता है ॥ १-४ ॥

क्रूराः सूर्यस्य होरायां धनधान्यविभूतिदाः । आचारसत्यशीलाढ्यो रोङ्गागो नृपवल्लभः ॥ ५ ॥ होरायाश्चन्द्रमसः शुभग्रहाः कामिनीप्रियं कुर्युः । शीघ्रं मैथुनगामी च चिरं धत्ते कामिनीसङ्गम् ॥६॥ होरायां सूर्यस्य कठिनः प्रायश्च संभोगः । पापैः सर्वैर्बलवान् जितेन्द्रियो मानवो भवति ॥ ७ ॥ होरायां कर्कटे चन्द्रे मृत्युं सुन्दरमुत्तमम् । कामिनीनां प्रियं चैव जनयेत्पुत्रमीदृशम् ॥ ८ ॥

सूर्यकी होरामें क्रूरग्रह हो तो धनधान्यविभूतिको देनेवाले होते हैं और मनुष्य आचार सत्यशीलकरके युक्त रोगी और राजाको प्यारा होता है । जिसके चन्द्रमाकी होरामें शुभ ग्रह स्थित हो वह स्त्रीप्रिय, शीघ्र मैथुनगामी और बहुत कामिनी स्त्रियोंके संगवाला होता है । सूर्यकी होरामें मनुष्य कठिन, अधम, संभोगी होता है और संपूर्ण पापग्रह बलवान् हों तो जितेंद्रिय होता है । चन्द्रमाके कर्कराशिकी होरामें मनुष्य सुन्दर, उत्तम मृत्यु पाता है और कामिनी स्त्रियोंका प्यारा ऐसा पुत्र उत्पन्न करनेवाला होता है ॥ ५-८ ॥

बुधः करोति विख्यातं साध्वीं पत्नीं पतिं शुभम् । जीवः करोति निधनं तेजस्विनमनिन्दितम् ॥ ९ ॥ भोग्यपत्नीपतिं शुक्रः क्षीणश्चन्द्रोऽपि शुक्रवत् । जनयेत् कर्कटे भौमे मृतस्त्रीकं नराधमम् ॥ १० ॥ रविर्दुःखितमत्यन्तं पीडितं गुह्यपीडितम् । शनिर्दासीपतिं कुर्यात्कर्कटस्थे न संशयः ॥ ११ ॥ स्वहोरायां रविः कुर्याद्विद्वांसं दृष्टपौरुषम् । जितेन्द्रियं च शूरं तमुद्यमे धृतमानसम् ॥ १२ ॥

चन्द्रमाकी होरामें जिसके बुध हो वह प्रसिद्ध, शुभ और साधु पत्नीका पति होता है, चन्द्रमाकी होरामें बृहस्पति हो तो उत्तम मरण, तेजवाला और निंदारहित होता है, जिसके चन्द्रमाकी होरामें शुक्र होय वह भोगी हुई स्त्रीका पति होता है और क्षीण चन्द्रमाकाभी फल शुक्रके समान होता है और मंगल होय तो उसकी स्त्री मरजावै और वह मनुष्य अधम होता है । सूर्य जिसके चन्द्र होरामें होय तो वह दुःखित, अत्यन्त पीडित और गुदाकी पीडावाला होता है और कर्कहोरामें शनैश्चर होय तो वह दासीका पति होता है । सूर्य जिसके अपनी होरामें स्थित हो वह विद्वान्, बडा पराक्रमी, जितेन्द्रिय शूरवीर और उद्यममें चित्त लगानेवाला होता है ॥ ९-१२ ॥

होरायां च यदा प्राप्ते धीरं सूतं सतां प्रियम् । शूरं ख्यात धनाढ्यं च सन्मित्रं प्राप्तसंपदम् ॥ १३ ॥ कण्ठीरवस्य होरायां चन्द्रे नीचमनारतम् । बुधे दारिद्र्यपिशुनं जीवेरोगमृतंतकम् । शुक्रेऽगम्यामतिं कुर्याद्वृषलीचार्यमाश्रितः ॥ १४ ॥

जिसके सूर्यकी होरामें मंगल स्थित होय वह सज्जनोंको प्रिय, शूरवीर, प्रसिद्ध, धन करके युक्त, सज्जन मित्रोंवाला और प्राप्त संपदावाला होता है । चन्द्रमा सूर्यकी होरामें हो तो नीच और अनारत होता है. बुधसे दरिद्र और प्रपंची होता है और बृहस्पतिसे रोगी और निर्मल वाणीवाला होता है । जिसके सूर्यकी होरामें शुक्र होय वह चंचल बुद्धिवाला होता है और शनैश्चर हो तो श्रेष्ठ जीविकावाला होता है १३॥१४

इति होराफलम् ॥

अथ द्रेष्काणफलम् ।

यादृग्द्रेष्काणगाः सौम्या उच्चस्था वा स्ववर्गगाः । नित्यं भुञ्यते लक्ष्मीर्वरदा सत्यवादिनी ॥ १ ॥ द्रेष्काणमात्म प्रकरोति सौम्यः केन्द्रत्रिकोणे सुगते बलिष्ठः । द्रव्याधिकं मानगुणैः समेतं विद्यान्वितं

सर्वकलासु दक्षम् ॥ २ ॥ द्रेष्काणपे सौम्यगते निरीक्षिते शुक्रेक्षिते स्याद्विविधं च सौख्यम् । आरोग्यतां मानयशोऽभिवृद्धिस्वदेशकर्मप्रकटं विरुद्धम् ॥३॥ द्रेष्काणे शशिसंयुतेक्षिते वा भौमेक्षितेस्याद्भृगुनन्दने वा । वयःप्रमाणेन फलन्ति कर्म धर्मे धनं स्याद्विविधप्रकारैः ४

जितने शुभग्रह उच्चस्थानमें वा अपने वर्गमें प्राप्त होकर द्रेष्काणमें प्राप्त होवैं तो वे सदा वरदायक, सत्यवादिनी लक्ष्मीके भोग विलासको देते हैं । जिसके अपनेहीं द्रेष्काणमें शुभ ग्रह केन्द्र अथवा त्रिकोणमें बलवान् होकर स्थित हों वह अधिक धनवान्, मान गुण विद्या करके युक्त और सर्व कलाओंमें दक्ष होता है । जिसके द्रेष्काणका स्वामी शुभ राशिमें स्थित वा देखा जाता हो अथवा शुक्र करके देखा जाता हो वह विविध सौख्यवाला, आरोग्यवान्, मान और यशवाला, कर्मकरके अपने देशमें प्रसिद्ध और विरुद्धवाला होता है । जिसके द्रेष्काणमें चन्द्रमा युक्त हो अथवा देखता हो अथवा मंगल वा शुक्र करके देखा गया हो तो उसके कर्म अवस्था प्रमाण करके फलीभूत होते हैं और धर्ममें अनेक प्रकारसे धन होता है ॥ १-४ ॥

द्रेष्काणः केन्द्रगः कुर्यादुच्चस्थो भूपतेर्गृहे । स्वक्षेत्रस्य स्वभूतार्थं मित्रे सन्मानभागयम् ॥ ५ ॥ तथा पणफरस्थाने स्वमित्रोच्चगृहाश्रयः । सन्मित्रं पार्थिवं तद्वद्धनिनं चक्रता नरम् ॥ ६ ॥ आपोक्लिमे च व्युत्पन्नो मित्रस्वगृहदा च भूः । अपत्यं हि सदाचारं कृषितः प्राप्तवित्तकम् ॥ ७ ॥ शत्रुनीचाश्रिता ये च तेषां तत्तुल्यके तनौ । व्रणघातादिकं चापि वदेत्तदनुपूर्वकम् ॥ ८ ॥

जिसके द्रेष्काण केन्द्रस्थान १ । ४ । ७ । १० में स्थित हो वह राजाके घरमें उच्च पदवीवाला होता है और अपने क्षेत्रका होय तो धनवान् और मित्रोंके सन्मानवाला होता है । जिसके अपने मित्र उच्चघरमें प्राप्त पणफर २ । ५ । ८ । ११ स्थानमें स्थित होय वह सज्जन मित्रोंवाला, राजाके समान धनवाला होता है । मित्र स्वगृहमें प्राप्त होकर आपोक्लिम स्थान ३ । ७ । ९ । १२ में स्थित होय तो पृथ्वीदायक जानना और वह पुत्रवान्, सत् आचारवाला, खेतीसे प्राप्त धनवाला होता है । शत्रु नीचाश्रयी द्रेष्काणमें जितने ग्रह हों और उनके समान जन्मलग्नमें भी होवैं तो उन्हींके अनुसार शरीरमें व्रणघातादिक कहना चाहिये ॥५-८॥ इति द्रेष्काणफलम् ॥

अथ सप्तमांशफलम् ।

सप्तांशपे चन्द्रयुते च दृष्टे सौम्येक्षिते स्यात्स्वसहोदरे स्यात् । अत्युग्रताकान्तियशोऽभिवृद्धिर्मैत्राधिको मैत्रयुतः प्रगल्भः ॥ १ ॥

सप्तांशके च ये खेटा नीचस्था रविवर्जिताः। तेषां बलवतो ज्ञेया बन्धूनां चिन्तया स्थिताः ॥ २ ॥ वर्गेऽन्तिमांशे ये खेटा उच्चस्था वा स्ववर्गगाः। अश्वादिवाहने दक्षः शूरो बन्धुविवर्जितः ॥ ३ ॥

जिसके सप्तांशका स्वामी चन्द्रमा करके युक्त हो वा दृष्ट हो अथवा शुभ ग्रह देखते हों तो उसके सहोदर भाई होते हैं और वह अति उग्र कांति, यशका वृद्धिवाला, अधिक मैत्री और मित्रोंवाला और प्रगल्भ होता है। सप्तांशमें जो ग्रह सूर्यको छोडकर नीच स्थानमें स्थित होवे तो बलवान्, बन्धुओंकी चिन्ताकरके सहित होते हैं। जिसके जो ग्रह वर्गके अन्तिम नवांशोंमें उच्चके अथवा अपने वर्गके प्राप्त होकर स्थित हों उन ग्रहोंद्वारा वह मनुष्य अश्वादि वाहनमें दक्ष, शूरवीर और बन्धुओंकरके रहित होता है ॥ १-३ ॥

नृपपूज्यो भवेन्नित्यं सर्वकार्यार्थसंपदा। सप्तवर्गग्रहाश्चैवमुच्चस्थाः शुभवर्गगाः ॥ ४ ॥ नित्यं भुञ्जयते लक्ष्मीर्वरदा सत्यवादिनी। सप्तांशे भ्रातृभवने रविर्जीवश्च भूमिजः ॥ ५ ॥ पश्चाज्जाता पितुः पुत्रं शुक्रचन्द्रज्ञकन्यकाः ॥ ६ ॥ उच्चस्थक्षेत्रगाः खेटाः सप्तांशे खचराः स्थिताः। महाधनी च भवति नीचस्थे च दरिद्रकः ॥ ७ ॥

सप्तवर्ग ग्रह जिसके उच्चमें अथवा शुभ वर्गमें स्थित हों वह राजपूज्य, सम्पूर्ण कार्य, अर्थ और संपदाकरके युक्त होता है। सप्तांशकुंडलीमें सूर्य बृहस्पति और मंगल तीसरे भावमें स्थित हों तो पिताके पश्चात् पुत्र और शुक्र चन्द्रमा बुध हों तो कन्या होवे और मनुष्य सदा वरदायिनी सत्यवादिनी लक्ष्मी भोगनेवाला होता है। जिसके सप्तमांशमें उच्चराशिस्थ ग्रह होवें वह महाधनी होता है और नीचके हों तो दरिद्र होता है ॥ ४-७ ॥ इति सप्तमांशकफलम् ॥

अथ नवांशफलम्।

गुरुर्नवांशे विचरञ्छशाङ्के नरं प्रसूते बहुवित्तयुक्तम्। पुत्रान्वितं पुण्यधनैरुपेतं प्रियातिथिं सर्वजनाभिरामम् ॥ १ ॥ सन्मित्रदाराधनमित्रसौख्यं श्रेष्ठप्रतिष्ठातिविराजमानम्। नरं प्रकुर्यात्सुरराजमंत्री नवांशके चेत् सुखसंपदा स्यात् ॥२॥ नीचस्त्रीकं च नीचस्थे भावेशे तुङ्ग उच्चगः। कुर्याद्राजा नवांशे तु स्वनवांशे तदाधिपम् ॥ ३ ॥ सेनानीर्मित्रनवांशे भोगगुणसंयुतश्च । शत्रुनवांशे दुःखितमत्यन्त-

मलीमसम् ॥ ४ ॥ नीचांशे दास्यत्वं दशां प्राप्य फलं भवेत् । सर्व-मेवं खगैश्चिन्त्यं फलं वाच्यं विचक्षणैः ॥ ५ ॥

जिसके बृहस्पतिके नवांशमें चन्द्रमा होय वह धनकरके युक्त, पुत्रोंसहित, पुण्यधन करके संयुक्त, प्रिय अतिथिवाला और सर्व जनोंका प्यारा होता है। बृहस्पतिके नवांशमें जिसका जन्म होय वह सज्जनमित्र, स्त्रीधन, मित्रसौख्य और श्रेष्ठ प्रतिष्ठा करके विराजमान और सुखसंपदावाला होता है। जिसके नवांशमें भावका स्वामी नीचमें हो वह अधमस्त्रीवाला होता है और तुंग अथवा उच्च राशिमें स्थित हो तो राजा होता है और अपने नवांशमें हो तो स्वामी होता है। मित्रके नवांशमें हो तो सेनानी, भोग और गुणकरके संयुक्त होता है और शत्रुके नवांशमें हो तो दुःखित अधम और मलिन होता है। जिसके नीच नवांशमें हो तो दास और बुरे फलको प्राप्त होता है। इस प्रकार सम्पूर्ण ग्रह विचार करके फल कहना चाहिये ॥ १-५ ॥ इति नवांशफलम् ॥

अथ नवांशकुण्डल्यां पञ्चमस्थाने ग्रहफलम् ।

एकत्रिपञ्चपुत्राश्च धीस्थे तुर्ये कुजे गुरौ । द्विचतुःषट्सप्तसंख्य-पुत्रदा ज्ञसितौ शनिः ॥ १ ॥ सहजे च सिंहे सुतजीवकेतू षष्ठे शनिः सूर्यकलत्रसंस्थः । गर्भे च राहुर्दशमे च भौमः सन्तानहानिश्च भवेन्नराणाम् ॥ २ ॥ ग्रहः क्रूरो व्ययाधीशो धर्मारिसहजे व्यये । दग्धे चक्री सुतस्थाने जातको म्रियते सुतः ॥ ३ ॥ यावत्संख्या ग्रहा वै सुतभवनगताः पूर्णदृष्टिर्यदा वा तावत्संख्या प्रसूतिर्भवति बलयुता पुंग्रहापुत्रकथ्यम् । कन्या चन्द्रस्य शुक्रे हिमसुतरविजो गर्भहानिं करोति केचिच्चन्द्राद्विचार्य मुनिगणकथितं तद्विचिन्त्यं नवांशे ॥ ४ ॥

जिसके नवांशकुंडलीमें पांचवें चौथे मंगल बृहस्पति स्थित होंय उसके एक तीन अथवा पांच पुत्र होते हैं और बुध शुक्र शनि हों तो दो, चार, छः वा सात पुत्र होते हैं। जिसके तीसरे स्थानमें सिंहराशि होय और सुतस्थानमें बृहस्पति और केतु होय, छठेमें शनैश्चर और सप्तममें सूर्य होय और गर्भमें राहु और दशममें भौम होय तो उस मनुष्यके सन्तानकी हानि होती है। जिसके क्रूर बारहवें भावका स्वामी नववें, तीसरे अथवा बारहवें वा आठवेंमें स्थित हो और केतु पंचम भावमें स्थित होय तो उसके पुत्र उत्पन्न होकर मर जाते हैं। जितने ग्रह बलवान् होकर पंचम

भावमें स्थित हों अथवा पंचम भावको देखते हों उतनीही संतान उत्पन्न होती है, पुरुष ग्रहोंसे पुत्र वा चन्द्रमा शुक्र एवं बुधसे कन्या और शनिसे गर्भहानि जानै। ये सब नवांशकुण्डलीसे विचारना चाहिये, किसीका मत है कि, चन्द्रमासे भी विचारै ॥ १-४ ॥ इति नवांशकुंडल्यां पञ्चमस्थग्रहफलम् ॥

अथ द्वादशांशफलम्।

गृहस्था द्वादशे भागे मित्रोच्चसमवस्थिताः। बहुस्त्रीष्वधिकारी स्यान्नानाऋद्धिसमन्वितः ॥१॥ अशीतिचतुराशीतिषडशीत्यथ सप्तकम्। अष्टौ पंचषष्टिषट्पंचाशच्चैव सप्ततिः ॥ २ ॥ नवत्यङ्गाधिका षष्टिषट्पंचाशच्छतं यथा। उक्तमायुः प्रमाणेन द्विरसांशैकभेदतः ॥ ३ ॥ जलेनाष्टादशे वर्षे सर्पेण नवमे पुनः। अपरेण दशमे च द्वात्रिंशे राजयक्ष्मणा ॥४॥ (अष्टौ पञ्चाशीति षष्टिः षट्पञ्चाशच सप्ततिः)

जिसके द्वादशांशमें ग्रह उच्चके मित्रके स्थानमें अथवा अपने घरमें स्थित होकर पडें वह मनुष्य बहुत स्त्रियोंका अधिकारी और अनेक ऋद्धिसिद्धिसे युक्त होता है। अस्सी ८०-१। चौराशी ८४-२। छयासी ८६-३। सत्ताशी ८७-४। पंचाशी ८५-५। साठ ६०-६। छप्पन ५६-७। सत्तर ७०-८। नब्बे ९०-९। छासठ ६६-१०। छप्पन ५६-११। और सौ १००-१२। इस प्रकार द्वादशांशके भेदसे मेषादिराशियोंमें आयु कही है। अठारह वर्षमें जलकरके, नववें वर्ष सर्पकरके, दशवें वर्षमें किसी विकारकरके, बत्तीसवें वर्ष राजयक्ष्मा रोगकरके मरण होता है ॥ १-४ ॥

विंशे रक्तप्रमाणेन द्वाविंशे वह्निना तथा। अष्टाविंशतिमे वर्षे जलोदरभयं तथा ॥५॥ व्याघ्रदंष्ट्रिस्त्रिंशत्तमे शरघातेन तत्कटे। जलेन वातपीडात्वं मरणं मकरे विधौ ॥ ६ ॥ स्त्रीकन्ये मरणं विद्यात्रिंशद्वर्षेण मज्जनम्। चक्रेण मरणं प्राहू राश्यश्चेन्मुच्यते नरः ॥ ७ ॥ पूर्वोक्तमायुः प्राप्नोति सत्यमेतन्मयोदितम् ॥ ८ ॥

बीस वर्षमें रक्तविकारकरके, बाईसवें वर्ष अग्निकरके, अट्ठाईस वर्षमें जलोदरभयसे तीसवें वर्ष व्याघ्रसे, बत्तीसवें वर्ष शरघातकरके और मकरके चन्द्रमामें जलकरके वा वातपीडाकरके मरण होता है। कुंभमें तीस वर्षकरके स्त्री कन्याका मरण कहे और मीनमें चक्रकरके मरण उन्तीसवें वर्षमें कहना चाहिये। इस प्रकार द्वादशांशभेदसे राशियोंमें पूर्वोक्त आयुर्दाय सत्य होता है जैसा मुझकरके कहागया। चक्रमें स्पष्ट है सो देखना ॥ ५-८ ॥ इति द्वादशांशफलम्।

अथ द्वादशांशफलचक्रम् ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
८०	८४	८६	८७	८५	६०	५६	७०	९०	६६	५६	१००
जला-त्	सर्पे-ण	अन्य तः	राज-यक्ष्मा	रक्तवि-कारसे	अग्नि-तः	जलो-दरात्	व्या-घ्रात्	शरघा तात्	जला-त्	जला त्	चक्रे-ण
१८	९	१०	३२	२०	२२	२८	३०	३२	३०	३०	२९

अथ त्रिंशांशफलम् ।

त्रिंशांशके च ये खेटा मित्रोच्चसमवस्थिताः । सर्वकार्यकृतोत्साही धर्मिष्ठः कृतपूजितः ॥ १ ॥ सत्त्वं रजस्तमो वाऽपि त्रिंशांशे यस्य भास्करस्तादृक् । बलिनः सदृशो मूर्तिर्बोद्धा वा जातिकुलदेशानाम् ॥ २ ॥ गुरुरविशशिनः सत्त्वं रजस्सितज्ञौ तमोऽर्किसुतभौमौ । एते ह्यात्मसमानाः प्रकृतीस्तेभ्यः प्रयच्छन्ति ॥ ३ ॥

जिसके त्रिंशांशकुंडलीमें जो ग्रह अपने उच्च राशिमें मित्रकी राशिमें सम राशिमें स्थित हों वे ग्रह संपूर्ण कार्य करनेवाले, तथा उत्साह धर्म और पूज्य पदवीको देनेवाले होते हैं । जिसके त्रिंशांशमें, सतोगुणी, रजोगुणी, तमोगुणी इनमें से जिस ग्रहका प्रकाश हो उसके समान बलवाला सुरूपवाला और जाति कुल देशको जाननेवाला मनुष्य होता है। बृहस्पति, सूर्य और चन्द्रमा सतोगुणी, शुक्र और बुध रजोगुणी, शनैश्चर और मंगल तमोगुणी जानना और इसी प्रकार मनुष्योंको अपनी प्रकृति समान प्रकृतिको देते हैं ॥ १-३ ॥

तथा चोक्तं बृहज्जातके-

यः सात्त्विकस्तस्य दया स्थिरत्वं सत्यार्जवं ब्राह्मणदेवभक्तः ।
रजोऽधिकः काव्यकरः कुलस्त्रीसमग्रवित्तः पुरुषोऽतिशूरः ॥ १ ॥
तमोऽधिको वञ्चयते परेषां मूर्खोऽलसः क्रोधपरोऽतिनिद्रः ।
मिश्रैर्गुणैः सत्त्वरजस्तमोभिर्मिश्रो भवेद्वै स सहस्रभेदतः ॥ २ ॥

इति श्रीमानसागरीपद्धतौ तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

जिसके सतोगुणी ग्रह बली हों वह दयावान् स्थिरता-सत्यता-श्रेष्ठताकरके युक्त और देवता ब्राह्मणका भक्त होता है और जो रजोगुणी बली हों तो वह काव्य

करनेवाला, कुलश्री और बहुत धनकरके युक्त और बडा शूर वीर होता है। तमोगुण अधिक हो तो वह दूसरेको छलनेवाला, मूर्ख, आलसी, क्रोधी और बहुत निद्रावाला होता है और मिश्र गुणोंकरके मिश्र फल कहना चाहिये ॥ १ ॥ २ ॥ इति त्रिशांशफलम्॥

इति श्रीमानसागरीजन्मपत्रीपद्धतौ राजपंडितवंशीधरकृतभाषाटीकायां तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

चतुर्थोऽध्यायः ४ ।

अथ पंचमहापुरुषलक्षणानि निरूप्यन्ते–

ये महापुरुषसंज्ञकाः पञ्च पूर्वमुनिभिः प्रकीर्तिताः ।
वच्मि तान्सरलामलोक्तिभी राजयोगविधिदर्शनेच्छया ॥ १ ॥

जो महापुरुषसंज्ञक राजयोग पांच पहिले मुनियोंने वर्णन किये हैं उनको मैं राजयोगविधिदर्शनकी इच्छा करके सरल रीतिसे कहता हूं ॥ १ ॥

अथ रुचकादियोगः ।

स्वगेहतुङ्गाश्रयकेन्द्रसंस्थैरुच्चोपगैर्वाऽवनिसूनुमुख्यैः ।
क्रमेण योगा रुचकाख्यभद्रहंसाख्यमालव्यशशाभिधानाः ॥ २ ॥

जिसके जन्मकालमें अपनी राशिमें तुंग अर्थात् अपनी उच्चराशिहीमें होकर केन्द्र १।४।७।१० स्थानमें अथवा उच्चराशिहीमें स्थित होय तो मंगलको आदि देकर क्रमसे रुचकादि योग होते हैं अर्थात् मंगल मेष वा वृश्चिक वा मकरका होकर केन्द्रमें पडै तो रुचक नाम योग होता है, एवं बुध कन्या-मिथुनका केन्द्रमें हो तो भद्रयोग होता है इसी प्रकार गुरु, धनु, मीन, कर्कका केन्द्रमें हो तो हंसयोग, शुक्र वृष-तुला-मीनका केन्द्रमें हो तो मालव्ययोग और शनैश्चर मकर, कुंभ एवं तुलाका होकर केन्द्रमें स्थित हो तो शशकनाम योग होता है। इस प्रकार रुचकादि पाँच योग जानने ॥ २ ॥ इति रुचकादियोगाः ॥

अथ रुचकयोगफलम् ।

दीर्घायुः स्वच्छकान्तिर्बहुरुधिरबलः साहसी चाप्तसिद्धिश्चारुभ्रूर्नीलकेशः समकरचरणो मंत्रविच्चारुकीर्तिः । रक्तः श्यामोऽतिशूरो रिपुबलमथनः कम्बुकण्ठो महौजाः क्रूरो भक्तो नराणां द्विजगुरुविनतः क्षामजानूरुजङ्घः ॥ १ ॥ खट्वाङ्गपाशवृषकार्मुकचक्रवीणा-

विज्ञाङ्कहस्तचरणः सरलाङ्गुलिः स्यात् । मंत्राभिचारकुशलस्तुलयेत् सहस्रं मध्यं च तस्य गदितं मुखदैर्घ्यतुल्यम् ॥२॥ सह्यस्य विन्ध्यस्य तथोज्जयिन्याः प्रभुः शरत्सप्ततिरायुरस्मात् । शस्त्राग्निचिह्नो रुचकाभिधाने देवालयान्ते निधनं करोति ॥ ३ ॥

बडी उमरवाला, निर्मलकांतिवाला, अधिक रुधिर और बलवाला, साहसी, सिद्धियों-सहित, उत्तम भौंह और श्यामकेशवाला, जिसके हाथ पैर एक समान हों, मंत्रका जानने-वाला, उत्तम कीर्तिवाला, लाल श्यामता लिये स्वरूपवाला, शूर, शत्रुओंके बलका नाश करनेवाला, शंखकीसी गरदनवाला, महान यशस्वी, क्रूर, मनुष्योंका भक्त, ब्राह्मण और गुरुसे नम्र रहनेवाला, दुर्बल जानु और जंघावाला होता है । हाथ पैरमें खट्-वांग, पाश, वृष, धनुष, चक्र, वीणा ये चिह्न होते हैं । सीधी अंगुली, सलाह करनेमें चतुर, हजारों मनुष्योंमें नामी, मध्यम शरीर, चौडा मुख, सह्य, विंध्य, उज्जयिनीं देशोंका स्वामी, सत्तर वर्षकी उमरवाला, शस्त्र अग्निसे चिह्नित, रुचकयोगमें पैदा हुआ मनुष्य होता है एवं किसी देवताके स्थानमें मृत्युको प्राप्त होता है ॥ १-३ ॥

इति रुचकयोगफलम् ॥

अथ भद्रयोगफलम् ।

शार्दूलप्रतिमाननो द्विपगतिः पीनोरुवक्षःस्थलो
लम्बापीनसुवृत्तबाहुयुगलस्तत्तुल्यमानोच्छ्रयः ।
कामी कोमलसूक्ष्मरोमनिचयैः संरुद्धगण्डस्थलः
प्राज्ञः पङ्कजगर्भपाणिचरणः सत्त्वाधिको योगवित् ॥ १ ॥
शङ्खासिकुञ्जरगदाकुसुमेषुकेतुचक्राब्जलाङ्गलसुचिह्नितपाणिपादः ।
यात्रागजेन्द्रमदवारिकृतार्द्रभूमिसत्कुङ्कुमप्रतिमगन्धतनुः सुघोषः २॥
संभ्रूयुगोतिमतिमान्खलुशास्त्रवेत्तामानोपभोगसहितोऽपि निगूढगुह्यः ।
सत्कुक्षिधर्मनिरतस्सुललाटपट्टो धीरोभवेदसितकुञ्चितकेशपाशः ३॥
स्वतन्त्रः सर्वकार्येषु स्वजनं प्रति न क्षमी ।
भुज्यते विभवस्तस्य नित्यमर्थिजनैः परैः ॥ ४ ॥
भारं तुलायां तुलयेत्प्रयत्नैः श्रीकान्यकुब्जाधिपतिर्भवेत्सः ।
भद्रोद्भवः पुत्रकलत्रसौख्यो जीवेन्नृपालः शरदामशीतिम् ॥५॥

सिंहके समान तेजवाला, गजकीसी चाल, ऊंचा वक्षस्थल, लंबी छातीवाला, मोटी सुढार, दोनों बाहें तिसके तुल्य मान, कामी, कोमल शरीर, सूक्ष्म रोम, उत्तम कपोल, पंडित, कमलके समान हाथ पैर, बलवान्, योगका जाननेवाला। शंख, तलवार, हाथी, गदा, पुष्प, बाण, पताका, कमल, लांगल इन चिह्नोंसे अंकित हाथ पैरवाला, मतवाले हाथीकीसी चालसे भूमिपर यात्रा करनेवाला, अच्छे कुंकुम और गंधमय शरीर, उत्तम वाणीवाला, उत्तम भौंह, अति बुद्धिमान्, शास्त्रका जाननेवाला, मान भोग सहित, छिपा हुआ गुह्यस्थान, अच्छी कुक्षि, धर्ममें तत्पर, अच्छे मस्तकवाला, धैर्यवान्, अति श्याम घूघरवाले बालोंवाला, संपूर्ण कार्योंमें स्वतंत्र, अपने मनुष्योंपर दया करनेवाला, ऐश्वर्यका भोगनेवाला और उसके विभवको सदैव याचक मनुष्य भोग करैं। जिसकी तुलाका भार रत्नों करके तोला जाय, कान्यकुब्ज देशका स्वामी, पुत्रस्त्रीके सुखसहित, अस्सी बरसकी उमरवाला राजा भद्रयोगमें पैदा होनेवाला मनुष्य होता है ॥ १-५ ॥ इति भद्रयोगफलम् ॥

अथ हंसयोगफलम्।

रक्तास्योन्नतनासिकः सुचरणो हंसे प्रसन्नेन्द्रियो गौरः पीनकपोलरक्तकरजो हंसस्वनः श्लेष्मतः। शङ्खाब्जाङ्कुशमत्स्यदामयुगकैः खट्वाङ्गमालाघटैश्चञ्चत्पादकरस्थलो मधुनिभे नेत्रे सुवृत्तं शिरः ॥ १ ॥ जलाशयप्रीतिरतीव कामी न याति तृप्तिं वनितासु नूनम्। उच्चोऽङ्गुलैरवयवैः षडशीतितुल्यैरायुर्भवेत्षष्टचवधिः समानाम् ॥ २ ॥ बाह्लीकदेशादरशूरसेनगन्धर्वगङ्गायमुनान्तरालान्। भुक्त्वा वनान्ते निधनं प्रयाति हंसोऽयमुक्तो मुनिभिः पुराणैः ॥ ३ ॥

लाल मुख, ऊंची नासिका, अच्छे पैर, हंसयोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य प्रसन्नचित्त, गौर, मोटे कपोल, लाल नख, हंसकीसी वाणी बोलनेवाला, शंख, कमल, अंकुश, युगल, मत्स्य, खट्वांग (शस्त्र विशेष), माला, घट ये चिह्न हाथ पैरोंमें शोभित, सहतके समान अरुण नेत्र, उत्तम शिर, जलाशयमें प्रीति करनेवाला, अतिकामी, स्त्रियोंसे तृप्त नहीं होनेवाला, छयासी अंगुल ऊंचे शरीरवाला, साठ बरसकी उमरवाला, बाह्लीक, शूरसेन, गन्धर्व, गंगायमुना मध्य इन देशोंका भोग करनेवाला, वनके अन्तमें मृत्युको प्राप्त होता है, प्राचीन मुनीश्वरोंने ऐसा फल हंसयोगका कहा है ॥ १-३ ॥ इति हंसयोगफलम् ॥

अथ मालव्ययोगफलम्।

अस्थूलोष्ठोऽप्यविषमवपुर्नैव रक्ताङ्गसन्धिर्मध्ये क्षामः शशधर-

रुचिर्हस्तनासः सुगण्डः। सद्दीप्ताक्षः समसितरदो जानुदेशाप्तपाणि-मालव्योऽयं विलसति नृपः सप्ततिर्वत्सराणाम् ॥ १ ॥ वक्त्रं त्रयोदश-मिताङ्गुलमस्य दीर्घं तिर्यग्दशाङ्गुलमितं श्रवणान्तरालम्। मालव्य-संज्ञनृपतिः स भुनक्ति नूनं लाटांश्च मालवकसिन्धुसुपारियात्रान्॥२॥

अस्थूल होठोंवाला, दुर्बलशरीरवाला, एकसी देह, कहीं खाली नहीं, कमर जिसकी क्षीण, चन्द्रमाकीसी रुचि, अच्छे हाथ नासिका और कपोलवाला, प्रकाशवान् नेत्र, बराबर सफेद दांत, आजानुबाहु होता है तथा इस मालव्ययोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य सत्तरवर्षकी उमरतक राजसुखको भोग करता है । तेरह अंगुल दीर्घ मुख और कानोंके बीचमें दश अंगुल तिर्यक् (चौडा) होता है । इस योगमें पैदा हुआ मनुष्य मालव्यसंज्ञक राजा होता है और निश्चय लाट, मालवा, सिंधु, पारियात्र देशोंको भोग करता है ॥ १ ॥ २ ॥ इति मालव्ययोगफलम् ॥

अथ शशकयोगफलम् ।

लघुद्विजास्योऽद्रिगतः सकोपः शठोऽतिशूरो विजनप्रचारः। वना-द्रिदुर्गेषु नदीषु सक्तः प्रियातिथिर्नातिलघुः प्रसिद्धः ॥१॥ नानासेना-निचयनिरतो दन्तुरश्चापि किञ्चिद्धातोर्वादे भवति कुशलश्चञ्चलो लोलनेत्रः। स्त्रीसंसक्तः परधनहरो मातृभक्तः सुजङ्घो मध्ये क्षामः सुल-लितमती रन्ध्रवेदी परेषाम् ॥ २ ॥ पर्यङ्कशंखशरशस्त्रमृदङ्गमाला-वीणोपमाः खलु करे चरणे च रेखाः। वर्षाणि सप्ततिमितानि करोति राज्यं प्राप्तं शशाख्यनृपतिः कथितो मुनीन्द्रैः ॥ ३ ॥

छोटे दाँत और मुखवाला, क्रोधसहित, अत्यन्त शठ, शूर, जंगलमें प्रचार करने-वाला, वन, पर्वत, किला, नदी इनमें आसक्त, अतिथियोंका प्यारा, अतिछोटा नहीं किंतु प्रसिद्ध होता है । अनेक सेनाको इकट्ठा करनेमें तत्पर, कुछ छिदरे दांत, धातुकी परीक्षामें कुशल, चंचल, चंचलनेत्र, स्त्रीमें आसक्त, परधनका हरनेवाला, माताका भक्त, उत्तम जांघोंवाला, बीचमें कृश, शोभायमान बुद्धि, दूसरेके छिद्रोंका देखनेवाला । पर्यंक, शंख, बाण, तलवार, मृंदंग, माला, वीणा इन चिह्नोंके सदृश निश्चय हाथ पैरोंमें रेखा होती हैं. शशकयोगमें पैदाहुआ मनुष्य सत्तर ७० वर्षकी उमरवाला राजा होता है और भले प्रकार राज्य करता है ऐसा मुनियोंने कहा है॥ १–३॥

इति शशकयोगफलम् ॥

अथ पञ्चमहापुरुषभङ्गयोगः।

केन्द्रोच्चगा यद्यपि भूसुताद्या मार्तण्डशीतांशुयुता भवन्ति।
कुर्वंतिनोर्वीपतिमात्मपाके यच्छन्ति ते केवलसत्फलानि॥ १॥

भौमादिग्रह स्वोच्चादिके होकर केन्द्रस्थानमें स्थित होनेपर भी यदि वह सूर्य औरके सहित होंय तो अपनी दशामें पृथ्वीका पति नहीं करते हैं. केवल उत्तम फलके दाता होते हैं॥ १॥ इति पंचमहापुरुषभंगयोगः॥

अथ सुनफायोगफलम्।

भौमादीनां फलं यत्स्याज्जातकस्यातुलं बुधः। प्रज्ञाय प्रवदेत् सम्यक्सुनफादिकृतं फलम्॥ १॥ विक्रमवित्तप्रायो निष्ठुरवचनश्च भूपतिश्चन्द्रः। हिंस्रो नित्यविरोधी सुनफायां सोमसंयोगे॥२॥श्रुतिशास्त्रगेयकुशलो धर्मरतः काव्यकृन्मनस्वी च। सर्वहितो रुधिरतनुः सुनफायां सोमजो भवति॥ ३॥ नानाविद्याचार्यं ख्यातं नृपतिं वृषप्रियं चापि। सकुटुम्बधनसमृद्धं सुनफायां सुरगुरुः कुरुते॥ ४॥ स्त्रीक्षेत्रगृहपश्चतुष्पदाढ्यः सुविक्रमो भवति। नृपसत्कृतः सुवेषो दक्षः शुक्रेण सुनफायाम्॥ ५॥ निपुणमतिर्ग्रामपुरैर्नित्यं संपूजितो धनसमृद्धः। सुनफायां रवितनये क्रियासु गुप्तो भवेन्मलिनः॥ ६॥

भौमादिक ग्रहोंसे उत्पन्न फलको पंडित जन अच्छी रीतिसे जानकर सुनफादि योगोंका फल कहे। जिसके जन्मकालमें चन्द्रमासे दूसरे स्थानमें मंगल होवै सो विक्रमी अर्थात् बडा पराक्रमी और धनी, निष्ठुर वाणीवाला, सेनापति, प्रचंड, हिंसाके करनेवाला और सदा विरोधका करनेवाला होता है। जिसके जन्ममें बुध चन्द्रमासे दूसरे होवे सो वेदशास्त्रगानमें कुशल और धर्ममें रत, मनस्वी सबका हित करनेवाला और काव्य करनेवाला और सुन्दर रूपवाला होता है। जिसके जन्म समयमें चन्द्रमासे दूसरे स्थानमें बृहस्पति होवे सो अनेक विद्या करके निपुण, प्रसिद्ध राजा, राजश्री करके युक्त. श्रेष्ठ कुटुंब और धनकी समृद्धि करके युक्त होता है। जिसके जन्मकालमें चन्द्रमासे दूसरे स्थानमें शुक्र होवे सो स्त्री और क्षेत्रकरके युक्त और गृहपति होता है और चौपाये जीवों करके युक्त, बडे पराक्रमवाला और राजासे सत्कार पानेवाला, उत्तम वेशवाला और चतुर होता है। जिसके जन्मकालमें चन्द्रमाके दूसरे स्थानमें शनि होवे तो चतुर बुद्धिवाला, ग्रामपुरोंमें मान पानेवाला, धनकी समृद्धिवाला, क्रियामें गुप्त और मलिन होता है॥ १-६॥ इति सुनफायोगफलम्॥

अथ अनफायोगफलम् ।

चौरः स्वामी दृप्तः स्ववशी मानी रणोत्कटः सेर्ष्यः । क्रोधात्सं-पत्साध्यः सुतनुः कुजोऽनफायां प्रगल्भश्च ॥ १ ॥ गन्धर्वो लेख्य-पटुः कविः प्रवक्ता नृपाप्तसत्कारः । रुचिरः सुभगोऽनफायां प्रसिद्ध-कर्मा विबुधश्च भवेत् ॥ २ ॥ गंभीरः सन्मेधैश्चानुयुतो बुद्धिमान् नृपाप्तयशाः । अनफायां त्रिदशगुरौ संजातः सत्कविर्भवति ॥ ३ ॥ युवतीनामतिसुभगः प्रणयी क्षितिपस्य गोपतिः कान्तः । कनक-समृद्धश्च पुमाननफायां भार्गवे भवति ॥ ४ ॥ विस्तीर्णभुजः सुभगो गृहीतवाक्यश्चतुष्पदसमृद्धः । दुर्वनितागणभोक्ता गुणसहितः पुत्रवान्रविजे ॥ ५ ॥

जिसके जन्ममें चन्द्रमाके बारहवें स्थानमें मंगल होवे सो चोरोंका स्वामी, ढीठ, धनी, अपने वशमें रहनेवाला, मानी, युद्धमें प्रबल ईर्षा करके युक्त, क्रोधी और सुंदर देहवाला होता है । चन्द्रमासे जिसके बारहवें बुध होवे तो गांधर्वविद्याका जाननेवाला, लिखनेमें चतुर, कविता करनेवाला, वक्ता, राजासे सत्कार पानेवाला, श्रेष्ठ भाग्योंवाला और नीतिको जाननेवाला होता है । चन्द्रमासे बारहवें बृहस्पति होवे तो गंभीर, बुद्धिमान् मनुष्यों करके युक्त, बुद्धिमान्, राजासे यशको पानेवाला और श्रेष्ठ कवि होता है । जिसके जन्मसमयमें चन्द्रमासे बारहवें शुक्र होवे सो स्त्रियोंके सौभाग्यवाला और राजाकी प्रीतिवाला, गौओंका स्वामी, सुन्दर रूपवाला और सुवर्णकी समृद्धिवाला होता है । जिसके जन्मकालमें चन्द्रमासे बारहवें शनि होवे सो बडे विस्तारवाली बाहोंवाला, शूरवीर, वाक्यको प्रमाण करनेवाला, चतुष्पदोंकी समृद्धिवाला, दुष्टस्त्रियोंका भोगनेवाला, गुणोंकरके युक्त पुत्रोंवाला होता है॥ १-५॥

इत्यनफायोगफलम् ।

अथ दुर्धरायोगफलम् ।

अनृतको बहुवित्तो निपुणोऽतिशठो गुणाधिको लुब्धः । वृद्धस्त्रीसक्तः कुलाग्रणीः शशिनि भौमबुधमध्ये ॥ १ ॥ ख्यातः कर्मसु कितवो बहुधनवैरस्त्वमर्षणो धृष्टः । आरक्षकः कुजगुर्वोर्मध्यगते शशिनि संग्राही ॥ २ ॥ " उत्तमरामासुभगो विषादशीलोऽस्त्रविद्भवेच्छूरः । व्यायामी रणशीलः सितारयोर्मध्यगे चन्द्रे ॥ " उत्तम-

सुरतो बहुसंचयकारको व्यसनसक्तः। क्रोधी पिशुनो रिपुमान् यमारयोः स्याद्गुरधरायाम् ॥ ३ ॥ धर्मरतः शास्त्रज्ञो वाक्पटुः सर्ववर्द्धनः समृद्धः। त्यागयुतो विख्यातो गुरुबुधमध्यास्थिते चन्द्रे ॥ ४ ॥

जिसके जन्मकालमें मंगल बुधके मध्यमें चन्द्रमा स्थित होवे सो झूंठ बोलनेवाला, बहुत धनवाला, बडा चतुर, शठ, अधिक गुणोंसे युक्त, लोभी, वृद्धस्त्रीमें सक्त और कुलमें मुख्य होता है। जिसके जन्ममें मंगल बृहस्पतिके मध्यमें चन्द्रमा होवे सो कर्मोंमें प्रसिद्ध, धूर्त्त, बहुत धनवान्, शत्रुओंकरके युक्त, क्रोधी, ढीठ, रक्षा करनेवाला और संग्रह करनेवाला होता है। " और जिसके जन्ममें मंगल, शुक्रके मध्यमें चन्द्रमा होवे सो श्रेष्ठ भाग्योंवाला, विषादी, शास्त्रोंको जाननेवाला, शूरवीर, व्यायाम करनेवाला और युद्ध करनेवाला होता है ॥ " उत्तम सुरत, बहुत संचय करनेवाला, व्यसनमें सक्त, क्रोधी, चुगुलखोर और शत्रुओंकरके युक्त, जिसके जन्मकालमें शनि मंगलके मध्यमें चन्द्रमा पडै तो ऐसा होता है। जिसके जन्मसमयमें बुध बृहस्पतिके मध्य चन्द्रमा स्थित होवै सो धर्ममें तत्पर, शास्त्रका जाननेवाला,. वाचाल, सर्ववर्द्धन, समृद्धिवाला, त्याग करके युक्त एवं प्रसिद्ध होता है ॥ १-४ ॥

प्रियवाक्सुभगः कान्तः प्रवृत्तगो यदि सुकृतवान् नृपतिः। सौख्यः शूरो मंत्री बुधसितयोर्मध्यगे च हिमकिरणे ॥ ५ ॥ देशेदेशे गच्छति वित्तवशो नास्ति विद्यया सहितः। चन्द्रेऽन्येषां पूज्यः स्वजनविरोधी ज्ञमन्दयोर्मध्ये ॥ ६ ॥ धृतिमेधः स्थैर्ययुतो नीतिज्ञः कनकरत्नपरिपूर्णः। ख्यातो नृपकृत्यकरो गुरुसितयोर्दुरुधरायोगे ॥ ७ ॥ सुखनयविज्ञानयुतः प्रियवाग्विद्वान् धुरंधरो मर्त्यः। ससुतो धनी सुरूपश्चन्द्रो गुरुभार्गवे तुलान्तरगे ॥ ८ ॥ वृद्धवनितः कुलाढ्यो निपुणस्त्रीवल्लभो धनसमृद्धः। नृपसत्कृतं बहुज्ञं कुरुते चन्द्रः शनिसितयोः ९

जिसके जन्ममें बुध शुक्रके मध्यमें चन्द्रमा होवे सो मीठा बोलनेवाला, श्रेष्ठ भाग्यवाला, सुंदर, सुशीलवान्, राजा, सौख्यकरके युक्त, शूरवीर और मंत्री होता है। जिसके जन्ममें बुध शनिके मध्य चन्द्रमा स्थित होवे सो देशदेशांतरमें फिरनेवाला और धनवाला, विद्याकरके हीन, मित्रोंका विरोधी और जनोंकरके पूज्य होता है। जिसके जन्ममें गुरु शुक्रके मध्य चन्द्रमा स्थित होवै सो धैर्य बुद्धिवाला, स्थैर्य करके युक्त, नीति विद्याका जाननेवाला, सुवर्ण एवं रत्नोंसे परिपूर्ण, प्रसिद्ध, राजाके

कर्मोंका करनेवाला होता है। जिसके जन्ममें गुरु शनिके मध्य चन्द्रमा होवे सो सुख और नीति विद्याकरके युक्त, मीठी वाणीवाला, विद्वान्, धुरंधर, पुत्रवान्, धनी और सुंदर रूपवाला होता है। जिसके जन्मसमयमें शुक्र शनिके मध्यमें चन्द्रमा होवे वह बूढी स्त्रीवाला, कुलमें प्रधान, चतुर और स्त्रीका प्यारा, धनकी समृद्धिवाला, राजासे सत्कार पानेवाला होता है ॥ ५-९ ॥ इति दुर्धरायोगफलम् ॥

अथ केमद्रुमफलम् ।

केमद्रुमे भवति पुत्रकलत्रहीनो देशान्तरे व्रजति दुःखसदाभितप्तः । ज्ञातिप्रमोदनिरतो मुखरः कुचैलो नीचः सदा भवति भीतियुतश्चिरायुः ॥ १ ॥ कुले नित्यभोगधनभुग्धनसहनाढ्यसौख्यान्वितो दुरधरां प्रभवेत्सुभृत्यः । केमद्रुमे मलिनदुःखितनीचप्रेष्यो निस्वश्च तत्र नृपतेरपि वंशजातः ॥ २ ॥

जिसके केमद्रुमयोग होवै वह पुत्र स्त्री करके हीन, देशान्तरमें रहनेवाला, सदा दुःखित, जातिके प्रमोदमें रत, वाचाल और कुचालवाला, नीच, सदा भयसे युक्त और बहुत उमरवाला होता है। दुर्धरायोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य अपने कुलमें सदा भोग और धनको भोगनेवाला, धनकरके युक्त और सौख्यवाला होता है तथा केमद्रुममें उत्पन्न हुआ मनुष्य मलिन, दुःखित, नीच, दूत, दरिद्र, राजाके यहांभी उत्पन्न हुआ हो तोभी ऐसा होता है ॥ १ ॥ २ ॥

अथ केमद्रुमभंगमाह ।

हित्वाऽर्कं सुनफायुजी दुरधरा स्वान्त्यौ भवस्थैर्ग्रहैः
शीतांशोः कथितोऽन्यथा तु बहुभिः केमद्रुमोत्थैः परैः ।
केन्द्रे शीतकरेऽथवा ग्रहयुते केमद्रुमोनेऽपि ते
केचित्केन्द्रनवांशकेष्विति वदंत्युक्तिप्रसिद्धा न ते ॥ १ ॥

सूर्यको छोडकर दूसरे, बारहवें चन्द्रमासे ग्रह होवै तो क्रमसे सुनफा, अनफा, दुर्धरायोग होते हैं. यथा चन्द्रमासे दूसरे कोई ग्रह हों तो सुनफा और चन्द्रमासे बारहवें ग्रह होनेसे अनफा और चन्द्रमासे दूसरे बारहवें दोनों तरफ ग्रह होनेसे दुर्धरा नामक योग होता है। अन्यथा अर्थात् चन्द्रमाके दोनों तरफको २ ग्रह न हों तो अथवा बहुत प्रकारोंसे केमद्रुमयोग होता है. केन्द्रमें अथवा केन्द्रनवांशकमें चन्द्रमा हो अथवा ग्रह स्थित हो तो केमद्रुमयोग भंग हो जाता है अर्थात् अशुभ फलको नहीं करता है ॥ १ ॥

कुमुदगहनबन्धुर्वीक्षमाणः समस्तैर्गगनगृहनिवासैर्दीर्घजीवी चिरायुः। फलमशुभसमुत्थं यच्च केमद्रुमोक्तं स भवति नरनाथः सार्वभौमो जितारिः ॥१॥ पूर्णः शशी यदि भवेच्छुभसंस्थितो वा सौम्यामरेज्यभृगुनन्दनसंयुतश्च। पुत्रार्थसौख्यजनकः कथितो मुनीन्द्रैः केमद्रुमे भवति मङ्गलसुप्रसिद्धिः ॥ २ ॥

जिसके जन्मसमयमें चन्द्रमाको सब ग्रह देखते हों तो उस मनुष्यकी दीर्घायु करते हैं और केमद्रुमयोगसे उत्पन्न अशुभ फलको नाशकरके चक्रवर्ती राजा करते हैं। जिसके पूर्णबली चन्द्रमा शुभग्रहसे अथवा शुभराशिसे युक्त हो वा बुध, बृहस्पति, शुक्र करके युक्त हो तो केमद्रुम योगमें वह पुरुष पुत्रार्थ सौख्य करके संयुक्त होता है ऐसा मुनियोंने कहा है ॥ १ ॥ २ ॥

अथ सुनफादयो योगास्ते कथमुत्पद्यंते तदाह–

रविवर्ज्यं द्वादशगैः सुनफा चन्द्राद्द्वितीयगैः।
सुनफाया उभयस्थितैर्दुर्द्धराकेमद्रुमसंज्ञिता वाच्याः ॥ १ ॥

सूर्यको छोडकर चन्द्रमासे बारहवें कोई ग्रह (पाप अथवा शुभ) स्थित हो तो अनफायोग होता है और दूसरे ग्रह होनेसे सुनफायोग होता है और दूसरे बारहवें दोनों तरफ ग्रह होनेसे दुर्धरायोग होता है और चन्द्रमासे दोनों तरफ कोई ग्रह नहीं होवे तो केमद्रुमयोग होता है ये योग चन्द्रमासे उत्पन्न होते हैं ॥ १ ॥

अथ सूर्याद्वेशिवोशियोगावाह–

सूर्याद्व्ययगे वोशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशिः। उभयस्थितैर्ग्रहगणैरुभयचरी नामतः प्रोक्तः ॥ १ ॥ मन्ददृक्स्थिरवचनं परिभूरिश्रमं नतोर्ध्वतनुम्। कथयति गणिताधिपतिर्वेशिसमुत्थं त्वधोदृष्टिम् ॥२॥ बहुसंचयं यदि नु सदृक्वोशौ पुरुषो भवेद्गुरोर्जातः। भीरुः कायाद्विलग्नो लघुचेष्टो भृगुसुतः पराधीनः ॥ ३ ॥ परतर्कितो दरिद्रो मृदुविनीतो बुधो विगतलज्जः। मातृघ्नः क्षितिपुत्रः परोपकारी नरो वोशौ ॥४॥ परदारश्चन्द्रे च वृद्धकायो घृणी भवेन्मनुजः। संजातो नरो वोशौ योगे शनैश्चरेण संयुक्ते ॥ ५ ॥

चन्द्रमाको छोडकर सूर्यसे बारहवें कोई ग्रह होय तो वोशियोग होता है और सूर्यसे दूसरे कोई ग्रह होय तो वेशियोग होता है और सूर्यसे बारहवें दूसरे दोनों

तरफ ग्रह होवें तो उभयचरीनामक योग होता है (और दोनों तरफ कोई ग्रह न होवै तो कर्त्तरीयोग होता है) ॥ जिसके जन्मकालमें वेशियोग होय वह मन्ददृक् पराक्रम व सत्यसहित (ऊंचे) नम्र शरीरवाला और अधोदृष्टिवाला होता है । जिसके वोशियोगमें सूर्यसे बारहवें बृहस्पति होय तो वह बहुत संचयवाला और सुन्दर दृष्टिवाला होता है और शुक्र होय तो डरपोक लघुचेष्ट और पराधीन होता है । सूर्यसे बारहवें बुध होय तो वह दूसरेका तर्क करनेवाला, दरिद्र, मृदुल, विनीत और लज्जारहित होता है। भौम होय तो उसकी माता मरजावे और वह परोपकारी होता है । और चन्द्र होय तो परस्त्रीमें रत एवं शनैश्चरसे बूढी कायावाला घृणी मनुष्य होता है ॥१-६ ॥

इति वोशियोगफलम् ॥

अथ वेशियोगफलम् ।

उच्चेष्टवचाः स्मृतिमान्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक् । पूर्वशरीरे पृथुलस्तुच्छगतिः सात्त्विको वेशौ ॥१॥ धृतिसत्यबुद्धियुक्तो भवति गुरुर्वेशिगो रणे शूरः । ख्यातो गुणवानार्यः शूरो भार्गवे पुरुषः ॥२॥ प्रियभाषां रुचिरतनुर्वेशः स्याद्वा बुधे पराज्ञाकृत् । संग्रामे विख्यातो भूमिसुते सूतगुणवानपि ख्यातः ॥ ३ ॥ वणिक्कलास्वभावः स्यात् परद्रव्यापहारकः । गुरुद्वेषी शनिः सूर्यः सोमो वेशिः शनैश्चरे ॥४॥

वेशियोग जिसके जन्मकालमें होय वह उत्तम इष्ट वचन बोलनेवाला स्मृतिमान्, तिर्च्छा देखनेवाला, स्थूल शरीरवाला, तुच्छगतिवाला और सात्त्विक होता है । वेशियोगमें सूर्यसे दूसरे बृहस्पति होय तो मनुष्य सत्यसहित, बुद्धिमान् और रणमें शूर होता है और शुक्र होनेसे प्रसिद्ध गुणवान् श्रेष्ठ और शूर होता है । बुधसे वेशियोग होय तो मनुष्य प्रियवचन बोलनेवाला सुन्दर शरीर भेषवाला और दूसरोंपर आज्ञा करनेवाला होता है. भौमसे होय तो वह संग्राममें प्रसिद्ध सूत गुणवान् और प्रसिद्ध होता है । जिसके वेशियोगमें सूर्यसे शनैश्चर दूसरे हो वह वणिजकलाके स्वभाववाला परद्रव्य हरनेवाला गुरुसे द्वेष करनेवाला होता है ॥ १-४ ॥

इति वेशियोगफलम् ॥

अथ उभयचरीयोगफलम् ।

**सर्वसहः सुसमदृक्समकायः सुस्थितो निपुणसत्त्वः ।
नात्युच्चः परिपूर्णग्रीवो भवेदुभयचर्यायाम् ॥ १ ॥
सुभगो बहुभृत्यजनो बन्धूनामाश्रयो नृपतितुल्यः ।
नित्योत्साही हृष्टो भुनक्ति भोगानुभयचर्यायाम् ॥ २ ॥**

उभयचरीयोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य सुन्दर समान दृष्टिवाला समशरीर सुन्दर स्थितिवाला निपुण बलवान् अतिऊंचा नहीं और पूर्णग्रीवावाला होता है। शोभायमान बहुत नौकर जन और बन्धुओंके आश्रयवाला, राजाके समान सदा उत्साही, हृष्टपुष्ट और भोगोंको भोगनेवाला मनुष्य होता है ॥ १ ॥ २ ॥ इति सूर्ययोगाः ॥

अथ सिंहासनयोगः।

षष्ठाष्टमे द्वादशे च द्वितीये च यदा ग्रहाः।
सिंहासनाख्ययोगोऽयं राजसिंहासनं विशेत् ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे, आठवें, बारहवें और दूसरे (६ । ८ । १२ । २) इन स्थानोंमें सब ग्रह पडैं तो सिंहासननामक योगराज सिंहासनका देनेवाला होता है १

अथ ध्वजयोगः।

अष्टमस्था यदा क्रूराः सौम्या लग्ने स्थिता ग्रहाः।
ध्वजयोगोऽत्र जातस्तु स पुमान्नायको भवेत् ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके आठवें स्थानमें क्रूरग्रह स्थित हों और लग्नमें शुभग्रह पडें तो ध्वजयोग होता है ऐसे योगमें पैदाहुआ मनुष्य नायक होता है ॥ १ ॥

अथ हंसयोगः।

त्रिकोणे सप्तमे लग्ने भवन्ति च यदा ग्रहाः।
हंसयोगं विजानीयात्स्ववंशस्यैव पालकः ॥ १ ॥

त्रिकोण (९ । ५) में सातवें और लग्नमें यदि संपूर्ण ग्रह पडें तो हंसयोग होता है, ऐसे योगमें पैदा हुआ मनुष्य केवल अपने वंशका पालन करनेवाला होता है ॥१॥

अथ कारिकायोगः।

एकादशे यदा सर्वे ग्रहाः स्युर्दशमेऽपि च।
लग्नस्य संमुखे वाऽपि कारिका परिकीर्तिता ॥ १ ॥
उत्पन्नः कारिकायोगे नीचोऽपि नृपतिर्भवेत्।
राजवंशसमुत्पन्नो राजा तत्र न संशयः ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके ग्यारहवें अथवा दशवें वा लग्नमें संपूर्ण ग्रह पडैं तो कारिकायोग होता है। कारिकायोगमें पैदा हुआ मनुष्य नीच होनेपर भी राजा होता है और यदि राजवंशमें उत्पन्न हो तो निःसन्देह राजा होता है ॥ १ ॥ २ ॥

अथ एकावलीयोगः ।

लग्नतश्चान्यतो वापि क्रमेण पतिता ग्रहाः ।
एकावली समाख्याता महाराजो भवेन्नरः ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नसे अथवा किसी दूसरे स्थानसे क्रमपूर्वक ग्रह स्थित होनेसे एकावली नामक योग होता है. ऐसे योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य महाराजा होता है ॥ १ ॥

अथ चतुःसागरयोगः ।

चतुर्षु केन्द्रसंज्ञेषु सौम्यपापग्रहस्थितौ ।
चतुःसागरयोगोऽयं राज्यदो धनदो भवेत् ॥ १ ॥

जिसके जन्मकालमें चारों केन्द्र अर्थात् लग्न, चतुर्थ, सप्तम और दशम स्थानोंमें शुभग्रह पापग्रह स्थित हों तो चतुःसागर नामक योग होता है, ऐसा योग राज्य और धनका देनेवाला कहा है ॥ १ ॥

अथ अपरः प्रकारः ।

कर्कटे मकरे मेषे तुलायां च ग्रहे स्थिते ।
चतुःसागरयोगः स्यात्सर्वारिष्टनिषूदनः ॥ १ ॥
चतुःसिन्धौ नरो जातो बहुरत्नसमान्वितः ।
गजवाजिधनैः पूर्णो धरणीशो भवेन्नरः ॥ २ ॥

कर्क, मकर, मेष और तुला (४ । १० । १ । ७) इन राशियोंमें जन्म समय सम्पूर्ण ग्रह पडें तो सर्व अरिष्टोंका नाश करनेवाला चतुःसागर नामक योग होता है। चतुःसागर योगमें पैदाहुआ मनुष्य बहुत रत्नोंसे युक्त, हाथी, घोडा, धनसे पूर्ण पृथ्वीका मालिक होता है ॥ १ ॥ २ ॥

अथ अमरयोगः ।

चतुर्ष्वपि च केन्द्रेषु क्रूराः सौम्या यदा ग्रहाः । क्रूरैः पृथ्वीपतिर्विद्यात्सौम्यैर्लक्ष्मीपतिर्भवेत् ॥ १ ॥ मृगपति अजलग्ने भानुकेन्द्रत्रिकोणे व्ययनिधनसुसंस्थे चन्द्रकर्के वृषेभाः । उभय यदि च दृष्ट्वा जीवशुक्रोऽथवा स्याद्भवति अमरयोगे सर्वारिष्टो विनाशः ॥ २॥

चारों केन्द्रस्थानोंमें क्रूरग्रह शुभग्रह जन्मसमय पडें तो अमरयोग होता है क्रूरग्रहसे पृथ्वीका स्वामी और शुभग्रहसे धनका स्वामी होता है। जिसके जन्मकालमें सूर्य सिंह वा मेषराशिका होकर केन्द्र १ । ४ । ७ । १० त्रिकोण ९ । ५ में बारहवें वा

आठवें स्थानमें स्थित हो और चन्द्रमा कर्क वा वृषराशिका होवे और दोनों यदि बृहस्पति वा शुक्रसे देखे जाते हों तो इस योगको अमरयोग कहते हैं ऐसा योग सम्पूर्ण अरिष्टोंका नाश करनेवाला होता है ॥ १ ॥ २ ॥

अथ चापयोगः।

शुक्रे घटे कुजे मेषे सुस्थो देवपुरोहितः।
तदा राजा भवेन्नूनं चापः सिध्यति दिङ्मुखः॥ १॥

जिसके जन्मकालमें शुक्र कुंभराशिका हो, मंगल मेषराशिका एवं बृहस्पति अपनी राशिका हो तो चापयोग होता है.ऐसे योगमें उत्पन्न राजा दिग्विजयी होता है ॥ १॥

अथ दण्डयोगः।

कर्कटे मिथुने मीने कन्यायां चापगे ग्रहे।
दण्डयोगः समाख्यातो राज्ञामास्पदकारकः॥ १॥
दण्डे च जातः पृथुपुण्यभागी एकातपत्री भवति क्षितीशः।
तेजोमयः सिंहपराक्रमश्च संसेव्यमानो गुरुपात्रवृन्दैः॥ २॥

जिसके जन्मकालमें कर्क, मिथुन, मीन,कन्या,धनु इन राशियोंमें कुल ग्रह पडें तो राजाओंको स्थानकारक दंडयोग होता है, दंडयोगमें पैदाहुआ मनुष्य बहुत पुण्य-भागी, एक छत्र राजा, तेजवान्, सिंहके तुल्य पराक्रमी, नौकरोंसे सेव्यमान, गुरुका भक्त होता है ॥ १ ॥ २ ॥

अथ अपरप्रकारेण हंसयोगः।

मेषे घटे चापतुलामृगालौ मध्यग्रहे हंस इति प्रसिद्धः।
सर्वैश्च पूर्णो नृपतेश्च पूज्यो हंसोद्भवो राजसमो मनुष्यः॥ १॥

जिसके जन्मकालमें मेष, कुंभ, धनु, तुला, सिंह, वृश्चिक (१ । ११ । ९ । ७ । ५ । ८) इन राशियोंमें सब ग्रह पडें तो हंसयोग होता है, ऐसे योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य राजाओंसे पूज्य राजाके समान होता है ॥ १ ॥

अथ वापीयोगः।

धने व्यये तथा लग्ने शेषस्थानेषु संस्थिताः।
वापीयोगो भवेदेवमुदितः पूर्वसूरिभिः॥ १॥
दीर्घायुः स्यादात्मवंशप्रधानः सौख्योपेतोऽत्यंतधीरो नरो हि।
चञ्चद्वाक्यस्तन्मनाः पुण्यवापी वापीयोगे यः प्रसूतः प्रतापी॥ २॥

जिसके जन्मलग्नमें दूसरे (२)बारहवें (१२)तथा लग्न (१) से इतर स्थानमें सम्पूर्ण ग्रह स्थित हों तो वापीयोग होता है, ऐसा प्राचीन पंडितोंने कहा है ॥ वापीयोगमें

पैदाहुआ मनुष्य बडी उमरवाला, अपने वंशमें प्रधान, सौख्यसहित, अत्यंत धीरज-वाला, शोभायमान वाक्य, उत्तम मन, पुण्यवान् होता है ॥ १ ॥ २ ॥

अथ यूपादियोगाः ।

लग्नाच्चतुर्थात्स्मरतः खमध्याच्चतुर्गृहस्थैर्गगनेचरेन्द्रैः ।
क्रमेण यूपश्च शरश्च शक्तिर्दण्डः प्रदिष्टः खलु जातकज्ञैः ॥ ३ ॥

जिसके जन्मकालमें लग्नसे, चतुर्थसे, सातवेंसे और दशवेंसे प्रत्येकसे आरंभ करके चारचार स्थानोंमें सम्पूर्ण ग्रहोंके स्थित होनेसे यथाक्रम यूप, शर, शक्ति और दंड ये चार योग होते हैं. जैसे लग्न, दूसरे, तीसरे, चौथे इन्हीं स्थानोंमें सम्पूर्ण ग्रह स्थित हों तो यूपयोग होता है और चौथे, पांचवें, छठे, सातवें (४ । ५ । ६ । ७) इन्हीं स्थानोंमें सम्पूर्ण ग्रह स्थित हों तो शरनाम (इषुनाम) योग होता है और सातवें ७ आठवें ८ नववें ९ दशवें १० इन्हीं स्थानोंमें सम्पूर्ण ग्रह स्थित हों तो शक्तिनामयोग और दशवें १० ग्यारहवें ११ बारहवें १२ लग्न १ इन्हीं स्थानोंमें सम्पूर्ण ग्रह स्थित हों तो दण्डनाम योग होता है ॥ ३ ॥

अथ यूपयोगफलम् ।

धीरोदारो यज्ञकर्मानुसारो नानाविद्यासद्विचारो नरोच्चः ।
यस्योत्पत्तौ वर्तते यूपयोगो योगो लक्ष्म्या जायते तस्य नित्यम् ४

जिस मनुष्यके जन्मकालमें यूपनाम योग होता है वह मनुष्य धीर, उदार, यज्ञ कर्मोंके अनुसार, अनेक विद्यासहित, अच्छा विचार करनेवाला, सदा लक्ष्मी (धन) से पूर्ण होता है ॥ ४ ॥

अथ शरयोगफलम् ।

हिंस्रोऽत्यन्तं चित्र(तुल्य)दुःखैः प्रतप्तः प्राप्तानन्दः काननान्ते शरज्ञः ।
मर्त्यो योगे यः शरे जातजन्मा स्त्रीरंभाख्या तस्य न क्वापि सौख्यम् ॥ ५

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शरनाम योग होता है वह मनुष्य अत्यंत हिंसाका करने-वाला, चित्रकारीसे दुःखको प्राप्त, आनंदको प्राप्त, वनके निकटमें शरका जाननेवाला, उसकी स्त्री रम्भाके समान सुन्दरी होती है जो मनुष्य शरयोगमें उत्पन्न हो उसके जन्मसे आखिरतक सुख नहीं होता है ॥ ५ ॥

अथ शक्तियोगफलम् ।

नीचैरुच्चैः प्रीतिकृत्सालसश्च सौख्यैरर्थैर्वर्जितो दुर्बलश्च ।
वादे युद्धे तस्य बुद्धिर्विशाला शालासौख्यस्याल्पता शक्तियोगे ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शक्तियोग होता है सो मनुष्य नीच, ऊंच मनुष्योंसे प्रीति करनेवाला, आलस्यसहित, सुख और धनकरके रहित, दुर्बल, विवाद एवं युद्धमें उसकी बुद्धि विशाल और उसे स्थानका सुख थोडा होता है ॥ ६ ॥

अथ दण्डयोगफलम्।

दीनो हीनोन्मत्तसञ्जातसौख्यो द्वेष्योद्वेगी गोत्रजैर्जातवैरः।
कान्तापुत्रैरर्थमित्रैर्विहीनो हीनो बुद्धया दण्डयोगे तु जन्मी ॥ ७ ॥

जिसके जन्मकालमें दंडयोग होता है वह मनुष्य दीन, हीन, उन्मत्त, सुखको प्राप्त, शत्रुओंसे भय माननेवाला, गोत्रके अर्थात् भाई बंधुसे वैर करनेवाला, स्त्री पुत्र धन मित्रकरके रहित, बुद्धिहीन होता है ॥ ७ ॥

अथ नौका-कूट-छत्र-चाप-अर्द्धचन्द्रयोगाः।

लग्नाच्चतुर्थात्स्मरतः खमध्यात्सप्तर्क्षगैर्नौरथ कूटसंज्ञः।
छत्रं धनुश्चापगृहप्रवृत्ता नौपूर्वकैर्योग इहार्द्धचन्द्रः ॥ ८ ॥

पूर्ववत् लग्नसे, चतुर्थ स्थानसे, सातवेंसे और दशवेंसे गणना कर प्रत्येकसे आरम्भ करके सात सात स्थानमें संपूर्ण ग्रहोंके स्थित होनेसे, १ नौका, २ कूट, ३ छत्र, ४ चाप ये चार योग होते हैं, यथा लग्न, दूसरे, तीसरे, चौथे, पांचवें, छठे, सातवें इन्हीं स्थानोंमें संपूर्ण ग्रह स्थित हों तो नौकायोग होता है. चतुर्थ स्थानसे लेकर दशम स्थानपर्यन्त संपूर्ण ग्रह स्थित हों तो कूटनाम योग होता है, जो सप्तमस्थानसे लेकर लग्नपर्यन्त संपूर्ण ग्रह स्थित हों तो छत्रनाम योग होता है, जो दशम स्थानसे लेकर चतुर्थ स्थानपर्यन्त संपूर्ण ग्रह स्थित हों तो चापनाम योग होता है, इनसे जो अन्यराशिमें स्थित हों तो अर्द्धचन्द्रनामक योग, वह आठ प्रकारका होता है, जैसे-दूसरे स्थानसे लेकर अष्टम स्थानपर्यन्त जो संपूर्ण ग्रह पडें तो एक योग, तीसरेसे नवम पर्यन्त द्वितीययोग, पंचमसे ग्यारहवें पर्यन्त तृतीययोग, ६ से १२ तक चतुर्थयोग, आठसे दो तक पंचमयोग, नौसे तीन तक षष्ठयोग, ग्यारहसे पांच तक सप्तमयोग और बारहवेंसे छठे तक सब ग्रह पडें तो अष्टम योग, ये अर्द्धचन्द्रके भेद हैं ॥ ८ ॥

अथ नौकायोगफलम्।

ख्यातो लुब्धो भोगसौख्यैर्विहीनः स्यान्नौयोगे लब्धजन्मा मनुष्यः।
क्लेशी शश्वच्चञ्चलस्वान्तवृत्तिस्तोयोद्भूते धनधान्येन तस्य ॥ ९ ॥

जो मनुष्य नौकायोगमें उत्पन्न होता है वह बडा लोभी और दुःखी और सुखभोगसे विहीन और चंचलस्वभाव होता है ॥ ९ ॥

अथ कूटयोगफलम्।

दुर्गारण्यावासशीलश्च मल्लो भिल्लप्रीतिर्निर्धनो निन्द्यकर्मा।
धर्माधर्मज्ञानहीनश्च दुष्टः कूटप्राप्तोत्पत्तिरेवं मनुष्यः ॥ १० ॥

जो मनुष्य कूट (पर्वत) योगमें उत्पन्न होता है वह किला-कोट-वनमें रहनेवाला मल्ल और भिल्लजनोंसे प्रीति करनेवाला और निन्दितकर्ममें प्रीति रखनेवाला एवं धर्म और अधर्मके ज्ञानसे हीन होता है ॥ १० ॥

अथ छत्रयोगफलम्।

प्राज्ञो राज्ञां कार्यकर्ता दयालुः पूर्वे पश्चात्सर्वसौख्यैरुपेतः।
यस्योत्पत्तौ छत्रयोगोपलब्धिर्लब्धिः स्याच्चेच्छत्रसच्चामराद्यैः ॥११॥

जो मनुष्य छत्रयोगमें उत्पन्न होता है वह बडा चतुर, राजकार्यमें बडा तत्पर और सर्वजनोंपर दयाभाव रखनेवाला, बाल्यावस्था और वृद्धावस्थामें अधिक सुख पानेवाला होता है ॥ ११ ॥

अथ चापयोगफलम्।

आद्ये भागे चान्तिमे जीवितस्य सौख्योपेतः काननाद्रिप्रचारः।
योगे जातः कार्मुके सोऽतिदुष्टो गर्वोन्मत्तोत्पत्तिकृत्कार्मुकास्त्रैः १२

जो चाप (कार्मुक) योगमें उत्पन्न होय वह मनुष्य बाल्यावस्था वृद्धावस्थामें अधिक सुख पावै और वन पर्वतोंमें निवास करै और अहंकारयुक्त एवं धनुष और बाणका करनेवाला होता है ॥ १२ ॥

अथ अर्द्धचन्द्रयोगफलम्।

भूमीपालप्राप्तचञ्चत्प्रतिष्ठः श्रेष्ठः सेनाभूषणार्थाम्बराद्यैः।
चेदुत्पत्तौ यस्य योगेऽर्द्धचन्द्रश्चन्द्रः स स्यादुत्सवार्थं जनानाम् १३

जिसका जन्म अर्द्धचन्द्रयोगमें हो वह मनुष्य राजद्वारसे बडी प्रतिष्ठा पावै एवं उत्तम वस्त्र और आभूषणका लाभ होय और संपूर्ण धनसे परिपूर्ण रहै ॥ १३ ॥

अथ चक्रसमुद्रयोगौ।

तनोर्धनाद्येकगृहान्तरेण स्युः स्थानषट्के गगनेचरेन्द्राः।
चक्राभिधानश्च समुद्रनामा योगावितीहाकृतिजाश्च विंशत् ॥ १४ ॥

लग्नसे और धनभावसे एक एक स्थान अंतर देकर छः स्थानोंमें संपूर्ण ग्रह बैठे होंय तो चक्रयोग और समुद्रयोग होते हैं अर्थात् १।३।५।७।९ और ११ इन स्थानोंमें सब ग्रह पडें तो चक्र और २।४।६।८।१०।१२ इनमें पडें तो समुद्रयोग होता है, ग्रहोंके बैठनेसे इसके भेदमें विंशत् याने बीस २० योग होते हैं ॥ १४ ॥

अथ चक्रयोगफलम् ।

श्रीमद्रूपोऽत्यन्तजातप्रतापो भूपो भूपोपायनैरर्चितः स्यात् ।
योगे जातः पूरुषो यस्तु चक्रे चक्रे पृथ्व्याः शालिनी तस्य कीर्तिः १५

जिसके जन्मकालमें चक्रयोग पडै उसकी बडी कीर्ति, सब जगत्में विख्यात होय और बडा प्रतापी, राजासे सन्मान पानेवाला, अधिक भाग्योदय होता है ॥ १५ ॥

अथ समुद्रयोगफलम् ।

दाता धीरश्चारुशीलो दयालुः पृथ्वीपालप्रातमानः प्रकामम् ।
योगे जातो यः समुद्रे स धन्यो धन्यो वंशस्तेन नूनं नरेण ॥ १६ ॥

जिसके जन्मकालमें समुद्रयोग पडै वह मनुष्य राजकुलसे विविध प्रकारकी प्रतिष्ठा पावै, धन, मान, वैभवसमेत, दानी, धीर, जवान, उत्तम स्वभावसहित होता है॥१६॥

अथ गोलादियोगाः ।

ये योगाः कथिताः पुरा बहुतरास्तेषामभावे भवेद्
द्वौ लग्नैकगतिर्युगं द्विग्रहगैः शूलस्त्रिगेहोपगैः ।
केदारश्च चतुर्षु सर्वखचरैः पाशस्तु पंचस्थितैः
षट्संस्थैककदाम सप्तगृहगैर्वीणेति संख्या इमे ॥ १७ ॥

सम्पूर्ण राजयोग प्राचीन आचार्योंने कहे हैं, इन योगोंके अभावमें गोलयोग दो दो ग्रहोंके बैठनेसे होता है. तीन राशिमें ग्रहोंके बैठनेसे शूलयोग होता है. चार घरमें सब ग्रहोंके बैठनेसे केदारयोग होता है, पांच स्थानोंमें बैठनेसे पाशयोग होता है, छः राशियोंमें बैठनेसे दामयोग होता है, सात स्थानमें बैठनेसे वीणा योग होता है १७

अथ गोलयोगफलम् ।

विद्याहीनौदार्यसामर्थ्यहीना नानायासा नित्यजातप्रवासाः ।
येषां योगः संभवेद्गोलनामा नामासत्यप्रीतयोऽनीतयस्ते ॥ १८ ॥

जिस मनुष्यका जन्म गोलयोगमें होता है वह पुरुष विद्याहीन और पराक्रमविहीन और बडा परिश्रम करनेवाला और निरन्तर परदेशमें रहनेवाला होता है ॥ १८ ॥

अथ युगयोगफलम् ।

पाखण्डेनाखण्डितप्रीतिभाजो निर्लज्जाः स्युर्धर्मकर्माप्रयुक्ताः ।
पुत्रैरर्थैः सर्वथा ते वियुक्ता युक्तायुक्तज्ञानशून्या युगाख्ये ॥ १९ ॥

जिसके जन्मकालमें युगयोग पडै वह मनुष्य पाखण्डी और खण्डित प्रीति

करनेवाला और धर्म कर्मसे विहीन और निर्लज्ज, धन पुत्रसे हीन, युक्तायुक्त ज्ञानसे रहित होता है ॥ १९ ॥

अथ शूलयोगफलम्।

युद्धे वादे तत्पराः क्रूरचेष्टाः क्रूराः स्वान्ते निष्ठुरा निर्द्धनाश्च। योगो येषां सूतिकाले हि शूलः शूलप्रायास्ते जनानां भवन्ति॥२०॥

जो मनुष्य शूलयोगमें उत्पन्न होता है वह युद्ध करनेमें वा कलह करनेमें बडा तत्पर और बडा शूरवीर, क्रूर स्वभाव, निष्ठुर, धनसे विहीन और सब जनोंको शूलके सदृश दुःखदायी होता है ॥ २० ॥

अथ केदारयोगफलम्।

चापोपेताश्चार्थवन्तो विनीताः कृष्यौत्सुक्याश्चोपकारादराश्च। योगे केदारे नरास्तेन धीराचाराश्चापेऽपीतरेषां विशेषात् ॥ २१ ॥

जिसका जन्म केदारयोगमें हो वह मनुष्य धनुका धारण करनेवाला, सत्यवादी, धनी और विनीत, खेती करनेवाला, उपकारसे आदर पानेवाला होता है ॥ २१ ॥

अथ पाशयोगफलम्।

दीनाकारास्तत्पराश्चापकारे बन्धेनार्त्ता भूरिजल्पाः सदम्भाः। नानानर्थाः पाशयोगप्रजाता जातारण्यप्रीतयः स्युर्मनुष्याः॥ २२ ॥

जो पाशयोगमें उत्पन्न होता है वह मनुष्य निरन्तर दुःखी, बुराई करनेमें तत्पर, बंधनकरके दुःखी, बडा कृपण, क्रोधसहित, अनेक अनर्थ करनेवाला और जंगलमें उत्पन्न हुए जीवोंसे प्रीति करता है ॥ २२ ॥

अथ दामिनीयोगफलम्।

जातानन्दो नन्दनाद्यैः सुधीरो विद्वान्भूपः कोपसंजाततोषः। चञ्चच्छीलौदार्यबुद्धिः प्रशस्तः शस्तः सूतौ दामिनी यस्य योगः२३

जिसके जन्ममें दामिनीयोग पडे वह मनुष्य आनंदसहित, पुत्रधनादि सौख्ययुक्त, उत्तमबुद्धिवाला, विद्वान् (पंडित), आभूषण और खजाने करके सहित, संतोषको प्राप्त, उत्तमशीलस्वभाव, उदारबुद्धि, प्रशस्त और अच्छा होता है ॥ २३ ॥

अथ वीणायोगफलम्।

अर्थोपेताः शास्त्रपारंगताश्च संगीतज्ञाः पोषकाः स्युर्बहूनाम्। नानासौख्यैरन्वितास्तु प्रवीणा वीणायोगे प्राणिनां जन्म येषाम् २४॥

जिसका जन्म वीणायोगमें होता है वह मनुष्य धनसहित, शास्त्रका जाननेवाला, संगीत शास्त्रमें बडा प्रवीण, बहुत मनुष्योंका पालन करनेवाला, अनेक प्रकारके सुखका भोगनेवाला और कर्मकार्य करनेमें बडा प्रवीण होता है ॥ २४ ॥

प्रोक्तैरेतैर्नाभसाद्यैश्च योगैः स्यात्सर्वेषां प्राणिनां जन्म कामम्।
तस्मादेतेऽत्यन्तयत्नादपूर्वाः पूर्वाचार्यैर्जातके सम्प्रदिष्टाः॥ २५॥

जो नाभसादियोग वर्णन किये हैं वह जन्मकुंडलीमें विचार करके जो पूर्वाचार्योंने अनेक जातक ग्रंथोंमें वर्णन किये तिनको विचार ग्रहोंके बलाबलको देखकर फल कहना चाहिये॥ २५॥

अथ चन्द्रयोगफलम्।

उत्पातके कृशतनुर्निशि वाऽथ दृश्ये दृश्ये दिवासिरिगर्भ-
यशोदकश्च (?)। एवं स्थितः समफलः पृथिवीपतित्वं जातो
नयाय कुरुते परिपूर्णमूर्तिः॥ २६॥

क्षीणचन्द्रमा जिसके जन्मकालमें रात्रि अथवा दृश्यभागका पडै तो अरिष्ट जानना एवं सूर्यके मंडलमें होकर दृश्यभागका स्थित हो तो सम फल जानना. यदि पूर्ण-चन्द्रमा हो तो पृथ्वीपतित्व तथा विनय युक्त करता है॥ २६॥

अथ दरिद्रयोगः।

वामवामे ग्रहाः सर्वे सूर्यादीनां मुनिस्तथा।
दरिद्रयोगं जानीयान्नात्र कार्या विचारणा॥ २७॥

जिसके जन्मकालमें संपूर्ण सूर्यादिग्रह वामभागमें वाम २ क्रमसे सात स्थानमें पडें तो दरिद्रयोग विना विचारे जानना॥ २७॥

अथ करसंपुटयोगः।

ऋतुरेतश्च सम्पर्काज्जायते विषमा गतिः।
करसम्पुटमादाय वन्ध्या भवति निश्चितम्॥ २८॥

ऋतुरेतके संपर्कसे विषमगति होय तो करसंपुटयोग जानना. ऐसे योगमें स्त्री अवश्यकरके वंध्या होती है॥ २८॥

अथ कारकयोगः।

मूलत्रिकोणस्वगृहोच्चसंस्था नभश्चराः केन्द्रगता मिथः स्युः।
ते कारकाख्याः कथिता मुनीन्द्रैर्विज्ञाय प्राज्ञा भुवने विशेषाः॥२९॥
प्रालेयरश्मिर्यदि मूर्तिवर्ती स्वमन्दिरस्थो निजतुङ्गयातः।
कुजार्कजार्कामरराजपूज्याः परस्परं कारकसंज्ञिताश्च॥ ३०॥
शुभग्रहे लग्नगतेम्बराम्बु १०।४ स्थितो ग्रहः कारकसंज्ञकः स्यात्।
तुङ्गत्रिकोणस्वगृहांशयातास्तेपोहमाने तपनो विशेषात्॥ ३१॥

जो ग्रह अपने मूलत्रिकोणमें या अपने क्षेत्रमें या अपने उच्चस्थानमें और परस्पर केन्द्रमें बैठे होंय उनको मुनीन्द्रलोक कारक कहते हैं. इन चारों केन्द्रोंमें दशमभाव बलवान् होता है ॥ जिसके सूर्य मूर्तिमें सिंहराशिके या मेषराशिके बैठे अथवा सूर्य, शनैश्चर, मंगल बृहस्पति केन्द्रमें परस्पर होयँ तो यह विशेषकारक होते हैं ॥ शुभग्रह जिसके लग्नमें होय अथवा चतुर्थ होय वा दशम स्थानमें हो तो वह ग्रह कारक होता है. जो ग्रह अपने उच्चस्थानमें या स्वक्षेत्रमें या मूलत्रिकोणमें हो उनकी भी मान प्रतिष्ठा अधिक और बहुत धनकी प्राप्ति होती है ॥ २९-३१ ॥

नीचान्वये यद्यपि जातजन्मा मन्त्री भवेत्कारकखेचराद्यैः।
राजान्वये तस्य यदि प्रसूतिर्भूमीपतित्वं स कथं न याति ॥ ३२ ॥
वेशिस्थितो यस्य शुभो नभोगो लग्नं विलग्नं च लवे स्वकीये।
केन्द्राणि सर्वाणि च सद्ग्रहाणि तस्यालये श्रीः कुरुते विलासम्॥३३॥
केंद्रस्थितागुरुविलग्नकजन्मनाथामध्येचयस्यनितरांवितरंतिभाग्यम्
शीर्षोदयोभ्युदयभेषु गताभवेयुरारम्भमध्यमविरामफलप्रदास्ते।३४।

जो नीचकुलमें भी उत्पन्न है और ग्रह उनके कारक हैं तो वे राजाके मन्त्री होते हैं और जो राजाके कुलमें उत्पन्न भये हैं वे अवश्यकरके राजा होंगे ॥ जिसके लग्नसे धन स्थानमें शुभग्रह बैठे और जन्म लग्न अपने नवांशमें होय और चारों केंद्रमें शुभग्रह बैठे हों तो उसके घरमें लक्ष्मी निरन्तर निवास करै. बृहस्पति लग्नेश और चन्द्रकी राशिका स्वामी शीर्षोदय राशिमें स्थित होकर ये तीनों केन्द्रमें बैठे हों तो वे आरंभ मध्य और अंत अवस्थामें भाग्योदय करते हैं ॥ ३२-३४ ॥

अथ शकटयोगः।

संस्था विलग्नेऽप्यथ सप्तमे च पतङ्गमुख्यास्तु ग्रहा नितान्तम्।
वदन्ति योगं शकटाख्यसंज्ञं जातो नरः स्याच्छकटोपजीवी ॥३५॥

जिसके जन्मकालमें लग्न वा सातवें स्थानमें सूर्यादि सब ग्रह पड़ें तो शकट नाम योग होता है, ऐसे योगमें पैदाहुआ मनुष्य गाड़ीवान् अथवा गाड़ीसे आजीविका करनेवाला होता है ॥ ३५ ॥

अथ नन्दायोगः।

युग्मेयुग्मे भवेत्त्रीणि ह्येकैकं च त्रिषु स्थितम्।
नन्दायोगः स विज्ञेयश्चिरायुश्च सुखप्रदः ॥ ३६ ॥

दो दो ग्रह तीन जगह होंय और एक एक तीन जगह वा त्रिषु ६। ८। १२ स्थानमें एक हो तो नंदायोग होता है. ऐसे योगमें पैदाहुआ मनुष्य बडी उमरवाला तथा सुखी होता है ॥ ३६ ॥

अथ दातारयोगः।

लग्ने च जीवो युगगे भृगुश्च द्यूने च सौम्यो दशमे महीजः।
केन्द्रे त्वमी चारुफलप्रदाः स्युः सर्वार्थदातार इति प्रसिद्धाः ३७॥

लग्नमें बृहस्पति, चतुर्थ स्थानमें शुक्र, सातवें भावमें बुध और दशवें भावमें मंगल जिसके जन्मकालमें ये ग्रह इस प्रकार केन्द्रत्वको प्राप्त हों तो वे अच्छे फलको देनेवाले सर्वार्थदातारनामक योगसे प्रसिद्ध होते हैं ॥ ३७ ॥

अथ राजहंसयोगः।

घटे मेषे नरे ३ चापे तुलायां सिंहगे ग्रहे।
राजहंसो भवेद्योगो राज्यास्पदसुखप्रदः ॥ ३८ ॥

जिसके जन्मकालमें कुंभ, मेष, मिथुन, धन, तुला, सिंह, इन राशियोंमें संपूर्ण ग्रह पडें तो राज्य स्थान सुखका देनेवाला राजहंसनामक योग होता है ॥ ३८ ॥

अथ चिह्लिपुच्छयोगः।

सिंहासने च हंसे च दण्डे योगे मरुद्ध्वजे ॥ ३९ ॥ चतुःसागरयोगे च चिह्लिपुच्छो महाफलम् ॥ ४० ॥ तुलामकरमेषाद्यलग्ने वा ह्यथवा क्वचित्। सिंहासने च डमरौ चिह्लिपुच्छः स शस्यते॥४१॥मृगे कर्कें च पुच्छः स्याद्राजहंसः सुखप्रदः। कुंभे च मन्मथे चैव चिह्लिपुच्छोऽभिधीयते ॥ ४२ ॥ मृगे कर्कें ध्वजे पुच्छः कन्यालौ वृषभे झषः। चिह्लिपुच्छो भवेद्योगश्चतुःसागरगोचरे ॥ ४३ ॥ योगोदितफलं पुच्छः करोति द्विगुणं फलम्। तेन योगाधियोगोऽयं लग्नेऽपि कस्यचिन्मते ॥ ४४ ॥ घटशून्ये नृपसचिवो गोमहिषीहयगजैर्युक्तः। नीतिज्ञो बहुपुत्रो लग्नेऽपि च सम्मतं केषाम् ॥ ४५ ॥

अब चिह्लिपुच्छयोगसंबंधी फल कहते हैं-जिसके जन्मकालमें सिंहासन, हंस, दंड, मरुत्, ध्वज, चतुःसागरयोगोंमें चिह्लिपुच्छ हो तो बहुत अच्छे फलको देता है. तुला, मकर, मेष, प्रथम लग्न अथवा और किसी लग्नमें तथा सिंहासन, डमरु योग, मकर, कर्कराशिमें चिह्लिपुच्छ अच्छा कहा है । राजहंसयोग मकर, कर्कराशिमें पुच्छ सुखदायक होता है. एवं कुंभ और मन्मथ (सातवें) राशिमें चिह्लिपुच्छ जानना। मकर, कर्क और ध्वजमें पुच्छ एवं कन्या, वृश्चिक, वृष, मीन-

---

१ केपु। इति पाठान्तरम्।

राशिमें क्षय हो तो चतुःसागरके गोचरमें चिह्लिपुच्छयोग होता है । पूर्वोक्त योगोंसे उत्पन्न फलसे पुच्छयोग दूना फल करता है इस कारण किसीके मतसे यह योगाधियोग कहा है। घटशून्यलग्नमें चिह्लिपुच्छयोग होय तो राजमन्त्री, गाय, भैंस, घोडा, हाथीसे युक्त, नीतिका जाननेवाला व बहुपुत्रवान् मनुष्य होता है, यह किसीका मत है ॥ ३९–४५ ॥

अथ लालाटिकयोगः ।

चन्द्रोष्टमे चक्रे संज्ञार्कार्किशुक्रा गृहे विधोः । केमद्रुमे च संपूर्णे योगो ललाटिको मतः ॥ ४६ ॥ आजन्मतो भवति कारग्रहैः प्रसिद्धः शिल्पादिकर्मकुशलो मुसलाकृतिश्च । भूर्यात्मजो विलभते विविधामलब्धिं जन्मान्तरेऽपि न जहाति ललाटयोगे ॥ ४७ ॥

जिसके जन्मकालमें चन्द्रमा अष्टम स्थानमें स्थित हो और सूर्य, शनि, शुक्र, चन्द्रमाके स्थानमें होकर बारहवें स्थित हों और पूर्ण केमद्रुमयोग होय तो लालाटिकयोग जानना । जिसके जन्मकालमें ललाटयोग होवे वह जन्महीसे कारीगरीकरके प्रसिद्ध, शिल्पादिकर्ममें प्रवीण, मूसलके आकारवाला, बहुत पुत्रोंवाला तथा जन्मांतरमें भी न जानेवाली अनेक अलब्धियोंसे युक्त होता है ॥ ४६ ॥ ४७ ॥

अथ महापातकयोगः ।

राहुणा सहितश्चन्द्रः सपापो गुरुवीक्षितः ।
महापातकयोगोऽयं यदि शुक्रसमो भवेत् ॥ ४८ ॥

जिसके जन्मसमयमें राहुयुक्त चन्द्रमा हो और उस चन्द्रमाको पापग्रहसहित बृहस्पति देखता हो तो महापातकयोग होता है, ऐसे योगमें पैदाहुआ शुक्रके समान होनेपरभी महापातकी होता है ॥ ४८ ॥

अथ बलीवर्दहन्तायोगः ।

भौमेन दृश्यते लग्नं लग्नं पश्यति भास्करः ।
गुरुशुक्रौ न दृश्येते बलीवर्देन हन्यते ॥ ४९ ॥

जिसके जन्ममें मंगल जन्मलग्नको न देखता हो परन्तु लग्नको सूर्य देखता हो और बृहस्पति शुक्रकी दृष्टि न होवै तो ऐसे योगमें वह मनुष्य बलवान् बैलकरके मारा जाता है ॥ ४९ ॥

अथ हठाद्धन्तायोगः ।

आयस्थानगते चन्द्रे चन्द्रस्थानगते रवौ ।
हठेन नाशो विज्ञेयः पञ्चरात्रे विशेषतः ॥ ५० ॥

जिसके ग्यारहवें स्थानमें चन्द्रमा और चन्द्रमाके स्थानमें सूर्य स्थित हो तो विशेषकरके पांचरात्रिहीमें यह योग फल करता है ॥ ९० ॥

अथ वृक्षहन्तायोगः।

मदनाख्यो यदा योगो लग्ने च राहुदर्शने।
वृक्षस्थं मरणं तस्य यदि शुक्रसमो भवेत् ॥ ९१ ॥

जिसके जन्मकालमें मदनयोग यदि हो और राहु लग्नको देखता हो तो शुक्रके समान होनेपरभी वृक्षसे गिरकर मरजावै ॥ ९१ ॥

अथ नासाच्छेदयोगः।

षष्ठस्थानगते शुक्रे तनुस्थानगते कुजे।
नासाच्छेदकरो योगः कथ्यते मुनिसत्तमैः ॥ ९२ ॥

जिसके जन्मकालमें छठे स्थानमें शुक्र और लग्नमें मंगल स्थित हो तो उत्तम मुनियोंने नासाच्छेदयोग कहा है ॥ ९२ ॥

अथ कर्णविच्छेदयोगः।

मन्दे च दृश्यते चन्द्रो लग्ने च रविभार्गवौ।
शुभग्रहा न पश्यन्ति कर्णच्छेदो न संशयः ॥ ९३ ॥

जिसके जन्ममें चन्द्रमा शनिको देखै या शनि चन्द्रमाको देखता हो और सूर्य शुक्र लग्नमें स्थित हों तथा शुभग्रह न देखते हों तो ऐसे योगमें निःसन्देह कर्णच्छेद होता है ॥ ९३ ॥

अथ पादखञ्जयोगः।

कविना सहितो मन्दो गुरुणा सहितः कविः।
शुभग्रहा न पश्यन्ति पादखञ्जो भवेन्नरः ॥ ९४ ॥

जिसके जन्मकालमें शनैश्चर शुक्रसहित स्थित हो तथा शुक्र बृहस्पतिकरके सहित हो और शुभग्रह न देखते हों तो वह मनुष्य पादखंज होता है ॥ ९४ ॥

अथ सर्पहन्ता योगः।

लग्नाच्च सप्तमस्थाने शन्यर्के राहुसंस्थिते।
सर्पेण पीडा तस्योक्ता शय्यायां स्वपतोऽपि च ॥ ९५ ॥

जिसके जन्ममें लग्नसे सातवें स्थानमें शनि, सूर्य, राहु ये तीनों स्थित हों तो वह शय्यापर सोताहुआ भी सर्पसे पीडित होता है ॥ ९५ ॥

अथ व्याघ्रहन्ता योगः।

गुरुस्थानगते सौम्ये शनिस्थानगते कुजे।
पंचविंशतिवर्षे च वने व्याघ्रेण हन्यते ॥ ९६ ॥

जिसके जन्मसमयमें बृहस्पतिके स्थान (धनु ९ मीन १२) में बुध स्थित हो और शनैश्चर स्थान (१० । ११) में मंगल स्थित हो तो ऐसे योगमें वह मनुष्य पंचीस वर्षकी अवस्थामें व्याघ्रकरके वनमें माराजाता है ॥ ५६ ॥

अथ असिघातयोगः ।

शुक्रस्थानगते चन्द्रे चन्द्रस्थानगते शनौ ।
अष्टाविंशतिवर्षे च ह्यसिघातेन मृत्युदः ॥ ५७ ॥

जिसके जन्मकालमें शुक्रके घर (२ । ८) चन्द्रमा और चन्द्रमाके घर कर्कमें शनैश्चर स्थित हो तो ऐसे योगमें वह मनुष्य अट्ठाईसवें वर्षमें तलवारसे मृत्यु पाता है ॥५७॥

अथ शरक्षेपहन्ता योगः ।

धर्मस्थानगते भौमे शन्यर्कराहुसंयुते ।
शुभग्रहा न पश्यन्ति शरक्षेपेण हन्यते ॥ ५८ ॥

जिसके जन्मकालमें मंगल, शनि, सूर्य, राहुकरके युक्त नवम स्थानमें स्थित होय तथा शुभग्रहोंकी दृष्टि न होवे तो ऐसे योगमें वह मनुष्य तीरके लगनेसे मरता है ॥५८

अथ ब्रह्मघातियोगः ।

रविणा सहितो भौमः शनिर्वा जीवसंयुतः ।
अष्टाविंशतिवर्षे च ब्रह्मघाती न संशयः ॥ ५९ ॥

जिसके जन्मकालमें मंगल सूर्यकरके सहित हो अथवा शनि, बृहस्पतिसे संयुक्त हो तो ऐसे योगमें वह अट्ठाईसवें वर्षमें ब्रह्मघाती होता है इसमें संशय नहीं ॥ ५९॥

अथ पञ्चापत्याविनाशयोगः ।

रविस्थानगते चन्द्रे गुरुस्थानसमायुतः ।
सागरे च स्थिते लग्ने पञ्चापत्यविनाशकृत् ॥ ६० ॥

जिसके जन्मकालमें चन्द्रमा सूर्यकी राशि (सिंह) में स्थित हो और बृहस्पति अपने स्थानमें होवे और सागरयोग लग्नमें पडै तो ऐसे योगमें उस मनुष्यकी पांच सन्तान विनष्ट हो जाती हैं ॥ ६० ॥

अथ दोलायोगः ।

मीने मेषे च चापे च स्थिते स्थानत्रये ग्रहे ।
दोलासंज्ञकयोगः स्याद्राज्यदोऽयमुदाहृतः ॥ ६१ ॥

सन्मानदानगुणपात्रपरीक्षितो वा कलानिधिः कौशलगीतनृत्यः ।
मंत्रीश्वरो राजसमो विवेकी केन्द्रस्थिते पापविवर्जिते गुरौ ॥ ६२ ॥

जिसके जन्मकालमें मीन, मेष, धनु (१२।१।९) इन तीनों स्थानोंमें संपूर्ण ग्रह स्थित हों तो राज्यका देनेवाला दोलायोग होता है । जिसके पापग्रहोंसे वर्जित बृहस्पति केन्द्र (१ । ४ । ७ । १०) स्थानोंमें स्थित होवे तो वह मनुष्य सन्मान, दान वा गुणमें परिपूर्ण कलाओंका जाननेवाला, नृत्यगीतमें कुशल, मंत्री, राजाके सम, विवेकी होता है ॥ ६१ ॥ ६२ ॥

अथ पदकविच्छेदयोगः ।

लग्नस्थानगतो भौमः शन्यर्कराहुवीक्षितः ।
योगः पदकविच्छेदो यदि शुक्रसमो भवेत् ॥ ६३ ॥

जिसके लग्नमें मंगल स्थित हो और शनैश्वर, सूर्य, राहु इन करके देखाजाता हो तो पदकविच्छेदयोग होता है, यदि शुक्रसमान क्यों न हो ॥ ६३ ॥

अथ इच्छातो मृत्युयोगः ।

केन्द्रस्थानगते भौमे सैंहिकेये च सप्तमे ।
तदा नित्यं विजानीयादस्मान्मृत्युस्तदा भवेत् ॥ ६४ ॥

जिसके जन्मकालमें केन्द्र (१ । ४ । ७ । १०) स्थानमें मंगल स्थित हो और सैंहिकेय (राहु) सातवें स्थान पडे तो ऐसे योगमें वह मनुष्य सदा जब चाहै तब उसकी मृत्यु होवे ॥ ६४ ॥

अथ मासमृत्युयोगः ।

लग्नात्सप्तमशीतांशुः पापाष्टशुभलग्नगः ।
लग्नस्थितो यदा भानुर्मासान्ते म्रियते शिशुः ॥ ६५ ॥

जिसके जन्मकालमें लग्नसे सातवें स्थानमें चन्द्रमा स्थित हो और अष्टम स्थानमें पापग्रह स्थित हो एवं शुभग्रह लग्नमें विद्यमान हो तथा सूर्यभी लग्नमें स्थित हो तो एक मासके अन्तरमें बालक मरजाता है (यह वर्ष नहीं है किन्तु मास मृत्युयोग है) ॥ ६५ ॥

अथ राजयोगप्रकरणम् ।

लग्नं लग्नपतिर्बलान्वितवपुः केन्द्रत्रिकोणे शिवे पृच्छाजन्मविवाहयानतिलके कुर्यान्नृपालं ध्रुवम् । सच्छीलं विभवान्वितं गजहयं मुक्तातपत्रान्वितं जातं निम्नकुले विभूतिपुरुषं शंसन्ति गर्गादयः ॥ १ ॥ एकः शुक्रो जननसमये लाभसंस्थे च केन्द्रे जातो वै जन्मराशौ यदि सहजगते प्राप्यते वै त्रिकोणे । विद्याविज्ञानयुक्तो भवति नरपतिर्विश्व-

---

१ समान्त इति पाठान्तरम् ।

विख्यातकीर्तिर्दानी मानी च शूरो हयगुणसहितः सद्गजैः सेव्यमानः ॥ २ ॥ दशसुखभवनेशः केन्द्रकोणे धनस्थे बलिपतिबलयाने प्रस्तसिंहासनेषु । स भवति नरनाथो विश्वविख्यातकीर्तिर्मदगलितकपोलैः सद्गजैः सेव्यमानः ॥ ३ ॥

अब राजयोग प्रकरण वर्णन करते हैं-जिसके जन्मकालमें वा प्रश्न, विवाह, यात्रा, तिलक इन लग्नमें लग्नका स्वामी बलवान् होकर लग्नमें वा केन्द्र (१।४।७।१०) त्रिकोण ९ । ९ में या ग्यारहवें स्थानमें स्थित हो तो शीघ्रही राजा करता है तथा शीलवान् विभवकरके युक्त हाथी घोडा मुक्ता छत्रसे युक्त होता है, यदि नीचकुलमें भी उत्पन्न हो तो वह मनुष्य राजा होता है और राजवंशमें उत्पन्न हो तो अवश्यही राजा जानना ऐसी गर्गादिमुनियोंकी सम्मति है । जिसके जन्मसमयमें अकेला शुक्र ग्यारहवें वा केन्द्र (१।४।७।१०) में जन्मराशिमें तीसरे घरमें अथवा त्रिकोणमें स्थित हो तो वह मनुष्य विद्या और ज्ञानसे युक्त राजा जिसकी कीर्ति संसारमें विख्यात होवे दानी तथा मानी शूरवीर घोडा वा गुणसे संयुक्त तथा अच्छे हाथियोंकरके सेव्यमान होता है । जिसके जन्मकालमें दशमस्थानका स्वामी वा चतुर्थस्थानका स्वामी केन्द्र (१ । ४ । ७ । १०) वा नववें या पांचवें स्थानमें स्थित हो और सातवें स्थानका स्वामी दूसरे स्थानमें हो तो वह सिंहासनपर बैठे और मनुष्योंका स्वामी अर्थात् राजा हो जिसकी कीर्ति संसारमें प्रगट हो मदकरके गलित हैं कपोल जिनके ऐसे अच्छे हाथियों करके सेव्यमान होता है ॥ १-३ ॥

एकोऽपि केन्द्रभवने नवपञ्चमे वा भास्वन्मयूखविमलीकृतदिग्विभागः । निःशेषदोषमपहृत्य शुभप्रसूतं दीर्घायुषं विगतरोगभयं करोति ॥ ४ ॥ चन्द्रः पश्येद्यदादित्यं बुधः पश्येन्निशापतिम् । अस्मिन्योगे तु यो जातः स भवेद्वसुधाधिपः ॥ ५ ॥

जिसके जन्मसमयमें कोई एकभी ग्रह केन्द्र अथवा नवम पंचम स्थानमें स्थित हो तो वह सूर्यके किरणोंके समान दिशाओंमें प्रकाशमान होता है और अशुभ दोषोंको नाशकरके बडी उमरवाला रोगरहित मनुष्यको करता है । यदि चन्द्रमा सूर्यको देखता हो ऐसे योगमें जन्मलेनेवाला पृथ्वीका स्वामी(राजा) होता है ४॥५

यदि भवति च केन्द्री यामिनीनाथ एव प्रदिशति प्रियभार्यां पुत्रिणीं वा सुरूपाम् । धनकनकसमृद्धिं माणिकं हीररत्ने रचयति मृगयाभिश्चन्दनैश्चर्चिताङ्गम् ॥ ६ ॥

जिसके जन्मकालमें चन्द्रमा केन्द्र स्थानमें पडै तो पुत्रवती तथा स्वरूपवती प्रिय-भार्या (स्त्री) मिलै। धन, सुवर्ण समृद्धि, माणिक, हीरा, रत्न ये सब अनायास करके इकट्ठा हो और चन्दनसे अपना अंग चर्चना करै ॥ ६ ॥

शुक्रो यस्य बुधो यस्य यस्य केन्द्रे बृहस्पतिः। दशमोऽङ्गारको यस्य स जातः कुलदीपकः ॥ ७ ॥ हयरथनरनागै रत्नसम्यक्फलानां जलधितटनिवासी रत्नतुल्यं च धान्यम्। किल बहुजन इष्टः सत्यवादी प्रसूतो भवति यदि च केन्द्री दैत्यकोणे बुधस्य ॥ ८ ॥ किं कुर्वन्ति ग्रहाः सर्वे यस्य केन्द्री बृहस्पतिः। मत्तमातङ्गयूथानां भिनत्त्येकोऽपि केसरी ॥ ९ ॥ एक एव सुरराजपुरोधाः केन्द्रगोऽथ नवपंचमगो वा। लाभगो भवति यत्र विलग्ने तत्र शेषखचरैरबलैः किम् ॥ १० ॥

जिसके जन्ममें शुक्र, बुध, बृहस्पति केन्द्र (१।४।७।१०।) स्थानमें स्थित हों और दशमस्थानमें मंगल पडै तो ऐसे योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य कुलदीपक होता है। जिसके प्रसूतिकालमें राहु बुधके स्थानसे केन्द्र वा कोणमें स्थित हो तो वह घोडा रथ नर हाथी रत्न इन सब पदार्थोंसे युक्त रत्नके समान धान्यवाला तथा समुद्रके निकट वास करनेवाला बहुत जनोंका प्यारा सत्य बोलनेवाला होता है। जिसके केन्द्रस्थान (१। ४। ७। १०) में अकेला बृहस्पति स्थित हो तो और सब ग्रह क्या करसकते हैं अर्थात् अरिष्टकारक ग्रहभी अशुभफल नहीं करसकते हैं जैसे एक सिंह मतवाले हाथियोंके यूथको भगादेता है। जिसके एकही बृहस्पति केन्द्र वा नवम पंचम लाभ वा लग्नमें पडै सो शेष अबलग्रह कुछ नहीं करसकते हैं ॥ ७-१० ॥

भवति मदनमूर्तिर्वल्लभः कामिनीनां सकलजनसमर्थो दीर्घजन्मा मनुष्यः। ध्वजविषयगुणज्ञो द्रव्यमुख्यः प्रधानः सधनकनकपूर्णो दैत्यपो यस्य केन्द्रे ॥ ११ ॥ धनवान् प्राज्ञः शूरो मंत्री वा दण्डनायकः पुरुषः। दशमस्थे रवितनये वृन्दपुरग्रामनेता वा ॥ १२ ॥ तुलाकोदण्डमीनस्थो लग्नस्थोऽपि शनैश्चरः। करोति भूपतेर्जन्म वंशे च नृपतिर्भवेत् ॥ १३ ॥

जिसके शुक्र केन्द्रस्थानमें पडै तो वह कामदेवसदृश सुन्दर, स्त्रियोंको प्रिय, सकलजनोंके उपकारमें समर्थ, बडी उमरवाला ध्वजविषयमें गुणवान्, धनवान्, धनसुवर्णसे

पूर्ण होता है। जिसके दशमस्थानमें शनैश्चर स्थित हो तो वह मनुष्य धनवान्, पंडित, शूरवीर, मंत्री, दंड देनेका अधिकारी, नायक, पुरों और ग्रामका मालिक होता है। जिसके तुला, धनु, मीनमें स्थित शनि लग्नमें पडे तो राजवंशमें उत्पन्न पुरुष राजा होता है ॥ ११-१३ ॥

दिव्यस्त्रीवरकाञ्चनाम्बरगतामाधारलक्ष्मीमयः शास्त्रं कौतुकगीतनृत्यरसताव्यापारदीक्षागुरुः। पुत्रभ्रातृजनान्वितः स्थिरमतिः कर्ताऽतिप्रीत्याऽन्वितो जीवः केन्द्रगतो भवेन्निजसुखीसत्कर्मकारी नरः १४ आकाशमन्दिरगतस्तनुपः स्वगेहे कुर्यान्नृपं नृपतिचक्रवरैः सुसेव्यम् । स्वीयप्रतापपृतनाहतशत्रुपक्षं शक्रो यथा सुरगणैश्च विराजमानः १५

जिसके बृहस्पति केन्द्रमें होवै वह सुन्दर स्त्री बहुत सोना-वस्त्र-अधिक लक्ष्मी करके युक्त, शास्त्र कौतुक, गीत नृत्यका जाननेवाला, रसादिक पदार्थ व्यापार, दीक्षा गुरु करके युक्त, पुत्र और भ्रातृजनोंसहित, स्थिरबुद्धिवाला, कर्ता अधिक प्रीतिसे युक्त, सुखी और अच्छे कार्य करनेवाला होता है। जिसके जन्मकालमें लग्नका स्वामी अपने घरमें प्राप्त होकर दशमभावमें स्थित होवै ;वह राजा चक्रवर्ती, राजाओंकरके सेव्य, अपनी प्रतापी सेनासे शत्रुपक्षको नाश करनेवाला, जैसे इन्द्र देवतागणों करके युक्त वैसाही मनुष्य होता है ॥ १४ ॥ १५ ॥

उपचयगृहसंस्थो(३।६।१०।११) जन्मदो यस्य चन्द्रः स्वगृहमथ नवांशे केन्द्रयाताश्च सौम्याः । सकलबलवियुक्तश्चैव पापाभिधानं स भवति नरनाथः शक्रतुल्यो बलेन ॥ १६ ॥

जिसके जन्मसमय चन्द्रमा उपचय (३ । ६ । १० । ११) स्थानमें स्थित हो और शुभग्रह अपने घरमें अथवा अपने नवांशमें होकर केन्द्रस्थान (१ । ४ । ७ । १०) में स्थित हों यद्वा चन्द्रमा स्वगृहमें अथवा स्वनवांशमें प्राप्त होकर उपचय स्थानमें स्थित हो और शुभग्रह केन्द्रमें हों अथवा शुभग्रहभी अपने घरमें वा नवांशमें प्राप्त होकर केन्द्रमें स्थित होवैं और पापग्रह बलहीन होवैं तो वह इन्द्रके समान बलवान् राजा होता है ॥ १६ ॥

विद्याकलागुणविराजितकामधेनुर्भोगैः परं वरयुवा जितकामराजः । देशाधिपत्यपुरपत्तनगजश्रियान्तो मीने सितः सकलमण्डलदीतदीक्षैः ॥१७॥ कामेजकन्ये रिपुरन्ध्रसंस्थे केन्द्रत्रिकोणे व्ययगे च राहौ । कामी च शूरो बलवान्स भोगी गजाश्वछत्रं बहुपुत्रता च१८

मृगपतिवृषकन्याकर्कटस्थे च राहौ भवति विपुललक्ष्मीराजराज्याधिपो वा । हयगजनरनौकामेदिनीपण्डितश्च स भवति कुलदीपो राहुतुङ्गो नराणाम् ॥ १९ ॥ केन्द्रत्रिकोणे बुधजीवशुक्राः स्थिता नराणां यदि जन्मकाले । धर्मार्थविद्यासुखकीर्तिलाभः शान्तः सुशीलः स नराधिपः स्यात् ॥ २० ॥

जिसके मीनराशिमें शुक्र स्थित (बलवान् होकर केन्द्रमें) होवै वह विद्या, कला और गुण एवं कामधेनु, भोगोंकरके युक्त, जितेन्द्रिय, देशका स्वामी, पुर, पत्तन, हाथी और धनकरके युक्त और दीक्षाकरके सकलमंडलमें विख्यात होता है। जिसके जायास्थान, मेष, कन्याराशि, छठे, आठवें स्थानमें या केन्द्रत्रिकोणमें अथवा बारहवें भावमें राहु स्थित होवै तो वह कामी, शूरवीर, बलवान्, भोगी और हाथी, घोडे, छत्र इन करके युक्त और बहुत पुत्रोंवाला होता है। जिसके जन्मसमयमें चन्द्रमा सिंह वृष कन्या कर्कराशिमें स्थित हो और उच्चका राहु होवे वह राजाओंका राजा, बहुत लक्ष्मी, हाथी, घोडा, मनुष्य, नौका और बुद्धि करके युक्त, पंडित और कुलका प्रकाश करनेवाला होता है। जिसके जन्मसमय बुध, बृहस्पति और शुक्र केन्द्र (१ । ४ । ७ । १०) अथवा त्रिकोण (९ । ५) में स्थित होवैं वह धर्म, अर्थ, विद्या, सुख, कीर्ति, लाभ, शांतस्वभाव और सुन्दर शील इन करके युक्त मनुष्योंका स्वामी (राजा) होता है ॥ १७-२० ॥

भृगुसुतसुरपूज्यश्चन्द्रमाः केन्द्रवर्ती बहुसुखधनवृद्धिः कर्मसाध्यं नराणाम् । रविसुतशशिपुत्रे भानुजीवे त्रिकोणे क्षितिसुतदशमे वै राजयोगा वदन्ति ॥ २१ ॥ केन्द्रत्रिकोणेषु भवन्ति सौम्या दुश्चिक्यलाभारिगताश्च पापाः । यस्य प्रयाणेऽप्यथ जन्मकाले ध्रुवं भवेत्तस्य महीपतित्वम् ॥ २२ ॥ लाभे त्रिकोणे यदि शीतरश्मिः करोत्यवश्यं क्षितिपालतुल्यम् । कुलद्वयानन्दकरं नरेन्द्रं ज्योत्स्ना हि दीपस्तमसां विनाशी ॥ २३ ॥

जिसके शुक्र, बृहस्पति, चन्द्रमा केन्द्रस्थानमें स्थित होवें वह कर्मसाध्य, बहुत धनकी वृद्धिवाला होता है और शनैश्चर, बुध, सूर्य तथा बृहस्पति ये सब त्रिकोण अर्थात् नवम पंचम भावमें स्थित हों और मंगल दशमभावमें स्थित होवै तो राजयोग होता है। जिसके जन्म अथवा यात्राके समय शुभग्रह केन्द्र त्रिकोणमें स्थित होवैं

और तीसरे, ग्यारहवें, छठे पापग्रह स्थित होवें वह शीघ्र पृथ्वीके स्वामित्वको प्राप्त होता है। जिसके जन्मसमय चन्द्रमा ग्यारहवें अथवा त्रिकोणमें स्थित होवै तो अवश्य राजाके तुल्य उसको करताहै और दोनों कुलमें अरिष्टोंको नाश करके आनन्दको करता है. जैसे दीपक अंधकारको नाश करके प्रकाशको करता है ॥२१-२३॥

शत्रुस्थाने यदा जीवो लाभस्थाने शशी भवेत् । गृहमध्ये स जातश्च विख्यातः कुलदीपकः ॥ २४ ॥ लग्नाधिपो वा जीवो वा शुक्रो वा यत्र केन्द्रगः । तस्य पुंसश्च दीर्घायुः स भवेद्राजवल्लभः ॥ २५ ॥ दशमे बुधसूर्यौ च भौमराहू च षष्ठगौ । राजयोगोऽत्र यो जातः स पुमान्नायको भवेत् ॥ २६ ॥

जिसके छठे स्थानमें बृहस्पति और ग्यारहवें भावमें चन्द्रमा होवै वह ऐसे योगमें उत्पन्न हुआ प्रसिद्ध कुलका प्रकाशक होताहै । जिसके लग्नका स्वामी अथवा बृहस्पति वा शुक्र केन्द्र (१ । ४ । ७ । १०) स्थानमें स्थित हो वह बडी उमरवाला, राजाका प्यारा होताहै । दशवें बुध और सूर्य हो और मंगल राहु छठे होवैं तो यह राजयोग है, इसमें उत्पन्न हुआ पुरुष नायक होताहै ॥ २४-२६ ॥

आदौ जीवः शनिश्चान्ते गृहमध्ये निरन्तरम् । राजयोगं विजानीयात्कुटुम्बबलमुत्तमम् ॥ २७ ॥ सहजस्थो यदा जीवो मृत्युस्थाने यदा सितः । निरन्तरं ग्रहा मध्ये राजा भवति निश्चितम् ॥ २८ ॥ जीवो वृषे सुधारश्मिर्मिथुने मकरे कुजः । सिंहे भवति सौरिश्च कन्यायां बुधभास्करौ ॥ २९ ॥ तुलायामसुराचार्यो राजयोगी भवेदयम् । अत्र योगे समुत्पन्नो महाराजो भवेन्नरः ॥ ३० ॥

पहिलेमें बृहस्पति और अंतमें शनैश्चर और बीचमें शेषग्रह हों तो भी कुटुंब और उत्तम बलकरके युक्त राजयोग जानिये । जिसके तीसरे स्थानमें बृहस्पति और आठवें स्थानमें शुक्र और बीच वा अन्तमें और ग्रह हों तो भी निश्चय राजा होताहै । वृषराशिमें बृहस्पति और मिथुनमें चन्द्रमा और मकरमें मंगल व सिंहमें शनैश्चर और कन्यामें बुध और सूर्य तथा तुलामें शुक्र होय तो यह राजयोग है इसमें उत्पन्नहुआ मनुष्य महाराजा होताहै ॥ २७-३० ॥

अष्टमे द्वादशे वर्षे यदि जीवति मानवः । सार्वभौमस्तदा राजा जायते विश्वपालकः ॥ ३१ ॥ एको जीवो यदा लग्ने सर्वे योगास्तदा-

ऽशुभाः । दीर्घजीवी महाप्राज्ञो जातको नायको भवेत् ॥ ३२ ॥ धने शुक्रोऽथ भौमश्च मीने जीवस्तुलाबुधः । नीचस्थौ शनिचन्द्रौ च राजयोगस्तदा ध्रुवम् ॥ ३३ ॥

आठ वा बारह वर्ष यदि जीता रहा तो संसारभरका पालक, पृथ्वीभरका राजा होता है। जिसके जन्मसमय अकेला बृहस्पति लग्नमें स्थित हो और सब योग अशुभभी हों तो वह पुरुष बहुत कालतक जीनेवाला, बुद्धिमान् और नायक होता है। धनुराशिमें शुक्र वा मंगल और मीनराशिमें बृहस्पति और तुलामें बुध एवं शनि और चन्द्रमा नीच राशि (१ । ८) में स्थित हो तो भी राजयोग होता है ॥३१-३३॥

अस्मिन्योगे च यो जातः स राजा धनवर्जितः। दाता भोक्ता च विख्यातो मान्यो मण्डलनायकः ॥ ३४ ॥ मीने शुक्रो बुधश्चान्ते धने राहुस्तनौ रविः । सहजे च भवेद्भौमो राजयोगोऽभिधीयते ॥ ३५ ॥ सहजे च यदा जीवो लाभस्थाने च चन्द्रमाः । स राजा गृहमध्यस्थो विख्यातः कुलदीपकः ॥ ३६ ॥

इस योगमें उत्पन्न होनेसे धनरहित राजा होता है और दाता, भोग करनेवाला, प्रसिद्ध, पूज्य और मण्डलभरका नायक होता है । मीनराशिमें शुक्र और अंतमें (बारहवें) बुध और धनमें राहु और लग्नमें सूर्य और तीसरे मंगल हो तो राजयोग होता है । जिसके तीसरे स्थानमें बृहस्पति और ग्यारहवें चन्द्रमा होवे सोभी घरहीमें स्थित बडा प्रसिद्ध कुलदीपक राजा होता है ॥ ३४-३६ ॥

शुभग्रहाः शुभक्षेत्रे भवन्ति यदि केन्द्रगाः। तदा शुभानि कर्माणि स करोति हि जातकः ॥ ३७ ॥ उच्चस्थानगताः सौम्याः केन्द्रस्थाने भवन्ति चेत् । ध्रुवं राज्यं भवेत्तस्य यदि नीचसुतो भवेत् ॥ ३८ ॥ स्वक्षेत्रस्थो यदा जीवो बुधः सौरिश्च चेद्भवेत् । तस्य जातस्य दीर्घायुः सम्पत्तिश्च पदेपदे ॥ ३९ ॥ मीने बृहस्पतिः शुक्रश्चन्द्रमाश्च यदा भवेत् । तस्य जातस्य राज्यं स्यात् पत्नी च बहुपुत्रिणी ॥ ४० ॥

जिसके शुभस्थानमें स्थित शुभग्रह केन्द्रभावमें पडैं ऐसे योगमें उत्पन्न हुवा पुरुष शुभकर्म करनेवाला होता है । जिसके उच्चस्थानमें प्राप्त शुभग्रह केन्द्रस्थानमें स्थित हों

तो नीचकुलमें उत्पन्न भी राज्यको प्राप्त होता है अर्थात् राजा होता है । जिसके अपने ही स्थानमें स्थित बृहस्पति, बुध और शनैश्चर हों वह बडी उमरवाला और पद पदमें सम्पदावाला होता है । जिसके मीनराशिमें बृहस्पति, शुक्र और चन्द्रमा होवै वह राज्यको पानेवाला और बहुत पुत्रोंवाली स्त्रीवाला होता है ॥ ३७-४० ॥

पञ्चमस्थो यदा जीवो दशमस्थश्च चन्द्रमाः । स राज्यवान् महाबुद्धिस्तपस्वी च जितेन्द्रियः ॥ ४१ ॥ सिंहे जीवस्तुलाकीटचापेषु मकरेऽपि च । ग्रहा यदा तदा जातो देशभोगी भवेन्नरः ॥ ४२ ॥ तुलाकोदण्डमीनस्थो लग्नसंस्थोऽपि चेच्छनिः । करोति भूपतेर्जन्म महापुण्यानुभावतः ॥ ४३ ॥

जिसके पंचमभावमें बृहस्पति और दशवें चन्द्रमा स्थित हो वह राज्यवाला, महाबुद्धिमान्, तपस्वी और जितेन्द्रिय होता है । जिसके सिंहराशिमें बृहस्पति अथवा तुला, कर्क, धनु, मकर इन राशियोंमें हो और ग्रह अन्यस्थानमें स्थित होवैं सो देशभरका राजा होता है । तुला, धनु, मीन वा लग्नमें स्थित शनैश्चर जिसके होवै वह पुण्य अनुभाव सहित राजा होता है ॥ ४१-४३ ॥

विद्यास्थाने यदा सौम्यः कर्कस्थाने च चन्द्रमाः । धर्मस्थाने यदा सौम्यो राजयोगस्तदा भवेत् ॥ ४४ ॥ मकरे च घटे मीने वृषे मिथुनमेषयोः । ग्रहास्तदा च विख्यातो राजा भवति मानवः ॥४५॥ बुधभार्गवजीवार्कियुक्तो राहुश्चतुष्टये । कुरुते कमलारोग्यपुत्रमानादिकं फलम् ॥ ४६ ॥

पांचवें स्थानमें बुध हो और कर्कराशिका चन्द्रमा हो और नवमस्थानमें शुभग्रह स्थित हों तो राजयोग होता है । जिसके मकर, कुंभ, मीन, वृष, मिथुन, मेष इन राशियोंमें सब ग्रह स्थित होवैं वह प्रसिद्ध राजा होता है । बुध, शुक्र, बृहस्पति, शनैश्चर इन चार ग्रहोंकरके सहित राहु केन्द्रस्थानमें स्थित हो तो लक्ष्मी, आरोग्य, पुत्र और सन्मानादिक फलको देता है ॥ ४४-४६ ॥

चतुर्थभवने शुक्रो गुरुचन्द्रधरासुताः । रविसौरियुतास्सन्ति राजा भवति निश्चितम् ॥ ४७ ॥ अष्टमे च व्यये क्रूरो मध्ये च क्रूरसौम्यकौ । राजयोगोऽत्र यो जातो महाभूपो भविष्यति ॥४८॥ लग्ने सौरिस्तथा चन्द्रास्त्रिकोणे जीवभास्करौ । कर्मस्थाने भवेद्भौमो राज-

योगोऽभिधीयते ॥ ४९ ॥ नवमे च यदा सूर्यः स्वगृहस्थो भवेत्तदा। तस्य जीवति नो भ्राता स्यादेकोऽपि नृपैः समः ॥ ५० ॥

जिसके चौथे स्थानमें शुक्र, बृहस्पति, चन्द्रमा, मंगल, सूर्य, शनैश्वर होवैं वह निश्चय राजा होता है। जिसके आठवें और बारहवें क्रूरग्रह और शुभग्रह दोनों हों तो यह भी राजरोग है, इसमें उत्पन्न हुआ पुरुष राजा होता है। लग्नमें शनैश्वर तथा चन्द्रमा और नववें, पांचवें, बृहस्पति और सूर्य और दशवें मंगल हो तो राजयोग होता है। जिसके नवम सूर्य अपने घरका स्थित हो तिसके भाई नहीं जीते हैं, अकेला ही राजाके तुल्य होता है ॥ ४७-५० ॥

द्वित्रितुर्ये सिते षष्ठे कर्मण्यपि यदा ग्रहाः। राजयोगं विजानीयाज्जातस्तत्र नृपो भवेत् ॥ ५१ ॥ लग्ने क्रूरे व्यये सौम्या धने क्रूरश्च जायते। राजयोगो न राजा च भूपतिर्भवति स्फुटम् ॥ ५२ ॥ लग्ने क्रूरो व्यये क्रूरो धने सौम्यो यदा भवेत्। सप्तमे भवति क्रूरः परिवारक्षयंकरः ॥ ५३ ॥

जिसके दूसरे, तीसरे, चौथे, पांचवें, छठे, दशवें इन स्थानोंमें ग्रह होवैं तो राजयोग होता है. इस योगमें उत्पन्न हुआ पुरुष अकेला ही राजा होता है। जिसके लग्नमें क्रूरग्रह और बारहवें शुभग्रह और दूसरे भी क्रूरग्रह हों तो राजयोग होता है. इस योगमें राजा नहीं होता है केवल पृथ्वीका स्वामी होता है। जिसके लग्नमें क्रूर ग्रह और बारहवें क्रूरग्रह और दूसरे शुभग्रह और सातवें शुभग्रह होवैं तो वह परिवारका नाश करनेवाला होता है ॥ ५१-५३ ॥

धने चन्द्रश्च सौम्यश्च मेषे जीवो यदा भवेत्। दशमे राहुशुक्रौ च राजयोगोऽभिधीयते ॥ ५४ ॥ सिंहे जीवोऽथ कन्यायां भार्गवो मिथुने शनिः। स्वक्षेत्रे हिबुके भौमः स पुमान्नायको भवेत् ॥ ५५ ॥ शनिचन्द्रौ च कन्यायां सिंहे जीवो घटे तमः। मकरे च कुजस्तत्र जातः स्याद्विश्वपालकः ॥ ५६ ॥

जिसके दूसरे स्थानमें चन्द्रमा वा बुध हो और मेषराशिमें बृहस्पति हो तथा दशवें राहु शुक्र हों तो भी राजयोग होता है। जिसके सिंहराशिमें बृहस्पति, कन्याराशिमें शुक्र, मिथुनराशिमें शनैश्वर और स्वक्षेत्री भौम चौथे स्थानमें हो तो ऐसे योगमें उत्पन्न मनुष्य नायक होता है। जिसके कन्याराशिमें शनैश्वर वा चन्द्रमा हो

सिंहराशिमें बृहस्पति, कुंभराशिमें राहु हो और मकरराशिमें मंगल हो तो ऐसे योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य संसारका पालन करनेवाला होता है ॥ ५४-५६ ॥

शुक्रो जीवो रविर्भौमश्चापे मकरकुम्भयोः । मीने च वत्सरे त्रिंशे समर्थः सर्वकर्मसु ॥ ५७॥ कर्कलग्ने जीवयुक्ते लाभे चन्द्रज्ञभार्गवाः । मेषे भानुश्च जातो यो योगेऽस्मिन् नृपतिर्भवेत् ॥ ५८ ॥ कर्मस्थाने यदा जीवो बुधः शुक्रस्तथा शशी । सर्वकर्माणि सिद्धयन्ति राजमान्यो भवेन्नरः ॥ ५९ ॥ षष्ठेऽष्टमे पञ्चमे वा नवमे द्वादशे तथा । सौम्यक्रूरग्रहैर्योगे राजमान्यो न संशयः ॥ ६० ॥

जिसके धनुराशिमें शुक्र, मकरराशिमें बृहस्पति, कुंभराशिमें सूर्य, मीनराशिमें मंगल हो तो वह तीस वर्षमें संपूर्ण कर्मोंका करनेवाला होता है । जिसके कर्कराशिमें बृहस्पति हो और ग्यारहवें चन्द्रमा, बुध, शुक्र होवैं, मेषराशिमें सूर्य हो तो वह राजा होता है । जिसके दशमस्थानमें बृहस्पति बुध शुक्र तथा चन्द्रमा होवैं तिसके संपूर्ण कर्म सिद्ध होवें और राजाओंमें पूज्य होवै । जिसके छठे, आठवें, पांचवें, नववें, बारहवें शुभग्रह और क्रूरग्रह होवैं वह भी राजाओंमें पूज्य होता है ॥ ५७-६० ॥

पञ्चमे च यदा षष्ठे चाष्टमे नवमे क्रमात् । भौमराहुसितार्काः स्युर्जातकः कुलपालकः ॥ ६१ ॥ लग्ने सौरिस्तथा चन्द्रश्चाष्टमे भार्गवो यदा । जायतेऽत्र नृपो योगे मानी भूरिप्रियः सदा ॥ ६२ ॥ मिथुनस्थो यदा राहुः सिंहस्थो भूमिनन्दनः । अत्र योगे नरो जातो नृपोऽश्वगजनायकः ॥ ६३ ॥

जिसके पांचवें मंगल, छठे राहु, आठवें शुक्र, नववें सूर्य हो वह कुलका पालन करनेवाला होता है । लग्नमें शनैश्चर तथा चन्द्रमा और आठवें शुक्र हो ऐसे योगमें उत्पन्न हुआ जन मानी और बहुत प्रिय होता है । मिथुनराशिमें राहु और सिंहमें मंगल हो इस योगमें उत्पन्न हुआ राजा हाथी घोडोंका नायक होता है ॥ ६१-६३ ॥

चापार्द्धे शशिना युक्तो यदि सूर्यः प्रजायते । लग्ने च सबलो मन्दो मकरे च कुजो भवेत् ॥ ६४ ॥ अत्र योगे समुत्पन्नो महाराजो भवेन्नरः । दूरादेव नमन्त्यस्य प्रतापैश्चरणौ नृपाः ॥ ६५ ॥ उच्चाभिलाषुकः सूर्यस्त्रिकोणस्थो यदा भवेत् । अपि नीचकुले जातो राजा स्याद्धनपूरितः ॥ ६६ ॥

धनुके आधेमें चन्द्रमायुक्त सूर्य लग्नमें बली शनैश्चर और मकरराशिमें मंगल होवे तो इस योगमें उत्पन्न हुआ बालक महाराजा होता है और राजालोग दूरहीसे चरणोंमें शिर नवाते हैं। जिसके उच्चाभिलाषी सूर्य नववें वा पांचवें पडै वह नीच-कुलमेंभी उत्पन्न हुआ धनयुक्त राजा होता है ॥ ६४-६६ ॥

धनस्थाने यदा शुक्रो दशमे च बृहस्पतिः। षष्ठे च सिंहिकापुत्रो राजा भवति विक्रमी ॥६७॥ चतुर्ग्रहा यदैकत्र यदि सौम्या भवन्ति हि। भ्रातृधीधर्मलग्नाद्ये राजयोगो भवेदयम् ॥ ६८ ॥ सर्वैर्ग्रहैर्यदा चन्द्रो विना हेलिं निरीक्ष्यते। षष्ठाष्टमे च जामित्रे स दीर्घायुर्नराधिपः ॥ ६९ ॥ नवमे पञ्चमस्थाने चतुर्थे च यदा ग्रहाः। आदौ जाताश्च नश्यन्ति पश्चाज्जातश्च जीवति ॥७० ॥ विवाहितायामन्यस्यामेकपुत्रो भवेत्तदा। विख्यातो भुवने त्यागी स दीर्घायुर्महीपतिः ॥ ७१ ॥

जिसके दूसरे स्थानमें शुक्र दशवें बृहस्पति और छठे राहु हो तो वह पराक्रमी राजा होता है। जिसके चार ग्रह (पाप व शुभ) एकही स्थानमें तीसरे, पांचवें, नववें, लग्न, दूसरे इनमेंसे किसी स्थानमें हो तो भी राजयोग होता है। छठे आठवें सातवें स्थानमें स्थित चन्द्रमा विना सूर्य सब ग्रहों करके देखाजाता हो तो इस योगमें उत्पन्न हुआ पुरुष बडी आयुवाला राजा होता है। नवम, पंचम, चतुर्थ इन स्थानोंमें सब ग्रह स्थित हों तो ऐसे योगमें प्रथमका उत्पन्न हुआ नष्ट होजाता है और पीछेका जीताहै। दूसरे वार विवाहित स्त्रीसे एक पुत्र होता है वह संसारमें प्रसिद्ध, त्यागी, बडी उमरवाला राजा होता है ॥ ६७-७१ ॥

कन्यायां च यदा राहुः शुक्रो भौमः शनिस्तथा। तत्र जातस्य जायेत कुबेरादधिकं धनम् ॥ ७२ ॥ लग्ने मीने जीवशुक्रौ मेषेऽर्को मकरे कुजः। दासवंशेऽपि जातोऽसौ राजा छत्रधरो भवेत् ॥ ७३ ॥ भ्रातृस्थाने यदा जीवो लाभस्थाने यदा शशी। स लोके गृहमध्य-स्थो जायते कुलदीपकः ॥ ७४ ॥

राहु, शुक्र, मंगल तथा शनि कन्याराशिमें स्थित हों तो ऐसे योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य कुबेरसे अधिक धनवाला होता है। लग्नमें बृहस्पति, मीनमें शुक्र, मेषमें सूर्य मकरराशिमें मंगल हो तो ऐसे योगमें दासके वंशमें उत्पन्न हुआभी छत्रधारी राजा होता है। दशवें स्थानमें बृहस्पति और ग्यारहवें भावमें चन्द्रमा जिसके होवै वह संसा-रमें कुलका प्रकाश करनेवाला होता है ॥ ७२-७४ ॥

दशमस्थौ बुधादित्यौ षष्ठे राहुधरासुतौ । राजयोगोऽत्र यो जातः स पुमान्नायको भवेत् ॥ ७५ ॥ चतुर्ग्रहैरेकगृहे च संस्थैर्धीधर्मदुश्चिक्यतनुस्थितैर्वा । दासश्च जातः क्षितिपालतुल्यो भवेन्नरेन्द्रोऽथ समुद्रपारगः ॥ ७६ ॥

दशवें स्थानमें बुध सूर्य छठे राहु मंगल हों तो राजयोग होताहै, इसमें उत्पन्न हुआ मनुष्य नायक होताहै । जिसके चार ग्रह एकही स्थानमें प्राप्त होकर दूसरे नववें तीसरे तथा लग्नमें स्थित हों तो इस योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य राजाके समान होता है किंतु राजा नहीं होता है ॥ ७५ ॥ ७६ ॥

सुरगुरुशशियुक्ते कर्कटे लग्नसंस्थे भृगुतनयबलिष्ठः केन्द्रयातोऽथ शेषैः । शिवसहजरिपुस्थैर्यस्य जन्मात्र योगे नियतमिति यदायुश्चक्रवर्ती नरेशः ॥ ७७ ॥ तुले मीनमेषे वृषे दैत्यपुत्रो भवेद्राजमानी कलाकौतुकी च । त्रयं पुत्रजातं चिरंजीवितं च भवेद्वत्सरे वह्नियुग्मे (२३) च भुक्ते ॥७८॥ लग्नाधिपतिः केन्द्रे बलपरिपूर्णः करोति नृपतुल्यम् । गोपालकुलेऽपि जातं किंपुनरिह नृपतिसंभूतम् ॥७९॥

कर्कराशिमें बृहस्पति चन्द्रमायुक्त स्थित हो और बलवान् शुक्र केन्द्रमें हो और शेषग्रह ग्यारहवें तीसरे छठे स्थित होवे तो इस योगमें उत्पन्न हुआ पुरुष बडी उमरवाला, चक्रवर्ती राजा होता है । जिसके शुक्र, तुला, मीन, मेष, वृष इन राशियोंमें होवे वह राजमानी, कलाकौतुकी होता है और उसके तीन पुत्र बडी उमरवाले तेईस वर्षके उपरान्त पैदा होते हैं । जिसका बलवान् होकर लग्नका स्वामी केन्द्रमें स्थित हो उसको राजाके तुल्य करताहै, यदि गोपकुलमें भी उत्पन्न होवे क्या आश्चर्य है जो राजाके पुत्र होय ॥ ७७-७९ ॥

रविस्तृतीये भृगुनन्दनः सुखे बुधो द्वितीये यदि पञ्चमे स्थितः । न नीचराशौ न च खान्तवेश्मगो भवेन्नरेन्द्रस्त्रिसमुद्रपालकः ॥८०॥ यदि भवति च केन्द्रे धर्मगे स्वोच्चसंस्थे सुतभवनगतश्चेद्वाक्पतिर्जन्मकाले । स भवति नरनाथः सार्वभौमो जितारिः शशिबुधभृगुपुत्रैरन्वितो वीक्षितो वा ॥ ८१ ॥

जिसके सूर्य तृतीयस्थानमें हो, शुक्र चतुर्थस्थानमें, बुध दूसरे वा पंचमस्थानमें हो परन्तु नीचराशिमें और दशवें बारहवें स्थानमें कोई ग्रह न स्थित हो तो वह तीन

समुद्रपर्यन्त पालन करनेवाला राजा होताहै । जिसके जन्मकालमें उच्चका बृहस्पति केन्द्र (१ । ४ । ७ । १०) में नववें पांचवें स्थित होवै और चन्द्रमा, बुध शुक्र करके युक्त हो अथवा देखा जाता हो तो वह मनुष्य सार्वभौम (चक्रवर्ती) शत्रुओंका जीतनेवाला राजा होताहै ॥ ८० ॥ ८१ ॥

विलग्ननाथः खलजास्तसंस्थः सुहृद्गृहे मित्रयुतो यदि स्थितः । करोति सर्वं पृथिवीतलस्य दुर्वारवैरिघ्नमहोदयं शुभम् ॥ ८२ ॥ लग्नं विहाय केन्द्रे सकलकलापूरितो निशानाथः । विदधाति महीपालं विक्रमबलवाहनोपेतम् ॥ ८३ ॥ स्वोच्चैः स्वकीयभवने क्षितिपालतुल्यो लग्नेऽर्कजे भवति देशपुराधिनाथः । दारिद्र्यदुःखपरिपीडित एव लोकः शेषेषु सर्वजननिन्द्यशरीरचेष्टः ॥ ८४ ॥ लग्ने उच्चपदं गत दिनपतौ चन्द्रे धनस्थे भृगौ दुश्चिक्ये तमसंयुते सुखगते जीवे व्ययस्थे बुधे । लाभे सूर्यसुते हि शत्रुभवने याते कुले भूपतेर्जातोऽयं मनुजः सदा नृपगणे सम्राट्पदं गच्छति ॥ ८५ ॥

जिसके जन्मसमय लग्नका स्वामी मित्रके घरमें मित्रयुक्त यदि दशवें लग्नमें सातवें स्थित हो तो वह पृथ्वीपर वैरियोंका नाश करनेवाला और अधिक प्रतापवाला होता है । जिसके पूर्णबलवान् चन्द्रमा लग्नको छोडकर केन्द्र (१ । ७ । ४ । १०) में स्थित हो तो इस योगमें वह पराक्रम बल वाहनादि युक्त राजा होता है । जिसके अपने उच्चका अथवा स्वक्षेत्री शनि लग्नमें स्थित हो वह देश पुरादिकोंका स्वामी होता है. शेषगृह होवै अर्थात् स्वक्षेत्री उच्चका न होय तो दारिद्य दुःखकरके पीडित सब जनोंकरके निंद्य शरीरचेष्टावाला होता है । उच्चका सूर्य लग्नमें, चन्द्रमा दूसरे स्थानमें, शुक्र तीसरे, राहुयुक्त बृहस्पति चौथे, बुध बारहवें, शनैश्चर ग्यारहवें वा छठे स्थानमें हो तो इस योगमें राजवंशमें उत्पन्न हुआ पुरुष राजालोगोंमें सम्राट्पदवीको धारण करता है ॥ ८२-८५ ॥

उच्चाभिलाषी सविता त्रिकोणे शशी तथा जन्मनि यस्य जन्तोः । तस्यातिपृथ्वी बहुरक्तपूर्णा बृहस्पतिः कर्कटके यदि स्यात् ॥ ८६ ॥ सर्वेप्याकाशवासाः स्फटिकविशलताकाशकार्पासभेशो लग्नं संवीक्षमाणो नरपतितिलकं तं समुत्पादयन्ति । नीयन्तेऽस्य प्रशस्त्यै जलदनिभमथ श्वेतमानं यशोभिर्बिभ्राणं शेसुशंकां मधुमथनमतो भद्रमालार्पितश्रीः ॥ ८७ ॥

जिसके उच्चाभिलाषी अर्थात् मीन राशिका सूर्य त्रिकोणमें हो तथा चन्द्रमा मेषका, त्रिकोणमें बृहस्पति कर्कराशिमें हो तो वह पृथ्वीको रक्तसे पूर्ण करता है अर्थात् बडा ही योद्धा होताहै । जिसके संपूर्ण (आकाशवासी) ग्रह तथा दशम और जन्म-लग्नका स्वामी लग्नको देखता होय तौ वह विदितप्रशंसाओंवाला, मेघके समान अथवा उज्ज्वलमान यशवाला, शंकारहित, भ्रमण करनेवाला, शत्रुओंको नाश करनेवाला और भद्रमालाकरके अर्पित लक्ष्मीवाला, मुख्य राजा होता है ॥ ८६ ॥ ८७ ॥

सर्वैर्गगनभ्रमणैर्दृष्टे लग्ने भवेन्महीपालः । बलिभिः सौख्यार्थ-युतो विगतभयो दीर्घजीवी च ॥ ८८ ॥ चतुर्थे भवने शुक्रो दशमे च धरासुतः । रविः सौरिर्भवेद्युक्तो राजा भवति निश्चितम् ॥ ८९ ॥ मिथुनेऽजे वृषे मीने कुम्भे च मकरे ग्रहाः । यो योगेऽस्मिन्नरो जातो जायते गजयानवान् ॥ ९० ॥ जीवनिशाकरसूर्याः पञ्चमनवम-तृतीयगाः । लग्नाद्यदि भवति तदा राजा कुबेरतुल्यो धनप्रसवैः ॥ ९१ ॥

जिसके जन्मलग्नको संपूर्ण ग्रह देखतेहों वह बलकरके सहित, सौख्य, अर्थसे युक्त, भयरहित, बडी उमरवाला राजा होताहै । शुक्र चौथे मंगल दशवें राहु शनैश्चरकरके युक्त स्थित होवैं तो इस योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य अवश्य राजा होताहै । मिथुन, मेष, वृष, मीन, कुंभ, मकर इन राशियोंमें पूर्णग्रह स्थित होवैं इस योगमें जो पैदा होताहै वह हाथियोंके यानवाला होताहै अर्थात् उत्तम२हाथी उसके होते हैं । जिसके बृहस्पति पंचम, चन्द्रमा नवम, सूर्य तीसरे स्थानमें स्थित हों वह कुबेरके समान धन-प्रसव सहित राजा होताहै ॥ ८८–९१ ॥

सिंहे जीवस्तुलाकीटधनुर्मकरकेषु च । ग्रहाश्चान्ये यदा जातो देशभोगी भवेन्नरः ॥ ९२ ॥ स्वगृहे च भवेत्सूर्यस्तुलायां च भवेत् सितः । मिथुने तिष्ठति सौरी राजयोगः प्रजायते ॥ ९३ ॥ षष्ठे च पञ्चमे चैव नवमे द्वादशे तथा । सौम्यक्रूरग्रहा योगा राजमान्यः सकण्टकः ॥ ९४ ॥ त्रिकोणकोणे बुधजीवशुक्रास्त्रिषट्दशे सोमसुते-ऽर्कपुत्रे । जायास्थिते चेत्परिपूर्णचन्द्रे नूनं स जातो नृपतेः समानः ॥

जिसके बृहस्पति सिंहराशिमें और शेषग्रह तुला, वृश्चिक, धनु, मकर इन राशि-योंमें हों तो वह देशका भोगनेवाला होता है । अपने घरमें सूर्य तुलाराशिमें शुक्र, मिथु-नमें शनैश्चर होवै तो राजयोग होता है । छठे, पांचवें, बारहवें शुभ और क्रूर

ग्रह जिसके स्थित होवें वह कंटकसहित राजमान्य होता है। त्रिकोणमें बुध, बृहस्पति, शुक्र होवे तीसरे, छठे, दशमें बुध शनैश्वर होवें और पूर्ण चन्द्रमा सातवें स्थित हो तो ऐसे योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य राजाओंके समान होता है ॥ ९२-९५ ॥

लग्ने सौरिस्तथा चन्द्रश्चाष्टमे भवने सितः। राजमान्यो महाकामी भोगपत्नीजनस्तथा ॥ ९६ ॥ धने शुक्रश्च भौमश्च मीने जीवो घटे बुधः। नीचश्चन्द्रः सूर्ययुक्तो राजयोगोऽभिधीयते ॥ ९७ ॥ अस्मिन् योगे नरो जातो राजा विभववर्जितः । दानभोगादिविख्यातः सम्मान्यः स भवेन्नरः ॥ ९८ ॥ मीने शुक्रो बुधश्चान्ते लग्ने सूर्यः शशी धने । सहजे च भवेद्राहू राजयोगः प्रचक्ष्यते ॥ ९९ ॥ मीने जीवस्तथा शुक्रश्चन्द्रमाश्च यदा भवेत् । तस्य जातस्य राज्यं स्यात् पत्नी च बहुपुत्रिका ॥ १०० ॥

जिसके शनैश्वर लग्नमें अथवा चन्द्रमा लग्नमें हो और मंगल आठवें हो वह राजमान्य, बडा कामी, भोगपत्नीवाला होता है। शुक्र भौम धनुराशिमें, बृहस्पतिं मीनमें, कुंभमें बुध और नीचराशि (८) में चन्द्रमा सूर्यसहित स्थित हो तो यह राजयोग होता है। इस योगमें उत्पन्न हुआ पुरुष विभवकरके हीन राजा होता है। दानभोगादिसे विख्यात मान्य होता है। मीनराशिमें शुक्र, बारहवें बुध, लग्नमें सूर्य, दूसरे चन्द्रमा, तीसरे राहु हो तो राजयोग होता है। जिसके मीनराशिमें बृहस्पति तथा शुक्र चन्द्रमा स्थित हों वह बहुपुत्रस्त्रीवाला तथा राज्यवाला होता है ॥ ९६-१०० ॥

आयस्थाने यदा सौम्यः क्रूरस्थानीयचन्द्रमाः । कर्मस्थाने पुनः सौम्यस्तदा राज्यं विधीयते ॥ १ ॥ आदौ जीवः पञ्चमे च दशमे चन्द्रमा भवेत् । राजमान्यो महाबुद्धिस्तेजस्वी चातितेजसः ॥ २ ॥

ग्यारहवें शुभ ग्रह हो और क्रूरराशिमें चन्द्रमा हो तथा दशमभावमें भी शुभग्रह स्थित हों तो राजयोग होता है। जिसके लग्नमें बृहस्पति पांचवें तथा दशवें चन्द्रमा स्थित हो वह राजमान्य, बडा बुद्धिमान्, तेजस्वी और प्रतापी होता है ॥१॥२॥

इति चतुरशीतिराजयोगाः ॥

अथ अरिष्टयोगः।

तत्र–तनुभावफलम्।

सूर्याच्च नवमे तातश्चन्द्रे माता चतुर्थगः । भौमस्य तृतीये भ्राता

बुधे चतुर्थमातुलः ॥३॥ गुरोः पञ्चमतः पुत्रो भृगुः सप्तमतः स्त्रियाः । शनेरष्टमतो मृत्युर्यदा क्रूरो भवेन्नरः ॥ ४ ॥

सूर्यसे नवम स्थान पिताका, चन्द्रमासे चतुर्थ माताका, भौमसे तीसरा भाइयोंका, बुधसे चौथा मामाओंका, बृहस्पतिसे पांचवां पुत्रोंका, शुक्रसे सातवां स्त्रीका और शनिसे आठवाँ मृत्युका स्थान है। सो इनमें यदि क्रूरग्रह होवैं तो क्रमसे सबको अरिष्ट जाने ॥ ३ ॥ ४ ॥

अथ द्वादशभवनविचारः ।

तत्रादौ अरिष्टमाह-

सूर्यो भौमस्तथा राहुः शनिर्मूर्तौ यदाऽन्वितः । सन्तापो रक्तपीडा च सौम्यैः सर्वविरोगता ॥ ५ ॥ भौमक्षेत्रे यदा जीवो जीवक्षेत्रे च भूसुतः । द्वादशे वत्सरे मृत्युर्बालकस्य न संशयः ॥ ६ ॥ धनस्थाने यदा भौमः शनैश्वरसमन्वितः । सहजे च भवेद्राहुर्वर्षमेकं स जीवति ॥ ७ ॥ चतुर्थे च यदा राहुः षष्ठे चन्द्रोऽष्टमेऽपि वा । सद्यश्चैव भवेन्मृत्युः शङ्करो यदि रक्षति ॥ ८ ॥ अष्टमस्थो निशानाथः केन्द्रे पापेन संयुतः । चतुर्थे च यदा राहुर्वर्षमेकं स जीवति॥९॥लग्ने व्यये धने क्रूरो यदा मृत्यौ च जायते । विष्ठाया मार्गबन्धः स्याद्द्वादशाष्टमवत्सरे॥

जिसके जन्मसमय सूर्य, मंगल तथा राहु, शनैश्वर लग्नमें स्थित होवैं वह संताप पीडाकरके पीडित होता है और यदि शुभग्रह स्थित हों तो रोगहीन होता है। जिसके जन्मसमय बृहस्पति मंगलके स्थान (१ । ८) में हो और बृहस्पतिके स्थान (९ । १२) में मंगल स्थित होवे तौ वह निस्सन्देह बारहवें वर्षमें मृत्यु पाता है। जिसके दूसरे स्थानमें शनैश्वर युक्त मंगल हो और तीसरे स्थानमें राहु हो वह एक वर्ष जीता है। जिसके चतुर्थ स्थानमें राहु और छठे अथवा आठवें चन्द्रमा स्थित हो तौ वह बालक शंकरका रक्षा कियाहुआभी शीघ्रही मरजाता है। जिसके अष्टम स्थानमें चन्द्रमा हो और पापग्रहोंसे केन्द्रस्थान युक्त हो तथा राहु चौथे स्थित हो तौ वह बालक एकही वर्ष जीता है। जिसके लग्न बारहवें दूसरे और आठवें क्रूरग्रह हों तिसकी बारहवें आठवें दिनमें विष्ठाका मार्ग रुकके मृत्यु होजावे ॥ १०५-११० ॥

सप्तमे भवने भौमो ह्यष्टमे भार्गवो यदा । नवमे भवने सूर्यश्चाल्पायुस्तस्य कथ्यते ॥ ११ ॥ धने क्रूरः स्वभवने क्रूरः पातालगो यदा । दशमे भवने क्रूरः कष्टं जीवति जातकः ॥ १२ ॥ स्मरे व्यये च सहजे

मध्ये क्रूरे यदा ग्रहाः । तदा जातस्य बालस्य शरीरे कष्टमादिशेत् ॥ १३ ॥ लग्नस्थाने यदा भौमो द्वादशे च यदा गुरुः । शुक्रः शत्रुगृहे यस्य मासमेकं स जीवति ॥ १४ ॥ क्षीणचन्द्रे गते लग्ने क्रूरग्रहनिरीक्षिते । द्वितीये द्वादशे भौमो मासमेकं स जीवति ॥ १५ ॥

जिसके सातवें स्थानमें मंगल आठवेंमें शुक्र और नवममें सूर्य हो तिसकी थोडी आयु होती है । जिसके धनभावमें क्रूर हो और स्वगृही क्रूर चौथे हों तथा दशवें क्रूर ग्रह हों तो वह बालक कष्टसे जीता है । जिसके सातवें बारहवें तीसरे और दशवें क्रूर ग्रह होवें उस बालकके शरीरमें कष्ट होता है । जिसके लग्नमें मंगल हो बारहवें बृहस्पति हो और शुक्र शत्रुके घरमें हो वह बालक एक मास जीता है, जिसके क्षीण चन्द्रमा पापग्रहसे दृष्ट लग्नमें स्थित हो और दूसरे तथा बारहवें मंगल होवै वह बालक एक मास जीता है ॥ ११-१५ ॥

मूर्तिसप्तमयोः क्रूराः पापा व्ययद्वितीयगाः । चतुर्थे च यदा राहुः सप्ताहान्म्रियते तदा ॥ १६ ॥ षष्ठाष्टमेऽपि चन्द्रः सद्यो मरणाय पापसन्दृष्टः । अष्टाभिः शुभदृष्टो वर्षैर्मिश्रैस्तदर्द्धेन ॥ १७ ॥ द्वादशस्थो यदा सौरिर्लग्नसंस्थश्च भूसुतः । चतुर्थो रौहिणेयश्च ह्यष्ट मासान् स जीवति ॥१८॥ शुभलग्ने यदा जीवो ह्यष्टमे च शनैश्चरः । रन्ध्रसंस्थे च पापे च सद्यो मृत्युप्रदो भवेत् ॥१९॥ चतुर्थे नवमे सूर्ये अष्टमे च बृहस्पतौ । द्वादशे च शशाङ्के च सद्यो मृत्युकरो भवेत् १२०

जिसके लग्न और सातवें क्रूरग्रह स्थित हो और पापग्रह बारहवें, दूसरे स्थित हो और चौथे राहु स्थित हो वह बालक सात दिनमें मरजाता है । जिसके पाप दृष्ट चन्द्रमा छठे आठवें स्थित हों उसको शीघ्रही मारता है. यदि शुभग्रह देखते हों तो आठ वर्षमें और पापशुभ दोनों देखते हों तौ चार वर्षमें वह बालक मर जाता है । जिसके बारहवें स्थानमें शनैश्चर, लग्नमें मंगल, चौथे बुध स्थित होवे वह बालक आठ मास जीता है । जिसके शुभराशिमें बृहस्पति स्थित हो, आठवें शनैश्चर हो तथा आठवें स्थानमें पापग्रह स्थित हों तो वह बालक शीघ्रही मरजाता है । जिसके चौथे वा नववें सूर्य हों और आठवें बृहस्पति हो और बारहवें चन्द्रमा हो तौ वह शीघ्रही मरता है ॥ ११६-१२० ॥

शशिसूर्यसिते केन्द्रे संयुक्तश्चन्द्रजार्किणा । हन्ति वर्षद्वयेनैव जातकं शिष्टभावितः ॥२१॥ गुरुर्मन्दगृहे वक्री मन्दगे बुधभास्करे ।

ईप्सितं कुरुते मृत्युं मन्दे चैकादशे ध्रुवम् ॥२२॥ सूर्यमन्दगृहे शुक्रो गुरुणा च विलोकितः। नवभिर्मारयत्येनं वर्षैर्जातं न संशयः ॥२३॥ सूर्येण सहितश्चन्द्रो बुधस्थानगतः सदा । न वीक्षितश्च सौम्येन नववर्षेण मृत्युदः ॥ २४॥ बुधः सूर्येन्दुसंयुक्तो वीक्षितोऽपि शुभैर्ग्रहैः। वर्षैरेकादशैस्तेन मारयत्येव निश्चितम् ॥ २५ ॥

जिसके शुक्र, चन्द्रमा, सूर्य केन्द्रस्थानमें बुध शनैश्चरकरके युक्त स्थित हो तौ वह बालक दो वर्षमें मृत्यु पाता है । जिसके बृहस्पति वक्री होकर शनैश्चरके घर (१० । ११) में स्थित हो और बुध, सूर्य सातवें स्थान हों तो स्वेच्छानुसार वह मृत्यु पाता है और यदि ग्यारहवें शनैश्चरभी हो तो शीघ्रही उसकी मृत्यु होती है। जिसके शुक्र, बृहस्पतिसे दृष्ट सूर्य अथवा मंगलके घरमें स्थित होवै तो उस बालकको नव वर्षों करके मारता है । जिसके सूर्ययुक्त चन्द्रमा बुधके स्थान (६ । ३) में स्थित हो और बुधकी दृष्टिसे रहित हो तौ उसको नवम वर्षमें मृत्युदायक होता है। बुध, सूर्य चन्द्रमा करके युक्त हो और शुभग्रहों करके देखागया हो तौ ग्यारह वर्षों करके मरता है ॥ २१-२५ ॥

लग्नादष्टमगो राहुः शनिः सूर्यावलोकितः । निरीक्षितः शुभैः कुर्यादष्टद्वादशभिः क्षयम् ॥ २६ ॥ धने राहुर्बुधः शुक्रः सौरिः सूर्यो यदा स्थितः । तत्र जातो भवेन्मृत्युर्मृते पितरि जायते ॥ २७ ॥ व्यये राहुः सौरिसौम्यौ जीवो लग्ने च पञ्चमे। अत्र योगे च यो जातो जातमात्रः स नश्यति ॥ २८॥ जीवार्कराहुभौमाः स्युश्चत्वारः क्रूरवेश्मगाः। सप्तमे च गृहे शुक्रो देहकष्टकराः सदा ॥ २९ ॥ गुह्यस्थाने यदा भौमो राहुः सौरिसमन्वितः । नृपपीडा भवेत्तस्य स्वासने नैव तिष्ठति ॥ १३० ॥

जिसके लग्नमें आठवें राहु स्थित हो और शनैश्चर सूर्यकरके देखाजाता हो और शुभग्रहोंकी दृष्टि हो तो उसकी आठवें बारहवें वर्षमें भय करता है । जिसके धनस्थानमें राहु,बुध, शुक्र, शनैश्चर, सूर्य स्थित हों तो वह बालक पिताके मरजाने पर उत्पन्न होकर मरजाता है । बारहवें राहु शनैश्चर बुध और बृहस्पति लग्नमें अथवा पंचम स्थानमें हो तो ऐसे योगमें पैदा हुआ बालक मातासहित नाश होजाता है । जिसके बृहस्पति, सूर्य, राहु और मंगल ये चारों ग्रह क्रूरग्रहकी राशिमें बैठे होंय और सातवें

राहु होय तो उसके शरीरके कष्टकारी सदा होते हैं। जिसके छठे स्थानमें मंगल राहु शनैश्चरयुक्त स्थित हो तौ उसको नृपपीडा होती है, अपने आसनपर नहीं ठहरताहै॥

चतुर्थे राहुसौरार्काः षष्ठे चन्द्रो बुधः कुजः। भार्गवश्चात्र यो जातः स गृहस्य क्षयंकरः ॥ ३१ ॥ एकः पापोऽष्टमस्थोऽपि शत्रुक्षेत्रे यदा भवेत्। पापेन वीक्षितो वर्षान्मारयत्येव बालकम् ॥ ३२ ॥ भौमभास्करमन्दाश्च शत्रुक्षेत्रेऽष्टमे यदा। यमेन रक्षितोप्येष वर्षमात्रं स जीवति ॥ ३३ ॥ वक्री शनिर्भौमगेहे केन्द्रे षष्ठेऽष्टमेऽपि वा। कुजेन बलिना दृष्टो हन्ति वर्षद्वये शिशुम् ॥ ३४ ॥ शनिराहुकुजैर्युक्तः सप्तमे नवमे शशी। सप्तमे दिवसे हन्ति मासे वा सप्तमे शिशुम् ३५

जिसके चौथे स्थानमें राहु, शनैश्चर, सूर्य हों, छठे चन्द्रमा, बुध, मंगल हो और तहां शुक्रभी स्थित होय तौ वह घरका नाश करनेवाला होताहै। जिसके एकभी पापग्रह शत्रुक्षेत्रमें होकर अष्टमस्थानमें स्थित हो और पापग्रह शत्रुक्षेत्रमें होकर अष्टम स्थानमें स्थित हो और पापग्रहकरके देखा हो तो उस बालकको वर्षमें मारता है। जिसके शत्रुराशिमें प्राप्त होकर मंगल, सूर्य, शनैश्चर, अष्टम भावमें स्थित होवे तो वह बालक यमकरके रक्षा किया हुआ भी वर्षमात्रही जीता है। जिसके वक्री शनैश्चर भौमघरमें केन्द्रस्थान अथवा छठे आठवें स्थानमें स्थित होय और मंगल बलवान् दृष्टिसे देखता होवै तो उस बालकको दो वर्षमें मारता है। जिसके शनैश्चर, राहु मंगल करके युक्त सातवें हो और चन्द्रमा नवमस्थानमें हो तो वह बालक सातवें दिन अथवा सातवें मास मरजाता है ॥ ३१-३५ ॥

लग्नस्थश्च यदा भानुः पञ्चमस्थो निशाकरः। अष्टमस्था यदा पापास्तदा जातो न जीवति ॥ ३६ ॥ लग्नपः पापसंयुक्तो लग्ने वा पापमध्यगे। लग्नात्सप्तमगः पापस्तदा चात्मवधो भवेत् ॥ ३७ ॥ क्रूरक्षेत्रे यदा जीवो लग्नेशोऽस्तं गतो भवेत्। अकर्मा च तदा जातः सप्तवर्षाणि जीवति ॥ ३८॥ अष्टमे च यदा सौरिर्जन्मस्थाने च चन्द्रमाः। मंदाग्न्युदररोगी च गात्रहीनश्च जायते ॥ ३९ ॥ शनिक्षेत्रे यदा भानुर्भानुक्षेत्रे यदा शनिः। द्वादशे वत्सरे मृत्युस्तस्य जातस्य जायते ॥ १४० ॥

जन्मलग्नमें सूर्य स्थित हो और पांचवें स्थानमें चन्द्रमा हो और आठवें स्थानमें पापग्रह होवें तो ऐसे योगमें उत्पन्न हुआ बालक जीता नहीं है। जिसके जन्मलग्नका

स्वामी पापग्रहकरके युक्त हो अथवा लग्न पापग्रहोंके बीचमें हो और लग्नसे सातवें पापग्रह होवें तो वह आत्मवध करनेवाला होता है । जिसके क्रूरग्रहके स्थानमें बृहस्पति स्थित हो और लग्नेश अस्तको प्राप्त होवे वह बालक कुकर्मी होकर सात वर्षमें मर-जावे । जिसके आठवें स्थानमें शनैश्चर और जन्मस्थान (लग्न) में चन्द्रमा हो उसके मन्दाग्नि और पेटमें रोग होता है तथा गात्रहीन होजाता है । जिसके शनैश्चरके स्थान (१० । ११) में सूर्य और सूर्यके स्थान (५) में शनैश्चर हों तौ उस बालककी बारह वर्षमें त्मृयु हो जावे ॥ ३६–१४० ॥

बुधभौमौ यदा लग्ने षष्ठस्थानेऽथवा स्थितौ । तस्करश्चौरकर्मा स्याद्धस्तपादौ च नश्यतः ॥ ४१ ॥ षष्ठेऽष्टमे वा मूर्तौ च शत्रुक्षेत्रे यदा बुधः । चतुर्वर्षैर्भवेन्मृत्युर्बालकस्य न संशयः॥४२॥अष्टमस्थो यदा राहुः केन्द्रस्थाने च चन्द्रमाः । सद्य एव भवेन्मृत्युर्बालकस्य न संशयः ॥ ४३ ॥ चतुर्थस्थो यदा राहुः षष्ठाष्टमगृहे शशी । विंशत्या दिवसैर्मृत्युर्बालकस्य न संशयः ॥ ४४ ॥ सप्तमे नवमे राहुः शत्रुक्षेत्रे यदा भवेत् । षोडशे वत्सरे मृत्युर्बालकस्य न संशयः ॥ ४५ ॥

जिसके बुध और मंगल लग्नमें वा छठे स्थानमें हों वह बालक चोर और कुकर्मी होता है और हाथ पाँवभी उसके नाश होजाते हैं । छठे आठवें या मूर्ति (लग्न) हीमें पापग्रहोंकरके युक्त जिसके शनैश्चरके स्थानमें अथवा शत्रुके स्थानमें बुध हो तो उस बालककी चौथे वर्षमें मृत्यु होजाती है । जिसके आठवें राहु हो और केन्द्रस्थान (१। ४।७।१०) में चन्द्रमा होवै तौ उस बालककी शीघ्रही निःसन्देह मृत्यु होती है । जिसके चौथे स्थानमें राहु और छठे वा आठवें चन्द्रमा होवै तो निःसन्देह बीस दिनकरके उस बालककी मृत्यु होजावे । जिसके शत्रुक्षेत्री राहु सातवें नववें स्थित हो तौ उस बालककी सोलहवें वर्षमें मृत्यु होजावे ॥ ४१–४५ ॥

द्वादशस्थो यदा चन्द्रः पापः स्यादष्टमे गृहे । एकमासे भवेन्मृत्यु-स्तस्य बालस्य निश्चितम् ॥ ४६ ॥ जन्मस्थाने यदा राहुः षष्ठस्थाने च चन्द्रमाः । अपस्मारस्तदा रोगो बालकस्य हि जायते ॥ ४७ ॥ भार्गवेण युतश्चन्द्रः षष्ठाष्टमगतो भवेत् । मन्दाग्न्युदररोगी च हीना-ङ्गोऽपि च बालकः ॥ ४८ ॥ षष्ठाष्टमे यदा चन्द्रो बुधयुक्तश्च तिष्ठति । विषदोषेण बालस्य तदा मरणमुच्यते ॥ ४९ ॥ भानुना संयुतश्चन्द्रः षष्ठाष्टमयुतो भवेत् । गजदोषेण मृत्युर्वा सिंहदोषेण वा भवेत् ॥ १५० ॥

जिसके बारहवें चन्द्रमा और पापग्रह आठवें होवै तो उस बालककी निस्सन्देह एक मासमें मृत्यु होजावे। जिसके जन्मस्थानमें राहु और छठे स्थानमें चन्द्रमा हो तो उस बालकको निःसन्देह अपस्मार रोग होता है। जिसके शुक्रयुक्त चन्द्रमा छठे वा आठवें स्थानमें हो तो वह बालक मंदाग्नि, उदररोगी और हीनांग होता है। जिसके छठे वा आठवें स्थानमें बुधयुक्त चन्द्रमा स्थित हो तो वह बालक विषदोषसे मरता है। जिसके सूर्य करके युक्त चन्द्रमा छठे आठवें स्थानमें स्थित हो तो उसकी हाथी अथवा सिंहसे मृत्यु होती है ॥ १४६-१५० ॥

एकोऽपि यदि मूर्तौ स्याज्जन्मकाले दिवाकरः। स्थानहीनो भवेद्बालो वृत्तिर्दुष्टा सदा पुनः ॥ ५१ ॥ लग्नेऽष्टमे यदा राहुश्चन्द्रो वा यदि दृश्यते। दशाहैर्जायते तस्य बालस्य मरणं ध्रुवम् ॥ ५२॥ लग्नाच्च नवमे सूर्ये सूर्यपुत्रे तथाऽष्टमे। एकादशे भार्गवे च मासमेकं न जीवति ॥५३॥ नवमे दशमे चन्द्रः सप्तमे च यदा सितः। पापे पातालसंस्थे च वंशच्छेदकरो नरः॥५४॥ शत्रुक्षेत्रेऽष्टमे षष्ठे द्वितीये द्वादशे रविः। स जीवेद्रसवर्षाणि बालको नात्र संशयः ॥ ५५ ॥

जिसके केवल सूर्य ही जन्मलग्नमें हो तौ वह घरकरके हीन, दुष्टजीविकावाला होता है। जिसके लग्न वा अष्टमस्थानमें राहु स्थित हो और यदि चन्द्रमा देखता होवै तो निःसन्देह दश दिनोंमें उस बालककी मृत्यु हो जावे। जिसके नवम स्थानमें सूर्य हो और शनैश्चर अष्टमस्थानमें हो और शुक्र ग्यारहवें होवै तौ वह बालक महीनेभर जीता है। जिसके चन्द्रमा नवम वा दशम स्थानमें हो और सातवें स्थानमें शुक्र होवै और पापग्रह चतुर्थस्थानमें स्थित हो तौ वह वंशच्छेद करनेवाला होता है। जिसके शत्रुक्षेत्री सूर्य आठवें छठे दूसरे अथवा बारहवें स्थित हो वह बालक छः वर्ष जीता है ॥ १५१-१५५ ॥

शत्रुक्षेत्रेऽष्टमे मूर्तौ बुधः षष्ठे प्रजायते। बालो जीवति वर्षाणि चत्वारि नात्र संशयः ॥ ५६ ॥ एकादशे तृतीये च नवमे पञ्चमे गुरौ। शत्रुक्षेत्रे वृद्धस्थाने भवेत्पञ्चाशदष्टायुः ॥ ५७ ॥ नवमे पञ्चमे वापि रिपुक्षेत्रे बृहस्पतिः। तदा षट्त्रिंशद्वर्षाणि जीवते नात्र संशयः ॥ ५८ ॥ मित्रक्षेत्रैकादशमे दशमे वा यदा गुरुः। शत्रुक्षेत्रेऽथवा शुक्रो द्वितीये द्वादशे भवेत्। एकविंशतिवर्षायुर्जायते बालको

ध्रुवम् ॥ ५९ ॥ शत्रुक्षेत्रेऽष्टमे षष्ठे द्वितीये द्वादशे शनिः । अष्टौ दिनान्यष्ट मासानष्ट वर्षाणि जीवति ॥ १६० ॥

जिसके शत्रुक्षेत्री बुध आठवें जन्मलग्नमें अथवा छठे स्थित हो तो वह बालक चार वर्ष जीता है। जिसके शत्रुक्षेत्रमें अथवा वृद्ध स्थानमें प्राप्त होकर बृहस्पति ग्यारहवें तीसरे नववें अथवा पांचवेंमें स्थित हो तो उसकी अट्ठावन वर्षकी आयु होती है। जिसके शत्रुक्षेत्री बृहस्पति नववें वा पांचवें स्थित हो तो वह तिरसठ ६३ वर्ष जीता है। जिसके मित्रके घरमें प्राप्त होकर बृहस्पति ग्यारहवें अथवा दशवें स्थित हो और शत्रुक्षेत्री शुक्र दूसरे अथवा बारहवें होवै तो उसकी इक्कीस २१ वर्षकी आयु होती है। जिसके शत्रुघरमें प्राप्त शनैश्चर आठवें, छठे, दूसरे अथवा बारहवें स्थित हो तो वह बालक आठ दिन वा आठ मास वा आठ वर्ष जीता है ॥ १५६–१६० ॥

चन्द्रक्षेत्रे यदा भौमो जायते मनुजः सदा । रक्तपित्तेन हीनाङ्गो नानाव्याधिसमन्वितः ॥ ६१ ॥ चन्द्रक्षेत्रे यदा चान्द्रिर्जायते यस्य जन्मनि । स जातः क्षयरोगी स्यात्कुष्ठादिभिरुपद्रुतः ॥६२॥ राहौ च केन्द्रगे मृत्युः पापानां दृष्टिसंयुते । संवत्सरे तु दशमे षोडशे तु विशेषतः ॥ ६३ ॥ चन्द्रः सप्तमभवने शनिभौमराहुसंयुतो भवति । यदा सप्तमदिवसे मृत्युः सप्तममासे न सन्देहः ॥६४॥ भौमक्षेत्रे यदा जीवः षष्ठेऽष्टमे च चन्द्रमाः । षष्ठेऽष्टमे भवेन्मृत्यू रक्षको यदि शङ्करः ६५॥

जिसके जन्मसमय चन्द्रमाके घर ४ मंगल स्थित होय वह रक्तपित्तविकारकरके हीनांग और अनेक व्याधियोंकरके युक्त होता है। जिसके चन्द्रमाके घर बुध स्थित हो वह क्षयरोगवाला, कुष्ठादि उपद्रवोंवाला, होता है। जिसके पापग्रहोंकी दृष्टिकरके युक्त राहु केन्द्रस्थान (१ । ४ । ७ । १०) में स्थित हो उसकी दशवें वर्षमें विशेषकरके सोलहवें वर्षमें मृत्यु होजावे। जिसके चन्द्रमा सातवें स्थानमें शनि, मंगल, राहुकरके संयुक्त स्थित हो तो उसकी सातवें दिन मृत्यु कहनी. यदि सातवें दिनतक न होवै तो निःसन्देह सात महीनोंकरके उसकी मृत्यु होती है। जिसके मंगलके घर (१ । ८) में बृहस्पति और छठे आठवें चन्द्रमा हो तो वह शंकरकरके रक्षा किया हुआ भी छठे, आठवें दिन, मास वा वर्षमें मृत्यु पाता है ॥ १६१–१६५ ॥

जन्मसप्तमभे सौरिरष्टमे यदि चन्द्रमाः । ब्रह्मपुत्रो यदा जातः सोऽपि पुत्रो न जीवति ॥ ६६ ॥ षष्ठाष्टमे यदा चन्द्रो रविर्भवति सप्तमः ।

पितृमातृधनं हन्ति मासमेकं न जीवति ॥ ६७ ॥ द्वादशे जीवशुक्रौ च जन्मतो राहुरेव च । सप्तमे च यदा सौरिर्वर्षमेकं न जीवति ॥६८॥ भौमे दिवाकरे छिद्रे जातः शत्रुगृहे यदि । स नरो म्रियतेऽवश्यं यमो मासं न रक्षकः ॥ ६९॥ यदा लग्ने ग्रहः क्रूरः षष्ठाष्टमेऽपि चन्द्रमाः । तदा सद्यो भवेन्मृत्युर्जातकस्य न संशयः ॥ १७० ॥

जिसके जन्मसमयमें सातवें शनैश्चर स्थित हो और आठवें स्थानमें चन्द्रमा हो तो वह ब्रह्मपुत्र भी उत्पन्न हुआ होवै तो नहीं जीता है । जिसके चन्द्रमा छठे आठवें और सूर्य सातवें होवै वह मातापिताका धननाश करता है और एक मासभी न जीता है। जिसके बारहवें बृहस्पति शुक्र, जन्मलग्नमें राहु और सातवें शनैश्चर हो वह एक वर्ष भी नहीं जीता है । जिसके मंगल सूर्य शत्रुक्षेत्रमें स्थित होकर आठवें भावमें पडैं वह यमकरके रक्षा कियाहुआ भी एक मासकरके मृत्यु पाता है । यदि लग्नमें क्रूरग्रह और छठे आठवें चन्द्रमा हो तो शीघ्रही उस बालककी मृत्यु होती है॥६६-१७० ॥

चतुर्थेऽपि यदा राहुः केन्द्रे भवति चन्द्रमाः । विंशद्वर्षे भवेन्मृत्युर्जातकस्य न संशयः ॥ ७१ ॥ सप्तमस्थो यदा राहुर्जन्मकाले यदा तदा । दशवर्षैर्भवेन्मृत्युरमृतं यदि पीयते ॥७२॥लग्नेऽष्टमे सदा राहुश्चन्द्रो वा यदि पश्यति । जातकस्य तदा मृत्युर्यदि शक्रेण रक्षितः ॥७३॥ दशमेऽपि यदा भौम उच्चः शत्रुगृहे स्थितः । जातकस्य भवेन्मृत्युर्मातुश्चैव न संशयः ॥ ७४ ॥ लग्नस्थितो यदा भानुः पञ्चमस्थो निशापतिः । लग्नेऽष्टमे स्थिताः पापास्तदा जातो न जीवति ॥७५॥

जिसके चौथे राहु और केन्द्रमें चन्द्रमा होवै तो बीस वर्षमें उस बालककी मृत्यु होती है । जिसके जन्मकालमें राहु सातवें स्थित होवै तो वह बालक अमृत पीताहुआ भी दश वर्ष करके मृत्यु पाता है । जिसके लग्न अथवा आठवें स्थित राहुको चन्द्रमा देखता हो तो वह इन्द्रकरके रक्षा कियाहुआ भी मरजाता है । जिसके मंगल उच्च शत्रुराशिका दशमभावमें स्थित हो तो वह बालक और उसकी माता मृत्यु पावै । जिसके जन्मलग्नमें, सूर्य, पांचवें चन्द्रमा और लग्न आठवें पापग्रह स्थित हों तो वह बालक मरजाता है ॥ १७१-१७५ ॥

लग्नात्सप्तमशीतांशुः पापाष्टमेषु लग्नगः । लग्नस्थितो यदा भानुर्मासेन म्रियते शिशुः ॥ ७६ ॥ धने गुरुः सैंहिकेयो भौमः शुक्रश्च

सप्तमे। अष्टमे रविचन्द्रौ च म्लेच्छः स्याद्यवनैः स्थितः॥ ७७॥ लग्नस्थाने यदा भौमो ह्यष्टमे च दिवाकरः। सौरेश्चतुर्थभवने तदा कुष्ठी भवेन्नरः॥ ७८॥ धर्मस्थाने यदा पापा लग्नात्पापश्चतुर्थगः। कर्मस्थानगतो राहुस्तदा म्लेच्छो भवेद्ध्रुवम्॥ ७९॥ व्ययभवनगे चन्द्रे वामं चक्षुर्विनश्यति। यदा सूर्यो द्वितीयस्थस्तदा ह्यन्धं समादिशेत्॥ १८०॥

जिसके लग्नसे सातवें चन्द्रमा हो और पापग्रह लग्नमें आठवें स्थित हों और सूर्य लग्नमें स्थित हो तो वह बालक एकमासमें मृत्यु पाता है। जिसके दूसरे बृहस्पति, राहु, मंगल, शुक्र सातवें और सूर्य चन्द्रमा आठवें हों तो वह म्लेच्छ होजाता है और मुसलमानोंके साथ रहता है। जिसके लग्नमें मंगल, आठवें सूर्य, चतुर्थ राहु स्थित हो तौ वह बालक कुष्ठरोगवाला होता है। जिसके नवममें पापग्रह और चतुर्थ स्थानमें पापग्रह और दशमभावमें राहु होवै तो वह म्लेच्छ होजाता है। बारहवें चन्द्रमा वामनेत्रको विनाश करता है और द्वितीयस्थ सूर्य अधा करता है १७६-१८०

सिंहलग्ने यदा जन्म शनिर्मूर्तौ यदा भवेत्। चक्षुर्हीनो भवेद्बालः शुक्रे जन्मान्धको भवेत्॥ ८१॥ होरायां द्वादशे राशौ स्थितो यदि दिवाकरः। करोति दक्षिणे काणं वामनेत्रे च चन्द्रमाः॥ ८२॥ स्वस्थाने लग्नतः क्रूरः क्रूरः पातालगः पुनः। दशमे भवने क्रूरः कष्टं जीवति जातकः॥ ८३॥ अस्मिन्योगेन यो जातो मातुर्दुःखकरो भवेत्। यदि जीवेदसौ जातो मातृपक्षक्षयंकरः॥ ८४॥ क्रूरे क्षेत्रे भवेत्सूर्यः कन्यायां क्रूरसंस्थितः। क्रूरक्षेत्रे भवेद्राहुः कष्टं जीवति जातकः॥ ८५॥

जिस मनुष्यका सिंहलग्नमें जन्म हो और शनैश्चर मूर्तिमें स्थित होवै तो वह नेत्रहीन और यदि शुक्र होवै तो जन्महीका अंधा होता है। होरामें बारहवीं राशिमें जिसके सूर्य स्थित हो तो दहिने नेत्रको काना करै और जो चन्द्रमा स्थित हो तो वामनेत्रको नाश करै। जिसके अपने घरका क्रूर ग्रह लग्नमें और चतुर्थमें और दशममें स्थित हो तो वह बालक कष्टसे जीता है। इस योगमें जो उत्पन्न होता है वह माताको दुःखकारक होता है और यदि जीता रहा तौ मातृपक्षका क्षय करनेवाला होताहै। जिसके क्रूरराशिमें सूर्य और कन्याराशिमें क्रूर और क्रूरराशिहीमें राहु स्थित हो तौ वह कष्टसे जीता है॥ १८१-१८५॥

शुक्रे च वाक्पतौ बुद्धौ नीचे राहुसमन्विते। चन्द्रमाश्च न पश्येत सोऽपि बालो न जीवति ॥ ८६ ॥ षष्ठाष्टमे यदा चन्द्रो द्वादशे रविमङ्गलौ। सोऽपि जातो न जीवेत रक्षते यदि शंकरः ॥८७॥ षष्ठाष्टमे यदा केतुः केन्द्री भवति चन्द्रमाः। सद्यो बालकमृत्युः स्याद्रक्षिता यदि शङ्करः॥ ८८॥ चन्द्रो बुधस्तथा सूर्यः शनिश्चान्ते यदा भवेत्। मध्यस्थाने यदा भौमो हीनदृष्टिस्तदा भवेत् ॥ ८९ ॥ अर्कः सौरिस्तथा भौमः स्वर्भानुः केतुसंयुतः। नीचसंयुक्तदृष्टिः स्यात् स जातो मातृघातकः ॥ १९० ॥

जिसके शुक्र बृहस्पति पंचममें और राहु नीचमें स्थित होवै और चन्द्रमाकी दृष्टि न हो तौ वह भी बालक नहीं जीता है। जिसके छठे आठवें चन्द्रमा और बारहवें सूर्य, मंगल हों तौ वह बालक यदि शंकरभी रक्षा करते हों तो मरजाता है। जिसके छठे,आठवें केतु और केन्द्रमें चन्द्रमा हो वह भी बालक शीघ्रही मरजाता है। जिसके चन्द्रमा, बुध, सूर्य, शनैश्चर बारहवें स्थित हों और मंगल दशम स्थानमें हो तो वह हीनदृष्टिवाला होता है। जिसके सूर्य, शनि तथा भौम राहु केतुसे युक्त हो और नीचराशिमें स्थित ग्रहकी दृष्टि हो तो वह मातृघातक होता है ॥ १८६-१९० ॥

रविराहू सौरिभौमौ जीवो लग्ने च पञ्चमे। योगेऽस्मिन्नपि यो जातो जातमात्रो विनश्यति ॥ ९१ ॥ क्रूरे क्षेत्रे गतो जीवो रवी राहुर्धरासुतः। सप्तमे भवने शुक्रो देही कष्टं प्रयाति च ॥ ९२ ॥ क्रूरे लग्ने भवेज्जातस्तत्स्वामी क्रूरक्षेत्रगः। आत्मघातो भवेत्तस्य शरीरे कष्टमादिशेत् ॥ ९३ ॥ सप्तमे भवने भौमः पञ्चमे च दिवाकरः। अरण्ये च भवेज्जन्म वृक्षालये न संशयः ॥ ९४ ॥

सूर्य राहु अथवा शनैश्चर मंगल और बृहस्पति लग्नमें वा पंचमस्थानमें स्थित हों तौ ऐसे योगमें उत्पन्न हुए बालककी माता मरजाती है। जिसके क्रूरराशिमें बृहस्पति, सूर्य, राहु, मंगल हो और सातवें भावमें शुक्र होवै तौ उसके शरीरमें कष्ट होता है। जिस मनुष्यका क्रूर लग्नमें जन्म हो और लग्नका स्वामी क्रूरराशिमें स्थित हो तो उसका आत्मघात होता है और शरीरमें कष्ट कहना चाहिये। जिसके सातवें स्थानमें मंगल, पांचवें सूर्य स्थित हो उसका जन्म वृक्षालय अथवा वनमें कहना चाहिये ॥ १९१-१९४ ॥ इति अरिष्टयोगः ॥

अथ जारजयोगः ।

एकः पापो यदा लग्ने लग्नेशो वा न पश्यति । सूर्यः पश्यति नो लग्नमन्यजातस्तदा भवेत् ॥ ९५ ॥ तिथिप्रान्ते दिनान्ते च लग्नस्यान्ते तथैव च । चरांशेऽपि च यो जातः सोऽन्यजातः शिशुर्भवेत् ॥ ९६ ॥ न पश्यति शशी लग्नं मध्यस्थः सौम्यशुक्रयोः । ततः परोक्षे जन्म स्याद्भौमेऽस्ते वा तनौ यमे ॥ ९७ ॥ जीवक्षेत्रगते चन्द्रे शुक्रे वेतरराशिगे । द्रेष्काणे च तदंशे वा न परैर्जात इष्यते ॥ ९८ ॥ न लग्नमिन्दुर्न गुरुर्निरीक्षते न वा शशाङ्को रविणा समागतः । सौरेण वाऽर्केण युतश्च वा शशी परेण जातं प्रवदन्ति सूरयः ॥ १९९ ॥

जिसके एक पापग्रह लग्नमें हो और लग्नेश न देखता होय अथवा सूर्यकी दृष्टि न होवै तो वह बालक अन्यसे उत्पन्न कहना चाहिये । तिथिके अन्तमें, दिनके अन्तमें, लग्नके अंतमें अथवा चरनवांशकमें पैदाहुआ बालक दूसरेसे उत्पन्न जानना । जन्मलग्नको चन्द्रमा न देखता होय अथवा बुध और शुक्रके बीचमें चन्द्रमा होय अथवा मंगल सातवें स्थित होय और चन्द्रमा लग्नको न देखता होय अथवा लग्नमें शनैश्चर स्थित होय, चन्द्रमा लग्नको न देखता होय तो इस प्रकार ये चार योग हुए। इनमें उत्पन्न हुए बालकका पिताके परोक्षमें जन्म कहना चाहिये । चन्द्रमा बृहस्पतिकें स्थानमें स्थित होय और शुक्र अपनी राशिके विना अन्यत्र स्थित हो अथवा बृहस्पति द्रेष्काण वा नवांशमें चन्द्रमा स्थित होय तो वह मनुष्य दूसरेसे उत्पन्न न कहना चाहिये। लग्नको चन्द्रमा अथवा बृहस्पति लग्नप चन्द्रमाको न देखता होय और न चन्द्रमायुक्त सूर्यको देखता होय वा शनैश्चर सूर्यकरके चन्द्रमायुक्त होय तो दूसरेसे उत्पन्न बालक कहना चाहिये ॥ १९५-१९९ ॥

लग्नं पश्यति नाऽङ्गिरा न च भृगुर्जारेण जातः शिशुः क्षौण्यर्कः समवेक्षते शशधरो योगे शिवावन्यजे । चन्द्रःपापयुतो दिनेशसहितः स्यादेवमप्यन्यजः प्रोक्तं प्राङ्मुनिपुङ्गवैः स्फुटमिदं योगत्रये जायते ॥२००॥ यदि वापि भवेच्चन्द्रो जन्माष्टमाद्वितीयगः। द्वादशैकादशस्थो वा पश्चाज्जातस्तदा शिशुः ॥१॥ क्षपाकरः पश्यति नैव लग्नं विदेशसंस्थे जनके प्रसूतः । कुजार्किसंसर्गगते विलग्ने कवीज्यकेन्द्रांशविहीनके वा ॥२॥ रविशशियुते सिंहे लग्ने कुजार्किनिरीक्षिते नयन-

रहितः सौम्यैः खेटैः स बुद्बुदलोचनः। व्ययगृहगतश्चन्द्रो वा महीजस्त्वपरं रविर्न शुभा गदिता योगा भवन्ति शुभेक्षिताः॥ २०३॥

लग्नको न बृहस्पति और न शुक्र देखता होय एकयोग, मंगल सूर्य देखते होंय लग्न वा चन्द्रमाको द्वितीययोग, चन्द्रमा पापग्रहोंसे युक्त सूर्यसहित होय तो तृतीय योग इन योगोंमें उत्पन्न हुआ बालक दूसरेका कहना चाहिये। जिसके चन्द्रमा जन्मलग्नमें आठवें वा दूसरे बारहवें अथवा ग्यारहवें स्थित हो तौ परोक्षमें उस बालकका जन्म कहना चाहिये। जिसके चन्द्रमा लग्नको नहीं देखता होय और मंगल शनि लग्नमें होवें अथवा शुक्र बृहस्पति केन्द्रांशकरके रहित हों तो उस बालकका पिताके परोक्षमें जन्म कहना चाहिये। जिसके सूर्य चन्द्रमायुक्त सिंह लग्नमें स्थित हो और मंगल शनैश्चर देखते हों तौ नेत्रहीन मनुष्य होता है. यदि शुभग्रह देखते होंय तौ छोटे नेत्रोंवाला होता है और चन्द्रमा वा मंगल वा सूर्य बारहवें स्थित हो तो भी शुभ न कहना. यदि शुभग्रह देखते होयँ तो शुभ कहना चाहिये॥ २००-२०३॥

इति जारजयोगः। इति तनुभावविचारः॥

अथ धनभावविचारः।

पापाः सर्वे धनस्थाने धनहानिकरा मताः। अन्यैः सौम्यैः शुभं सर्वमृद्धिवृद्धिधनादिकम्॥१॥ क्रूराश्चतुर्षु केन्द्रेषु तथा क्रूरो धनेऽपि च। दरिद्रयोगं जानीयात्स्वपक्षस्य भयंकरः॥ २॥ अष्टमस्थो यदा भौमस्त्रिकोणे नीचगो रविः। स शीघ्रमेव जातः स्याद्भिक्षाजीवी च दुःखितः॥ ३॥ कन्यायां च यदा राहुः शुक्रो भौमः शनिस्तथा। तत्र जातस्य जायेत कुबेरादधिकं धनम्॥ ४॥

धनभावमें पापग्रह धनहानि करनेवाले होते हैं और शुभग्रह होनेसे संपूर्ण शुभ ऋद्धि धनादिक बढाते हैं, क्रूर ग्रह चारों केन्द्रमें तथा दूसरे स्थानमें हों तो दारिद्र्ययोग जानिये और ऐसे योगमें बालक अपने पक्षका भय करनेवाला होता है। जिसके आठवें मंगल और नीचराशिका सूर्य त्रिकोणमें होवे तो वह बालक भिक्षासे जीविका करनेवाला और दुःखित होता है। जिसके कन्याराशिमें राहु, शुक्र, मंगल, शनैश्चर स्थित हों उसके कुबेरसे अधिक धन होता है॥ १-४॥

अर्ककेन्द्रे यदा चन्द्रो मित्रांशे गुरुणेक्षितः। वित्तवाग्ज्ञानसंपन्नो जायते च तदा नरः॥ ५॥ स्वक्षेत्रस्थो यदा जीवो बुधः सौरिस्त-

थैव च। तदा जातः स दीर्घायुः संपत्तिश्च पदेपदे॥६॥ लग्नं लग्नेश-संयुक्तं यस्य जन्मनि जायते । न मुञ्चन्ति गृहं तस्य कुलस्त्रिय इव श्रियः॥ ७ ॥ चन्द्रेण मङ्गलो युक्तो जन्मकाले यदा भवेत् । तस्य जातस्य गेहं तु लक्ष्मीर्नैव विमुञ्चति ॥ ८ ॥ मासमध्ये तु यत्संख्य-दिवसैर्जायते पुमान् । तत्संख्यवर्षभुक्तौ तु लक्ष्मीर्भवति निश्चितम्९

जिसके बृहस्पति करके दृष्ट मित्रनवांशके चन्द्रमा सूर्यसे केन्द्रमें स्थित हो वह धन-वान्, ज्ञानकरके संपन्न होता है। जिसके अपनी राशिमें बृहस्पति बुध तथा शनैश्चर स्थित हो तौ वह बडी उमरवाला और पदपदमें संपदावाला होता है। जिसके जन्मसमय लग्नका स्वामी लग्नमें स्थित हो तौ कुलकी स्त्रीके समान लक्ष्मी उसका घर नहीं छोडती है। जिसके जन्मसमय मंगल चन्द्रमाकरके युक्त होवै उसके घरको लक्ष्मी नहीं छोडती है। मासके बीचमें जितने संख्यावाले दिन (तिथि) करके मनुष्य उत्पन्न होता है उतनेही वर्षोंके भुक्त होनेपर लक्ष्मी स्थिर होती है ॥ ५-९ ॥

इति धनभावविचारः ॥

अथ सहजभावविचारः ।

पापैस्तृतीयगैः सर्वैर्बान्धवै रहितो भवेत् । सौम्यैश्च भ्रातृसंयुक्तः कीर्तियुक्तो धनप्रियः॥१॥ लग्नात्तृतीयभवने शिखिना सह चन्द्रमाः। लक्ष्मीवाञ्जायते बालो भ्रातृहीनो न संशयः ॥ २ ॥ आदौ जातान् रविर्हन्ति पश्चाद्भौमशनैश्चरौ । राहुणा च द्युभौ हन्ति केतुः सर्व-निवारकः ॥ ३ ॥ स्वक्षेत्रेस्थो यदा राहुर्धनस्थाने बृहस्पतिः। बुधेन च समायुक्तस्तस्य बन्धुत्रयं भवेत् ॥ ४ ॥

जिसके जन्मसमय संपूर्ण पापग्रह तीसरे स्थानमें स्थित हों वह भाइयोंकरके रहित होता है और यदि शुभग्रह युक्त हों अर्थात् स्थित हों तो भ्रातृयुक्त कीर्तिमान् और प्रिय धनवाला होता है। जिसके जन्मलग्नसे तीसरे भावमें केतुयुक्त चन्द्रमा स्थित होय वह बालक लक्ष्मीवान् और भाइयोंसे हीन निःसन्देह होता है। जिसके सूर्य तीसरे बैठा होय तो उसके बडे भाईका नाश करता है और मंगल शनैश्चर हो तो छोटे भाईका नाश और राहु बैठा होय तो दोनोंका नाश करता है और केतु सर्वनिवारक होता है। जिसके अपने घरमें राहु स्थित हो और बुध करके युक्त बृहस्पति दूसरे भावमें स्थित हो तौ उसके तीन भाई होते हैं ॥ १-४ ॥

लग्ने चन्द्रे धने शुक्रो व्यये च बुधभास्करौ । राहुश्चेत्पञ्चमे बालः स भवेद्बन्धुबन्धकृत् ॥ ५ ॥ धनस्थाने यदा क्रूरो भौमः सौरिसमन्वितः । सहजे च भवेद्राहुर्भ्राता तस्य न जीवति ॥ ६ ॥ षष्ठे च भवने भौमः सप्तमे राहुसम्भवः । अष्टमे च यदा सौरिर्भ्राता तस्य न जीवति ॥ ७ ॥ विलग्नस्थो यदा जीवो धने सौरिर्यदा भवेत् । राहुश्च सहजे स्थाने भ्राता तस्य न जीवति ॥ ८ ॥

जिसके लग्नमें चन्द्रमा, दूसरे शुक्र, बारहवें बुध सूर्य और राहु पंचममें स्थित हो तो वह बालक भाइयोंका वध करनेवाला अर्थात् उसके भाई मरजाते हैं । जिसके दूसरे स्थानमें क्रूरग्रह हों मंगल, शनैश्चर युक्त हों और तीसरे भावमें राहु होय तो उसके भाई नहीं जीते हैं । जिसके छठे मंगल सातवें राहु और आठवें शनैश्चर हो तो उसके भाई नहीं जीते हैं । जिसके जन्मलग्नमें बृहस्पति दूसरे शनैश्चर और तीसरे राहु स्थित हो तौ उसके भाई नहीं जीते हैं ॥ ५-८ ॥

सप्तमे भवने भौमश्चाष्टमेऽपि सितो यदि । नवमे च भवेत्सूर्यः स्वल्पायुश्च समूर्जितः ॥ ९ ॥ तस्य भ्राता भवेदन्यः पिता चायं समुद्धरेत् । तस्य चैको भवेत्पुत्रः सोऽपि विघ्नं विनश्यति ॥ १० ॥ उदयति मृदुभांशे सप्तमस्थे च मन्दे यदि भवति निषेकः सूतिमब्दत्रयेण । शशिनि तु विधिरेष द्वादशाब्दे प्रकुर्यान्निगदितमिह चिन्त्यं सूतिकालेऽपि युक्त्या ॥ ११ ॥ पुंग्रहोच्चस्थितो यस्य पत्रिकायां नरस्य च । तस्य षष्ठो भवेद्भ्राता चान्यथा भगिनी भवेत् ॥ १२ ॥

जिसके सातवें मंगल शुक्र और आठवें नववें सूर्य हो वह थोडी आयुवाला होता है और उसके पिताकरके दूसरा भाई रखा जाता है उसके एक पुत्र विघ्नका नाश करनेवाला होता है । गर्भाधानकालमें जो राशि लग्नमें स्थित हो उसमें मृदुभांश अर्थात् मकरनवांश अथवा कुंभनवांशका उदय हो और लग्नसे सातवें स्थानमें शनैश्चर स्थित हो तो तीन वर्षपर गर्भस्थका जन्म कहना चाहिये । और जो गर्भाधानकालिक लग्नमें कर्कनवांशका उदय हो और लग्नसे सातवें स्थानमें चन्द्रमा स्थित हो तौ बारह वर्ष गर्भस्थका जन्म कहना चाहिये । जिसके उच्चराशिमें पुरुषग्रह तीसरे भावमें स्थित हो तो उसके छः भाई होते हैं अन्यथा अर्थात् स्त्रीग्रह वा नपुंसकग्रहसे भगिनी कहना चाहिये ॥ ९-१२ ॥ इति सहजभावविचारः ॥

अथ सुखभावफलम् ।

तुर्यस्थाने स्थिताः पापा बालत्वे मातृकष्टदाः । सौख्यं सौम्याः प्रकुर्वन्ति राजसम्मानदायकाः ॥ १ ॥ लग्नाच्चतुर्थगः पापो यदि स्याद् बलवत्तरः । तदा मातृवधं कुर्यात्केन्द्रे वा न परो यदि ॥२॥ द्वितीये द्वादशे स्थाने यदा पापो व्यपोहति । तदा मातुर्भयं विद्याच्चतुर्थे दशमे पितुः ॥ ३ ॥ पापमध्यगते लग्ने चन्द्रे वा पापसंयुते । सौम्ये न धनगे पापे मातृहा सप्तवासरे ॥ ४ ॥

पापग्रह चौथे स्थानमें स्थित होवै तो बाल्यावस्थामें माताको कष्टदायक होते हैं. यदि शुभग्रह स्थित हों तो सौख्यको करते हैं और राजसम्मानदायक जानना । जिसके बलवान् होकर पापग्रह लग्नसे चतुर्थभावमें स्थित हों और केन्द्र (१।४।७।१०) स्थानमें और ग्रह न हों तो उसकी माता मरजाती है । दूसरे और बारहवें यदि पापग्रह प्राप्त होवें तो माताको और चौथे दशवें हों तो पिताको भय देते हैं। जिसके पापग्रहोंके बीचमें लग्न स्थित हो और चन्द्रमा पापयुक्त हो और शुभग्रह दूसरे स्थानमें नहीं तथा पापग्रह स्थित होवें तो ऐसे योगमें उसकी माता सात दिनमें मरजाती है ॥ १-४ ॥

चतुर्थे हन्यते माता दशमे च तथा पिता । सप्तमे भवने क्रूरास्तस्य भार्या न विद्यते ॥ ५ ॥ शन्यङ्गारकमध्यस्थः सूर्यः कुर्यात् पितुर्वधम् । मध्ये वा रजनीनाथो मातुर्मरणमादिशेत् ॥ ६ ॥ चन्द्रादष्टमगे पापे चन्द्रे पापसमन्विते । पापैर्बलिष्ठैः संदृष्टः सद्यो भवति मातृहा ॥ ७ ॥ लग्नस्थाने यदा जीवो धनस्थाने शनैश्चरः । राहुश्च सहजस्थाने माता तस्य न जीवति ॥ ८ ॥

क्रूरग्रह चौथे स्थानमें माताको, दशवें पिताको और सातवें स्थानमें स्त्रीको मारता है। शनैश्चर और मंगलके बीचमें सूर्य स्थित हो तो पिताको और मध्यमें चन्द्रमा स्थित हो तो माताको निःसन्देह मारता है। जिसके चन्द्रमासे आठवें पापग्रह स्थित हो और चन्द्रमा पापग्रहकरके युक्त हो तथा चन्द्रमाको बलवान् पापग्रह देखते हों तो उसकी माता शीघ्रही मरजाती है । जिसके जन्मलग्नमें बृहस्पति दूसरे स्थानमें शनैश्चर और तीसरे स्थानमें राहु हो उसकी माता नहीं जीती है ॥ ५-८ ॥

सिंहे भौमस्तुलां सौरिः कन्यायां वा सितो भवेत् । मिथुने च यदा राहुर्जननी तस्य नश्यति ॥ ९ ॥ चन्द्रः पापग्रहैर्युक्तश्चन्द्रो वा

पापमध्यगः। चन्द्रात्सप्तमगः पापस्तदा मातृवधो भवेत् ॥ १० ॥ एकादशे यदा क्रूरः पञ्चमे शुक्रशीतगू। प्रथमं कन्यका जाता माता तस्यास्तु कष्टगा ॥ ११ ॥ धने राहुर्बुधः शुक्रः सौरिः सूर्यौ यदा ग्रहाः। तदा मातुर्भवेन्मृत्युर्मृतोऽयं परिजायते ॥ १२ ॥

जिसके सिंहराशिमें मंगल, तुलामें शनैश्चर अथवा कन्यामें शुक्र और मिथुनमें राहु हो तो उसकी माता नहीं जीती है। जिसके चन्द्रमा पापग्रहोंकरके युक्त हो अथवा पापग्रहोंके बीचमें हो और चन्द्रमासे सातवें पापग्रह स्थित हो तो उसकी माता मरजाती है। जिसके ग्यारहवें क्रूरग्रह हो और पांचवें शुक्र चन्द्रमा हो तो प्रथम कन्या उत्पन्न होती है और उसकी माताको कष्ट होता है। जिसके दूसरे अथवा धनमें राहु, बुध, शुक्र, शनैश्चर और सूर्य होवे तो वह बालक मातासहित मरजाता है॥९-१२॥

नीचस्थानगते चन्द्रे तिष्ठेद्वै भार्गवात्मजः। पापासक्तो महाक्रोधी माता तस्य न जीवति ॥ १३ ॥ द्वादशे रिपुभावे च यदा पापग्रहो भवेत्। तदा मातुर्भयं विद्याच्चतुर्थे दशमे पितुः ॥ १४ ॥ त्रिसप्तगो दिवानाथो जन्मस्थश्च महीसुतः। तस्य माता न जीवेत वर्षमेकं पलद्वयम् ॥ १५ ॥ लग्ने च द्वादशे स्थाने यदि पापग्रहो भवेत्। तस्य माता भवेद्वन्ध्या पिता तस्य न जीवति ॥ १६ ॥ द्यूनाष्टमगते पापे क्रूरग्रहनिरीक्षिते। जनन्या सह मृत्युः स्याद्बालकस्य न संशयः ॥१७॥

जिसके नीचराशिमें चन्द्रमा शुक्र स्थित हो वह पापी और बडा क्रोधी होता है और उसकी माता नहीं जीती है। जिसके बारहवें छठे पापग्रह हों तो उसकी माताको और चौथे दशवें हो तौ उसके पिताको भय होता है। जिसके तीसरे सातवें सूर्य हो और जन्मलग्नमें मंगल हो तौ उसकी माता एकवर्ष बल्कि दो पलभी नहीं जीती है। जिसके लग्नमें बारहवें पापग्रह हो उसकी माता वंध्या होती है और उसका पिता नहीं जीता है। जिसके सातवें आठवें पापग्रह स्थित हो और क्रूरग्रहकी दृष्टि हो तो वह बालक मातासहित मरजाता है॥ १३-१७ ॥ इति सुखभावफलम् ॥

अथ सुतभावविचारः।

पञ्चमस्थाः शुभाः सर्वे पुत्रसन्तानकारकाः। क्रूराः सन्ततिमृत्यू च कुपुत्रं च धरासुतः ॥ १ ॥ बालस्य जन्मकाले तु पञ्चमो धरणीसुतः। अपुत्रश्च भवेद्बालो नारी चैव विशेषतः॥ २॥ अपुत्रं कुरुते

भानुः पुत्रमेकं निशाकरः । सशोकं पुत्रहीनं च पञ्चमो धरणीसुतः ॥३॥ उच्चो वा यदि वा नीचः पञ्चमः शिखिना स्थितः । हाहाकारं च कुरुते पुत्रशोकेन पीडितः ॥४॥ ऋतुरेतो अदृष्टो वा यदि चैको न पश्यति । अप्रसूतो भवेत्पुरुषः परिणयेद्द्वित्रिचतुःस्त्रियः ॥५॥

पंचमस्थानमें संपूर्ण शुभग्रह संतानकारक होते हैं और क्रूरग्रह संतानके मृत्युकारक होते हैं और मंगल कुपुत्रको देता है। जिस बालकके जन्मकालमें पांचवें मंगल स्थित हो तौ वह पुत्ररहित होता है और स्त्रीके यदि पंचम मंगल हो तो विशेष करके अपुत्रिणी होती है। सूर्य पंचम हो तो पुत्ररहित, चंद्रमा हो तो एक पुत्र होता है। पंचम मंगल हो तौ शोकयुक्त और पुत्रहीन होता है। जिसके उच्च अथवा नीच राशिका केतु पंचमभावमें हो वह पुत्रशोक करके पीडित होता है। यदि उस केतुको कोई ग्रह न देखता हो तो ऋतुका रेत बंद हो जाता है और दो तीन चार स्त्रियोंको विवाहनेपरभी प्रसूतिरहित मनुष्य होता है ॥ १–५ ॥

एकत्रिपञ्चपुत्रांश्च सूर्ये धीस्थे कुजे गुरौ । द्वि२त्रि३पञ्च५ च सप्तैव पुत्रीन्दौ ज्ञसितौ शनिः ॥ ६ ॥ पापः पञ्चमराशौ जातं जातं शिशुं विनाशयति । सप्तमराशौ पापा भार्यां बादरायणेनोक्तम् ॥ ७ ॥ एकः पुत्रो रवौ वाच्यश्चन्द्रे चैव सुताद्वयम् । भौमे पुत्रास्त्रयो वाच्या बुधे पुत्रीचतुष्टयम् ॥ ८ ॥ गुरौ गर्भे सुताः पञ्च षट् पुत्र्यो भृगुनन्दने । शनौ च गर्भपातः स्याद्राहौ गर्भो भवेन्न हि ॥९॥ सुतस्थाने द्विपापौ वा त्रिपापाश्चात्र संस्थिताः । तदा स्त्रीपुरुषौ वन्ध्यौ विज्ञेयौ सुतवीक्षिते ॥ १० ॥

पंचमस्थानमें स्थित सूर्य मंगल बृहस्पति क्रमसे एक तीन, पांच पुत्र देते हैं और चन्द्रमा, बुध, शुक्र शनि क्रमसे दो तीन पांच, सात पुत्री (कन्या) देते हैं। पंचमस्थानमें पापग्रह हों तो जो बालक उत्पन्न होजाता है उसको नष्ट कर देते हैं और सप्तम स्थानमें दो पापग्रह हों तो स्त्रीको विनाश कर देते हैं ऐसा बादरायणजीने कहा है। पंचमस्थानमें सूर्य होनेसे एक पुत्र, चन्द्रमासे दो कन्या, मंगलसे तीन पुत्र, बुधसे च्यार कन्या, बृहस्पतिसे पांच पुत्र, शुक्रसे छः कन्या कहना चाहिये। शनि पंचमस्थानमें हो तो गर्भपात करता है और राहु पंचम हो तो गर्भधारण ही नहीं होता है। सुतस्थानमें दो अथवा तीन पापग्रह स्थित हों अथवा सुतभावको देखते हों तो स्त्री पुरुष दोनों वंध्या होते हैं ॥ ६–१० ॥

ऋतुश्च कथितः शुक्रो रेतो भौमः प्रकीर्तितः। भौमः पश्यति यद्वर्षे तद्वर्षे गर्भसंस्थितिः॥ ११॥ ऋतू रेतश्च संपर्कौ जायते विषमा गतिः। करसंपुटमादाय वंध्या भवति निश्चितम्॥ १२ ॥ पुंराशौ लग्नपतिः सुताधिकं वीक्षते वाऽपि। सन्ततिबाधां कुरुते केन्द्रे पापान्विते चन्द्रे ॥ १३ ॥ लग्नात्पुत्रकलत्रभे शुभपतिः प्राप्तेऽथवाऽऽलोकिते चन्द्राद्वा यदि संपदस्तु हितयोर्ज्ञेयो यथा संभवः। पापेनोदयगे रवौ रविसुते मीनस्थिते दारहा पुत्रस्थानगतश्च पुत्रमरणं पुत्रो वने गच्छति ॥ १४ ॥ लग्ने द्वितीये यदि वा तृतीये विलग्ननाथे प्रथमः सुतः स्यात्। तुर्यस्थितेऽस्मिंश्च सुतो द्वितीयः पुत्री सुतो वेति पुरः प्रकल्प्यम् ॥ १५ ॥

शुक्रको ऋतु और मंगलको रेत कहा है। जिस वर्षमें भौम देखै उस वर्षमें गर्भकी स्थिति जाननी। ऋतुरेतके संगम करके विषमगति होनेपर करसंपुट ग्रहणकरके निश्चय वंध्या होती है। लग्नका स्वामी पुरुषराशिमें हो अथवा पंचमेशको देखता हो और चन्द्रमा पापग्रहयुक्त केन्द्र (१। ४। ७। १०) में स्थित हों तौ संततिको बाधा होती है। जिसके शुभराशिका स्वामी लग्नसे पांचवें सातवें स्थित होवै अथवा चन्द्रमासे पांचवें सातवें होवै तो वह संपदा और हितकरके युक्त होता है और जिसके पापग्रहसे युक्त सूर्य जन्मलग्नमें हो और शनैश्चर मीनराशिमें हो तो उसकी स्त्री मरजाती है और यदि पंचमस्थानमें स्थित होवै तो पुत्र मरजाते हैं तथा वनमें पुत्रकी उत्पत्ति होती है। जिसके लग्नका स्वामी लग्नमें या दूसरे या तीसरे भावमें स्थित होय तो उसके प्रथम पुत्र उत्पन्न होता है। क्रमसे कन्यापुत्र पुत्रकन्या कन्यापुत्र इत्यादि बारह भावमें रहते जानना ॥ ११-१५ ॥

धनस्थाने यदा क्रूरः क्रूरग्रहसमन्वितः। न पश्यति निजक्षेत्रमल्पपुत्रस्तदा भवेत् ॥ १६ ॥ सहज सहजाधीशो लग्ने वाऽथ धने भवेत्। जायते न तदा बालो यदि जातो न जीवति ॥१७॥ (यावत्संख्या इति काव्यं नवांशकस्थाने लिखितमस्ति पूर्वम्) ॥ झषधनुर्धरपञ्चमभावगे प्रसवसौख्यफलं न च दृश्यते। मृतप्रजः खलु पञ्चमगे गुरौ तदिह दृष्टिफलं शुभमश्नुते ॥ १८॥ लाभे सुते वा

शुक्रेन्दू सुते भौमोथवा क्रमात् । शुक्रेन्दू पश्यतः पुत्रं वर्षेऽस्मिन् सन्ततिस्तदा ॥१९॥ यत्र चैकादशे राहुः पञ्चमे च शिखी स्थितः । सुताननं न दृश्येत यदीन्द्रोऽपि च सेव्यते ॥ २० ॥

दूसरे भावमें क्रूर राशि हो और क्रूरग्रह उसमें स्थित हो और अपने क्षेत्रको न देखता होय तो वह थोडे पुत्रोंवाला होता है । जिसके तीसरे भावका स्वामी तीसरे लग्नमें अथवा दूसरे स्थानमें स्थित हो उसके बालक नहीं होता है, यदि उत्पन्न हो तो मरजाता है । जितनी संख्याका नवांश पंचमभावमें हो उतनेही संख्याकरके संतान उत्पन्न होती हैं । जिसके पंचमभावमें मीन अथवा धनुराशि होय उसको प्रसवसौख्यका फल नहीं दिखाई देता है अर्थात् उसके संतान उत्पत्ति नहीं होती है. यदि पंचमभावमें बृहस्पति हो तौ पुत्र उत्पन्न होकर मरजावे और जो बृहस्पति देखता होय तौ शुभ जानना । ग्यारहवें वा पांचवें शुक्र चन्द्रमा अथवा पांचवें मंगल क्रमसे होवें और शुक्र चन्द्रमा जिस वर्षमें पंचम भावको देखते होयँ उस वर्षमें सन्तान होती है । जिसके ग्यारहवें राहु पांचवें केतु हो तो उसके सन्तान नहीं होती है ॥ १६-२० ॥

इति सुतभावफलम् ॥

अथ रिपुभावविचारः ।

षष्ठे क्रूरा नरं कुर्युः शत्रुपक्षविवर्जितम् ।
सौम्याः षष्ठा महारोगान् षष्ठश्चन्द्रश्च मृत्युदः ॥ १ ॥

जिसके छठे भावमें क्रूरग्रह होवें वह शत्रुपक्षकरके रहित होता है और शुभग्रह स्थित होवैं तो महान् रोगको देते हैं और छठे चन्द्रमा मृत्युको देता है ॥ १ ॥

इति रिपुभावविचारः ॥

अथ जायाभावफलम् ।

कुभार्यां सप्तमे पापाः सौम्याः सर्वजनप्रियाम् । गुरुशुक्रौ शचीतुल्यां रूपलावण्यशालिनीम् ॥ १ ॥ षष्ठे च भवने भौमः सप्तमे सिंहिकासुतः । अष्टमे च यदा सौरिर्भार्या तस्य न जीवति ॥ २ ॥ जायाभावं सौरिशशी च राहुर्जायापतिः पश्यति सौख्यबाल्यम् । तस्यालये संभवतीह नारी श्यामा च गौरी बहुपुत्रिणी च ॥ ३ ॥

सातवें भावमें पापग्रह हों तौ कुभार्या देते हैं और शुभग्रह होवैं तो सर्वजनोंकी प्यारी ऐसी स्त्री देते हैं । बृहस्पति शुक्र सातवें स्थानमें हों तौ इन्द्रकी स्त्रीके समान रूपलावण्यमें प्रवीण स्त्रीको देते हैं । जिसके छठे भावमें मंगल, सातवें भावमें राहु

और आठवें भावमें शनैश्चर स्थित हो तौ उसकी स्त्री नहीं जीती है। जिसके सातवें स्थानमें शनि चन्द्रमा वा राहु हो और सप्तम भावका स्वामी जायाभावको देखता होवै तो बाल्यसुख होता है और उसकी स्त्री श्यामा गौरी और बहुपुत्रिणी होती है॥ १–३॥

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजः।
कन्या भर्तुर्विनाशाय भर्तुः कन्या विनश्यति ॥ ४ ॥

लग्नमें बारहवें आठवें चौथे सातवें मंगल हो तौ ऐसा योग कन्याके हो तो पतिको और पुरुषके हो तो स्त्रीको विनाश करता है ॥ ४ ॥

लग्ने पापग्रहे गौरी दुर्बलः शत्रुपीडितः। भवेदुर्वाच्यतायुक्तो भवेत् परवधूरतः ॥ ५ ॥ लग्नाद्व्यये वा रिपुमन्दिरे वा दिवाकरेन्दू भवतस्तदानीम् । स्यान्मानवस्यात्मज एक एव भार्यापि चैकेति वदन्ति सन्तः ॥६॥ गण्डान्तकाले च कलत्रभावे भृगोः सुते लग्नगतेऽर्कजातः। वन्ध्यापतिः स्यान्मनुजस्तदानीं शुभेक्षितं नो भवनं खलेन ॥ ७ ॥ व्ययालये वा मदनालये वा खलेषु बुद्ध्यालयगे हिमांशौ । कलत्रहीनो मनुजस्तनूजैर्विवर्जितः स्यादिति वेदितव्यम् ॥ ८ ॥

जिसके लग्नमें पापग्रह होवे उसकी स्त्री गौरीके समान होती है और वह मनुष्य दुर्बल शरीरवाला, शत्रुकरके पीडित, दुर्वचनोंकरके युक्त और परस्त्रीमें रत होता है। जिसके लग्नसे बारहवें वा छठे स्थानमें सूर्य चन्द्रमा स्थित हों तो उस मनुष्यके एक पुत्र और एकही स्त्री होती है। जिसका गण्डान्तसमयका जन्म शनैश्चर हो दूसरा अर्थ–सप्तमभावमें गण्डान्त लग्न होय और शुक्र सूर्य ये बैठे होयँ तो उस पुरुषकी स्त्री वन्ध्या होती है। शुभग्रह कोई न देखता होय और पापग्रहकी राशि होय तौ निश्चय ऐसा योग कहना चाहिये। जिसके बारहवें या सातवें पापग्रह बैठे होवें और पंचमभावमें चन्द्रमा होय तौ वह मनुष्य स्त्री पुत्रकरके विहीन होता है ॥ ५–८॥

संभूतिकाले च कलत्रभावे यमस्य भूमिं तनयस्य वर्गे। ताभ्यां प्रदृष्टे व्यभिचारिणी स्याद्भार्या स्वयं वै व्यभिचारकर्त्ता॥९॥शुक्रेन्दुपुत्रौ च कलत्रसंस्थौ कलत्रहीनं कुरुते नरं तौ । शुभेक्षितौ वा वयसो विरामे कामां च रामां लभते मनुष्यः ॥ १० ॥ चन्द्राद्विलग्नाच्च खलाः कलत्रे हन्युः कलत्रं च लयं गतौ तौ । चन्द्रार्कपुत्रौ च कलत्र-

संस्थौ पुनर्भवास्त्रीपरिलब्धिदौ स्तः ॥ ११ ॥ महीसुते सप्तमभावयाते कान्तावियुक्तः पुरुषस्तदा स्यात् । मन्देन दृष्टे म्रियतेऽचिरात्तदा सूर्येण दृष्टे बहुदुःखपीडितः ॥ १२ ॥ षष्ठे च भवने भौमः सप्तमे राहुसंभवः । अष्टमे च यदा सौरिस्तस्य भार्या न जीवति ॥ १३ ॥

जिसके जन्मसमय सप्तमभावमें शनि मंगलका षड्वर्ग होय और यही शनि मंगल देखते होंय तो उसकी स्त्री व्यभिचारिणी होती है और वह भी व्यभिचारी होता है। जिसके सप्तमभावमें शुक्र बुध बैठे होंय उसका विवाह नहीं होता है और जो शुभग्रहकी दृष्टि होय तौ बहुत दिनोंके बाद स्त्रीका लाभः होता है । जिसके जन्मलग्नसे अथवा चन्द्रमासे सातवें पापग्रह स्थित होय अथवा आठवें हो तो उसकी स्त्री मरजाती है और चन्द्रमा शनैश्चर सातवें स्थित होयँ तो पुनर्भवा स्त्री प्राप्त होती है। जिसके सप्तममें मंगल बैठा होय तो उसको स्त्रीसुख नहीं होता है और जो शनैश्चर देखता हो तो स्त्री मिलै परंतु थोडेही कालमें मरजावे। यदि शुभग्रहकी दृष्टि न होय और जो सूर्य देखता होवै तो बहुत दुःख करके पीडित जानना चाहिये। जिसके सातवें राहु छठे मंगल और आठवें शनैश्चर स्थित होवै उसकी स्त्री नहीं जीवे ॥९-१३॥

इति जायाभावफलम् ॥

अथायुर्भावविचारः ।

तत्रादावरिष्टभङ्गविचारः ।

पूर्वमायुः परीक्षेत पश्चाल्लक्षणमादिशेत् । आयुर्हीननराणां च लक्षणैः किं प्रयोजनम् ॥ १ ॥ खेटाः सर्वे महादुष्टा अष्टमस्थानमाश्रिताः॥२॥शशाङ्कस्तु विशेषेण जन्मकाले च मृत्युदः॥२॥कृष्णपक्षे दिवा जातः शुक्लपक्षे यदा निशि। तदा षष्ठाष्टमश्चन्द्रो मातृवत् परिपालकः ॥ ३ ॥ पञ्चमस्थो निशानाथस्त्रिकोणे च बृहस्पतिः। दशमे च महीसूनुः शतवर्षं स जीवति ॥ ४ ॥ शनैश्चरस्तुलाकुम्भमकरे यदि वा भवेत् । लग्ने षष्ठे तृतीये वा तदारिष्टं न जायते ॥५॥

विद्वान् जन प्रथम आयुर्दाय निश्चय करलेवै तब फलका विचार करै आयुर्हीन मनुष्योंके लक्षण कहनेसे कुछ प्रयोजन नहीं होताहै। संपूर्ण ग्रह अष्टमस्थानमें दुष्ट होते हैं और विशेष करके चन्द्रमा अष्टमस्थानमें मृत्युद्दायक होता है । कृष्णपक्षमें दिनका जन्म होय और शुक्लपक्षमें रात्रिका हो तो छठे आठवें स्थित चन्द्रमा माताके

समान उस बालकको पालता है। जिसके पांचवें चन्द्रमा, त्रिकोणमें बृहस्पति और दशवें मंगल हो तो वह सौ वर्ष जीता है। जिसके शनैश्चर तुला, कुंभ अथवा मकरराशिमें अथवा लग्न, छठे अथवा तीसरे हो तो उस बालकको अरिष्ट जानना १-५॥

राहुर्वृषे त्रिभिर्दृष्टे केतुदृष्टे चतुष्टये। वृषे च गुरुशुक्राभ्यां दीर्घकालं स जीवति ॥ ६ ॥ केन्द्रे शुभो यदैकोऽपि बली विश्वप्रकाशकः। सर्वे दोषाः क्षयं यान्ति दीर्घायुश्च भवेन्नरः ॥ ७ ॥ एकोऽपि केन्द्रे बुधजीवशुक्राः क्रूराः सहस्राणि विरुद्धयुक्ताः। तथापि सर्वाण्यपि यान्ति नाशं यथा मृगाः केसरिदर्शनेन ॥८॥ पाताले वाऽम्बरे लग्ने सुते धर्मे तथाऽऽयगे। बृहस्पतिस्तथा शुक्रो नाशयेद्दुरितं बहु ॥९॥ एकोऽपि केन्द्रे यदि ह्युच्चसंस्थः सर्वे ग्रहा भावगुणेन तुल्यम्। सर्वेऽप्यरिष्टं च विनाशयन्ति तमो यथा भास्करदर्शनेन ॥१०॥

जिसके वृषराशिमें राहुको तीन ग्रह देखते हों और केतुको चार ग्रह देखते हों और वृषमें बृहस्पति शुक्र हों तो वह बहुत कालतक जीता है। बलवान् विश्वप्रकाशक एक भी शुभग्रह यदि केन्द्रस्थान (१।४।७।१०) में स्थित हो तो संपूर्ण दोष नाश होजाते हैं और मनुष्य बडी उमरवाला होता है। बुध बृहस्पति शुक्र इनमेंसे एक भी केन्द्रस्थानमें स्थित हो और क्रूरग्रह हजारों अरिष्टोंकरके संयुक्त हों तो भी संपूर्ण अरिष्ट नाश हो जाते हैं जैसे सिंहके दर्शन करके मृग दूर हटजाते हैं। चौथे, दशवें, लग्न, पांचवें, नववें तथा ग्यारहवेंमें स्थित बृहस्पति तथा शुक्र बहुत अरिष्टोंको नाश करता है। अपने उच्च स्थानमें प्राप्त एक ग्रह भी यदि केन्द्रस्थानमें स्थित हो और सब ग्रह भाव गुणकरके समान हों तो संपूर्ण अरिष्ट नाश होजाते हैं जैसे सूर्यके उदयसे अंधकार ॥ ६-१० ॥

शुक्रो दशसहस्राणि बुधो दशशतानि च। लक्षमेकं तु दोषाणां गुरुर्लग्ने व्यपोहति ॥ ११ ॥ केन्द्रत्रिकोणगो जीवः शुक्रो वा चन्द्रनन्दनः। तस्य पुंसश्च दीर्घायुः स भवेद्राजवल्लभः ॥१२॥ गुरुर्धनुषि मीने वा तथा कर्कटकेऽपि वा। लग्नात्त्रिकोणे केन्द्रे वा तदारिष्टं न जायते ॥ १३ ॥ अजवृषकर्कटलग्ने रक्षति राहुः समग्रपीडाभ्यः। पृथ्वीपतिः प्रसन्नः कृतापराधं यथा पुरुषम् ॥ १४ ॥ राहुस्त्रिषष्ठलाभे

लग्नात् सौम्यैर्निरीक्षितः सद्यः । नाशयति सर्वदुरितं मारुत इव तूलसंघातम् ॥ १५ ॥

लग्नमें स्थित शुक्र दशहजार, बुध दशसौ और बृहस्पति एक लक्ष दोषोंको नाश करता है। जिसके केन्द्र (१ । ४ । ७ । १०) वा त्रिकोण स्थानमें बृहस्पति, शुक्र वा बुध स्थित हों तो वह पुरुष बडी उमरवाला और राजवल्लभ होता है । धनु, मीन अथवा कर्कराशिका बृहस्पति लग्नसे त्रिकोण (९ । ५) वा केन्द्रस्थानमें स्थित हो तो अरिष्ट नहीं होता है । मेष, वृष, कर्कराशिका राहु लग्नमें स्थित हो तो समग्र पीडाओंसे रक्षा करता है जैसे राजा प्रसन्न हुआ तो अपराधी पुरुषकोभी रक्षा करता है। शुभ ग्रहोंकरके देखाहुआ राहु लग्नसे तीसरे, छठे अथवा ग्यारहवें सर्व विघ्नोंको नाश करता है जैसे रुईको हवा ॥ ११-१५ ॥

विलग्नपो यत्र बलेन युक्तो लाभे तृतीये यदि कण्टके वा । सर्वाण्यरिष्टानि प्रयान्ति दूरं दीर्घायुरारोग्यतनुं करोति ॥ १६ ॥ एकोऽपि यदि केन्द्रस्थो भार्गवोऽथ गिरांपतिः । नवमे वा सुतस्थाने सर्वारिष्टं निवारयेत् ॥ १७ ॥ बुधभार्गवजीवानामेकतमः केन्द्रमाश्रितो बलवान् । क्रूरः सहायो यद्यपि सद्योऽरिष्टप्रशमनाय ॥ १८ ॥ स्वस्थानगोऽधिकबलः सुरराजमन्त्री केन्द्रोपगः प्रशमयेत्स्फुरदंशुजालः । एको बहूनि दुरितानि सुदुस्तराणि भक्त्या प्रयुक्त इव शूलधरे प्रणामः ॥१९॥ लग्नाधिपोऽतिबलवान् किल सौम्यदृष्टः केन्द्रस्थितैः शुभखगैरथ वीक्ष्यमाणः । मृत्युं विहाय विदधाति सुदीर्घमायुः संपूर्यते निजगृहं परया च लक्ष्म्या ॥ २० ॥

बलकरके युक्त लग्नका स्वामी ग्यारहवें तीसरे अथवा केन्द्रमें स्थित हो तो संपूर्ण अरिष्टोंको हटाकर दीर्घायु और आरोग्ययुक्त शरीर करता है। बृहस्पति शुक्र केन्द्र स्थानमें वा नववें पांचवें एक भी स्थित हो तो संपूर्ण अरिष्टोंको निवारण करता है । बलवान् होकर एकत्र बुध, शुक्र, बृहस्पति केन्द्रस्थानमें स्थित हों तो क्रूर ग्रहोंके सहायक होनेपर भी शीघ्रही अरिष्टोंको दूर करते हैं । बलवान् बृहस्पति एकही यदि स्वराशिमें प्राप्त होकर केन्द्रस्थानमें स्थित होय तो अनेक दुस्तर अरिष्टोंका नाश होजाता है, जैसे भक्ति करके शिवजीमें किया हुआ प्रणाम अनेक विघ्नोंका नाश करदेता है। लग्नका स्वामी बलवान् हो और बुधकी दृष्टि हो तथा शुभग्रह केन्द्रस्थानमें स्थित हो अथवा

वीक्ष्यमाण हो तो मृत्युको हटाकर दीर्घ आयुको देते हैं और वरको लक्ष्मीसे भरदेते हैं ॥ १६-२० ॥

लग्नादष्टमसंस्था गुरुबुधशुक्रा द्रेष्काणगश्चन्द्रः। मृत्युं प्राप्तमपि नरं परिरक्षत्ययुतबालम् ॥ २१ ॥ चन्द्रः संपूर्णतनुः सौम्यर्क्षगतोऽथवा शुभस्यान्ते। प्रकरोत्यरिष्टभङ्गं विशेषतः शुक्रसंदृष्टः ॥२२॥ रिपुगः शुभद्रेष्काणे स्थितः शशी सौम्याः खचराः सबलाः। कुर्वन्त्यरिष्टभङ्गं विशेषं यथा वसुधां चलुकः ॥ २३ ॥ सौम्यद्वयान्तर्गतः संपूर्णस्निग्धमण्डलश्चन्द्रः। भिनत्त्यशेषारिष्टान्भुजगारिर्भुजगलोकमिव ॥ २४ ॥ प्रस्फुरितकिरणजाले स्निग्धामलमण्डले बलोपेते। सुरमंत्रिणि केन्द्रगते सर्वारिष्टं क्षयं याति ॥ २५ ॥

लग्नसे अष्टमस्थानमें बृहस्पति, बुध, शुक्र, द्रेष्काणगत चन्द्रमा स्थित हो तो मृत्युको प्राप्तहुए भी बालककी रक्षा करता है। चन्द्रमा बलवान् होकर शुभग्रह बुधकी राशिमें स्थित हो अथवा शुभग्रहके अंतिमभावमें स्थित हो तो अरिष्टभंग करता है और शुक्रकरके दृष्ट हो तो विशेषकरके जानने। चन्द्रमा शुभ द्रेष्काणके छठे भावमें स्थित हो और सब शुभग्रह बलवान् हो तो विशेषकरके अरिष्टभंग करते हैं, जैसे यात्री भूमिको। पूर्णप्रकाशित बिंबवाला चन्द्रमा दो शुभग्रहोंके बीचमें स्थित होय तो सब अरिष्टोंको भंग करता है, जैसे गरुड नागलोकको। निर्मल आकाशको चन्द्रमाकी तरह यदि बृहस्पति केन्द्रस्थानमें होय तो संपूर्ण अरिष्ट नाश होते हैं ॥ २१-२५ ॥

सौम्यानां भवनगताः सौम्यांशकसम्भवद्रेष्काणस्थाः। गुरुचन्द्रकाव्यशशिजाः सर्वारिष्टस्य हन्तारः ॥ २६ ॥ चन्द्रोपाश्रितराशितपःकेन्द्रे शुभग्रहो वापि। प्रकरोत्यरिष्टभङ्गं पापानि यथा शिवस्मरणम् ॥ २७ ॥ पापा यदि शुभवर्गे सौम्यैर्दृष्टाः शुभांशवर्गस्थैः। निघ्नन्ति सदारिष्टं पतेर्विरक्ता यथा युवतिः ॥ २८ ॥ शीर्षोदयेषु राशिषु सर्वे गगनाधिवासिनोऽधिगताः। प्रतिहन्ति सर्वदुरितं यथा घृतं वाग्निसंयोगात् ॥ २९ ॥ तत्कालयुद्धविजयी शुभग्रहः शुभनिरीक्षितश्चापि। नाशयति कष्टनिवहं वात्या इव पादपं सकलम् ॥३०॥

बृहस्पति, चन्द्रमा, शुक्र, बुध ये शुभग्रहोंकी राशिमें शुभनवांश द्रेष्काणमें स्थित होवें तो संपूर्ण अरिष्टको नाश करते हैं। चन्द्रमा अथवा शुभग्रह नवम वा केन्द्र-

स्थानमें स्थित होतो अरिष्टभंग होजाता है, जैसे शिवके स्मरणसे पातक । पापग्रह यदि शुभग्रहों करके दृष्ट शुभवर्गमें अथवा शुभांशवर्गमें स्थित हों तो अरिष्टको नाश करते हैं, जैसे पतिको विरक्त स्त्री । संपूर्ण ग्रह शीर्षोदय राशियों (६ । ७ । ३ । ११ । ५ । ८) में स्थित हों तो सर्वविघ्नको नाश करते हैं, जैसे अग्निके संयोगसे घृत । तत्काल युद्धविजयी ग्रह शुभग्रहसे देखा हुआ कष्टको नाश करता है, जैसे वायु वृक्षको ॥ २६–३० ॥

गगनविभूषणसौम्यैर्दृष्टो नाशयति सर्वदुरितानि । संपूर्णमूर्तिरुडुपो दुर्नयनः खं यथा नाशम् ॥ ३१ ॥ उदये सप्तमुनीनां तथाऽगस्त्यः पुनरपि विलीयते । तदारिष्टं नवशीतिमिवापापैरवीर्यैश्च शुभैः सवीर्यैः ॥ ३२ ॥ शुभराशौ तनुभावपे निरीक्षिते व्योमचरैः । शुभाख्यैः संक्षीयतेऽरिष्टं मुखागतं हि ॥ ३३ ॥ मूर्तेस्तु राहुस्त्रिषडायवर्ती रिष्टं हरत्येव शुभैः प्रदिष्टः । शीर्षोदयस्थैर्विकृतिं न याति समस्तखेटैः खलु रिष्टभङ्गः ॥ ३४ ॥ तत्र व्यये लाभरिपुत्रिसंस्थः केतुस्तु हेतुर्निधनोपशान्त्यै । परस्परं भार्गवजीवसौम्यास्त्रिकोणगास्तेऽपि हरन्त्यरिष्टम् ॥ ३५ ॥

पूर्ण बलवान् चन्द्रमा संपूर्ण शुभ ग्रहोंकरके दृष्ट होय तो संपूर्ण विघ्नोंको नाश करता है । जिसका जन्म सप्तऋषियोंके उदयमें अथवा अगस्त्यमुनिके उदयकालमें हो तो उसके अरिष्ट दूर होजाते हैं. इसी प्रकार पापग्रह बलहीन और शुभग्रह बलवान् होवें तो भी अरिष्टभंग होजाते हैं. सम्पूर्ण शुभ ग्रहोंकरके देखा हुआ लग्नका स्वामी शुभ राशिमें स्थित होय तो मुखमें प्राप्त अरिष्टको भी नाश करदेता है । जो जन्मकालमें तीसरे छठे ग्यारहवें राहु बैठा होय और उसपर शुभग्रहोंकी दृष्टि होय और शीर्षोदयी राशिमें समस्त ग्रह बैठे होंय तो भी अरिष्टयोग भंग होजाता है । बारहवें, ग्यारहवें, छठे अथवा तीसरे स्थित केतु मृत्युको निवारता है और परस्पर त्रिकोणमें स्थित शुक्र बृहस्पति और बुधभी अरिष्टको नाश करते हैं ॥ ३१–३५ ॥

सन्ध्याभवा वैधृतिपातभद्रागण्डांतयुक्ता यदि जन्मकाले । भवंत्यरिष्टस्य विनाशनार्थं निरन्तरा दृश्यदले च सर्वे ॥ ३६ ॥ चतुष्टये श्रेष्ठबलाधिशाली शुभो नभोगोऽष्टमगो न कश्चित् । विंशन्मितायुः प्रकरोति नूनं दशान्वितं तच्छुभखेटदृष्टः ॥ ३७ ॥ निजात्रिभागे

स्वगृहे गुरुश्चेदायुर्गतिः स्यात्खलु विंशविंशत् । बृहस्पतिस्तुङ्गगतो विलग्ने भृगोः सुतः केन्द्रगतः शतायुः ॥ ३८ ॥ लग्ने स्वतुङ्गे बलशालिनीन्दौ सौम्याः स्वभस्थाः खलु षष्टिरायुः । मूलत्रिकोणेषु शुभेषु तुङ्गे लग्ने गुरावायुरशीतिरेव ॥ ३९ ॥ लग्नाष्टमारीन्दुयुता न चेत्स्युः क्रूराः स्वभस्था यदि खेचरौ द्वौ । बलान्वितावम्बरगौ भवेतां जातः शतायुः कथितो मुनीन्द्रैः ॥ ४० ॥

जिसका जन्म संध्याकाल अथवा वैधृतियोग और व्यतीपातयोगमें या भद्रामें या गंडान्तमें होता है और संपूर्ण ग्रह जिसके दृश्यभागमें होंय तो भी अरिष्टविनाश हो जाता है। शुभग्रह केन्द्रमें बली होकर बैठे और अष्टमभावमें कोई शुभग्रह न बैठे होंय तो बीसवर्षकी आयु होती है और शुभग्रहकरके दृष्ट होय तो तीस वर्षका आयुर्दाय होता है। बृहस्पति अपने द्रेष्काणमें और अपने घर (९। १२) में भी होंय तो पूर्ण आयुर्दाय होता है और कर्कका बृहस्पति लग्नमें, बैठा होय और शुक्र केन्द्रमें हो तो सौ वर्षका आयुर्दाय होता है। वृषराशिका चन्द्रमा लग्नमें हो और शुभग्रह अपनी २ राशिमें बैठे होंय तो साठवर्षका आयुर्दाय होता है और शुभग्रह अपने मूलत्रिकोणमें बैठे होंय और बृहस्पति बली होकर लग्नमें बैठे तो अस्सीवर्षका आयुर्दाय होता है। और जो चन्द्रमा लग्नमें छठे और आठवें न होय और क्रूरग्रह अपनी २ राशिमें होंय और दो ग्रह बलयुक्त दशमभावमें बैठे होंय तो सौ वर्षका आयुर्दाय मुनिजन कहते हैं ॥ ३६–४० ॥

शून्ये रन्ध्रे केन्द्रगैः सौम्यखेटैर्लग्ने जीवे नैधनेन्दूदयश्चेत् । नो संदृष्टाः पापखेटैस्तदा स्यादायुर्मानं सप्ततिर्वत्सराणाम् ॥ ४१ ॥ भानोरग्निभयं शशाङ्कमुदके भौमे मृतिश्चायुधैः सौम्ये कष्टज्वरं महान्तविषमे रामा च हस्ते गुरौ । शुक्रे वान्त्यक्षुधातृषा रविसुते मृत्युर्भवेत्सर्वदा सर्वे ते मरणं दिशन्ति सततं स्थाने स्थिते चाष्टमे ॥४२॥ दशमे पञ्चमे जीवो बुधश्चन्द्रश्च भार्गवः । शतंजीवी भवेज्जातो धनाढ्यो वेदपारगः ॥ ४३ ॥ नवमे पञ्चमे जीवो बुधो भवति सप्तमः । लग्ने भार्गवचन्द्रौ च शतंजीवी भवेन्नरः ॥ ४४ ॥

जो अष्टमभावमें कोई ग्रह न बैठे और सब शुभग्रह केन्द्रमें बैठे होंय और लग्नमें बृहस्पति बैठे, आठवें स्थानमें कर्कराशि होय और पापग्रह देखते नहीं होय तो सत्तर-

वर्षका आयुर्दाय होता है । सूर्यादिग्रह अष्टमस्थानमें स्थित क्रमसे इस प्रकार मरण करते हैं, यथा-जो अष्टमस्थानमें सूर्य स्थित होय तो अग्निकरके, चन्द्रमा स्थित हो तो जलकरके, मंगल हो तो हथियारकरके, बुध स्थित होय तो अत्यन्त विषमज्वरकरके, बृहस्पति होय तो विना मालूम रोगसे, शुक्र होय तो क्षुधा करके और शनैश्वर होय तो प्यासकरके मरण कहना चाहिये। दशवें पांचवें बृहस्पति, बुध, चन्द्रमा, शुक्र जिसके स्थित हों वह वेदपारग धनकरके युक्त सौ वर्ष जीनेवाला होता है । नववें पांचवें बृहस्पति, सातवें बुध, लग्नमें शुक्र चन्द्रमा होवैं तो मनुष्यकी सौ वर्षकी आयु होती है॥४१-४४॥

लघुजातकरीत्या गतिविचारः ।

सूर्यादिभिर्धनगैर्हुतवहसलिलायुधक्षुरामयजः। क्षुत्तृट्कृतश्च मृत्युः परदेशे नैधने चरभे ॥ ४५ ॥ यो वा बलवान्निधनं पश्यति तद्धातुकोपजो मृत्युः । लग्ने त्रिंशांशपतिर्द्वाविंशतिहायने मृत्युः ॥ ४६ ॥ विबुधपितृतिरश्चो नरकान् गुरुरिन्दुसितौ च । असृग्रवीज्ञयमौ रिपुरन्ध्रं त्रिंशपा नयन्ति विस्तारं निधनस्थाः ॥ ४७ ॥ षष्ठाष्टमकण्टकगो गुरुरुच्चे भाविमीनलग्ने वा । शेषैरबलैर्जन्मनि मरणे वा मोक्षगतिमाहुः ॥ ४८ ॥

सूर्यादिग्रह धनभावमें स्थित होय तो क्रमसे मरण करते हैं, यथा-सूर्य होय तो अग्निकरके, चन्द्रमा होय तो जलकरके, मंगल होय तो हथियारकरके, बुध होय तो अस्तुराकरके, बृहस्पति होय तो आमविकारसे, शुक्र होय तो भूंखसे और शनैश्चर होय तो प्यास करके मरण होता है । जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नसे आठवें स्थानमें कोई ग्रह न स्थित हो तब उस अष्टमस्थानको बलवान् होकर जो ग्रह देखता होय उस ग्रहके कफ, वात, पित्तादिजनित धातुके कोपसे उस प्राणीका मरण होता है और लग्नमें त्रिंशांश लग्नका स्वामी स्थित होय तौ बाईस वर्षमें मरण कहना चाहिये । आठवें स्थानमें जो ग्रह स्थित होय उसी ग्रहके लोकको प्राणीका गमन होता है. अथवा छठे, आठवें इन दोनों स्थानोंमें जिस द्रेष्काणका उदय हो और इन दोनों द्रेष्काणके स्वामियोंमेंसे जो बलवान् होय उसी ग्रहके लोकको प्राणीका गमन कहना यथा-बृहस्पति होय तो देवलोकको, चन्द्रमा शुक्रमेंसे कोई हो तो पितृलोकको, मंगल सूर्य इनमेंसे कोई होय तो मनुष्यलोकको और बुध शनैश्चर होय तो नरकलोकको प्राणीका गमन होता है । जिसके जन्मकालमें छठे, आठवें वा केन्द्रमें उच्चराशिका बृहस्पति स्थित होय तो वह प्राणी मुक्तिको प्राप्त होता है और जो मीनलग्नसे जन्म हो और बृहस्पति लग्नमें बली होकर स्थित होय और संपूर्ण ग्रह निर्बल हों तो वह प्राणी मुक्तिको प्राप्त होता है ॥ ४५-४८ ॥

गुरुरुडुपतिशुक्रौ सूर्यभौमौ यमज्ञौ विबुधपितृतिरश्चो नारकीयांश्च कुर्युः । दिनकरशशिवीर्याधिष्ठितत्र्यंशनाथात्प्रवरसमनिकृष्टास्तुङ्गहासादिनूके ॥४९॥ स्थिरश्चरोद्वेगसमाह्वयश्च राशिर्यदा जन्मनि चाष्टमस्थः । स्वकीयदेशे विषयान्तरे वा आयुः प्रकुर्यान्मरणक्रमेण ॥ ५० ॥ आयुर्गृहं खेटविवर्जितं चेद्विलोकयेत् तद्बलवान् ग्रहेन्द्रः । तद्धेतुजातं प्रवदन्ति मृत्युं बहुप्रकारं बहवो बलिष्ठाः ॥ ५१ ॥ पित्तं कफः पित्तमथ त्रिदोषं श्लेष्मानिलो वाप्यनिलः क्रमेण । सूर्यादिकेभ्यो मरणस्य हेतुः प्रकल्पितः प्राक्तनजातकज्ञैः ॥ ५२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य और चन्द्रमा इन दोनोंमेंसे जो ग्रह बली जिस द्रेष्काणमें स्थित हो उस द्रेष्काणका स्वामी जो बृहस्पति होय तौ वह प्राणी देवलोकसे आया कहना और जो चन्द्रमा शुक्र इनमेंसे कोई हो तो पितृलोकसे आया कहना और जो सूर्य मंगल इनमेंसे कोई हो तो मनुष्यलोकसे आया कहना और शनैश्चर बुध होय तो नरक लोकसे आया हुआ प्राणी कहना चाहिये । जो पूर्वोक्त लोकसे आयेहुए प्राणियोंका ग्रह अपने उच्चस्थानमें स्थित हो तो उन प्राणियोंमें पूर्वोक्त लोकमें श्रेष्ठ जानना चाहिये और जो वही ग्रह अपने उच्चनीचके बीचमें स्थित हो तो उन प्राणियोंका हाल पूर्वजन्ममें मध्यम कहना और जो वही ग्रह अपने नीच स्थानमें स्थित हो तो उन प्राणियोंका पूर्वजन्ममें नीच हाल कहना चाहिये । जिसके अष्टम स्थानमें चरराशि होय वह प्राणी परदेशमें और स्थिर होय तो स्वदेशमें और द्विस्वभावराशि होय तो वह प्राणी रास्तेमें मरता है । जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नसे आठवें स्थानमें कोई ग्रह न होय तो उस अष्टमस्थानको बलवान् होकर जो ग्रह देखता होय उस ग्रहके पूर्वोक्त कफ-वात-पित्तादिजनित धातुकोपसे उस प्राणीका मरण होता है और जो बली ग्रह भी बहुत देखते हों तो बहुप्रकार धातुके कोपसे उस जीवका मरण होता है । जो सूर्य मरणका हेतु होय तो पित्तकरके, चन्द्रमा होय तो कफकरके, मंगल होय तो पित्तकरके, बुध होय तो त्रिदोषकरके, गुरु होय तो कफकरके, शुक्र होय तो अग्निकरके तथा शनैश्चर होय तो भी अग्निकरके प्राणीका मरण होता है ॥ ४९-५२ ॥ इत्यरिष्टभंगप्रकरणम् ॥

अथ भाग्यभवनविचारः ।

विहाय सर्वं गणकैर्विचिन्त्यं भाग्यालयं केवलमत्र यत्नात् । आयुश्च माता च पिता च बन्धुर्भाग्यान्वितेनैव भवन्ति धन्याः ॥ १ ॥

यस्यास्ति भाग्यं स नरः कुलीनः स पण्डितः स श्रुतिमान् गुणज्ञः। स एव वक्ता स च दर्शनीयो भाग्यान्वितः सर्वगुणैरुपेतः ॥ २ ॥

ज्योतिर्विद्को बारहों भावोंके विचारको छोडके प्रथम भाग्यभावका विचार करना उचित है. जिसका भाग्योदय है उसके आयुर्दाय और माता पिता और बंधु ये सब धन्य हैं। जिसका भाग्योदय है वही पुरुष कुलीन, पंडित, श्रुतिमान्, गुणका जाननेवाला, वक्ता, दर्शनीय और सर्व गुणोंकरके युक्त होता है ॥ १ ॥ २ ॥

अथ भाग्योदयलक्षणम्।

द्वाविंशे रविणा च वर्षकथितं चन्द्रे चतुर्विंशतिर्ह्यष्टाविंशतिभूमिनन्दनमतं दातुर्बुधे च स्मृतम्। जीवे षोडश भृगोः पञ्चविंशति तथा षट्त्रिंश सौरी वदेत्कर्मेशात्खलु कर्म चैव कथितं लग्नाधिपौ चेत्स्मृतम् ॥ ३ ॥ भाग्ययोग्यान्तरे सौरिः स्थितो जन्म यथा भवेत्। लग्नपे तु विशेषेण यावज्जीवं समृद्धिमान् ॥ ४ ॥ मूर्तेश्चापि निशापतेश्च नवमं भाग्यालयं कीर्तितं तत्स्वस्वामियुतेक्षितं प्रकुरुते भाग्यं च देशोद्भवम्। चेदन्यैर्विषयान्तरेऽत्र शुभदाः स्वोच्चादिगाः सर्वदा कुर्युर्भाग्यमसाधवो न च बलाद्दुःखोपलब्धिं पराम् ॥ ५ ॥

नवमभावमें स्थित ग्रहके द्वारा भाग्योदय और दशमभावके स्वामीसे कर्म एवं लग्नाधिपकरके इस प्रकार क्रमसे जाने. यथा—सूर्यसे २२ वर्ष, चन्द्रमासे चौबीस २४, मंगलसे अट्ठाईस २८, बुधसे बत्तीस ३२, बृहस्पतिसे सोलह १६, शुक्रसे छब्बीस २६ और शनैश्चरसे छत्तीस ३६ वर्षपर कहना चाहिये। जिसके जन्मसमय भाग्ययोग्यान्तरमें शनैश्चर विशेषकरके लग्नका स्वामी स्थित हो तो वह मनुष्य जन्मपर्यन्त समृद्धिकरके युक्त होता है। लग्नसे या चन्द्रमासे जो नवमस्थान है वह भाग्यभाव हो उसके स्वामी अपने भावमें बैठे या देखै तौ मनुष्यका भाग्योदय अपनेही देशमें होता है और जो भाग्यभावको अपने स्वामी न देखै और शुभग्रह देखते होंय तो उसका भाग्योदय परदेशमें होना चाहिये और जो भाग्याधीश अपने उच्चादिराशिमें बली होकर बैठे या देखै तो उसका भाग्योदय सर्वदा रहता है और जो ग्रह निर्बल होय या पापग्रह देखते होंय तो बडे कष्टसे भाग्यका उदय होता है ॥ ३-५ ॥

भाग्येश्वरो भाग्यगतोऽस्ति किंवा स्वस्थानगः सारविराजमानः। भाग्याश्रितः कोऽस्ति विचार्य सर्वमत्यल्पमल्पं परिकल्पनीयम् ॥६॥ तनुत्रिसूनूपगतो ग्रहश्चेद्यो वाधिवीर्यो नवमं प्रपश्येत्। यस्य प्रसूतौ

स तु भाग्यशाली विलासशीलो बहुलार्थयुक्तः ॥ ७ ॥ चेद्भाग्यगामी खचरः स्वगेहे सौम्येक्षितो यस्य नरस्य सूतौ । भाग्याधिशाली स्वकुलावतंसो हंसो यथा मानसराजमानः ॥ ८ ॥ पूर्णेन्दुयुक्तौ रवि-भूमिपुत्रौ भाग्यस्थितौ सत्त्वसमन्वितौ च । वंशानुमानात्सचिवं नृपं वा कुर्वन्ति ते सौम्यदृशं विशेषात् ॥ ९ ॥ स्वोच्चोपगो भाग्यगृहे नभोगो नरस्य योगं कुरुते च लक्ष्म्या । सौम्येक्षितोऽसौ यदि भूमि-पालं दन्तावलोत्कृष्टविलासशीलम् ॥ १० ॥

भाग्यका स्वामी भाग्यभावमें होय अथवा केन्द्र त्रिकोणमें बली होकर बैठा होय तो उसका भाग्योदय होता है। अब उसे बली या निर्बल होनेसे अल्प अतिअल्प बलाबल ग्रहके होनेसे जानना । कोई ग्रह लग्नमें या तीसरे या पांचवें अत्यंत बली होकर नवमस्थानको देखे तो उसके भाग्यका उदय सुख और अनेक पदार्थ युक्त बडा धनी होता है। कोई ग्रह नवमस्थानमें बैठा होय और वह घर उसी ग्रहक होय अथवा कोई शुभग्रह उसको देखता हो तो वह बडा भाग्यशाली और अपने कुलका प्रकाश करनेवाला जैसे मानससरोवरमें हंसके तुल्य सुखभोग करनेवाला होता है। भाग्यस्थानमें पूर्णचन्द्रमाके साथ सूर्य मंगल बली होकर बैठे तो अपने वंशके अनुसार राजा व राजाका मन्त्री होता है और जो शुभग्रहकी दृष्टि होय तौ विशेषकरके फल होता है। जो भाग्यस्थानमें कोई शुभग्रह अपने उच्चराशिमें बैठा होय तो बहुत धनकी प्राप्ति करावै और जो शुभग्रह देखताभी होवै तो उसको हाथीकी सवारी मिलै और बडा सुखभोग करनेवाला होय ॥ ६-१० ॥ इति भाग्यभावः ॥

अथ दशमभावफलम् ।

समुदितमृषिवर्यैर्मानवानां प्रयत्नादिह हि दशमभावे सर्वकर्म प्रकामम् । गगनगपरिदृष्ट्या राशिखेटस्वभावैः सकलमपि विचिन्त्यं सत्त्वयोगात्सुधीभिः ॥ १ ॥ तनोः सकाशाद्दशमे शशाङ्के वृत्तिर्भवे-त्तस्य नरस्य नित्यम्। नानाकलाकौशलवाग्विलासैः सर्वोद्यमैः साहस-कर्मभिश्च ॥ २ ॥ तनोः शशांकाद्दशमे बलीयान् स्याज्जीवनं तस्य खगाख्यवृत्त्या । बलान्विताद्वर्गपतेस्तु यद्वा वृत्तिर्भवेत्तस्य खगस्य पाके ॥ ३ ॥ दिवामणिः कर्मणि चन्द्रतन्वोर्द्रव्याण्यनेकोद्यमवृत्ति-योगात्। सत्त्वाधिकत्वं च सदा सुरम्यं पुष्टत्वमङ्गे मनसः प्रसादः॥४॥

लग्नेन्दुतः कर्मणि चेन्महीजः स्यात्साहसाच्चौर्यनिषादवृत्तिः । नूनं नराणां विषयातिसक्तिर्दूरे निवासः सहसा कदाचित् ॥ ५ ॥

प्राचीन आचार्योंने दशमभावसे यत्नपूर्वक संपूर्ण कर्मोंका साधन उत्तम अधम कर्मोंका प्रकाश ग्रहोंकी दृष्टिसे और राशिके स्वभावसे और ग्रहोंके बलाबलसे संपूर्ण फलोंका निर्णय किया है । जन्मलग्नसे चन्द्रमा जिसके दशमभावमें बैठा होय वह पुरुष अनेक कारीगरीसे और वाग्विलाससे और अनेक उद्यम वा साहसकर्मसे धन पैदा करता है । लग्न या चन्द्रमासे दशमभावमें जो ग्रह बली होकर बैठे उसी ग्रहके अनुसार वृत्ति कहनी अथवा बली षड्वर्गके स्वामीसे उसकी दशामें वैसेही वृत्ति होनी चाहिये । चन्द्रमा वा लग्नसे दशमभावमें सूर्य बैठे तो उस पुरुषको अनेक वृत्ति और अनेक यत्नसे धनका लाभ होता है और जो वही सूर्य उच्चस्थानमें बली होकर बैठे तो सदा रम्य, शरीरसुख और मनकी प्रसन्नता सदैव बनी रहती है । लग्न या चन्द्रमासे दशमभावमें मंगल बैठा होय तो साहसकर्म, चोरी या निषादवृत्तिसे धनलाभ होता है और विषयासक्त, घरसे दूर निवास और साहसकर्मका करनेवाला होता है ॥ १–५ ॥

लग्नेन्दुभ्यां कर्मगो रौहिणेयः कुर्याद्द्रव्यं नायकत्वं बहूनाम् । शिल्पेऽभ्यासं साहसं सर्वकार्यै विद्वद्वृत्त्या जीवनं मानवानाम् ॥६॥ विलग्नतः शीतमयूखरश्मितो माने मघोनः सचिवो यदि स्यात् । नानाधनाभ्यागमनानि पुंसां विचित्रवृत्त्या नृपगौरवं च ॥७॥ होरायाश्च निशाकराद्भृगुसुतो मेषूरणे संस्थितो नानाशास्त्रकलाकलापविलसद्वृत्त्या दिशेज्जीवनम् । दाने साधुनि वै यथा विनयतां कामं धनाभ्यागमं नानामानवनायकादिविरलं विस्तीर्णशीलं यशः॥८॥ होरायाश्च सुधाकराद्रविसुतः शैलूषमध्यस्थितो वृत्तिं हीनतरां नरस्य कुरुते कार्श्यं शरीरे सदा । खेदं वादभयं च धान्यधनयोर्हानिं स्वबुच्चैर्मनश्चित्तोद्वेगसमुद्भवेन चपलं शीलं च नो निर्मलम् ॥ ९ ॥ जीवो द्विजात्माकरदेवधर्मैः शुक्रो महिष्यादिकरौप्यरत्नैः । शनैश्चरो नीचतरप्रकारैः कुर्यान्नराणां खलु कर्मवृत्तिम् ॥ १० ॥

लग्न और चन्द्रमासे जो दशमभावमें बुध होय तो बहुत जनोंका स्वामी, कारीगरीके कार्यमें निपुण, साहसी, लिखनेपढनेसे जीविका करता है । लग्न या चन्द्रमासे

दशमभावमें जो बृहस्पति होय तो अनेक प्रकारसे धनप्राप्ति करै, मंत्री विचित्र-वृत्तिवाला और राजगौरवकरके युक्त होता है । लग्न या चन्द्रमासे जिसके शुक्र दशमभावमें बैठा होय तो अनेक शास्त्रोंके पढनेसे और अनेक चतुराईसे धनकी प्राप्ति करै. दानमें साधुमति, उत्तम शीलस्वभाव, सर्वत्र प्रतिष्ठा व मान पानेवाला और विशाल यशवाला होता है । लग्न या चन्द्रमासे जिसके दशमभावमें शनि स्थित होय तो नीच-वृत्तिसे जीविका करनेवाला, शरीरमें रोग, सज्जनोंसे विवाद, धनधान्यहीन, चित्तमें उद्वेग, चपल शील स्वभाव और मलीन होता है । सूर्य चन्द्रमा लग्न इन तीनोंसे जो दशम-भावके स्वामी हैं उनमेंसे जो बली है वह जिस ग्रहके नवांशमें बैठा होय तो उसीके स्वभावतुल्य वृत्ति कहनी चाहिये. यथा बृहस्पति होय तो ब्राह्मणसे या उत्तमधर्म-साधन देवार्चन इत्यादिसे धनका लाभ होता है. जो शुक्र हो तो महिषी आदि वा चांदी या रत्नसे धनका आगम जानिये, शनि होय तो नीचकर्म करनेसे धन मिलै । सूर्य होय तो श्रेष्ठ औषधिसे ऊर्णावस्त्रोंसे जीविका होती है । चन्द्रमा होय तो स्त्री या जलसे या खेतीसे धन मिलता है । मंगल होय तो साहससे या स्वर्णादिधातुसे या शस्त्रसे जीविका होती है, बुध होय तो काव्यरचना या बुद्धिबलसे धन मिलै ॥९-१०॥

कर्मस्वामी ग्रहो यस्य नवांशे परिवर्तते । तत्तुल्यकर्मणा वृत्तिं निर्दिशन्ति मनीषिणः ॥ ११ ॥ मित्रारिगेहोपगतैर्नभोगैस्ततस्ततोऽर्थः परिकल्पनीयः । तुङ्गे पतङ्गे स्वगृहे त्रिकोणे स्यादर्थसिद्धिर्निजबाहुवीर्यात् ॥ १२ ॥ बुधभार्गवजीवार्कियुक्तो राहुश्चतुष्टये । कुरुते कमलारोग्यपुत्रमानादिकं फलम् ॥ १३ ॥ कर्मस्थाने निजक्षेत्रे भौमशुक्रबुधैर्युतः । यदि राहुर्भवेत्तस्य क्षणे वृद्धिः क्षणे क्षयः ॥ १४ ॥ पाताले चाम्बरे पापो द्वादशे च यदा स्थितः । पितरं मातरं हन्ति देशाद् देशान्तरं व्रजेत् ॥ १५ ॥

दशमभावका स्वामी जिसके नवांशमें बैठा होय उसीके तुल्य कर्मोंसे पंडितजन जीविकाको कहते हैं । मित्रगेहमें या शत्रुगेहमें जो ग्रह स्थित होते हैं वैसाही मित्र या शत्रुसे धनका लाभ कराते हैं. जो सूर्य अपने उच्चमें या स्वस्थानमें या मूलत्रि-कोणमें बैठा होय तो अपने बाहुबलसे अर्थकी सिद्धि होती है । जिसके बुध शुक्र बृहस्पति शनैश्चरकरके युक्त राहु केन्द्रस्थानमें स्थित होय तो वह पुरुष आरोग्यवान् पुत्रवान् आदि सिद्धियुक्त होता है । जिसके दशमस्थानमें अपनी राशिका मंगल शुक्र बुधकरके युक्त हो यदि राहुभी तहां स्थित हो तो उसकी क्षणमें वृद्धि और क्षणहीमें क्षय कहना चाहिये । जिसके पाताल (अष्टम) में दशवें बारहवें

पापग्रह स्थित होवें तो उसके मातापिताको मारनेवाले और देशसे भ्रमण करानेवाले होते हैं ॥ ११-१५ ॥

चापे सूर्यः शनिः कुम्भे मेषे भवति चन्द्रमाः । मकरे च यदा शुक्रो याति नाशं पितुर्धनम् ॥ १६ ॥ सप्तमे भवने भानुर्मध्यस्थो भूमिनन्दनः । राहुश्चान्ते च तस्यैव पिता कष्टेन जीवति ॥ १७ ॥ कन्यायां मिथुने राहुः केन्द्रे षष्ठे व्यये भवेत् । त्रिकोणे च तदा जातो दाता भोक्ता निरामयः ॥ १८ ॥ सूर्यः पापेन संयुक्तः सूर्यश्च पापमध्यगः । सूर्यात्सप्तमगः पापस्तदा पितृवधो भवेत् ॥ १९ ॥ दशमस्थो यदा भौमः शत्रुक्षेत्रस्थितो यदि । म्रियते तस्य बालस्य पिता शीघ्रं न संशयः ॥ २० ॥

जिसके धनुमें सूर्य, कुंभमें शनैश्चर, मेषमें चन्द्रमा और मकरमें शुक्र होय तो वह पिताके धनका नाश करनेवाला होता है । जिसके सातवें सूर्य, दशवें मंगल और बारहवें राहु हो तो उसका पिता कष्टसे जीता है । जिसके राहु कन्या या मिथुनराशिमें प्राप्त होकर केन्द्रमें, छठे, बारहवें अथवा त्रिकोणमें स्थित होय तो वह दाता, भोक्ता और निरामय होता है । जिसके सूर्य पापग्रहकरके युक्त होय अथवा पापग्रहोंके बीचमें स्थित होय और सूर्यसे सातवें पापग्रह हों तो उसके पिताकी मृत्यु होती है । जिसके दशमस्थानमें मंगल शत्रुक्षेत्रमें स्थित हो उसका पिता शीघ्र ही मरता है ॥ १६-२० ॥

लग्ने जीवो धने मन्दो रविर्भौमस्तदा बुधः । विवाहसमये तस्य बालस्य म्रियते पिता ॥ २१ ॥ भ्रातृस्थाने यदा जीवो लाभस्थाने यदा शशी । स लोके गृहमध्यस्थो जायते कुलदीपकः ॥ २२ ॥ सिंहे लग्ने यदा भौमः पञ्चमे च निशाकरः । व्ययस्थाने यदा राहुः स जातः कुलदीपकः ॥ २३ ॥

जिसके लग्नमें बृहस्पति, धनमें शनैश्चर, सूर्य मंगल तथा बुध स्थित हों तो उसके विवाहसमय पिता मरजाता है । जिसके तीसरे बृहस्पति, ग्यारहवें चन्द्रमा स्थित होय तो वह अपने घरमें कुलका प्रकाश करनेवाला होता है । जिसके सिंहलग्नमें मंगल पांचवें चन्द्रमा और बारहवें राहु होय तो वह कुलदीपक होता है ॥ २१-२३ ॥

एकः पापो यदा लग्ने पापश्चैको रसातले। जायते च द्विनाली स्यात्स जातः कुलदीपकः ॥ २४ ॥ लग्ने वा सप्तमे भौमः पञ्चमे च दिवाकरः। व्ययस्थाने यदा राहुर्विख्यातः स न संशयः ॥ २५ ॥ केन्द्रे शुभे यदैकोऽपि बली विश्वप्रकाशकः। सर्वदोषाः क्षयं यान्ति दीर्घायुश्च भवेन्नरः ॥ २६ ॥

एक पापग्रह लग्नमें और एक पापग्रह आठवें होय तो भी वह कुलदीपक होता है। जिसके लग्न या सातवें मंगल होय, पांचवें चन्द्रमा और बारहवें राहु होय तो वह निश्चय प्रसिद्ध मनुष्य होता है। जिसके केन्द्रमें यदि एकभी शुभग्रह बलवान् विश्वप्रकाशक स्थित होय तो संपूर्ण दोष (अरिष्ट) नाश होजाते हैं और वह बडी उमरवाला होता है ॥ २४–२६ ॥ इति दशमभावः ॥

अथ एकादशभावः।

लाभस्थाने ग्रहाः सर्वे राज्यलाभफलप्रदाः। गजाश्वपतिमीप्सां च सौम्याः कुर्वन्ति निश्चितम् ॥ १ ॥ सूर्येण युक्तः स्वविलोकितो वा लाभालये तस्य गणोऽत्र चेत्स्यात्। भूपालतश्चौरकुलात्कलेर्वा चतुष्पदादेर्बहुधा धनाप्तिः ॥ २ ॥ चन्द्रेण युक्तं च विलोकितं वा लाभालयं चन्द्रगणाश्रितं चेत्। जलाशयस्त्रीगजवाजिवृद्धिः पूर्णे भवेत्क्षीणतरे विलोमात् ॥ ३ ॥ लाभालयं मङ्गलयुक्तदृष्टं प्रकृष्टभूषामणिहेमलब्धिः। विचित्रयात्राबहुसाहसी स्यान्नानाकलाकोमलबुद्धियोगैः ॥ ४ ॥

ग्यारहवें स्थानमें संपूर्ण ग्रह राज्यलाभदायक होते हैं। शुभग्रह हाथी घोडेका स्वामी और ईप्सावान् पुरुषको करते हैं। जो लाभभावमें सूर्य बैठे होयँ या लाभभावको देखते होयँ या षड्वर्ग लाभभावको देखते होयँ या षड्वर्ग लाभभावमें होय तो राजासे या चोरोंसे या कलहसे या चौपाये जीवोंसे धनका लाभ होय। जो लाभभावमें चन्द्रमा बैठा होय या दृष्टि होय षड्वर्ग चन्द्रमाका होय तो जलाशयसे उत्पन्न धन या स्त्रीपक्षके धनका लाभ होय, हाथी घोडा सवारीका लाभ होय जो पूर्णचन्द्रमा होय और जो क्षीणचन्द्रमा होय तो विपरीत फल अर्थात् इन चीजोंकी हानि जाने। यदि लाभभाव मंगल करके दृष्ट या युक्त होय तो उत्तम रत्न सुवर्णके आभूषणोंका लाभ करावे और साहसकर्म देशाटन और बुद्धिका प्रकाश कला शीलमें होय ॥ १–४ ॥

लाभे सौम्यगणाश्रिते सति युते सौम्ये च सद्वीक्षिते नानाकाव्य-कलाकलापविधिना शिल्पेन लिप्या सुखम् । युक्तिर्द्रव्यमया भवेद्धनचयः सत्साहसैरुद्यमैः सख्यं चापि वणिग्जनैर्बहुतरं क्लीबैर्नृणां कीर्तितम् ॥ ५ ॥ यज्ञक्रियासाधुजनानुयातो राजाश्रितोत्कृष्टकृपो नरः स्यात् । द्रव्येण हेमप्रचुरेण युक्तो लाभे गुरौ वर्गनिरीक्षणं चेत् ॥ ६ ॥ लाभालये भार्गववर्गयाते युक्तेक्षिते वा यदि भार्गवेण । वेश्याजनैर्वापि गमागमैर्वा सद्रोप्यमुक्ताप्रचुराऽस्य लब्धिः ॥ ७ ॥ लाभवेश्मनिरीक्षितियुक्ते तद्गुणेन सहिते सति पुंसाम् । नीललोहमहिषीगजलाभो ग्रामवृन्दपुरगौरवमिश्रम् ॥ ८ ॥ युक्तेक्षिते लाभगृहे सुखाख्ये वर्गे शुभानां समवस्थिते च । लाभो नराणां बहुधाथवाऽस्मिन् सर्वैर्ग्रहैर्युक्तनिरीक्ष्यमाणे ॥ ९ ॥

लाभ भावमें बुध बैठा हो अथवा देखता होय और शुभग्रहभी देखते होंय तो अनेक काव्योंकी रचनासे या कारीगरीसे या लिखनेसे सुख होय और धनका संचय साहससे अथवा अनेक उद्यमोंसे तथा वणिक् जनोंकी मित्रता करके या क्लीब जनोंकरके धनलाभ होय । लाभभावमें बृहस्पति बैठा होय या देखता होय या षड्वर्ग होय तो यज्ञकर्मसे साधुजनोंके संगसे या राजासे बहुत धन, सोना, चांदी और बहुत विशेष धनका हमेशा लाभ होता है। लाभभावमें शुक्र बैठे होयँ या दृष्टि होय या षड्वर्ग होय तो वेश्याजनोंसे या परदेश जाने आनेसे धन मोती आदिक बहुत लाभ होता है। शनैश्चर लाभभावमें बैठे या देखते होयँ या षड्वर्ग होय तो नीलके व्यापारसे या लोहसे अथवा भैंस हाथीके व्यापारसे लाभ होता है और बहुत ग्रामोंसे लाभ धनकी वृद्धि हमेशा रहै । सब ग्रह जो लाभभावको देखते होंय और लाभस्थानसे वा चतुर्थस्थानमें शुभग्रहोंकी युति या दृष्टि या षड्वर्ग होय तो निरन्तर लाभ हुआ करै ॥ ५-९ ॥ इति लाभभावः ॥

अथ व्ययभावः ।

कुशीलं च तथा काणं पापिनं दुःखिनं नरम् ।
महाव्ययं महादुष्टं व्ययभावादयो ग्रहाः ॥ १ ॥
व्ययालये क्षीणकरः कलानां सूर्योऽथवा द्वावपि तत्र संस्थौ ।
द्रव्यं हरेद्भूमिपतिस्तु तस्य व्ययालये बाहुजदृष्टियुक्ते ॥ २ ॥

पूर्णेन्दुसौम्येज्यासिता व्ययस्थाः कुर्वन्ति संस्थां धनसञ्चयस्य। प्रान्त्यस्थिते सूर्यसुते कुजेन युक्तेक्षिते वित्तविनाशनं स्यात्॥३॥

बारहवें भावमें कोई ग्रह स्थित हो तो वह कुशील, काना, पापी, दुःखी, बड़ा खर्चीला और दुष्ट होवै। व्ययभावमें क्षीणचन्द्रमा अथवा सूर्य या दोनों बैठे होयँ तो उसका धन राजा हरै और जो मंगलकी दृष्टि होय तौ भी राजा धन हरता है। जो पूर्ण चन्द्रमा, बृहस्पति, बुध, शुक्र ये बारहवें भावमें बैठे होंय तो उसका धन शुभ कार्योंमें खर्च होय, जो बारहवें शनि बैठे या मंगलभी बैठा होय तो धनका नाश करै॥ १-३ ॥ इति व्ययभावः॥

अथाग्रे शेषाः श्लोका लिख्यन्ते--

उच्चाभिलाषिग्रहयोगा जन्मकाले पतन्ति च। स नरो भूपपूज्यः स्याद्वंशस्य नृपतिर्भवेत् ॥ १ ॥ रवौ मीने शशी मेषे भौमे धनुष्युदाहृतम्। सिंहे बुधे गुरौ मिथुने शुक्रः कुंभे तथैव च ॥ २ ॥ कन्ये शनिः प्रकुर्वीत ह्युच्चाभिलाषी प्रकीर्त्तितः ॥ ३ ॥

जिसके जन्मसमय सम्पूर्ण ग्रह उच्चाभिलाषी राशियोंमें होकर बैठे वह मनुष्य राजपूज्य और अपने वंशका राजा होता है। सूर्य मीनराशिमें उच्चाभिलाषी होता है, चन्द्रमा मेषमें, मंगल धनमें, बुध सिंहमें, बृहस्पति मिथुनमें, शुक्र, कुंभमें, शनैश्चर कन्याराशिमें उच्चाभिलाषी कहा है ॥ १-३ ॥

अथ सबलनिर्बलग्रहपरिज्ञानम्।

उदितः स्वगृहस्थश्च मित्रगेहे स्थितोऽपि च। मित्रवर्गेण दृष्टश्च स ग्रहः सबलः स्मृतः ॥ १ ॥ स्वामिना बलिना दृष्टः सबलैश्च शुभैर्ग्रहैः। न दृष्टो न युतः पापैः स लग्नः सबलः स्मृतः ॥ २ ॥

जो ग्रह उदित हो अथवा अपने घरमें हो या मित्रके घरमें स्थित हो या मित्रवर्ग करके देखा गया हो वह ग्रह बलवान् जानना। जो भाव अपने बलवान् स्वामीके पूर्णदृष्टिसे देखाजाता हो और बलवान् शुभग्रहभी देखते हों तथा पापग्रह करके न युक्त और न दृष्ट हो वह भाव बलवान् कहना चाहिये॥ १ ॥ २ ॥

अथ सर्वग्रहाणां दृष्टिः।

ज्ञार्केन्दुशुक्रास्त्रिदशं त्रिकोणं तुर्योऽष्टमद्यूनमथांशवृद्ध्या। पश्यन्ति तुर्याष्टमसप्तमस्थं दश त्रिकोणं च गुरुः क्रमेण ॥१॥ त्रिकोणं

चतुरस्रं च सप्तमं त्रिदशं शनिः । अस्तं त्रिखं त्रिकोणं च चतुरस्रं क्रमात्कुजः ॥ २ ॥ विषमस्तं चतुरस्रं त्रिकोणं तदा पश्यति । वक्रदृष्टिं विजानीयाज्ज्योतिःशास्त्रविशारदः ॥ ३ ॥ आये व्यये न पश्यन्ति न पश्यन्ति द्वितीयके । मूर्तौ ग्रहा न पश्यन्ति षष्टिजात्यन्धको ग्रहः ॥ ४ ॥

बुध, सूर्य, चन्द्रमा और शुक्र अपने स्थानसे तीसरे दशवें नववें पांचवें चौथे आठवें सातवें स्थानको अंशवृद्धि करके देखते हैं अर्थात् तीसरे दशवें स्थानको एक चरणकरके, नववें पांचवें दो चरणकरके, चौथे आठवें तीन चरणकरके और सातवें चारों चरण अर्थात् पूर्ण दृष्टिसे देखते हैं और इसी क्रमसे बृहस्पति अपने स्थानसे चौथे, आठवें, सातवें, दशवें, तीसरे और नववें पांचवें, स्थानको देखता है। शनैश्चर अपने स्थानसे एक चरणकरके नववें पांचवें, दो चरणकरके, चौथे आठवें तीन चरणकरके, सातवें और पूर्ण दृष्टिकरके तीसरे दशवें स्थानको देखता है। मंगल एक चरणकरके सातवें, दो चरणकरके तीसरे दशवें, तीन चरणकरके नववें पांचवें और पूर्ण दृष्टि करके चौथे आठवें स्थानको देखता है। विषम सातवीं चौथी आठवीं नववीं पांचवीं दृष्टिको ज्योतिषशास्त्रके निपुण जनोंने वक्रदृष्टि कहा है। ग्यारहवें, बारहवें दूसरे लग्न छठे स्थानको ग्रह नहीं देखते हैं ये अन्धक ग्रह जानना चाहिये ॥ १-४ ॥

इति सर्वग्रहाणां दृष्टिः ॥

अथ जन्मपत्रिकानामानि ।

तिथिवारं च नक्षत्रं नामाक्षरसमान्वितम् । वेदेन हरते भागं शेषं नाम तदुच्यते ॥ १ ॥ व्योमा द्योमा च मूर्द्धा च पद्मा चैव चतुर्थकम् । जन्मपत्री यदा नाम यो जानाति स पण्डितः ॥ २ ॥ व्योमा च पितृहानिः स्याद् द्योमा मातृक्षयंकरी । मूर्द्धा ह्यायुष्करी ज्ञेया पद्मा बलप्रदायिनी ॥ ३ ॥

जन्मसमयकी तिथि और वार नक्षत्र और नामके अक्षर इन सबको एकत्र करके चारसे भाग लेय जो शेष रहे उससे जन्मपत्री नाम जाने। एक शेषसे व्योमा, दोसे द्योमा, तीसरे मूर्द्धा और चार अर्थात् शून्य० शेषसे पद्मा इन जन्मपत्रीके नामोंको जो जानता है वह पंडित है। व्योमा होय तो पिताकी हानि और द्योमासे माताका नाश होवै, मूर्द्धा होवै तो आयुर्दाय बढावे और पद्मा होवै तो बल देनेवाली जन्मपत्री कहै ॥ १-३ ॥ इति जन्मपत्रीनामानि ॥

अथ जन्मसमये शब्दज्ञानम् ।

शब्दो मेषे वृषे सिंहे मकरे च तथा तुले ।
अर्द्धशब्दो घटे कन्ये शेषाः शब्दविवर्जिताः ॥ १ ॥

जिस बालकके जन्मसमय मेष, वृष, सिंह, मकर तथा तुला लग्न होय अर्थात् इन लग्नोंमेंसे किसी लग्नमें होय तो वह पैदा होते ही रोता है और कुंभ तथा कन्या लग्न होय तो थोडा रोता है और शेष लग्न अर्थात् मिथुन, कर्क, वृश्चिक, धनु, मीन इनमेंसे कोई हो तो शब्दरहित अर्थात् बालक नहीं रोता है ॥ १ ॥ इति शब्दज्ञानम् ।

अथ नाल-ज्ञानम् ।

वामे सिंहे वृषे लग्ने वृश्चिके नालवेष्टितः ।
नृलग्ने दक्षिणे पार्श्वे स्त्रीलग्ने वामपार्श्वगः ॥ १ ॥

सिंह ५, वृष २, वृश्चिक ८ इनमें जन्म होय तो वामतरफ नाल लपटा जानै और पुरुषलग्नमें दक्षिणपार्श्वमें तथा स्त्रीसंज्ञक लग्नमें वामपार्श्वमें नाल कहना चाहिये । मेष-लग्न पुरुष, वृष स्त्री, मिथुन पुरुष इत्यादि ॥ १ ॥ इति नालज्ञानम् ।

लग्नतो जन्मादिज्ञानम् ।

शीर्षोदये विलग्ने मूर्द्धाप्रसवोऽन्यथोदये चरणौ । उभयोदये च हस्तौ शुभदृष्टः शोभनेऽन्यथा कष्टः ॥ १ ॥ सूर्यश्चतुष्पदस्थः शेषा द्विशरीरसंस्थिता बलिनः । केशैर्वेष्टितदेहौ यमलौ खलु सम्प्रसूयेते ॥ २ ॥ क्रूरग्रहसंधिगते शशिनि वृषे भौमसौरिसंदृष्टे । मूकः सौम्यै-र्दृष्टो वाचं कालान्तरे वदति ॥ ३ ॥ दक्षिणाङ्गे ग्रहाःसर्वे दीप्ता अस्त-मितेक्षणाः । तस्य त्रिंशत्तमे वर्षे गजो द्वारेऽवतिष्ठति ॥ ४ ॥ चतुः-सागरगे चन्द्रे कोणे चैव दिवाकरे । अपि दासकुले जातः सोऽपि राजा भविष्यति ॥ ५ ॥ त्रिभिःस्वस्थैर्भवेन्मंत्री त्रिभिरुच्चैर्नराधिपः । त्रिभिर्नीचैर्भवेद्दासस्त्रिभिरस्तङ्गतैर्जडः ॥ ६ ॥

जिस के जन्मसमय शीर्षोदय मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुंभ राशि लग्नमें होय तो उसको शिरकी तरफ पैदा हुआ कहे, अन्यथा पैरकी तरफसे जाने और मीन होय तो हाथकी तरफसे होना जाने । लग्नको शुभग्रह देखते होयँ तो पैदा होनेसे माताको कष्ट नहीं होता है और जो पापग्रह देखते होंय तो कष्ट कहना चाहिये सूर्य चतुष्पदराशिमें हो और शेष ग्रह मनुष्यराशिमें हों परंतु बलवान् होयँ तो एक

जेरसे लपटेहुए दो बालक पैदा होते हैं। जिसके क्रूरग्रह संधिमें अर्थात् नवम नवांशमें स्थित हों, चन्द्रमा वृषमें हो मंगल शनैश्चरकी दृष्टि होय तो वह बालक गूंगा होता है यदि शुभग्रह देखते हांय तो बहुत दिनोंके बाद बोलता है। जिसके जन्मपत्रके दाक्षिणांगमें दीप्त, अस्त सम्पूर्ण ग्रह स्थित हों तो तीस वर्षपर उसके द्वारमें हाथी बँधता है। चतुःसागरमें चन्द्रमा कोण ९। ५ में सूर्य जिसके स्थित हांय तो नीचकुलमें भी उत्पन्न हुआ राजा होता है। जिसके तीन ग्रह अपनी राशिमें स्थित हों वह मन्त्री होता है और तीन उच्चमें हों तो राजा होता है और तीन ग्रह नीचराशिमें हों तो दास होता है और तीन ग्रह अस्तको प्राप्त हों तो वह जड होता है ॥ १-६ ॥

अथ नवग्रहाणां पुरुषाकारचक्रम् ।

तत्रादौ सूर्यचक्रम् ।

लिखित्वा नरचक्रं च यत्र सूर्यो व्यवस्थितः । तन्नक्षत्रादिकं कृत्वा त्रयं दद्याच्च मस्तके ॥ १ ॥ वदने च त्रयं दद्यादेकैकं स्कन्धयोर्द्वयोः । बाहुद्वये तथैकैकं पाणौ चैकैकमेव च ॥ २ ॥ ऋक्षाणि हृदये पंच नाभौ स्यादेकमेव हि । ऋक्षं गुह्ये भवेदेकमेकैकं जानुनोर्द्वयोः ॥ ३ ॥ नक्षत्राणि षडन्यानि दद्यात्पादद्वये बुधः । पादस्थिते च नक्षत्रे निर्द्धनोऽल्पायुरेव च ॥ ४ ॥ विदेशगमनो जातो गुह्ये स्यात् पारदारिकः । अल्पतोषी भवेन्नाभौ हृदये चेश्वरस्तथा ॥ १-५ ॥

नरचक्र लिखके जिस नक्षत्रका सूर्य हो उस सहित तीन ३ नक्षत्र मस्तकपर धरै। मुखमें तीन ३ और दोनों स्कंधोंमें एक एक और दोनों भुजाओंमें एक एक तथा दोनों हाथोंमें भी एकही एक धरै और पैरोंमें एक एक धरै, पांच ५ नक्षत्र हृदयमें और तोंदीमें एक गुदामें एक दोनों गांठियोंमें भी एकही एक रक्खे। दोनों चरणोंमें छः नक्षत्र धरै। इस तरह सूर्यनक्षत्रसे जन्मके नक्षत्रतक गिन जावे। जो चरणोंमें जन्मका नक्षत्र पडै तो दरिद्र और थोडी आयुवाला हो। गाठियोंमें पडै तो विदेश गमन हो, गुदामें हो तो परस्त्रीगामी हो, तोंदीमें हो तो थोडेहीमें प्रसन्न हो, हृदयमें पडै तो समर्थ होता है ॥ १-५ ॥

तस्करः पाणियुग्मे च बाहौ स्थानच्युतो भवेत् । स्कन्धे गजस्कन्धगामी मुखे मिष्टान्नभोजनम् ॥ ६ ॥ मस्तकस्थे च नक्षत्रे पट्टबन्धो भवेन्नरः । सूयनक्षत्रतो जन्मनक्षत्रमिति गण्यते ॥ ७ ॥ शतवर्षाणि जीवेत शिरोजातो न संशयः । मुखेनाशीतिवर्षाणि स्कन्धाभ्यां च तथैव च ॥ ८ ॥ हस्ताभ्यां बाहुयुग्मेन जीवेत सप्तसप्ततिः ।

हृदये अष्टषष्टिश्च नाभौ चापि तथैव च ॥ ९ ॥ गुह्ये च षष्टिवर्षाणि चाष्टौ वर्षाणि जानुनि। पादयोः षट् च वर्षाणि रविचक्रे क्रमेण च १०

पाणिमें पडै तो चोर हो, बाहोंमें हो तो स्थान-च्युत होवै, स्कंधमें हो तो हाथीके कंधेमें चढनेवाला हो, मुखमें हो तो मीठा अन्न भोजन करनेवाला होता है। मस्तकमें पडे तो पट्टबंधी होता हैं। सूर्यके नक्षत्रसे जन्मके नक्षत्रतक गिनकर जाने। सूर्यचक्रमें जन्मका नक्षत्र मस्तकमें पडै तो सौ वर्ष जीवे, मुखमें पडे तो अस्सी वर्ष और स्कंधोंमें भी अस्सी ही वर्षकी उमर जाने। हाथोंमें अथवा दोनों बाहोंमें पडै तो सत्तर वर्ष, हृदयमें तथा नाभिमें पडै तो अडसठ वर्षकी आयु होवे। गुदामें पडै तो साठ वर्ष, जंघाओंमें आठ वर्ष और पैरोंमें पडे तो छः वर्ष जीवै। इस प्रकार सूर्यचक्रसे आयुर्दाय विचार करना चाहिये ॥ ६-१० ॥ इति सूर्यचक्रम् ॥

अथ चन्द्रचक्रम्।

पूर्णिमायां तु ऋक्षं यह तदादौ त्रीणि मस्तके। मुखे त्रीणि भुजे षट्कं हृदि त्रीण्युदरे त्रयम् ॥ १ ॥ गुह्ये त्रीणि पदे षट्कं न्यसेच्चन्द्रस्य सर्वदा। यावत्स्वजन्मनक्षत्रं गणनीयमिति क्रमात् ॥ २ ॥ अर्थसिद्धिर्न वृत्तश्रीः कुशलश्चाद्भुतं शुभम्। मार्गमृत्युं श्रियं क्षेममिति चन्द्रफलं वदेत् ॥ ३ ॥

निकट पूर्णिमाको जो नक्षत्र होय उस सहित तीन नक्षत्र शिरमें स्थापित करै फिर मुखमें तीन, भुजामें छः हृदयमें तीन और उदर (पेट) में तीन रक्खै। गुदामें तीन और पैरोंमें छः नक्षत्र धरे। जिस स्थानमें जन्मनक्षत्र होय तहां तक गिन जावे। अर्थसिद्धि, लक्ष्मी, कुशल, अद्भुतशुभ, मार्गमें मृत्यु, श्री, क्षेम यह फल क्रमसे पूर्वोक्त स्थानोंमें जाने. यथा शिरमें पडै तो अर्थसिद्धि, मुखमें जन्मनक्षत्र पडै तो लक्ष्मीवान् होय इत्यादि ॥ १-३ ॥ इति चन्द्रचक्रम् ॥

अथ भौमचक्रम्।

यस्मिन्नृक्षे भवेद्भौमस्तदादौ त्रीणि मस्तके। मुखे त्रीणि त्रयं नेत्रे कण्ठे द्वे च चतुष्करे ॥ १ ॥ पश्चोदरे त्रीणि गुह्ये पादे चत्वारि दापयेत्। जन्मऋक्षं स्थितं यत्र फलं तत्र वदेत्पुमान् ॥ २ ॥ मुखे रोगं सुखं नेत्रे शिरो राज्यं रुजा करे। कण्ठे रोगी धनी वक्षे गुह्ये भोगी पदे भ्रमः ॥ ३ ॥

जिस नक्षत्रपर मंगल हो उसको आदि देकर तीन नक्षत्र मस्तकमें धरे । मुखमें तीन ३, नेत्रोंमें तीन ३, कंठमें दो २, हाथोंमें चार ४, उदरमें पांच ५, गुदामें तीन ३, और पैरोंमें चार ४ नक्षत्र स्थापित करै जिस जगह जन्म नक्षत्र पडै तिसका फल कहै । मुखमें पडै तो रोग, नेत्रमें सुख, शिरमें पडै तो राज्य, हाथोंमें रोग, कंठमें पडै तो रोगी, छातीमें पडै तो धनी, गुदामें पडै तो भोगी और पैरोंमें जन्मनक्षत्र पडै तो परदेशमें भ्रमण करनेवाला होता है ॥ १-३ ॥ इति भौमचक्रम् ॥

अथ बुधचक्रम् ।

यस्मिन्नृक्षे भवेत्सौम्यस्तदादौ मस्तके चतुः । मुखे त्रीणि चतुर्वामे करे दक्षिणके चतुः ॥ १ ॥ हृदि पञ्चैकं गुह्यैकं त्रीणि द्वे पदे विन्यसेत् । जन्मऋक्षं स्थितं यत्र फलं तत्र वदेत् पुमान् ॥ २ ॥ मुखेष्टभुक्शिरो राज्यं कष्टं वामकरे तथा । वक्षे याम्यकरे सौख्यं गुह्ये रोगी पदे भ्रमः ॥ ३ ॥

बुध जिस नक्षत्रमें हो तिसको आदि देकर शिरमें चार, मुखमें तीन, बायें हाथमें चार, दाहिने हाथमें चार, हृदयमें छः, गुदामें चार और पैरोंमें दो नक्षत्र स्थापित कर जन्मनक्षत्र जहाँ पडै तिसका फल चिंतन करना । मुखमें जन्मनक्षत्र पडै तो श्रेष्ठ पदार्थोंका भोग करनेवाला, शिरमें राज्य, वामहाथमें कष्ट, दाहिने हाथमें सौख्य, गुदामें रोगी और पैरोंमें पडै तो भ्रमण करनेवाला होवै ॥ १-३ ॥ इति बुधचक्रम् ॥

अथ गुरुचक्रम् ।

शीर्षे चत्वारि राज्यं युगपरिगणितं स्कन्धयुग्मे च लक्ष्मी-
रेकं कण्ठे विभूतिर्मदनपरिमितं वक्षसि प्रीतिलाभम् ।
षड्भिः पीडांघ्रियुग्मे जलधिपरिमितं वामहस्ते च मृत्यु-
र्दृग्युग्मे त्रीणि कुर्यान्नृपतिसमसुखं वाक्पतेश्चक्रमेतत् ॥ १ ॥

बृहस्पति जिस नक्षत्रमें हो तिसको आदि देके मस्तकमें चार राज्यको देनेवाले हैं, फिर चार दोनों स्कंधोंमें लक्ष्मीके देनेवाले हैं, कंठमें एक ऐश्वर्यका देनेवाला है फिर हृदयमें पांच प्रीतिके देनेवाले हैं, दोनों चरणोंमें छः पीडाको देनेवाले हैं, फिर चार ४ बायें हाथमें मृत्युको देनेवाले हैं, दोनों नेत्रोंमें तीन राजाकी बराबर सुख देनेवाले हैं ॥ १ ॥ इति गुरुचक्रम् ॥

अथ भृगुचक्रम्।

यस्मिन्नृक्षे भवेच्छुक्रस्तदादौ च चतुः शिरे। कण्ठे च हृदये पञ्च त्रि गुह्ये पञ्च जङ्घयोः॥ १॥ त्रीणि द्वे च पदे दद्यात्फलं जन्मर्क्षं यावतः। शिरो राज्यं धनं कण्ठे हृदये सौख्यमेव च॥ २॥ शत्रुभीतिर्भवेद्गुह्ये जङ्घायां मिष्टभोजनम्। पादे च सुखसंप्राप्तिः शुक्रचक्रे क्रमेण च॥ ३॥

जिस नक्षत्रमें शुक्र होय तिसको आदि देकर चार नक्षत्र शिरमें स्थापित करै. कंठमें पांच, हृदयमें तीन, मुखमें दो, बाहोंमें सात, गुदामें तीन, जंघाओंमें तीन, पादोंमें दो इस प्रकार जन्मनक्षत्रतक गणना करै. शिरमें पडे तो राज्य, कंठमें धनवान्, हृदयमें सौख्य,गुदामें शत्रुभय और जंघाओंमें पडै तो मीठा अन्न भोजन करनेवाला,पादमें सुखप्राप्ति होवै इस क्रमसे शुक्रचक्र जानना॥ १-३॥ इति शुक्रचक्रम्॥

अथ शनिचक्रम्।

शनिचक्रं नराकारं लिखित्वा सौरिभादितः। नामऋक्षं भवेद्यत्र ज्ञेयं तत्र शुभाशुभम्॥ १॥ नक्षत्रमेकं च शिरोविभागे तथा मुखे त्रीणि युगं च गुह्ये। नेत्रे च नक्षत्रयुगं हृदिस्थं भूपञ्चकं वामकरे चतुष्कम्॥ २॥ वामे च पादे त्रितयं च भानां भानां त्रयं दक्षिणपादसंस्थम्। चत्वारि ऋक्षाणि च दक्षिणेतरे पाणौ प्रणीतं मुनिनारदेन॥ ३॥ रोगो लाभो हानिरातिश्च सौख्यं बन्धः पीडा सत्प्रयाणं च लाभः। मान्दे चक्रे मार्गगे कल्पनीयं तद्वैलोम्याच्छीघ्रगे स्यात्फलानि॥ ४॥

जिस नक्षत्रमें शनैश्वर स्थित हो उसको आदि देकर नराकार चक्र लिखे। जहां नामका नक्षत्र पडे उसका शुभाशुभ फल कहै। एक नक्षत्र शिरमें स्थापित करै और तीन मुखमें और चार नक्षत्र गुदामें, दो नेत्रोंमें, हृदयमें तीन, बायें हाथमें चार स्थापित करै। बायें चरणमें तीन और दक्षिणचरणमें तीन और दाहिने हाथमें चार स्थापित करै। यह चक्र इस प्रकार नारदमुनिने कहा है। जो शनिनक्षत्र शिरमें पडे तौ वह पुरुष रोगी रहे और जो मुखमें पडे तो लाभ होय, गुदामें पडे तो हानि होय, नेत्रमें पडे तो धनकी प्राप्ति होय और जो हृदयमें पडै तो सुखी होय और जो बायें हाथमें पडै तो बंधन होय और जो बायें चरणमें पडै तो पीडा होय और जो दक्षिण चरणमें पडै तो श्रेष्ठ यात्रा होय और दक्षिण हस्तमें पडै तो लाभ होय॥ १-४॥

अथापरः प्रकारः ।

यस्मिन्भ्च्छनिश्चराति वक्रगतं तदृक्षं चत्वारि दक्षिणकरेऽङ्घ्रियुगे च षट्कम् । चत्वारि वामकरणेऽप्युदरे च पञ्च मूर्ध्नि त्रयं नयनयोर्द्वितयं गुदे च ॥ १ ॥ रोगो लाभस्तदा द्रव्यं लाभो बन्धनमेव च । पूजा च जनसौभाग्यमल्पमृत्युः क्रमात्फलम् ॥ २ ॥

जिस नक्षत्रमें शनैश्चर हो उस नक्षत्रसे उलटे चार दाहिने हाथमें, दोनों चरणोंमें छः, चार नक्षत्र वामकरणमें, पेटमें पांच, मस्तकमें तीन, नयनों वा गुदामें दो दो स्थापित करै तौ स्पष्टचक्र होता है । रोग, लाभ, धन, लाभ, बंधन, पूजा, सौभाग्य, अल्पमृत्यु क्रमसे पूर्वोक्त स्थानोंमें फल विचारना चाहिये अर्थात् दाहिने हाथोंमें पडै तो रोग और चरणोंमें पडे तो लाभ इत्यादि ॥ १ ॥ २ ॥ इति शनिचक्रम् ॥

अथ राहुचक्रम् ।

यस्मिन्नृक्षे भवेद्राहुस्तदादौ सप्त पादयोः । दक्षिणे च भुजे पञ्च शिरसि त्रीणि दापयेत् ॥ १ ॥ द्वे ऋक्षे हृदये न्यस्य मुखे चैकं नियोजयेत् । पञ्च ऋक्षं करे ज्ञेयं ऋक्षमेकं च नाभिगम् ॥ २ ॥ तत्रैव त्रीणि गुह्ये च राहुचक्रं विधीयते । धनहानिर्भवेत्पादे संतापं दक्षिणे करे । शीर्षे शत्रुभयं विद्याद्धृदये दुर्जनप्रियम् ॥ ३ ॥ मुखे दुर्जनसंहारं मृत्युर्वामे करे भवेत् । नाभिस्थं सर्वनाशाय गुह्ये प्राणविनाशनम् ॥ ४ ॥

जिस नक्षत्रमें राहु होय तिसको आदि देकर सात नक्षत्र पावोंमें स्थापित कर दक्षिणभुजामें पांच ५, शिरमें तीन ३ धरै । दो नक्षत्र हृदयमें, मुखमें एक, पांच नक्षत्र वामहाथमें और एक १ तोंदीमें रक्खै । गुदामें तीन नक्षत्र स्थापित कर राहुचक्र बनावे. पावोंमें जन्मनक्षत्र पडै तो धनहानि होवै. दक्षिणभुजामें पडै तो संताप हो. मस्तकमें पड़ै तो शत्रुभय हो और हृदयमें पडै तो दुर्जनप्रिय होवे । मुखमें पडै तो दुर्जनोंका नाश और बायें हाथमें पडै तो मृत्यु हो, तोंदीमें पडै तो सर्वनाश हो और गुदामें जन्मनक्षत्र पडै तो प्राणोंको नाश करै ॥ १-४ ॥ इति राहुचक्रम् ॥

अथ केतुचक्रम् ।

शीर्षे पञ्च द्वे मुखे पञ्च कर्णे वक्षे च द्वौ वेदऋक्षं च हस्ते ।
अंघ्रौ पंच बस्ति चत्वारि ज्ञेयं केतोश्चक्रं प्रोदितं बुद्धिमद्भिः ॥ १ ॥

मुखे भयं मूर्ध्नि जयं करोति कर्णे भयं पाणियुगे च सौख्यम्।
पादे सुखं वक्षसि शोकमेव गुह्ये भ्रमं दुःखविकारहेतुः ॥ २ ॥

जिस नक्षत्रमें केतु होय उस सहित पांच नक्षत्र मस्तकमें स्थापित करै. मुखमें दो २, कर्णमें पांच ५, हृदयमें दो २, हाथमें चार ४, अंघ्रिमें पांच ५, बस्तिमें चार नक्षत्र धरै। इस प्रकार बुद्धिमान् जन केतुचक्र कहते हैं। मुखमें जन्म नक्षत्र पडै तो भय होवै, मस्तकमें जय, कर्णमें भय, दोनों हाथोंमें सौख्य, पादमें सुख, हृदयमें शोक और गुदामें जन्मनक्षत्र पडै तो भय और दुःखविकारका हेतु जानना ॥१॥२॥

इति पुरुषाकारनवग्रहचक्रम् ॥

अथ नवप्रकारकग्रहफलम्।

दीप्तः १ स्वस्थो२ मुदितः३ शान्तः ४ शक्तः ५ प्रपीडितो ६ दीनः ७।
विकलः ८ खलश्च ९ कथितो नवप्रकारो ग्रहो हरिणा ॥ १ ॥
दीप्तस्तुङ्गगतः खगो निजगृहे स्वस्थो हिते हर्षितः
शान्तः शोभनवर्गगश्च खचरः शक्तः स्फुरद्रश्मिभाक्।
लुप्तः स्याद्विकलः स्वनीचगृहगो दीनः खलः पापयुक्
खेटो यः परिपीडितश्च खचरैः स प्रोच्यते पीडितः ॥ २ ॥

दीप्त १, स्वस्थ २, मुदित ३, शांत ४, शक्त, पीडित ६, दीन ७, विकल ८ और खल ९ ये अवस्था नवप्रकारसे ग्रहोंकी कही गई हैं। जो ग्रह अपने उच्चराशिमें बैठा है उसकी अवस्था दीप्ता है और जो ग्रह अपने घरमें बैठा है उसकी अवस्था स्वस्था है अर्थात् सावधान है और जो मित्रके घरमें हैं वे हर्षित हैं और जो शुभग्रहके षड्वर्गमें हों उनकी शांत अवस्था जानिये और जो उदयको प्राप्त है अर्थात् अस्त नहीं है वह शक्तावस्थामें है और जो अपने नीचराशिमें है अथवा सूर्यके किरणोंमें अस्त होगया है वह दीन है अर्थात् दुःखित है और जो पापग्रहके साथ बैठा है वह खल है और जो पापग्रहोंसे पीडित है वह पीडितावस्थामें है ॥ १॥ २॥

अथ अवस्थाफलम्।

दीप्ते प्रतापादतितापितारिर्गलन्मदालंकृतकुञ्जरेशः। नरो भवेत्त-
न्निलये सलीलं पद्मालयालङ्कुरुते विलासम् ॥ ३ ॥ स्वस्थे महद्वाहन-
धान्यरत्नविशालशालाबहुलेन युक्तः। सेनापतिः स्यान्मनुजो महोजा
वैरिव्रजावाप्तजयाधिशाली ॥ ४॥ हर्षिते भवति कामिनीजनोऽत्यंत-

भूषणमाणिव्रजवित्तः । धर्मकर्मकरणैकमानसो मानसोद्भवचयो हत-शत्रुः ॥ ५ ॥ शान्तेऽतिशान्तो हि महीपतीनां मन्त्री स्वतन्त्रो बहु-मित्रपुत्रः । शास्त्राधिकारी सुतरां नरः स्यात्परोपकारी सुकृतैक-चित्तः ॥ ६ ॥ शक्तेऽतिशक्तः पुरुषो विशेषात्सुगन्धमाल्याभिरुचिः शुचिश्च । विख्यातकीर्तिः सुजनः प्रसन्नो जनोपकर्ताऽरिजनप्रहर्ता॥७॥

जो ग्रह दीप्तावस्थामें है उसका फल बडा श्रेष्ठ और बहुत प्रतापयुक्त, हाथियोंके समूह उसके साथ चलते हैं, धनी पुरुष और शत्रुजनोंका जीतनेवाला और विख्यात कीर्तिवाला होता है और उसके घर लक्ष्मी निरन्तर निवास करती है। जिसके जन्मकालमें ग्रह स्वस्थावस्थामें है वह पुरुष बहुत वाहनोंसे सुख पानेवाला और बडे उत्तम स्थानमें निवास करनेवाला और धन धान्ययुक्त और बहुत सेनाका स्वामी और शत्रुजनोंका विजय करनेवाला होता है । जिसका ग्रह हर्षितावस्थामें होता है वह मनुष्य स्त्रीजनोंसे बहुत सुख भोग विलास करनेवाला, रत्नादिभूषणका धारण करनेवाला, बडा धनवान्, उत्तम कीर्ति करनेवाला, धर्ममें नियुक्त और शत्रुकरके हीन होता है। जिसका ग्रह शान्तावस्थामें बैठा है वह अधिक शांतियुक्त, राजाओंका मंत्री, स्वतंत्र, बहुत मित्र पुत्रोंसमेत सुखी प्रसन्नचित्त शास्त्रोंका पढनेवाला, निरन्तर विद्याका अभ्यास करनेवाला और परोपकारी तथा सावधान चित्तवाला होता है । जिसका ग्रह शक्तावस्थामें बैठा हो वह विशेषकर सब कार्योंके करनेमें समर्थ होता है और सुंगधमाल्यादिकोंमें अभिरुचि रखनेवाला, पवित्र आत्मा, विख्यातकीर्ति, सुजनोंमें प्रसन्न होनेवाला तथा जनोंका उपकार करनेवाला वा शत्रुजनोंका मारनेवाला होता है ॥ ३-७ ॥

हतबलो विकले मलिनः सदा रिपुकुलप्रबलत्वगलन्मतिः । खल-सखः स्थलसंचरतो नरः कृशतरः परकार्यगतादरः ॥ ८ ॥ दीनेति दीनोपचयेन तप्तः संप्राप्तभूमीपतिशत्रुभीतिः । संत्यक्तनीतिः खलु हीनकान्तिः स्वजातिवैरं हि नरः प्रयाति ॥ ९ ॥ खलाभिधाने हि खलैः कलिः स्यात्कान्तातिचिन्तापरितप्तचित्तः । विदेशयानं धन-हीनतान्तःकोऽपि भवेल्लुब्धमतिप्रकाशः ॥ १० ॥ पीडिते भवति पीडितः सदा व्याधिभिर्व्यसनतोऽपि नितान्तम् । याति संचलनतां निजस्थलाद्व्याकुलत्वमपि बन्धुचिन्तया ॥ ११ ॥

जिसका ग्रह विकलावस्थामें बैठा होय वह निर्बल, मलिन, सदा शत्रुजनोंसे पीडित निर्बुद्धि, नीचोंका संग करनेवाला, परदेशमें वसनेवाला व बहुत दुर्बल और पराये कार्यका करनेवाला होता है। जिसका ग्रह दीनावस्थामें बैठा हो वह दीन और राजासे पीडित वा शत्रुओंसे भयभीत, नीतिरहित, हीनकांति होकर अपने जनोंसे वैरका करनेवाला होता है। जिसका ग्रह खलावस्थामें बैठा हो वह खलोंसे लडाई करनेवाला, स्त्रीसे दुःखी, चिंतासे व्याकुल, द्रव्यकी इच्छा करताहुवा परदेशमें भ्रमण करनेवाला, धनहीन होकर क्रोध करताहुवा निर्बुद्धिवाला होता है। जिसका ग्रह पीडितावस्थामें बैठा हो वह सदा व्याधियोंसे पीडित होताहुआ निर्वस्त्र होकर परदेशको जाता है और अपने बंधुओंकी चिंतासे व्याकुल आत्मा होता है॥ ८-११॥

इति दीप्तादिनवावस्थाफलम्॥

अथ गजचक्रम्।

येन विज्ञानमात्रेण यात्रा युद्धे जयो भवेत्॥ १॥ गजाकारं लिखेच्चक्रं सर्वावयवसंयुतम्। अष्टाविंशतिऋक्षाणि देयानि सृष्टिमार्गतः॥ २॥ मुखे शुण्डाग्रे नेत्रे च कर्णशीर्षांघ्रिपुच्छके। द्विकं द्विकं च दातव्यं पृष्ठोदरे चतुश्चतुः॥ ३॥ द्विरदव्ययभान्यादौ वदनाद्गण्यते बुधैः। यत्र ऋक्षे स्थितः सौरिर्ज्ञेयं तत्र शुभाशुभम्॥ ४॥

अब मातंगनायकके चक्रको कहता हूं जिसके विचारकरके यात्रा और युद्धमें जय प्राप्ति होती है। संपूर्ण अंगोंकरके संयुक्त हाथीके आकारका चक्र लिखे। फिर सृष्टि मार्गकरके अट्ठाईस नक्षत्र स्थापित करे। मुखमें, शुंडाग्रमें, आंखोंमें, कानमें, मस्तकमें, अंघ्रि (चरण) में और पूछमें दो दो नक्षत्र स्थापित करे, पीठ और पेटमें चार चार। पंडितजन अश्विनी आदि प्रथम बारह नक्षत्र मुखसे गणना करे, जहां जिस नक्षत्रमें शनैश्चर स्थित हो उसका शुभाशुभ फल कहे॥ १-४॥

मुखे शुण्डाग्रे नेत्रे च सौरिभं मस्तकोदरे। युद्धकाले गते यस्य जयस्तस्य न संशयः॥ ५॥ पृष्ठे पादे च पुच्छे च कर्णसंस्थे शनैश्चरे। मृत्युर्भङ्गो रणे तस्य ऐरावतसमो यदि॥ ६॥ एतेषां दुष्टभङ्गानां तत्कालः संस्थितः शनिः। तत्काले पट्टबन्धोऽपि वर्जनीयः प्रयत्नतः॥ ७॥ पृथिव्या भूषणं मेरुः शर्वर्या भूषणं शशी। नराणां भूषणं विद्या सैन्यानां भूषणं गजः॥ ८॥

मुखमें, शूंडके अगले भागमें, नेत्रमें, मस्तकमें तथा पेटमें यदि शनैश्चरका नक्षत्र पडैगा ऐसे समय युद्धमें उसकी जय होती है और पीठमें, पैरोंमें, पुच्छमें अथवा कानमें शनैश्चरका नक्षत्र स्थित होवे तो ऐरावतके समान होनेपर भी उसकी मृत्यु और रणमें भंग होवे । ये दुष्टभंगस्थान शनैश्चर स्थितिके मनुष्य पट्टबंध होनेपर भी शीघ्रही यत्न करके यात्रादिमें वर्जित करै । पृथ्वीका आभूषण सुमेरु पर्वत है, रात्रिका आभूषण चन्द्रमा है, मनुष्योंका आभूषण विद्या है, इसी प्रकार सेनाका आभूषण हाथी है ॥ ९–८ ॥ इति गजचक्रम् ॥

अथ अश्वचक्रम् ।

अश्वाकारं लिखेच्चक्रमश्वधिष्ण्यादितारकाः । वदनात्सृष्टिगा देया अष्टाविंशतिसंख्यया ॥ १ ॥ मुखाक्षिकर्णशीर्षेषु पुच्छांघ्री युग्मसंख्यया । पञ्चपञ्चोदरे पृष्ठे सौरिर्यत्र फलं ततः ॥ २ ॥ मुखाक्षिकर्णशीर्षस्थो यदा सौरिस्तुरङ्गमे । तदाऽरिर्भङ्गमायाति रणे शत्रुर्वशं गतः ॥ ३ ॥ कर्णांघ्रिपृष्ठे पुच्छस्थे अश्वाङ्गेष्वर्कनन्दने । विभ्रमं भङ्गहानिं च कुरुतेऽसौ महाहवे ॥ ४ ॥ एतत्स्थानस्थितः सौरिः सदा काले हयस्य च । पट्टबन्धे गमे युद्धे वर्जयेत्तं हयं नृपः ॥ ५ ॥ देशान्तरास्थितः सौरी रिपवः सन्ति शङ्किताः । तुरङ्गा यस्य भूपस्य विचरन्ति महीतले ॥ ६ ॥

अश्वाकार चक्र लिखकर अश्विनी आदि अट्ठाईस नक्षत्र सृष्टिमार्गकरके स्थापित करै । मुख, नेत्र, कर्ण, मस्तक, पूंछ, अंघ्रि इनमें दो दो नक्षत्र धरै । उदर और पीठमें पांच पांच स्थापित करै, फिर जहां शनैश्चर स्थित हो तिसका फल कहै । मुखमें नेत्रमें कर्णमें मस्तकमें यदि शनैश्चर अश्वचक्रमें स्थित हो तो युद्धमें शत्रुका भंग होकर शत्रु वशमें आजावे और कर्णमें अंघ्रिमें पीठमें पूंछमें शनैश्चर हो तो युद्धमें विभ्रम भंग हानि करे । अश्वचक्रमें इन स्थानोंमें स्थित शनैश्चर पट्टबंधमें यात्रामें युद्धमें वर्जित करना चाहिये । तुरंगचक्रमें अन्यत्र शनैश्चर जिस राजाके स्थित हो उसके शत्रुजन शंकासहित पृथ्वीपर विचरते हैं ॥ १–६ ॥ इत्यश्वचक्रम् ॥

अथ शतपदचक्रम् ।

चक्रं शतपदं वक्ष्ये ऋक्षांशाक्षरसंभवम् । नामादिवर्णतो ज्ञेयमृक्षराश्यंशकं तथा ॥ १ ॥ तिर्यगूर्ध्वगता रेखा रुद्रसंख्या लिखेद्बुधः ।

अ	ब	क	ह	ड	मो	मे	मु	मौ	ग
इ	वि	कि	हि	डि	टो	टे	टु	टी	ट
उ	वु	कु	हु	डू	पो	षे	षु	प	प
ए	वे	के	हे	डे	रो	रे	रु	रा	र
ओ	वो	को	हो	डो	तो	ते	तू	ती	त
ल	लि	लू	ले	लो	वो	जो	भो	यो	नो
च	चि	चू	चे	चो	मे	जे	भ	ये	ने
द	दि	दू	दे	दो	शु	जु	भु	यु	नु
श	शि	शू	शे	शो	मि	[illegible]	भि	यि	यु
ग	गि	गू	गे	गो	प	ज	भ	य	न

जायते कोष्ठकं तत्र शतमेकं न संशयः ॥ २ ॥ न्यस्यावकहडादीनि रुद्रादिविदिशः क्रमात् । पञ्चपञ्च क्रमेणैव विंशद्वर्णान्प्रयोजयेत् ॥ ३ ॥ पञ्चस्वरसमायोग एकैकं पञ्चधा कुरु । कुर्यात्कुपुमृदुस्थानि त्रीणि त्रीण्यक्षराणि च ॥ ४ ॥ कुघङव भवेत्स्तंभो रौद्रईशानगोचरे । पुषणठ भवेत्स्तंभो हस्तमाग्नेयसंज्ञके ॥ ५ ॥ भधफढ भवेत्पूर्वं दुघडज उत्तरातले । एवं स्तम्भचतुष्कं च ज्ञातव्यं स्वरवेदिभिः ॥ ६ ॥ धिष्ण्यानि कृत्तिकादीनि प्रत्येकं चतुरक्षरैः । साभिजित्पञ्चशस्तस्य शतकं द्वादशाधिकम् ॥ ७ ॥ यदृक्षांशककोष्ठस्थः क्रूरः सौम्योऽपि वा ग्रहः । यतस्तद्वर्जयेन्नित्यं पुंसो नामाद्यमक्षरम् ॥ ८ ॥

शतपदचक्र बनानेका क्रम चक्रसे स्पष्ट समझ लेना, फिर नामके अक्षरसे वेध विचारना ॥ १-८ ॥

सौम्यैर्विद्धे शुभं ज्ञेयमशुभं पापखेचरैः ।
मिश्रैर्मिश्रफलं तत्र निर्वेधेन शुभाशुभम् ॥ ९ ॥
यदुक्तं सर्वतोभद्रं ग्रहोपग्रहवेधतः ।
शुभाशुभफलं सर्वं तदिहापि विचिन्तयेत् ॥ १० ॥

शुभग्रहसे नामादि अक्षरका वेध होय तो शुभ जानना और पापग्रहोंके वेधसे अशुभ और मिश्र अर्थात् शुभग्रह और पापग्रह दोनोंका वेध होय तो मिश्रफल जानना. यदि वेध न होय तो शुभाशुभफल चिंतन करना जैसा सर्वतोभद्रचक्रमें उपग्रहके वेधसे शुभाशुभ फल कहा है, वैसाही इस चक्रमें भी वेधका फल विचार करना ॥ ९ ॥ १० ॥ इति शतपदचक्रम् ॥

अथ सूर्यकालानलचक्रम् ।

सूर्यकालानलं चक्रं स्वरशास्त्रोदितं महत् । तदहं विशदं वक्ष्ये चमत्कृतिकरं परम् ॥ १ ॥ त्रिशूलकाग्राः सरलाश्च तिस्रः कीलोर्ध्व-रेखाः परिकल्पनीयाः । रेखात्रयं मध्यगतं च तत्र द्वे द्वे च कोणोपरिगे विधेये॥२॥त्रिशूलकोणान्तरगान्यरेखा तदग्रयोः शृङ्गयुगं विधेयम् । मध्यं त्रिशूलस्य च दण्डमूलात्सव्येन भान्यर्कभतोऽभिजिच्च ॥ ३ ॥

सूर्यकालानलचक्र जो स्वरशास्त्रमें कहा है उसको हम कहते हैं बडा चमत्कारी फलका देनेवाला है । तीन रेखा खडी खींचे तिनमें एकएक रेखामें एकएक त्रिशूल बनावे और तीन रेखा उत्तरसे दक्षिण तरफ आडी बनावे और दो दो रेखा उन कोणोंमें बनावे । त्रिशूल और कोणोंके बीचमें शृंग बनावे, दहिने बायें तरफ मध्य त्रिशूलके दंडके नीचे जिस नक्षत्रपर सूर्य होय उस नक्षत्रको वहां स्थापित करै, वाममार्गसे अभिजितसहित अट्ठाईसों नक्षत्र स्थापित करै ॥ १-३ ॥

स्वनामभं यत्र गतं च तत्र प्रकल्पनीयं सदसत्फलं हि । तत्तस्य ऋक्षत्रितये क्रमेण चिन्ता वधश्च प्रतिबन्धनानि ॥ ४ ॥ शृङ्गद्वये रुक् च भवेच्च भङ्गः शूलेषु मृत्युं परिकल्पयन्ति । शेषेषु धिष्ण्येषु जयश्च लाभोऽभीष्टार्थसिद्धिर्विविधा नराणाम् ॥ ५ ॥

अपने नामका नक्षत्र जहांपर पडै तिसका शुभाशुभ फल जान ले । नीचेके तीनों नक्षत्रोंका फल चिंता वध और बंधन होता है । दोनों शृंगके नक्षत्रोंका फल रोग है और भंग है और जो त्रिशूलके ऊपर नव नक्षत्र हैं तिनका फल मृत्यु है और जो छः नक्षत्र मध्यके हैं उनका फल जय, लाभ और अभीष्टसिद्धि है ॥ ४ ॥ ५ ॥

श्रीसूर्यकालानलचक्रमेतद्द्वन्द्वे च वादे च रणे प्रयाणे । प्रयत्नपूर्वं परिचिन्तनीयं पुरातनानां वचनं प्रमाणम् ॥ ६ ॥ रवेर्वेधे मनस्तापो द्रव्यहानिश्च भूसुते । रोगपीडाकरो मन्दो राहुः केतुश्च मृत्युदः॥७॥ गुरोर्वेधे भवेल्लाभो रत्नलाभश्च भार्गवे । स्त्रीलाभश्चन्द्रवेधे च सुखं स्याद्बुधवेधतः ॥ ८ ॥ जन्मराशेश्च वेधेन फलमेतत्प्रकीर्तितम् ॥९

यह सूर्यकालानलचक्र रोगमें, विवादमें, संग्राममें और यात्रामें विचारने योग्य है । सूर्यके वेधसे मनको ताप हो, मंगलसे द्रव्यकी हानि हो, शनैश्चरके वेधसे रोग और पीडा हो, राहु केतुके वेधसे मृत्यु हो । बृहस्पतिके वेधसे लाभ, शुक्रके

वेधसे रत्नका लाभ, चन्द्रमाके वेधसे स्त्रीलाभ और बुधके वेधसे सुख होता है। जन्म राशिके वेधसे यह फल कहागया है ॥ ६-९॥ इति सूर्यकालानलचक्रम् ॥

चन्द्रकालानलचक्रम्।

चन्द्रकालानलं चक्रं व्योमाकारं लिखेद्बुधः। चतुर्दिक्षु त्रिशूलानि मध्ये त्र्यस्राणि कारयेत् ॥ १ ॥ पूर्वं त्रिशूलमध्यस्थं दिवसर्क्षं समालिखेत्। त्रिशूले च बहिर्मध्ये मध्ये बाहिस्त्रिशूलके ॥ २ ॥ नामर्क्षं च स्थितं यत्र ज्ञेयं तत्र शुभाशुभम् ॥ ३॥ त्रिशूले च भवेन्मृत्युर्मध्यमं बहिरष्टके। आयुः प्रजा जयो लाभश्चन्द्रगर्भे न संशयः॥४॥

चन्द्रकालानलचक्र व्योमाकार बनाकर चारों दिशाओंमें त्रिशूल लिखे और मध्यवर्ती दोनों रेखा कोणमें लिखे आग्नेयसे वायव्यतक और नैऋत्यसे ईशानतक। पूर्वको त्रिशूलके मध्यमें दिनका नक्षत्र अर्थात् चन्द्रमाका नक्षत्र स्थापित करै फिर त्रिशूलके बाहर मध्य बाहर और मध्य त्रिशूलके अट्ठाईसों नक्षत्र क्रमसे रखदे। अपने नामका नक्षत्र जहांपर पडे तो उसका शुभाशुभ फल जानलेवे। त्रिशूलमें जो नक्षत्र पडे तो मृत्यु होय और बाहरके आठ नक्षत्र है उनका फल मध्यम है और जो संपुटके भीतरके नक्षत्र हैं उनका फल आयु प्रजा जय और लाभ जानना ॥ १-४ ॥

इति चन्द्रकालानलचक्रम् ॥

अथ यमदंष्ट्राचक्रम्।

नवोर्ध्वगानि धिष्ण्यानि नव तिर्यग्गतानि च। अधोगतानि धिष्ण्यानि नव चैव विनिर्दिशेत् ॥ १ ॥ चतुर्नाडीकृतो वेधो जन्मनक्षत्रयोगतः। सर्पाकारं च वक्रं च कालचक्रं प्रजायते॥२॥ त्रीणि मध्यगतर्क्षाणि तानि कालमुखानि च। कोणस्थिते चन्द्रधिष्ण्ये तच्च दंष्ट्राद्वयं मतम् ॥ ३ ॥ दिनर्क्षमादितः कृत्वा नामर्क्षं यत्र संस्थितम् मुखदंष्ट्रागते मृत्युः शुभमन्यत्र संस्थिते ॥ ४ ॥ ज्वरे च दुष्टदंष्ट्रे च विवादे विग्रहे रणे। कालदंष्ट्रास्थगं नाम यस्य तस्य महद्भयम् ॥५॥

जन्मनक्षत्रसे नवनक्षत्र ऊपर और नव तिरछा और नव नक्षत्र नीचे स्थापित करै। मध्यके चार नाडीकृत वेध विचारै और सर्पके आकारका चक्र यमदंष्ट्रा बनता है मध्यके तीन नक्षत्रोंको कालमुख और कोणमें स्थित २४ नक्षत्रोंको यमदंष्ट्रासंज्ञक जानना। दिनके नक्षत्रको आदि लेकर नामका नक्षत्र जहां स्थित हो तहां तक गणना करै ज्वरमें, मुखमें अथवा दंष्ट्रामें नामनक्षत्र पडे तो मृत्यु होवै और अन्यत्र शुभ जानना।

दुष्टजीवोंके काटनेमें, विवादमें, लडाईमें तथा युद्धमें यमदंष्ट्राचक्रविषे यदि नामनक्षत्र, मुखमें अथवा दंष्ट्रामें पडजाय तो महाभय होता है ॥ १–९ ॥ इति यमदंष्ट्राचक्रम् ॥

अथ त्रिनाडीचक्रम् ।

आर्द्राद्यं विलिखेच्चक्रं मृगान्तं च त्रिनाडिकम् । भुजङ्गसदृशाकारं मध्ये मूलं प्रतिष्ठितम् ॥ १ ॥ यद्दिने एकनाडीस्थाश्चन्द्रनामर्क्षभास्कराः । तद्दिनं वर्जयेत्तस्य विवादे विग्रहे रणे ॥ २ ॥ रोगिणो जन्मऋक्षस्य एकनाड्यां यदा शशी । तदा पीडां विजानीयादष्टप्राहरकीं ध्रुवम् ॥ ३ ॥ रोगिणो जन्मऋक्षस्य एकनाड्यां यदा रविः यावदृक्षं भवेद्भोग्यं तावत्पीडां विनिर्दिशेत् ॥ ४ ॥ रोगिणो जन्मऋक्षस्य एकनाड्यां यदा भवेत् ॥ जन्मऋक्षं रविश्चन्द्रस्तदा मृत्युं समादिशेत् ॥ ५ ॥ जन्मऋक्षं रविश्चन्द्रो भवेद्यदि कथञ्चन । अन्यास्त्वन्यासु नाडीषु तदा नीरोगिता भवेत् ॥ ६ ॥

आर्द्रानक्षत्र आदि लेकर मृगशिरपर्यन्त त्रिनाडीचक्र सर्पके आकारका लिखे और बीचमें मूलनक्षत्र स्थापित करै । जिस दिन एक नाडीपर चन्द्रमा, सूर्य और नामका नक्षत्र स्थित हो वह दिन उसको विवादमें, लडाईमें और युद्धमें वर्जित करना चाहिये । रोगीका जन्मनक्षत्र जिस दिन एक नाडीपर पडे उस दिन उसको अठपहरी पीडा जाने । रोगीके जन्मनक्षत्रकी एक नाडीमें यदि सूर्य स्थित होय तो जबतक उस नक्षत्रमें सूर्य भोग करता है तबतक उसको पीडा कहना चाहिये । रोगीके जन्मनक्षत्रकी एक नाडीमें यदि जन्मनक्षत्र और चन्द्रमा स्थित होवे तो उस दिन उसकी मृत्यु कहे । जन्मनक्षत्र सूर्य और चन्द्रमा यदि अन्य अन्य नाडियोंमें स्थित हों तो रोगसे हीन होता है ॥ १–६ ॥ इति त्रिनाडीचक्रम् ॥

अथ सर्वतोभद्रचक्रम् ।

अथातः संप्रवक्ष्यामि चक्रं त्रैलोक्यदीपकम् । विख्यातं सर्वतोभद्रं सद्यः प्रत्ययकारकम् ॥ १ ॥ एकवेधे भवेद्युद्धं युग्मवेधे धनक्षयः । त्रिवेधेन भवेद्भङ्गो मृत्युश्चैव चतुर्ग्रहैः ॥ २ ॥ एकादिक्रूरवेधेन फलं पुंसां प्रजायते । उद्वेगश्च तथा हानी रोगो मृत्युः क्रमेण च ॥ ३ ॥ भ्रम ऋक्षेऽक्षरे हानिः स्वरे व्याधिर्भयं तिथौ । राशिवेधे महाविघ्नं पञ्चवेधे न जीवति ॥४॥ अर्कवेधे मदस्तापो द्रव्यहानिस्तु

भूसुते। रोगपीडाकरः सौरी राहुः केतुश्च विघ्नदौ ॥ ५ ॥ चन्द्रे मिश्रफलं पुंसां रिपुश्चैव तु भार्गवे। बुधवेधे भवेत्प्रज्ञा जीवः सर्वफलप्रदः ६

सर्वतोभद्रनामसे प्रसिद्ध त्रैलोक्यदीपन चक्रको कहता हूं जिससे सम्पूर्ण शुभाशुभ फलोंका प्रकाश होजाता है। एकके वेधमें युद्ध, दोके वेधमें धनका नाश, तीनके वेधमें भंग और चार ग्रहोंके वेधमें मृत्यु होवै। एक आदि क्रूरग्रहके वेधमें मनुष्योंको उद्वेग तथा हानि, रोग तथा मृत्यु क्रमसे कहे अर्थात् एक क्रूरग्रहके वेधसे उद्वेग, दोसे हानि, तीनसे रोग और चारके वेधसे मृत्यु होती है। जो जन्मनक्षत्रपर पापग्रह वेधैं तो चित्तको भ्रम होय और अक्षर पापग्रह वेधैं तो हानि होय. जन्मस्वरको पापी वेधैं तो व्याधि उत्पन्न हो और जन्मतिथिपर पापग्रहोंका वेध होय तो भय हो और जन्मराशिपर पापग्रहोंका वेध होय तौ विघ्न होय और पांचों वेध होनेसे मृत्यु होती है। सूर्यका वेध होनेसे मनको ताप होय. मंगलका वेध होनेसे द्रव्यकी हानि होय. शनैश्चरसे रोगपीडा होय और राहु केतुके वेधसे विघ्न होता है। चन्द्रमाके वेधमें मिश्र जानना, शुक्रके वेधसे शत्रुभय, बुधके वेधसे सुन्दर बुद्धि होय और बृहस्पतिका वेध सर्वफलदायक कहा है ॥ १-६ ॥ इति सर्वतोभद्रचक्रम् ॥

अथ पंचस्वरचक्रम्।

अथादावुदयं यान्ति तिथिस्वराद्घटीस्वराः। बालस्वरादिकप्रश्ने फलं तस्य वदाम्यहम् ॥ १ ॥ तिथिभुक्तघटीसंख्यां कृत्वा पलमयीं ततः। एवं बाणहृते शेषः स्वरस्तत्कालसंभवः ॥ २ ॥ यमुद्दिश्य कृतः प्रश्नः फलं तस्य वदाम्यहम्। यत्र नो दृश्यते किंचित्तत्र प्रश्ने शुभाशुभम् ॥ ३ ॥ बालोदये यदा पृच्छा लाभार्थस्वल्पलाभदः। रुजार्तें चिररोगं च गमे हानिः क्षयं रणे ॥ ४ ॥ कुमारोदयवेलायां लाभो भवति पुष्कलः। राज्ये नाशं जयं युद्धे यात्रा सर्वार्थसिद्धिदा ॥५॥ युवोदये लभेद्राज्यं क्लेशच्छेदं च तत्क्षणात्। सङ्ग्रामे शत्रुहन्ता च यात्रायां सफलं भवेत् ॥६॥ वृद्धोदये न लाभः स्यात्क्लेशनात्क्लेशवर्द्धनम्। संग्रामे भङ्गमायाति यात्रायां न निवर्तते ॥ ७ ॥

अब आदिमें उदयको प्राप्त तिथि और स्वरसे घटीस्वर इन करके बालस्वरादिक प्रश्नमें फलको कहताहूं। तिथिभुक्त घटी संख्याकोंको पल करके पांचसे भाग देय, जो शेष रहै वह तत्काल स्वर जानै। जिस किसीको दिखाकर अथवा किसीको न दिखाकर शुभाशुभ प्रश्न करै जिसका फल कहता हूं। बालोदयमें पृच्छक प्रश्न

करै तो थोडा लाभार्थ जानै एवं रोगपीडामें बहुत रोग, यात्रामें हानि और रणमें क्षय कहना चाहिये । कुमारोदयवेलामें बहुत लाभ, राज्यमें नाश, युद्धमें जय, यात्रामें सर्वार्थसिद्धि होवे । युवाके उदयमें प्रश्न करे तो राज्यका लाभ, शीघ्रही क्लेशका नाश, संग्राममें शत्रुनाश और यात्रामें सफल होता है । वृद्धोदयमें लाभ नहीं होता है । क्लेशमें क्लेशकी वृद्धि होती है, संग्राममें भंग और यात्रामें अनिवर्तन जाने ॥ १–७ ॥

मृत्यूदये यदा प्रष्टा पृच्छाति स्वप्रयोजनम् । तत्सर्वं मृत्युदं ज्ञेयं युद्धे मृत्युः सभङ्गदः ॥८॥ किंचिल्लाभकरो बालः कुमारस्त्वर्द्धला-भदः । सर्वसिद्धिर्युवा दत्ते वृद्धे हानिर्मृते क्षयः ॥९॥ मृत्युर्बालस्तथा वृद्धः कुमारस्तरुणः स्वरः । यो यस्य पञ्चमस्थाने स स्वरो मृत्यु-दायकः ॥१०॥ अस्वरः कृष्णपक्षे स शुक्लपक्षे स ईश्वरः । पक्षांशकः स्वरे भुक्तिर्मासभुक्त्यर्थमानकम् ॥११॥ नरनामादिमो वर्णो यस्मा-त्स्वरादधः स्थितः । स स्वरस्तस्य वर्णस्य वर्णस्वर इहोच्यते॥१२॥

मृत्यूदयमें यदि पृच्छक पूँछता है तो उसके संपूर्ण प्रयोजन नष्ट होजाते हैं और युद्धमें मृत्यु और भंग होता है । थोडा लाभकारक बाल और अर्द्धलाभदायक कुमार है, युवा सर्वसिद्धिका देनेवाला, वृद्ध, हानिकारक और मृत्यु क्षयकारक है । मृत्यु १, बाल २, वृद्ध ३, कुमार ४ और तरुण ५ ये पांच स्वर हैं । जो स्वर जिस स्वरके पंचमस्थानमें होय वह मृत्युदायक होता है । कृष्णपक्षमें अकार स्वर मनुष्यके नामका आदि अक्षर तिसके नीचे स्वर होता है उस वर्णसे सहितको स्वरवर्ण कहते हैं ८–१२

इति स्वरचक्रम् ॥

अथ नक्षत्रविचारः ।

जन्मभं जन्मनक्षत्रं दशमं कर्मसंज्ञकम् । एकोनविंश आधानं त्रयोविंशविनायकम् ॥ १ ॥ अष्टादशं च नक्षत्रं सामुदायिकसंज्ञि-तम् । सांघातिकं च विज्ञेयमृक्षं षोडशसंख्यया ॥ २ ॥ मृत्युः स्याज्ज-न्मभे विद्धे कर्मभे क्लेशमेव च । आधानर्क्षे प्रकाशः स्याद्विनाशे बन्धुविग्रहः ॥ ३ ॥ सामुदायिकभे विद्धे कष्टं हानिः सांघातिके । जातिभे कुलनाशं च बन्धनं चाभिषाङ्कभे ॥ ४ ॥ एतेषु नक्षत्रेषु यात्राविवाहादि माङ्गल्यकार्यं वर्ज्यम् ॥

जन्मसमय जो नक्षत्र है उसको जन्मनक्षत्र और दशवें नक्षत्रको कर्मनक्षत्र, उन्नीसवें नक्षत्रको आधान और तेईसवें नक्षत्रको विनायक संज्ञक कहते हैं। अठारहवें नक्षत्रको सामुदायिक और सोलहवें नक्षत्रको सांघातिक संज्ञक जानना। जन्मनक्षत्रके वेधमें मृत्यु होय, कर्मका नक्षत्र वेधित होय तौ क्लेश होता है, आधानका नक्षत्र वेधित होय तौ प्रकाश और विनायकके वेधमें बन्धुविग्रह होता है। सामुदायिक नक्षत्र वेधित होय तौ कष्ट और सांघातिक नक्षत्र वेधित होय तौ हानि, जातिनक्षत्रको वेध होय तो कुलका नाश होय और अभिषांक नक्षत्र वेधित होय तौ बंधन होता है। इन पूर्वोक्त नक्षत्रोंमें यात्रा और विवाहादि मांगल्यकार्य वर्जित करना चाहिये॥ १४॥

इति नक्षत्रविचारः।

अथ रश्मिकरणविधिः।

ग्रहोच्चनीचोऽभ्यधिके च षट्काच्चक्राच्च्युतः संमहतो विभक्तम्।
तर्कैस्तु राश्यादिकमप्यलब्धं सूर्यादिकानामिह रश्मिजश्च॥ १॥

स्पष्ट तात्कालीन ग्रहमें उस ग्रहका परम नीचराश्यादि हीन करै. यदि छः से अधिक बचै तो बारहवें शोधन करै तदनन्तर शेषको सातसे गुणा करै जो गुणन फल राश्यादि मिलै उसमें छः का भाग देय जो लब्धि मिलै वह राश्यादि सूर्यादिकोंकी रश्मि जाननी। अन्यप्रकार—पूर्वोक्त शेषको अपने रश्मिध्रुवांकसे गुणा करके छः से भागलेना। ध्रुवांक सूर्य १० चंद्र ११ मं० ५ बु० ५ बृ० ६ शुक्र ८ और शनैश्चरका ५ रश्मि ध्रुवांक जानना॥ १॥ इति रश्मिकरणम्॥

उदाहरण यथा—तात्कालीन स्पष्ट सूर्य ००। ८। ५४। १० में सूर्यका परम नीच ६। १०। ००। ०० हीन किया तौ शेष बचे ५। २८। ५४। १० यह छः से अधिक नहीं है, इस कारण इस शेष ५। २८। ५४। १० को सातसे गुणा दिया तब ४१। २२। १९। १० हुआ इसमें छः का भाग दिया तौ लब्ध राश्यादि ६।२८ सूर्यकी रश्मि हुई। इसी प्रकार अन्यग्रहोंकी जाननी॥

अथ रश्मिसंस्कारमाह—

स्वोच्चस्थितस्य द्विगुणं निरुक्ताः स्वे द्वादशे मित्रगृहे स्वराशौ।
नृपांशको १६ नाः कथितास्तु नीचे शत्रोः पुनश्चेद्विदशांशके च।
वक्री पुनस्तद्द्विगुणं ददाति तत्त्यागकालेऽष्टमभागहीनः॥ २॥

जो ग्रह अपने उच्चराशिमें स्थित हो, अपने द्वादशांशमें हो, मित्रके घरमें हो और अपनी राशिमें हो तो उसकी पूर्वकी रश्मिको दूनी करदेय. नीच शत्रुराशिके द्वादशांशमें होय तौ सोलहवां हिस्सा हीन करदेय. शुक्र शनिके विना जो ग्रह अस्तं गत हो वह

रश्मिहीन जानना. रश्मिपति वक्रारंभमें होवै तो पूर्वरश्मि द्विगुणित करै । वक्रीके अन्तमें रश्मिपति होय तौ अष्टमभाग हीन करनेसे स्पष्टरश्मि जाननी ॥ २॥ इति रश्मिकरणम्॥

अथ रश्मिफलम् । सारावल्याम्–

एकादि पञ्च यावच्चेद्रश्मिभिरतिदुःखिताः । कुलविहीनाः पतिता दुष्टा दरिद्रा नीचरताः संभवन्ति नराः ॥ १ ॥ परतो दशकं यावद्धूतकहीना विदेशगमनरताः । जायन्ते तत्र नराः सौभाग्यपरिच्युता मलिनाः ॥ २ ॥ पञ्चदशभ्यो जातास्तत्र प्रधानपूज्ययुताः । धर्मारम्भाः सुसुखाः कुलतुल्याः प्रजायन्ते ॥ ३ ॥

जिन मनुष्योंके ग्रहोंकी किरणें एकसे पांचपर्यन्त होती हैं वे अधिक दुःखित, नीच, पतित, दुष्टस्वभाववाले, दरिद्र और नीचजनोंसे प्रीति करनेवाले होते हैं । जिनके परतः अर्थात् पांच किरणोंसे अधिक और दश किरणों पर्यंत बल होता है वे मनुष्य विदेशगमनमें रत, धनकरके रहित सौभाग्यहीन और मलिन होते हैं । जिनके ग्रहोंकी किरणें दशसे पंद्रहतक होती हैं वे मनुष्य उत्तमपूज्य, धर्मारंभी और अपने कुलके अनुसार सुंदर सुखी होते हैं ॥ १–३ ॥

आविंशतेः कुलश्रेष्ठो धनवाञ्जनविच्युतः । भवेत्कीर्तिकरः शश्वत् स्वजनैः परिपूरितः ॥ ४ ॥ पूज्याः सुभगा धीराः कृतिनो धीराश्च शरकृतिं यावत् । परतो भवन्ति मनुजाः संसाराधत्तसकरकरणीयाः ॥ ५ ॥ अथ उत्तरेण चण्डा २७ नृपाश्रिता २८ नृपतिलब्धधनसौख्याः । त्रिंशद्यावत्सचिवाः पूज्याश्च भवन्ति भूतानाम् ॥ ६ ॥

जिनके बीसपर्यन्त ग्रहोंकी किरणें होती हैं वे श्रेष्ठकुलवान्, जनरहित, कीर्तिको करनेवाले और अपने जनोंकरके संयुक्त होते हैं । जिनके बीसके उपरान्त किरणें पचीस पर्यन्त होवैं वे मनुष्य पूज्य सुन्दरभेषवाले, बुद्धिमान्, पंडित, चतुर होते हैं । उपरान्त संसारी कार्योंमें निपुण होते हैं । इनके उपरान्त यदि तीसपर्यन्त किरणें होयँ तो राजाके आश्रयी, राजासे धन सौख्य पानेवाला मन्त्री और पूज्य होता है ॥ ४–६॥

एकत्रिंशद्भिरथ प्रचुराः ख्याता महीभुजा निष्ठुराः । द्वात्रिंशद्भिः पुरुषाः पञ्चशतग्रामपतयः स्युः ॥ ७ ॥ ग्रामसहस्राधिपतिमधिकात्करोति रश्मीनाम् । त्रिसहस्रग्रामाणां पुरुषं सूते चतुस्त्रिंशत् ॥ ८ ॥ परतो मण्डलभाजो बहुकोशपरिग्रहा महासत्वाः । प्रख्यातकीर्तियशसो भवन्ति सुभगाश्च लोकानाम् ॥ ९ ॥ त्रिंशत्षड्भिः सहिता

रश्मीनां यस्य जन्मसमये स्यात् । सार्द्धं भुनक्ति लक्षं ग्रामणीः स तु पुमान्नियतम् ॥ १० ॥

जिसके इकतीस किरणें होती हैं वह बहुत प्रसिद्ध, राजा और निष्ठुर होता है । जिसके बत्तीस रेखा होवें वह पांचसौ ग्रमोंका स्वामी होता है । जिसके अधिक अर्थात् तैंतीस ३३ रश्मि होवे वह हजार ग्रामोंका स्वामी होता है और चौंतीस किरणें होंय तौ तीन हजार ग्रामोंका पालनेवाला जानना । जिसके पैंतीस किरणैं होंय वह मंडल (देश) का भोग करनेवाला, बहुत धनकरके युक्त, अतिपराक्रमवाला, प्रसिद्धकीर्ति और यशवाला और मनोहर होता है । जिसके छत्तीस ३६ किरणोंका बल पावें वह डेढलक्ष ग्रामोंका स्वामी होता है ॥ ७–१० ॥

त्रिंशकसप्तकसहितो रश्मीनां सञ्चयो भवेदेवम् । लक्षत्रितयपतित्वं ग्रामाणां जायते पुंसाम् ॥ ११ ॥ त्रिंशद्वसुभिः सहिता रश्मियेषां भवति पुरुषाणाम् । मुनिसंमतलक्षाणां ग्रामाणामन्तेऽधिपा ज्ञेयाः १२

और जिसके सैंतीस किरणोंका योग होवै वह तीन लाख ग्रामोंका स्वामी होताहै । जिसके अडतीस किरणोंका बल पावै वह सात लाख ग्रामोंका स्वामी होता है ११ ॥ १२ ॥

त्रिंशत्सनवकसंख्या जन्मनि येषां ग्रहे स्थिताः सन्ति । ते तोषिताः सकलजना भवन्ति पृथिवीश्वराः पुरुषाः ॥ १३ ॥ खाब्धिप्रमाणैः किरणैः प्रसूतः क्षोणीपतिस्तद्विजयप्रयाणे । भवन्ति सेनागजगर्जितानां प्रतिस्वनाः खे घनगर्जितानि ॥ १४ ॥ शशिजलनिधिसंख्ये रश्मिभिः सूर्यतेजा जलनिधिसहितायाः पार्थिवः स्यात्सुभूमेः । द्विजलधिरशनायाः पक्षवेदाख्यसंख्ये त्रिजलधिरशनाया रामवेदैस्तथैव ॥ १५ ॥

जिसके उन्तालीस किरणोंका बल पावै वह पृथ्वीका स्वामी संपूर्ण मनुष्योंका पालन करनेवाला होता है । जिसके चालीस किरणोंका बल पावै वह बडा प्रतापी राजा और अनेक राजाओंको जीतनेवाला, हाथी घोडे सेनपसमेत राज्यभोग करताहै । जिसके इकतालीस किरणोंका बल होय वह सूर्यके समान तेजवाला और समुद्रपर्यन्त पृथ्वीका राज्य करानेवाला होताहै । बयालीस किरणोंका बल होय तौ दो समुद्रपर्यंत पृथ्वीका राज्य करै और जिसके तैंतालीस किरणोंका बल होय वह चारों समुद्रपर्यन्त राज्यको करता है ॥ १३–१५ ॥

वेदाब्धितुल्यैश्च मयूखजालैर्जाता नरेन्द्राः खलु सार्वभौमाः । सौम्याः सुरब्राह्मणभक्तियुक्ता दीर्घायुषः सत्त्वयुता भवन्ति ॥ १६ ॥

परतः परतः किरणैर्द्वीपान्तरपालकातिपुरुषः सर्वगुणः। सत्त्वः सर्वनमस्यः सुभगो महेन्द्रतुल्यप्रतापश्च ॥ १७ ॥ चत्वारिंशद्युक्ता-पञ्चादिभिरत्र यस्य सूतौ ज्ञेयम् । तस्य स्यात्संदिष्टं सर्वक्षिति-पालकं मुक्ताः ॥ १८ ॥

जिसके चवालीस किरणोंका बल होय वह मनुष्य समस्त भूमण्डलका राजा सौम्यस्वभाव, देवता ब्राह्मणकी भक्तियुक्त, बडी उमरवाला और पराक्रमकरके संयुक्त होता है। इनसे अधिक २ किरणोंका बल होय वह द्वीपान्तरोंका पालक सर्वगुण-करके युक्त, सत्त्वस्वभाव, जिसको संपूर्ण जन नमें और इन्द्रके समान प्रतापवाला होता है। जिसके पैंतालीस किरणोंका योग होय वह संपूर्ण राजाओंका स्वामी होता है ॥ १६-१८ ॥

भवनभरसहिष्णोः सर्वतः क्षीणशत्रोस्त्रिदशपतिसहस्तः सर्व-लोकस्तुतस्य । विदधति विहगानां रश्मयो नीचदीनास्तुरगकृति-समाना चक्रवर्तित्वमेव ॥१९॥ अभिमुखकरप्रवाहाः फलं प्रयच्छन्ति पुष्टतरमाशु। तद्विपरीतं पुंसां पराङ्मुखस्था ग्रहेन्द्राणाम् ॥ २० ॥ जन्मसमये ग्रहाणां रश्मीनां संक्षयो भवति । वृद्धे वृद्धिर्नृणामथ मोक्षमतः क्रमेणैव ॥ २१ ॥

जिसके सैंतालीस किरणोंका योग होय वह घरका भार संभालनेवाला, सर्वत्र शत्रु-करके रहित, इन्द्रके समान, जिसके संपूर्णलोक जन ताबेदारीमें हों, नीचकुलमें भी उत्पन्न हुआ हो तौ चक्रवर्ती राजा होता है। जो ग्रह राशिप्रवेशमें अपने गृहादिमें स्थित हो वह पुष्टतर फलको देताहै तथा जो राशिके अंतमें वा अपर शत्रुआदि घ-रमें हो उसका फल विपरीत जानना। जिसके जन्मसमयमें ग्रह वृद्ध मोक्ष अवस्थामें जो स्थित हों उन ग्रहोंकी रश्मियोंका क्षय होजाता है॥१९-२१॥ इति रश्मिफलम्॥

अथ स्थानादिफलम्।

बलावबोधेन विना दशादिक्रमावबोधेन भवेद्यतोऽतः।
तत्स्थानदिक्कालनिसर्गचेष्टा दृग्भेदभिन्नं कथयाम्यशेषम् ॥ १ ॥

बिना बलज्ञानके दशादिक्रमका बोध नहीं होता है इस कारण उसका १ स्थान-बल, २ दिक्बल, ३ कालबल, ४ निसर्गबल, ५ चेष्टाबल, ६ दृग्बल, तथा और शेष बलोंको भिन्न भिन्न कहताहूं ॥ १ ॥

स्थानबलम्।

स्वोच्चे सुहृद्भे स्वनवांशकेऽपि स्वर्क्षे दृकाणे द्विरसांशकेऽपि।

कलांशकाद्यंशयुतेऽपि चैवमुपैति तत्स्थानबलं ग्रहेन्द्रः॥ १॥

अपने उच्चराशिमें, अपने मित्रके स्थानमें, अपने नवांशमें, अपनी राशिमें, अपने दृकाणमें वा द्वादशांशमें कला अंशादिमें स्थित ग्रह स्थानबलको प्राप्त होता है। प्रथम पूर्वोक्तरीत्यनुसार ग्रहोंकी पांच प्रकारकी मैत्री विचारे। तदनंतर होरादि सप्तस्थानोंमें विचारे कि, अमुक ग्रह अपने घरमें है या समर्में या मूलत्रिकोणके स्थानमें या मित्रके घरमें अथवा अधिमित्रके घरमें वा शत्रुके घरमें अथवा अधिशत्रुके घरमें है इस प्रकार होराचक्रमें, द्रेष्काणचक्रमें, सप्तमांशचक्रमें, नवांशचक्र इत्यादिमें संपूर्णग्रहोंको देखकर बल स्थापित करना चाहिये यही सप्तवर्गबल होता है॥ १॥

अथ उच्चबलसाधनम्।

जिस ग्रहका उच्चबल बनाना होय उस स्पष्टग्रहमें उसी ग्रहका नीच घटा देना शेष ६ राशीसे अधिक होय तो बारह १२ राशिमें घटायके शेषको लिप्तापिंडी करना अर्थात् राश्यादिकी विकला बनाले फिर उसमें दशहजार आठसौ १०८०० का भाग देना तो कलादि लब्ध उच्चबल होगा. यदि छः पूर्ण बचैं तौ एक पूर्णबल रखना यही क्रियाकरके शेष राश्यादिका फल सारिणीसे लेना चाहिये॥

उदाहरण-जैसे सूर्य ००।८।५३।२० हैं इसमें इसका नीच ६।१०।००।०० हीन किया तब शेष राश्यादि ५।२८।५३।२० रहा इसका लिप्ता पिंडी किया तब ६४२९-८० हुई इनमें १०८०० का भाग दिया तब कलादि ५९।३७ लब्धि सूर्यका उच्चबल भया इसी प्रकार और ग्रहोंका बनाना॥

अथोच्चराशिफलचक्रम्।

रा	००	१	२	३	४	५	६
फल	०० ०० ००	० १० ०	० २० ००	०० ३० ००	०० ४० ००	०० ५० ०	१ ०० ००

उच्चांश फलचक्रम्।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	००
५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	४०	४०	००

कलाचक्रम् ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
० २०	० ४०	१ ०	१ २०	१ ४०	२ ०	२ २०	२ ४०	३ ०	३ २०	३ ४०	४ ०	४ २०	४ ४०	५ ०	५ २०	५ ४०	६ ४०	६ २०	६ ४०
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
७ ०	७ २०	७ ४०	८ ०	८ २०	८ ४०	९ ०	९ २०	९ ४०	१० ०	१० २०	१० ४०	११ ०	११ २०	११ ४०	१२ ०	१२ २०	१० ४२	१३ ०	१३ २०
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	२८	५९	६०
१३ ४०	१४ ०	१४ २०	१४ ४०	१५ ०	१५ २०	१५ ०	१६ ०	१६ २०	१६ ४०	१७ ०	१७ २०	१७ ४०	१८ ०	१८ २०	८ ४०	१९ ०	१९ २०	१९ ४०	२० ०

अथ मूलत्रिकोणस्वगृहादिबलम् ।

जो अपने मूलत्रिकोणमें होय उसका पैंतालीस ०।४५।० अर्थात् चतुर्थांश त्रिगुणित जानना. जो अपने घरमें ग्रह होय उसका अर्द्ध ००।३०।०० अर्थात् कला ३० बल जानना. तात्कालिक अधिमित्र होय तो बाईस २२ कला ३० पल मित्रघरमें होय तौ १५ कला सममें होय तौ कला ७ विकला ३० शत्रुके घरमें होय तौ कला ३ विकला ४५ और जो ग्रह अधिशत्रुके घरमें होय उसका एक कला और बावन ५२ विकला बल जानना चाहिये. इसी क्रमसे होरादिबल बनाना चाहिये ॥

सप्तवर्गबलचक्रम् ।

भेद	मूलत्रि.	स्वक्षेत्र	अमित्र	मित्र	सम	शत्रु	अशत्रु
बल	० ४५ ०	०० ३२ ०	०० २२ ३०	०० १५ ००	०० ७ ३०	०० ३ ४५	०० १ ५२

अथ भावादिबलम् ।

तत्रादौ युग्मायुग्मबलम् ।

शुक्र चन्द्रमा यह समराशिमें किंवा समांशमें होयँ तौ और सूर्य, मंगल, बुध, गुरु और शनि ग्रह विषमराशिमें होय तौ चरणबल ००।१५।०० देते हैं और विपरीतमें शून्यबल जानना चाहिये ॥

अथ केन्द्रपणफरापोक्लिमबलम् ।

कण्टकाद्युपगतेषु निधेया रूप १ कार्द्ध ३० चरणा निजवीर्यै ॥ १ ॥

ग्रह केन्द्रमें कहिये, लग्न, चतुर्थ, सप्तम, दशमस्थानमें होयँ तो रूप १ बल देते हैं। ग्रह पणफर अर्थात् द्वितीय, पंचम, अष्टम, एकादश स्थानमें होयँ तौ अर्द्ध०० । ३० । ०० बल देते हैं और जो ग्रह आपोक्लिममें कहिये तृतीय, षष्ठ, नवम, द्वादश स्थानमें होय तौ चरण ०० । १५ । ०० बल देते है ॥ १ ॥

भांशबलम् ।

भान्तमध्ये मुखगेषु पादः स्त्रीनपुंसकनरेषु निधेयः ॥ १ ॥

स्त्रीग्रह (शुक्र, चन्द्रमा) बीस अंशोंके उपरान्त स्थित हों अर्थात् तीसरे द्रेष्काणमें होयँ और नपुंसक ग्रह बुध शनैश्चर मध्यमें अर्थात् दूसरे द्रेष्काणमें होयँ और पुरुष ग्रह मुख अर्थात् प्रथम द्रेष्काणमें होयँ तौ चरण ० । १५ । ० । बल देते है, सूर्य मंगल, बृहस्पति पुरुष ग्रह हैं तथा विपरीतमें शून्य बल देते हैं ॥ १ ॥

दिग्बलम् ।

स्थानवीर्यमिदमेवमिहोक्तं दिग्बलं शृणु पूर्वदिशातः ।
विद्गुरू रविकुजौ रविसूनुः शुक्रशीतकिरणौ बलिनौ स्तः ॥ १ ॥

पूर्व स्थानबल कहा अब पूर्वादि चारों दिशाओंमें अर्थात् चारों केन्द्रमें बुध, बृहस्पति, सूर्य, मंगल, शनैश्चर, शुक्र, चन्द्रमा ये ग्रह बलवान् होते हैं यथा लग्नमें बुध बृहस्पति स्थित पूर्व दिशामें बलवान् होते हैं, दशवें स्थानमें सूर्य, मंगल स्थित दक्षिण दिशामें बली होते हैं, सप्तमस्थानमें शनैश्चर (राहु) स्थित पश्चिम दिशामें बली होते हैं और चतुर्थ स्थानमें शुक्र चन्द्रमा स्थित उत्तर दिशामें बलवान् होते हैं १

अर्कात्कुजात्स्वाम्बुगृहं विशोध्य जीवाद्बुधाच्चापि कलत्रभावे ।
मेषूरणं भार्गवचन्द्रसौम्याः प्राग्लग्नमुष्णांशुभभावशेषम् ॥ १ ॥
षड्भाधिकश्चेद्गुरुणा विशोध्यं लिप्तीकृतं खाभ्रगजाभ्रभूमिम् ।
भजेत्तदाप्तं हि ककुद्बलं स्यादतः परं कालबलं वदामि ॥ २ ॥

सूर्य मंगलमेंसे चतुर्थ भाव हीन करै, शुक्र चंद्रमामेंसे दशमभाव, बुध बृहस्पतिमेंसे सप्तमभाव और शनिमेंसे लग्न हीन करै। यदि शेष छः से अधिक बचै तौ बारह १२ राशिमें शोधन करदेना, फिर शेषकी लिप्तापिंडी करके दश हजार आठसौका भाग देय अथवा शेषहीमें छः का भागदेय तौ ग्रहोंका ककुत् अर्थात् दिग्बल होता है और आगे काल बल कहेंगे ॥ १ ॥ २ ॥

अथ दिग्बलसारिणीप्रवेशः ।

ग्रहोंमेंसे लग्नादि भाव कथित कर्म करके जो शेष रहे उसको ६ से कम करना अर्थात् षड्भाल्प करना। अब यहां सारिणीमें ६ राशि कोष्ठक लिखके उस कोष्ठकके

नीचे रूपादि फल उसमेंसे अभीष्टग्रहका जो ६ राशिमेंसे राश्यंक होय उसके नीचेका फल लेना, राशिकोष्ठकके नीचे ३० अंशकोष्ठक और उसके नीचे ६० कलाकोष्ठक लिखा है। उसमेंसे जो ग्रहका अंश और कला आवे तत्परिमित कोष्ठकके नीचेका अंशका कलादि और कलाका विकलादि फल एकत्र करके पूर्वमें जो लिया राशिफल तिसमें युक्त करना तौ ग्रहोंका दिग्बल होता है ॥

दिग्बलस्यराशिफलम् ।								अंशफलम् ।														
रा०	०	१	२	३	४	५	६	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
फल अं०	००	००	००	००	००	००	१	० २०	० ४०	१ ०	१ २०	१ ४०	२ ०	२ २०	२ ४०	३ ०	३ २०	३ ४०	४ ०	४ २०	४ ४०	५ ०
क०	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वि०	००	००	००	००	००	००	००	५ २०	५ ४०	६ ०	६ २०	६ ०	७ २०	७ २०	७ ४०	८ ०	८ २०	८ ४०	९ ०	९ २०	९ ४०	१० ००

कलाफलम् ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
० २०	० ४०	१ ०	१ २०	१ ४०	२ ०	२ २०	२ ४०	३ ०	३ २०	३ ४०	४ ०	४ २०	४ ४०	५ ०	५ २०	५ ४०	६ ०	६ २०	६ ४०
२१	२२	२३	२४	[illegible]	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
७ ०	७ २०	७ ४०	८ ०	८ २०	८ ४०	९ ०	९ २०	९ ४०	१० ०	१० २०	१० ४०	११ ०	११ २०	११ ४०	१२ ०	१२ २०	१२ ४०	१३ ०	१३ २०
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
१३ ४०	१४ ०	१४ २०	१४ ४०	१५ ०	१५ २०	१५ ४०	१६ ०	१६ २०	१६ ४०	१७ ०	१७ २०	१७ ४०	१८ ०	१८ २०	१८ ५०	१९ ०	१९ २०	१९ ४०	२० ०

उदाहरण–यहां सूर्य ०।८।५३।२० में चतुर्थभाव ३।०।१२।४९ हीन किया तौ शेष ९।८।४०।३१ बचे, ६ से अधिक है इसलिये १२ में घटाया तब शेष २।२१। १९। २९ रहे, अब इसका राश्यंक २ है, इसवास्ते २ राशिका फल ०।२०।० है और अंश २१ का फल ०।७।० कलादि हैं और कला १९ है, इसवास्ते १९ कलाकोष्ठकका विकलादि फल ०।०।६ यह विकलामें युक्त किया इन दोनोंका फल ७।६ पूर्व राशिफल ०।२०।० में युक्त किया तौ ०।२७।६ यह सूर्यका दिग्बल भया इसी प्रकार चन्द्रादिकोंका करना ॥

अथ कालबलं नतोन्नतबलं च ।

नक्तंबला भौमशशाङ्कमन्दा गुर्वर्कशुक्रा दिननक्तपाः स्युः ।
सौम्याः सदा वासरनक्तभाजो ग्राह्यो बुधैरुन्नतसंज्ञकालः ॥ १ ॥

नतस्त्वमी वीर्यवतां पलीकृताः खखाष्टचन्द्रैर्विहृतौ बलं भवेत्।
बुधस्य रात्रौ च दिवा च रूपं विधेयमेतत्समयोद्भवं बलम् ॥ २ ॥

मंगल, चन्द्रमा, शनि ये रात्रिबली हैं इनका नतसे और बृहस्पति, सूर्य, शुक्र ये दिनबली हैं इनका उन्नतसे नतोन्नत बल बनाना और बुधका रात्रि वा दिनमें अर्थात् सर्वदा रूप १ बल लेना। नत अथवा उन्नतके पलकरके अठारह सौका भाग देय तौ लब्धि नतोन्नत बल होता है और बुधका सदा रूप १ बल होता है अथवा नतको दूना करदेय तो चन्द्र, मंगल, शनि इनका और उन्नतको दूना करै तौ सूर्य, बृहस्पति, शुक्र इनका सुगमरीतिसे कलादि नतोन्नत बल होता है ॥ १ ॥ २ ॥

उदाहरण–नत १५।४२ इसको ६० से गुणा, तब ९०० हुए इनमें ४२ विकला युक्त किया तब ९४२ हुवा। इसमें १८०० का भाग दिया तब लब्धि००।३१।२४ यह चन्द्र, भौम, शनि इनका बल भया। उन्नत १४।१८ के विकलापिंड ८५८ में १८०० का भाग दिया ००।२८।३६ सूर्य गुरु इनका बल भया और बुधका १।०।० बल जानना ॥

अथ पक्षबलम्।

व्यर्कः शशी षड्भवनाधिकश्चेच्चक्राद्विशोध्योऽथ कलाकृतोऽसौ।
चक्रार्द्धलिप्ताविहृतो वलक्षपक्षे बलं स्यादथ कृष्णपक्षे ॥ १ ॥
तदेव रूपाच्च्युतमेव कृत्वा जगुर्बुधाः पक्षबलं ग्रहाणाम्।
वलक्षपक्षे शुभखेचराणां पापग्रहाणामसिते च पक्षे ॥ २ ॥

तात्कालिक चन्द्रमामें सूर्यको हीन करै, यदि छः राशिसे अधिक बचै तो बारह राशिमें शोधन करके कलापिंड बनावै, फिर उस कलापिंडमें दशहजार आठसौका भागदेय तौ शुक्लपक्षमें बल जानै और एक (१) में हीन करदेय तो कृष्णपक्षमें पक्षबल होता है। शुक्लपक्षका जन्म होय तो शुभग्रह चन्द्र, शुक्र, बुध, गुरु इनका और कृष्णपक्षका जन्म हो तौ पापग्रह, क्षीण चन्द्रमा, पाप युक्त बुध, सूर्य, मंगल, शनि इनका पक्षबल ग्रहण करना चाहिये ॥ १ ॥ २ ॥

अथ पक्षबलसारिणीप्रवेशः।

तात्कालिक सूर्य चन्द्रका अंतर करै फिर दिग्बलसारिणीके समान फल लेवे तौ शुभग्रहोंका पक्षबल होता है और रूप १ में कम करना तौ पापग्रहोंका पक्षबल होता है इसमें चन्द्रमाका बल द्विगुणित करना ॥

उदाहरण–चन्द्रमा १।१९।५४।१९ में सूर्य ०।८।५३।२० हीन किया तब शेष १।११।०।५९ रहे, इसका कलापिंड २४६०।५९ में १०८०० का

भाग दिया तौ लब्धि ०० । १३ । ५९ शुभग्रहोंका पक्षबल भया, इसको १ में वटाया तब शेष ०० । ४६ । १ पापग्रहोंका पक्षबल भया ॥

पक्षबलेराशिफलं ।							अंशफलम् ।														
०	१	२	३	४	५	६	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
०	०	०	०	०	०	१	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५
०	१०	२०	३०	४०	५०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	२०	०	४०	०
							१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	०	०	०	०	०	०	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०
							२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०,	५०	०	२०	४०	०

कलाफलम् ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	६
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२	४०	०	२
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
१३	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१९	१९	१९	२०
४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	-	२०	४०	०

अथ दिनरात्रिबलम् ।

अह्नित्रिभागेषु बलं स्वरूपं १ सौम्यार्कितिग्मांशुशुभं क्रमेण । कार्यं तुषारांशुसितासृजांबुरात्रौ सदैवामरपूजितस्य ॥ १ ॥

दिनका जन्म होय तौ दिनमानके तीन भाग करै और रात्रिका जन्म होय तौ रात्रिमानके तीन भाग करै । तदनन्तर दिनके प्रथम भागमें बुधका, दूसरे भागमें शनैश्चरका और तीसरे त्रिभागमें सूर्यका रूप १ बल लेना. इसी प्रकार रात्रिके प्रथम त्रिभागमें चन्द्रका, द्वितीयत्रिभागमें शुक्रका और तृतीयत्रिभागमें मंगलका और सर्वकालमें गुरुका रूप १ बल लेना चाहिये ॥१॥ उदाहरण–यहां दिनमान ३२ । ४ है इसका त्रिभाग १० । ४१ हुआ, यहां जन्म प्रथम त्रिभागमें है इस कारण बुधका और गुरुका रूप १ बल जानना और ग्रहोंका शून्यबल जानना ॥

अथ वर्षपतिबलम् ।

तत्रादौ वर्षाधिपत्यानयनम् ।

शक्यश्विभव ११२१ विहीनाद्युगुणात्परि तु अग्निविभाजिता-३६० द्यातम् । त्रिघ्नं सैकं सप्तविभक्तं सावनवर्षाधिपोर्कादिः ॥ १ ॥

अहर्गणमें ग्यारहसौ इक्कीस ११२१ हीन करै शेषमें ३६० का भागदेय जो लब्धि होय उसको तीनसे गुणाकरके एक और मिलावे और सातका भागदेय। जो शेष बचै वह सूर्यादि वर्षका स्वामी जानना. उसीका ० । १५० बल होता है और शेष शून्य बल लिखना ॥ १ ॥

मासपतिबलम्।

शशिमुनि७१हीना त्रिंशद्विभाजिता फलमहर्गणायद्विगुणम्।
सैकं सप्तविभक्तं सावनमासाधिपोर्कादिः॥ १ ॥

अहर्गणमें इकहत्तर ७१ हीनकरके ३० का भागदेय शेषको गतमासपति जानना और लब्धको दूना करके एक और संयुक्त करना और सातसे भाग देना। जो शेष बचे सूर्यादिगणनासे मासपति जानना और उसीको बल रूप ० कला ३० विकला ०० जानना, शेष ग्रहोंका शून्यबल होता है॥ १॥

दिनबलम्।

सूर्यादिवारोंविषे जिस वारमें जन्म हुआ हो उसका रूप० कला ४५ विकला० बल जानना, शेष ग्रहोंका शून्यबल जानना॥.

कालहोराबलम्।

जिस दिनका जन्म होय उस दिनके पीछे अर्द्धरात्रिके घटीपलोंमें (१५) पंद्रह घटी और मिलावै। यदि (६०) साठसे कमती आवै तौ जितनी घट्यादि कम होय उतनेही समय सूर्योदयसे पहले वारकी प्रवृत्ति जानै और यदि साठसे अधिक होय तौ जितने घट्यादि अधिक होय उतनेही समय सूर्योदयके उपरान्त वारप्रवृत्ति जानना चाहिये। वारप्रवृत्तिसे लेकर इष्टकालतक जो घटी पल होय उसको दूना करना उसको दो स्थानमें रखना. प्रथम स्थानमें पांच (५) से भाग देना, शेषको दूसरे स्थानमें घटायदेना और एक युक्त करना। फिर वारपतिके क्रमसे शेष १ बचै तौ सूर्य, दो २ में शुक्र, तीन ३ में बुध, चारमें ४ चन्द्र, ५ पांचमें शनि, ६ छः में गुरु और सातवें ७ में भौम इस क्रमसे इष्टवारपतिसे गणनाद्वारा जो वार आवे वह गत होरा जानना। अनंतर वर्तमान होराका स्वामी होरा (दिन) पति जानना जिसका रूप १ बल स्थापित करना॥

कालबलम्।

नतोन्नतबल १, पलबल २, दिनरात्रित्रिभागबल ३, वर्षपतिबल ४, मासपतिबल ५, दिनपतिबल ६, और होरापतिबल ७ इन सातों बलोंको एकत्र करनेसे ग्रहोंके द्वारा जो बल होय उसको कालबल कहते हैं॥

अयनादिबलम्।

तत्रादौ क्रांतिमाह—

तत्वाश्विनों २२५ कांब्धिकृता ४४५ रूपभूमिधरर्त्तवः ६७१।

खाङ्काष्टौ ८९० पञ्चशून्येशाः ११०५बाणरूपगुणेन्दवः१३१५॥
शून्यलोचनपञ्चैका १५२० इिछद्ररूपमुनीन्दवः १७१९ ।
वियच्चन्द्रातिधृतयो १९१० गुणरन्ध्राचलाश्विनः २८९३ ॥
मुनिषड्यमनेत्राणि २२६७ चन्द्रत्रियुगलोचनाः २४३१ ।
पञ्चाष्टविषयाक्षीणि २५८५ कुञ्जराश्विनगाश्विनः २७२८ ॥
रन्ध्रपंचाष्टकयमा २८५० वस्वद्र्यङ्कयमास्ततः २९७८ ।
कृताष्टशून्यज्वलना ३०८४ नागाद्रिशशिवह्नयः ३१७८॥
षट्पञ्चलोचनगुणा ३२५६ श्चन्द्रनेत्राग्निवह्नयः ३३२१ ।
यमाद्रिवह्निज्वलना ३३७२ रन्ध्रशून्यार्णवाग्नयः ३४०८ ॥
रूपाग्निसागरगुणा ३४३१ वसुत्रिकृतवह्नयः ३४३८ ।
प्रोक्ताः क्रमेण वावार्द्धादुत्क्रमाज्ज्यार्द्धपिण्डकाः ॥ ४ ॥
परमापक्रमज्यान्सप्तरन्ध्रगुणेन्दवः १३९७ ।
तद्गुणात्रिज्याजीवा सप्ततत्वाय संक्रान्तिरुच्यते ॥ ५ ॥

तत्त्वाश्विनो इत्यादि चार श्लोकोंका अर्थ चक्रमें स्पष्ट है, सो नीचे देखलेना ॥ ४ ॥

अथ ज्यार्द्धपिंडचक्रम् ।

संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
खंडाः	२२५	४४९	६७१	८९०	११०५	१३१५	१५२०	१७१९	१९१०	२८९३	२२६७	२४३१
अंतरम्	२२४	२२२	२१९	२१५	२१०	२०५	१९९	१९१	१८३	१७४	१६४	१५४
संख्या	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
खंडाः	२५८५	२७२८	२८५०	२९७८	३०८४	३१७८	३२५६	३३२१	३३७२	३४०८	३४३१	३४३८
अंतरम्	१४३	१३०	१२०	१०६	९३	७९	६५	५१	३६	२३	७	००

जिस ग्रहकी संक्रांति बनाना होय उसमें अयनांश युक्त करै, युक्त करनेसे यदि राश्यंक तीनसे अधिक होयँ तौ तीनका भाग लेवै शेष यदि विषमपदमें होय तौ वही भुज जानै ओर शेष यदि समपदमें होय तौ तीनमें घटाकर शेषको भुज जानै । फिर भुजराश्यादिका कलापिंड बनावै और कलापिंडमें दोसौ पचीसका भाग देय । लब्ध गतसंज्ञक खंड जानै फिर गतखंडमें एक अंक मिलावै तौ गम्यसंज्ञक खंड होता है । फिर इन दोनोंके अंतरसे दोसौ पचीसके भाग शेषको गुणाकर दोसौ पचीसका भाग देय । जो लब्धि मिलै उसको गतसंज्ञक खंडके नीचे लिखित अंकोंमें युक्त करदेय तो स्पष्ट भुजज्या होती है, भुजज्याको परमापक्रमज्या तेरहसौ सत्तानवे १३९७ से

गुणाकरै। गुणनफलमें त्रिज्या चौंतीससौ अडतीस ३४३८ से भागलेय तौ लब्ध क्रांतिज्या होती है, फिर क्रांतिज्यामें जितने खंड ज्यार्द्ध पिंडचक्रके घट सकैं उनको घटायदेय शेषको दोसौ पचीससे गुणाकरके गतगम्य खंडोंके अंतरसे भागलेय। लब्धिको गतखंडाके नीचेके अंकोंमें युक्त करके गतखंडाकी आकृतिकरके जो होय उसको और युक्त करदेय तो कलादि स्पष्टक्रांति होती है। ग्रह उत्तरगोलमें होय तौ उत्तर और दक्षिणगोलमें होय तौ दक्षिणसंज्ञक क्रांति जानना ॥ ९ ॥

पुनः क्रांति साधनेकी रीति।

सायनग्रहके भुज करके अंश करै। उन अंशोंमें दश १० का भाग देय तब जो लब्धि मिलै तत्परिमित नीचे चक्रमें लिखेहुए अंकपर्यन्त पहिले संपूर्ण अंकोंका योग ग्रहण करै और उस लब्धिमें एक युक्त करके तत्परिमित अंक ग्रहण करके उससे पहिलेके शेषभूत अंशादिको गुणाकरै तब जो गुणनफल हो उसमें दशका भाग देय तब जो लब्धि हो उसमें उपरोक्त अंकयोग मिलावै। तब इकट्ठा जो अंकयोग हो उसमें दशका भाग देनेसे जो जो लब्धि हो वह क्रांति होती है। ग्रह उत्तरगोलमें हो तौ उत्तर और दक्षिणगोलमें होय तौ दक्षिणक्रांति जानै ॥

अथ क्रांतिखंडाचक्रम्।

खंडा.	१	२	३	४	५	६	७	८	९
फलम्	४०	४०	३७	३४	३०	२५	१८	१२	४
योगा:	४०	८०	११७	१५१	१८१	२०६	२२४	२३६	२४०

उदाहरण–स्पष्टरवि ०। ८। ५३। २० में अयनांश २२। ५९। ५ युक्त किया, तब १। १। ५२। २५ यह सायनरवि हुआ, इसका भुज यही रहा। फिर भुजके अंश करे, तब ३१। ५२। २५ हुए इनमें १० का भाग दिया तब लब्धि हुई ३, शेष बचे १। ५२। २५ और लब्धि ३ परिमित ऊपर लिखेहुए अंकपर्यन्त पहिले संपूर्ण अंकों ४०+४०+३७ का योग ११७ हुआ। फिर अधिक लब्धि ४ परिमित ३४ से उपरोक्त अंशादि शेष १। ५२। २५ को गुणा किया तब ६३। ४२। १०। हुए, इनमें १० का भाग दिया तब ६। २२। १३ लब्धि हुई। इसमें उपरोक्त अंकयोग ११७ को युक्त किया १२३। २२। १३ हुए इनमें दशका भाग दिया तब १२ अं० २० क. १३ वि० यह क्रांति हुई, सायनरवि उत्तरगोलमें होनेके कारण उत्तर है ॥

अथ अयनबलम्।

क्रान्तिः सौम्या स्वमिह परमापक्रमे दक्षिणार्थं शुक्रादित्याकृत-

सुतमरुत्पूजितानां विधेयः । व्यस्ताशीतद्युतिरविजयोस्तस्य नित्यं विधेया रामव्यस्ता तदनु परमापक्रमेणाप्यपेताम् ॥ १ ॥ ग्राह्यं राशिप्रभृतिचपलं मौरकीभूतमेतद्व्योमाकाशद्विरदखकुभि १०८००-र्भाजयेदायनं स्यात् । द्विघ्नं भानोरयनजबलं पक्षवीर्यस्तथेन्दोर्युद्धे चेष्टाविवरविहितं खेटवीर्यान्तरं हि ॥ २ ॥

यदि शुक्र, सूर्य, भौम, गुरु इनकी उत्तरक्रांति होय तौ परमापक्रम अर्थात् चौदहसौ चालीसमें युक्त करै, यदि दक्षिणक्रांति होय तौ १४४० में हीन करदेय तथा शनि चन्द्रमाकी उत्तरक्रांति होय तो १४४० में ऋण और इन ग्रहोंकी दक्षिण-क्रांति होय तौ १४४० में धन करदेय और बुधकी उत्तर अथवा दक्षिणक्रांति होनेसे सदा १४४० में युक्त करना चाहिये, फिर ऋण धन करनेके बाद जो होय उसको तीनसे गुणाकरके १४४० चौदहसौं चालीससे भागदेय तौ राश्यादि लब्धि मिलेगी। उस राश्यादि लब्धिका कलापिंड करके दशहजार आठ सौ १०८०० का भाग देय तौ रूपादि लब्धि ग्रहका अयनबल होगा इस प्रकार जो सूर्यका अयनबल आवे उसको दूना करदेय और किसीका नहीं और पक्षबल केवल चन्द्रमाका दूना करदेना चाहिये । जन्मकालमें २ ग्रहोंका युद्ध होता है वे ग्रह राशिभागकलासे सम होते हैं तब ग्रहोंका कलात्मक शर करना, अनंतर वही ग्रहोंका पूर्वोक्त बलका जो ऐक्य है उसका अंतर करके उसको शरके अंतरसे भाग-देना, जो फल आवै सो उत्तर दिशामें रहनेवाला जो ग्रह उसके बलमें युक्त करना और दक्षिणदिशामें जो रहनेवाला ग्रह है उसके बलमेंसे हीन करना, यह संस्कार चेष्टा बलका भेद है। सूर्यसे चन्द्रादिकोंका जो समागम है उसको अस्त कहना और भौमादि ५ ग्रहोंका जो परस्पर समागम हो उसको युद्ध कहना ॥ १ ॥ २ ॥

अथ अयनबलसारिणी ।

ग्रहोंके दक्षिणोत्तर क्रांतिसंबंधसे अयनबलसारिणीमें शून्यसे २४ तक २५ क्रांति-भागकोष्ठक दो ठिकाने लिखा है। जब सूर्य मंगल बृहस्पति शुक्र इनकी उत्तरक्रांति और शनि चन्द्र इनकी दक्षिणक्रांति बुधकी दक्षिण किंवा उत्तर क्रांति होय तब प्रथम क्रांतिभागकोष्ठकसे अंशोंके नीचेका फल लेकर कलाविकलादिका फल चक्रसे लेकर युक्त करना तौ अयनबल होता है और विपरीतक्रांति होय तौ तब द्वितीय भागकोष्ठकसे अभीष्ट क्रांतिभागकोष्ठकके नीचेका रूपादि फल लेना, फिर उसमें कला विकलादिका फल हीन करदेना तौ अयनबल तैयार होता है । अयनबल सूर्यमात्रका दूना करना ॥

प्रथमक्रांतिभागचक्र अंशफल अयनबलसारिणी ।

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	
० ३० ०	० ३१ १५	० ३२ ३०	० ३३ ४५	० ३५ ०	० ३६ १५	० ३७ ३०	० ३८ ४५	० ४० ०	० ४१ १५	० ४२ ३०	० ४३ ४५	
१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
० ४५ ०	० ४६ १५	० ४७ ३०	० ४८ ४५	० ५० ०	० ५१ १५	० ५२ ३०	० ५३ ४५	० ५५ ०	० ५६ १५	० ५७ ३०	० ५८ ४५	१ ० ०

द्वितीयक्रांतिभागअंशफल ।

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	
० ३० ०	० २८ ४५	० २७ ३०	० २६ १५	० २५ ०	० २३ ४५	० २२ ३०	० २१ १५	० २० ०	० १८ ४५	० १७ ३०	० १६ १५	
१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
० १५ ०	० १३ ४५	० १२ ३०	० ११ १५	० १० ०	० ८ ४५	० ७ ३०	० ६ १५	० ५ ०	० ३ ४५	० २ ३०	० १ १५	० ० ०

कलाफलम् ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
० १ १५	० २ ३०	० ३ ४५	० ५ ०	० ६ १५	० ७ ३०	० ८ ४५	० १० ०	० ११ १५	० १२ ३०	० १३ ४५	० १५ ०	० १६ १५	० १७ ३०	० १८ ४५	० २० ०	० २१ १५	० २२ ३०	० २३ ४५	० २५ ०
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
० २६ १५	० २७ ३०	० २८ ४५	० ३० ०	० ३१ १५	० ३२ ३०	० ३३ ४५	० ३५ ०	० ३६ १५	० ३७ ३०	० ३८ ४५	० ४० ०	० ४१ १५	० ४२ ३०	० ४३ ४५	० ४५ ०	० ४६ १५	० ४७ ३०	० ४८ ४५	० ५० ०
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
० ५१ १५	० ५२ ३०	० ५३ ४५	० ५५ ०	० ५६ १५	० ५७ ३०	० ५८ ४५	१ ० ०	१ १ १५	१ २ ३०	१ ३ ४५	१ ५ ०	१ ६ १५	१ ७ ३०	१ ८ ४५	१ १० ०	१ ११ १५	१ १२ ३०	१ १३ ४५	१ १५ ०

उदाहरण–सूर्य क्रांत्ति १२ । २० । १३ उत्तर है, इस कारण प्रथम क्रांतिभाग-कोष्ठक १२ इसका फल ० । ४९ । ० । घटी २० इसका फल ० । २९ । विकलादि और विकला १३ का फल ० । १६ । १९ । विकलादि एकत्र किया तो २९ । १६ । १९ विकलादि हुआ, इसको अंशफल ० । ४९ । ० में युक्त किया तो ० । ४९ । २९ यह हुआ इसको दूना करादिया १ । ३० । ५० सूर्यका अयनबल भया । इसी प्रकार चन्द्रादिकोंका बनाना चाहिये परंतु दूना न करना ॥

चेष्टाबलम् ।

याम्योदक्स्थद्युचरविचरार्द्धेन युक्ताचलोच्चा-
न्मध्ये स्पष्टादधिकवपुषि न्यूनको वर्जिताश्च ।
ऊह्यात्स्पष्टग्रहमतिभवेत्तच्च चेष्टाप्यकेन्द्रं
षड्राशिभ्योऽधिकमपनयो मण्डलावृषकास्यम् ॥
कृत्वा लिप्तासतहतगजाभिः १०८०० रामं (?) फलं यत्
चेष्टावीर्यं तदिह गदितं हारिके बुद्धिवृद्धचै ॥ १ ॥

सूर्यचन्द्रमाका जो अयनबल है उसीका चेष्टाबल जानना । भौमादिग्रहोंके चेष्टाबल साधनेके निमित्त तात्कालिक मध्यम ग्रह और तात्कालिक स्पष्टग्रह स्थापित करके अपने २ मध्यम और स्पष्टका अंतर करै अर्थात् जिसमें जो घटै उसको घटायदेय । जो शेष रहै उसका अर्द्ध करके अपने २ शीघ्रोच्चमें युक्त करदेय तौ चेष्टा केन्द्र होता है । किसी आचार्यका मत है कि, मध्यम और स्पष्टग्रहका योगार्द्ध उसी ग्रहके शीघ्रोच्चमें कम करै तो भौमादि ग्रहोंका चेष्टा केन्द्र होता है. यदि चेष्टा केन्द्र छः से अधिक होय तौ षड्भाल्प करना अर्थात् १२ राशिमें घटाय देना तौ चेष्टाकेन्द्र जानना । फिर राश्यादिका लिप्तापिंड बनाकर दशहजार आठसौका भाग देना तौ लब्धिरूपादि भौमादि ग्रहोंका चेष्टाबल होगा अथवा षड्भाल्पकेन्द्रका अंशादिकरके तीन ३ से भागदेना तौ सुगमरीतिसे चेष्टाबल होता है ॥ १ ॥

चेष्टाबलसारिणीप्रवेशः ।

चेष्टाकेन्द्र षड्भाल्पकरके सारिणीमें छः ६ राशिकोष्ठक हैं । उसमेंसे चेष्टाकेन्द्रका जो इष्टराश्यंक होय उसके नीचेका राशिफल लेना । अनंतर राशिकोष्ठकके नीचे अंशकोष्ठक और कलाकोष्ठक लिखा है, उसमेंसे षड्भाल्पकेन्द्रके जो इष्ट अंश कला आवें तत्परिमितं कोष्ठकके नीचेका अंशके कलादि और कलाका विकलादि फल एकत्र करके पूर्वमें जो लिया राशिफल उसमें युक्त करना तो ग्रहोंका चेष्टाबल होता है ॥

चेष्टाबलराशि फलम् ।						चेष्टाबलं अंशफलम् ।														
१	२	३	४	५	६	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
०	०	०	०	०	१	० २०	० ४०	१ ०	१ २०	१ ४०	२ ०	२ २०	२ ४०	३ ०	३ २०	३ ४०	४ ०	४ २०	४ ४०	५ ०
१०	२०	३०	४०	५०	०	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	०	०	०	०	०	५ २०	५ ४०	६ ०	६ ०	६ ४०	७ ०	७ २०	७ ४०	८ ०	८ २०	८ ४०	९ ०	९ २०	९ ४०	१० ०

चेष्टाबलसारिणीकलाफलम् ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
० २०	० ४०	१ ०	१ २०	१ ४०	२ ०	२ ०	२ ४०	३ ०	३ २०	३ ४०	४ ०	४ २०	४ ४०	५ ०	५ २०	५ ४०	६ ०	६ २०	६ ४०
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
७ ०	७ २०	७ ४०	८ ०	८ २०	८ ४०	९ ०	९ २०	९ ४०	१० ०	१० २०	१० ४०	११ ०	११ २०	११ ४०	१२ ०	१२ २०	१२ ४०	१३ ०	१३ २०
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
१३ ४०	१४ ०	१४ २०	१४ ४०	१५ ०	१५ २०	१५ ४०	१६ २०	१६ ०२	१६ ४०	१७ ०	१७ २०	१७ ४०	१८ ०	१८ २०	१८ ४०	१९ ०	१९ २०	१९ ४०	२० ०

नैसर्गिकबलम् ।

मन्दावनीसूनुशशाङ्कपुत्रवागीशशुक्रेन्दुदिवाकराणाम् ।
एकोत्तरं रूपनगैर्विभक्तं नैसर्गिकं वीर्यमुदाहरन्ति ॥ १ ॥

अनुक्रमसे एकसे साततक अंकको सातसे भाग देना तौ क्रमसे शनि, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्र, सूर्य इनका नैसर्गिकबल होता है । अथवा शनिके बलको दूना तिगुना चौगुना करते जाओ तौ वही क्रमसे बल हो जायगा ॥ १ ॥

दृष्टिबलम् ।

उक्तानि यस्माद्बहुधा फलानि व्योमौकसां दृष्टिसमुद्भवानि ।
तस्मात्प्रवक्ष्म्यानयनं हि दृष्टेर्होराविदां दृक्फलनिर्णयोऽयम् ॥ १ ॥
दृश्यो द्रष्टा चरहिततनुः षड्ग्रहेभ्योऽधिकश्चे-
द्विस्त्यः शोध्यो विहितकलिकः खाभ्रपक्षाद्रिभक्तः ।
दृष्टिः सा स्याद्यदि रसग्रहेभ्योऽधिकः पञ्चहीनो
लिप्तीभूतो धृतिशत१८०० हृतः स्याच्चतुर्भाधिकश्चेत् ॥ २ ॥

बहुधा दृष्टिद्वारा उत्पन्न फल कहते हैं इस कारण होराके जाननेवालोंके निमित्त दृष्टिका आनयन और दृष्टिफलनिर्णयको कहता हूं । जो देखाजाता है वह दृश्य और जो देखता है वह द्रष्टा कहाजाता है. फिर दृश्यमेंसे द्रष्टा कम करके शेषको यदि छः से अधिक होय तौ दशमें घटायदेय, फिर शेषका कलापिंड बनाकर बाईससौका २२०० का भाग देय तौ लब्धि रूपादि दृष्टि होयगी । दृश्यमें द्रष्टा हीन करनेसे यदि शेष छः से अधिक अर्थात् छः पूर्णतक होय तो पांच हीन करदेय शेषकी लिप्तापिंडी करै और अठारह सौका १८०० भागदेय तो लब्धिरूपादि दृष्टि होय और शेष यदि चारसे अधिक होय तौ पांचमें हीन करदेय शेषका कलापिंड करके छत्तीस सौका ३६०० का भागदेय तौ दृष्टि होय और यदि तीनसे अधिक होय तौ चार ४ में घटाकर शेषका कलापिंड बनाकर छत्तीससौका भागदेय जो लब्धि मिलै उसको लिप्तपिंडमें युक्त करके बहत्तरसौके ७२०० भागदेय तौ दृष्टि होय । यदि शेष दोसे अधिक होय तौ दो हीन करदेय शेषके कलापिंड करके नौसौ ९०० को और मिलावै फिर छत्तीससौ ३६०० का भागदेय तौ दृष्टि होवै । यदि एकसे अधिक होय तौ एक हीनकरके कलापिंडमें सत्ताईससौ २७०० का भागदेय तौ रूपादि दृष्टि होय. यदि दृश्यमेंसे द्रष्टा हीन करनेसे दशराशिसे अधिक शेष बचै तौ दृष्टि फल नहीं होता है । इस प्रकार सूर्यादिग्रहोंकी दृष्टि होती है और शनिकी यदि तीसरी अथवा दशवीं दृष्टि होय तौ पूर्वोक्त प्रकारसे दृष्टि लाकर उसमें पन्द्रह कला और मिलावै तौ स्पष्ट शनिकी तीसरी, दशवीं दृष्टि होय, इसी तरह बृहस्पतिकी नववीं, पांचवीं दृष्टि होय तौ पूर्वोक्तरीत्यनुसार दृष्टि लाकर ३० तीस कला और युक्त करै तौ दृष्टि होय तथा मंगलकी चौथी आठवीं दृष्टि होय तौ पूर्वोक्त दृष्टि लाकर पन्द्रह १५ कला और मिलायदेय तौ स्पष्ट दृष्टि होती है । फिर जिस ग्रह या भाव जितने शुभग्रहोंकी दृष्टि हो उनका बल एकत्र करके पृथक् स्थापित करै और पापग्रहोंको पृथक् स्थापित करै । तदनन्तर यदि पापग्रहोंसे शुभग्रहोंकी दृष्टि अधिक होय तौ शुभग्रहोंकी दृष्टिमें चारका भागदेय, जो लब्धि मिले उसको शुभग्रहोंकी दृष्टिमें युक्त करै अर्थात् चतुर्थांश और मिलाकर पापग्रहोंकी दृष्टि युक्त करदेय तो स्पष्ट दृष्टि होवै तथा यदि शुभग्रहोंसे पापग्रहोंकी दृष्टि अधिक होय तौ पापदृष्टिका चतुर्थांश पापदृष्टिमें हीन करके शुभग्रहोंकी दृष्टि युक्त करदेय तौ स्पष्ट दृष्टि होवै । सूर्यादिग्रहोंका पूर्वोक्त चौबीस बल पृथक् २ ग्रहका एकत्र करदेय तौ ग्रहबल अर्थात् ग्रहोंका षड्बल होता है ॥ १ ॥ २ ॥ इति सूर्यादिचतुर्विंशतिबलं संपूर्णम् ॥

दृष्टिकी अन्यरीति ।

द्रष्टा दृश्यमें कमकरके जो राश्यंक बाकी रहै उसका नीचेका अंक लेकर आगेकी राशिका नीचेका अंक लेके अंतर करै । जो अंतर आवै उससे नीचेका जो भागादिक

होय तौ गुणदेना। फिर ३० तीससे भाग देना, जो आवै सो फलांकमें संस्कार करना सो ऐसा कि, आगेका अंक ज्यादा होय तौ युक्त करना पिछिलेमें और जो आगेका कमती होय तौ पिछिलामें घटाय देना तो दृष्टि होती है, यदि शनिकी दोनों राशि मंगलकी तीन सात राशि और गुरुकी चार आठ राशि शेष रहैं तौ साठ पूर्ण-कला लेना चाहिये।

अथ दृष्टिचक्रम्।

राशी	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
कलाव	०	१५	४५	३०	००	६०	४५	३०	१५	००	००	००
अन्यग्र	०	श.	मं	बृ.	०	०	मं	बृ.	श	०	०	०
कला	०	६०	६०	६०	०	०	६०	६०	६०	०	०	०

अथ भावफलम्।

तत्र लग्नबलम्।

लग्नादि भावोंके स्वामीका जो बल है सो लग्नादि भावबल होता है॥

अथ लग्नदृष्टिः।

पूर्वोक्त रीत्यनुसार लग्नादिभावोंपर दृष्टि बनाना चाहिये। फिर शुभग्रहों और पाप-ग्रहोंकी दृष्टि पृथक् २ युक्त करै। फिर यदि शुभग्रहोंकी दृष्टि अधिक होय तौ पंद्रह कला और युक्त करदेय; तदनंतर पापग्रहकी दृष्टि युक्त करे तौ स्पष्ट दृष्टि भावकी होय और जो पापग्रहोंकी दृष्टि अधिक होय तौ पंद्रह १५ कला हीन करके शुभग्रहकी दृष्टि युक्त करदेय तौ स्पष्ट दृष्टि होय। फिर जो राशि मिथुन, कन्या, तुला, धनका पूर्वार्द्ध और कुंभ होय तौ भावबलमें रूप युक्त करदेय और जो चतुष्पद राशि मेष, वृषभ, सिंह, धनका उत्तरार्द्ध और मकरका पूर्वार्द्ध होय तौ पैंतालीस ४५ कला और युक्त करै तथा जो जलचर राशि मीन और मकरका पश्चि-मार्द्ध कर्क होय तौ तीस कला युक्त करदे तौ लग्नबल होता है. कीटराशिमें संस्कार नहीं करना चाहिये॥

नृभेऽक्षिपे च रूपकं १ चतुष्पदाप्ययोर्बलम्।
न कीटभेन किंचन स्फुटं भवेत्ततो बलम्॥ १॥
जलभचतुष्पदकीटभसंज्ञाः सुखदशमास्तंगतबलवन्तः।
जिनाजिनसप्तमगा बलास्तितद्धिनरागैरनुपातविधिपातः॥ २॥

उपरोक्त श्लोककी भाषा ऊपर लिखी है। मनुष्यराशिमेंसे सप्तम भाव कम करना चतुष्पदराशिमेंसे चतुर्थभाव, कीटराशिमेंसे तनुभाव और जलचर राशिमेंसे दशम

भाव कम करना, अनंतर शेष छः राशिसे अधिक होय तौ १२ राशिमें कम करना, शेषसे दिग्बलमें पूर्वोक्त रीतिप्रमाण बलसाधन करना तौ भाव दिग्बल होता है, अनंतर यह दिग्बल भावबलमें युक्त करना और दृग्बल संस्कार देना, फिर उसमें भावके ऊपरकी बुध गुरुकी दृष्टि युक्त करना तौ स्पष्ट भावबल होता है ॥ १ ॥ २ ॥

अथ अष्टकवर्गज्ञानम् ।

सूर्यसूर्यजजीवाश्च शुक्रो भौमो बुधस्तथा ।
चन्द्रो लग्नं क्रमात्स्थाप्योऽष्टकवर्गे बुधैर्ग्रहः ॥ १ ॥

अष्टकवर्गचक्रमें प्रथम सूर्य, शनि, बृहस्पति, शुक्र, मंगल, बुध, चन्द्र तथा लग्न इस क्रमसे स्थापित करै । जो ग्रह जिस राशिपर स्थित हो वही राशि उसका अपना स्थानप्रमाण कियाजाता है, फिर उस स्थानको आदि देकर जिस ग्रहका रेखाबिन्दु बनाना चाहै, उस ग्रहके चक्रमें क्रमपूर्वक रेखाबिन्दु बारहों भावमें स्थापित करदे और जो स्थान चक्रमें कहे हैं उन स्थानोंको शुभ जानना । उनमें रेखा (।) ऐसा चिह्न बनाना, शेषस्थान अशुभ तिनमें बिन्दु (०) ऐसा रखना चाहिये । यथा जन्मकालिक स्थित सलग्न प्रत्येक ग्रहोंके स्थानोंसे गोचरकालिक मेषादि प्रत्येकस्थानोंमें रहते हुए सूर्यका शुभाशुभफल नीचे लिखेहुए चक्रमें स्पष्ट है सो देखना, इसी प्रकार सब ग्रहोंका बनाना ॥ १ ॥

अथ सूर्यरेखाबिन्दुचक्रम् ।

भावाः	सू.	श.	बृ.	शु.	मंगल	बुध	चन्द्र	लग्न	रि. यो.	वि. यो.
५ सू. मं.	।	।	०	०	।	।	०	।	५	३
६.बु बृ.चं.	।	।	०	।	।	०	०	।	५	३
ल.७शु.के.	०	।	०	०	०	०	०	०	१	७
८	।	।	०	०	।	।	।	०	५	३
९	०	०	०	०	०	०	०	।	१	७
१० श.	०	।	।	०	०	।	०	।	४	४
११	।	।	।	०	।	।	।	०	६	२
१२	।	०	०	।	।	०	०	।	४	४
१ रा.	।	।	०	।	।	०	०	०	४	४
२	।	०	।	०	।	।	०	०	४	४
३	।	०	०	०	।	।	।	०	४	४
४	०	।	।	०	०	।	।	।	५	३

अथ बिन्दुरेखाका विश्वाज्ञान ।

प्रत्येकरेखा या बिन्दुको ढाई २॥ विश्वा जानना, इस प्रकार प्रत्येक ग्रहसे आठ कोष्ठक होते हैं । उनमें रेखाबिन्दु हो तो यथाक्रम विश्वा जानना चाहिये । जैसे रेखा वा बिन्दु हों उनके ढाईगुणा विश्वा होता है । पूर्ण आठ हों तो पूर्ण २० विश्वाका बल होता है, रेखासे शुभ और बिन्दुसे अशुभ जानना । यथा–उपरोक्त चक्रमें सूर्यकी ५ रेखा हैं तो १२॥ विश्वा बल शुभ है और तीन बिन्दु हैं तो ७॥ विश्वाबल अशुभ है । सूर्य एक राशिमें तीस ३० दिन रहता है, इससे एक कोष्ठकमें आठवां हिस्सा अर्थात् ३ तीन दिन पैंतालीस ४५ घटी रहैगी । इसी प्रकार चन्द्रमा एक कोष्ठकमें १७ घटी, मंगल ५ दिन सैंतीस ३७ घटी, बुध शुक्र सूर्यके समान जानना, बृहस्पति मास १ दिन अठारह १८ घटी पैंतालीस ४५ और शनि एक कोष्ठकमें मास तीन ३ दिन बाईस २२ रहता है । इसका प्रयोजन यह है कि, ग्रह गोचर कालमें राशिके प्रथमादि कोष्ठकोंमें पूर्वोक्त दिनोंके प्रमाणसे रहता है । तहां जिस कोष्ठकमें रेखा हो तो उस कोष्ठकके दिनोंमें शुभ फल कहना और बिन्दुसे उन दिनोंमें अशुभ फल कहना योग्य है ॥ इति विश्वादिज्ञानम् ॥

अथ रेखाबिन्दुचक्राणि ।

सूर्याष्टकरेखा ४८ दिन ३ घटी ४५	चंद्राष्टकरेषा ४९ घ. १२ विकला४९	भौमा. कीद.५ घ ३ क्षिप ३९ रेषा ४०	बुधाष्ट. घ. दि ३ घटी १७ रेषा ५४
सूर्यात् १२४५७८४१.११	चंद्रात् १३६७१.११	भौमात् १६४७८१११	बुधा. १२५९४१.१११२
सौरात् १२४७८४१.१११	सूर्यात् ३६७८१०११	सूर्यात् ३५९१७११	सूर्या. ५६९१०१२
जीवात् ५६९११	सौरात् ३५६११	सौरात् १४७८९१.११	सौरा. १२४७८८१.११
शुक्रात् १०६७१२	जीवात् १४७८१.११	जीवात् ६१०१११२	जीवा. ६८१११२
भौमात् १२४७१०१११८४	शुक्रात् ३४५७४०	शुक्रात् ६८१११२	शुक्रा. १२३४७८४१.१
बुधात् ३५६८१०१११२	भौमात् २३५६८११	बुधात् ३५८११	भौमा. १२४७८८१०११
चंद्रात् ३९१०११	बुधात् १३४५७८१	चंद्रात् ३६१०११	चंद्रा. २४८८१०११
लग्नात् ३४६१०१११२	लग्नात् ३६१०११	लग्नात् १३६१०११	लग्ना. १२४६८१०११

जीवाष्टकमा. १ दि. १८घ.५४ दि.५६रे. ५६	शुक्राष्ट. रेषा ५।२ दिन ३ घ. ५ प.५१	शन्यष्टकवर्गरेषा ३९ मा. ३ दि.२२घ.२२	लग्नाष्टकवर्गरेषा ३९
जीवा. १२३४७८१०११	शु. १२३४५८४१.११	सौरा. ३५६११	लग्ना. १४५७९१
सूर्या. १२३४७८९१.११	सू. ८१११२	सूर्या. १२४७८१.११	सूर्या. ३६१०११
सौरा. ३५६१२	भौ. ३४५८९१०११	जीवा.५९१११२	सौरा. ३६१०११
शुक्रा. २५६९१.११	जी. ५८९१०११	शुक्रा. ६१११२	जीवा. १४५७९१०
भौमा. १२४७८१.११	भौ. ३५६८११:२	भौमा.३५६१०१११२	भौमा. ३६१०११
बुधा. १२४५६९१.११	बु. ३५६९११	बुधा. ६८९१११२	बुधा. १४५७९१०
चंद्रा. १५७८११	चं. १२३४५८९१११	चंद्रा. ३६११	चंद्रा. ३६११
लग्ना. १२४५६७१०११	ल. १२३४५८९१	लग्ना. ३९१०१११२	शुक्रा. ३७८१२

अथ रेखाबिन्दुफलम्।

तत्रादौ सूर्यरेखाबिन्दुफलम्।

वर्त्तते रविरेखा च शत्रूणां च पराजयम्।
साहसासिद्धिरेवात्र भावजेयमुपस्थिता ॥ १ ॥

सूर्यकी रेखा विद्यमान हो तो शत्रुओंका पराजय, साहसासिद्धि और भावसे उत्पन्न फल होता है ॥ १ ॥

बिन्दुः स कष्टफलदो महाव्यसनकारकः।
रोगशोकप्रदाता च नृपोद्वेगमकारणात् ॥ २ ॥

सूर्यका बिन्दु अशुभफलका दायक, अधिक व्यसन करनेवाला, रोग शोक देनेवाला, विना कारण उद्वेगदायक होता है ॥ २ ॥

अथ चन्द्ररेखाबिन्दुफलम्।

ददाति शशिरेखा च वस्त्राभरणभूषणम्।
लभते प्रभुसम्मानं कर्मप्राप्तिमिवाम्बरम् ॥ ३ ॥

चन्द्रमाकी रेखा वस्त्र, आभरण और भूषणोंको देती है, राजसम्मान, कर्मका उदय और वस्त्रोंका लाभ कराती है ॥ ३ ॥

बिन्दुः कष्टफलं चैव कलहं वैरिभिः सह।
दुःस्वप्नदर्शनं नित्यं धननाशमवाप्नुयात् ॥ ४ ॥

चन्द्रमाके बिन्दुसे कष्टफल, शत्रुओंकरके कलह, दुष्टस्वप्न देखना और नित्यप्रति धनका नाश होता है ॥ ४ ॥

अथ भौमरेखाबिन्दुफलम्।

ददाति भौमजा रेखा अर्थप्राप्तिं सदैव हि।
आरोग्यमायुर्वृद्धिं च कायकान्तिं प्रदापयेत् ॥ ५ ॥

भौमरेखा सदा अर्थकी प्राप्ति, आरोग्यता, आयुर्दाय और शरीरकांतिकी वृद्धि देती है ५

बिन्दुस्तस्य फलं शश्वदुदराग्निरुजस्सदा।
शिरःशूलः प्रजायेत रक्तपित्तरुजा भवेत् ॥ ६ ॥

भौमबिन्दुसे उदराग्निकी पीडा, शिरःपीडा और रक्तपित्तविकारसे रोग उत्पन्न होता है ६

अथ बुधरेखाबिन्दुफलम्।

बुधस्य रेखया सौख्यं मिष्टान्नं लभते सदा।
दानधर्मरतश्चैव द्विजदेवाग्निपूजकः ॥ ७ ॥

बुधकी रेखा जिसके हो वह सुख और मिष्टान्न, सदा लाभ करनेवाला, दानधर्ममें रत और ब्राह्मण देवता और अग्निका पूजनेवाला होता है ॥ ७ ॥

बिन्दुर्भङ्गप्रदश्चैव कलहं वैरिभिः सह।
दुःस्वप्नदर्शनं नित्यमवेलाभोजनं तथा ॥ ८ ॥

बुधबिन्दुसे भंग, शत्रुओंके साथ कलह, दुःस्वप्नदर्शन और सदा बेसमय भोजनका लाभ होता है ॥ ८ ॥

अथ गुरुरेखाबिन्दुफलम्।

रेखा जीवे जनयति सदा वित्तसौख्यादिपुष्टिं
जायाभोगं जनयति सदा शत्रुहन्ता च नित्यम्।
मानोत्साहो विभवमतुलं वस्त्रहेमादिवृद्धिं
प्राप्यं सौख्यं भवति ह्यतुलं बन्धुवर्गोपहारम् ॥ ९ ॥

गुरुरेखा सदा धनसौख्यादि तथा पुष्टि स्त्रीभोगको देती है और शत्रुओंका नाश करती है, मानोत्साह अधिक विभव वस्त्र हेम आदिकी वृद्धि होती है और बंधुवर्गादिसे सौख्यलाभ होता है ॥ ९ ॥

बिन्दुः कष्टं विगतधनधीर्मानसी वित्तचिन्ता
मार्गे भङ्गं जनयति सदा पातनं वाहनाद्वा।
लोकादिष्टं भवति कलहं वाङ्मयेनापमानं
शत्रुद्वेषं व्ययमपि सदा साहसात्कार्यहानिः ॥ १० ॥

गुरुबिन्दुसे कष्ट, धन बुद्धिका नाश, मानसी धनकी चिंता, मार्गमें भंग, वाहनसे गिरना, लोकजनोंसे कलह, अपनेही वचनोंकरके अपमान, शत्रुओंसे द्वेष, खर्च और सदा साहस करके कार्यहानि ऐसा फल होता है ॥ १० ॥

अथ शुक्ररेखाबिन्दुफलम्।

शुक्रे रेखा जनयति नरं राज्यसम्मानवृद्धिं
कन्यालाभं सुसुखवपुषं दीर्घमायुश्च धत्ते।
कैश्चित्क्रीडा भवति बहुधा ज्ञानमेकार्थसिद्धिं
लक्ष्मीलाभं जनयति सुखं सौख्यसंपत्तिवृद्धिम् ॥ ११ ॥

शुक्ररेखा मनुष्योंके अर्थ राज्यसन्मानकी वृद्धि, कन्याका लाभ, शरीरका सुंदर सुख, दीर्घआयुर्दाय, क्रीडा, बहुधा ज्ञानप्राप्ति, अर्थकी सिद्धि, लक्ष्मीका लाभ, सुख और सौख्यसंपत्तिकी वृद्धि करती है ॥ ११ ॥

बिन्दुः कष्टं भवति हि रिपोर्वित्तनाशप्रदात्री
जायापीडा कलहमतुलं भूमिनाशं च कष्टम् ।
बुद्धिभ्रंशं व्ययमपि सदा पातनं वाजिभिर्वा
मार्गे भङ्गं जनयति सदा सर्वकालं जनानाम् ॥ १२ ॥

शुक्रबिन्दुसे मनुष्योंको कष्ट, शत्रु, धनका नाश, स्त्रीपीडा, कलह, भूमिनाश, अधिककष्ट, बुद्धिनाश, सदा अधिक खर्च, घोडेसे गिरना, रास्तामें भंग ये सब फल होते हैं ॥ १२ ॥

अथ शनिरेखाबिन्दुफलम् ।

सौरे रेखा जनयति फलं भृत्यहेत्वर्थसंपत्
कार्ये प्राप्तिं नृपतिसचिवं साधुसंपर्कदाता ।
भूमिप्राप्तिं कितवजयिता स्नानदानार्चनेषु
मिष्टान्नं स्यान्नृपतिवरदं धान्यसस्येषु वृद्धिः ॥ १३ ॥

शनैश्चरकी रेखा श्रेष्ठफल, नौकरोंके हेतु धन, कार्यसिद्धि, राजासे मित्रता, साधुओंमें रति, भूमिलाभ, दुष्टजनोंसे जयप्राप्ति, स्नान, दान, पूजामें रति, मिष्टान्नभोजन, राजाकी वरदानप्राप्ति और खेतीमें धान्यकी वृद्धि यह सब फल मनुष्योंको होता है ॥ १३ ॥

बिन्दुः कष्टं नृपतिभयदं बन्धुपीडा विवृद्धा
धातोः शस्त्रैर्विषमपतितैर्वित्तसंहारकर्ता ।
चित्तोद्वेगो भवति बहुधा भूमिनाशं कलिं वा
बुद्धिभ्रंशो भवति च सदा वाहने हानिरेव ॥ १४ ॥

शनैश्चरकी बिन्दुसे कष्ट, राजासे भय, बंधुपीडाकी वृद्धि, धातुशस्त्र करके अथवा दुष्टजनोंकरके धनका नाश, चित्तमें उद्वेग, बहुधा भूमिका नाश, कलह, बुद्धिनाश और सदा वाहनसे हानि ये सब फल मनुष्योंको प्राप्त होते हैं ॥ १४ ॥ इति सप्तग्रहाणां रेखाबिन्दुफलम् ॥

अथ सर्वाष्टकवर्गकरणम् ।

प्रथम जन्मलग्नको आदिमें लिखकर फिर बारहों लग्न अर्थात् भावक्रमसे लिखै अर्थात् जन्मांगचक्र लिखै । फिर अष्टकवर्गकी जो आठ कुंडली पूर्वोक्त रीत्यनुसार बनी हों उनमेंसे प्रत्येक लग्नकी पृथक् २ रेखाबिन्दु एकत्र योग करले । फिर उन योगोंको चक्रमें लग्नके अनुसार स्थापित कर दे, फिर लग्नमें जन्मका संवत्, दूसरी लग्नमें आगेका संवत्, तीसरीमें तीसरा साल इत्यादि । फिर बारह वर्षके उपरान्त

लग्नादि भावोंमें संवत् आगेके लिखजावै, जिस वर्षमें रेखा अधिक हों उसमें सुख और जिस वर्षमें बिन्दु अधिक हों उसमें कष्ट जानना ॥ इति सर्वाष्टकवर्गरेखाविधिः ॥

अथ सर्वाष्टकवर्गरेखाफलम् ।

मरणं चतुर्दशभिः सक्रूरैः पञ्चदशभिर्वा । षोडशभिरङ्गपीडा भवति शरीरे महान्व्याधिः ॥ १ ॥ सप्तदशभिर्दुःखमष्टादशभिर्धनक्षयः प्रोक्तः । बान्धवपीडा बह्वी भवति तथैकोनविंशत्या ॥ २ ॥ व्ययकलहौ विंशतिभिर्गदो दुःखं तथैकविंशत्या । कुमतिर्द्वाविंशतिभिर्दैन्यं च पराभवो विफलम् ॥ ३ ॥ नूनं त्रिवर्गहानिर्भवति नराणां त्रिविंशतिभिर्नित्यम् । द्रव्यक्षयस्त्वकस्माद्विंशतिभिश्चतुर्भिरधिकाभिः ॥ ४ ॥

चौदह रेखाओंके योग होनेसे मरण और पापग्रहोंकी पन्द्रह रेखाओंसे मरण होता है, सोलह रेखाओंसे अंगपीडा और शरीरमें महाव्याधि होती है। सतरह रेखाओंमें दुःख और अठारहमें धनका नाश, उन्नीसमें बान्धव पीडा होती है । बीस रेखामें खर्च और कलह, इक्कीसमें रोग और दुःख, बाईसमें कुमति, दरिद्रता, पराजय और कार्यनाश यह फल होता है । तेईस रेखामें त्रिवर्गहानि, चौबीसमें अकस्मात् धनका नाश होता है ॥ १–४ ॥

करतलगतमपि च धनं नश्यति नराणां पंचविंशतिभिः । षड्विंशतिभिः क्लेशः समता स्यात्सप्तविंशतिभिः ॥ ५ ॥ अष्टाधिकविंशत्या द्रव्यागमनं यथासुखं भवति । एकोनत्रिंशतिभिर्लोकेषु नरः पूज्यतामेति ॥ ६ ॥ मानं सुकृतव्याप्तिस्त्रिंशत्या नास्ति सन्देहमानम् । सुकृतिं सौख्यं नृणामेकाभिरधिकाभिः स्यात् ॥ ७ ॥ राज्यादिफलप्राप्तिः कथिता षडाकृतिं यावत् ॥ ८ ॥

पचीस रेखामें हाथका द्रव्यभी नाश होजाता है, छब्बीस रेखामें क्लेश और सत्ताईसमें समानफल होता है । अट्ठाईस रेखामें धनका आगमन और सुख होता है, उनतीस रेखामें संसारमें पूज्य होता है । तीस रेखामें पुण्यवान्की प्राप्ति हो, इकतीस रेखामें सुन्दर पुण्य सुख मनुष्योंको होता है । छत्तीस रेखाओंमें या इसके उपरान्त अधिक रेखाओंमें राज्यादिफलकी प्राप्ति कहना चाहिये ॥ ५–८ ॥

अथ अष्टवर्गफलम् ।

कष्टं स्याच्चैकरेखायां द्वाभ्यामर्थक्षयो भवेत् । त्रिभिः क्लेशं विजानीयाच्चतुर्भिः समता मता ॥ १ ॥ पञ्चभिः क्षेममारोग्यं षड्भिरर्थागमो भवेत् । सप्तभिः परमानन्दमष्टाभिः सर्वकामदम् ॥ २ ॥ रेखास्थाने तु संप्राप्ते यदा पापशुभग्रहाः । शुभास्ते च विजानीयाद्बिन्दुस्थाने च दुःखदाः ॥ ३ ॥ शुभा च कथिता रेखा बिन्दुश्च कथितोऽशुभः । समे समफलं ज्ञेयं गोचरे यदि नान्तरम् ॥ ४ ॥ यदि संस्थितरेखाणां फलं पुंसां प्रजायते । लक्ष्मीर्भोगास्तथा सौख्यं सार्वभौमं जनेशता ॥ ५ ॥ यदि संस्थितबिन्दूनां फलं पुंसां प्रजायते । उद्वेगो हानी रोगश्च मृत्युश्चास्य क्रमेण च ॥ ६ ॥ यो ग्रहो गोचरे श्रेष्ठ-स्त्वष्टवर्गेषु मध्यमः । अधमस्तु दशायां हि स ग्रहो ह्यधमाधमः ॥ ७ ॥

एक रेखामें क्लेश, दो रेखामें धनहानि, तीनमें क्लेश, चारमें समता, पांचमें क्षेम और आरोग्य, छः रेखामें धनलाभ, सातमें सम्पूर्ण सुख और आठ रेखामें सम्पूर्ण मनोरथ सिद्ध होता है । यदि रेखाके स्थानमें शुभग्रह और पापग्रह दोनों स्थित हों तो फल शुभही जानना और बिन्दुके स्थानमें हों तो दुःखदायक होते हैं । गोचरकालमें रेखा शुभ और बिन्दु अशुभ कहा है और समान हों तो समफल जानना चाहिये । लक्ष्मी, भोग, विलास तथा सौख्य, देशका मालिक यह फल रेखाओंके स्थितिद्वारा क्रमसे कहे । मनुष्योंको बिन्दुओंकी स्थितिमें उद्वेग, हानि, रोग, मृत्यु क्रमसे कहे । जो गोचरकालमें श्रेष्ठ हो और अष्टवर्गमें मध्यम हो और दशाविषे अधम हो वह ग्रह अधमाधम होता है ॥ १-७ ॥ इत्यष्टवर्गफलम् ॥

अथायुरानयनम् ।

तत्रादौ पिण्डायुः ।

नन्देन्दवो १९बाणयमाः २५ शरक्ष्मा १५दिवाकराः १२ पञ्चभुवः १५कुपक्षाः २१। नखा २० श्च भास्वत्प्रमुखग्रहाणां पिण्डायुषोऽब्दा निजतुङ्गगानाम् ॥ १ ॥ निजोच्चशुद्धः खचरो विशोध्यो भूमण्डलात्षड्भवनो न कश्चित् । यथास्थितः षड्भवनाधिकश्चेल्लिप्तीकृतः सङ्गुणितो निजाब्दैः ॥ २ ॥ तत्र खाभ्ररसचन्द्रलोचनै२१६००रुद्धते सति तदाप्यते फलम् । वर्षमासदिननाडिकादिकं तद्धि पिण्डभवमायुरुच्यते ॥ ३ ॥

सूर्यादिग्रहोंके परमोच्चके ध्रुवांकको कहते हैं। यथा-सूर्यके उन्नीस १९ वर्ष, चन्द्रमाके पचीस २५ वर्ष, मंगलके पन्द्रह १५ वर्ष, बुधके बारह १२ वर्ष, बृहस्पतिके पंद्रह १५ वर्ष, शुक्रके इक्कीस २१ वर्ष और शनैश्चरके बीस २० वर्ष, यह ध्रुवांक सूर्यादिकोंके परमोच्च जानना। जिस ग्रहका आयुर्दाय निकालना हो उस ग्रहके राश्यादिमें उसके उच्चराशिको घटादे. कदाचित् उच्चराशि न घटै तौ ग्रह राश्यादिमें बारह जोडकर उसमें उच्चराशिको घटावे. घटाहुआ शेषांक छः राशिसे कम हो तो उसको बारह राशिमें घटावे और छः राशिसे अधिक हो तो वही शेषांक राश्यादि रहने देवे। फिर शेष राश्यादिकी लिप्तीकरके अपने वर्षोंसे गुणा करदे। फिर इक्कीस हजार छः सौ २१६०० का भाग दे। लब्धि वर्षमासादि आवे, वह पिंडायु होता है। संस्कार-जो ग्रह अपने शत्रुके घरमें स्थित हो तो पूर्वोक्त आई हुई आयुर्दायका तीसरा हिस्सा उस आयुर्दायमें हीन करदे, नीचमें हो तो आधा करदे, अस्तको प्राप्त होय तौ तीसरा हिस्सा निकाल डाले और वर्गोत्तम अथवा अपने घरमें हो तौ पूर्वोक्त आयुको दूनी करदे और उच्चमें हो अथवा वर्गोच्चमें हो तौ आयुर्दायको तिगुना करदे तौ स्पष्ट पिंडायु होती है॥ १-३॥ इति पिंडायुर्विधिः॥

उदाहरण-जैसे मंगल ४। १। २३। २७ इसका आयुर्दाय निकालना है तौ मंगलमें मंगलकी उच्चराशि ९। २८। ०। ० नहीं घटी तौ १२ युक्त किया तौ १६। १। २३। २७ हुआ। इसमें उच्चको घटाया, तब शेष बचे ६। ३। २३। २७ यह छः से अधिक है, इसलिये इसकी लिप्ता किया अर्थात् कला करलिया। तब ११००३। २७ हुआ; इसको उच्चवर्ष १५ से गुणा, तब १६५०५१। ४५ हुआ। इसमें २१६०० का भाग दिया। तब लब्धि वर्ष ७ मास ७ दिन २० घटी ५४ मंगलका पिंडायु जानना, इसी प्रकार सब ग्रहोंका बनाना॥

ये धर्मकर्मनिरता विजितेन्द्रिया ये ये पथ्यभोजनरता द्विजदेवभक्ताः। लोके नरा दधति ये कुलशीललीलास्तेषामिदं कथितमायुरुदारधीभिः॥ १॥ ये पापलुब्धाश्चोराश्च देवब्राह्मणनिन्दकाः। परदाररता ये च ह्यकाले मरणं ध्रुवम्॥ २॥

जो मनुष्य धर्मकर्ममें रत, जितेन्द्रिय, पथ्य भोजन करनेवाले, देवता ब्राह्मणके भक्त और संसारमें कुलशीललीलाकरके युक्त हैं उनके अर्थ यह आयुर्दाय कहा है। जो मनुष्य पापमें रत, चोर, देवता ब्राह्मणके निंदक और परस्त्रीमें रत हैं उनकी मृत्यु बेसमय होती है अर्थात् यह आयुर्दाय उनके अर्थ ठीक नहीं होता है॥ १॥ २॥

अंशोद्भवं लग्नबलात्प्रसाध्यमायुश्च कर्मोद्भवकर्मवीर्यात्। नैसर्गिकं चन्द्रबलाधिकत्वादायुर्निरुक्तं हि मया विचार्य॥ १॥

अब पिंडायु, नैसर्गिकायु, अंशायु, इनमेंसे कौन लेना चाहिये ? इस आशंकासे कहते हैं कि, लग्न बली होय तौ अंशायु, सूर्य बली होय तौ पिंडायु और चन्द्र बली होय तौ निसर्गायु लेना चाहिये ॥ १ ॥

अथ नैसर्गिकायुः ।

विंशति २० रेक १ द्वितयं २ नव ९ धृति १८ नखा २० स्तथा ।
पञ्चाशच्च ५० शनेर्वर्षाः सूर्यादीनां निसर्गभवाः ॥ १ ॥

बीस २०, एक १, दो २, नव ९, अठारह १८, बीस २०, पचास ५० यह ध्रुवांक वर्ष सूर्यादिकोंके क्रमसे निसर्गायुमें जानना। तदनन्तर स्पष्टग्रहमें अपने अपने ग्रहका परमोच्च राश्यादि हीन करना, फिर शेष यदि छः राशिसे कम हो तौ १२राशि युक्त करके कम करना, फिर शेष यदि छः राशिसे कम हो तौ बारह बारह राशिमें घटाकर शेष रखना और जो छः से अधिक बचा हो तौ वैसाही रहने देना. तदनंतर ग्रहके अपने ध्रुवकसे शेषको गुण देना और राशिके स्थानमें बारहका भाग देकर वर्ष कर लेना तौ नैसर्गिकायु वर्षादि होवेगी और पिंडायुके समान संस्कार करना तौ स्पष्ट होगी ॥ १ ॥

उदाहरण-रवि ० । ८ । ५३ । २० इनमें रविका उच्च ० । १० । ० । ० हीन किया तो नहीं घटा तौ १२ राशि युक्त करके १२ । ८ । ५३ । २० में हीन किया तब शेष ११ । २८ । ५३ । २० छः राशिसे अधिक रहा । इसको सूर्य उच्च ध्रुवकसे २० गुणा । तब २३९ । ७ । ४६ । ४० भया. राशियों १२ का भाग दिया । तब सूर्यका नैसर्गिकायुवर्षादि १९ । ११ । ७ ।४६ । ४० हुआ, सूर्य उच्चराशिमें है अतः तिगुना किया तब ५९ । ९ । २३ । २० स्पष्ट नैसर्गिकायु सूर्यका हुआ ॥

अंशायुः ।

लवादयो ग्रहाः स्थाप्यास्तत्रांशे दिक् १० विहीनता ।
शेषं त्रयं त्रिभिर्गुण्यं खाङ्कमध्ये पुनस्त्यजेत् ॥ १ ॥
विंशोत्तर्या दशावर्षैः स्वकीयैर्गुणयेत्सदा ।
भागं नवति ९० दातव्यं लब्धाङ्कं वर्षसंज्ञकम् ॥ २ ॥

अंशादिक ग्रहोंको स्थापित करै अर्थात् राशिको छोडकर शेष स्थापित करै, तदनंतर अंशोंमें दश हीन करदे, फिर शेष राश्यादि तीनोंको तीनसे गुणाकर देवे। फिर गुणनफलको नब्बे ९० अंशोंमें हीन करै। जो शेष रहै उसको विंशोत्तरी ग्रहके निज२ वर्षसे गुणाकर नब्बे ९० का भाग लेय तौ लब्धि वर्षादि अंशायु होगी ॥ १ ॥ २ ॥

उदाहरण-चन्द्र १ । १९ । ५४ । ५० राशि छोडकर अंशादिस्थापित १९ । ५४ ।५० किया अंशोंमें १० घटाया तब ९ । ५४ । ५० रहे. इनको ३ से गुणा

तब २९ । ४४ । ३० हुए । इसको ९० में हीन किया, शेष ६० । १५ । ३० रहे । अब इनको चन्द्र विंशोत्तरीवर्ष १० से गुणा किया तब ६०२ । ३५ । ०० हुए । इनमें ९० का भाग दिया तब लब्धिवर्षादि अंशायु चन्द्रमाका ६ । ८ । १९ । ४० हुआ, इसी प्रकार और ग्रहोंका बनाना चाहिये ॥

अथ ग्रहायुः ।

राश्यंशकला गुणिता द्वादशनवभिर्ग्रहस्य भगणेभ्यः ।
द्वादशधृतावशेषेऽब्दमासदिननाडिकाः क्रमशः ॥ १ ॥

इष्टग्रहके राश्यादि बारहसे और नौसे अर्थात् एकसौ आठसे १०८ गुणा करदे जो गुणन फल होय वह मासादि ग्रहकी आयु जानना । मासोंमें बारहका भाग देकर वर्ष करलेय. यदि वर्ष बारहसे अधिक आवें तो वर्षोंमें भी बारहका भाग देकर लब्ध त्याग करना शेष वर्ष जाने ॥ १ ॥ इति ग्रहायुः ॥

उदाहरण–बुध ११ । २१ । १३ । २३ राश्यादि है, इसको १०८ से गुणा । तब बुधका मासादि १२६४ । १२ । ९ । २४ आयु हुआ, मासोंमें १२ का भाग दिया । लब्धवर्ष १०५ शेष महीना ४ । यहां वर्ष १२ से अधिक हैं, इसलिये १२ का भाग दिया तब लब्ध ७ व्यर्थ शेष ११ वर्ष हुए इस प्रकार अब बुधका वर्षादि ११ । ४ । १२ । ९ । २४ आयुर्दाय हुआ इसी प्रकार शेष ग्रहोंका बनाना चाहिये ॥

अथ लग्नायुर्दायः ।

होरादयोऽपि चैवं बलयुक्तान्याद्विराशितुल्यानि ।
वर्षाणि प्रयच्छन्ति ह्यनुपाताच्चांशकादिफलम् ॥ १ ॥
वर्गोत्तमस्वराशिद्रेष्काणनवांशके सकृद्द्विगुणम् ।
वक्रोच्चयोस्त्रिगुणितं द्वित्रिगुणत्वे सकृत्त्रिगुणम् ॥ २ ॥
शत्रुक्षेत्रे त्र्यंशं नीचेऽर्द्धं सूर्यलिप्तकिरणाश्च ।
क्षेपयन्ति स्वादायानास्तं याता रविकुजौ शुक्रः ॥ ३ ॥

इति श्रीजन्मपत्रीपद्धतौ भवनेशफललग्नस्वामिफलषड्वर्गफलचतुरशीतियोगफलराजयोगद्वादशभवनफलदीप्तादिग्रहफलनवग्रहचक्रसर्वतोभद्रसूर्यकालानलत्रिनाडीचक्रपंचस्वरचक्रराशिमचक्रचतुर्विंशतिबलाष्टकवर्गफलपिंडायुर्नैसर्गिकायुरंशायुर्ग्रहायुर्लग्नायुरानयनाध्यायश्चतुर्थः ॥४॥

जो लग्न बली हो तौ नवांशतुल्य आयुर्दाय लग्न देता है अर्थात् लग्नके जितने नवांश बीतगये हों उतने वर्ष और वर्तमान नवांश जितना भुक्त होगया हो, उसके कलाकरके उनको बारहसे गुणे फिर उसमें दोसौसे भागदे जो लब्ध मिलै वे महीने हुए जो शेष रहा उसे तीस ३० से गुणे और २०० दो सौसे भागदे लब्ध दिन, शेषको ६० साठसे गुणाकर दोसौसे भागदे जो लब्ध मिले वे दण्ड हुए, इसी तरह वर्ष, मास, दिन, घटी, पल लग्नका दियाहुआ आयुर्दाय हुआ और कोई आचार्य तौ राशितुल्य अर्थात् जितने राशि बीतगये हों उतने वर्ष और लग्नमें वर्तमान राशिको अंशादिमें पूर्वोक्त त्रैराशिक रीति करके महीना आदि जो आवैं उनके सहित वही वर्षादि लग्न दत्त आयुर्दायका प्रमाण कहते हैं। मासादि लानेकी यह रीति है कि-वर्तमान राशिके भुक्तांशोंके कला करके उस कलासमूहको बारह १२ से गुणाकर १८०० अठारह सौसे भागदे जो लब्धि मिले वे महीने हुये और शेषको तीससे गुणाकर अठारह सौका भागदे तो लब्धदिन इत्यादि फल पर्यन्तकर लेवै तौ लग्नदत्त आयुर्दाय होगा। वर्गोत्तममें अपनी राशिमें व द्रेष्काणमें व नवांशमें स्थित ग्रहके आयुर्दायको दोसे गुणादेवै और अपने उच्च स्थानमें स्थित ग्रहके और वक्रीग्रहके आयुर्दायको तीनसे गुणा देवे, मंगलको छोडकर अन्यग्रह शत्रुराशिमें स्थित हों तौ स्वदत्तायुर्दायके तीसरे भागको हरलेते हैं और जो ग्रह नीच राशिमें स्थित हों तथा शुक्र व शनैश्चरको छोडकर जो ग्रह अस्त हो वह अपने दिये हुये आयुर्दायका आधा हरलेता है और बारहवें स्थानमें स्थित पापग्रह स्वदत्तायुर्दायका सर्व भाग, ग्यारहवें स्थित पापग्रह स्वदत्तायुर्दायका अर्द्धभाग व दशवें तीसरा भाग, व नववें चौथा भाग, आठवें पांचवां भाग व सातवें स्थित पापग्रह स्वदत्तायुर्दायका छठा भाग हरलेता है, अन्य स्थानोंमें नहीं। इसी तरह शुभग्रह बारहवें स्थित अर्द्धभाग, ग्यारहवें चौथा भाग, दशवें स्थित शुभग्रह छठा भाग, नववें आठवां भाग व आठवें दशवां भाग और सातवें स्थित शुभ ग्रह स्वदत्तायुर्दायका बारहवां भाग हरलेता है, अन्य स्थानोंमें नहीं। कदाचित् उक्त भावोंमें किसीमें एक ग्रहसे अधिक ग्रह स्थित हों तो उनमेंसे जो बली हो वही ग्रह स्वदत्तायुर्दायका उक्तभाग हरता है॥ १-३ ॥ ये ह्रास उपरोक्त पिंडायु, नैसर्गिकायु, ग्रहायु और लग्नायुमें भी सर्वत्र करना चाहिये ॥

इति श्रीमानसागरीजन्मपत्रीपद्धतौ राजपंडितवंशीधरकृतभाषाटीकायां
चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

पंचमोऽध्यायः ५।

मंगलाचरणम्।

प्रणम्य सर्वज्ञमनन्यचेतसं लसत्तमं ज्ञानमणिं महोदधिम्।
दशाफलं वच्मि महर्षिभाषितं स्वबोधरूपं स्वगुरूपदेशात् ॥१॥

सर्वज्ञ अनन्यचेता, गुणकरके अत्यन्त लसित, ज्ञानकी मणि और अत्यन्त दर्शनीय ऐसे परमेश्वरको प्रणाम करके अपने गुरुके उपदेशसे स्वबुद्ध्यनुसार ऋषियोंकरके भाषित दशाफलको कहता हूं ॥ १ ॥

तत्रादौ विंशोत्तरीदशानयनम्।

सूर्ये विंशतिमो भागः शशिनि द्वादशः स्मृतः। सूर्यषड्भागयुग्भौमदशा चान्तर्दशा भवेत् ॥१॥ आदित्यात्त्रिगुणो राहो रविचन्द्रयुतो गुरुः। सूर्यस्तु द्विगुणो भौमो मिलितस्तु शनिर्भवेत् ॥२॥ बुधश्चन्द्रयुतो भौमः केतुर्मङ्गलवत्सदा। चन्द्रमा द्विगुणः शुक्रः परमायुः प्रकीर्तितम् ॥३॥ षट् ६ दश १० सप्त ७ ष्टादश १८ षोडश १६ नन्देन्दवो १९ मुनिशशाङ्काः १७। सप्त ७ नखा २० वर्षाणां रव्यादीनां यथाक्रमशः ॥ ४ ॥ कृत्तिकामवधिं कृत्वा भरण्यवधि गण्यते। विंशोत्तरीदशाचक्रं षट्त्रिंशद्भिश्च कोष्ठकैः ॥ ५ ॥

एकसौ बीस वर्ष १२० में नवग्रहोंके दशावर्ष कहतेहैं—सूर्यका बीसवां भाग अर्थात् ६ छः वर्ष दशाप्रमाण जानना, बारहवां भाग चन्द्रमाके वर्ष, सूर्यके वर्षोंमें सूर्यके वर्षका छठा भाग युक्त करनेसे भौमके दशावर्ष होते हैं और सूर्यके तिगुने राहु, रवि और चन्द्र युक्त करनेसे गुरु, सूर्यके दूनेमें मंगलके वर्ष युक्त करनेसे शनिके वर्ष होते हैं। चन्द्रमें मंगल युक्त करै तौ बुध और केतु मंगलके समान और चन्द्रमाके दूने शुक्र यह परमायु इस प्रकार जानना। छः ६, दश १०, सात ७, अठारह १८, सोलह १६, उन्नीस १९, सतरह १७, सात ७ और बीस २० ये सूर्यादिकोंके यथाक्रमसे वर्ष जानना अर्थात् सूर्यके छः ६, चन्द्रमाके १०, मंगलके ७, राहुके १८, बृहस्पतिके १६, शनैश्चरके १९, बुधके १७, केतुके ७ और शुक्रके २० वर्ष जानना, यह विंशोत्तरी दशाका क्रम है।

विंशोत्तरीमहादशाचक्रम्।

सू	चं	म	रा	जी	श	बु	के	शु
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०
कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	आ	म	पू
उ	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पू
उ	श्र	ध	श	पू	उ	रे	अ	भ

छत्तीस ३६ कोष्ठकोंमें यथाक्रम वर्ष और कृत्तिका आदि देकर भरणी पर्यन्त नक्षत्र स्थापित करदे तो विंशोत्तरीदशाचक्र स्पष्ट होता है जैसा चक्रमें देखना ॥ १-९ ॥

अन्तर्दशाकरणम्।

दशा दशाहता कार्या नवभिर्भागमाहरेत्।
यल्लब्धं तद्भवेन्मासास्त्रिशद्गुणितं दिनं भवेत् ॥ १ ॥

जिस ग्रहकी अन्तर्दशा करनी हो उस ग्रहके दशावर्षोंको ग्रहके दशावर्षसे गुण देवे, फिर गुणनफलमें दशका भाग दे, लब्ध मास शेषको तीससे गुणकर दशका भाग दे तो दिन इसी प्रकार घटीपलादि निकल आते हैं ॥ १ ॥

उदाहरण–रवि वर्ष ६ को ६ से गुणा तब ३६ हुए इनमें १० का भाग दिया लब्ध मास ३, शेष ६ को ३० से गुणा तब १८० हुए इनमें १० का भाग दिया तब लब्धदिन १८ हुये सूर्यमध्ये सूर्यका अन्तर ३ मास १८ दिन हुआ, चन्द्रमाको अन्तरके वास्ते सूर्यवर्ष छः चन्द्रवर्ष १० से गुणा तौ ६० हुये १० का भाग दिया लब्धि ६ मास हुए इत्यादि ॥

उपदशाकरणम्।

स्वान्तर्दशाद्युवृन्दं च हन्यात्स्वाब्दैर्ग्रहस्य च।
विंशोत्तरशतेनाप्तं १२० घस्राः शेषं कलादिकम् ॥ १ ॥

अन्तर्दशाके दिनकरके अपने २ ग्रह वर्षोंसे गुणा करे फिर गुणनफलमें एकसौ बीसका भागदेय तो दिनादि लब्धि ग्रहकी उपदशा होगी ॥ १ ॥

उदाहरण–रवि अंतर्मासादि ३। १८। ० इसके १०८ दिन हुये और सूर्यके वर्ष ६ से गुणाकिया तौ ६४८ हुये १२० का भाग दिया लब्ध दिन ५, शेष ४८ को ६० से गुणा तब २८८० हुए १२० का भाग दिया लब्धि २४ घटी इस प्रकार सूर्यके अंतरमें सूर्यकी उपदशा ५ दिन २४ घटी जानना तथा १०८ को चन्द्रवर्ष १० से गुणा तब १०८० हुये १२० का भाग दिया लब्ध ९ दिन अर्थात् सूयक अंतरम चन्द्रकी उपदशा ९ दिनकी हुई इत्यादि ॥

अथ फलदशा।

स्वीयदशाघटीवृन्दं हतं स्वाब्दैर्ग्रहस्य च।
विंशोत्तरशतेनाप्तं १२० लिप्ताशेषं कलादिकम् ॥ १ ॥

उपदशा बनानेकी रीतिके अनुसार उपदशाके दिनादिको घटी करके ग्रहके अपने २ वर्षसे गुणाकरदे, फिर उस गुणनफलमें एकसौ बीसका भागलेय तौ लब्धि घटी आदि फलदशा होगी ॥ १ ॥

कृष्णपक्षे दिवा जन्म शुक्लपक्षे यदा निशि।
विंशोत्तरी दशा तस्य शुभाशुभफलप्रदा ॥ २ ॥

जिसका कृष्णपक्षमें दिनका जन्म हो और शुक्लपक्षमें रात्रिका हो उसको विंशोत्तरीदशा शुभाशुभफलदायक होती है ॥ २ ॥ इति फलदशा।

नक्षत्रायुःकरणम्।

जन्मऋक्षगतनाडिकागणो विंशताधिकशतेन १२० गुण्यते।
भज्यते नवति ९० संख्यया ततो लब्धशुद्धपरमायुषः स्फुटः ॥ १ ॥

जन्मसमय जो नक्षत्र हो उसकी गतनाडियों अर्थात् भयातको एकसौ बीससे गुण देवे गुणन फलमें नब्बे ९० का भाग लेय तौ लब्ध शुद्ध परमायु स्पष्ट होती है ॥ १ ॥

अपरप्रकारः।

परमायुःप्रमाणेन गणयेद्गतनाडिकाः।
नक्षत्रस्य हरेद्भागं नवप्राप्तं विशोधयेत् ॥ २ ॥

परमायुप्रमाण करके जन्मसमय नक्षत्रकी गतनाडियोंको गुणाकर दो जगह स्थापित करै फिर एक जगह नक्षत्रकी कुल नाडियों अर्थात् भभोगमें भाग ले जो लब्ध मिलै उसको दूसरी जगह हीन करदे जो बचे उसमें नब्बे ९० का भाग देय तौ लब्ध शुद्ध परमायु होती है. परमायुके प्रमाणसे बीती नाडी गुणै फिर नक्षत्रका भाग देके नौ छोड देवे ॥ २ ॥ भयातभभोग–जन्मसमय जो नक्षत्र हो उस नक्षत्रकी जितनी घटिकादि इष्ट समय गत हो उसको भयात कहते हैं और गत और गम्य घट्यादिको एकत्र करनेसे जो हो वह भभोग होता है ॥

आयुर्दायोपरि दशानयनप्रकारः।

दशभिर्वर्षे मासो मासचतुष्केण लभ्यते दिवसः।
दिवसद्वयेन घटिका युग्मेन पलमेकम् ॥ १ ॥

अब आयुर्दायपर दशा लानेकी रीतिको कहते हैं–पूर्वोक्त प्रकारसे जितने वर्षादि आयुर्दाय आया हो उसमें जितने वर्ष हों तिनमें दशका भागदे तौ मासादि लब्ध होगा और जितने महीने हों उनमें चारका भाग देना तौ दिनादि लब्ध होगा और जितने दिन हों उनमें दोका भाग देना तो घट्यादि लब्ध होगा. इस प्रकार मासादि ध्रुवांक तैयार होगा, फिर जिस ग्रहके दशावर्षादि लाना हो (विंशोत्तरी या अष्टोत्तरीसे) उस ग्रहके वर्षगणसे ध्रुवांकको गुणदेवे तो उस ग्रहकी स्पष्ट दशावर्षादि होगी। इसी उपरोक्त रीत्यनुसार अंतर्दशा, उपदशा, फलदशा भी करनी चाहिये ॥ १ ॥

उदाहरण-आयुर्दायवर्षादि ७९ । ८ । ४ । ० है तो वर्षों ७९ में १० का भाग दिया । तब लब्धमास ७ शेष ९ को ३० से गुणा तौ १९० हुये । १० का भाग दिया. लब्धदिन १९ शेष शून्य० । फिर महीने ८ में ४ का भाग दिया, लब्धादिन२ शेष शून्य, फिर दिन ४ में २ का भाग दिया, लब्ध घटी २ शेष शून्य० । अब उपरोक्त लब्धियों ७ । १९ । २ । २ । को एकत्र किया तौ मासादि ७ । १७ । २ यह ध्रुवांक भया, अब विंशोत्तरीसे सूर्यकी दशा लाना है तो सूर्यके वर्ष ६ से ध्रुवांक ७ । १७ । २ को गुणा, तब मासादि ४९ । १२ । १२ हुआ । मासोंमें १२ का भाग देकर वर्ष करलिया तब सूर्यदशा वर्षादि ३ । ११ । १२ । १२ । हुई, इसी प्रकार और ग्रहोंकी दशा करना इसी प्रकार अंतर्दशा, उपदशा, फलदशा बनाना ।

अष्टोत्तरीदशानयनप्रकारः ।

अष्टादशांशः क्रियतेऽशुमाली लब्धं द्विसार्द्धं क्रियते हिमांशुः ।
त्रिभागसूरः सकलश्च भौमस्तस्य त्रिंशः सकलः शशीजः ॥ १ ॥
भानोस्त्रिभागः कुजयुक्तसौरिरर्द्धं कुजश्चन्द्रयुतो गुरुश्च ।
भानोर्द्विगुण्यः क्रियते च राहुर्हिमांशुभानुसहितश्च शुक्रः ॥ २ ॥

एकसौ आठ १०८ वर्षका ध्रुवांक है । अठारहवां हिस्सा सूर्य है. सूर्यके ढाई गुने चन्द्रमा, सूर्यका तीसरा भाग और संपूर्ण भाग मंगल है, सूर्यका तीसरा भाग और संपूर्ण चन्द्र मिलकर बुध है, सूर्यका तीसरा भाग और मंगल मिलकर शनि है, आधा मंगल और चन्द्रमा मिलकर बृहस्पति होता है, सूर्य दुगुने राहु है और चन्द्रमा सूर्य मिलकर शुक्र होता है । अर्थात् सूर्यकी दशा ६ वर्षकी, चन्द्रमाकी पंद्रह १५ वर्षकी, मंगलकी आठ ८ वर्षकी, बुधकी सत्रह १७ वर्षकी, शनैश्चरकी दश १० वर्षकी, बृहस्पतिकी उन्नीस १९ वर्षकी और शुक्रकी इक्कीस २१ वर्षकी दशा कही है, जैसा चक्रमें स्पष्ट है । इसी प्रकार दशांतर्दशोपदशाफलदशा सभी बन जाता है ॥ १ ॥ २ ॥

दशाभुक्तभोग्यप्रकारः ।

जन्मकालीन स्पष्टचन्द्रमाकी राश्यादिका कलापिंड बनाले और आठसौ ८००का भाग देय, लब्धि गतनक्षत्र होगा । शेषको जिस ग्रहकी दशामें जन्म हो उस ग्रहके वर्षोंसे गुणाकरे । फिर उस गुणनफलमें ८०० आठसौका भागदेय, लब्ध वर्ष । शेषको १२ बारहसे गुणाकर वही ८०० आठसौसे भाग लगावै लब्ध महीना, शेषको ३० तीससे गुणै और वही आठसौका भाग देवे, लब्ध दिन इत्यादि । इस प्रकार वर्ष मास दिन घट्यादि जो आता है वह दशाका भुक्त समय जानना । फिर इसको ग्रहदशाके कुल वर्षमें घटायदेय, जो शेष बचै वह भोग्यसमय दशाका होता है अर्थात् जन्मसमयसे उक्तसमयतक वह दशा और भोगैगी, अथवा भयातकी घट्यादिको जन्मसमयकी ग्रह दशावर्षसे गुणा करै, फिर उस गुणनफलमें भभोगसे भाग देय तौ लब्ध भुक्तदशा

वर्ष होंगे, भुक्तको कुल वर्षोंमें हीन करै तौ भोग्यदशाका समय मिलैगा। सूर्यनक्षत्र गति मास १८ चन्द्र ६० मंगल २४ बुध ६८ शनि ३० गुरु ७६ राहु ३६ शुक्र-दशामें नक्षत्रगति मास ८४ ये नक्षत्रगति जानना॥

अष्टोत्तरीदशाक्रमः।

चत्वारि भानि पापेषु शुभेषु त्रीणि योजयेत्। रौद्रादिमृगपर्यन्तं लिखेदभिजिता सह॥ १॥ षडादित्ये च वर्षाणि चन्द्रे पञ्चदशैव च। मङ्गले चाष्टवर्षाणि बुधे सप्तदशैव च॥ २॥ शनौ च दशवर्षाणि गुरावेकोनविंशतिः। राहौ द्वादशवर्षाणि शुक्रस्याप्येकविंशतिः॥ ३॥

पापग्रहोंमें चार नक्षत्र और शुभग्रहोंमें तीन नक्षत्र जोडै, आर्द्रासे मृगशिर तक अभिजित् सहित सब नक्षत्र रक्खैं। अष्टोत्तरीदशामें सूर्यकी छः वर्ष, चन्द्रमाकी पन्द्रह वर्ष, मंगलकी आठ वर्ष, बुधकी सत्रह वर्ष, शनैश्चरकी दशवर्ष, बृहस्पतिकी उन्नीस वर्ष, राहुकी बारह वर्ष और शुक्रकी इक्कीस वर्षकी दशा होती है, इस तर-हसे सब मिलकर एक सौ आठ वर्ष होते हैं॥ १-३॥

अथ अन्तर्दशाकरणम्।

दशा दशाहता कार्या नवभिर्भागमाहरेत्।
यल्लब्धं तद्भवेन्मासास्त्रिंशद्गुणितं दिनं भवेत्॥ १॥

दशाके वर्षको दशाके वर्षसे गुणा करै, फिर उसमें नवका भाग देय, लब्ध मास-शेषको तीससे गुणाकर नवका भाग देय लब्ध दिन इत्यादि॥ १॥

अथ उपदशाकरणम्।

अन्तर्दशाऽहर्गण एव गुण्यः स्वमूलवर्षैश्च दशाष्टभक्तः १०८। पुनःपुनः षष्टि ६० गुणावशेषे दिनादयश्चोपदशाक्रमोऽयम्॥ १

अंतर्दशाके दिनकरके ग्रहदशावर्षसे गुणाकरै फिर एकसौ आठका भाग देय, शेषको फिर साठसे गुणाकरै और एकसौ आठका भाग लेताजाय तौ उपदशा स्पष्ट होती है॥ १॥

अथ फलदशा।

उपदशादिवसाः खरसा ६० हता निजघटीसहिताः स्वदशाहताः। वसुखचन्द्रहताश्च दिनादयः फलदशाक्रम एव पुनःपुनः॥ १॥

उपदशाके दिवसोंको साठसे गुणाकर उपदशामें यदि घटी हो तौ उसमें युक्त करदेय, फिर अपने ग्रहदशावर्षसे गुणाकरै, गुणनफलमें एक सौ आठका भाग देवै तौ उपदशामध्यमें फलदशा होती है । विंशोत्तरीमें उदाहरणोंको देखना ॥ १ ॥

दशाप्यष्टोत्तरी शुक्ले कृष्णे विंशोत्तरी मता ।
गणनीया दशा सुज्ञैस्तदुमेश्वरसंमतम् ॥ १ ॥

शुक्लपक्षमें जिसका जन्म हो उसको अष्टोत्तरी और जिसका कृष्णपक्षमें जन्म हो उसको विंशोत्तरी दशा ग्रहण करना चाहिये ऐसा स्वरशास्त्रका मत है ॥ १ ॥

अथ नक्षत्रायुः ।

मासाश्चतुर्दशाश्चैव दिनं द्वादशमेव च ।
एवं कृतेऽब्दमानं यत्तत्त्याज्यं परमायुषम् ॥ १ ॥

पूर्वोक्तरीत्यनुसार जो आयुर्दाय आया हो उसमें चौदह महीने और बारह दिन हीन करदेय तो परमायु होती है ॥ १ ॥

नक्षत्रभोगनाड्यश्च युतास्त्रिंशद्धता रसैः ।
बाणभक्तेन चाब्दानामष्टोत्तर्यादि सूरिभिः ॥ १ ॥

भोग्यजन्मनक्षत्रकी घटियोंमें तीस युक्त करदे फिर छः से गुणा करे, पांचका भाग लेय जो लब्ध वर्षादि आवे वह अष्टोत्तरीदशामें नक्षत्रायु जानना ॥ १ ॥

अथायुर्दायोपरि दशानयनम् ।

तत्रादौ ध्रुवानयनम् ।

नवभिर्वर्षैर्मासैः शेषमेकगुणं कुरु । मासान् क्षिप्त्वा ततस्त्रिंशद्गुणं तत्र दिनं क्षिपेत् ॥ १ ॥ अष्टोत्तरशतेना १०८ प्तं दिनं तद्ध्रुवका बुधाः । तच्च षष्टिगुणं कृत्वा तन्मध्ये घटिकाः क्षिपेत् ॥ २ ॥ अष्टोत्तरशते १८० भागं लब्धाङ्के घटिका वदेत् । शेषं षष्टि ६० गुणं कृत्वा सुचेन्द्रैर्भागमाहरेत् ॥ ३ ॥ लब्धाङ्के च पलं ज्ञेयं शेषं षष्टि- ६० गुणं कुरु । अष्टोत्तरशतैर्भागं लब्धं तद्विपलं वदेत् ॥ ४ ॥

अब ध्रुवांक लानेको कहते हैं—आयुर्दाय वर्षादिको स्थापित कर वर्षोंमें नवका भाग दे लब्ध मास, शेषको एकसे गुणै । फिर जो आयुर्दायमें मास हो उनको युक्त करै, फिर तीससे गुणाकर जो दिन हो उनको युक्त करै, फिर एकसौ आठका भाग लेय लब्ध दिन, शेषको साठसे गुणकर यदि घटी हों तौ युक्त करदेय, फिर वही

एकसौ आठका भाग देय, लब्ध घटी शेषको६०से गुणा करै. यदि पल हों तौ युक्त करके एक सौ आठका भागदेय, लब्ध पल शेषको ६० से गुणाकर वही एकसौ आठका भाग देय तौ लब्ध विपल होंगे. इस प्रकार मासादि ध्रुवांक होगा, फिर जिस ग्रहकी दशा लानी हो उस ग्रहके अष्टोत्तरी दशावर्षसे ध्रुवांकको गुणदेय और महीनोंमें बारहका भाग देकर वर्ष करलेवे तौ उस दशाके वर्षादि होंगे । इसी प्रकार ग्रहदशाके वर्षादिद्वारा ध्रुवा लाकर अपने २ मूलदशाके वर्षोंसे गुणा करै तौ अंतर्दशा होवै और अंतर्दशाकरके उपदशा और उपदशाकरके फलदशा पूर्वोक्तरीत्यनुसार बनाना चाहिये ॥ १–४ ॥ इत्यष्टोत्तरीदशानयनप्रकारः ॥

सन्ध्यादशाविधिः ।

परमायुर्दशांशा च स्फुटं सन्ध्या भवेत्ततः ।
स्वलग्नाधिपतेरादौ ततोऽन्येषु ग्रहेषु च ॥ १ ॥
यावद्वर्षाणि चन्द्रस्य दशा विंशोत्तरीमते ।
तावद्वर्षप्रमाणा च संध्या भवति निश्चितम् ॥ २ ॥

परमायुका दशांश है वही संध्यादशाके वर्ष जाननी । विशेषता यह है कि, प्रथम सन्ध्यादशामें जन्मलग्नके स्वामीकी दशा होती है तिसके बाद क्रमसे और ग्रहोंकी दशा होती है । जैसे मेषलग्न है तौ मेषके स्वामी मंगलकी, प्रथम १२ वर्षकी दशा जानना । तिसके बाद बुधकी, फिर गुरुकी, शुक्रकी, शनिकी, राहुकी, केतुकी, फिर सूर्यकी, फिर चन्द्रमाकी बारह वर्ष प्रत्येक दशाका प्रमाण जानना। विंशोत्तरीदशामें चन्द्रमाके दशाके वर्षसमान अर्थात् दशवर्ष सन्ध्यादशाका प्रमाण कहा है ॥ १ ॥ २ ॥

पाचकदशाविधिः ।

सन्ध्या रसगुणा कार्या चन्द्रवह्नि ३१ हृता फलम् ।
प्रथमे कोष्ठके स्थाप्यमर्द्धमर्द्धं त्रिकोष्ठके ॥ १ ॥
त्रिभागं वसुकोष्ठेषु लिखेद्विद्वान्प्रयत्नतः ।
एवं द्वादशभावेषु पाचकानि प्रकल्पयेत् ॥ २ ॥

संध्याके वर्षप्रमाणको छः से गुणा करके इकतीस ३१ से भाग लेय, जो लब्ध होय वर्षादि उसको प्रथमभाग(व)में स्थापित करै । फिर प्रथमका आधा २ तीन कोष्ठकोंमें रक्खे, फिर प्रथमका तीसरा भाग आठ कोष्ठकोंमें स्थापित करैतौ पाचकदशा स्पष्ट होती है ॥ १ ॥ २ ॥

बुधदशावर्ष १७ तन्मध्येअंतर्दशा.

बु.	श.	गु.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.
२	१	२	१	३	०	२	१
८	६	११	१०	३	११	४	३
३	२६	२६	२०	२०	१०	१०	३
२०	४०	४०	०	०	०	०	२०

शनिदशावर्ष १० तन्मध्येअंतर्दशा.

श.	गु.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.
०	१	१	१	०	१	०	१
११	९	१	११	६	४	८	६
३	३	१०	१०	२०	२०	२६	२६
२०	२०	०	०	०	०	४०	४०

शुक्रदशावर्ष २१ तन्मध्येंतर्दशा.

शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	गु.	रा.
४	१	२	१	३	१	३	२
१	२	११	६	३	११	८	४
०	०	०	२०	२०	१०	१०	०
०	०	०	०	०	०	०	०

सूर्यमध्येसूर्यांतर्दशायाउपदशा.

र.	चं.	मं.	बु.	श.	गु.	रा.	शु.
०	०	०	०	०	०	०	०
६	१६	८	१८	११	२१	१३	२३
४०	४०	५३	५३	६	६	२०	०
०	०	२०	२०	४०	४०	०	०

सूर्यमध्येबुधांतर्दशामध्येउपदशा.

बु.	श.	गु.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.
१	१	१	१	२	०	१	०
२३	१	१९	७	६	१८	१७	२५
३१	२८	४८	४६	६	५३	१३	११
६	५३	५३	४०	४०	२०	२०	६
४०	२०	२०	०	०	०	०	४०

रविमध्येशन्यंतर्दशामध्येउपदशा.

श.	गु.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.
१	१	०	१	०	०	०	१
१८	५	२२	८	११	२७	१४	१
३१	११	१३	५३	६	४६	४८	२८
६	६	२०	२०	४०	४०	५३	५३
४०	४०	०	०	०	०	२०	२०

गुरुवर्ष १९ तन्मध्येअंतर्दशा.

गु.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.
३	२	३	१	२	१	२	१
४	१	८	०	७	४	११	९
३	१०	१०	२०	२०	२६	२६	३
२०	०	०	०	०	४०	४०	२०

राहुवर्ष १२ तन्मध्येअंतर्दशा.

रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	गु.
१	२	०	१	०	१	१	२
४	४	८	८	१०	१०	१	१
०	०	०	०	२०	२०	१०	१०
०	०	०	०	०	०	०	०

सूर्यमध्येचंद्रांतर्दशायामध्येउपदशा.

चं.	मं.	बु.	श.	गु.	रा.	शु.	सू.
०	०	१	०	१	१	१	०
११	२२	१७	२७	२२	३	२८	१६
४०	१३	१३	४६	४६	२०	२०	४०
०	२०	२०	४०	४०	०	०	०

सूर्यमध्येभौमांतर्दशामध्येउपददशा.

मं.	बु.	श.	गु.	रा.	शु.	र.	चं.
२	०	०	०	०	१	०	०
११	२५	१४	२८	२७	१ ६	८	२२
५१	११ ६	४८	८ ५३	४६ ४१	४०	५३ २०	१३
६ ४०	४०	५३ २०	२०	०	०	०	३० ९

रविमध्येगुरोरंतर्दशामध्येउपदशा.

गु.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.
१	१	२	०	१	०	१	१
६	१२	१३	२१	२२	२८	२९	५
५१	१३	५३	६	४६	८	४८	११
१८	२०	२०	४०	४०	५३	५३	६
४०	०	०	०	०	२०	२९	४०

रविमध्येराहोरंतर्दशामध्येउपशा.

रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	गु.
०	१	०	०	०	१	०	०
२६	१६	१३	१७	१७	७	२२	१२
४०	४०	२०	४६	४६	४६	१३	१३
०	०	०	४०	४०	४०	२०	०
०	०	०	०	०	०	०	०

रविमध्ये शुक्रांतर्दशामध्येऽपदशा.

शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	गु.	रा.
२	०	१	१	२	२१	२	१
२१	२३	२८	१	६	३८	१३	१६
२०	२०	०	६	६	५३	५३	४०
० ०	० ०	० ०	४० ०	४० ०	२० ०	२० ०	० ०

चंद्रमध्ये चंद्रांतर्दशायामुपदशा.

चं.	मं.	बु.	श.	गु.	रा.	शु.	र.
३	१	२	२	४	२	४	१
१४	२५	२८	९	११	२३	२५	११
१०	३३	३	२६	५६	२०	५०	४०
०	२०	२०	४०	४०	०	०	०

चंद्रमध्ये शन्यन्तर्दशायामुपदशा.

श.	गु.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.
१६	५	१	३	०	२	१	२
१७	२७	२५	७	२७	९	७	१८
४६	५७	३३	१२	४६	२६	२	४२
४०	४६ ४०	२० ०	२० ०	४० ०	४० ०	१३ २०	१३ २०

चंद्रमध्ये गुरोरन्तर्दशायामुपदशा.

गु.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.
५	३	६	१	४	२	४	२
१६	१५	४३	२२	११	१०	२९	२७
४७	३३	२०	४६	५६	२२	३२	५७
४६ ४०	२० ०	०	४०	४०	१३ २०	१३ २०	४६ ४०

चंद्रमध्ये सूर्यान्तर्दशायामुपदशा.

र.	चं.	मं.	बु.	श.	गु.	रा.	शु.
०	१	०	१	०	१	१	१
१६	११	२२	१७	२७	२२	३	२८
४०	४०	१३	१३	४६	४६	२०	२०
० ०	०	२०	२०	४०	४०	०	०

चंद्रमध्येभौमान्तर्दशायामुपदशा.

मं.	बु.	श.	गु.	रा.	शु.	र.	चं.
०	१	०	७	० २३	१	०	०
१५	२	१९	३१	४२	११	११	२९
४८	३४	४५	५१ ६	१३	२८	२८	३७
८ ५३ २०	४८ ५३ २०	११ ६ ४०	४०	२०	५३ २०	५३ २०	४६ ४०

चंद्रमध्येभौमान्तर्दशायामुपदशा.

मं.	बु.	श.	गु.	रा.	शु.	र.	चं.
०	२	१	१०	१	२	०	१
२९	२	२७	२२	१४	१७	२२	२५
३७	५७	१३	१३	२६	४६	१३	३३
४६ ४०	४६ ४०	२०	२०	४०	४०	२०	२०

चंद्रमध्ये बुधान्तर्दशायामुपदशा.

बु.	श.	गु.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.
४	२	४	३	५	१	३	१
१३	१८	२९	४	१५	७	२८	२
४७	४६	३२	२६	१६	१३	३	५७
४६ ४०	१३ २०	१३ २०	४० ०	४० ०	२० ०	२० ०	४६ ४०

चंद्रमध्ये राहोरंतर्दशायामुपद०

रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	गु.
२	३	१	२	१	३	१	३
६	२६	३	२३	१४	४०	२५	१५
४०	४०	२७	२०	२६	२६	३३	३३
० ०	० ०	० ०	० ०	४० ०	४० ०	० २०	१० ०

चंद्रमध्ये शुक्रान्तर्दशायामुपदशा.

शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	गु.	रा.
६	१	४	१	५	३	६	३
२४	२८	२५	१७	१५	७	४	२६
१०	२०	५०	४६	१६	१३	४३	४०
० ०	० ०	० ०	४० ०	४० ०	२० ०	२० ०	० ०

भौममध्ये बुधांतर्दशायामुपद०

बु.	श.	गु.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.
२	१	२	१	२	०	२	१
११ २१	११ ५८	१९ ४५	२० ३२	२८	२५	२	३
२८	३१	११	१३	८	११	५७	३४
५३ ०	८ ४०	६ ४०	२०	५३ २०	६ ४०	४६ ४०	४८ ५३ २०

भौममध्ये शन्यन्तर्दशायामुपदशा.

श.	गु.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.
०	१	०	१	०	१	०	१
२४	१६	२९	१	१४	७	१९	११
४१	५४	३७	५१	४८	२	४५	५६
२८ ५३ २०	४८ ५३ २०	४६ ४०	६ ४०	५३ २०	१७ २०	११ ४६	३ ६ ४०

गुरोरन्तर्दशायांउपदशाभौममध्ये.

गु.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.
१ २९	१ २६	३ ८	० २८	२ १०	१ ७	२ १९	१ १९
८ ८	१७ ४६	३१ ६	८ ५३	१२ १३	३१ ५१	४५ ११	५४ ४८
५३ २०	४०	४०	२०	२०	६ ४०	६ ४०	५३ २०

भौममध्ये चंद्रान्तर्दशायामुपदशा.

चं.	मं.	बु.	श.	गु.	रा.	शु.	र.
१ २५	१ १९	२ २	१ ७	२ १०	० १४	२ १७	० २२
६१	३७	५७	२	२२	२६	४६	३३
२०	४६ ४०	४६ ४०	१३ २०	१३ २०	४० ०	४० ०	२० ०

राहोरन्तर्दशायामुपदशाशुक्रमध्ये.

रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	गु.
२ १५	४ १२	१ ७	३ ४	१ २०	३ १७	२ २	३ २९
३३	१३	४६	२६	२२	२	५७	३७
२० ०	२० ०	४० ०	४० ०	१३ २०	१३ २०	४६ ४०	४६ ४०

राहोरन्तर्दशायांउपदशाभौममध्ये.

रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	गु.
१	२	०	१	०	१	०	१
५ ३३	६ १६	१७ ४६	१४ २९	२३ ४२	२० २२	२९ ३७	२६ १७
२० ०	२० ०	४० ०	४० २०	१३ २०	१३ २०	४६ ४०	४६ ४०

बुधमध्येबुधान्तर्दशायाउपदशा.

बु.	श.	गु.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.
५ १	२ २९	५ १९	३ १७	६ ७	१ २३	४ १३	२ १०
३८ ८	११ ५१	२८ ३१	२ १३	१८ ५३	३१ ६	४७ ४६	२१ २८
५३ २०	६ ४०	६ ४०	२० ०	२० ०	४० ०	४० ०	५३ २०

बुधमध्ये शुक्रान्तर्दशायामुपदशा.

शु.	र.	चं	मं.	बु.	श.	गु.	रा.
७ २१	२ ६	५ २५	२ २८	६ ७	३ २०	६ २९	४ १२
२३	६	१६	८	१८	११	२१	१३
२० ०	४० ०	४० ०	५३ २०	५३ २०	६ ४०	६ ४०	२० ०

भौममध्ये शुक्रान्तर्दशायामुपदशा.

शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	रा.	गु.
२	१	२	१	२	१	३	२
१८ १३	१ ६	१७ ४६	११ २८	२८ ८	११ ५१	८ ३१	२ १३
२० ०	४० ०	४० ०	५३ २०	५३ २०	६ ४०	६ ४०	२० ०

बुधमध्ये शनेरन्तर्दशायामुपदशा.

श.	गु.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.
१ २२	३ ४	२ २	३ २०	१ १	२ १८	१ ११	२ २९
२८ ८	४१ २८	५७ ४६	११ ६	२८ ५३	४२ १३	५८ ३१	११ ५१
५३ २०	५३ २०	४० ०	४० ०	२० ०	२० ०	६ ०	६ ०

बुधमध्ये बुधांतर्दशायामुपदशा.

र.	चं.	मं.	बु.	श.	गु.	रा.	शु.
० १८	१ १७	० २५	१ २३	१ १	१ २९	१ ७	२ ६
५३	३१	११	१३	२८	४८	४६	६
२० ०	२० ०	६ ४०	६ ४०	५३ २०	५३ २०	४० ०	४० ०

भौममध्ये सूर्यान्तर्दशायामुपदशा.

र.	चं.	मं.	बु.	श.	गु.	रा.	शु.
० ८	० ८	० ११	० २५	० १४	० २६	० १७	० १
५३	५३	५१	११	४८	४६	४६	८
२० ०	२० ०	६ ४०	६ ०	५३ २०	५३ ०	४० ०	४० ०

गुरोरन्तर्दशायामुपदशाबुधमध्ये.

गु.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.
६ ९	३ २९	६ २९	० २९	४ २९	२ २९	५ २९	३ २९
२४ ४९	३७ ४६	२१ ६	४८ ५३	३२ १३	४५ ११	२८ ३१	४१ २८
५३ २०	४० ०	४० ०	२० ०	२० ०	६ ४०	६ ४०	५३ २०

बुधमध्ये चंद्रान्तर्दशायामुपदशा.

चं.	मं.	बु.	श.	गु.	रा.	शु.	र.
३ २८	२ २	४ १३	२ २८	४ २९	३ ४	५ १५	१ १७
३	५७	४७	४२	३२	२६	१६	१३
२० ०	४६ ४०	४६ ४०	१३ २०	१३ २०	४० ०	४० ०	२० ०

बुधमध्येभौमांतर्दशायामुपदशा.

मं.	बु.	श.	गु.	रा.	शु.	र.	चं.
१ ३	२ ११	१ ११	२ १९	१ २०	२ २८	० ३५	२ २
३४ ४८	२१ २८	५८ ३१	४५ ११	२२ १३	८ ५३	११ ६	५७ ४६
५३ २०	५३ २०	६	६ ४०	२०	२०	४०	४०

शनिमध्येशन्यंतर्दशायामुपदशा.

श.	गु.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.
३ ०	२८ ३८	७ २	२ ४	० १८	१ १६	० २४	१ २२
५१ ५१	३१ ६	१३ २०	४८ ५३	३१ ६	१७ ४६	४१ २८	२८ ८
४६ ४०	४०		२०	४०	४०	५३ २०	५३ २०

शुक्रान्तर्दशायामुपदशा.

गु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	गु.	रा.
४ १६	१ ८	३ ७	१ २१	३ २०	२ ४	४ ३	२ १७
६ ४०	५३ २०	१३ २०	५१ ६	११ ६	४८ ५३	८ ५३	४६ ४०
०	०	०	४०	४०	२०	२०	०

सूर्यान्तर्दशायामुपदशा.

र.	चं.	मं.	बु.	श.	गु.	रा.	शु.
० ११	० २७	० १४	१ १	० १८	१ ५	० २८	१ ८
६	४६	४८	२८	३१	११	१३	५३
४० ०	४० ०	५३ २०	५३ २०	६ ४०	६ ४०	२० ०	२० ०

बुधांतर्दशायामुपदशा.

बु.	श.	गु.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.
२ १८	० २५	३ ९	२ २	३ ३०	१ १	२ १८	११
११	२८	४१	५७	११	२८	४२	५८
११	८	२८	४६	८	५३	१३	३१
६ ४०	५३ २०	५३ २०	४० ०	४० ०	२० ०	२० ०	६ ४०

गुरुमध्येगुरोरन्तर्दशायामुपदशा.

गु.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.
७ १	४ १३	७ २३	२ ६	५ १६	२ २८	६ २९	३ ३१
४१	४२	३८	५१	४७	८	२४	२५
५१	१३	५३	६	४६	८	४८	६
६ ४०	२० ०	२० ०	४० ०	४० ०	५३ २०	५३ २०	४० ०

गुरोरन्तर्दशायामुपदशा.

गु.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.
३ २१	२ १०	४ ३	१ ५	२ २७	१ १६	३ ९	१ २८
२५ ११	२२ १३	८ ५३	११ ६	५७ ४६	५४ ४८	४१ २८	३८ ३१
६ ४०	० ०	२० ०	४०	४०	५३ २०	५३ २०	६ ४०

राहोरन्तर्दशायामुपदशा.

रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	गु.
१ १४	२ १७	० २२	१ २५	० २९	२ २	१ ७	२ १०
२६	४६	१३	३३	३७	५७	२	२२
४० ०	४० ०	२० ०	२० ०	४६ ४०	४६ ४०	१३ २०	१३ २०

चन्द्रान्तर्दशायामुपदशाशनि.

चं.	मं.	बु.	श.	गु.	रा.	शु.	र.
२ ९	१ ७	२ १८	२१ २७	२ २७	१ २५	३ ७	० २७
२६	२	४२	१८	५७	३३	१३	४९
४० ०	१३ २९	१३ ०	१७ ४६	४६ ४०	० ०	२० ०	४० ०

भौमान्तर्दशायामुपदशाशनि.

मं.	बु.	श.	गु.	रा.	शु.	र.	चं.
० १९	१ ११	० २४	१ १६	० २९	१ २१	० १४	१ १७
४५ ११	५८ ३१	४० २८	५४ ४६	३७ ४६	५१ ६३	४८ ५३	१३ २०
६ ४०	६ ४०	५३ २०	५३ २०	४० ०	४० ०	२० ०	२० ०

सूर्यान्तर्दशायामुपदशागुरु०

रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	गु.
२	४	१	३	१	३	२	४
२४	२७	१२	१५	१६	२९	१०	१३
२६	४६	१३	३३	१७	३७	२२	४२
४० ०	४० ०	२० ०	२० ०	४६ ४०	४६ २०	१३ २०	१३ २०

शुक्रान्तर्दशायामुपदशागुरु.

शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	गु.	रा.
८	६	६	३	६	४	७	४
१८	४३	४	८	२९	३	२२	२७
३६	४३	४३	३१	२१	८	३८	४६
४० ०	२० ०	२० ०	६ ४०	६ ४०	५३ २०	५३ २०	४०

सूर्यान्तर्दशायामुपदशागुरु.

र.	चं.	मं.	बु.	श.	गु.	रा.	शु.
० २१	१ २७	० २८	१ २९	१ ५	२ ६	१ १२	२ १३
६ ४०	४६ ४०	८ ५३	४८ ५३	११ ६	५१ ८	१३ २०	५३ २०
०	०	२०	२०	४० ०	४० ०	०	०

चंद्रान्तर्दशामध्येगुरोरुपदशा.

चं.	मं.	बु.	श.	गु.	रा.	शु.	र.
४ ११	२ १०	४ २९	२ २७	५ १६	३ १५	९ ४	१ २२
५६	२२	३२	५७	४७	३३	४३	४६
४० ०	१३ २०	१३ २०	४६ ४०	४६ ४०	२० ०	२० ०	४० ०

शनेरन्तर्दशायामुपदशागुरु.

श.	गु.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.
१ ३८	३ २१	२ १०	४ ३	१ ५	३ ५७	१ १९	३ ९
३८ ३१	२५ ११	२२ १३	८ ५३	११ ६	५७ ४६	५४ ४८	४१ २८
६ ४०	६ ४०	२० ०	२० ०	४० ०	४० ०	५३ ०	५३ ०

राहोरंतर्दशायामुपदशा.

रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	गु.
१	३	०	२	१	२	१	२
२३	३	२६	६	५	१५	१४	२४
२० ०	२०	४०	४०	३३ २०	३३ २०	२६ ४०	२६ ४०

राहुमध्येचन्द्रान्तर्दशायामुपदशा.

चं.	मं.	बु.	श.	गु.	रा.	शु.	र.
२	१	३	१	३	२	३	१
२३	१४	४	२५	१५	६	२६	३
२०	२६ ४०	२६ ४०	३३ २०	३३ ०	४० ०	४० ०	२० ०

राहुमध्येभौमान्तर्दशायाउपदशा.

मं.	बु.	श,	गु	रा.	शु.	र.	चं.
०	१	०	१	१	२	०	१
२३ ४२	२० २२	२९ ३७	२६ १७	५ ३३	२ १३	१७ ४६	१४ २६
१३ २०	१२ २०	४६ ४०	४६ ०	२० ०	२० ०	४० ०	४० ०

गुरुमध्येभौमांतर्दशायामुपदशा.

मं.	बु.	श.	गु.	रा.	शु.	र.	चं.
१ ७	१ १९	१ १६	१ २९	१ १६	३ ८	० २८	२ १०
३१ ५१	४५ ११	५४ ४८	८ ८	१७ ४९	३१ ६	८ ५३	२२ १३
६ ४०	६ ४०	५३ २०	५३ २०	४० ०	४०	२०	२०

बुधान्तर्दशायाउपदशागुरु.

बु.	श.	गु.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.
५ १९	३ ९	९ ९	३ २९	६ २९	१ २९	४ २९	२ १९
२८ ३१	४१ २८	४८ ४६	३७ ४६	२२ ६	४८ ५३	३२ १३	४५ २१
९ ४०	५३ २०	४० ०	४० ०	४०	२०	२०	४०

शुक्रान्तर्दशायामुपदशाराहु.

शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	गु.	रा.
५	१	३	२	४	२	४	३
१३	१६	२६	२	१२	१७	७	३४
२०	४०	४०	१३ २०	१३ २०	४५ ४०	४६ ४०	२० ०

राहुमध्येरंतर्दशायाउपदशा.

र.	चं.	मं.	बु.	श.	गु.	रा.	शु.
०	१	०	१	०	१	०	१
१३	३	१७	७	२२	१२	२६	१६
२० ०	२० ०	४६ ४०	४६ ४०	१३ २०	१३ २०	४० ०	४० ०

राहुमध्येबुधान्तर्दशायाउपदशा.

बु.	श.	गु.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.
३ १७	२ २	३ २९	२ १५	४ १३	१ ७	३ ४	१ २०
२	५७	३७	३३	१३	४६	२६	२२
१३ २०	४६ ४०	४० ०	२० ०	२० ०	४० ०	४० ०	१३ २०

राहुमध्येशनेरंतर्दशायामुपदशा.

श.	गु.	रा.	शु.	बु.	मं.	र.	चं.
१	२	१	२	०	१	०	२
७ २	१० २२	१४ ५६	१७ ४६	२२ १३	२५ ३३	२९ ३७	२ ५३
१३ २०	१३ २०	४० ०	४० ०	२० ०	२० ०	४६ ४०	४६ ४०

राहोरन्तर्दशायाउपदशा.

गु.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.
४ ३	२ २४	४ २७	१ १३	१ १५	१ १६	३ २९	२ १०
४२	२६	४६	१३	३३	१७	३७	२२
[illegible]	४० ०	४० ०	२० ०	४६ ०	४६ ४०	१३ ४०	१३ २०

शुक्रमध्येशुक्रांतदशायाउपद०

शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	गु.	रा.
९	२	६	३	७	४	८	५
१५	२१	२४	१८	२१	१६	१८	१३
३०	२०	१०	५३ २०	२३ २०	६ ४०	३६ ४०	२० ०

भौमान्तर्दशायाउपदशा शुक्र.

मं.	बु.	श.	गु.	रा.	शु.	र.	चं.
१ ११	२ २८	१ २१	३ ८	२ २	१३ १८	१ १	२ २७
२८ ५३	८ ५३	५१ ६	३१ ६	१३ २०	५३ २०	६ ४०	४६ ४०
२०	२०	४०	४०	०	०	०	०

बुधान्तर्दशायाउपदशा शुक्र.

बु.	श.	गु.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.
६ ७	३ २०	६ २९	४ १२	७ २१	६ ६	५ १५	२ २८
१८	११	२१	१३	२३	६	१६	८
५३ २०	६ ४०	६ ४०	२० ०	२० ०	४० ७	४० ०	५३ २०

सूर्यान्तर्दशायाउपदशा. शुक्र.

र.	चं.	मं.	बु.	श.	गु.	रा.	शु.
०	१	११	२	१	२	१	२
२३	२८	६	६	८	१३	१६	२१
२०	०	४०	६ ४०	५३ २०	५३ २०	४० ०	२० ०

चंद्रान्तर्दशायाउपदशा शुक्र.

चं.	मं.	बु.	श.	गु.	रा.	शु.	र.
४	२	५	३	६	३	६	१
२५	१७	१५	७	४	२६	२४	२८
५०	४६ ४०	१६ ४०	१३ २०	४३ २०	४०	१०	२०

शनेरन्तर्दशायाउपदशा शुक्र.

श.	गु.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.
२ ४	४ ३	२ १७	४ १६	१ ८	३ ७	१ ११	३ २०
४८ ५३	८ ५३	४६ ४०	६ ४०	५३ २०	१३ २०	५१ ६	११ ६
२०	२०	०	०	०	०	४०	४०

गुरोरंतर्दशायाउपद० शुक्रम०

गु.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.
७ २३	४ २७	८ १८	२ १३	६ ४	३ ८	६ २९	४ ३
३८	४६	३६	५३	४३	३१	२१	८
५३ ४०	४० ०	४० ०	२० ०	२० ०	६ ४०	६ ४०	५३ २०

राहोरन्तर्दशाया उपदशा ।

रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	गु.
३	४	१	३	२	४	२	४
३	१३	१६	१६	२	१२	१७	२८
२० ०	२०	४०	४०	१३ २०	१३ २०	४६ ४०	४६ ४०

दशाफलम् ।

तत्रादौ विंशोत्तरीदशान्तर्दशाफलान्तर्गतदशावाहनविचारः ।

स्वकीयजन्मनक्षत्राद्गणयेज्जन्मभावधि ।
नवभिस्तु हरेद्भागं शेषं तु शशिवाहनः ॥ १ ॥
गर्दभो घोटको हस्ती महिषो जम्बुसिंहकौ ।
काको हंसो मयूरश्च नवैते नरवाहनाः ॥ २ ॥

जन्मनक्षत्रसे जन्मभावतक गणना करके जो होय उस संख्यामें नवका भाग देय तौ शेषसे दशा-वाहन जाने । एक १ शेषसे गर्दभ, २ से घोडा, ३ से हाथी, ४ से महिष, ५ से जंबुक, ६ से सिंह, ७ से काक, ८से हंस और नव९ शेषसे मयूरवाहन जानना ॥ १॥ २ ॥

दशाप्रवेशे नरवाहनश्च उत्पन्नभोगी जडतासमेतः । लज्जाविहीनो धनधान्यहीनः स्यान्मानवो वस्त्रविवर्जितश्च ॥ ३ ॥ चपलचञ्चलता-बहुभक्षकः प्रकटबुद्धिसघोषचमूपतिः । दृढतनुर्बहुकार्यकरो नरस्तुरगयोर्यदि वाहनसंस्थितः ॥ ४ ॥ नानाकार्यकृते हि सौख्यजननो देवाधिपो वाहनः संततो बहुमानता शुभगतिः सेनापतिः शोभनः । सर्वः सौख्यकरः सुभूषणधरः स्याच्चञ्चलो दुष्टता पाकोऽयं यदि वाहनो गजपतेर्नानाकलाकौशलः ॥ ५ ॥ महिषयोर्बलबुद्धिविहीनता जयमलं प्रबलाग्निभयातुरम् । शकटयोः प्रबले बलसंयुतो महिषयोर्यदि वाहनता भवेत् ॥ ६ ॥

जिसके दशाप्रवेश समय नरवाहन हो वह भोगी, जडताकरके संयुक्त, लज्जा, धन धान्य और वस्त्रोंकरके हीन होता है । जिसके तुरंगवाहन दशाप्रवेशमें हो वह मनुष्य चपल, चंचल, अधिक भोजन करनेवाला, प्रकट बुद्धिवाला, घोषसहित सैन्यका स्वामी, पुष्टशरीरवाला और कार्य करनेवाला होता है । जिसके दशाप्रवेशमें गजवाहन हो उसको अनेक कार्य करनेसे सौख्य प्राप्त होता है । मानी, सुंदरगतिवाला, सेनाका स्वामी, शोभायमान, सर्व सौख्य करनेवाला, सुंदर भूषणोंको धारण करनेवाला, चंचल, शत्रुहीन और नाना कला कौशलमें प्रवीण होता है । जिसके महिषवाहन दशाप्रवेशसमयमें हो वह मनुष्य बल बुद्धि जय इनकरके रहित, प्रबलाग्नि तथा भयसे पीडित और गाडियोंके प्रबलताकरके बलयुक्त होता है ॥ ३–६ ॥

जम्बुके बहुतरैव चञ्चला व्याधिदुःखपरिपीडिताङ्गना । क्लेशता रिपुजनाच्च पीडिता धान्यनाशमतिसंक्षयो भवेत् ॥ ७ ॥ जम्बुको-

त्पन्नभोगी च लाभभक्षस्तथैव च। श्वेतगश्वेतवस्त्रं च हानिः स्यात्क्रयविक्रये ॥ ८ ॥ दशाप्रवेशे यदि वाहनश्च सिंहो बलिष्ठो विविधैः प्रकारैः। उत्पन्नभोगी रिपुनाशकारी स्याद्वाहने केसरिणो विशेषः ॥ ९ ॥ काके वाहनसंस्थिते यदि दशा स्याच्चञ्चलो निर्भयो वत्सारो मलिनः कुवेषधरितो नीचैर्जनैः पूजितः । स्थाने राजभयं तथा रिपुभयं मानापमानं नराहुष्टार्तिः कलहं कुचेष्टितनरः स्त्रीद्वेषकारी भवेत् ॥ १० ॥ जनकलानिधिकेलिसमन्वितो द्विजपतेर्बहुजात्यसुखान्वितः। सदशने मतिनां प्रबलायता सुगतिता चतुराननवाहनः ॥ ११ ॥ मयुरवाहनतो बहुलं सुखं धृतिकलाकुशलो मखकेलिकृत्। मधुरवाक्ययुतो मधुरप्रियः सदशमे न नरस्य समन्वितः ॥ १२ ॥

जिसके जंबुक वाहन दशाप्रवेशमें होय वह मनुष्य चंचल और व्याधि दुःखकरके परिपीडित स्त्रीवाला, क्लेशयुक्त, शत्रुजनोंसे पीडित धान्यके नाश और अधिक क्षयवाला होता है। जिसके जंबुक वाहन होय वह भोगी तथा समान लाभ खर्चवाला और क्रयविक्रयमें श्वेत पदार्थ और श्वेतवस्त्रोंसे हानि पानेवाला होता है। जिसके दशा प्रवेश समय सिंहवाहन होय वह अनेक प्रकारसे बलवान्, भोग भोगनेवाला, विशेषकरके शत्रुओंके नाश करनेवाला होता है। जिसके दशाप्रवेशसमय काकवाहन होय वह चंचल, निर्भय, संतोषवान्, मलिन, कुवेषधारी, नीचजनोंकरके पूजित, स्थानमें राजभय तथा शत्रुभयवाला, मनुष्योंसे मान अपमानवाला, दुष्टजनोंसे पीडित, कलहयुक्त, कुचेष्टित और स्त्रीसे द्वेष करनेवाला होता है। जिसके दशाप्रवेशमें हंसवाहन होय वह मनुष्य कलाविधिकेलिकरके संयुक्त, ब्राह्मणोंकरके सुखवाला, अच्छे भोजन करनेवाला और सुंदरगतिवाला होता है। जिसके दशास्वामी दशमभावमें न स्थित होवे तथा दशाप्रवेशसमयमें मयूरवाहन होय तौ वह मनुष्य बहुत सुखवाला, अनेक कलाओंमें प्रवीण, यज्ञादिक करनेवाला, मीठा बोलनेवाला, मधुरप्रिय होता है ॥७-१२॥

इति दशावाहनविचारः ॥

सूर्यमहादशाफलम्।

उद्विग्नचित्तपरिखेदितवित्तनाशं क्लेशप्रवासगदपीडमहाभिघातम् । संक्षोभितःस्वजनबन्धुवियोगमेतिसूर्यादशा भवति राजकुलाभिघातः

सूर्यकी दशामें ये फल होते हैं-उद्विग्नचित्त, खेदयुक्त, धननाश, क्लेश, परदेशी,

रोगी, पीडावान्, अभिघात, संक्षोभित, स्वजनबंधुओंसे वियोग और राजकुलमें पीडित होता है ॥ १ ॥

सूर्यमध्ये सूर्यान्तर्दशा ।

सूर्ये राजकुलाल्लाभः पीडा स्यात्पित्तसंभवा ।
विपत्तथा बान्धवानां व्ययमेव हि सर्वतः ॥ २ ॥

सूर्यके अंतर्गत सूर्यदशामें राजकुलसे लाभ, पित्तविकारसे पीडा, विपत्ति, भाइयोंसे वियोग और धनका व्यय यह सब फल होता है ॥ २ ॥

सूर्यमध्ये सोमान्तर्दशा ।

शत्रुसन्ध्यादिगमनं वित्तलाभं सुखावहम् ।
भवेदन्तर्दशायां हि सूर्यस्यैव यदा शशी ॥ ३ ॥

शत्रुओंसे मेल, धनका लाभ, बहुत सुख, यह सब फल सूर्यके अंतर्गत चन्द्रदशामें होता है ॥ ३ ॥

सूर्यमध्ये भौमान्तर्दशा ।

नृपाल्लाभः सुवर्णानि मणिरत्नप्रवालकम् ।
प्राप्यते यानमानं तु सूर्यस्यान्तर्दशां कुजे ॥ ४ ॥

सूर्यके अंतर्गत भौमदशामें राजासे लाभ, मणि मोती सोना और प्रवालका लाभ और लोकमें मान्यता होवे ॥ ४ ॥

सूर्यमध्ये राह्वन्तर्दशा ।

शङ्का मानं व्याधिकोपं वित्तनाशं जनक्षयम् ।
सर्वमत्राशुभं विद्यात्सूर्यस्यान्तर्गतस्तमः ॥ ५ ॥

सूर्यके अंतर्गत राहुदशामें चित्तमें शंका, व्याधि, वातविकार, धनका नाश, मनुष्योंका क्षय और सर्व अशुभ होता है ॥ ५ ॥

सूर्यमध्ये गुरोरन्तर्दशा ।

गतव्याधिशरीरश्च अलक्ष्म्या त्यज्यते नरः ।
प्राप्नोति धर्मपदवीं भानोरन्तर्गते गुरौ ॥ ६ ॥

सूर्यके अंतर्गत गुरुदशामें व्याधिरहित शरीर, लक्ष्मीका लाभ और धर्मपदवीको प्राप्त होता है ॥ ६ ॥

सूर्यमध्ये शनेरंतर्दशा ।

राज्यभङ्गः शक्तिहानिः सुहृद्बन्धुविवर्जितः ।
जायते तत्र वैकल्यं सूर्यस्यान्तर्गते शनौ ॥ ७ ॥

सूर्यके अंतर्गत शनिदशामें राज्यका भंग, अधिकारकी हानि, भाई बंधुका वियोग, चित्तमें विकलता और शत्रुओंसे शत्रुता होवै ॥ ७ ॥

सूर्यमध्ये बुधान्तर्दशा।

क्लेशः कष्टं च दारिद्र्यं पामाविचर्चिकादिभिः।
शरद्धान्यस्य निक्षिप्तं सूर्यस्यान्तर्गते बुधे ॥ ८ ॥

सूर्यके अंतर्गत बुधदशामें विवाँईरोग अथवा जूडीकरके क्लेश, कष्ट, दरिद्रता और धान्यका निक्षिप्त होता है ॥ ८ ॥

सूर्यमध्ये केत्वन्तर्दशा।

देशत्यागं बन्धुनाशमर्थनाशं धनक्षयम्।
केतावन्तर्गते सूर्ये सर्वं चैवाशुभं भवेत् ॥ ९ ॥

सूर्यके अंतर्गत केतुदशामें अपना देशत्याग, बंधुनाश, धनका क्षय और संपूर्ण अशुभफल होता है ॥ ९ ॥

सूर्यमध्ये शुक्रान्तर्दशा।

शिरोरोगप्रबलयोर्ज्वरातीसारशूलयोः।
शरीरे क्लेशमाप्नोति सूर्यस्यान्तर्गते भृगौ ॥ १० ॥

सूर्यके अंतर्गत शुक्रदशामें शिरःपीडा, ताप, अतीसार, शूलरोग और शरीरमें कष्ट होता है ॥ १० ॥ इति सूर्यमध्ये ग्रहान्तर्दशाफलम् ॥

चन्द्रमहादशाफलम्।

सम्यग्विभूतिवरवाहनछत्रयानं
क्षेमप्रतापबलवीर्यसुखानि तस्य।
मिष्टान्नपानशयनासनभोजनानि
चन्द्रो ददाति धनकाञ्चनभूमिलाभम् ॥ ११ ॥

चन्द्रमहादशामें संपूर्ण विभूतिकरके युक्त, वाहन, छत्र, सवारी, क्षेम, प्रताप, बल, वीर्य और सुख इन सबकी प्राप्ति, मिष्टान्न, पान, शयन, आसन, भोजन, धन, कांचन और भूमिलाभ इन सब सुखोंकरके युक्त होता है अर्थात् यह सब पदार्थ चन्द्रमाकी दशामें प्राप्त होते हैं ॥ ११ ॥

चन्द्रमध्ये चन्द्रान्तर्दशा।

चन्द्रान्तः स्त्रीसुतं लाभं वस्त्राभरणसंयुतम्।
स्वपक्षगैश्च कल्याणमात्मनिद्रारतिर्भवेत् ॥ १ ॥

चन्द्रमाके अंतर्गत चन्द्रदशामें पत्नी, पुत्र प्राप्ति, वस्त्र आभरणका लाभ, श्वशुर कुलसे लाभ और निद्रामें रति यह सब फल होता है ॥ १ ॥

चन्द्रमध्ये भौमान्तर्दशा ।

अग्निपित्तकृता पीडा अग्निचोरपदच्युतिः ।
भवत्यन्तर्दशायां च चन्द्रे भौमो गतो भवेत् ॥ १ ॥

अब चन्द्रमाके अंतर्गत मंगलदशामें अग्निभय, पित्तविकारसे पीडा, अग्नि और चोरसे स्थानभ्रष्ट, अधिकारहानि यह फल होता है. रक्तवस्तु दान देय तौ कष्टशांति होवे ॥ १ ॥

चन्द्रमध्ये राहोरन्तर्दशाफलम् ।

रिपुरोगाग्निरुद्वेगं बन्धुनाशं धनक्षयम् ।
न किंचित्सुखमाप्नोति चन्द्रे राहुर्यदानुगः ॥ १ ॥

चन्द्रमाके अन्तर्गत राहुदशामें रिपु, रोग और अग्निभय, उद्वेग, बंधुनाश, धनका क्षय और कुछभी सुखप्राप्ति न होना यह फल होताहै । कृष्णवस्तु दान देना कष्टशांति होवे॥

चन्द्रमध्ये गुरोरन्तर्दशाफलम् ।

धर्माधर्मातिसौख्यानि वस्त्रालङ्करणैर्जयः ।
प्राप्नोत्यन्तर्दशायां हि चन्द्रस्यैव गुरुर्यदा ॥ १ ॥

चन्द्रमाके अन्तर्गत बृहस्पतिदशामें धर्म, अधर्म और सुखकी प्राप्ति, वस्त्र अलंकार आदिका लाभ, जय, व्यापारसे अधिकलाभ और ईशानादिशामें यात्रा होय ॥१॥

चन्द्रमध्ये शन्यन्तर्दशाफलम् ।

बन्धूद्वेगं शोकभयं हानिव्यसनदोषकम् ।
भवन्ति तत्र सन्देहाश्चन्द्रस्यान्तर्गते शनौ ॥ १ ॥

चन्द्रमाके अंतर्गत शनिदशामें बंधुओंसे उद्वेग, शोक, भय, हानि, देवतादोषकरके शरीरमें कष्ट, पश्चिमदिशामें गमन तहाँ हानि यह सब फल होता है ॥ १ ॥

चन्द्रमध्ये बुधान्तर्दशाफलम् ।

सर्वत्र लभते लाभं गजाश्वैर्गोधनादिकैः ।
भवत्यन्तर्दशायां हि चन्द्रस्यान्तर्गते बुधे ॥ १ ॥

चन्द्रमाके अंतर्गत बुधदशामें जहाँ जाय तहाँ लाभ, हाथी, घोडा, गोधन आदिके व्यापारसे लाभ और दक्षिणदिशाकी यात्रासे लाभ होता है ॥१ ॥

चन्द्रमध्ये केत्वन्तर्दशाफलम् ।

चापल्यं चोद्वेगहानिर्बन्धुहानिर्धनक्षयम् ।
जायतेऽन्तर्गते केतौ चन्द्रस्यैव यदाऽनुगः ॥ १ ॥

चन्द्रमाके अंतर्गत केतुदशामें चपलता, चित्तमें उद्वेग, हानि, भाइयोंको कष्ट, धनका नाश, म्लेच्छजनसे भय, वातविकार यह फल होता है, कृष्णवस्तुका दान दे तो लाभ सुख होवै ॥ १ ॥

चन्द्रमध्ये शुक्रान्तर्दशाफलम् ।

बहुस्त्रीसङ्गमं चाथ कन्यकाजन्म एव च ।
मुक्ताहारमणिप्राप्तिश्चन्द्रस्यान्तर्गते सिते ॥ १ ॥

चन्द्रमाके मध्यमें शुक्रदशामें बहुत स्त्रियोंके साथ भोग विलास, कन्याका जन्म, मुक्ताहार, मणि इनके व्यापारमें लाभ होता है ॥ १ ॥

चन्द्रमध्ये सूर्यान्तर्दशाफलम् ।

जनप्रभावसौख्यं च व्याधिनाशं रिपुक्षयम् ।
एश्वर्यं सौख्यमतुलं चन्द्रमर्कोऽनुगो यदि ॥ १ ॥

चन्द्रमाके अंतर्गत सूर्यदशामें संसारविषे मान्यता, यशकी प्राप्ति, सुख, व्याधिका नाश, धनका क्षय, ऐश्वर्य और अधिक सुख प्राप्त होता है ॥ १ ॥ इति चन्द्रदशान्तर्दशा समाप्ता ॥

अथ मंगलमहादशान्तर्दशाफलम् ।

शस्त्राभिघातो नृपतेश्च पीडा चौर्याग्निरोगाश्च धनस्य हानिः ।
कार्याभिघातश्च नरस्य दैन्यं भवेद्दशायां धरणीसुतस्य ॥ १ ॥

मंगलकी महादशामें शस्त्रसे घात, राजासे पीडा, चोर, अग्निभय, शरीरमें रोग, धनकी हानि, कार्यका नाश और दरिद्रता यह सब फल ग्रहलग्नके अनुसार होता है१॥

मंगलमध्ये मङ्गलफलम् ।

कौज्यां शत्रुविमर्दश्च विग्रहो बन्धुभिः सह ।
रक्तपित्तकृता पीडा परस्त्रीसङ्गमो भवेत् ॥ १ ॥

मंगलके अंतर्गत मंगलदशामें हथियारसे भय, राजाका भय, चौरका भय, शत्रुसे भय, भाइयोंके साथ कलह, रक्तपित्तविकारसे पीडा और परस्त्रीसे संगम होता है, कपडा प्रवाल आदि दान दे तो कष्टशांति होय ॥ १ ॥

मंगलमध्ये राहुफलम् ।

शस्त्राग्निचोरशत्रूणामापदा च भयं भवेत् ।
अर्थनाशं रुजा पीडा राहौ मङ्गलवर्तिनि ॥ १ ॥

मंगलमध्यमें राहुदशामें शस्त्र, अग्नि, चौर, शत्रुओंसे आपदा, धनका नाश और रीरमें रोगपीडा होती है। कृष्णवस्तुका दान दे तो कष्ट हटै ॥ १ ॥

भौममध्ये गुरुफलम् ।

पुण्यतीर्थाभिगमनं देवब्राह्मणपूजनम् ।
जीवे कुजान्तरे प्राप्ते नृपात्किञ्चिद्भयं भवेत् ॥ १ ॥

मंगलके अंतर्गत गुरुदशामें पुण्यप्राप्ति, तीर्थयात्रा, देवताब्राह्मणोंकी पूजामें रति और राजासे किंचित् भयप्राप्ति होती है ॥ १ ॥

भौममध्ये शनिफलम् ।

उपर्युपरि जायन्ते दुःखान्यपि सहस्रशः ।
जनक्षयं कुजस्यार्की या प्राप्ताऽन्तर्दशा यदा ॥ १ ॥

मंगलके अन्तर्गत शनिदशामें अधिकसे अधिक हजारों दुःख प्राप्त होवें और मनुष्योंका क्षय होवै । काली गौका दान दे तो कष्टशांति होय ॥ १ ॥

भौममध्ये बुधफलम् ।

रिपुचोरशस्त्राग्निभ्यो नाशं प्राप्नोति मानवः ।
महाक्रूरकृता पीडा कुजस्यानुगते बुधे ॥ १ ॥

मंगलके अन्तर्गत बुधदशामें शत्रु, चोर, शस्त्र तथा अग्निसे मनुष्योंको कष्ट और दुष्टजनोंकृत अधिक पीडा होवै । दानसे कष्टशांति होवै ॥ १ ॥

अथ भौममध्ये केतुफलम् ।

मेघाशनिभयं घोरं शस्त्राग्नितस्करैस्तथा ।
क्लेशमाप्नोति भौमस्य केतुरन्तर्गतो यदा ॥ १ ॥

भौमके अंतर केतुदशामें मनुष्योंको मेघका भय, बिजलीका भय, शस्त्र, अग्नि तथा चोरसे भय और क्लेश होता है । दानसे शांति जानना ॥ १ ॥

भौममध्ये शुक्रफलम् ।

शस्त्रकोपभयं व्याधिर्धनक्षयमुपद्रवम् ।
प्रवासगमनानि स्युः कुजस्यान्तर्गते सिते ॥ १ ॥

भौमके अंतर शुक्रदशामें मनुष्योंको शस्त्रसे और कोपसे भय, व्याधि, धनका नाश, उपद्रव और देशान्तरगमन होता है ॥ १ ॥

भौममध्ये रविफलम् ।

प्रचण्डशासनं वाति नृपाद्धयजयान्वितम् ।
क्षुवतेऽनर्थयुक्तं च भौमस्यान्तर्गते रवौ ॥ १ ॥

भौमके अंतर्गत सूर्यदशामें मनुष्योंको प्रचण्डशासन, राजासे घोडा और जयसे संयुक्त तथा अनर्थसे युक्त होता है ॥ १ ॥

भौममध्ये चन्द्रफलम् ।

नानावित्तसुहृत्सौख्यमुक्तं मुक्तामणिः प्रभोः ।
भौमस्यान्तर्दशां प्राप्तश्चन्द्रमाः कुरुते भृशम् ॥ १ ॥

भौममध्यमें चन्द्रदशामें अनेकप्रकारसे धनलाभ, मित्रादिसुख, मुक्तामणिसे संयुक्त राजाकी प्रसन्नता ये सब फल मनुष्योंको प्राप्त होतेहैं ॥ १ ॥ इति भौमदशान्तर्दशाफ० ॥

अथ राहुमहादशान्तर्दशाफलम् ।

बुद्ध्या विहीनमतिविभ्रमसर्वशून्यं
विश्वं भयातिविषमापदमृत्युतुल्यम् ।
व्याधिर्वियोगधनहानिविषानिवारं
राहोर्दशा भवति जीवितसंशयं च ॥ १ ॥

राहुकी दशामें बुद्धिकी हानि, मतिमें भ्रम, सबसे शून्य, भय, मृत्युके समान कष्ट, व्याधि, अपने जनोंसे वियोग, धनहानि और देहके जीवनेकाभी संदेह होवे ॥ १ ॥

राहुमध्ये राहुफलम् ।

स्वभ्रातृतातमरणं बन्धुनाशात्मकं रुजा ।
अर्थनाशो विदेशश्च गमनं गौरवाल्पता ॥ १ ॥

राहुके अंतर्गत राहुदशामें अपने भाई और पिताको मरणतुल्य कष्ट, बंधुओंको कष्ट, रोग, अर्थनाश और विदेशगमन होता है तथा अल्पगौरव हो ॥ १ ॥

राहुमध्ये गुरुफलम् ।

व्याधिदुःखपरित्यक्तो देवब्राह्मणपूजकः ।
भवत्यर्थयुतश्चात्र राहोरन्तर्गते गुरौ ॥ १ ॥

राहुके अंतर्गत गुरुदशामें मनुष्य व्याधिदुःखकरके रहित, देवताब्राह्मणके पूजनमें आसक्त और अर्थकरके युक्त होता है ॥ १ ॥

राहुमध्ये शनिफलम् ।

रक्तपित्तकृता पीडा कलहः स्वजनैः सह ।
देहभङ्गं कृतत्यागं राहोरन्तर्गते शनौ ॥ १ ॥

राहुके अंतर्गत शनिदशामें रक्तपित्तविकारसे पीडा, अपने जनोंके साथ कलह, शरीरमें अधिक कष्ट रोग और पुण्यका क्षय होता है । काली गौका दान दे ॥ १ ॥

राहुमध्ये बुधफलम् ।

सुहृद्बन्धुधनायोगं बुद्धिबोधधनागमः ।
किंचित्क्लेशमवाप्नोति स्वर्भान्वन्तर्गते बुधे ॥ १ ॥

राहुके अंतर्गत बुधदशामें मित्र बंधु तथा धनका समागम, बुद्धि धनका लाभ और किंचित् कष्टभी होता है ॥ १ ॥

राहुमध्ये केतुफलम् ।

ज्वराग्निरिपुशस्त्रं वा मृत्युः प्राप्नोति सर्वदा ।
राहोरन्तर्गते केतौ नास्त्यत्र संशयः क्वचित् ॥ १ ॥

राहुके अंतर्गत केतुदशामें ज्वर होय, अग्नि, शत्रु, शस्त्रभय हो तथा मृत्यु हो, कृष्णवस्तु दान और महामृत्युंजय जपसे शांति करना ॥ १ ॥

राहुमध्ये शुक्रफलम् ।

सुहृत्तापोऽजितेन्द्रियः स्त्रीलाभो वित्तसंचयः ।
कलहो बान्धवैः सार्द्धं राहोरन्तर्गते सिते ॥ १ ॥

राहुके अंतर्गत शुक्रदशामें मित्रोंको कष्ट, परस्त्रीसे भोग, स्त्रीप्राप्ति, धनलाभ और बांधवोंके साथ कलह होता है ॥ १ ॥

राहुमध्ये रविफलम् ।

शस्त्ररोगभयं घोरमर्थनाशं नृपाद्भयम् ।
अग्निचोरभयं चात्र दैत्यस्यान्तर्गते रवौ ॥ १ ॥

राहुके अंतर्गत सूर्यदशामें शस्त्ररोगसे भय, अर्थनाश, राजासे भय तथा अग्नि चोरभय होता है ॥ १ ॥

राहुमध्ये चन्द्रफलम् ।

स्त्रीलाभं कलहं चैव वित्तनाशमनिर्वृतिः ।
बान्धवैः सह संक्लेशो राहोर्मध्ये यदा शशी ॥ १ ॥

राहुके अंतर्गत चन्द्रमामें स्त्रीका लाभ होय, कलह उत्पन्न होय, द्रव्यका नाश, आजीविका और बांधवोंकरके क्लेश होवै ॥ १ ॥

राहुमध्ये भौमफलम् ।

रिपुशस्त्राग्निचोराणां भयमाप्नोति सर्वदा ।
स्वर्भान्वन्तर्गते भौमे निश्चितं नात्र संशयः ॥ १ ॥

राहुके अंतर्गत भौमदशामें सर्वदा शत्रुभय, शस्त्रभय, अग्निभय होता है, दानसे कष्टशांति होय ॥ १ ॥ इति राहोरन्तर्दशा समाप्ता ॥

अथ गुरुमहादशान्तर्दशाफलम् ।

नृपप्रसादं धनधान्यपुत्रकलत्रमित्राप्तिसुरत्नलाभम् ।
नीरोगतां शत्रुजयं च सौख्यं गुरोर्दशा वाञ्छितमातनोति ॥

बृहस्पतिकी महादशामें राजाकी प्रसन्नता हो, धनधान्य पुत्र कलत्र मित्रादि तथा धनका लाभ होता है, शरीरमें नीरोगता हो, शत्रुसे जय प्राप्ति हो, सौख्य मिले तथा मनोवांछित पदार्थका लाभ होता है ॥ १ ॥

गुरुमध्ये गुरुफलम्।

जीऽयमाने सुतो बुद्धिर्धनधर्मार्थगौरवम्।
हेम्नश्चाम्बरलाभश्च वर्णेभ्यो ह्यतिसञ्चयम् ॥ १ ॥

बृहस्पतिके अंतर्गत बृहस्पतिदशामें शरीरमें नीरोगता, सुतप्राप्ति, बुद्धिलाभ, धन धर्मार्थगौरवका लाभ, सुवर्ण और वस्त्रलाभ और कुटुंबीजनोंका संगम होता है ॥ १ ॥

गुरुमध्ये शनिफलम्।

वेश्यास्त्रीमद्यशून्यैश्च भूषितः सुखवर्जितः।
विलुप्तधर्मवस्त्रोऽसौ सौरिर्गुर्वनुगो यदा ॥ १ ॥

गुरुके अंतर्गत शनिदशामें वेश्यास्त्रियोंसे रति, तहां द्रव्यकी हानि, मद्यपानमें रत, सर्वशून्य, सुखकरके रहित, पापबुद्धि, धर्म और वस्त्रसे रहित होता है ॥ १ ॥

गुरुमध्ये बुधफलम्।

स्वस्थो मित्रयुतो भोगी गुरुदेवाग्निभक्तिकः।
सुकृताचरणे सक्तो जीवस्यान्तर्गते बुधे ॥ १ ॥

गुरुके अंतर्गत बुधदशामें मनुष्य अपने स्थानमें प्राप्त, मित्रयुक्त, भोगको भोगनेवाला, गुरु देवता तथा अग्निको पूजनेवाला, अच्छे आचरणमें तत्पर होता है ॥ १ ॥

गुरुमध्ये केतुफलम्।

पुत्रबन्धुक्षतो योगी युक्तः स्वस्थानवर्जितः।
परिभ्रमति सर्वत्र केतावन्तर्गते गुरोः ॥ १ ॥

बृहस्पतिके अंतर्गत केतुदशामें पुत्र बंधुका असुख, स्थानभ्रष्ट और देशान्तरमें भ्रमण होता है ॥ काला दान देवे तो कष्टशांति होवे ॥ १ ॥

गुरुमध्ये शुक्रफलम्।

कलहं शत्रुवैरं च वित्तं मानसचिन्तनम्[1]।
स्त्रीभ्यो विघातमाप्नोति जीवस्यान्तर्गते सिते ॥ १ ॥

बृहस्पतिके अंतर्गत शुक्रदशामें कलह, शत्रुओंसे वैर, धन और मानसी चिन्ता, जीविकासे रहित, स्त्रीकरके अभिघात यह सब फल प्राप्त होते हैं ॥ १ ॥

---

१ मानसनिर्वृतिः इति च पाठः।

गुरुमध्ये सूर्यफलम् ।

शत्रूणां संक्षयं सौख्यं नृपपूजा च लभ्यते ।
प्रचण्डसाहसाङ्कैश्च जीवस्यान्तर्गते रवौ ॥ १ ॥

बृहस्पतिके अंतर्गत सूर्यदशामें शत्रुओंसे जयप्राप्ति, शत्रुओंका क्षय, सौख्यप्राप्ति, राजासे सत्कार, लाभ और अधिक प्रतापसे युक्त होता है ॥ १ ॥

गुरुमध्ये चन्द्रफलम् ।

बहुस्त्रीरिपुभोगश्च रिपुर्भोगविवर्जितः ।
नृपतुल्यो भवेन्नित्यं चन्द्रे गुर्वन्तरां गते ॥ १ ॥

बृहस्पतिके अंतर्गत चन्द्रदशामें बहुत स्त्री तथा शत्रुओंसे भोग, शत्रुजन भी मित्रता माने और राजाके समान अधिकार प्राप्ति यह सब फल होता है ॥ १ ॥

गुरुमध्ये भौमफलम् ।

तीक्ष्णशौर्यरिपुं जित्वा धनं कीर्तिं च मानुषे ।
सुखसौभाग्यमारोग्यं गुरोरन्तर्गते कुजे ॥ १ ॥

बृहस्पतिके अंतर्गत भौमदशामें तीक्ष्ण शत्रुको जीते, धन कीर्तिकी प्राप्ति हो, सुख सौभाग्य आरोग्यता प्राप्त होवै ॥ १ ॥

गुरुमध्ये राहुफलम् ।

बन्धूद्वेगं रुजश्चैव कलहं मरणाद्भयम् ।
स्वस्थानच्युतिमाप्नोति राहावन्तर्गते गुरोः ॥ १ ॥

बृहस्पतिके अंतर्गत राहुदशामें भ्राताको कष्ट, रोग, कलह, मरणभय और अपना स्थान भ्रष्ट होता है । काला दान देवे तो शांति होय ॥ १ ॥ इति गु० फ० ॥

अथ शनिमहादशान्तर्दशाफलम् ।

मिथ्यापवादवधबन्धनिराश्रयं च
मित्रातिवैरधनधान्यकलत्रशोकम् ।
आशानिराशकृतनिष्फलसर्वशून्यं
कुर्याच्छनैश्चरदशा सततं नराणाम् ॥ १ ॥

शनैश्चरकी दशामें झूंठा कलंक लगे, बंधुओंका नाश, आश्रयरहित, मित्रजनोंसे शत्रुता, धनधान्य तथा कलत्रशोक, निराशता और कार्य शून्य होवै ॥ १ ॥

शनिमध्ये शनिफलम् ।

शनैश्चराद्देहपीडा पुत्रदारैश्च विग्रहः ।
स्त्रीकृते बुद्धिनाशश्च विदेशगमनं भवेत् ॥ १ ॥

शनैश्चरकी दशाके अंतर्गत शनैश्चरकी दशामें शरीरपीडा, पुत्र और स्त्री आदिकोंसे लडाई, स्त्रीके कारण बुद्धिनाश और परदेशगमन हो ॥ १ ॥

शनिमध्ये बुधफलम्।

सौभाग्यं सौख्यविजयं बोधसंस्थानमानतः।
सुहृद्वित्तप्रदं सौख्यं सौरस्यान्तगते बुधे॥ १ ॥

शनैश्चरके अंतर्गत बुधदशामें सौभाग्य हो, सौख्य हो, जय हो, स्थान मानकी प्राप्ति हो, मित्रसे धनलाभ हो, सुख हो ॥ १ ॥

शनिमध्ये केतुफलम्।

रक्तपित्तकृता पीडा वित्तवित्तानुसङ्ग्रहः।
दुःस्वप्नं बन्धनं चैव केतावन्तर्गते शनेः॥ १ ॥

शनिके अंतर्गत केतुदशामें रक्तपित्तविकारसे शरीरमें पीडा, धनसंग्रह करनेपर भी धनकी हानि, दुष्टस्वप्नदर्शन और बंधन होवै ॥ १ ॥

शनिमध्ये शुक्रफलम्।

सुहृद्बन्धुवशीयुक्तं भार्यावित्तं जयान्वितम्।
सुखसौभाग्यवात्सल्यं सौरस्यान्तगते सिते॥ १ ॥

शनिके अंतर्गत शुक्रदशामें मित्रका सुख, बंधुके साथ प्रीति, स्त्रीसे सुख, जय, सुख, सौभाग्य और दयाकरके युक्त होवै ॥ १ ॥

शनिमध्ये रविफलम्।

पुत्रदारधनभ्रंशं करोति समयं महत्।
सौरस्यान्तर्गते भानौ जीवितस्यापि संशयः॥ १ ॥

शनैश्चरके अंतर्गत सूर्यदशामें पुत्र, स्त्री, धनका नाश, दुस्तर समय और जीवनमें भी संशय होवै ॥ १ ॥

शनिमध्ये चन्द्रफलम्।

मरणं स्त्रीवियोगश्च बन्धूद्वेगोऽसुखं शृणु।
क्रुद्धमारुरुजो रोगं विधावन्तर्गते शनेः॥ १ ॥

शनैश्चरके अंतर्गत चन्द्रदशामें मरणतुल्य कष्ट, स्त्रीका वियोग, भाइयोंको कष्ट, अधिक क्रोध और शरीरमें रोग होवै ॥ १ ॥

शनिमध्ये भौमफलम्।

देशभ्रंशं तथा दुःखं कुरुते व्याधिभ्रंशताम्।
अन्तर्दशायां सौरस्य कुजः प्राणमहाभयम्॥ १ ॥

शनिके अंतर्गत मंगलदशामें देशभ्रंश, दुःख, व्याधि, पीडा, प्राणका भय यह फल जानना ॥ १ ॥

शनिमध्ये राहुफलम् ।

श्वभ्रपाताङ्गभेदश्च ज्वरातीसारपीडनम् ।
शत्रुभङ्गोऽर्थनाशश्च राहावन्तर्गते शनेः ॥ १ ॥

शनिके अंतर्गत राहुदशामें गड्ढे आदिमें गिरनेसे शरीरविषे पीडा, ज्वर, अतीसाररोग हो, शत्रुसे भंग, धननाश हो ॥ १ ॥

शनिमध्ये गुरुफलम् ।

देवद्विजार्चनं सौख्यं बहुभृत्यगुणैर्युतम् ।
स्थानप्राप्तिं गुरोः कुर्यात्सौरस्यान्तर्गता दशा ॥ १ ॥

शनिके अंतर्गत बृहस्पतिकी दशामें देवता, ब्राह्मणका पूजन, सौख्य, बहुत नौकर और गुणोंकरके युक्त और स्थानकी प्राप्ति होवै, पीतवस्तुके व्यापारमें लाभ हो ॥१॥
इति शनिमहादशान्तर्दशाफलम् ॥

अथ बुधमहादशान्तर्दशाफलम् ।

व्याङ्गनावदनपङ्कजषट्पदस्य
लीलाविलासवरभोगसमन्वितस्य ।
नानाप्रकारविभवागमकोशवृद्धिं
कुर्यात् पुनर्बुधदशाऽभिमतार्थसिद्धिम् ॥ १ ॥

बुधकी दशामें मनुष्यको सुंदरास्त्रियोंके लीलाविलास और उत्तम भोगकरके संयुक्त अनेक प्रकारसे विभवका आगम, कोशकी वृद्धि और अर्थसिद्धि होती है ॥ १ ॥

बुधमध्ये बुधफलम् ।

बुद्धिर्धर्मसमायोगो मित्रबन्धुसमागमः ।
प्राप्तिर्ज्ञानस्य विपुला देहपीडा प्रकोपना ॥ १ ॥

बुधके अंतर्गत बुधदशामें बुद्धिधर्मका संयोग, मित्रबंधुका समागम हो, अधिक उत्तम ज्ञानकी प्राप्ति हो और कभी देहमें पीडाका प्रकोप भी होवे ॥ १ ॥

बुधमध्ये केतुफलम् ।

दुःखशोकाकुलं नित्यं शरीरे क्लेशसंयुतम् ।
भवत्यन्तर्दशायां हि केतुर्यदि बुधस्य च ॥ १ ॥

बुधके अंतर्गत केतुदशामें सदा दुःखशोककी अधिकता होय, शरीरमें क्लेश होय, चौपायों और अग्निसे भय होय ॥ १ ॥

बुधमध्ये शुक्रफलम्।

गुरुवस्त्राणि लभ्यन्ते धनधर्मप्रियं तथा।
वस्त्रालङ्करणैर्युक्तं बुधस्यान्तर्गते सिते ॥ १ ॥

बुधके अंतर्गत शुक्रदशामें राजाकी प्रसन्नता हो, वस्त्रप्राप्ति हो, धन और धर्ममें प्रिय, वस्त्र अलंकारकरके युक्त हो और भोगकी प्राप्ति हो ॥ १ ॥

बुधमध्ये सूर्यफलम्।

स्वर्णादिकं भवेत्प्राप्तं यशः प्राप्नोति सर्वतः।
जायास्वस्त्रीभवोद्वेगो बुधस्यान्तर्गते रवौ ॥ १ ॥

बुधके अंतर्गत सूर्यदशामें स्वर्णादिककी प्राप्ति, सर्वत्र यशकी प्राप्ति हो और स्त्रीको कष्ट हो ॥ १ ॥

बुधमध्ये चन्द्रफलम्।

कुष्ठगण्डविकाराश्च क्षयरोगभगन्दरौ।
गजादिवाहनैर्भीतिर्बुधस्यान्तर्गते विधौ ॥ १ ॥

बुधके अंतर्गत चन्द्रमाकी दशामें कुष्ठरोग, गंडविकार, क्षयरोग, भगंदर हो और हाथी आदि वाहनोंसे भय हो, श्वेत वस्त्र दान देना ॥ १ ॥

बुधमध्ये भौमफलम्।

शिरोरोगैः कण्ठरोगैर्नानाक्लेशविमर्दनम्।
चौरभङ्गभयं चाथ बुधस्यान्तर्गते कुजे ॥ १ ॥

बुधके अंतर्गत मंगलकी दशामें शिरोरोग हो, गलेमें रोग हो, अनेक प्रकारका क्लेश हो और चौरभय हो ॥ १ ॥

बुधमध्ये राहुफलम्।

अकस्माच्छत्रुनिर्घातमकस्मादर्थनाशनम्।
संपर्कादग्निदाहं च राहौ सौम्यान्तरं गते ॥ १ ॥

बुधके अंतर्गत राहुदशामें अकस्मात् शत्रुसे भय, अकस्मात् धनहानि और संपर्कसे अग्निदाह यह फल होता है ॥ १ ॥

बुधमध्ये गुरुफलम्।

व्याधिशत्रुभयैर्मुक्तो ब्रह्मिष्ठो नृपवल्लभः।
पूतात्मा धार्मिकश्चैव बुधस्यान्तर्गते गुरौ ॥ १ ॥

बुधके अंतर्गत बृहस्पतिदशामें व्याधि और शत्रुभय करके रहित, ब्राह्मणका भक्त राजाका प्रिय, पवित्र और धर्मवान् मनुष्य होता है ॥ १ ॥

बुधमध्ये शनिफलम् ।

धर्मार्थभोगी गम्भीरः क्लीबो मित्रार्थलुब्धकः ।
सर्वकार्येष्वनुत्साहो बुधे सौरो यदाऽनुगः ॥ १ ॥

बुधके अंतर्गत शनिदशामें मनुष्य धर्म अर्थका भोगनेवाला, गंभीर स्वभाववाला, क्लीब, मित्रके धनका लालच करनेवाला और संपूर्ण कार्योंविषे उत्साहरहित होता है ॥ १ ॥ इति बुधमहादशान्तर्दशाफलम् ।

अथ केतुमहादशान्तर्दशाफलम् ।

विषादकर्त्री धनधान्यहर्त्री सर्वापदां मूलमनर्थदात्री ।
भयङ्करी रोगविपद्विधात्री केतोर्दशा स्यात्किल जीवहर्त्री ॥ १ ॥

केतुकी दशा मनुष्योंको विषाद करनेवाली, धनधान्यको हरनेवाली, संपूर्ण आपदा और अनर्थको देनेवाली, भयकारक, रोग विपत्तिको देनेवाली तथा प्राणको भी हरनेवाली कही है ॥ १ ॥

केतुमध्ये केतुफलम् ।

केतौ कन्यापुत्रधननाशरोगाग्निविग्रहाः ।
भयं राजकुलाद्दुष्टस्त्रीभिः सह कलिर्भवेत् ॥ १ ॥

केतुके अंतर्गत केतुदशामें कन्या, पुत्र और धनका नाश, रोग, अग्निभय, लडाई, झगडा, राजकुलसे भय और दुष्टस्त्रीके साथ कलह होवै ॥ १ ॥

केतुमध्ये शुक्रफलम् ।

केतोरन्तर्गते शुक्रे प्रियया च कलिर्भवेत् ।
अग्निदाहं ज्वरं तीव्रं स्त्रीत्यागं कन्यकाजनिः ॥ १ ॥

केतुके अंतर्गत शुक्रदशामें स्त्रीसे कलह, अग्निदाह, ताप और स्त्रीका वियोग और कन्याका जन्म हो ॥ १ ॥

केतुमध्ये रविफलम् ।

केतोरन्तर्गते सूर्ये राजभङ्गोऽरिविग्रहः ।
अग्निदाहो ज्वरस्तीव्रो विदेशगमनं भवेत् ॥ १ ॥

केतुके अंतर्गत सूर्यदशामें राज्यका भंग, शत्रुसे विग्रह, अग्निदाह, ताप और विदेशगमन होता है ॥ १ ॥

केतुमध्ये चन्द्रफलम्।

अर्थलाभोऽर्थहानिश्च सुखं दुःखं तथैव च।
स्त्रीलाभो धनहानिश्च केतोर्मध्ये यदा शशी ॥ १ ॥

केतुके अंतर्गत चन्द्रमाकी दशामें अर्थलाभ और अर्थकी हानिभी हो, सुख तथा दुःख हो, स्त्रीका लाभ और धनहानि हो अर्थात् शुभाशुभ फल हो ॥ १

केतुमध्ये भौमफलम्।

गोत्रजैः सह संवादश्चोराणां च भयं तथा।
शरीरपीडां प्राप्नोति केतोरन्तर्गते कुजे ॥ १ ॥

केतुके अंतर्गत मंगलदशामें अपने गोत्रीजनोंके साथ विवाद, चोरभय और शरीरमें पीडा हो ॥ १ ॥

केतुमध्ये राहुफलम्।

चोरैश्च शत्रुभिर्वापि देहभङ्गः प्रजायते।
दुर्जनैः सह संवादो राहुः केतोर्यदाऽनुगः ॥ १ ॥

केतुके अंतर्गत राहुदशामें चोरों तथा शत्रुओंकरके देहका भंग और दुष्ट मनुष्योंके साथ विवाद हो ॥ १ ॥

केतुमध्ये गुरुफलम्।

दुर्जनैः सह संयोगो राजमान्यः सहाथवा।
भूलाभो जन्म पुत्रस्य केतोरन्तर्गते गुरौ ॥ १ ॥

केतुके अंतर्गत बृहस्पतिकी दशामें दुष्टजनोंके साथ मित्रता अर्थात् दुष्टजन मित्रता मानै, राजासे मान्य हो, पृथ्वीलाभ हो और पुत्रका जन्म हो ॥ १ ॥

केतुमध्ये शनिफलम्।

वातपित्तभवा पीडा स्वजनैः सह विग्रहः।
विदेशगमनं चापि केतोरन्तर्गते शनौ ॥ १ ॥

केतुके अंतर्गत शनिदशामें वातपित्तविकारसे उत्पन्न पीडा हो, अपने जनोंके साथ विग्रह हो और विदेशमें गमन होता है ॥ १ ॥

केतुमध्ये बुधफलम्।

सुहृद्बन्धुसमायोगो बुद्धिबोधं धनागमम्।
न किंचित्क्लेशमाप्नोति केतोरन्तर्गते बुधे ॥ १ ॥

केतुके अंतर्गत बुधदशामें मित्र और बंधुका आगमन हो, बुद्धिलाभ हो, धनका लाभ हो और कुछभी क्लेश न प्राप्त होवै ॥ १ ॥ इति केतुमहादशांतर्दशाफलम् ॥

अथ शुक्रमहादशान्तर्दशाफलम् ।

मित्रोपचारमशुभप्रमदाविलासं
श्वेतातपत्रनृपपूजितदेशलाभम् ।
हस्त्यश्वयानपरिपूर्णमनोरथाँश्च
शौक्री दशा सृजति निश्चलराज्यलक्ष्मीम् ॥ १ ॥

शुक्रकी महा दशामें मित्रोपचार, स्त्रीभोग विलास, चँवर छत्र आदिसे संयुक्त, राजासे पूजित, देशलाभकरके युक्त, हाथी, घोडे, सवारी आदिसे परिपूर्ण मनोरथ और अचलराज्य और लक्ष्मीको प्राप्त होता है ॥ १ ॥

शुक्रमध्ये शुक्रफलम् ।

शौक्रे स्त्रीसङ्गमो लाभो धर्मकामार्थसंयुतः ।
कौशल्यं च महाकीर्तिर्निधिलाभश्च जायते ॥ १ ॥

शुक्रकी दशाके अंतर्गत शुक्रदशामें स्त्रीसंगम, लाभ, धर्म, अर्थ, कामकरके संयुक्त, प्रवीणता और निधिलाभसे परिपूर्ण होता है ॥ १ ॥

शुक्रमध्ये रविफलम् ।

मण्डोदरक्षयरोगैर्नृपबन्धादिकैतवैः ।
उपपातो भवेन्नूनं शुक्रस्यान्तर्गते रवौ ॥ १ ॥

शुक्रके अंतर्गत सूर्यदशामें गंड, उदर, तथा क्षय रोग हो, राजासे बंधन आदि भय प्राप्त हो और अनेक प्रकारका उत्पात होता है ॥ १ ॥

शुक्रमध्ये चन्द्रफलम् ।

नखास्थिजशिरोरोगैः कामलाद्यामयैर्दशाम् ।
शरीरे क्लेशमाप्नोति शुक्रमध्ये यदा शशी ॥ १ ॥

शुक्रके अंतर्गत चन्द्रमाकी दशामें नख, अस्थिज, शिरःपीडा आदि रोग, कामलादि आमय, शरीरमें क्लेश होता है ॥ १ ॥

शुक्रमध्ये भौमफलम् ।

वातपित्तक्षयो रोगो मदोत्साहोऽन्यसंशयः ।
भूयः स्याद्भूमिलाभश्च शुक्रस्यान्तर्गते कुजे ॥ १ ॥

शुक्रके अंतर्गत भौमदशामें वातापित्तक्षयरोग हो, मद हो तथा उत्साह हो, अन्य संशय हो और अधिक भूमिका लाभ हो ॥ १ ॥

शुक्रमध्ये राहुफलम्।

अन्त्यजैः सह संक्लेशो बन्धूद्वेगः सुहृद्वधः।
अकस्माद्भयमाप्नोति राहौ शुक्रान्तरं गते ॥ १ ॥

शुक्रकी दशाके अंतर्गत राहुदशामें नीचजनोंकरके सहसा क्लेश प्राप्त हो, बंधु-उद्वेग हो, मित्रवध हो और अकस्मात् भयप्राप्ति हो ॥ १ ॥

शुक्रमध्ये गुरुफलम्।

धान्यरत्नसमृद्धिं च भूमिपुत्रसुखावहः।
श्रियं प्रभुत्वमाप्नोति जीवः शुक्रदशां गतः ॥ १ ॥

शुक्रके अंतर्गत बृहस्पतिकी दशामें धान्यरत्नादिकी वृद्धि हो, भूमि, पुत्रका लाभ, अधिक सुख हो, लक्ष्मी और प्रतापकी प्राप्ति हो ॥ १ ॥

शुक्रमध्ये शनिफलम्।

वृद्धस्त्रीभिः सह क्रीडा पुत्रनाशो विपत्पदम्।
शत्रुनाशः सुखप्राप्तिः सौरः शुक्रदशां गतः ॥ १ ॥

शुक्रके अंतर्गत शनिकी दशामें वृद्धस्त्रीके साथ क्रीडा रति हो, पुत्रनाश हो, विपत् हो, शत्रुका नाश हो और सुखकी प्राप्ति हो ॥ १ ॥

शुक्रमध्ये बुधफलम्।

धनागमश्च सौख्यं च मनोरथयशःश्रियः।
नृपवल्लभता शौर्यं शुक्रस्यान्तर्गते बुधे ॥ १ ॥

शुक्रके अंतर्गत बुधकी दशामें धनका लाभ हो, सुख हो, मनोरथकी सिद्धि हो, यश और लक्ष्मीकी प्राप्ति और राजासे प्रीति हो ॥ १ ॥

शुक्रमध्ये केतुफलम्।

कलहो बान्धवैः सार्द्धं रिपुनाशोऽरिविग्रहः।
चलाचलं समग्रं च केतौ शुक्रान्तरं गते ॥ १ ॥

शुक्रके मध्य केतुदशामें बांधवोंके साथ कलह, शत्रुनाश तथा शत्रुओंसे विग्रह चलाचलफल होवै ॥ १ ॥ इति विंशोत्तरीदशान्तर्दशाफलम् ॥

अथाष्टोत्तरीदशान्तर्दशाफलम्।

तत्रादौ सूर्यदशाफलम्।

रवेर्दशायामतितीक्ष्णभोज्यं प्राप्नोति मानोपचयं महान्तम्।
धनानि चामीकरसंप्रशान्तं संजायते बन्धुसुखं शुभं च ॥ १ ॥

सूर्यकी महादशामें तीक्ष्णभोजनकी प्राप्ति हो, मानकी अधिकता हो, धन चवँर छत्रादिका सुख हो और बंधुसुख होवै ॥ १ ॥

सूर्यमध्ये सूर्यफलम् ।

बन्धूनां स्वान्तरे मानो बन्धूनां मरणं भवेत् ।
रवेर्मध्ये रवौ प्राप्ते सर्वमेव फलं वदेत् ॥ १ ॥

सूर्यके अंतर्गत सूर्यदशामें बांधवोंके अंतरमें मान प्राप्ति हो तथा बांधवोंका मरण भी हो ॥ १ ॥

सूर्यमध्ये चन्द्रफलम् ।

शत्रुनाशोऽर्थलाभश्च चिन्तानाशः सुखागमः ।
सूर्यस्यान्तर्गते चन्द्रे व्याधिनाशश्च जायते ॥ १ ॥

सूर्यके अंतर्गत चन्द्रमाकी दशामें शत्रुका नाश, द्रव्यका लाभ, चिन्ताका नाश, सुखका आगम और व्याधियोंका नाश होता है ॥ १ ॥

सूर्यमध्ये भौमफलम् ।

प्रवालमुक्ताहेमादि धनं प्राप्नोति भूपतेः ।
रवेरन्तर्गते भौमे विभूतिः सुखमद्भुतम् ॥ १ ॥

सूर्यके अंतर्गत मंगलकी दशामें राजासे प्रवाल, मुक्ता, सुवर्णादि धनकी प्राप्ति हो, विभव हो और अद्भुत सुख प्राप्त होता है ॥ १ ॥

सूर्यमध्ये बुधफलम् ।

ग्रहवातव्याधिहानिर्द्रव्यनाशः कुलक्षयः ।
अविश्वासो भवेल्लोके रवेरन्तर्गते बुधे ॥ १ ॥

सूर्यके अंतर्गत बुधदशामें ग्रहपीडा हो, वातव्याधि हो, हानि हो, द्रव्यका नाश हो, कुलका क्षय हो और संसारमें अविश्वास होता है ॥ १ ॥

सूर्यमध्ये शनिफलम् ।

महादुःखानि जायन्ते पुत्रमित्रविनाशनम् ।
रवेरन्तर्गते मन्दे शत्रुतश्च भयं भवेत् ॥ १ ॥

सूर्यके अंतर्गत शनिकी दशामें महादुःख हो, पुत्रमित्रका विनाश हो और शत्रुसे भय होता है ॥ १ ॥

सूर्यमध्ये गुरुफलम् ।

विपद्रोगविनाशश्च लक्ष्मीमेधासुखानि च ।
रवेरन्तर्गते जीवे शत्रुमङ्गलमुत्सवः ॥ १ ॥

सूर्यके अंतर्गत बृहस्पतिकी दशामें, विपत् और रोग, लक्ष्मीका लाभ और सुख होता है तथा शत्रुका नाश, मंगलकार्य और उत्सव होता है ॥ १ ॥

रविमध्ये राहुफलम् ।

शोको भङ्गो महाभीतिर्विपत्तिरशुभं नृणाम् ।
रवेरन्तर्गते राहौ सर्वत्रामङ्गलक्रिया ॥ १ ॥

सूर्यके अंतर्गत राहु दशामें शोक, भंग, अधिकभय, विपत्ति और अशुभ और सर्वत्र अमंगल कार्य होवैं ॥ १ ॥

रविमध्ये शुक्रफलम् ।

गात्रपीडा भयं त्रासो ज्वरातीसारशूलके ।
द्रव्यादिहानिं प्राप्नोति रवेरन्तर्गते सिते ॥ १ ॥

सूर्यके अंतर्गत शुक्रदशामें, शरीरपीडा, भय, त्रास, ज्वर, अतीसार तथा शूलरोग और द्रव्यादिकी हानि होती है ॥ १ ॥ इति रविदशाफलम् ॥

अथ चन्द्रमहादशान्तर्दशाफलम् ।

नित्यं विभूषामणिवस्त्रलाभं मिष्टान्नपानं प्रमदानुरागम् ।
चान्द्री दशा साधु फलं नराणां लभेत पूजां नृपतेः सदैव ॥ १ ॥

चन्द्रमाकी दशामें सदा विभूषण, मणि तथा वस्त्रका लाभ, मिष्टान्नपान, स्त्रीजनोंमें अनुराग, शुभफल और राजासे सदा पूजालाभ होता है ॥ १ ॥

चन्द्रमध्ये चन्द्रफलम् ।

चन्द्रे स्वान्तर्गते सौख्यं सर्वत्र विजयो भवेत् ।
स्वपक्षवैरं कन्यानां जन्म निद्रारतिर्भवेत् ॥ १ ॥

चन्द्रमाके अंतर्गत चन्द्रमाकी दशामें सौख्य, सर्वत्र विजय, अपने जनोंसे वैर, कन्याका जन्म और निद्रामें रति होवै ॥ १ ॥

चन्द्रमध्ये भौमफलम् ।

शस्त्ररोगभयैर्युक्तो वह्निचोरधनक्षयः
विधोरन्तर्गते भौमे मनोदुःखं भवेन्नृणाम् ॥ १ ॥

चन्द्रमाके अंतर्गत मंगलकी दशामें शस्त्रभय तथा रोगभयसे युक्त, वह्निभय, चोर-भय और धनका नाश और मानसदुःख होता है ॥ १ ॥

चन्द्रमध्ये बुधफलम् ।

सर्वत्र लभते लाभं गजाश्वैर्गोधनादिकम् ।
जायते कन्यकालाभश्चन्द्रस्यान्तर्गते बुधे ॥ १ ॥

चन्द्रमाके अंतर्गत बुधकी दशामें हाथी, घोडे, गोधनादिकरके सर्वत्र लाभ हो, कन्याका जन्म हो ॥ १ ॥

चन्द्रमध्ये शनिफलम् ।

बन्धुवैरं स्थानहानिः शोको वा कलहो विपत् ।
विधोरन्तर्गते मन्दे संदिग्धो भवति ध्रुवम् ॥ १ ॥

चन्द्रमाके अंतर्गत शनिदशामें बांधववैर हो, स्थानहानि हो, शोक, कलह अथवा विपत् हो और जीवकाका संशय हो ॥ १ ॥

चन्द्रमध्ये गुरुफलम् ।

धर्मवित्तसुखानि स्युर्वसनाभरणादिकम् ।
विजयो राजसम्मानो विधोरन्तर्गते गुरौ ॥ १ ॥

चन्द्रमाके अंतर्गत बृहस्पतिकी दशामें धर्म धन सुख हो, वस्त्र आभरणादिक सुख, विजयप्राप्ति और राजसम्मान होता है ॥ १ ॥

चन्द्रमध्ये राहुफलम् ।

बन्धुनाशः स्थानभ्रंशः शत्रोर्बहुभयं तथा ।
न कुत्रापि सुखं राहौ विधोरन्तर्गते सति ॥ १ ॥

चन्द्रमाके अंतर्गत राहुदशामें भाईका कष्ट, स्थानका भंग, शत्रुसे भय और कहीं भी न सुख प्राप्त होता है ॥ १ ॥

चन्द्रमध्ये शुक्रफलम् ।

कन्याजन्मसुखप्राप्तिः स्त्रीसङ्गो विजयः सुखम् ।
मुक्ताहेममणिप्राप्तिश्चन्द्रस्यान्तर्गते सिते ॥ १ ॥

चन्द्रमाके अंतर्गत शुक्रदशामें कन्याका जन्म, सुखकी प्राप्ति, स्त्रीका संग, विजय सुख मुक्ता सुवर्ण आदिकी प्राप्ति हो ॥ १ ॥

चन्द्रमध्ये रविफलम् ।

भूपाश्रयसुखं राज्यं रिपुरोगक्षयो भवेत् ।
ऐश्वर्यसौख्यमतुलं चन्द्रस्यान्तर्गते रवौ ॥ १ ॥

चन्द्रमाके अंतर्गत सूर्यकी दशामें राजाके आश्रयसे सुख राज्यप्राप्ति हो, शत्रु और रोगका क्षय हो, ऐश्वर्य और अधिकतर सौख्य होता है ॥ १ ॥ इति च० फ० ॥

अथ भौममहादशान्तर्दशाफलम् ।

शस्त्राभिघातवधबन्धनरेन्द्रपीडा
चिन्ताग्रहो विकलरुक्च गृहाश्रमेषु ।

चौराग्निभीतिधननाशयशःप्रणाशं
कुर्याद्विघातभयमत्र दशा कुजस्य ॥ १ ॥

मंगलकी दशामें शस्त्रसे अभिघात, राजासे वध, बंधन पीडा, मानसी चिंता, लड़ाई-झगडा, विकलता, घरमें रोग, चौर अग्निभय, यशका तथा धनका नाश और घात इत्यादि अशुभ फल होता है ॥ १ ॥

भौममध्ये भौमफलम् ।

भौमे शत्रुविमर्दः स्यात्कलहो बन्धुभिर्नृणाम् ।
स्वान्तरे बहुपीडा स्याद्वृद्धस्त्रीगणिकारतिः ॥ १ ॥

मंगलके अंतर्गत मंगलकी दशामें शत्रुसे पीडा, बांधवोंकरके कलह और बहुत पीडा, वृद्ध स्त्री अथवा वेश्याके साथ रति हो ॥ १ ॥

भौममध्ये बुधफलम् ।

महीपालाग्निचौरेभ्यो भयं पीडा ज्वरादिभिः ।
भूमिजान्तर्गते सौम्ये कलहो दुर्जनादिभिः ॥ १ ॥

मंगलके अंतर्गत बुधकी दशामें राजासे अग्निसे और चोरसे भय, ज्वरादिरोग करके पीडा और दुष्टजनोंके साथ कलह होता है ॥ १ ॥

भौममध्ये शनिफलम् ।

महादुःखानि जायन्ते जलभीतिर्भृशं भवेत् ।
भौमस्यान्तर्गते मन्दे राजपीडाभयं नृणाम् ॥ १ ॥

मंगलके अंतर्गत शनिदशामें महादुःख, जलसे भय, राजासे पीडा और भय मनुष्योंको होता है ॥ १ ॥

भौममध्ये गुरुफलम् ।

पुण्यतीर्थादिगमनं देवब्राह्मणपूजनम् ।
भौमस्यान्तर्गते जीवे लभते वित्तमुत्कटम् ॥ १ ॥

मंगलके अंतर्गत बृहस्पतिकी दशामें पुण्यप्राप्ति हो, तीर्थकी यात्रा हो, देवता ब्राह्मणके पूजनमें भक्ति हो और अधिक धनका लाभ हो ॥ १ ॥

भौममध्ये राहुफलम् ।

शस्त्राग्निनृपचोराणां भीतिर्मृत्युर्नृपाद्भयम् ।
भौमस्यान्तर्गते राहौ मनोदुःखं प्रवर्तते ॥ १ ॥

मंगलके अंतर्गत राहुदशामें शस्त्रसे, अग्निसे, राजासे तथा चोरसे भय, मृत्यु तथा राजासे भय और मानस दुःख होता है ॥ १ ॥

भौममध्ये शुक्रफलम्।

शत्रुभीतिर्महाक्लेशो धर्महानिः सुखं व्ययः।
भौमस्यान्तर्गते शुक्रे भयं भूपात्स्वबन्धनम् ॥ १ ॥

मंगलके अंतर्गत शुक्रकी दशामें शत्रुसे भय, बडा क्लेश, धर्महानि, सुखका नाश, राजासे भय और अपना बंधन होता है ॥ १ ॥

भौममध्ये रविफलम्।

सम्मतो नृपतेर्भूरि प्रचण्डैः सह सङ्गतिः।
मङ्गलान्तर्गते भानौ भवेत्कुस्त्रीसमागमः ॥ १ ॥

मंगलके अंतर्गत रविदशामें राजासे अधिक संमति, प्रचंडजनोंके साथ संगति और कुत्सित स्त्रीसे भोग विलास होता है ॥ १ ॥

भौममध्ये चन्द्रफलम्।

बहुवित्तं सुहृत्सौख्यं मुक्ताहेममणिश्रियम्।
भौमस्यान्तर्गते चन्द्रे प्राप्नोति परमं पदम् ॥ १ ॥

मंगलके अंतर्गत चन्द्रमाकी दशामें बहुत धन और मित्रका सुख हो, मुक्ता, हेम तथा मणि श्रीकी प्राप्ति हो और मनुष्य परमपदको प्राप्त होता है ॥१॥ इति भौ० फ०।

अथ बुधमहादशान्तर्दशाफलम्।

प्राप्नोति सौम्यस्य दशाविपाके शुभे शुभानि प्रियमित्रसङ्गम्।
सुवर्णहेमाम्बरपूर्णलाभं विद्यार्थलाभं मनसः प्रमोदम् ॥ १ ॥

बलवान् बुधकी दशामें शुभफल, प्रियमित्रका संग, सुवर्ण, हेम, वस्त्र, विद्या और अर्थका लाभ और मनमें प्रमोद होता है ॥ १ ॥

बुधमध्ये बुधफलम्।

स्वदशान्तर्गते सौम्ये बुद्धिवृद्धिः समागमः।
शरीरे युवतेः सौख्यं नानावित्तं सुखं यशः ॥ १ ॥

बुधके अन्तर्गत बुधकी दशामें बुद्धिकी वृद्धि होती है, शरीरमें सुख, स्त्रीसुख, अनेक प्रकारसे धनका लाभ, सुख और यश होता है ॥ १ ॥

बुधमध्ये शनिफलम्।

मित्रार्थसाधकः सिद्धो गुणधर्मार्थसाधकः।
सर्वकार्योद्यमी भास्वान् बुधस्यान्तर्गते शनौ ॥ १ ॥

बुधके अंतर्गत शनिकी दशामें मित्रार्थ साधक, सिद्ध और गुण धर्मार्थका साधक सर्व कार्योंका करनेवाला होता है ॥ १ ॥

बुधमध्ये गुरुफलम्।

रिपुरोगभयैस्त्यक्तो धर्मज्ञो नृपवल्लभः।
हेमादिजनशोभाढ्यो बुधस्यान्तर्गते गुरौ॥ १॥

बुधके अन्तर्गत बृहस्पतिकी दशामें रिपु रोग और भयकरके रहित, धर्मका जाननेवाला, राजाका प्यारा, हेमादि पदार्थोंकरके शोभायमान होता है॥ १॥

बुधमध्ये राहुफलम्।

अकस्माद्बन्धुभेदो वाप्यकस्माद्व्रजतो नृपात्।
भयं वा ह्यर्थनाशो वा राहौ सौम्यान्तरे सति॥ १॥

बुधके अन्तर्गत राहुकी दशामें अकस्मात् बन्धुभय और राजाका कोप हो, भय और अर्थका नाश होता है॥ १॥

बुधमध्ये शुक्रफलम्।

गुरुदेवद्विजार्चासु दानधर्मपरो भवेत्।
वस्त्रालङ्काररत्नस्य लाभो ज्ञस्यान्तरे सिते॥ १॥

बुधके अन्तर्गत शुक्रकी दशामें गुरु, देवता और ब्राह्मणका पूजनेवाला, दानधर्ममें परायण और वस्त्र अलंकार रत्न आदिका लाभ होता है॥ १॥

बुधमध्ये रविफलम्।

सुवर्णहयमाणिक्यं विजयं लभते सुखम्।
राज्यं श्रियं बलं तेजो बुधस्यान्तर्गते रवौ॥ १॥

बुधके अन्तर्गत सूर्यकी दशामें सुवर्ण, घोड़ा, माणिक्य, विजय और सुखका लाभ, राज्य, लक्ष्मी, बल और तेज प्राप्त होता है॥ १॥

बुधमध्ये चन्द्रफलम्।

आचारवान् बहुधनो गजाश्वादिसुखान्वयः।
बुधस्यान्तर्गते चन्द्रे पर्यङ्कच्छत्रसंपदः॥ १॥

बुधके अन्तर्गत चन्द्रमाकी दशामें आचारवान्, बहुत धन हाथी घोडा आदि सुखको प्राप्त, शय्या छत्र और संपदासे सुशोभित होता है॥ १॥

बुधमध्ये भौमफलम्।

शिरोगुदरुजापीडा वह्निचौरनृपाद्भयम्।
बुधस्यान्तर्गते भौमे बन्धुपुत्रादिपीडनम्॥ १॥

बुधके अन्तर्गत मंगलकी दशामें शिर-गुदारोगसे पीडा, अग्नि चौर और राजासे भय और बन्धु पुत्रादि पीडा होती है॥ १॥ इति बुधदशान्तर्दशाफलम्॥

अथ शनिमहादशान्तर्दशाफलम्।

प्राप्नोति सौरस्य दशाविपाके दुर्गादिसीमागिरिरक्षणं च।
सुधान्यजीर्णाम्बरभूमिलाभं संयुज्यतेऽश्वैर्महिषादिभिश्च ॥ १ ॥

शनैश्चरकी दशामें दुर्गादिसीमा और पहाडोंकी रक्षा करनेवाला, सुन्दर धान्य, पुराना वस्त्र, भूमिलाभ और महिष आदिकरके संयुक्त होता है ॥ १ ॥

शनिमध्ये शनिफलम्।

बन्धुदारसुतार्थानां नाशो वा पीडनं भवेत्।
विदेशगमनं दुःखं सौरे स्वान्तरसंस्थिते ॥ १ ॥

शनिके अन्तर्गत शनिकी दशामें बन्धु स्त्री सुत और अर्थका नाश अथवा पीडा विदेशका गमन और दुःख होता है ॥ १ ॥

शनिमध्ये गुरुफलम्।

देवद्विजार्चनं सौख्यं धनवृद्धिगुणोदयः।
स्थानाप्तिः कामनाप्तिश्च शनेरन्तर्गते गुरौ ॥ १ ॥

शनिके अन्तर्गत बृहस्पतिकी दशामें देवता ब्राह्मणका पूजन, सौख्य, धनकी वृद्धि, गुणका उदय, स्थानप्राप्ति और कामनाप्राप्ति होती है ॥ १ ॥

शनिमध्ये राहुफलम्।

वातरोगः कुक्षिपीडा देशान्तरगतिर्भवेत्।
बुधद्वेषः सुखाभावो राहौ शनिदशां गते ॥ १ ॥

शनिके अंतर्गत राहुकी दशामें वातरोग, कुक्षिपीडा, देशान्तरका गमन, बुधद्वेष और सुखका अभाव होता है ॥ १ ॥

शनिमध्ये शुक्रफलम्।

बन्धुमित्रकलत्रार्थसुखसम्पत्समागमः।
सौहार्दं नृपतेर्लक्ष्मीः शनेरन्तर्गते सिते ॥ १ ॥

शनिके अंतर्गत शुक्रकी दशामें बन्धुका, मित्रका, स्त्रीका, धनका, सुखका और संपत्तिका समागम, राजासे मित्रता और लक्ष्मीका लाभ होता है ॥ १ ॥

शनिमध्ये रविफलम्।

पत्नीसुतधनार्थानां भीतिर्जीवितसंशयः।
शनेरन्तर्गते भानौ सर्वत्राशुभदर्शनम् ॥ १ ॥

शनिके अंतर्गत सूर्यकी दशामें स्त्री सुत धन अर्थका भय, जीवनमें संशय और सर्वत्र अशुभही फल होता है ॥ १ ॥

शनिमध्ये चन्द्रफलम्।

स्त्रीलाभं विजयं सौख्यं महिषीगोधनादिकम्।
लभते कन्यकाजन्म शनेरन्तर्गते विधौ॥ १॥

शनिके अंतर्गत चन्द्रमाकी दशामें स्त्रीलाभ, विजय, सौख्य, महिषी और गोधनादिलाभ और कन्याका जन्म होता है॥ १॥

शनिमध्ये भौमफलम्।

बन्धुस्त्रीसुतनाशो वा विद्युत्पातभवं भयम्।
महाव्याधिररिष्टं वा शनेरन्तर्गते कुजे॥ १॥

शनिके अंतर्गत मंगलकी दशामें बंधु स्त्री और पुत्रका नाश, विद्युत्पातसे भय, महाव्याधि और अरिष्ट फल होता है॥ १॥

शनिमध्ये बुधफलम्।

सौख्यं सौभाग्यमारोग्यं यशःसन्तोषवृद्धयः।
सुहृत्स्थानादिलाभः स्याच्छनेरन्तर्गते बुधे॥ १॥

शनिके अंतर्गत बुधकी दशामें सौख्य, सौभाग्य, आरोग्य, यश और संतोषकी वृद्धि होती है और मित्रस्थानादिलाभ होता है॥ १॥ इति शनिदशान्तर्दशाफलम्॥

अथ गुरुमहादशान्तर्दशाफलम्।

गुरोर्दशायां लभतेऽतिसौख्यं गुणोदयं बुद्धयवबोधनाग्रम्।
स्त्रीवित्तलाभं गतिकान्तिभोगान्महात्मचेष्टाफलमुत्तमायाम्॥ १॥

बृहस्पतिकी उत्तम दशामें सौख्यका लाभ, गुणका उदय, बुद्धिकी प्रबलता हो, स्त्रीका तथा धनका लाभ, गति कांति भोगोंकरके युक्त, सुंदर चेष्टा फल होता है॥ १॥

गुरुमध्ये गुरुफलम्।

स्वदशान्तर्गते जीवे धर्मार्थं हयलब्धयः।
लाभो हेमस्थावराणां राजपूजा गुणोदयम्॥ १॥

बृहस्पतिकी स्वदशान्तरमें धर्म अर्थ घोडोंका लाभ, हेम, स्थावर राजपूजाका लाभ तथा गुणका प्रकाश होता है॥ १॥

गुरुमध्ये राहुफलम्।

अन्त्यजैः सह संप्रीतिर्वातपित्तभयावहम्।
गुरोरन्तर्गते राहौ सर्वकार्यविनाशनम्॥ १॥

बृहस्पतिके अंतर्गत राहुकी दशामें नीचजनोंके साथ मित्रता, वातपित्तविकारसे भय और सर्वकार्यका विनाश होता है॥ १॥

गुरुमध्ये शुक्रफलम् ।

रिपुभीतिर्वित्तनाशो बन्धनं कलहो गदः ।
स्त्रीवियोगमवाप्नोति जीवस्यान्तर्गते सिते ॥ १ ॥

बृहस्पतिके अंतर्गत शुक्रकी दशामें शत्रुसे भय, धनका नाश, बंधन, कलह, रोग और स्त्रीका वियोग होता है ॥ १ ॥

गुरुमध्ये रविफलम् ।

नृपतुल्यक्रियायुक्तो व्याधिरोगविवर्जितः ।
बहुस्त्रीसुखसन्तोषो गुरोरन्तर्गते रवौ ॥ १ ॥

बृहस्पतिके अंतर्गत सूर्यकी दशामें राजाके समान क्रियाकरके युक्त, रोगकरके रहित, बहुत स्त्रीका सुख और संतोष होता है ॥ १ ॥

गुरुमध्ये चन्द्रफलम् ।

शत्रुहानिः सुखं पुण्यं शरीरे पुष्टिरुत्तमा ।
स्वजनैः सह संवासो गुरोरन्तर्गते विधौ ॥ १ ॥

बृहस्पतिके अंतर्गत चंद्रमाकी दशामें शत्रुका नाश, सुख, पुण्य, शरीरमें उत्तम, पुष्टता और स्वजनोंकरके सहित वास होता है ॥ १ ॥

गुरुमध्ये भौमफलम् ।

धनं कीर्तिः शत्रुहानिर्बन्धुकीर्तिसुखान्वितः ।
नीरोगः सुभगः श्रीमान् गुरोरन्तर्गते कुजे ॥ १ ॥

बृहस्पतिके अंतर्गत मंगलकी दशामें धन कीर्तिका लाभ, शत्रुका नाश, बन्धुकी कीर्तिसे सुखकरके युक्त, रोगरहित और सुभग होता है ॥ १ ॥

गुरुमध्ये बुधफलम् ।

सुखदुःखसमः श्रीमान् गुरुदेवाग्निपूजकः ।
गुरोरन्तर्गते सौम्ये शत्रुर्मित्रसमो भवेत् ॥ १ ॥

बृहस्पतिके अंतर्गत बुधकी दशामें समान दुःख सुख, श्रीमान्, गुरु देवता और अग्निका पूजनेवाला और मित्र समान शत्रुवाला होता है ॥ १ ॥

गुरुमध्ये शनिफलम् ।

वारस्त्रीसङ्गमं दुःखं कुवृत्तिर्धर्मनाशनम् ।
कामलोभौ नीचसख्यं गुरोरन्तर्गते शनौ ॥ १ ॥

बृहस्पतिके अंतर्गत शनिकी दशामें वेश्या स्त्रीके संगमकरके दुःख, कुत्सित जीविकावाला, धर्मका नाश, कामी, लोभी और नीचजनोंसे मित्रतावाला होता है ॥ १ ॥

इति गुरुमहादशान्तर्दशाफलम् ॥

अथ राहुमहादशान्तर्दशाफलम्।

धर्मव्ययः कामरतेर्विनाशः स्त्रीपुत्रमित्रादिविदेशयानम्।
मतिभ्रमं स्यात्कलिकुष्ठरोगभयं भवेद्राहुदशागमे सति॥ १॥

राहुकी दशामें धर्मकी हानि, कामरतिका विनाश, स्त्री पुत्र मित्रादिकी पीडा, विदेशगमन, मतिभ्रम कलह और कुष्ठरोगका भय होता है॥ १॥

राहुमध्ये राहुफलम्।

भयं स्वान्तर्गते राहौ रोगार्तः पापपीडितः।
स्त्रीपुत्रमित्रनाशो वा कलहो वा स्वबन्धुभिः॥ १॥

राहुके अंतर्गत राहुदशामें भय रोग तथा पापसे पीडित, स्त्रीपुत्रमित्रको कष्ट, अपने जनोंकरके कलह होता है॥ १॥

राहुमध्ये शुक्रफलम्।

सौहार्दं विप्रभूपाभ्यां स्त्रीसङ्गाद् वित्तसञ्चयः।
कलहे विजयः ख्यातो राहोरन्तर्गते सिते॥ १॥

राहुके अन्तर्गत शुक्रकी दशामें ब्राह्मण और राजासे मित्रता, स्त्रीके संसर्गसे धनका संचय और लडाईमें विजय होती है॥ १॥

राहुमध्ये रविफलम्।

रिपुरोगभयं घोरं द्रव्यनाशो महद्भयम्।
अग्निचोरभयं चैव राहोरन्तर्गते रवौ॥ १॥

राहुके अन्तर्गत सूर्यकी दशामें शत्रु-रोगका घोरभय, द्रव्यका नाश, महाभय अग्नि तथा चौरभय होता है॥ १॥

राहुमध्ये चन्द्रफलम्।

रिपुव्याधिर्महाभीतिर्बन्धुवित्तविनाशनम्।
कलहो बन्धुविद्वेषो राहोरन्तर्गते विधौ॥ १॥

राहुके अन्तर्गत चन्द्रमाकी दशामें शत्रु, व्याधि, महाभय, बन्धु तथा धनका नाश, कलह, बन्धुविद्वेष होता है॥ १॥

राहुमध्ये भौमफलम्।

विषशस्त्राग्निचौरेभ्यो महाभीतिः पुनः पुनः।
राहोरन्तर्गते भौमे वित्तस्त्रीबन्धुनाशनम्॥ १॥

राहुके अन्तर्गत मंगलकी दशामें विष, शस्त्र, अग्नि, चौरकरके वारंवार महाभय तथा धन स्त्री और बन्धुका नाश होता है॥ १॥

राहुमध्ये बुधफलम्।

बन्धुमित्रकलत्रादिवित्तभृत्यसुखान्वितः।
न कुत्रापि भयं तस्य राहोरन्तर्गते बुधे ॥ १ ॥

राहुके अन्तर्गत बुधकी दशामें बन्धु:मित्र कलत्रादि धन तथा भृत्य सुखकरके युक्त और कहीं भी भय नहीं होता है ॥ १ ॥

राहुमध्ये शनिफलम्।

वातपित्तभवा रोगाः कलहो बान्धवैः सह।
देशत्यागो धनभ्रंशो राहोरन्तर्गते शनौ ॥ १ ॥

राहुके अन्तर्गत शनिकी दशामें वात-पित्तविकारसे उत्पन्न रोग, बांधवोंके साथ कलह, देशका त्याग, धनका नाश होता है ॥ १ ॥

राहुमध्ये गुरुफलम्।

नीरोगः स्वगणैर्युक्तो देवद्विजरतो भवेत्।
राहोरन्तर्गते जीवे धर्मतीर्थरतो भवेत् ॥ १ ॥

राहुके अन्तर्गत बृहस्पतिकी दशामें रोगरहित अपने जनोंकरके संयुक्त, देवता ब्राह्मणकी भक्तिमें रत, धर्म और तीर्थमें रत होता है ॥ १ ॥ इति राहुमहादशान्तर्दशाफलम्॥

अथ शुक्रमहादशान्तर्दशाफलम्।

शौर्यं गीतिरतिप्रमोदविभवो द्रव्यान्नपानाम्बुद-
स्त्रीरत्नं मतिमन्महोपकरणैरर्थाश्च नानाविधाः।
स्वाध्यायौषधमन्त्रशिल्पकरणैरर्थस्य सिद्धिर्भवेत्
सौख्यं नेत्रविकारभोजनरुचिः ख्यातिः प्रतापोन्नतिः ॥ १ ॥

शुक्रकी दशामें पराक्रमप्राप्ति हो, गीतमें रति हो, प्रमोद विभव द्रव्य अन्नपानादिसे परिपूर्ण सुंदर स्त्रीप्राप्ति, बुद्धिकी अधिकता, उपकारी, अनेक प्रकारके धनकरके युक्त तथा स्वाध्याय, औषधि, मंत्र, शिल्प विद्याकरके अर्थकी सिद्धि हो, सौख्य हो नेत्रपीडा हो, भोजनमें रुचि हो, ख्याति और प्रतापकी उन्नति हो ॥ १ ॥

शुक्रमध्ये शुक्रफलम्।

लाभः स्वान्तरगे शुक्रे स्त्रीसङ्गो धर्मजं सुखम्।
अभिलाषार्थयुक्तश्च कीर्तिकौशल्ययुग्भवेत् ॥ १ ॥

शुक्रके अन्तर्गत शुक्रकी दशामें लाभ, स्त्रीसंग, धर्मसे सुख, अभिलाषा और अर्थ, कीर्ति और कौशल्य करके युक्त होता है ॥ १ ॥

शुक्रमध्ये रविफलम्।

नेत्रगण्डभवै रोगैः पीड्यते नृपबान्धवैः।
उत्पातश्च महद्दुःखं शुक्रस्यान्तर्गते रवौ॥ १॥

शुक्रके अंतर्गत सूर्यकी दशामें नेत्र-गंडरोग, राजा और बांधवसे पीडा, उत्पात और बहुत दुःख होता है॥ १॥

शुक्रमध्ये चन्द्रफलम्।

उद्वेगोऽकुशलं हानिरश्वादीनां धनक्षयः।
बहुक्लेशं मनोदुःखं शुक्रस्यान्तर्गते विधौ॥ १॥

शुक्रके अंतर्गत चन्द्रमाकी दशामें उद्वेग, अकुशल, हानि, घोडा आदि धनका क्षय हो तथा बहुत क्लेश और मानस दुःख होता है॥ १॥

शुक्रमध्ये भौमफलम्।

नखोदराशिरोव्याधिः कलहो बन्धुसंक्षयः।
दौर्बल्यं च शरीरस्य कुजे शुक्रदशां गते॥ १॥

शुक्रके अंतर्गत मंगलकी दशामें नख, पेट, शिरमें व्याधि हो, कलह हो, बंधुका कष्ट हो और शरीरमें दुर्बलता होती है॥ १॥

शुक्रमध्ये बुधफलम्।

धनं धान्यं सुखं लाभो मानो धर्मो यशः सुखम्।
महाजनेन सौहार्दं शुक्रस्यान्तर्गते बुधे॥ १॥

शुक्रके अंतर्गत बुधकी दशामें धन धान्य सुखका लाभ, मान, धर्म, यश और सुखप्राप्ति हो और महाजनोंसे मित्रता हो॥ १॥

शुक्रमध्ये शनिफलम्।

वृद्धस्त्रीगमनं पीडा पुत्रनाशो विपत्पदम्।
शत्रुनाशः सुहृत्प्राप्तिः सौरे शुक्रदशां गते॥ १॥

शुक्रके अंतर्गत शनिकी दशामें वृद्धास्त्रीसे भोग, पीडा, पुत्रनाश, विपत्ति, शत्रुका नाश, मित्रकी प्राप्ति होती है॥ १॥

शुक्रमध्ये गुरुफलम्।

धनधान्यसमृद्धिश्च धर्मशीलसुखानि च।
स्त्रीसुखं कीर्तिमाप्नोति गुरौ शुक्रदशां गते॥ १॥

शुक्रके अंतर्गत बृहस्पतिकी दशामें धनधान्यकी वृद्धि, धर्म, शील और सुखकरके युक्त, स्त्रीसुख और कीर्तिकी प्राप्ति होती है॥ १॥

शुक्रमध्ये राहुफलम् ।

विदेशगमनं बन्धुद्वेषो दुर्जनसंगमः ।
स्ववंशनाशमाप्नोति राहौ शुक्रदशां गते ॥ १ ॥

शुक्रके अंतर्गत राहुकी दशामें विदेशमें गमन, बंधुद्वेष, दुष्टजनोंके साथ और अपने वंशका नाश होता है ॥ १ ॥ इत्यष्टोत्तरीदशाफलं समाप्तम् ॥

अथ सर्वग्रहदशाफलविचारः ।

क्रूरग्रहदशायां च क्रूरस्यान्तर्दशा यदि । शत्रुयोगे भवेन्मृत्युर्मित्रयोगे न संशयः ॥ १ ॥ मङ्गलस्य दशायां च शनेरन्तर्दशा यदि । म्रियते च चिरंजीवी का कथा स्वल्पजीविनः ॥ २ ॥ क्रूरराशिस्थितः पापः षष्ठे वा निधनेऽपि वा । सितेन रविणा दृष्टः स्वपाके मृत्युदो ग्रहः ॥ ३ ॥ लग्नस्याधिपतेः शत्रुर्लग्नस्यान्तर्दशां गतः । करोत्यकस्मान्मरणं सत्याचार्येण भाषितम् ॥ ४ ॥ प्रवेशे बलवान् खेटः शुभैर्वा स निरीक्षितः । सौम्याधिमित्रवर्गस्थोऽरिष्टभङ्गो भवेत्तदा ॥ ५ ॥

जिसके क्रूरग्रहकी दशामें जब क्रूरका अंतर आता है तब उसका शत्रुयोग करके अथवा मित्रयोगकरके मृत्यु होती है। मंगलकी दशामें जब शनैश्चरका अंतर आता है तब चिरंजीवी मनुष्यकी भी मृत्यु होती है स्वल्पजीवी मनुष्यके लिये क्या कहे ? क्रूरराशिमें स्थित पापग्रह छठे अथवा आठवें स्थित हो और सूर्य अथवा शुक्रकरके दृष्ट हो तो वह अपनी दशामें मृत्युको देता है। लग्नके स्वामीके शत्रुका अंतर जब लग्नकी दशामें होता है तब अकस्मात् मरण करता है. यह सत्याचार्यका वचन है। राशिप्रवेशमें बलवान् ग्रह स्थित हो और शुभग्रहोंकी शुभदृष्टिसे देखाजाता हो तथा बुध अपने अधिमित्रके वर्गमें स्थित हो तो संपूर्ण अरिष्टभंग होजाता है ॥ १-५ ॥

अथ उपदशाफलम् ।

अथातः संप्रवक्ष्यामि ग्रहस्योपदशाफलम् ।
सौम्यक्रूरविभिन्नस्य दिनचर्यादिसंमतम् ॥ १ ॥

दिनचर्याके फल जाननेके निमित्त शुभग्रह और क्रूरग्रहके भेद करके भिन्न २ ग्रहोंकी उपदशाका फल कहता हूं ॥ १ ॥

तत्र आदौ रव्युपदशाफलम् ।

ज्वरः शिरोर्तिः पीडा च कलिरुद्वेगकारकः । विग्रहश्च विवादश्च सूर्ये स्वोपदशां गते ॥ २ ॥ धननाशोदरे रोगं कुर्यात्पामां चतुष्प-

दात् । क्षीरं स्नेहं विना भुङ्क्ते चन्द्रे स्वोपदशां गते ॥ ३ ॥ राज्ञो भयं विकारश्चोपद्रवं रिपुविग्रहः । कुधान्यभोजनं सूर्ये भौमस्योपदशाफलम् ॥ ४ ॥ वातश्लेष्मं शत्रुभयं तीक्ष्णं क्षीरं कुभोजनम् । राजपीडा धने हानी राहावुपदशां गते ॥ ५ ॥ हेमाम्बरजयैर्वृद्धिः शत्रुनाशं महासुखम् । मिष्टान्नभोजनं सूर्ये शनेरुपदशा यदि ॥ ६ ॥ नृपपूजा धनं कीर्तिर्विद्याबन्धुसमागमः । भोजनं मधुरान्नस्य रवौ ज्ञोपदशां गते ॥ ७ ॥ दैन्यं परान्नभोजी स्याद्राजपीडा महद्भयम् । शत्रुद्वेषोपदशायां चरेत्केतू रवेर्यदि ॥ ८ ॥ सुखवृद्धिसमानानि धनलाभो महोत्सवः । स्त्रीविलासः सदा सौख्यं रविः सितदशां गतः ॥ ९ ॥

रविअंतर्दशान्तर्गत रविकी उपदशामें ज्वर, शिरका दर्द, पीडा, कलह, उद्वेग, विग्रह और विवाद होता है । रविअंतर्दशान्तर्गत चन्द्रकी उपदशामें धनका नाश, उदर (पेट) में रोग, चौपायोंकरके पातक और दूध घी विना भोजन होता है । रवि अंतर्दशान्तर्गत मंगलकी उपदशामें राजाका भय, विकार, उपद्रव, शत्रुविग्रह और कुत्सित अन्नका भोजन होता है । रवि अंतर्दशान्तर्गत राहुकी उपदशामें वात, कफविकार, तीक्ष्ण शत्रुभय, क्षीर, कुभोजन, राजपीडा और धनका नाश होता है । रवि अंतर्दशान्तर्गत शनिकी उपदशामें सुवर्ण, वस्त्र, जयकी वृद्धि हो, शत्रुका नाश, महान् सुख और मिष्टान्नभोजन प्राप्त होता है । रवि अंतर्दशान्तर्गत बुधकी उपदशामें नृपपूजा, धन, कीर्ति, विद्या, बंधुका समागम और मिष्टान्नका भोजन प्राप्त होता है । रवि अंतर्दशान्तर्गत केतुकी उपदशामें दीनता, पराये अन्नसे भोजन, राजपीडा, महान् भय और शत्रुसे द्वेष होता है । रविअंतर्दशान्तर्गत शुक्रकी उपदशामें सुखकी वृद्धि, सामान्य धनलाभ, महान् उत्सव, स्त्री विलास और सदा सुख होता है ॥ २–९ ॥

इति रव्युपदशाफलम् ॥

अथ चन्द्रोपदशाफलम् ।

धनलाभो महासौख्यं स्त्रीलीलापुत्रसंपदः । वस्त्रान्नपानलाभश्चोपदशासु यदा शशी ॥ १ ॥ वृद्धिर्धनागमो बुद्धिबन्धुस्वजनसौहृदः । रक्तवस्तुकृतो लाभश्चन्द्रस्योपदशां कुजः ॥ २ ॥ राजमानो महासौख्यं भूतिकल्याणवर्द्धनम् । चन्द्रस्योपदशां प्राप्तो राहुः शत्रुभयावहः ॥ ३ ॥ धनधर्मौ महत्तेजो मित्रलाभः सुभोजनम् । सौख्यं च वस्त्रलाभं च चन्द्रस्योपगतो गुरुः ॥ ४ ॥ पुत्रबन्धुकृतोद्वेगयुक्तः स्वस्थान-

वर्जितः । चन्द्रस्योपगते सौरे तुषधान्यादिभोजनम् ॥ ५ ॥ शुक्ल-वस्त्रैः श्रियां लाभो माङ्गल्यं पुत्रसम्पदः । हयभूलाभदश्चैव चन्द्रस्योपगतो बुधः ॥ ६ ॥ विरोधः सर्वधर्माणां जीवितं बहुसंशयम् । सर्पाम्बुविषजा भीतिः शिखी चोपदशां गतः ॥ ७ ॥ जलोदरादिरोगैस्तु रिपुचौरैर्धनक्षयः । अक्षीरं भोजनं रूक्षमिन्दोरुपगते सिते ॥ ८ ॥ विजयं धनसौख्यं च वस्त्रान्नपानलाभकृत् । चन्द्रस्योपदशां भानुः कुरुते नात्र संशयः ॥ ९ ॥

चन्द्रमाके अंतर्दशान्तर्गत चन्द्रमाकी उपदशामें धनका लाभ, महान् सुख, स्त्रीविलास, पुत्रका जन्म संपदा वस्त्र अन्न पानका लाभ होता है। चन्द्र अंतर्दशान्तर्गत मंगलकी उपदशामें धनका आगम होता है, बुद्धि वृद्धि बंधु तथा स्वजनोंसे मित्रता और रक्तवस्तुके व्यापारसे लाभ होता है । चद्रांतर्गत राहुकी उपदशामें राजमान, महान् सौख्य, धन और कल्याणकी वृद्धि और शत्रुसे भय हो। चन्द्रान्तर्गत बृहस्पतिकी उपदशामें धन धर्मका लाभ, अधिक प्रताप, मित्रका लाभ, सुन्दर भोजन, सुख और वस्त्रोंका लाभ होता है। चन्द्रान्तर्गत शनैश्चरकी उपदशामें पुत्र बंधुको कष्ट, स्थानहानि और तुषधान्यादि भोजन प्राप्ति हो । चन्द्रान्तर्गत बुधकी उपदशामें सफेदवस्त्रसे धनलाभ, मांगल्यकार्य, पुत्रका जन्म, संपदा, घोडा और भूमिका लाभ होता है । चन्द्रान्तर्गत केतुकी उपदशामें सब धर्मोंसे विरोध, जीवनमें संशय, सर्प, जल और विषसे भय होता है । चन्द्रान्तर्गत शुक्रकी उपदशामें जलोदरादि रोग तथा शत्रु चोरकरके धनका नाश और क्षीरविना रूक्ष भोजन प्राप्त होता है। चन्द्रान्तर्गत रविकी उपदशामें विजय, धनका सुख, वस्त्र अन्नपानका लाभ होता है ॥ १-९ ॥ इति चन्द्रस्योपदशाफलम् ॥

अथ भौमोपदशाफलम् ।

पीडा शत्रुनरेन्द्राणां रक्तस्रावो भगंदरः । अकस्माज्जायते भौमोपदशासु स्वयं कुजः ॥ १ ॥ कलहं बन्धनं रोगं राजभङ्गं कुभोजनम् । अपमृत्युदशां राहुर्जायते शत्रुपीडितः ॥ २ ॥ कुबुद्धिर्दूषितो रोगी देशेदेशे परिभ्रमः । भौमस्योपदशां जीवे स्वर्ण भवति मृत्तिका ॥ ३ ॥ रक्तस्रावो महात्रासो बन्धनं धनपीडनम् । कोद्रवं च तिलं भोज्यं भौमस्योपदशां शनिः ॥ ४ ॥

भौमान्तर्गत भौमकी उपदशामें शत्रु, राजाकरके पीडा और अकस्मात् रक्तका स्राव और भगंदर रोग होता है। भौमान्तर्गत राहुकी उपदशामें कलह, बंधन, रोग, राज्यका भंग, कुभोजन, अपमृत्यु और शत्रुसे पीडित होता है । भौमान्तर्गत बृहस्पतिकी उपदशामें कुत्सित बुद्धि, दूषित, रोगी, देशदेशमें घूमनेवाला और सोनाभी रक्खाहुआ मट्टी होजाता है। भौमान्तर्गत शनिकी उपदशामें रक्तका प्रवाह, महान् त्रास, बंधन धनपीडा और कोद्रव तथा तिलोंका भोजन प्राप्त होता है१-४

ज्वरार्तिर्मित्रताटस्थ्यं विलंबेन धनक्षयः । भौमस्योपदशां सौम्यस्त्वन्नवस्त्रादिनाशनः ॥ ५ ॥ जृम्भणं च शिरःपीडा रोगमृत्युनृपाद्भयम् । तन्द्रालस्यं कुभोज्यं च केतौ भूसुतमध्यगे ॥ ६ ॥ राजशत्रुभयं त्रासो वमनातीसारतो भयम् । व्रणाजीर्णामयाद्दुःखं भौमस्योपदशां सिते ॥ ७ ॥ भूमेश्च मणिलाभं च धनमित्रसुखावहम् । तीक्ष्णं वै मधुरं भुंक्ते भौमस्योपदशां रवौ ॥८॥ मौक्तिकं शुक्लवस्त्रं च लभते च सुखं यशः । क्षीरमिष्टान्नभोजी स्यात् कुजस्योपदशां शशी ॥९॥

भौमान्तर्गत बुधकी उपदशामें, ज्वरपीडा, मित्रकी उदासीनता थोडा २ करके धनका नाश और अन्न वस्त्रादिका नाश होता है। भौमान्तर्गत केतुकी उपदशामें जृंभण, शिरःपीडा, रोग, मृत्यु, राजासे भय, निद्रा, आलस और कुभोजन प्राप्त होता है। भौमान्तर्गत शुक्रकी उपदशामें राजा तथा शत्रुसे भय, त्रास, वमन, अतीसारसे भय, व्रण, अजीर्णसे भय होता है । भौमान्तर्गत रविकी उपदशामें भूमि मणि लाभ धन मित्र सुख बहुत हो, तीक्ष्ण मधुर भोजनप्राप्ति हो । भौमान्तर्गत चन्द्रमाकी उपदशामें मौक्तिक सफेद वस्त्रका लाभ, सुख यशप्राप्ति और क्षीर मिष्टान्नका भोजन प्राप्त होता है ॥ ५-९ ॥ इति भौमोपदशाफलम् ॥

अथ राहूपदशाफलम् ।

बन्धो व्याधिस्तथा रोगः पीडा भवति दारुणा । स्थानच्युतिः कुभोज्यं च राहुः स्वोपदशाङ्गतः ॥ १ ॥ ज्ञानधर्मार्थनाशश्च कलहं व्यसनं भवेत् । कटुकं मिष्टभोज्यं च राहोरुपदशां गुरुः ॥ २ ॥ लङ्घनं गृहभङ्गश्च हस्तपादाक्षिपीडनम् । बन्धनं बहुजीवश्च राहोरुपगते शनौ ॥ ३ ॥ धनवस्त्रादिहानिश्च पदबुद्ध्योर्विनाशकृत् । भोजनं फलशाकादि राहोरुपदशां बुधः ॥ ४ ॥

राहु अंतर्दशान्तर्गत राहुकी उपदशामें बंधन, व्याधि रोग पीडा दारुण हो, स्थानहानि और कुत्सित अन्नका भोजन होता है । राहु अंतर्दशान्तर्गत बृहस्पतिकी उपदशामें ज्ञान, धर्म और अर्थका नाश, कलह, व्यसन और कटुक मीठा भोजन लाभ होता है । राहुदशान्तर्गत शनिकी उपदशामें लंघन, घरका भंग, हाथ पैर और नेत्रोंमें पीडा, बंधन इत्यादि अशुभफल होता है । राहु अंतर्दशान्तर्गत बुधकी उपदशामें धन वस्त्रादिकी हानि हो पदबुद्धिका नाश, फलशाकादिका भोजन प्राप्त होता है ॥ १-४ ॥

अर्थनाशो विदेशश्च मृत्युचोरनृपाद्भयम् । राहोरुपदशां केतुर्बन्धनं विग्रहो भवेत् ॥ ५ ॥ स्त्रीनाशः कुलनाशश्च योगिनीभूतमातृभिः । पीडनं च कुभोज्यं स्याद्राहोरुपदशां सितः ॥ ६ ॥ सुहृत्पुत्रमहापीडा ज्वररोगान्नहानिकृत् । राहोरुपदशां सूर्यः कुरुते नात्र संशयः ॥ ७ ॥ चित्तभ्रमो मनोभङ्ग उद्वेगोऽथ कलिर्भयम् । भोज्यं स्नेहं हविष्यान्नं राहोरुपदशां शशी ॥ ८ ॥ रोगमृत्युप्रमादश्च रक्तपित्तभगंदरौ । कुभोजनं मानहानी राहोरुपदशां कुजः ॥ ९ ॥

राहु अन्तर्दशान्तर्गत केतुकी उपदशामें अर्थका नाश, विदेशका गमन, मृत्यु चौर तथा राजासे भय बंधन और विग्रह होता है । राहु अंतर्दशान्तर्गत शुक्रकी उपदशामें योगिनी भूत प्रेत तथा मातृग्रहोंकरके स्त्रीका और कुलका नाश, पीडा और कुत्सित भोजन प्राप्त होता है । राहुकी अंतर्दशान्तर्गत सूर्यकी उपदशामें मित्र पुत्रको महान् पीडा, ज्वररोग हो, अन्नकी हानि हो । राहु अंतर्दशान्तर्गत चन्द्रमाकी उपदशामें चित्तभ्रम, मानभंग, उद्वेग, कलह, भय और हविष्यान्न स्नेहका भोजन प्राप्त होता है । राहु अन्तर्दशान्तर्गत मंगलकी उपदशामें रोग, मृत्यु, प्रमाद, रक्तपित्तविकार, भगंदररोग, कुत्सित भोजन और मानहानि होती है ॥ ५-९ ॥

इति राहूपदशाफलम् ॥

अथ जीवोपदशाफलम् ।

यशोदयो महावृद्धिर्धनहेमसमागमः । सुखमिष्टान्नभोज्यं च गुरुश्चोपदशाङ्गतः ॥ १ ॥ हयभूमिपशुप्राप्तिः सर्वत्र सुखमाप्नुयात् । सुभोज्यं बहुधान्यानि जीवस्योपदशां शनिः ॥ २ ॥ विद्यामौक्तिकशस्त्राणां लाभः सुहृद्द्रयागमः । अशनं स्नेहपक्वादि जीवस्योपदशां बुधः ॥३॥ बन्धूनां तस्करादीनां कलितो मृत्युतो भयम् । कुधान्य-

मशनं जीवे केतोरुपदशां गते ॥ ४ ॥ हेमवस्त्रधनप्राप्तिं क्षेमवृद्धिर्विभूषणम् । भोजनं मधुरं क्षीरं जीवस्योपदशां सितः ॥५॥ मातापितृधनं भुङ्क्ते राजपूज्यश्च जायते । भ्रममष्टादशप्राप्तिर्जीवस्योपदशां रवौ॥६॥दधिमधुघृतक्षीरमणिमुक्तेषु लाभदा । जीवस्योपदशा चन्द्रे कुक्षिपादप्रपीडनम् ॥ ७ ॥ शस्त्रशत्रुकृता पीडा गण्डमन्दाग्न्यजीर्णता । कुधान्यभोजनं भौमो जीवस्योपदशां गतः ॥ ८ ॥ चाण्डालव्याधिशत्रुभ्यः पीडनं वमनं भयम् । कटुक्षारं च संभोज्यं जीवस्योपदशां तमः ॥ ९ ॥

बृहस्पति अन्तर्दशान्तर्गत बृहस्पतिकी उपदशामें यशका उदय, धन सुवर्णकी वृद्धि, सुखका समागम और मिष्टान्न भोजन प्राप्त होता है । बृहस्पतिकी अन्तर्देशान्तर्गत शनिकी उपदशामें घोडा, भूमि, पशुओंकी प्राप्ति हो, सर्वत्र सुख हो, सुंदर भोजन मिलै और बहुत धान्य हो । बृहस्पतिकी अन्तर्दशान्तर्गत बुधकी उपदशामें विद्या, मौक्तिक, शस्त्रोंका लाभ, मित्रोंका भय स्नेह पक्कादि भोजन प्राप्त होता है । बृहस्पतिके अन्तरान्तर्गत केतुकी उपदशामें बंधु तथा चौरादिकोंके कलहसे अथवा मृत्युसे भय और कुत्सित अन्नका भोजन प्राप्त होता है । बृहस्पतिके अन्तरान्तर्गत शुक्रकी उपदशामें हेम, वस्त्र, धनका लाभ, क्षेमकी वृद्धि, भूषणोंका लाभ और मधुर क्षीरसंयुक्त भोजन प्राप्त होता है । बृहस्पति अंतर्दशान्तर्गत रविकी उपदशामें माता पिताके धनका भोग, राजासे मान और अठारहों भ्रमोंको प्राप्त होता है । बृहस्पति अन्तर्दशान्तर्गत चन्द्रमाकी उपदशामें दधि (दही) मधु (सहत) क्षीर (घी दूध) मणि तथा मुक्ताके व्यापारमें लाभ और कुक्षि-पादमें पीडा होती है। बृहस्पति अन्तरान्तर्गत मंगलकी उपदशामें शस्त्र शत्रुसे भय, गंड, मंदाग्नि और अजीर्णरोग, कुत्सित धान्यका भोजन लाभ होता है । बृहस्पतिके अन्तरान्तर्गत राहुकी उपदशामें चांडाल, व्याधि तथा शत्रुजनोंकरके पीडा, वमन, भय और कटुक्षारका भोजन प्राप्त होता है ॥ १-९ ॥ इति गुरोरुपदशाफलम् ॥

अथ शनेरुपदशाफलम् ।

जलौकोदेहपीडा च विदेशगमनं भवेत् । कुधान्यतिलमश्नाति शनिः स्वोपदशां गतः ॥१॥ धनबुद्धी रिपोः पीडाऽन्नपानादिहानिकृत् । विना स्नेहरसं भुंक्ते सौरस्योपदशां बुधः ॥ २ ॥ शत्रुचित्तभयं त्रासो दारिद्र्यं च बहुक्षुधा । नीचसङ्गं कुभक्षी च सौरस्योपदशां

शिखी ॥ ३ ॥ द्यूतवेश्याभवद्रव्यं महिषीकृष्यलाभदः । कन्याजन्म तदा गर्भः सौरस्योपदशां सितः ॥ ४ ॥ राजाधिकारस्तेजस्वी व्याधिः पीडा ज्वरो व्यथा । कलत्रकलहं चौरं सौरस्योपदशां रविः ॥ ५ ॥ प्रमाणबुद्धिप्राधान्यं बहुस्त्रीभोगवान् धनी । हविर्मधुक्षीरभोक्ता सौरस्योपदशां शशी।६। शस्त्रवह्निरिपोर्भीतिर्वातरक्तप्रकोपवान् । भोजनं मधुसर्पिर्भ्यां सौरस्योपदशां कुजः ॥ ७ ॥ धनभूमिपशुनाशं कटुतीक्ष्णाम्लभोजनम् । मृत्युर्विदेशगमनं सौरस्योपदशां तमः ॥ ८ ॥ गृहध्वंसो भवेत्स्त्रीभिः क्लेशप्रियो निरुद्यमः । किञ्चित्सौख्यमवाप्नोति सौरस्योपदशां गुरुः ॥ ९ ॥

शनिकी अन्तर्दशान्तर्गत शनिकी उपदशामें जलौकासे देहपीडा, विदेशका गमन, कुधान्य और तिलका भोजन प्राप्त होता है । शनि अन्तरान्तर्गत बुधकी उपदशामें धन बुद्धि, शत्रुका भय हो, अन्नपानादिकी हानि हो और स्नेह रसविना भोजन प्राप्ति हो । शनिदशामें शत्रु, चित्त भय, त्रास, दरिद्रता, बहुत क्षुधा, नीचजनोंका संग और कुत्सित अन्नका भोजन होता है । शनि अन्तरान्तर्गत शुक्रकी उपदशामें द्यूतकर्मसे अथवा वेश्याजनोंसे धनका लाभ, महिषी तथा कृष्णवस्तुसे लाभ और कन्याका जन्म होता है। शनि अन्तरान्तर्गत रविकी उपदशामें राजाधिकार और प्रताप लाभ हो, व्याधि पीडा ज्वर व्यथा हो,कलत्रसे कलह और चोरी हो । शनि अन्तरान्तर्गत चन्द्रमाकी उपदशामें बुद्धिके अनुसार प्रधानता,बहुत स्त्रियोंसे भोग, धनका लाभ और क्षीर मधुयुक्त भोजन प्राप्त होता है । शनि अन्तरान्तर्गत मंगलकी उपदशामें शस्त्र, अग्नि, शत्रुसे भय, वातरक्तविकारका कोप और मधुसर्पियुक्त भोजनका लाभ होता है । शनि अन्तरान्तर्गत राहुकी उपदशामें धन भूमि पशुओंका नाश, कटुतीक्ष्णाम्लका भोजन, मृत्यु और विदेशका गमन होता है । शनि अन्तरान्तर्गत बृहस्पतिकी उपदशामें स्त्रीकरके घरका विध्वंस, प्रियजनोंको कष्ट, उद्यमरहित और किंचित्सौख्य होता है ॥ १-९ ॥ इति शनेरुपदशाफलम् ॥

अथ बुधोपदशाफलम् ।

विद्याबुद्धिर्धनप्राप्तिः स्वर्ण रूप्यं च माणिकम् । लभते धान्यरत्नानि बुधस्योपदशास्वयम् ॥ १ ॥ रक्तपित्तकृता पीडा कुख्यातोदरपीडनम् । वस्त्रार्थशस्त्रहानिश्च सौम्यस्योपदशां शिखी ॥ २ ॥ सौम्यदिक्षु भवेल्लाभः परप्राप्तिर्महत्सुखम् । भुंक्ते मिष्टान्नमाहारं

सौम्यस्योपदशां सितः ॥ ३ ॥ तेजोहानिः शिरःपीडा चोद्वेगश्चल-चित्तकः । दृष्टिदोषो भवेच्छर्दी सौम्यस्योपदशां रविः ॥ ४ ॥ श्रियो लाभस्तथा कन्यासौम्यार्थं पुत्रपौत्रकः । मिष्टान्नभोज्यवस्त्राणि बुधस्योपदशां विधुः ॥ ५ ॥ आममृत्युश्चातिसारं चौराग्निशस्त्रपीडनम् । ज्ञानधर्मधनप्राप्तिः सौम्यस्योपदशां कुजः ॥ ६ ॥ राजशत्रुभयं त्रासः कलहः स्त्रीनिरुत्सहः । स्नेहक्षीरं विना भुक्तं बुधस्योपदशां तमः ॥ ७ ॥ प्रधानपुरुषं राज्यं विद्याबुद्धिविवर्द्धनम् । अन्नपानादि-सौख्यं च बुधस्योपदशां गुरुः ॥ ८ ॥ विकलं वातपातानां वातपीडा महद्भयम् । अन्नपानादिहानिश्च बुधस्योपदशां शनिः ॥ ९ ॥

बुधान्तर्गत बुधकी उपदशामें विद्या, बुद्धि, धन, सोना, चांदी माणिक, धान्य और रत्नादिका लाभ होता है । बुधान्तर्दशान्तर्गत केतुकी उपदशामें रक्तपित्तविकारसे पीडा, उदरपीडा, वस्त्र, अर्थ, शस्त्रहानि होती है । बुधान्तर्गत शुक्रकी उपदशामें उत्तरदिशासे लाभ, सुख और मिष्टान्न भोजन प्राप्त होता है । बुधान्तर्गत रविकी उपदशामें तेजका नाश, शिरःपीडा, उद्वेग, चंचलचित्त, दृष्टिदोष और छर्दीरोग होता है । बुधान्तर्गत चन्द्रमाकी उपदशामें लक्ष्मीका लाभ तथा कन्याका जन्म, शुभ अर्थ, पुत्र पौत्रादिक सुख, मिष्टान्न भोजन और वस्त्रोंका लाभ होता है. । बुधान्तर्गत मंगलकी उपदशामें आमरोगसे मृत्यु, अतिसार, चौर, अग्नि, शस्त्रपीडा, ज्ञान, धर्म और धनका लाभ होता है । बुधान्तर्गत राहुकी उपदशामें राजशत्रुभय, त्रास, कलह, स्त्रीसे निरुत्साह और स्नेह क्षीरविना भोजन प्राप्त होता है । बुधान्तर्गत बृहस्पतिकी उपदशामें राज्यका प्रधान, विद्याबुद्धिकी वृद्धि और अन्नपानादि सौख्य प्राप्त हो । बुधान्तर्गत शनिकी उपदशामें विकलता, घात, गिरना, वातपीडा, महान् भय और अन्नपानादि नाश होता है ॥ १-९ ॥ इति बुधोपदशाफलम् ॥

अथ केतोरुपदशाफलम् ।

धननाशोपघातश्च विदेशे दुःखपूरितम् । सर्वत्र विफलं विन्द्यात् केतोरुपदशां शिखी ॥ १ ॥ अर्थ चतुष्पादहानिर्नेत्ररोगः शिरोव्यथा । श्लेष्मभीत्यर्थहानिश्च केतोरुपदशां भृगुः ॥ २ ॥ मित्रस्वजनजोद्वेगो ह्यल्पमृत्युः पराजयः । भोजनं घृतहीनं च केतोरुपदशां रवौ ॥ ३ ॥ अन्नपानादिनाशं च व्याधितस्य च विभ्रमः । मिष्टान्न-भोजनप्राप्तिः केतोरुपदशां शशी ॥ ४ ॥ वह्नेः शत्रो रणे भीतिर्वात-

कष्टभयं नृपः । कुधान्यं मत्स्यमांसानि केतोरुपदशां कुजः ॥ ५ ॥ शत्रुतो हि भयं स्त्रीणां नीचेभ्योऽधिकपीडनम् । बुभुक्षितं पराधीनं केतोरुपदशां तमः ॥ ६ ॥ विवादं धनहानिश्च वस्त्रमंत्रादिनाशनम् । केतोरुपदशां जीवो रूक्षधान्यादिभोजनम् ॥ ७ ॥ वस्त्रान्नपानहानिश्च सुखमाश्रमपीडनम् । गोमहिष्यादिनाशं च केतोरुपदशां शनिः ॥ ८ ॥ शत्रुपीडा महोद्वेगो विद्याबन्धुधनक्षयः । केतोरुपदशायां हि केतुः सौम्यस्य संशयः ॥ ९ ॥

केतुकी अन्तर्दशान्तर्गत केतुकी उपदशामें धर्मका नाश, उपघात, विदेशमें दुःखप्राप्ति और सर्वत्र कार्य विफल होता है । केतु अन्तरान्तर्गत शुक्रकी उपदशामें अर्थ चतुष्पदादिकी हानि, नेत्ररोग, शिरमें व्यथा, कफविकार और अर्थहानि हो । केतु अंतरान्तर्गत रविकी उपदशामें मित्र और अपने जनोंसे उत्पन्न उद्वेग, अल्प मृत्यु, पराजय और घृतहीन भोजन प्राप्त होता है । केतु अंतरान्तर्गत चन्द्रमाकी उपदशामें अन्नपानादिका नाश, व्याधि, भ्रम और मिष्टान्नभोजन प्राप्त हो । केतुअंतर्गत मंगलकी उपदशामें अग्निभय, रणमें शत्रुसे भय, वातविकारसे कष्ट, राजासे भय, कुधान्य और मछलीमांसका भोजन प्राप्त होता है। केतु अन्तरान्तर्गत राहुकी उपदशामें स्त्रियोंको शत्रुकरके भय और नीचजनोंकरके अधिक पीडा, बुभुक्षित और पराधीन होता है । केतु अंतरान्तर्गत बृहस्पतिकी उपदशामें विवाद, धनहानि, वस्त्र मन्त्रादिका नाश और रूक्षधान्यादिका भोजन प्राप्त हो । केतु अंतरान्तर्गत शनिकी उपदशामें वस्त्र अन्नपानकी हानि सुख और आश्रमपीडा और गौ महिषी आदिका नाश होता है । केतुअंतरान्तर्गत बुधकी उपदशामें शत्रुपीडा, महान् उद्वेग, विद्या बंधु धनका क्षय होता है ॥ १–९ ॥ इति केतूपदशाफलम् ॥

अथ शुक्रोपदशाफलम् ।

माणिक्यसुन्दरीप्राप्तिर्मध्वाज्यक्षीरभोजनम् । श्वेतवस्त्रस्य संप्राप्तिरुपदशास्थः स्वयं भृगुः ॥ १ ॥ राजशत्रुज्वरात्पीडा मनोजंघाशिरोव्यथा । स्वल्पाशनश्च लाभश्च शुक्रस्योपदशां रविः ॥ २ ॥ राज्याधिकप्रदो राज्ये लभते वस्त्रकाञ्चनम् । कन्याजन्मफलप्राप्तिः शुक्रस्योपदशां शशी॥३॥अलाभं ताडनं क्लेशो रक्तपित्तप्रपीडनम् । अन्नपानादिसौख्यं च शुक्रस्योपदशां कुजः ॥ ४ ॥ राजशत्रूद्भवा पीडा स्त्रीशत्रुकलहो भवेत् । भोजने कटुकक्षारं सितस्योपदशां तमः ॥५॥

वज्रमुक्तापदप्राप्तिर्गजाश्वादिगवां भवेत् । कर्पूरमिष्टमाहारं शुक्रस्योपदशां गुरुः ॥ ६ ॥ गवोष्ट्रखरलोहादि लभते स्वल्पलाभकृत् । भोजनं तिलमाषाश्च शुक्रस्योपदशां शनिः ॥ ७॥ बुद्धिर्विज्ञानराज्यश्रीनिध्यधिकारलाभकृत् । भोजनं घृततक्राभ्यां शुक्रस्योपदशां बुधः ॥८॥ भ्रमणं देशग्रामाणां रोगमृत्युमहद्भयम् । लभते द्रव्यधान्यादि- शुक्रस्योपदशां शिखी ॥ ९ ॥

शुक्रान्तर्गत शुक्रकी उपदशामें माणिक्य, सुंदर स्त्री प्राप्ति, मधु नवीन घृत और दूध सहित भोजन और सफेद वस्त्रकी प्राप्ति हो । शुक्रान्तर्गत रविकी उपदशामें राजासे शत्रुसे ज्वरसे पीडा, हृदय, जंघा, शिरमें व्यथा, स्वल्पाशन और लाभ होता है। शुक्रान्तर्गत चन्द्रमाकी उपदशामें राज्यमें राज्यका अधिकारी, वस्त्र कांचनका लाभ, कन्याका जन्म होता है । शुक्रान्तर्गत मंगलकी उपदशामें लाभरहित, ताडना, क्लेशकरके युक्त, रक्तपित्तपीडा और अन्नपानादिका सुख होता है । शुक्रान्तर्गत राहुकी उपदशामें राजासे शत्रुसे भय, स्त्री शत्रुसे कलह और कटुक्षारका भोजन प्राप्त होता है। शुक्रान्तर्गत बृहस्पतिकी उपदशामें वज्र, मुक्ता, अधिकारका लाभ तथा हाथी, घोडे, गौओंका लाभ और सुगंधित मिष्टान्न भोजन प्राप्त होता है । शुक्रान्तर्गत शनिकी उपदशामें गौ, ऊंट, गदहा और लोहादि लाभ, स्वल्प प्राप्ति और तिलमाषका भोजन लाभ होता है । शुक्रान्तर्गत बुधकी उपदशामें बुद्धि, ज्ञान, राज्य, लक्ष्मी, निधि और अधिकारका लाभ, खीर, पूरी आदि सुंदर भोजन प्राप्त होता है। शुक्रान्तर्गत केतुकी उपदशामें देश ग्रामादिकोंमें भ्रमण, रोग मृत्यु महान् भय और द्रव्य धान्यादिका लाभ होता है ॥ १-९ ॥ इति शुक्रोपदशाफलम् ॥

अथ संध्यादशाफलम् ।

तत्रादौ रविसन्ध्याफलम् ।

संध्या दिनेशस्य विपाककाले धनागमं शौर्यनरेन्द्रसौख्यम् ।
धर्मोद्यमं सौख्यमतीव तीक्ष्णं भूपादिसौख्यं विभवादिमानम् ॥ १ ॥
प्रचण्डवित्तं स्वकुलाधिकारं सुवर्णताम्राश्वरथादिकाप्तिः ।
आरोग्यता विद्रुमरत्नलाभं प्राप्नोति कीर्तिं रिपुसंक्षयं च ॥ २ ॥
तुङ्गादिसंस्थः फलमेव सन्ध्या नीचारिभस्थो विशुभं फलं च ।
तदर्थनाशं पितृबन्धुहानिं हृदक्षिपीडाकरपित्तरोगम् ॥ ३ ॥

सूर्यकी संध्यादशामें धनका आगम हो, पराक्रम राजसौख्य बहुत धर्म उद्यम हो, तीक्ष्ण सौख्य हो, भूपादिसे सौख्य हो, विभवादि मानप्राप्ति हो । अधिक धन और अपने कुलमें अधिकारप्राप्ति हो, सुवर्ण, तांबा, घोडे रथादिककी प्राप्ति हो, शरीरमें आरोग्यता हो, विद्रुमरत्नका लाभ हो,कीर्ति हो और शत्रुका नाश हो यह फल उच्चादिस्थानोंमें सूर्यके रहते जानना । यदि सूर्य नीच शत्रुराशिका हो तौ अशुभ फल होता है ।अर्थका नाश, पिताबंधुकी हानि, हृदय-नेत्रपीडा कारक पित्तरोग होता है ॥ १-३ ॥ इति रविसन्ध्याफलम् ॥

अथ चन्द्रसन्ध्याफलम् ।

निशाकरः सन्धिविपाककाले प्राप्नोति वित्तं द्विजमन्त्रिसौख्यम् ।
स्वविक्रमाच्च स्वगुणैः सुवर्णं सुगन्धद्रव्यादिषु कार्यलाभम् ॥ १ ॥
प्रबोधकल्याणधनावरातिरभीष्टसिद्धिर्धनधर्मलाभम् ।
सत्साधुसंपर्ककथानुरक्तं कुलाधिमुख्यं नृपपूजितं च ॥ २ ॥
नीचारिभस्थं कृषिकस्वरूपं मित्रादिहर्त्ता दुहितुः प्रसूतिः ।
अर्थक्षयं शोकरुजादिकष्टं क्रोधोद्भवं विद्रवमृत्युकारी ॥ ३ ॥

चन्द्रमाकी संध्यासमयमें वित्त, ब्राह्मण मंत्रिसौख्यका लाभ, अपने पराक्रम तथा गुणोंकरके सुवर्ण सुगंधद्रव्यादि व्यापारमें कार्यका लाभ, प्रबोध कल्याणकी प्राप्तिवाला, धनका लाभ, अभीष्टसिद्धि, धनधर्मका लाभ, सुंदर साधुजनोंका संग, भगवत्कथामें रति, कुलमें प्रधानता, राजासे पूजित होता है । यदि चन्द्रमा उच्चादिस्थानमें गत हो और यदि नीच शत्रुराशिमें हो तो खेती करनेवाला, मित्रादिका छलनेवाला कन्याका जन्म अर्थका क्षय, शोकरोगादि कष्ट और विद्रवरोगसे और मृत्युकारक क्रोधवाला होता है ॥ १--३ ॥ इति चन्द्रसंध्याफलम् ॥

अथ भौमसन्ध्यादशाफलम् ।

स्वपाककाले धरणीसुतस्य संध्यामवाप्नोति महाप्रतापम् ।
चौर्यं हविस्तस्करपापकर्मा दोर्दण्डतेजोरणसाहसश्च ॥ १ ॥
नृपेश्वरः शस्त्रविषाग्निकर्मनेता च सूर्यान्नृपकूलधर्मैः ।
कान्तादिकार्यैः सततार्थलाभो हेमाङ्गनाताम्रहिरण्यलाभः ॥ २ ॥
मतिं च पूर्वाकटुकैः कषायै रसैः कुमन्त्रैः कुजनेषु सक्तिः ।
स्वभ्रातृबन्धुस्वजनार्थनाशं दाहानुजः शोणितपित्ततेच्छया ॥ ३ ॥

मंगलकी संध्यादशामें बडे प्रतापको प्राप्त, चौर्य, हविका तस्कर, पापकर्मा बाहुप्रतापसे रणसाहसी, राजाओं तथा शस्त्र, विष, अग्निकर्मका नेता, श्रेष्ठ धर्म

करके संयुक्त, कांतादिकार्यमें प्रवीण, निरंतर अर्थका लाभ, हेम अंगना ताम्र हिरण्यके लाभवाला होता है । यदि भौम नीच शत्रुराशिमें स्थित हो तो कटु कषायरसका भोजन प्राप्त, कुबुद्धि, कुजनोंका साथ, अपने भाई बंधु और अपने जनों, अर्थका नाश, कष्ट, रुधिर और पित्तविकारसे भय होता है ॥ १-३ ॥ इति भौ०सं०फलम् ।

अथ बुधसन्ध्यादशाफलम् ।

बुधस्य संध्या विदधाति शश्वद्धनागमं मित्रकलत्रपुत्रैः ।
वणिक्प्रयोगाद्यखिलेषु काव्यैर्महेन्द्रजालैः कुहकादिभिश्च ॥ १ ॥
द्यूतप्रयोगाद्द्विपकर्ममन्त्रैर्दैवज्ञसिद्धान्तरसायनाद्यैः ।
भूहेमलोहस्वनृपात्मजेभ्यो लाभो धनानां सुखसौख्यवृद्धिः ॥ २ ॥
नीचर्क्षसंस्थोऽस्तमितस्य सौम्यस्त्रिधातुपीडा कुरुतेऽर्थनाशम् ।
कलत्रहानिर्नृपबन्धनार्तिः परस्वदुःखं नृपपीडितश्च ॥ ३ ॥

बुधसंध्यादशामें अनेकप्रकारसे मित्र कलत्र पुत्र करके धनका आगम, वाणिज्यकरके संपूर्ण प्रयोगोंकरके काव्यकरके इंद्रजाल और बाजीगरीके जुवांकरके द्विपकर्म करके मंत्रादिकरके ज्योतिषसिद्धान्त रसादिकरके, भूमि, हेम, लोह, अपने राजा और पुत्रकरके धनका लाभ और सुखसौख्यकी वृद्धि हो और बुध यदि नीचशत्रुराशिमें अथवा अस्तको प्राप्त हो तो त्रिधातु विकारसे पीडा, अर्थका नाश, कलत्रहानि, राजबंधन, अधिक दुःख और राजाकरके पीडित होता है ॥१-३॥ इति बु० सं० फलम् ।

अथ गुरुसन्ध्यादशाफलम् ।

गुरुः स्वसन्ध्यां लभतेऽतिसौख्यं हेमाम्बरं रत्नगजाश्वजातम् ।
धनं लभेत्पुत्रसमुच्चयं च स्वधर्मसिद्धिं द्विजदेवपूजाम् ॥ १ ॥
जनागमं चात्र सुरेश्वरस्य वेश्मप्रवेशस्त्वपि चार्थसिद्धिः ।
स्वजन्मसम्मानमतिप्रहर्षं भूपालसौख्यं विविधार्थलाभम् ॥ २ ॥
विदेशनिम्ने कृतगोविवर्णैर्गुरुः स्वपाके सुकृदर्थनाशनम् ।
भूपालभङ्गं सुतकष्टरोगं करोति पाके बहुदुःखकारी ॥ ३ ॥

बृहस्पतिकी संध्यादशामें अत्यन्त सुखका लाभ, हेम, गज, अश्व, रत्न आदिके व्यापारसे धनका लाभ होता है । पुत्रसुख, अपने धर्ममें सिद्धि, देवता, ब्राह्मणकी पूजा, अपने जनोंका आगम, देवस्थानका प्रवेश, अर्थकी सिद्धि, सम्मान, अति आनंद, भूपाल सौख्य और विविध अर्थका लाभ होता है और नीचादिमें बृहस्पति स्थित हो तो विदेशका गमन, सुकृत अर्थका नाश, राज्यका भंग, पुत्रकष्ट, रोग और बहुत दुःख होता है ॥ १-३ ॥ इति जीवसंध्याफलम् ॥

अथ शुक्रसंध्याफलम्।

दैत्येन्द्रपूज्यस्य करोति सन्ध्या महार्थलाभं सुमहच्च सौख्यम्।
नृपेश्वरत्वं स्वकुलाधिकारं प्राप्नोति वित्तं मणिमौक्तिकानि ॥ १ ॥
गजाश्वयानासनमानहर्षैः प्रख्यातकर्मा क्रयविक्रयाणाम्।
धनागमं भूकृषिणा महोक्षैः कलत्रवृद्धिः सुखसौख्यदं च ॥ २ ॥
शुक्रेऽरिगे निम्नगृहेऽल्पमायुर्योधैर्जितो वारवलिप्तिगुप्तिः।
दुष्टाङ्गनासङ्गमसौख्यहर्त्ता धनक्षयं स्त्रीसुतधर्मनाशम् ॥ ३ ॥

शुक्रकी सन्ध्यादशामें महान् अर्थकी प्राप्ति हो, बहुत सौख्य हो, राजत्व प्राप्त हो, अपने कुलका अधिकारी हो, वित्त मणि मौक्तिकादि प्राप्त हो, हाथी घोडे सवारी सन्मान और हर्षकरके संयुक्त हो और क्रयविक्रयके कर्ममें प्रसिद्ध होता है। खेती भूमि आदिसे धनका आगम, कलत्र वृद्धि और महान् सौख्य होता है और शुक्र शत्रु नीचराशिका हो तो थोडे धनका लाभ, योद्धाओंकरके पीडित, गुप्तभय, कष्ट, दुष्टस्त्रीके संगमकरके सौख्यका नाश, धनका क्षय, स्त्री, पुत्र और धर्मका नाश होता है ॥ १-३ ॥

अथ शनिसन्ध्याफलम्।

प्राप्नोति तीक्ष्णांशुसुतस्य संध्या ददाति लाभं स्वकुलाधिकारम्।
खरोष्ट्रगोपाक्षिकधान्यवस्त्रकुलित्थमाषादिककोद्रवाप्तिम् ॥ १ ॥
वृन्देश्वरं ग्रामपदाधिपत्यं कुलोन्नतिं हीनजनप्रमाणम्।
सुलोहसीसत्रपुसन्महिष्यैर्धनागमं मृत्युं चतुष्पदाच्च ॥ २ ॥
नीचोऽरिभस्थोऽस्तमितोदितस्य सौरस्य पाके कुरुते च कष्टम्।
सद्बन्धुभार्यात्मज अर्थनाशं देहे रुजा तीव्रतराऽनिलोत्था ॥ ३ ॥

शनिकी सन्ध्यादशामें लाभ, अपने कुलका अधिकार, गदहा ऊंट गौ पाक्षिक धान्य वस्त्र कुलथी माषादिक कोदोंका लाभ, वृन्दका स्वामी, ग्रामपदका स्वामी, कुलकी उन्नति, नीचजनोंमें प्रमाण, लोहा, सीसा, त्रपु, महिषी आदिकरके धनका आगम, चौपायेसे मृत्यु होती है। नीच शत्रुराशिमें हो तो अथवा अस्तको प्राप्त हो तो कष्ट, भाई, स्त्री, पुत्र, अर्थका नाश, देहमें रोग और वातविकारसे रोग होता है १-३।

उक्तानि वै द्वादशभिः प्रकारैर्नैसर्गिकादीनि दशान्तराणि।
तत्रापि संध्याफलपाक उक्तः स चिन्तनीयः सदृशः फलानि ॥ १ ॥

नैसर्गिक आदिक बारह प्रकारकरके पूर्व जो दशा अन्तर कहा है तहां भी सन्ध्यादशाफल उसके समानही चिंतन करै ॥ १ ॥ इति सन्ध्यादशाफलं संपूर्णम् ॥

अथ पाचकदशाफलम्।

तत्र रविमध्ये रव्यादिपाचकफलम्।

राजमानं सुखं चैव सम्मानं शत्रुनाशनम्। लभते सौख्यलाभं च रविमध्ये स्वयं रविः॥ १॥ रोगादिनाशं धनधान्यलाभं शत्रुक्षयं प्रीतिसुखोदयं च। सूर्यस्य चन्द्रान्तरसंधिपाके तत्रास्तभाद्द्वित्रिशुभं करोति॥ २॥ दिवाकरस्यान्तरगः कुजश्च लाभो भयं विक्रमहेमताम्रम्। संग्रामधुर्याजयवाहनानि प्रचण्डतां भूपसुखं करोति॥ ३॥ देहे च कष्टं ज्वररोगदौस्थ्यं करोति शोकं क्षयशत्रुवैरम्। अर्थक्षयं रोगरुजाप्रवासं बुधो विपाके दिवसेश्वरस्य॥ ४॥ पापादिरोगव्यसनादिमुक्तिधर्मौ स्वयं ज्ञानसुखागमं च। सूर्यस्य चेज्योऽन्तरगो विपाके करोति लक्ष्मीं धनवर्धनं च॥ ५॥ दद्र्वादिरोगान् गलरोगदोषाञ्छूलं ज्वरं वा सुहृदस्तु कष्टम्। शस्त्राद्भयं नैव दिवाकरस्य संध्या शुभं दैत्यगुरोः करोति॥ ६॥ कार्यार्थनाशं क्षितिपालभङ्गं देहे रुजा पित्तसमुद्भवा च। विद्युद्भयं बुद्धिविनाशदैन्यं संध्या तु सौरेर्दिवसेश्वरस्य॥ ७॥

रविके अन्तर्गत रविदशामें राजासे मान प्रतिष्ठा, सुख, सम्मान, शत्रुका नाश और सौख्यका लाभ होता है। रविके अन्तर्गत चन्द्रमाकी दशामें रोगादिका नाश, धनधान्यका लाभ, शत्रुका क्षय, प्रीति सुखका उदय हो और जो उच्चादिस्थानमें हो तौ दूना तिगुना शुभ फल होता है। रविके अन्तर्गत मंगलकी दशामें पराक्रम, हेमताम्रका लाभ, अभय, संग्राममें जय, वाहनादिसुख और प्रचंडतापूर्वक राजसुख होता है। रविके अन्तर्गत बुधकी दशामें शरीरमें कष्ट, ज्वर, रोग, शोक, क्षय शत्रुवैरका अर्थका क्षय, प्रबल रोग और विदेश गमन होता है। रविके अन्तर्गत जब बृहस्पतिकी दशा होती है तो पाप रोग, व्यसनसे रहित, मुक्ति धर्मकरके संयुक्त, ज्ञान सुखका आगम, लक्ष्मी और धनकी वृद्धि हो। रविके अन्तर्गत शुक्रकी दशामें दाद आदि रोग, गलरोग, दोष, शूल, ज्वर, मित्रका कष्ट, शस्त्रसे भय और कल्याणरहित होता है। रविके अन्तर्गत शनिकी दशामें कार्य अर्थका नाश, राजासे भय, पित्तसे उत्पन्न शरीरमें रोग, विद्युद्भय, बुद्धिका नाश और दीनता होती है॥ १-७॥ इति रविपाचकदशाफलम्॥

चन्द्रमध्ये चन्द्रान्तरफलानि।

मणिमुक्ताफलं चैव सौख्यानि विविधानि च। वस्त्रप्राप्तिः सुखप्राप्तिः

स्वपाके तु यदा शशी ॥१॥ रक्तवस्तु भवेल्लाभो विदेशगमनं भवेत् । सुखसन्तानमाप्नोति चन्द्रे भौमस्य पाचके ॥ २ ॥ दुःखं सुखं समं चैव लाभहानी तथैव च । उद्वेगवशगो नित्यं चन्द्रस्यान्तर्गते बुधे ॥ ३ ॥ स्वर्णलाभं पुत्रजन्म ह्यानन्दं हर्षसंयुतम् । मणिर्मुक्ताफलं चैव चन्द्रस्यान्तर्गते गुरौ ॥ ४ ॥ उत्तमस्त्रीजनैर्योगो दिव्यकन्यासमुद्भवः । धर्मयुक्ता धनप्राप्तिश्चन्द्रस्यान्तर्गते सिते ॥ ५ ॥ वेश्यागमं करोत्येव विवादं स्त्रीसमागः । अकस्माद्धनलाभश्च चन्द्रमध्ये शनिर्यदा ॥ ६ ॥ मणिविद्रुमलाभं च सर्वसौख्यसुखागमम् । प्रतापं गन्धसंयुक्तं कर्पूरादि शशी रवेः ॥ ७ ॥

चन्द्रमाके अंतर्गत चन्द्रमाकी दशामें मणिमुक्तादि फलप्राप्ति, विविध सौख्य, वस्त्रप्राप्ति और सुखप्राप्ति होती है। चन्द्रमाके अंतर्गत मंगलकी दशामें लालवस्तुसे लाभ, विदेशका गमन, संतानसुख होता है। चन्द्रमाके अंतर्गत बुधकी दशामें दुःख सुख तथा लाभ हानि समानही होता है और सदा व्याकुलतायुक्त होता है। चन्द्रमाके अंतर्गत बृहस्पतिकी दशामें सोनेका लाभ, पुत्रका जन्म, आनन्दकरके युक्त और मणिमुक्ताफलका लाभ होता है । चन्द्रमाके अन्तर्गत शुक्रकी दशामें उत्तम स्त्रियोंसे संयोग और सुंदरकन्याकी उत्पत्ति और धर्मयुक्त धनकी प्राप्ति होती है। चन्द्रमाके अंतर्गत शनिकी दशामें वेश्याका गमन, विवाद, स्त्रीसमागम और अकस्मात् धनका लाभ होता है। चन्द्रमाके अंतर्गत सूर्यकी दशामें मणि विद्रुमका लाभ, सर्वसौख्य, सुखका आगम, प्रताप और गंधयुक्त कर्पूरादि प्राप्त होता है॥१-७॥ इति चं०फ०॥

अथ भौममध्ये भौमादिपाचकफलम् ।

भौमे शत्रुविमर्दः स्यात्कलहो बन्धुभिर्नृणाम् । स्वान्तरे बहुपीडा स्याद्वृद्धस्त्रीगणिकारतिः ॥ १ ॥ फलं मानं सुखं चैव धनलाभसुखागमम् । लभते मानवो नित्यं भौममध्ये बुधो यदा ॥ २ ॥ सौभाग्यसौख्यमतुलं नानाशत्रुविमर्दनम् । लभते सुखसौभाग्यं भौममध्ये गुरुर्यदा ॥ ३ ॥ स्वदेहपीडां धनमानहानिं महाप्रतापं सुखवर्जितं च । ददाति भौमान्तरगो भृगुश्च धर्मार्थसिद्धिं विजयं तथैव ॥ ४ ॥ स्वदेहभङ्गं कुरुते शनौ कुजो विपाककाले सुखवर्जितं च । धनागमं ह्यर्थविनाशनं च सेवा भवेन्नीचजनप्रतापे ॥ ५ ॥ सूर्यो रोगविनाशं

च श्वेतवस्तुफलप्रदम्। सम्मानं चैव भूपालात् सर्वसौख्यधनागमम् ॥६॥ ददाति हेमाम्बरसौख्यलाभं धनं तथा भोगसुखं च संततिम्। मित्रागमं भ्रातृपितुश्च भक्तिं ददाति चन्द्रान्तरगः कुजश्च ॥ ७॥

भौमके अंतर्गत मंगलकी दशामें शत्रुका नाश, बंधुओंके साथ कलह, बहुतपीडा, वृद्धस्त्री तथा वेश्याओंसे संग होता है। भौमके अंतर्गत बुधकी दशामें मान, सुख, धनधान्यका सुख और सुखका आगम सदा होता है। भौमके अंतर्गत बृहस्पतिकी दशामें सौभाग्य, अतुल सौख्य, शत्रुओंका नाश और सुखसौभाग्यका लाभ होता है। भौमके अन्तर्गत शुक्रकी दशामें शरीरमें पीडा, धन-मानकी हानि, बहुत प्रतापयुक्त परंतु धनकरके सहित, धर्मार्थकी सिद्धि और विजय होती है। भौमके अन्तर्गत शनिकी दशामें अपने शरीरका भंग, सुखकरके रहित, धनका आगम, अर्थका नाश और नीचजनोंकी सेवा करनेवाला होता है। भौमके अंतर्गत रविकी दशामें रोगका, नाश श्वेतवस्तुसे लाभ,राजसम्मान, सर्वसौख्य और धनका आगम होता है। भौमके अंतर्गत चन्द्रमाकी दशामें हेम, अंबर, सौख्यलाभ, धनलाभ, भोग सुख, संतानसुख, मित्रका आगम, भाई पितामें भक्ति होती है ॥ १-७ ॥ इति भौमादिपाचकफलम् ॥

अथ बुधमध्ये बुधादिपाचकदशाफलम्।

स्वबोधबुद्धिदं चैव शत्रूणां च क्षयंकरम्। द्रव्यलाभं धनं सौख्यं स्वपाके बुधगे सदा ॥ १ ॥ हेमाम्बरे भवेल्लब्धिर्विदेशगमनं भवेत्। बुधस्यान्तर्गते जीवे धनधान्यसुखं भवेत् ॥ २ ॥ बुधमध्ये यदा शुक्रो भवत्येव सुखागमः। धनधान्यसमृद्धं स्याद्बहुसौख्यं करोति च ॥ ३ ॥ बुधस्य सन्ध्यामध्ये तु सौरपाको यदा भवेत्। तदा राजा भवेन्मानसुखसन्तानकारकः ॥ ४ ॥ वातपित्तकृता पीडा हानिकारी नरो भवेत्। पाककाले बुधस्यापि यदा चान्तरतो रविः ॥ ५ ॥ देहपीडा च उद्वेगः कलहश्च गृहे भवेत्। अत्यंतहानिकारी च बुधमध्ये तु चन्द्रमाः ॥ ६ ॥ अग्निदाहं ज्वरं तीव्रं भवेद्रक्तविकारकम्। शत्रुघातरुजं चैव बुधमध्ये कुजे सदा ॥ ७॥

बुधके अंतर्गत बुधकी दशामें अपने बोध बुद्धिकी प्राप्ति, शत्रुओंका नाश, द्रव्य लाभ और धनका सुख होता है। बुधके अंतर्गत बृहस्पतिकी दशामें हेम अंबरके व्यापारसे लाभ, विदेशका गमन और धनधान्यका सुख होता है। बुधके अंतर्गत शुक्रकी दशामें सुखका आगम, धनधान्यकी वृद्धि और बहुत सुखी होता है।

बुधके अंतर्गत शनिकी दशामें राजासे मान, सुख और पुत्रका जन्म होता है । बुधके अंतर्गत रविकी दशामें वातपित्त विकारसे उत्पन्न पीडा और हानि होती है । बुधके अंतर्गत चन्द्रमाकी दशामें देहपीडा, उद्वेग, कलह और अत्यंत हानि होती है । बुधके अंतर्गत मंगलकी दशामें अग्निका दाह, विषमज्वर, रक्तविकार, शत्रुघात और रोग होता है ॥ १-७ ॥ इति बुधपाचकदशाफलम् ॥

जीवमध्ये जीवादिपाचकदशाफलम् ।

पापैश्च रोगैश्च भवेद्विमुक्तो धर्मौ जयं प्राप्य समस्तकाले । जीवः स्वपाके फलमातनोति धनागमं मित्रकलत्रपुत्रैः ॥ १ ॥ कार्यार्थनाशं च महाविरोधं विशेषमाप्नोति नरोऽतिसौख्यम् । शृङ्गारकोशस्य नरैश्च सौख्यं यदा भवेज्जीवगतो भृगुश्च ॥ २ ॥ शनैश्चरे पाकगतेऽथ जीवे दानं करोत्येव हि सर्वसौख्यम् । द्रव्यापहारं व्यसनादियुक्तं ज्वराभिघातं व्यसने च सक्तिम् ॥ ३ ॥ सन्ध्या गुरोः पाकरविः स्वकाले धनागमं मित्रकलत्रकं च । चिरं वसेद्देशविदेशलाभं महत् प्रतापं विजयं च सौख्यम् ॥ ४ ॥ तीर्थागमे भवेत्सौख्यं पुत्रमित्रसमागमम् । धनलाभो भवेच्चैव गुरुपाके शशी यदा ॥ ५ ॥ अग्निचोरभयं नास्ति धनप्राप्तिः पदेपदे । राजमानं गृहे सौख्यं जीवमध्ये कुजे गते ॥ ६ ॥ जीवान्तरगते सौम्ये धान्यं पुत्रसुखं गृहे । मांगल्यं च भवेन्नित्यं वस्त्रपातं सुखं भवेत् ॥ ७ ॥

बृहस्पतिके अंतर्गत बृहस्पतिकी दशामें पाप रोग इनकरके रहित सदाकाल धर्म जय और धन मित्र कलत्र पुत्र इनका आगम वा सुख होता है । बृहस्पतिके अंतर्गत शुक्रकी दशामें कार्य अर्थका नाश, अत्यन्त विरोध, सुखयुक्त शृंगार कोश और मनुष्योंकरके सुखलाभ होता है । बृहस्पतिके अंतर्गत शनैश्चरकी दशामें दान करनेसे सुख, द्रव्यका नाश, व्यसनादिकरके युक्त, ज्वरकरके घात और व्यसनमें रत होता है । बृहस्पतिके अंतर्गत रविकी दशामें धनका आगम, मित्र, कलत्रका सुख अपने देशमें आनन्दपूर्वक वास, देशविदेशसे लाभ, बहुत प्रताप विजय और सौख्य होता है । बृहस्पतिके अंतर्गत चन्द्रमाकी दशामें तीर्थका गमन, सौख्य, पुत्रका जन्म, मित्रका समागम और धनका लाभ होता है । बृहस्पतिके अंतर्गत मंगलकी दशामें अग्नि वा चौरभय करके रहित, पद पदमें धनका लाभ, राजमान और घरमें

सुख होता है। बृहस्पति अंतर्गत बुधकी दशामें धान्यका लाभ, पुत्रका सुख, घरमें कल्याण, नित्य मांगलिक कार्य, वस्त्रलाभ और सुख होता है॥ १–७॥ इति जीवान्तराणि।

अथ शुक्रमध्ये अन्तरफलम्।

स्वपाककाले भृगुनन्दनोऽपि हेमाम्बरं सौख्यमतीव दत्ते। वस्त्रादिप्राप्तिं च सुखागमं च धनं लभेत्पुत्रसमन्वितं च॥१॥ राज्याभिमानं सुखसम्पदं च परोपकारी व्ययमाप्नुवन्ति। मित्रादितोऽपि व्यसनैः समेतं माङ्गल्यकार्यं च सुखावहं च॥ २॥ कार्यनाशं गृहे सौख्यं भुञ्जन्ति प्रभवः सदा। विपाके सूर्यशुक्रे च मानवो लभते फलम्॥ ३॥ ददाति वित्तं बहुसौख्ययुक्तं वस्त्राम्बरं रत्नसमुच्चयं च। सौख्यार्थलाभं स्वगृहे च सौख्यं यदा भवेच्छत्रुगतो हिमांशुः॥ ४॥ भृगोर्विपाके धरणीसुतोऽपि कार्यार्थलाभं बह्वर्थयुक्तम्। महत्प्रतापं सुखसङ्गमं च ददाति प्राप्नोति भयं कुतश्च॥ ५॥ ददाति मौक्तिकं चैव सुखसौभाग्यपुत्रदम्। कन्याजन्म गृहे सौख्यं भृगुमध्ये गते बुधे॥ ६॥ सुखं करोति सौभाग्यं व्यवहारे महत्सुखम्। लाभं कार्यस्य सिद्धिः स्याच्छुक्रमध्ये गते गुरौ॥ ७॥

शुक्रदशाके अंतर्गत शुक्रहीकी दशामें नित्य हेम वस्त्र सौख्यका लाभ, वस्त्रादि प्राप्ति, सुखका आगम, धनका लाभ और पुत्रका सुख होता है। शुक्रके अंतर्गत शनिकी दशामें राज्य, अभिमान सुख, संपदासे युक्त, परोपकारी, धनका खर्च, मित्रादिके व्यय और व्यसनकरके सहित, मांगल्यकार्य और बहुत सुख होता है। शुक्रके अंतर्गत रविकी दशामें कार्यका नाश, घरमें सुख, विभव भोग संयुक्त होता है। शुक्रके अंतर्गत चन्द्रमाकी दशामें बहुत धन सौख्य करके संयुक्त, श्रेष्ठवस्त्र, रत्नका संग्रह, सौख्य अर्थलाभ, घरमें कल्याण और सौख्य होता है। शुक्रके अंतर्गत मंगलकी दशामें कार्यार्थलाभ, बहुत धनकरके युक्त, महान् प्रताप, सुखका संगम और कुछ भय भी होता है। शुक्रके अंतर्गत बुधकी दशामें मौक्तिक, सुख, सौभाग्यका लाभ, पुत्रका अथवा कन्याका जन्म और घरमें कल्याण होता है। शुक्रके अंतर्गत बृहस्पतिकी दशामें सुख सौभाग्य, व्यापारमें महान् सौख्यलाभ और कार्यकी सिद्धि होती है॥ १–७॥

शनिमध्ये पाचकफलम्।

शनेर्विपाके कुरुतेऽभिमानं महत्सुखं लोहगतादिवृद्धिः। लाभं प्रतापं च शरीरकष्टं प्रान्ते ददात्येव हि सूर्यपुत्रः॥ १॥ धनहानि-

र्भवेन्नित्यं हानिशोकौ भयं तथा। विदेशे भ्रमणं शीलं शनेः पाके गतो रविः ॥ २ ॥ सुखदं रोगनिर्मुक्तं लाभदं हानिजं तथा । करोति शनिपाके च शशाङ्कोऽन्तर्गतः शनेः ॥ ३ ॥ महीसुतेऽन्तरगते कलहं चाप्युपद्रवः। अग्निदाहं ज्वरं तीव्रं विफलं विगतं भवेत् ॥ ४ ॥ सौरान्तरगते सौम्ये राजमानं करोति च । मध्यसंपद्धि गेहे च कार्यप्राप्तिः सवस्त्रदम् ॥ ५ ॥ करोति जीवो बहुबुद्धिसौख्यं राज्याभिधं देशपुराधिपत्यम् । परोपकारं सुखसंपदश्च करोति सौरे च गुरुः सदैव ॥६॥ ददाति वित्तं भृगुनन्दनः सुखं सुखार्थविद्यागमनं भवेत् स्वयम् । सुनिर्मलं बाहुप्रतापयुक्तं विदेशयाने च नरः सुखं लभेत् ॥ ७ ॥

शनिसंध्यान्तर्गत शनिकी दशामें अभिमान, महान् सुख, लोहादिधातुसे लाभ, प्रताप, शरीरमें कष्ट यह फल होता है । शनिके अंतर्गत सूर्यकी दशामें धनकी हानि, शोक तथा भय और विदेशमें गमन होता है । शनिके अंतर्गत चन्द्रमाकी दशामें सुख, शरीर रोगरहित, लाभ हानि समानही होता है । शनिके अंतर्गत मंगलकी दशामें कलह और उपद्रव, अग्निदाह, विषमज्वर और कार्य विफल होता है । शनिके अंतर्गत बुधकी दशामें राजमान, घरमें मध्यमसंपदा, कार्यका लाभ और वस्त्र प्राप्त होता है । शनिके अंतर्गत बृहस्पतिकी दशामें बहुत बुद्धि, सौख्य, राज्य, देश पुरादिका मालिक, परोपकारी और सुखसंपदाकरके युक्त होता है । शनिके अंतर्गत शुक्रकी दशामें वित्तलाभ, सुख, सुखार्थ विद्याका आगम, निर्मल बाहुप्रतापकरके युक्त और विदेशगमनसे लाभवाला होता है ॥ १-७ ॥ इति पाचकदशाफलानि ॥

अथ योगिनीदशा ।

नत्वा गणेशं गिरमब्जयोनिं विष्णुं शिवं सूर्यमुखान्महेन्द्रान् । वक्ष्ये स्फुटं सूर्यकृताद्यशास्त्राद्दशाक्रमं वा किल योगिनीजम् ॥ १ ॥ अथ जनस्य विधिवत्प्रसवं विचार्य संवत्सरर्त्वयनमासदिनर्क्षकालैः । यस्मिन्भवेद्दिवसभे जननं जनस्य तद्भं पिनाकनयनैः सहितं विधेयम् ॥२॥ गौरीशमूर्त्या विभजेच्च शेषं यत्संख्यकं सैव दशा जनस्य । यया जनः कर्मफलस्य पक्तिः शुभाशुभस्य स्फुटतामुपैति ॥ ३ ॥

श्रीगणेशजीको तथा सरस्वती, ब्रह्मा, विष्णु, शिव तथा सूर्य आदि ग्रहोंको नमस्कार करके सूर्यकृत शास्त्रसे योगिनीदशाओंका क्रम स्फुटरीतिकरके कहताहूं

विधिपूर्वक जन्म लेनेवाले मनुष्यका जन्म संवत्, ऋतु, अयन, मास, दिन, नक्षत्र तथा इष्ट समयको विचारकर जिस नक्षत्रमें जन्म हुआहो उस नक्षत्र संख्यामें तीन और मिलाकर आठसे भाग लेय। जो शेष बचै उससे मंगला आदि जन्मसमय दशा जानै. जिस दशामें जन्म हो उसका शुभाशुभ फल चिंतन करै ॥ १–३ ॥

दशानामानि।

मङ्गला १ पिङ्गला २ धन्या ३ भ्रामरी ४ भद्रिका ५ तथा। उल्का ६ सिद्धा ७ सङ्कटा ८ च एतासां नामवत्फलम् ॥ ४ ॥ एकं द्वौ गुण-वेदबाणरससप्ताष्टाङ्कसंख्याक्रमात्स्वस्वीया च दशा विपाकसमये ज्ञेयं शुभं वाऽशुभम्। षट्कृत्वो विभजेच्च षट्कृतिरसैकाद्वित्रिवेदेषुषट् सप्ताष्टग्रदशा भवेयुरिति ता एवं दशान्तर्दशाः ॥ ५ ॥ गतर्क्षनाडी-गुणिता दशाब्दाः सर्वे च नाडीविहृताः फलं यत्। वर्षाधिकं भुक्त-फलं ततश्च भोग्यं दशायाः प्रविचार्य लेख्यम् ॥ ६ ॥

मंगला १, पिंगला २, धन्या ३, भ्रामरी ४, भद्रिका ५, उल्का ६, सिद्धा ७, संकटा ८ ये आठ दशा नामसमान फलदायक जानना। एक, दो, तीन, चार पांच, छः, सात, आठ वर्ष संख्याक्रमसे मंगला आदि दशाओंके जानना अर्थात् मङ्गला एक वर्ष रहती है, पिंगला दो वर्ष, धन्या तीन, भ्रामरी चार, भद्रिका पांच, उल्का छः, सिद्धा सात और संकटा आठ वर्षकी होती है, इनका फल दशाप्रवेश-समयमें अपने २ नामके समान शुभाशुभ जानना। दशावर्ष संख्याके दिन करके उसको छत्तीससे भाग देकर जो भागाकार आवै वह दिवस सर्वदशामें मंगलान्तरके होते हैं. अनंतर वही भागाकार १।२।३।४।५।६।७।८। इससे गुणै तौ पिंगलादि योगिनी इनके अंतर्दशामें दिवस होते हैं। जन्मसमयके नक्षत्रकी गत-नाडियोंको दशावर्षसे गुणाकरके कुल नक्षत्रकी नाडियों (भभोग) से भागदे तौ लब्धि वर्षादि भुक्तदशाका होता है. भुक्तदशाको सर्व वर्षदशामें हीन करदे तौ भोग्य-दशा वर्षादि आताहै उसको लिखे ॥ ४–६ ॥

अथ मङ्गलादियोगिनीदशान्तर्दशाफलम्।

सद्धर्मे द्विजदेवगोपुरमनोत्कर्षप्रदात्री नृणां नानाभोगयशोऽर्थस-न्नृपपराश्वेभाङ्गजातिप्रदा। सन्माङ्गल्यविभूषणाम्बरवयःस्त्रीभोगसं-दायिनी ज्ञानानन्दकरी दशा भवति सा ज्ञेया सदा मङ्गला ॥ ७ ॥ स्यात्पुंसां यदि पिङ्गला प्रसवतो हृद्रोगशोकप्रदा नानारोगकुसङ्गदेह-

मनसो व्याध्यर्दितार्तिप्रदा । कृष्णासृग्ज्वरपित्तशूलमलिनस्त्रीपुत्रभृत्याप्तसन्मानध्वंसकरी धनव्ययकरी सत्प्रेमहंत्री खला ॥ ८ ॥ धन्या धन्यतमा धनागमसुखव्यापारभोगप्रदा पुंसां मानविवृद्धिदा रिपुगणप्रध्वंसिनी सौख्यदा । विद्याराजजनप्रबोधसुरताज्ञानाङ्कुरावर्द्धिनी सत्तीर्थामरसिद्धसेवनरतिर्लभ्या दशा भाग्यगाः ॥ ९ ॥

मंगलादशा उत्कर्षताकरके अच्छे धर्ममें ब्राह्मण देवता गौमें भक्तिको देनेवाली, नानाभोग, यश, अर्थ, राजसम्मान और सुंदरपुत्रको देनेवाली मांगलय विभूषण, वस्त्र, आयु, स्त्रीभोगको देनेवाली और ज्ञानद आनंदकारी होती है। पिंगला दशा लगतेही हृदयरोग, शोक, अनेक रोग, कुसंग, देह मानसी पीडा, शत्रुपीडा काला शरीर, ज्वर, पित्त, शूल, रोग, मलीनताको देनेवाली, स्त्री पुत्र नौकरसे प्राप्ति सन्मानको नाश करनेवाली, धनका खर्च करानेवाली दयाको नाश करनेवाली होती है। धन्यादशा धन्यतमा धनके आगम सुख व्यापार भोगको देनेवाली, मानकी वृद्धि करनेवाली, शत्रुजनोंको नाश करनेवाली, सौख्य देनेवाली, विद्या राजजनोंसे सन्मान ज्ञान अंकुरको बढानेवाली, अच्छे तीर्थके और देवतासिद्धके सेवनमें रति देनेवाली और भाग्यकारक होती है ॥ ७–९ ॥

दुर्गारण्यमहीधरोपगहनारामातपव्याकुला दूराद्दूरतरं भ्रमन्ति मृगवत्तृष्णाकुलाः सर्वतः । भूपालान्वयजा दशामधिगता ये वै नृपा भ्रामरी स्वं राज्यं प्रविहाय ते स्फुटतरं क्ष्माधो लुठन्ते मुहुः ॥ १० ॥ सौहार्दं निजवर्गभूसुरसुरेशा वा सुहृन्मानता माङ्गल्यं गृहमण्डलेऽखिलसुखव्यापारसक्तं मनः। राज्यं चित्रकपोलपालितिलकासप्ताङ्गनाभिः समं क्रीडामोदभरो दशा भवति चेत्पुंसां हि भद्राभिधा ॥ ११ ॥ उल्का चेद्यदि योगिनी गुरुदशा मानार्थगोवाहनव्यापाराम्बरहारिणी नृपजनक्लेशप्रदा नित्यशः। भृत्यापत्यकलत्रवैरजननी रम्यापहन्त्री नृणां हृन्नेत्रोदरकर्णदानपदजो रोगः स्वदेहे भृशम्।१२॥

भ्रामरीदशामें दुर्ग, वन, पर्वत, झाडी, बागादि तथा धूपसे दुःख पानेवाला, दूरसे दूर पियासे मृगके समान भ्रमण करनेवाला, राजाके घरमेंभी पैदाहुआ इस दशामें अपने राज्यको छोडकर पृथ्वीपर भिक्षुककी तरह मारामारा फिरता है । भद्रिकादशाके प्रवेशमें अपने जनों ब्राह्मणों तथा देवताओंमें भक्ति, मित्रसे सन्मान, घरमें

मांगलिक कार्य श्रेष्ठ व्यापारमें आसक्त मन, राज्य, सुंदर कपोल तिलकावली आदिसे विभूषित सप्त अप्सराओंके समान स्त्रियोंसे भोग क्रीडा आनंद और कल्याण होता है। उल्कादशा मान अर्थ गौ वाहन व्यापार अंबर आदिको नाश करनेवाली, सदा राजासे क्लेश देनेवाली, नौकर पुत्र स्त्रीसे शत्रुता करानेवाली आरामको नाश करनेवाली, हृदय, नेत्र, उदर, कर्ण और पादमें रोगको देनेवाली और शरीरको नष्ट करनेवाली होती है॥ १०–१२॥

सिद्धा सिद्धिकरी सुभोगजननी मानार्थसंदायिनी विद्याराजजनप्रतापधनसद्धर्माप्तसज्ज्ञानदा। व्यापाराम्बरभूषणादिकमतोद्वाहोऽपि माङ्गल्यदा सत्सङ्गान्नृपदत्तराज्यविभवो लभ्या दशा पुण्यतः॥१३॥ राज्यभ्रंशाग्निदाहो ग्रहपुरनगरग्रामगोष्ठेषु पुंसां तृष्णारोगाङ्गधातोः क्षणविकृतिरथो पुत्रकान्तावियोगः। चेतस्यान्मोहोऽरिभीतिः कृशतनुलतिकासङ्कटाया विरोधो नो मृत्युर्जन्मकालाद्यममपि हि विना सङ्कटं योगिनीजम्॥ १४॥भ्रामर्यां च तथोल्कायां सङ्कटान्तर्गता भवेत्। तदा तु यमराजस्य सदनं प्राप्यते नृणाम्॥ १५॥

सिद्धादशा कार्यसिद्धि करानेवाली, सुंदरभोगको देनेवाली, मान अर्थको देनेवाली विद्या राजजन प्रताप धन और अच्छे धर्मकी प्राप्ति एवं ज्ञान करनेवाली व्यापार अंबर भूषणादि और विवाहमांगल्यको देनेवाली सत्संगति तथा पुण्यसे राज्यविभवको देनेवाली कही है। संकटाकी दशामें मनुष्योंके राज्यका भ्रंश अग्निदाह पुर नगर ग्रामगोष्ठी आदि अग्निकरके दाह तृष्णा अंग धातुक्षयरोग विकलता, पुत्रस्त्रीका वियोग मोह, शत्रुभय, शरीर दुर्बल, विरोध और प्राणोंमें भी संकट होता है। भ्रामरी तथा उल्कादशाके अन्तर्गत संकटादशामें मनुष्य यमराजके सदनको जाता है अर्थात् मृत्यु अथवा मृत्युसमान कष्ट होता है॥ १३–१५॥

इति मंगलादियोगिनीदशाफलम्॥

अथ अन्तर्दशाफलम्।

स्वस्या दशाया दिवसादिनिघ्ना स्वांतर्दशाया दिवसैः क्रमेण। षड्भिर्विभक्ता घटिकास्तया च स्युर्मङ्गलाद्याः क्रमशो नितान्तम्॥१॥

मंगलादिदशाओंमें अपने दशावर्षोंको दिनमानकरके मंगलाके (सर्वदशाओंमें) अंतरदिवसोंको क्रमसे गुणा करदे और ६ से भागले तौ लब्धि घटिकादि प्रत्यंतरदशा होगी॥ १॥

मंगलान्तरफलम् ।

मित्रपुत्रकलत्राङ्गव्यापारसुखदायिनी । मङ्गलाऽत्यर्थदा जाता मङ्गला मङ्गलप्रदा ॥ २ ॥ कलहः स्वजनः सार्द्ध मानसोद्वेगमेव हि । विविधार्तिप्रदा नित्यं पिंगला मङ्गलां गता ॥ ३ ॥ गजाश्वगोधनप्राप्तिः सुतमित्रसुखं महत् । विलासो विविधः पुंसां धन्या स्यान्मङ्गलां गता ॥४॥ स्त्रीमित्रकलहो नित्यं प्रवासो धननाशनम् । नरेन्द्रैः सह सांगत्यं भ्रामरी मङ्गलांगता ॥५॥ धनधान्यसुतस्त्रीभिः प्रीतिः स्यात्स्वजनैः सह । प्रमोदः सुरभिज्ञो वा भद्रा चेन्मङ्गलां गता ॥६॥ धनकीर्तिसुतोद्वेगस्त्रीमित्रपशुपीडनम् । भूपतेर्हानिदा नित्यमुल्का स्यान्मङ्गलां गता ॥ ७ ॥ भवेत्पुत्रधनस्त्रीभिर्विलासो विविधं सुखम् । बन्धुमित्रसमं योगः सिद्धा चेन्मङ्गलां गता ॥ ८ ॥ जलाग्निचोरभूपालपीडनं कलिवर्द्धनम् । मृत्युतुल्यं तथा ज्ञेयं सङ्कटा मंगलां गता ९

मंगलाके अन्तर्गत मंगलादशा मित्र, पुत्र, स्त्री तथा शरीरके सुखको देनेवाली, अर्थ और मांगल्य देनेवाली होती है । मंगलाके अंतर्गत पिंगलादशामें अपने जनोंके साथ कलह मानस उद्वेग और अनेक पीडा हो । मंगलाके अंतर्गत धन्यादशामें हाथी, घोडा, गोधनकी प्राप्ति, पुत्र, मित्र, सुख और अनेक प्रकारका विलास प्राप्त होता है । मंगलाके अंतर्गत भ्रामरीदशामें स्त्रीमित्रसे कलह, सदा विदेशवास, धनका नाश, राजासे कष्ट प्राप्त होता है । मंगलाके अंतर्गत भद्रिका दशामें धनधान्यका लाभ, पुत्र स्त्रीसे प्रीति तथा स्वजनोंसे प्रीति, प्रमोद और सुरभिज्ञता होती है । मंगलाके अन्तर्गत उल्कादशामें धन, कीर्ति, सुत, उद्वेग, स्त्री, मित्र, पशुपीडा और राजासे हानि हो । मंगलाके अंतर्गत सिद्धादशामें स्त्री, धन, पुत्र इनकरके विलास और विविध सुख और बंधुमित्रका समागम होता है । मंगलाके अंतर्गत संकटादशामें जल, अग्नि, चौर तथा राजासे पीडा कलहकी वृद्धि, मृत्युके समान कष्ट यह फल हो २–९

पिंगलान्तरफलम् ।

पिङ्गला स्वदशां प्राप्ता रुक्शोकव्यसनार्तिदा । मानसोद्वेगसंतापक्लेशभ्रमणदा मता ॥ १० ॥ धन्या धन्यार्थदात्री च विलाससुतकामदा । पिङ्गलान्तर्गताऽरण्ये रमणी सुखदा नृणाम् ॥११॥ देशत्यागो गृहग्रामपुरलोकधनक्षतिः । कलहः स्वजनैः सार्द्धं भ्रामरी पिंगलां

गता ॥ १२ ॥ भद्रा भद्रकरी प्रोक्ता पिङ्गलान्तर्गता यदा। स्थानान्तराद्यशः पुत्रो व्यापारे धनलाभता ॥ १३ ॥ उल्कादशा यदा पुंसां पिङ्गलामध्यतो भवेत्। विग्रहो बन्धुभिः सार्द्धं राजचोरजनार्दनम् ॥ १४ ॥ सिद्धिदा मंत्रयन्त्राणां सिद्धा धान्यधनप्रदा। पिङ्गलामध्यमा पुंसां कासश्वासप्रमेहदा ॥ १५ ॥ पिङ्गलान्तर्यदा जाता सङ्कटा धनहानिदा। दुष्टव्याधिविरोधित्वं शत्रुराजभयं तथा ॥ १६ ॥ मङ्गला विविधव्याधिशोकमोहभयार्तिदा। पिङ्गलान्तर्गता पुंसां मासिसिद्धिकरी तथा ॥ १७ ॥

पिंगलाके अंतर्गत पिंगला दशामें रोग, शोक, व्यसन, पीडा, मानसी उद्वेग, संताप, क्लेश और भ्रमण होता है। पिंगलाके अंतर्गत धन्यादशामें धन, अर्थ, भोग, विलास, पुत्र, काम और स्त्री सुख होता है। पिंगलाके अंतर्गत भ्रामरीदशामें घर ग्राम देशका तथा पुरलोकका त्याग, धनका नाश और अपने जनोंके साथ कलह होता है। पिंगलाके अंतर्गत भद्रिकादशामें कल्याण, स्थानान्तरसे कीर्ति प्राप्ति, पुत्रका लाभ और व्यापारसे धनका लाभ होता है। पिंगलाके अंतर्गत उल्कादशामें बांधवोंके साथ विग्रह, राजा चौरसे भय और जनपीडा हो। पिंगलाके अंतर्गत सिद्धादशामें मन्त्र यंत्रोंकी सिद्धि, धनधान्य लाभ और कास श्वास और प्रमेहका रोग होता है। पिंगलाके अंतर्गत संकटादशामें धनकी हानि, दुष्टव्याधि, विरोध तथा शत्रु राजभय होता है। पिंगलाके अंतर्गत मंगलाके दशामें विविध व्याधि, शोक, मोह, भय, पीडा इत्यादि अशुभफल होता है ॥ १०-१७ ॥ इति पिंगलान्तरफलम् ॥

अथ धन्यादशान्तरफलम्।

धन्या स्वीयदशां प्राप्ता भूग्रामधनधान्यदा। नृपस्वजनस्त्रीपुत्रसुखं स्याद्विविधं नृणाम् ॥ १८ ॥ धन्यान्तर्भ्रामरी चेत्स्याद्भ्रमणक्लेशहानिदा। अन्यस्थानाश्रयाल्लाभः स्वजनैश्च विरोधिता ॥ १९ ॥ भद्रा सौभाग्यजननी ग्रहामित्रसुखप्रदा। धन्यान्तर्नृपमंत्रीशवाहनाम्बरभूमिदा ॥२०॥ विविधं कष्टमुत्पातमुल्का धन्यान्तरं गता। तत्र हृत्कटिशूलादिपीडनं धननाशनम् ॥ २१ ॥ सिद्धा धन्यान्तरं याता सुतमित्रोत्सवप्रदा। नानाभोगप्रदा नित्यं ज्ञेया सा तु विचक्षणैः॥२२॥

धन्यासूपगता यत्र सङ्कटा बन्धनप्रदा । नीतिव्यापारभूपाल-मानसोत्साहदा मता ॥ २३ ॥ पिङ्गला यदि धन्यान्तर्विव्यथा हास्ति-भूधनः । सोत्साहो नृपतेर्भीतिः शिरोरुक्शूलभासुरः ॥ २४ ॥

धन्यादशाके अंतर्गत धन्यादशामें भूमि, ग्राम, धन धान्यका लाभ, राजा स्वजन स्त्री पुत्रका सुख होता है। धन्याके अंतर्गत भ्रामरीदशामें भ्रमण, क्लेश, हानि, अन्य स्थानसे लाभ और अपने जनोंकरके विरोध होता है । धन्याके अंतर्गत भद्रिका दशामें सौभाग्य, मित्रसुख, लाभ, मंत्राधिकार, वाहन, अंबर भूमिका लाभ होता है। धन्याके अंतर्गत उल्कादशामें विविध कष्ट, उत्पात, हृदय, कटिमें शूल आदि पीडा और धनका नाश होता है। धन्याके अंतर्गत सिद्धा दशामें सुत मित्र उत्सव और अनेक भोगविलास प्राप्त होते हैं। धन्याके अंतर्गत संकटादशामें बंधन नीति व्यापार, राजसम्मान और उत्साह लाभ होता है । धन्याके अंतर्गत पिंगलादशामें उग्र-पीड़ासे हाथी तथा भूमि धनका लाभ, उत्साह, राजासे भय, शिरोरोग, शूलपीडा हो ॥ १८–२४ ॥ इति धन्यादशान्तरफलम् ।

भ्रामर्यन्तरफलम् ।

भ्रामरी स्वदशामध्ये भ्रान्तिमोहविषार्त्तिदा । स्वस्थाने स्वजने शैलो वैरिदुष्टजलार्त्तिदा ॥ २५ ॥ भद्रायां भ्रामरीमध्ये विदेशगमनं भवेत् । निजमित्रसमायोगो विद्यासम्मानभूपतिः ॥ २६ ॥ उल्का तु भ्रामरीमध्ये ज्वरशूलासृगार्तिदा । धनपुत्रकलत्राङ्गपीडाहानिकरी मता ॥ २७ ॥ सिद्धा सिद्धिप्रदा नित्यं भ्रामरीमध्यतो यदा । विवेक-विद्यानिधिदा भयरोगार्तिनाशिका ॥ २८ ॥ संकटा मरणं क्लेशः शोकं मोहं गतं गदः । राजचोरजनख्यातिप्रदा भ्रामरिमध्यगा ॥ २९ ॥ विलासो विविधं सौख्यं नृपसेवातिपुष्टता । भ्रामर्यन्तर्गता यत्र मंगला सहमङ्गला ॥ ३० ॥ पिङ्गला भ्रामरीमध्ये गुदाङ्घ्रिमुखरोगदा । गजाश्व-महिषव्याघ्रव्रणभीतिप्रदा भवेत् ॥ ३१ ॥ भ्रामर्युपगता धन्या धन-वाहनभोगदा । नृपैः प्रीतिकरी भिल्लैर्वैरहानिकरी मता ॥ ३२ ॥

भ्रामरीके अंतर्गत भ्रामरीदशामें भ्रांति, मोह, विषपीडा, अपने स्थानमें वा स्वज-नोंमें शत्रु, दुष्टजन तथा जलसे भय, पीडा हो । भ्रामरीके अंतर्गत भद्रिकादशामें विदेशका गमन, मित्रका समागम, विद्यालाभ और राजसम्मान होता है। भ्रामरीके अंतर्गत उल्कादशामें ज्वर, शूलरोगसे पीडा, धन पुत्र स्त्री और देहकी पीडा और

हानि होवै । भ्रामरीके अंतर्गत सिद्धादशामें कार्यसिद्धि, विवेक, विद्या, निधिका लाभ, भय, रोग और पीडाका नाश होवै। भ्रामरीके अंतर्गत संकटादशामें मरण, क्लेश, शोक, मोह, रोग, राजा तथा चोर जनोंमें ख्याति होवै । भ्रामरीके अंतर्गत मंगलादशामें विविध भोगविलास, सौख्य, राजसेवा, अधिक पुष्टि और मंगल होता है । भ्रामरीके अंतर्गत पिंगलादशामें गुदा, अंघ्रि, मुख इनमें रोग हो, हाथी घोडा भैंसा व्याघ्र व्रण इनकरके भय होता है । भ्रामरीके अंतर्गत धन्यादशामें धन वाहन भोगका लाभ, राजासे प्राप्ति और भिल्लोंकरके शत्रुताकी हानि हो ॥ २५-३२ ॥ इति भ्रा. फ. ॥

अथ भद्रिकान्तरफलम् ।

भद्रा भद्रागता यत्र यशोभद्राऽऽतिदा तथा । व्यसनार्तिहरा पुण्यमार्गरोधकरी मता॥३३॥ उल्का भद्रान्तरं याता विवादकृतरोगदा । स्थानभ्रंशो द्रव्यहानिकारिण्युद्वेगदायिनी ॥ ३४ ॥ सिद्धा भद्रान्तर्गता तु द्विजदेवार्चने रतिः। पुत्रमित्रकलत्राङ्गगृहग्रामजनोत्सवान् ॥ ३५ ॥ भद्रादशां समायाता सङ्कटा सङ्कटार्तिदा । मोहशोकादिव्यसनभ्रान्तिदेशगमार्त्तिदा ॥ ३६ ॥ सम्मानधनभूकीर्तिर्व्यापारे सुतसौख्यदा । मङ्गला भद्रिकामध्ये पितृवंशविवृद्धिदा॥३७॥यदा मध्ये तु भद्रायाः पिङ्गला पित्तरोगदा । कृषिवाणिज्यभूवृद्धाश्रयतो विविधप्रदा ॥ ३८ ॥ रुधिराग्नियमाद्भीतिर्भद्रायां भ्रामरी यदा । गृहक्षेत्ररिपुध्वंसो निजबन्धुजनैः सुखम् ॥ ३९ ॥

भद्रिकाके अंतर्गत भद्रिकादशामें यश, कल्याणकी वृद्धि, व्यसन, पीडाका नाश और धर्ममार्गमें विघ्न होता है । भद्रिकाके अंतर्गत उल्कादशामें विवाद, रोग, स्थानका भ्रंश, द्रव्यकी हानि और उद्वेग होवै । भद्रिकाके अंतर्गत सिद्धादशामें देवता ब्राह्मणके पूजनमें रति, पुत्र, मित्र, कलत्र, अंग, गृह, ग्रामसे उत्पन्न उत्सव होता है । भद्रिका अंतर्गत संकटादशामें संकट, पीडा, मोह, शोकादि व्यसन, भ्रांति, परदेशगमन और आर्ति होवै । भद्रिकाके अंतर्गत मंगलादशामें सम्मान, धन, भूमि, कीर्तिका लाभ, व्यापारमें लाभ, सुत सौख्य और पितृवंशकी वृद्धि होवै । भद्रिकाके अंतर्गत पिंगलादशामें पित्तरोग, कृषि, वाणिज्यसे भूमि धनलाभ और वृद्धमनुष्यके आश्रयसे विविध सौख्य प्राप्त होता है । भद्रिकाके अंतर्गत भ्रामरी दशामें रुधिर, अग्नि और यमसे भय, गृह क्षेत्र शत्रुका नाश और अपने बंधुजनकरके सुख होता है । इति. भ. फ. ॥ ३३-३९ ॥

अथोल्कान्तरफलम् ।

शत्रुभिः साहसं हानिर्द्रव्यस्य महती व्यथा । उल्कामध्ये यद्युल्का च राज्यभ्रंशात्तु भीतिदा ॥ ४० ॥ सिद्धा तु स्वफलं त्यक्त्वा परस्य फलदायिनी । उल्कान्तरं समायाता विदेशगमनप्रदा ॥ ४१ ॥ उल्काया मध्यगा यत्र सङ्कटा मरणप्रदा । स्त्रीपुत्रभृत्यसंक्लेशो जनहानिः कुलक्षयः ॥४२॥ उल्काया मध्यगा यत्र मङ्गला मोहकारिणी । धनमित्रविवेकस्त्रीसुखदा मलहारिणी ॥४३॥ कुष्ठकम्बुशिरोरोगैः पीडितो धरणीतले । भ्रमते नात्र संदेहो यद्युल्कायां तु पिङ्गला ॥ ४४ ॥ नो लाभो न सुखं किंचिद्वातव्याधिकफादयः । धन्योल्कायां समायाता स्त्रीपुत्रस्वजनैः कलिः ॥ ४५ ॥ उद्विग्नं मानसं मोहो भ्रमः पुंसोऽरिजं भयम् । नानाक्लेशसमायोगो भ्रामर्युल्कान्तरं गता ॥ ४६ ॥ उल्कामध्ये तु संप्राप्ता भद्रा भद्रार्थदायिनी । भूषणाम्बरहानिः स्यात्कुलमित्रजनात्सुखम् ॥ ४७ ॥

उल्कादशाके अंतर्गत उल्कादशामें शत्रुकरके साहस, धनकी हानि, महान् व्यथा और राज्यभ्रंशसे भय होता है । उल्काके अंतर्गत सिद्धादशा अपने फलको छोड़कर दूसरेके फलको देनेवाली और विदेशमें गमन करानेवाली होती है । उल्काके अंतर्गत संकटादशामें मरण समान कष्ट, स्त्री पुत्र नौकर इनको कष्ट हानि और अपने कुलका नाश होवै । उल्काके अंतर्गत मंगला दशामें मोह धन मित्र विवेक स्त्री इनका सुख और मलका नाश होता है । उल्काके अंतर्गत पिंगलादशामें कुष्ठ ग्रीवा तथा शिरोरोगकरके पीडित और पृथ्वीपर भ्रमण करनेवाला मनुष्य होता है । उल्काके अंतर्गत धन्यादशामें न लाभ और न कुछ सुख, वातव्याधि, कफका उदय और स्त्री पुत्र स्वजनोंमें कलह होवै । उल्काके अंतर्गत भ्रामरीदशामें उद्विग्नचित्त, मोह, भ्रम, शत्रुभय और अनेक क्लेश प्राप्त होते हैं। उल्काके अंतर्गत भद्रिकादशामें कल्याण, अर्थका लाभ, भूषण अंबरकी हानि, कुलसे तथा मित्रजनोंसे सुख प्राप्ति होती है ॥ ४०-४७ ॥ इत्युल्कान्तरफलम् ॥

अथ सिद्धान्तरफलम् ।

सिद्धा सिद्धार्थसंदात्री स्वजनैस्सह सौख्यदा । सिद्धायामथवैश्वर्यसुखमित्रसुखप्रदा ॥ ४८ ॥ बन्धनं नृपचौरेभ्यो धनहानिर्मह-

द्भयम्। देशत्यागो भवेन्नूनं सिद्धायां सङ्कटा यदा ॥ ४९ ॥ विलासः स्वजनैः सौख्यं धनलब्धिर्नृपाद्भवेत्। मङ्गला सिद्धिदा सिद्धा सङ्गता विविधा यदा॥५०॥सिद्धायां पिङ्गला चेत्स्यान्मानं क्रोधाग्निदाहनम्। वैरोदयं निजैः सार्द्धं परद्रव्याभिधारणम् ॥ ५१ ॥ पुंसां धन्या तु सिद्धायां प्राक्पुण्यनिचयो भवेत्। मनःप्रकल्पितं सर्वं सिद्धिमायाति सर्वतः ॥ ५२ ॥ भ्रामरी यदि संप्राप्ता सिद्धायां यस्य जन्मनि। स्वस्थानाद्व्यसनैस्त्यागो ननु राजकुलाद्भयम् ॥ ५३ ॥ मांगल्यभोगजननी विद्यासौख्यगुणप्रदा। नराणां सिद्धिदा भद्रा सिद्धायामुपजायते ॥ ५४ ॥ उल्का सिद्धां समापन्ना धनधान्यविनाशिनी। क्लेशशोकव्यसनदा गुदरुङ्मोहकारिणी ॥ ५५ ॥

सिद्धादशाके अन्तर्गत सिद्धादशामें अर्थका लाभ, स्वजनोंके साथ सुख, ऐश्वर्य सुख और मित्रका सुख होता है। सिद्धाके अन्तर्गत संकटादशामें बंधन, चोर करके राजाकरके धनहानि, महान् भय और देशका त्याग होता है। सिद्धाके अन्तर्गत मंगलादशामें भोग विलास, स्वजनोंकरके सुख, राजासे धनका लाभ और विविध सिद्धि प्राप्ति हो। सिद्धाके अन्तर्गत पिंगलादशामें मान, क्रोध, अग्निका दाह, अपने जनोंके साथ वैरका उदय और पराये द्रव्यका लाभ होता है। सिद्धाके अन्तर्गत धन्यादशामें पूर्वपुण्योंका संचय और सर्वत्र मनमानी सिद्धिका लाभ होता है। सिद्धाके अंतर्गत भ्रामरीदशामें व्यसन, स्थानत्याग और राजकुलसे भय होता है। सिद्धाके अंतर्गत भद्रिका दशामें मांगल्य, भोगविलास, विद्या, सौख्य, गुणका लाभ और कार्यकी सिद्धि होवै। सिद्धाके अंतर्गत उल्कादशामें धनधान्यका नाश, क्लेश शोक व्यसन करके युक्त, गुदारोग और मोह होता है ॥ ४८–५५ ॥ इति सिद्धान्तरफलम् ॥

अथ संकटान्तरफलम्।

सङ्कटा स्वदशां प्राप्ता करोति मरणं ध्रुवम्। राजवंशाच्च हानिश्च देशत्यागो धनक्षयः ॥ ५६ ॥ शिरोरुग्विविधै रोगैर्व्याधिभिर्व्यसनैस्तथा। कलत्रक्लेशनिरतो मङ्गला संकटां गता ॥ ५७ ॥ अकस्माद्धनहानिः स्यात्पुत्रशोकोऽरिजं भयम्। पिंगला सङ्कटां याता वियोगः स्वजनैः सह ॥ ५८ ॥ गुल्मोदरकृता पीडा निजेषु प्रमुखं महत्।

स्वदेशजनताकीर्तिर्धन्या तु सङ्कटां गता ॥ ५९ ॥ भ्रामरी सङ्कटामध्ये भ्रमणं पृथिवीतले । देशग्रामपुरद्वारराज्यभ्रंशोऽरिजं भयम् ॥ ६० ॥ विद्यालङ्कारवस्त्राणि विविधानि महद्यशः । विग्रहोऽन्यजनैः सार्द्धं भद्रा चेत्संकटां गता ॥ ६१ ॥ उल्कापातधनग्रामहारिणी मृत्युकारिणी । सङ्कटामन्तरेणैव पशुमात्रकुलार्दनी ॥ ६२ ॥ उत्साहो विविधः पुंसां निजपुत्रसुखोदयम् । मनः प्रसन्नतामेति सिद्धा चेत्सङ्कटां गता ॥ ६३ ॥

संकटादशाके अंतर्गत संकटादशामें मरण, राजवंशसे हानि, देशका त्याग और धनका क्षय होता है । संकटाके अंतर्गत मंगलाके दशामें शिरोरोग तथा व्याधि, व्यसन, अनेक रोग, स्त्रीकष्ट यह फल होता है । संकटाके अंतर्गत पिंगलादशामें अकस्मात् धनकी हानि, पुत्रशोक, शत्रुसे भय और स्वजनोंसे वियोग होता है । संकटाके अंतर्गत धन्यादशामें गुल्म उदरविकारसे पीडा, अपने जनोंमें महान् प्रमुख और देशमें कीर्तिका लाभ होता है। संकटाके अंतर्गत भ्रामरीदशामें पृथ्वीपर भ्रमण, देशत्याग, ग्राम, पुर, द्वार, राज्यका नाश और शत्रुसे भय होता है । संकटाके अंतर्गत भद्रिका दशामें विद्या, अलंकारादियुक्त वस्त्र, महान् यशका लाभ, अन्यजनोंके साथ विग्रह यह फल होता है । संकटाके अंतर्गत उल्कादशामें धन और ग्रामका नाश, मृत्युसमान कष्ट, पशुओंमें और कुलमें कष्ट पीडा होवै । संकटाके अंतर्गत सिद्धादशामें विविध उत्साह, निजपुत्र लाभसे सुखका उदय और मन प्रसन्न होता है । ॥ ५६-६३ ॥ इति संकटान्तरफलम् ॥ इति योगिनीदशान्तर्दशाफलं समाप्तम् ॥

अथ योगिनीदशास्वामिनः ।

चन्द्रः सूर्यो वाक्पतिर्भूमिपुत्रश्चान्द्रिर्मन्दो भार्गवः सैंहिकेयः ।
एते नाथा मङ्गलान्तःप्रदिष्टाः सौम्यासौम्या नामनिष्ठाःखलाना म् १ ॥

यः खेटोऽस्तगृहं तथाऽरिभवनं नीचं प्रयातो यथा
वर्षेशाद्रिपुगो हि तस्य गदिता सर्वा दशा मध्यमा ।
यश्चोच्चस्थलमाश्रितः स्वभवने मूलत्रिकोणे खगो
मित्रागारमुपागतो निगदिता तस्याखिला सौख्यदा ॥ २ ॥

चन्द्रमा, सूर्य, बृहस्पति, मंगल, बुध, शनैश्चर, शुक्र और राहु ये क्रमसे मंगलादि दशाओंके स्वामी जानना और शुभग्रहोंसे शुभ तथा पापग्रहोंसे अशुभ फल

कहना चाहिये। जो ग्रह अस्तको प्राप्त हो तथा शत्रुके घरमें स्थित हो अथवा नीच-राशिमें हो इसी प्रकार वर्षेशसे शत्रुस्थानमें प्राप्त हो तौ उसकी दशाका फल मध्यम कहा है तथा जो ग्रह उच्चमें अपने ही राशिमें हो मूलत्रिकोणमें अथवा मित्रके स्थानमें हो उसकी दशा सौख्यदायक जानना ॥ १ ॥ २ ॥

पिंगलातो भवेत्सूर्यो मङ्गलातो निशाकरः। भ्रामरीतो भवेत् क्ष्माजो धन्यातोऽभूद्विधोः सुतः ॥ ३ ॥ भद्रिकातो गुरुरभूत्सिद्धातः कविसंभवः। उल्कातो भानुतनयः सङ्कटातो ह्यभूत्तमः ॥ ४॥ अस्या एव दशान्ते च केतुरेव विधीयते ॥ ५ ॥

पिंगलादशाका स्वामी सूर्य, मंगलाका चन्द्रमा, भ्रामरीका मंगल, धन्याका बुध, भद्रिकाका बृहस्पति, सिद्धाका शुक्र, उल्काका शनैश्चर और संकटादशाका राहु स्वामी है। इनके अंतमें केतुकी दशा होती है ॥ ३-५ ॥ इति श्रीरुद्रयामले योगिनीदशाक्रमः समाप्तः ॥

वर्षप्रवेशसमयसाधनम्।

इष्टः शको जन्मशकेन हीनस्त्रिधा सपादो दलितश्च सार्धम्। समन्वितो जन्मगवारपूर्वैः स्फुटा भवेदब्दनिवेशवेला ॥ ६ ॥

वर्तमानशाकेमें जन्मकालिक शाकेको हीन करै अर्थात् घटाय देवै जो अंक शेष रहै वही गतवर्ष जानना; उसको तीन स्थानोंमें स्थापित करै पहिले स्थानमें सवाया; दूसरे स्थानमें आधा; तीसरे स्थानमें डेवढे करे। फिर उनमें जन्मवार आदि (वार, घटी, पल) संयुक्त करै तौ वर्षप्रवेशवेला (समय इष्टकाल) स्फुट होता है। वारादि पिछले वर्षके ध्रुवामें युक्त एक, पन्द्रह, इकतीस, तीस (१।१५।३१।३०) करदे तौ अगले वर्षका ध्रुवा होता है। जिस दिन वर्षप्रवेश समयका सूर्य जन्म समयके सूर्यांशोंसे बराबर होता है उसी दिन वर्षप्रवेश होता है। इस प्रकार वर्षप्रवेशका इष्ट समय जानकर पूर्व द्वितीय अध्यायमें कहीहुई रीतियोंसे लग्नसहित द्वादशभाव तथा ग्रहोंको स्पष्ट करलेवै तो वर्ष बनजाता है॥ ६ ॥

ग्रन्थकर्तृप्रशस्तिः।

आसीद्गुर्जरमण्डले द्विजवरः शाण्डिल्यगोत्रोद्भवः
श्रीमद्याज्ञिकवंशमण्डनमणिर्ज्योतिर्विदामग्रणीः।
श्रौतस्मार्तरतो जनार्दन इति ख्यातः स्वकीयैर्गुणै-
स्तत्सूनुर्हरजी दशां स्फुटतरां चक्रे परां योगिनीम् ॥ १ ॥

गुर्जरदेशमें रहनेवाला, ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ, शांडिल्यगोत्रमें उत्पन्न; याज्ञिक वंशको प्रकाश करनेवाला, ज्योतिर्विदोंमें अग्रगण्य, श्रौतस्मार्तमें रत, जनार्दन नामकरके प्रसिद्ध तिंसका पुत्र हरजी नामकने अपने गुणकरके योगिनीदशाचक्रोंको स्फुट-रीतिसे वर्णित किया है ॥ १ ॥

भाषाटीकासमाप्तिसमयः।

अभ्ररसनिधीन्द्वब्दे १९६० फाल्गुनस्यासिते दले।
त्रयोदश्यां रवेर्वारे ग्रन्थोऽयं पूर्णतां गतः ॥ १ ॥
बालानां सुखबोधाय मानसागरिपद्धतौ।
वंशीधरेण विदुषा भाषाटीका समापिता ॥ २ ॥

श्रीसंवत् १९६० फाल्गुनकृष्णपक्ष त्रयोदशी (महाशिवरात्रि) रविवारमें मान-सागरी पद्धति भाषाटीकासहित बालकोंके सुखपूर्वक बोधके अर्थ राजपण्डित वंशीधरकरके पूर्णताको प्राप्त हुई ॥ १ ॥ २ ॥

इति मानसागरीपद्धतिः समाप्ता।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
" लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर " स्टीम्-प्रेस,
कल्याण-बम्बई.

खेमराज श्रीकृष्णदास,
" श्रीवेङ्कटेश्वर " स्टीम्-प्रेस,
खेतवाड़ी-बम्बई.